उत्तर तैमूरकालीन भारत

भाग १

तैमूर के बाद के देहली के सुल्तान
(१३९९-१५२६ ई०)

(HISTORY OF THE POST-TIMUR SULTANS OF DELHI, PART I)
(1399-1526)

समकालीन तथा निकट समकालीन इतिहासकारों द्वारा
(यहया, निज़ामुद्दीन अहमद, रिज़्क़ुल्लाह मुश्ताक़ी, अब्दुल्लाह, अहमद यादगार तथा मुहम्मद कबीर)

अनुवादक
सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी
एम० ए०, पी-एच० डी०
यू० पी० एजूकेशनल सर्विस

प्रकाशक
हिस्ट्री डिपार्टमेंट, अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी
अलीगढ़
१९५८

Publication of the Department of History, Aligarh Muslim University, No 17

Source Book of Medieval Indian History in Hindi

Vol VI

History of the Post-Timur Sultans of Delhi, Part I

(1399-1526)

By Saiyid Athar Abbas Rizvi, M A, Ph D

FIRST EDITION

1958

PRINTED AT THE SAMMELAN MUDRANALAYA, PRAYAG
FOR THE DEPTT OF HISTORY, ALIGARH MUSLIM UNIVERSITY

डाक्टर ज़ाकिर हुसेन ख़ां

राज्यपाल बिहार

के

चरणों में

सादर समर्पित

भूमिका

इस पुस्तक में १३९९ से १५२६ ई० तक के देहली के सुल्तानो के इतिहास से सम्बन्धित समस्त प्रमुख समकालीन एव बाद के फ़ारसी के ऐतिहासिक ग्रन्थो का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। १३९९ से १५२६ ई० तक देहली के राजसिंहासन पर तीन वशो के सुल्तान आरूढ हुए। १३९९ से जून १४१४ ई० तक तुग़लुक़ वश के सुल्तान देहली पर नाममात्र को शासन करते रहे। उनका प्रभुत्व एव राज्य केवल देहली से थोडी दूर तक ही सीमित था। ४ जून, १४१४ ई० को खिज्र खा सिंहासनारूढ हुआ और उस समय से देहली का राज्य सैयिद सुल्तानो के अधीन हो गया। १९ अप्रैल, १४५१ ई० को सुल्तान बहलोल ने देहली के सिंहासन पर अधिकार जमा लिया और सैयिद सुल्तानो के वश का अन्त हो गया। इस प्रकार उस समय से १५२६ ई० तक अफ़गानो के लोदी वश के सुल्तान राज्य करते रहे। २० अप्रैल, १५२६ ई० को बाबर ने सुल्तान इबराहीम लोदी को पानीपत के रणक्षेत्र में पराजित कर दिया और अफगानो के राज्य का भी अन्त हो गया। तुग़लुक़ वश के अन्त तथा बाबर के सिंहासनारोहण के मध्य की महत्वपूर्ण घटना तैमूर का आक्रमण ही थी जिसने भारतवर्ष के केन्द्रीय शासन को छिन्न भिन्न कर दिया और देहली के सुल्तानों से कही अधिक महत्व प्रान्तीय राज्यों को प्राप्त हो गया, अत १३९९ से १५२६ ई० तक के इतिहास को दो भागो में विभाजित करके प्रकाशित किया जा रहा है। प्रस्तुत पहला भाग तो देहली के सुल्तानों के राज्य से सम्बन्धित है और दूसरा भाग उन प्रान्तीय राज्यो से जिनका प्रादुर्भाव फ़ीरोज़ तुग़लुक़ की मृत्यु के उपरान्त ही धीरे धीरे होने लगा था और जो तैमूर के आक्रमण के उपरान्त पूर्णत स्वतन्त्र हो गये।

१३९९ ई० से १५२६ ई० तक के सुल्तानो के इस इतिहास को दो भागो में विभाजित किया गया है:—

(१) १३९९ से १४५१ ई० तक का इतिहास।

(२) १४५१ से १५२६ ई० तक का इतिहास।

मुख्यत इसे दो वशो का इतिहास समझना चाहिये, सैयिद वश तथा लोदी वश। सैयिद वश के इतिहास से सम्बन्धित यहया बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह सिहरिन्दी की 'तारीख़े मुबारकशाही' एव ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद की 'तबक़ाते अकबरी' भाग १ के उद्धरणो का अनुवाद किया गया है। दूसरे भाग में अफ़गानो के सुल्तानो के इतिहास के अनुवाद सम्मिलित किये गये है। इनमें शेख रिज़कुल्लाह मुश्ताकी की 'वाकेआते मुश्ताकी', ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद की 'तबकाते अकबरी, अब्दुल्लाह की 'तारीख़े दाऊदी, अहमद यादगार की 'तारीख़े शाही' एव मुहम्मद कबीर बिन शेख इस्माईल की 'अफसानये शाहाने हिन्द' के उद्धरणो का अनुवाद किया गया है। भाग ब के इतिहासकारो में ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद के अतिरिक्त सभी अफगान इतिहासकार हैं। अहमद यादगार का इतिहास १९३० ई० में प्रकाशित हुआ था और तारीख़े दाऊदी' १९५४ ई० में। इनके अतिरिक्त 'वाकेआते मुश्ताकी' और 'अफसानये शाहाने हिन्द' अभी तक प्रकाशित नही हुए है और इनकी हस्तलिखित प्रतिया भी भारतवर्ष में उपलब्ध नही हैं, अत आवश्यक अशो का अनुवाद करते समय तत्सम्बधी पूरे पूरे इतिहासो का अनुवाद कर दिया गया है। इस प्रकार पूरे अनुवाद के कारण एक ही घटना की कई बार पुनरावृत्ति अनुपेक्षणीय हो गयी है। इतिहासकारो तथा उनकी कृतियो का परिचय अनुवाद के प्रारम्भ मे प्रस्तुत किया गया है।

अनुवाद करते समय फारसी से अंग्रेजी अनुवाद के सभी प्रचलित नियमो का, जिनका पालन

इतिहासकार करते रहे हैं, ध्यान में रखा गया है। भावार्थ के साथ साथ शब्दार्थ को विशेष महत्व दिया गया है। फारसी भाषा का हिन्दी भाषा में वास्तविक अनुवाद देने के प्रयास के कारण कही कही पर शब्दो की पुनरावृत्ति हो गई है। इसका कारण यह है कि इन शब्दो में से किसी को भी छोड देने से मूल-जैसा वातावरण न रह पाता। ग्रन्थो की पृष्ठसख्या पक्ति के आरम्भ में ही कोष्ठ में लिख दी गई है।

अग्रेजी अनुवाद के ग्रन्थो में पारिभाषिक शब्दो के अग्रेजी अनुवादो में दोष रह गये हैं। इस कारण मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अनेक भ्रमपूर्ण रूढियो को आश्रय मिल गया है। इस प्रकार की त्रुटियो से बचने के उद्देश्य से पारिभाषिक और मध्यकालीन वातावरण के परिचायक शब्दो को मूल रूप में ही ग्रहण किया गया है। ऐसे शब्दो की व्याख्या पाद-टिप्पणियो में कर दी गई है। मिथ्या प्रवादो का विवेचन भी, समकालीन तथा उत्तरवर्ती इतिहासो के आधार पर पाद-टिप्पणियो में ही किया गया है। नगरो के नाम प्राय मध्यकालीन फारसी रूप में ही रहने दिये गये हैं। मुझे खेद है कि कुछ आकर ग्रन्थो के न मिलने के कारण कही कही आवश्यक व्याख्याये इस पुस्तक में प्रस्तुत न की जा सकी। यदि सभव हुआ तो बाद के सस्करण में इस न्यूनता को दूर करने का प्रयत्न किया जायेगा।

'खलजीकालीन भारत', 'आदि-तुर्ककालीन भारत', तथा 'तुगलुककालीन भारत भाग १, २' के पश्चात् मध्यकालीन भारतीय इतिहास के आधारभूत, फारसी एव अरबी के इतिहासो के हिन्दी अनुवाद की यह पाचवी पुस्तक प्रकाशित हो रही है। पिछले चार ग्रन्थो का प्रकाशन डा० जाकिर हुसेन खा, भूतपूर्व उपकुलपति, अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के सतत प्रयत्नो के फलस्वरूप हुआ और इस ग्रन्थ का भी प्रकाशन डाक्टर साहब ही की महती कृपा से सम्भव हुआ। उनकी इस सुलभ कृपा के लिये मैं जितनी कृतज्ञता प्रकट करू, कम है। डाक्टर साहब को राष्ट्र तथा राष्ट्र-भाषा से विशेष प्रेम है। उनकी यह हार्दिक इच्छा रही है कि इस ग्रन्थमाला की समस्त पुस्तकें अलीगढ विश्वविद्यालय के इतिहास-विभाग द्वारा ही प्रकाशित हो और वे इसके लिये बराबर प्रयत्नशील हैं।

इस ग्रन्थमाला की तैयारी में अलीगढ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रोफसर नूरुल-हसन एम० ए०, डी० फिल० (आँक्सन) द्वारा मुझे विशेष प्रेरणा तथा सहायता मिली है। उन्होने मेरी कठिनाइयो को दूर किया और अपने सत्परामर्श एव अपनी मृदु आलोचनाओ द्वारा मेरे कार्य को सुचारु बनाने की कृपा की। बहुमूल्य सुझावो तथा सामयिक प्रोत्साहन के लिए मैं उनका विशेष आभारी हू। पुस्तको के मिलने की समस्त कठिनाइया विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री सैयिद बशीरुद्दीन की उदार कृपा से दूर होती रही, या यह कहिये कि उनकी कृपा से मुझे पुस्तको के मिलने में कठिनाई का अनुभव ही नही हुआ। उनको धन्यवाद देना मेरा परम कर्तव्य है। राजनीति-विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर मुहम्मद हबीब द्वारा मुझे बराबर प्रोत्साहन मिलता रहा है। इसके लिए मैं उनका आभारी हू। सम्मेलन मुद्रणालय प्रयाग के मैनेजर श्री सीताराम गुण्ठे ने अपने प्रेस कर्मचारियो के सहयोग से इस पुस्तक की छपाई में जिस परिश्रम और उत्साह को प्रदर्शित किया है उसके लिए मैं उनका आभारी हू। प्रूफ की देख-भाल का कार्य श्री श्रवणकुमार श्रीवास्तव द्वारा बडी ही सलग्नता से होता रहा। इसके लिये मैं उन्हें विशेष धन्यवाद देता हू।

अपने इस कार्य में मुझे अपने सभी मित्रो से हर प्रकार की सहायता मिलती रही है। स्थानाभाव के कारण मैं उनके नाम नही लिख सका हू, किन्तु मुझे विश्वास है कि वे अपने प्रति मेरे भावो से परिचित हैं।

सचिव
स्वतत्रता-सग्राम इतिहास
परामर्श समिति, नजरबाग
लखनऊ
दिसम्बर १९५८

सैयिद अतहर अब्बास रिजवी
एम० ए०, पी-एच० डी०
यू० पी० एजूकेशनल सर्विस

अनूदित ग्रन्थों की समीक्षा

यहया बिन अहमद अब्दुल्लाह सिहरिन्दी

तारीखे मुबारकशाही

फीरोजशाह के उत्तराधिकारियो एव सैयिद सुल्तानो के इतिहास का प्रमुख सूत्र यहया बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह सिहरिन्दी है। उसने अपने इतिहास में अपने सम्बन्ध में कोई प्रकाश नही डाला है। सर जदुनाथ सरकार ने श्री के० के० वासू द्वारा 'तारीखे मुबारकशाही' के अग्रेजी भाषा के अनुवाद के प्राक्कथन में लिखा है कि देहली के सुल्तानो के अन्य इतिहासकार सुन्नी धर्म का पालन करते थे, केवल यहया ही शीआ धर्म का अनुयायी था अत इस कारण उसका इतिहास और भी रोचक हो गया है। पता नही सर जदुनाथ सरकार को यह सूचना कहा से प्राप्त हुई, कारण कि इस प्रकार का कोई सकेत न तो 'तारीखे मुबारकशाही' में है और न इस विषय में किसी बाद के इतिहासकार ने कोई प्रकाश डाला है। यहया ने अपने इतिहास की भूमिका में मुहम्मद साहब की प्रशसा के उपरान्त जिस प्रकार चारो खलीफाओ की प्रशसा की है उससे पता चलता है कि वह शीआ न था अपितु सुन्नी ही था और सर जदुनाथ सरकार का यह निष्कर्ष भ्रममात्र ही प्रतीत होता है।

यहया बिन अब्दुल्लाह सिहरिन्दी ने अपना इतिहास सैयिद वश के सुल्तान मुइज्जुद्दीन अबुल फतह मुबारक शाह को, जिसने ८२४ हि० (१४२१ ई०) से ८३७ हि० (१४३३ ई०) तक राज्य किया, समर्पित किया। इस इतिहास में सुल्तान मुइज्जुद्दीन मुहम्मद बिन साम से लेकर शाबान ८३१ हि० (१४२८ ई०) तक के देहली के सुल्तानो का हाल लिखा गया था किन्तु बाद में लेखक ने इसमें ८३८ हि० (१४३४ ई०) तक का विवरण और बढा दिया। जिस समय यह इतिहास लिखा गया, कुछ अन्य ग्रन्थ, जो अब अप्राप्य है, लेखक को अवश्य उपलब्ध रहे होगे।

सुल्तान फीरोज के उत्तराधिकारियो एव सैयिद सुल्तानो के इतिहास के सम्बन्ध में यहया के विवरण को बडा ही महत्व प्राप्त है। वही हमारी जानकारी का एकमात्र साधन है। 'तबकाते अकबरी', 'तारीखे फिरिश्ता' तथा अन्य इतिहासो में उसी के विवरण को थोडा बहुत घटा बढाकर नकल किया गया है। यद्यपि वह सैयिद सुल्तानो का आश्रित था किन्तु उसके विवरण से यह कही भी नही पता चलता कि उसने इन सुल्तानो की अनावश्यक प्रशसा का प्रयत्न किया है। उसने मुइज्जुद्दीन मुहम्मद बिन साम के समय से लेकर फीरोज शाह के राज्यकाल तक जिस निष्पक्षता से अपना इतिहास लिखा है, उसी प्रकार सैयिद सुल्तानो के विषय में भी बिना किसी पक्षपात के उल्लेख किया है। उसकी रचना में उस युग की घटनाए बडे ही क्रम से पाई जाती है और सैयिद सुल्तानो के राज्य का जिस प्रकार विकास तथा पतन हुआ उसकी झाकी बडे विशद रूप में इस इतिहास में मिलती है। यदि यहया का यह इतिहास हमें उपलब्ध न होता तो सम्भवत १३८० से १४३४ ई० तक का इतिहास हमें कही न मिल पाता और लगभग ५५ वर्ष की घटनाए अधकार के गर्भ में ही रहती।

निजामुद्दीन अहमद वख्शी

तवकाते अकवरी

ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद मुकीम हरेवी अकवर के समय में वख्शी था। सर्व प्रथम वह अकवर के राज्यकाल के २९वें वर्ष में गुजरात का वख्शी नियुक्त हुआ। तत्पश्चात् ३७वें वर्ष में राज्य का वख्शी नियुक्त हुआ। १००३ हि० (१५९४ ई०) में ४५ वर्ष में उसकी मृत्यु हो गई।

उसने 'तवकाते अकवरी' की रचना १००१ हि० (१५९२-९३ ई०) में समाप्त की किन्तु वाद में १००२ हि० (१५९३-९४ ई०) का भी हाल लिख दिया। इसमें गजनवियो के समय से लेकर १००२ हि० (१५९३-९४ ई०) तक का हिन्दुस्तान का इतिहास लिखा गया है। देहली के सुल्तानो का हाल उसने वडे निष्पक्ष भाव से लिखा है। सुल्तान फीरोज शाह के उत्तराधिकारियो एव सैयिद सुल्तानो का हाल उसने अधिकाश यहया की 'तारीखे मुबारकशाही' से लिया है किन्तु कही कही वहुत सी बाते जो 'तारीखे मुवारकशाही' में स्पष्ट नही है, स्पष्ट कर दी है।

शेख रिज्कुल्लाह मुश्ताकी

वाकेआते मुश्ताकी

शेख रिज्कुल्लाह मुश्ताकी बिन सादुल्लाह देहलवी का जन्म ८९७ हि० (१४९१-९२ ई०) में हुआ। उसका पिता सादुल्लाह खाने जहा के पुत्र अहमद खा का आश्रित था।[१] शेख रिज्कुल्लाह भी वहुत से अफगान अमीरों का विश्वासपात्र था और उनकी गोष्ठियों में उपस्थित रहा करता था। वह दरवेशो के समान जीवन व्यतीत करता था और अपने समकालीन दरवेशो की गोष्ठियो मे उपस्थित रहा करता था। उसकी मृत्यु २० रबी-उल-अव्वल ९८९ हि० (२४ अप्रैल, १५८१ ई०) को हुई। वह हिन्दी तथा फारसी दोनो भाषाओ में कविताए करता था। हिन्दी कविताओ मे उसने अपना उपनाम 'राजन' रक्खा था।

उसने अपने इतिहास की भूमिका में लिखा है कि वह अपने समकालीन योग्य व्यक्तियों की सेवा में उपस्थित रहा करता और उनकी वातो से लाभान्वित होता रहता था। उसने उनसे कुछ विचित्र कहानिया तथा आश्चर्यजनक घटनाए सुनी और उनमें से कुछ स्वय अपनी आखो से देखी। उन विद्वानो एव महान् व्यक्तियो के निधन के उपरान्त वह उन कहानियो का उल्लेख अन्य लोगो से किया करता था। वाद में अपने किसी मित्र के आग्रह पर उसने इन कहानियों को पुस्तक के रूप में सकलित किया और उसका नाम 'वाकेआते मुश्ताकी' रखा। इसमें सुल्तान वहलोल के राज्यकाल से लेकर सुल्तान जलालुद्दीन मुहम्मद अकवर वादशाह के राज्यकाल तक की विभिन्न घटनाओ का उल्लेख है। इसमें लोदी वश के सुल्तानो, वावर, हुमायूं, अकवर तथा सूर वश के सुल्तानो से सम्वन्धित विभिन्न कहानिया का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त मालवा के गयासुद्दीन खलजी तथा नासिरुद्दीन खलजी एव गुजरात के मुजफ्फरशाह से सम्वन्धित भी कुछ कहानियो का उल्लेख किया गया है। रिज्कुल्लाह मुश्ताकी ने किसी स्थान पर भी इस वात का दावा नही किया है कि उसने किसी इतिहास की रचना की है। केवल उसने कहानियो का सकलन किया है। लोदी सुल्तानो से सम्वन्धित वहलोल, सिकन्दर तथा इवराहीम के सम्वन्ध में अनेक

१ वाकेआते मुश्ताकी पृ० ५८।

कहानियो एव घटनाओ का विवरण दिया गया है। यद्यपि उसने अपनी इस पुस्तक की रचना अकबर के राज्यकाल में की किन्तु उसके पिता का तथा स्वय उसका अफगान अमीरो से विशेष सम्पर्क था। वे उनके आश्रित रह चुके थे अत उसने जिन कहानियो का विवरण किया है वे बडी ही महत्वपूर्ण हैं और इस युग के किसी अन्य प्रामाणिक इतिहास के अभाव में कहानियो के इस सकलन की उपेक्षा नही की जा सकती। कहानियो के प्रसग में उस समय की राजनैतिक घटनाओ के साथ साथ सामाजिक एव सास्कृतिक जीवन की भी झाकी मिल जाती है। सुल्तानो से सम्बन्धित कहानियो के साथ साथ रिज़कुल्लाह ने अमीरो से सम्बन्धित बहुत सी कहानियो का उल्लेख किया है और इस प्रकार बहुत से अमीरो के व्यक्तित्व को बडे स्पष्ट शब्दो में व्यक्त किया है।

यद्यपि उसकी कहानियो में बहुत सी अद्भुत तथा अलौकिक कहानिया भी हैं जिन्हें पढ बिना यह विश्वास ही नही हो सकता था कि किस प्रकार उस युग के लोग इन बातो पर विश्वास करते थे, तथापि इन्ही कहानियो में कही कही शासन प्रबन्ध सबधी भी बहुत सी बातें प्राप्त हो जाती हैं। इनसे पता चलता है कि सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल में गुप्तचर विभाग कितना अधिक उन्नति कर गया था कि बादशाह को साधारण से साधारण बात का भी पता चल जाता था और सीधे-सादे अफगान इस बात पर आश्चर्य किया करते थे कि उसे यह समाचार किस प्रकार प्राप्त होते हैं। अत उन्हे विश्वास था कि सुल्तान अवश्य ही किसी न किसी अलौकिक शक्ति का स्वामी है जिसके कारण उसको इन बातो का पता चल जाता है।

वाकआते मुश्ताकी की किसी भी प्रतिलिपि का भारतवर्ष मे अभी तक पता नही चल सका। इसकी केवल दो प्रतिया ब्रिटिश म्युजियम मे प्राप्य हैं। ब्रिटिश म्युजियम के रियू के कैटालॉग के दूसरे भाग के पृष्ठ ८०२ ब पर जो हस्तलिखित ग्रन्थ है उसके रोटोग्राफ के आधार पर अनुवाद किया गया है किन्तु ब्रिटिश म्युजियम मे एक अन्य प्रतिलिपि भी 'वाकआते मुश्ताकी' की है जिसके कुछ अश उपर्युक्त प्रतिलिपि से भिन्न हैं और कही कही वे उपर्युक्त प्रतिलिपि से अधिक स्पष्ट भी हैं अत उन अशो का अनुवाद पाद टिप्पणियो में कर दिया गया है और उस प्रतिलिपि का नाम 'ब' रखा गया है।

निज़ामुद्दीन अहमद बख्शी

तबकाते अकबरी

'तबकाते अकबरी' में अफगान सुल्तानो का इतिहास अधिक ऐतिहासिक ढग से लिखा गया है। उन अलौकिक कहानियो को पूर्णत पृथक् कर दिया गया है जो कि 'वाकआते मुश्ताकी' तथा अन्य अफगान इतिहासकारो की रचनाओ में विद्यमान हैं, अत ख्वाजा निज़ामुद्दीन की तबकाते अकबरी को इस युग के इतिहासो में अधिक महत्व प्राप्त है।

अब्दुल्लाह

तारीखे दाऊदी

'तारीखे दाऊदी' के लेखक ने अपने इतिहास में किसी स्थान पर अपना पूरा नाम नही लिखा है केवल एक घटना के सम्बन्ध में अब्दुल्लाह शब्द का उल्लेख है जिससे प्रामाणिक रूप से तो यह नही कहा जा सकता कि इतिहासकार का नाम अब्दुल्लाह ही रहा होगा किन्तु ऐसा अनुमान होता है कि सम्भवत उसका नाम अब्दुल्लाह होगा। उसने यह देखकर कि अफगान सुल्तानो के विषय में लोग शनै शनै भूलते जा रहे हैं, अपने इतिहास की रचना की किन्तु 'वाकेआते मुश्ताकी' के समान इसमें भी अलौकिक कहानियो की भरमार है और अधिकाश कहानियाँ सम्भवत 'वाकआते मुश्ताकी' ही से प्राप्त की गई हैं।

तिथियो के सम्बन्ध मे भी उसने वडी भूलें की है और इस सम्बन्ध मे निजामुद्दीन अहमद की 'तवकाते अकवरी' उसकी इस रचना से अधिक महत्वपूर्ण है। उसने अपना यह इतिहास वगाल के अन्तिम अफ़गान सुल्तान दाऊद शाह बिन सुलेमान शाह (१५७२-७६ ई०) को समर्पित किया किन्तु इसकी रचना उसने जहागीर के राज्यकाल में प्रारम्भ की।

यह अनुवाद अलीगढ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष शख अब्दुर्रशीद द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ 'तवकाते अकवरी' से किया गया है किन्तु प्रकाशित ग्रन्थ में वहुत से स्थानो पर अशुद्धिया हैं जिन्हें अनुवाद करते समय ठीक कर दिया गया है। 'कबिल' जिसका अनुवाद अवरोध है प्रत्येक स्थान पर 'कत्ल' छापा गया है।[1] इस प्रकार की कुछ अन्य अशुद्धिया भी हैं।

अहमद यादगार

तारीखे शाही

अहमद यादगार ने अपने विषय में यह लिखा है कि वह सूर वादशाहो का एक प्राचीन सेवक था। उसने अपने पिता के विषय में लिखा है कि वह १५३६-६७ ई० म वावर के तीसरे पुत्र मिर्ज़ा असकरी के गुजरात के अभियान के समय उसका वज़ीर था। उसने अपनी तारीखे शाही' अथवा 'तारीखे सलातीने अफागेना' की रचना दाऊद शाह बिन सुलेमान शाह के सकेत पर की किन्तु यह रचना भी जहागीर के राज्यकाल में ही समाप्त हुई। इसमें सुल्तान वहलोल लोदी (१४५१-१४८८ ई०) सिकन्दर लोदी (१४८८-१५१७ ई०) इवराहीम लोदी (१५१७-१५२६ ई०), शरशाह (१५३९-१५४५ ई०), इस्लाम शाह (१५४५-१५५२ ई०), फीरोज़ शाह (२ मास), आदिल शाह (१५५२-१५५३ ई०), इवराहीम सूर (१५५३-१५५४ ई०), सिकन्दर शाह (१५५४ ई०) का इतिहास लिखा गया है। इसके साथ साथ वावर, हुमायूँ तथा अकवर के इतिहास से भी सम्बन्धित विभिन्न घटनाओ का उल्लख कर दिया गया है किन्तु उसका मुख्य उद्देश्य अफगान सुल्तानो के इतिहास की रचना था।

अफगान सुल्तानो के अन्य इतिहासकारो के समान अहमद यादगार के इतिहास में भी बहुत सी अलौकिक घटनाओ का विवरण मिलता है और कुछ घटनाए तो पूर्णत 'वाकआते मुश्ताकी' से उद्धृत ज्ञात होती हैं। अहमद यादगार ने 'तारीखे निज़ामी (तवकाते अकवरी)' तथा मादेनुल अख्बार को अपनी रचना का आधार वताया है। सम्भवत 'मादेनुल अखवार' से तात्पर्य अहमद बिन वहवल बिन जमाल कम्बोह की 'मादने अख्बारे अहमदी' अथवा 'मादने अखबारे जहागीरी' से है जिसकी रचना १०२३ हि० (१६१४ ई०) में हुई।

अफ़सानये शाहाने

मुहम्मद कबीर बिन शेख इस्माईल

मुहम्मद कबीर बिन शेख इस्माईल एक अफगान सन्त शख खलीलुल्लाह हक्कानी की पुत्री का पुत्र था। शख खलील राजगीर अथवा राजगढ पटना जिले के निवासी थे। 'अफसानये शाहान' में १४० कहानिया तथा अन्य छोटे-छोट लोदी एव सूर वश के सुल्तानो से सम्बन्धित चुटकलों का विवरण है। इन कहानियो मे भी अलौकिक घटनाओ की प्रचुरता है और अन्य अफगानो के इतिहासो की अपेक्षा कही अधिक इस प्रकार की घटनाओं का विवरण दिया गया है, किन्तु इन कहानियो से अन्य कहानियो की भाति उस समय की बहुत सी सामाजिक एव सास्कृतिक वातो का पता चल जाता है।

1 तारीखे दाउदी (पृ० ६, १८, १६)।

विषय-सूची

भाग अ

भाग ब

भाग अ

सैयिद सुल्तानों के इतिहास

यह्या बिन अहमद अब्दुल्लाह सिहरिन्दी

(क) तारीखे मुबारकशाही

ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद

(ख) तबकात अकबरी

तारीखे मुबारकशाही

लेखक—यह्या बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह सिहरिन्दी

(प्रकाशन—कलकत्ता १९३१)

तैमूर के आक्रमण के उपरान्त देहली सल्तनत की दुर्दशा

अकाल तथा महामारी

(१६७) तैमूर के चले जाने के उपरान्त देहली के आस पास तथा उन समस्त स्थानों में जहा से होकर उसकी सेना गुजरी थी, महामारी तथा अकाल का प्रकोप हुआ। कुछ लोगों की महामारी तथा कुछ लोगों की भुखमरी के कारण मृत्यु हो गई। देहली दो मास तक बडी ही अव्यवस्थित तथा शोचनीय दशा मे रही।

नासिरुद्दीन नुसरत शाह का राज-सिहासन हेतु सघर्ष

रजब ८०१ हि० (मार्च-अप्रैल १३९९ ई०) में सुल्तान नासिरुद्दीन नुसरत शाह[1], जो इक्बाल खा के विश्वासघात के कारण भाग कर दोआब में चला गया था, थोडी सी सेना लेकर मेरठ पहुचा। आदिल खा चार हाथियों तथा अपनी सेना सहित सुल्तान से मिल गया। (सुल्तान ने) विश्वासघात द्वारा उसे बन्दी बना लिया तथा हाथियो पर अधिकार जमा लिया। दोआब की प्रजा जो मुगलो के उत्पात से सुरक्षित हो गई थी उसके पास एकत्र होने लगी। वह (नासिरुद्दीन) २,००० अश्वारोहियों सहित फीरोजाबाद पहुचा और देहली पर, यद्यपि उसकी बडी दुर्दशा हो चुकी थी, अधिकार प्राप्त कर लिया। शिहाब खा मेवात से दस हाथियो तथा अपने सैनिको को लेकर और मलिक अल्मास दोआब से आकर उससे मिल गये।

जब सुल्तान के पास अत्यधिक सेना एकत्र हो गई तो उसने इकबाल खा के विनाश हेतु शिहाब (१६८) खा को बरन[2] भेजा। मार्ग में थोडे से हिन्दू पदातियो ने शिहाब खा पर रात्रि मे छापा मारा। शिहाब खा की हत्या कर दी गई और उसकी सेना छिन्न-भिन्न हो गई। युद्ध के हाथी कुछ न कर सके।

इकबाल खा की उन्नति

इक्बाल खा को जब यह ज्ञात हुआ तो वह शीघ्रातिशीघ्र वहा पहुचा और हाथियो पर अधिकार जमा लिया। नित्यप्रति उसकी शक्ति तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होने लगी। प्रत्येक दिशा से उसके पास सैनिक एकत्र होने लगे तथा सुल्तान नासिरुद्दीन की स्थिति डावाडोल होने लगी।

१ वह सुल्तान फ़ीरोज़ का पौत्र था।

२ आधुनिक बुलन्दशहर, (उत्तर प्रदेश मे) देहली के समीप।

३ एक पोथी मे 'बाही मुदन्द' है अर्थात् युद्ध न कर सके। एक अन्य पोथी मे 'राही मुदन्द' है जिसका अर्थ 'भाग खडे हुये' हो सकता है।

देहली का इकबाल के अधीन होना

रबी-उल-अव्वल[1] ८०३ हि० (दिसम्बर-जनवरी १४००-१४०१ ई०) मे इकबाल खा ने बरन से देहली पर चढाई की। नुसरत शाह फीरोजाबाद को छोड कर मेवात की ओर चल दिया और उसकी वही मृत्यु हो गई। देहली इकबाल खा के अधिकार में आ गई। उसने सीरी के कोट[2] में निवास ग्रहण किया।

देहली का पुन. बसना

शहर (देहली) के कुछ लोग, जो मुगलो के हाथो से बच गय थ, देहली मे पहुच कर निवास करने लगे। थोडे से समय में सीरी का कोट आबाद तथा सम्पन्न हो गया।

इकबाल के राज्य का विस्तार

उसने दोआब के मध्य की शिक[3] तथा हवाली[4] की अक्तार्आं[5] को अपने अधिकार मे कर लिया किन्तु प्रान्तो के कस्बे[6], जिस प्रकार अमीरो तथा मलिको के अधिकार में थे, उसी प्रकार उनके अधिकार में रहे।

अमीरो के राज्य के क्षेत्र

गुजरात प्रदेश तथा उसके आस पास के स्थान जफर खा वजीहुलमुल्क के अधीन रहे। मुलतान तथा दीबालपुर की शिक एव सिन्ध का भूभाग मसनदे आली खिज्र खा के अधीन रहा। महोबा तथा कालपी की शिक मलिकजादा फीरोज के पुत्र महमूद खा, हिन्दुस्तान की ओर की अक्तायें कन्नौज, (१६९) अवध, कडा, दलमऊ, सन्डीला, बहराइच, बिहार तथा जौनपुर ख्वाजये जहा के, धार की शिक दिलावर खा के, सामाना की शिक गालिब खा के तथा ब्याना की शिक शम्स खा औहदी के, अधिकार मे रही। देहली का राज्य इतने भागो में विभाजित हो गया।

इकबाल का ब्याना पर आक्रमण तथा उसकी विजय

रबी-उल-अव्वल ८०२ हि० (नवम्बर १३९९ ई०) में इकबाल खा ने ब्याना की ओर चढाई की। शम्स खा, नूह व पतल[7] नामक कस्बो मे था। उनके मध्य में युद्ध हुआ। इकबाल खा का भाग्य

१ मूल पुस्तक मे 'जमादि-उल-अव्वल' है किन्तु एक पोथी म 'रबी उल अव्वल' है और यही उचित है।
२ हिसारे सीरी।
३ शिक :—मोरलैण्ड के अनुसार १४वी शताब्दी ईसवी मे शिक शब्द का प्रयोग प्रान्तो के लिये किया जाता था किन्तु बरनी के एक उल्लेख से पता चलता है कि बल्बन के समय मे इस शब्द का प्रयोग विलायत के छोटे छोटे भागों के लिये किया जाता था [मोरलैण्ड 'दी एग्रेरियन सिस्टम आफ़ मुस्लिम इण्डिया', कैम्ब्रिज १९२९, पृ० २५, २७७, जियाउद्दीन बरनी 'तारीखे फ़ीरोजशाही' (कलकत्ता पृ० ८५), रिजवी 'आदि तुर्क कालीन भारत' (अलीगढ १९५६) पृ० १८४]।
४ देहली के समीप के स्थान।
५ देखिये पृ० ६ नोट न० १।
६ मूल पुस्तक में 'बिलाद' है।
७ एक पोथी में 'नूह व पतल' है। इसे 'नवा व पतल' अथवा 'नवा व पतल' भी पढ़ा जा सकता है

ने साथ दिया। शम्स खा पराजित होकर ब्याना भाग गया। दो हाथी, जो उसके अधिकार मे थे, इक़बाल खा को प्राप्त हो गये।

इक़बाल की कटिहर पर चढाई

उसने वहा से कटिहर की ओर चढाई की। राय हर सिंह से कर तथा उपहार प्राप्त करके शहर (देहली) की ओर लौट आया।

ख्वाजये जहा की मृत्यु तथा मुबारक खा का सुल्तान होना

उसी वर्ष ख्वाजये जहा की जौनपुर में मृत्यु हो गई। मलिक मुबारक करनफुल उसके स्थान पर बादशाह हुआ। उसने अपनी उपाधि सुल्तान मुबारक शाह रक्खी और समस्त अक़्ताओ पर अपना अधिकार जमा लिया।

इक़बाल का हिन्दुस्तान पर आक्रमण, सबीर पर विजय

जमादि-उल-अव्वल ८०३ हि० (दिसम्बर-जनवरी १४००-१४०१ ई०) म इक़बाल खा न पुन हिन्दुस्तान पर चढाई की। ब्याना के अमीर शम्स खा तथा मुबारक खा एव बहादुर नाहिर ने उससे भेंट की। उसने उन्हें भी अपने साथ ले लिया। जमादि-उल-आखिर[1] ८०३ हि० में दुष्ट सबीर तथा अन्य काफिरो ने काली नदी[2] के तट पर पटियाली के निकट अत्यधिक सेना सहित आक्रमण किया। (१७०) दूसरे दिन दोनो में युद्ध हुआ। ईश्वर ने, जो मुहम्मद साहब के धर्म का पोषक है[3], इक़बाल खा को विजय प्रदान की। अभागे काफिर पराजित हो गये। इक़बाल खा ने इटावा की सीमा तक उनका पीछा किया। कुछ मारे गये। कुछ बन्दी बना लिये गये।

इक़बाल का कन्नौज पहुचना, मुबारक शाह से सफल युद्ध

वहा से वह कन्नौज पहुचा। उसी प्रकार सुल्तानुश्शर्क़ मुबारक शाह भी हिन्दुस्तान की ओर स आया। दोनो सेनाओ के मध्य में गगा नदी थी। उसे कोई भी न पार कर सकता था। दो मास तक युद्ध होता रहा। अन्त में प्रत्येक दल अपने अपने घर की ओर चल दिया। मार्ग में इक़बाल खा, शम्स खा तथा मुबारक खा[4] से सशकित हो गया। उसने विश्वासघात द्वारा उन पर अधिकार जमा लिया और उनकी हत्या कर दी।

खिज्र खा पर तगी तुर्क बच्चे का आक्रमण तथा खिज्र खा की विजय

उसी वर्ष तगी खा तुर्क बच्चये मुल्तानी न, जो सामाना के अमीर ग़ालिब खा का जामाता था अत्यधिक सेना एकत्र करके मसनदे आली खिज्र खा पर दीवालपुर की ओर चढाई की। जब मसनदे आली को यह समाचार प्राप्त हुए तो वह बहुत बडी सेना लेकर अजोधन पहुचा। ९ रजब ८०३ हि० (२३ फ़रवरी १४०१ ई०) को दोनो सेनाओ में धन्दा नदी के निकट युद्ध हुआ। ईश्वर ने मसनदे

१ कुछ हस्तलिखित पोथियों में 'जमादि-उल अव्वल' है।
२ मूल पुस्तक में 'आबे ब्याह' है किन्तु इसे 'आबे सियाह' अथवा काली नदी होना चाहिये।
३ अर्थात् इस्लाम का पोषक है।
४ एक पोथी में केवल 'शम्स खा' है।

आली को विजय प्रदान की। तगी खा पराजित हो कर अभूहर[1] कस्बे मे पहुचा। गालिब खा तथा अन्य अमीरो ने जो उसके साथ थे तगी खा की विश्वासघात द्वारा हत्या कर दी।

सुल्तान महमूद का कन्नौज पर आक्रमण

८०४ हि० (१४०१-२ ई०) में सुल्तान महमूद धार से देहली पहुचा। इकबाल खा ने उसका स्वागत किया और उसे जहा पनाह नामक शुभ कूश्क[2] में उतारा। किन्तु शाही धन सम्पत्ति जो कुछ भी थी, वह अपने हाथ ही मे रक्खी। इस कारण उसमें तथा सुल्तान में मतभेद उत्पन्न हो गया। उसने इकबाल खा को अपने साथ लेकर पुन कन्नौज की ओर चढाई की।

सुल्तान इबराहीम (शर्की) का जौनपुर मे बादशाह होना और युद्ध हेतु निकलना

(१७१) इस वर्ष सुल्तान मुबारक शाह की मृत्यु हो गई। उसका लघु पुत्र इबराहीम उसके स्थान पर बादशाह हुआ और उसने अपनी उपाधि सुल्तान इबराहीम निश्चित की। जब उसे सुल्तान महमूद तथा इकबाल खा के पहुचने की सूचना मिली तो वह भी अत्यधिक सेना लेकर उससे युद्ध करने के लिए पहुचा। दोनो ओर की सेनाओ के आदमियों में युद्ध होने ही वाला था कि सुल्तान महमूद शिकार के बहाने से इकबाल खा की सेना से निकल गया और वह सुल्तान इबराहीम के पास पहुचा। सुल्तान इबराहीम ने सुल्तान (महमूद) के प्रति कुछ अधिक आज्ञाकारिता प्रदर्शित न की। वह वहा से भागकर कन्नौज चला गया। मुबारक शाह ने शाहजादा हरेवी[3] को, जो कन्नौज मे था, बाहर निकाल कर कन्नौज पर अधिकार जमा लिया। इकबाल खा देहली चला गया। सुल्तान इबराहीम जौनपुर वापस हो गया। कन्नौज वाले---सर्वसाधारण तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति—सुल्तान से मिल गये। दास तथा उससे सम्बन्धित लोग, जो छिन्न-भिन्न हो चुके थे, उसके पास पहुच गये। सक्षेप म, सुल्तान भी कन्नौज से सतुष्ट हो गया।

इकबाल का ग्वालियर पर प्रथम आक्रमण

जमादि-उल-अव्वल ८०५ हि० (नवम्बर-दिसम्बर १४०२ ई०) म इकबाल खा ने ग्वालियर पर चढाई की। ग्वालियर का किला मुगलो के उत्पात के समय दुष्ट बर सिह[4] ने मुसलमानों के अधिकार से विश्वासघात करके छीन लिया था। जब वह नरकवासी हो गया तो उसके स्थान पर उसका पुत्र बीरम देव गद्दी पर बैठा। उपर्युक्त किला उसके अधिकार म आ गया। वह अत्यधिक दृढता के कारण विजय न हो सकता था। इकबाल खा ने वहा से हट कर उसकी विलायत को विध्वस कर दिया और देहली की ओर लौट गया।

इकबाल का ग्वालियर पर दूसरा आक्रमण

(१७२) दूसरे वर्ष उसने पुन उस ओर चढाई की। बीरम देव ने अग्रसर होकर धौलपुर में इकबाल खा से युद्ध किया। प्रथम आक्रमण में ही पराजित होकर वह किले में घुस गया। बहुत से

१ कुछ पोथियों में 'अभूहर', कुछ में 'भूहर' तथा कुछ मे 'अबोहर' है। अबूहर का सविस्तार उल्लेख इब्ने बत्तूता ने भी किया है ['तुगलुककालीन भारत', भाग १ पृ० १७०]।
२ महल।
३ बदायूनी के अनुसार हिरात का शाहजादा फ़तह खा' है।
४ बदायूनी में 'हर सिंह', फ़िरिश्ता में 'नर सिंह' है।

काफिरा की हत्या कर दी गई। रात्रि म वह (वीरम) किला छोड कर ग्वालियर की ओर चल दिया। इकबाल खा ने ग्वालियर के किले तक काफिरा का पीछा किया। उनकी विलायत म, जो निर्जन जगल में थी, लूट मार करके देहली की ओर लौट गया।

तातार खा का नासिरुद्दीन महमूद शाह की उपाधि धारण करना

८०६ हि० (१४०३-४ ई०) में गुजरात के अमीर जफर खा के पुत्र तातार खा न विश्वासघात करके अपने पिता को बन्दी बना लिया और भरौच[1] में भेज दिया। उसन स्वय सुल्तान नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह की उपाधि धारण कर ली। उसने अत्यधिक सेना एकत्र करके देहली पर चढाई कर दी और निरन्तर कूच करता हुआ उस ओर चला जा रहा था कि मार्ग म शम्स खा ने उसे विष दे दिया और उसकी उसी दिन मृत्यु हो गई। दुष्ट ससार ने ऐसे वीर, सहनशील तथा दानी बादशाह की क्षण भर में हत्या कर दी। सक्षेप म, जब उस फिरिश्तो सरीखे सदाचारी बादशाह की हत्या कर दी गई तो राता रात जफर खा को भरौच से सेना में लाया गया। समस्त सेना तथा परिजन उसके द्वारा पोषित हुए थे अत वे उसके आज्ञाकारी हो गए।

इकबाल का इटावा पर आक्रमण

८०७ हि० (१४०४-५ ई०) में इकबाल खा न इटावा की ओर चढाई की। राय सबीर, राय ग्वालियर, राय जालबाहर[2] तथा अन्य रायो ने इटावा में पहुँच कर किले को बन्द कर लिया। चार मास तक अभागे काफिर युद्ध करते रहे। अन्त म राय ग्वालियर न चार हाथी जो उसके पास थे, देकर सधि कर ली।

इकबाल का कन्नौज पर आक्रमण

(१७३) शव्वाल ८०७ हि० (अप्रैल १४०५ ई०) म इकबाल खा ने इटावा से कन्नौज की ओर प्रस्थान किया और सुल्तान महमूद से भीषण युद्ध किया। किले के दृढ होने के कारण वह उसे कोई हानि न पहुचा सका और असफल होकर (देहली) लौट आया।

इकबाल का सामाना पर आक्रमण

मुहर्रम ८०८ हि० (जून-जुलाई १४०५ ई०) म इकबाल खा न सामाना पर चढाई की। बहराम खा तुर्क बच्चा, जिसके भतीजे का सारग खा ने विरोध किया था, उसके भय से भाग कर हरहूर[3] पर्वत में चला गया। इकबाल खा न हरहूर पर्वत के अरूवर कस्बे म पडाव किया। कुतुबुल अक्ताब मखदूम सैयिद जलालुलहक वश्शरा वद्दीन बुखारी[4] के नाती इल्मुद्दीन मध्यस्थ बने। बहराम खा न उनके विश्वास पर उससे भेट की।

१ कुछ हस्तलिखित पोथियों म 'असावल' है।

२ 'तबकाते अकबरी' में 'जालहार'।

३ कुछ हस्तलिखित पोथियों मे 'हल हर' तबकाते अकबरी' मे 'बदहर'।

४ सैयिद जलाल बुखारी —बुखारा के मूल निवासी थे वे भारतवर्ष आकर शेख बहाउद्दीन जकरिया (मृत्यु १२६६ ई०) के शिष्य हो गये। मखदूम जहानिया इन्हीं के पौत्र थे।

इकबाल का मुल्तान की ओर प्रस्थान

वहा से उसने मुल्तान की ओर प्रस्थान किया। जब वह (इकबाल खा) राय कमाल मीन की तिलौंदी[1] में पहुचा तो उसने बहराम खा, राय दाऊद कमाल मीन, तथा राय हीनू ज्वालजी[2] भट्टी को (१७४) बन्दी बना लिया। तीसरे दिन विश्वासघाती इकबाल खा ने उस सिंह अथवा बहराम खा की खाल खिचवा ली। अन्य लोगो को बन्दी बना कर तथा उनकी ग्रीवा में जजीर डाल कर अपने साथ ले गया। जब वह धन्धह[3] तट पर अजोधन के भूभाग के निकट पहुचा तो मसनदे आली खिज्र खा बहुत बडी सेना तथा परिजन लेकर, जिनमें प्रत्येक रण-क्षेत्र का सिंह था, इकबाल खा से युद्ध करने के लिए निकला और उसने समझ लिया कि विश्वासघाती की सेना का बुरा समय आ गया है क्योकि वचन तोडना स्त्रियो का कार्य है।

इकबाल खा तथा खिज्र खा का युद्ध, इकबाल की पराजय

१९ जमादि-उल अव्वल ८०८ हि० (१२ नवम्बर १४०५ ई०) को दोनो सेनाओ म युद्ध हुआ। क्योकि इकबाल खा के दुर्भाग्य (का समय) प्रारम्भ हो गया था अत वह प्रथम आक्रमण ही में पराजित हो गया। मसनदे आली ने उस विश्वासघाती का पीछा किया। इकबाल खा का घोडा आहत हो चुका था। वह बाहर न निकल सका। उसका पाव कीचड में फस गया। सिंह उस पिशाच के सिर पर पहुच गये। इकबाल ने कुछ हाथ पाव मारे किन्तु अन्त में मार डाला गया। उसका सिर काट कर फतहपुर भेज दिया गया। सक्षेप में, दौलत खा, इख्तियार खा तथा अन्य अमीरो ने देहली से सुल्तान महमूद के पास आदमी भेजे और उससे राज्य ग्रहण करने के विषय में आग्रह किया।

सुल्तान महमूद का देहली पर अधिकार जमाना

(१७५) जमादि-उल-आखिर ८०८ हि० (नवम्बर-दिसम्बर १४०५ ई०) में सुल्तान कन्नौज मे थोडे से सैनिको को लेकर शहर (देहली) में प्रविष्ट हुआ और उसने राज्य पर अधिकार जमा लिया। उसने इकबाल खा के परिजनों को देहली से निकलवा कर कोल भेज दिया, किन्तु उस सदाचारी बादशाह ने उसके सम्बन्धियो तथा परिजनो में से किसी को कोई हानि न पहुचाई। दोआब के मध्य की फौजदारी[4] दौलत खा को सौप दी। इख्तियार खा को फीरोजाबाद का कूश्क प्रदान कर दिया। इकलीम खा बहादुर नाहिर ने दो हाथी पेशकश के रूप में भेंट किये और सुल्तान के चरणो का चुम्बन किया।

१ तिलौंदी —जियाउद्दीन बरनी क अनुसार तिलौंदी बैलगाडी के समूह को कहते थे। प्रजा को जिस स्थान पर भी थोड़े से जल का पता चल जाता था वहा वे अपनी बैलगाड़िया तथा मवेशी ले जाते थे और वहीं वर्ष के बारह महीने अपनी स्त्री तथा बच्चों के साथ निवास करते थे। (जिया उद्दीन बरनी 'तारीखे फ़ीरोजशाही', (कलकत्ता) पृ० ५३८, रिजवी 'तुग़लुककालीन भारत', भाग १, पृ० २८)।

२ एक हस्तलिखित पोथी म 'जुल्जैन भट्टी', फ़िरिश्ता मे 'राय हब्बू' 'राय रत्ती' का पुत्र।

३ इसे 'धन्दा' भी लिखा गया ह।

४ फ़ौजदारी —फ़ौजदार का काय, फ़ौजदार शब्द का प्रयोग देहली के सुल्तानों के समकालीन इतिहासों में इससे पूर्व नहीं हुआ है। फ़ौजदार, सरकार के सैनिक तथा असैनिक शासन का मुख्य अधिकारी होता था।

सुल्तान महमूद का कन्नौज की ओर प्रस्थान

जमादि-उल-अव्वल ८०९ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १४०६ ई०) म सुल्तान ने कन्नौज की ओर प्रस्थान किया। दौलत खा को वहुत वडी सेना देकर मामाना की ओर भेजा। जब सुल्तान कन्नौज के निकट पहुचा तो सुल्तान इवराहीम ने कन्नौज के समक्ष गगा नदी के घाट पर पडाव किया। कुछ समय उपरान्त सुल्तान इवराहीम जौनपुर की ओर लौट गया। सुल्तान महमूद देहली की ओर वापस चला गया। जब सुल्तान देहली पहुचा तो जो सेना उसके साथ थी छिन भिन्न होकर अपनी अपनी अक्ताओं[1] को चली गई। सुल्तान इवराहीम मार्ग से वापिस होकर कन्नौज पहुचा। महमूद मलिक तुरमती, जो सुल्तान की ओर से वहा नियुक्त था, कन्नौज के किले में वन्द हो गया। चार मास तक युद्ध होता रहा। अन्त में जब किसी ने उसकी फरियाद न सुनी तो उसने विवश होकर सधि करके उससे भेंट की। उसने (सुल्तान इवराहीम ने) कन्नौज की अक्ता मलिक दौलत यार कम्पिला[2] के नाती इख्तियार खा को प्रदान कर दी। वर्षा ऋतु उसने कन्नौज ही मे व्यतीत की।

इवराहीम की देहली पर चढाई

(१७६) उसने जमादि-उल-अव्वल ८१० हि० (अक्तूबर-नवम्बर १४०७ ई०) म देहली की ओर प्रस्थान किया। नुसरत खा गुर्ग अन्दाज[3], सारग खा का पुत्र तातार खा, इकवाल खा का दास मलिक मरहवा, सुल्तान महमूद का साथ छोडकर उससे मिल गये। असद खा लोदी सम्भल के किले में घिर गया। दूसरे दिन सुल्तान इवराहीम ने सम्भल के किले पर विजय प्राप्त कर ली और उसे तातार खा के सिपुर्द कर दिया। वहा से वह निरन्तर कूच करता हुआ यमुना तट पर कीजा[4] घाट पर उतरा। वह उसे पार करनेवाला ही था कि उसे सूचना मिली कि जफर खा ने धार पर विजय प्राप्त कर ली है और दिलावर खा का पुत्र अलप खा उसके हाथों वन्दी वना लिया गया है और वह जौनपुर पर आक्रमण करने वाला है। वह (सुल्तान इवराहीम) कीजा नामक घाट से वापिस हो गया और निरन्तर कूच करता हुआ जौनपुर पहुचा किन्तु मलिक मरहवा को बरन के किले में छोड दिया और थोडी सी सेना उसे प्रदान कर दी।

सुल्तान महमूद का वरन की ओर प्रस्थान

इसी प्रकार जीकाद ८१० हि० (मार्च-अप्रैल १४०८ ई०) में सुल्तान महमूद देहली से वरन पहुचा। मलिक मरहवा उससे मुकावला करने के लिए वाहर निकला और उसने युद्ध किया। प्रथम आक्रमण में ही पराजित होकर वह किले के भीतर प्रविष्ट हो गया। शाही सेना भी उसका पीछा करती हुई (किले के) भीतर प्रविष्ट हो गई। मरहवा की हत्या हो गई।

१ अक्ता.—वह भूमि जो सेना के सरदारों को सेना रखने और उसका उचित प्रबन्ध करने के लिये दी जाती थी। हिन्दुस्तान के भिन्न-भिन्न भागों पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त तुर्क जिस भाग पर विजय प्राप्त करते थे, उस भाग को विभिन्न अक्ताओं में विभाजित करके प्रत्येक भाग एक सरदार को प्रदान कर देते थे।
२ कम्पिला का हाकिम।
३ भेडिये की हत्या करने वाला।
४ कुछ हस्तलिखित पोथियों मे 'कीचा'।

सुल्तान महमूद का सम्भल की ओर प्रस्थान

वहा से सुल्तान (महमूद) ने सम्भल की ओर प्रस्थान किया। वह अभी गगा तट पर भी न पहुचा था कि तातार खा किले को खाली करके कन्नौज की ओर चल दिया। (सुल्तान ने) सम्भल असद खा लोदी को प्रदान कर दिया। तत्पश्चात् वह शहर (देहली) की ओर लौट गया।

दौलत खा का बैरम खा द्वारा विरोध

(१७७) दौलत खा, जो सामाना की ओर नियुक्त हुआ था, जब सामाना के निकट पहुचा तो बैरम खा तुर्कबच्चे ने, जिसने बहराम खा की हत्या के उपरान्त सामाना की शिक[1] पर अधिकार जमाया था, विरोध प्रारम्भ कर दिया। ११ रजब ८०९ हि०[2] (२२ दिसम्बर १४०६ ई०) को सामाना से दो कोस पर दोनो में युद्ध हुआ। ईश्वर ने दौलत खा को विजय प्रदान की। बैरम खा पराजित होकर सरहिन्द चला गया। तत्पश्चात् क्षमा प्राप्त करके दौलत खा से मिल गया।

खिज्र खा का दौलत खा पर चढाई करना

इसके पूर्व उसने मसनदे आली खिज्र खा की अधीनता स्वीकार कर ली थी। जब मसनदे आली को यह सूचना प्राप्त हुई तो उसने बहुत बडी सेना लेकर दौलत खा पर चढाई की। जब वह फतहपुर[3] की सीमा पर पहुचा तो दौलत खा भाग कर यमुना के उस पार चला गया। जो अमीर तथा मलिक उसके सहायक थे उन सब ने मसनदे आली से भेंट की। हिसार फीरोजा की शिक किवाम खा को सौंप दी गई। सामाना तथा सुनाम की अक्तायें बैरम खा से लेकर मजलिसे आली जीरक खा को सौंप दी गईं। सरहिन्द की अक्ता तथा कुछ अन्य परगने बैरम खा को दे दिये गये और स्वय उसने फतहपुर की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान महमूद के अधिकार में दोआब के मध्य के कुछ स्थानो तथा रोहतक की अक्ताओ के अतिरिक्त कुछ भी न रह गया।

सुल्तान महमूद द्वारा हिसार फीरोजा पर आक्रमण

रजब ८११ हि० (नवम्बर-दिसम्बर १४०८ ई०) मे सुल्तान महमूद ने हिसार फीरोजा पर चढाई की। किवाम खा हिसार फीरोजा में घिर गया। कुछ दिन उपरान्त उसने सधि कर ली और अपने पुत्र को पेशकश सहित सुल्तान की सेवा में भेजा। वहा से सुल्तान धातरथ[4] होता हुआ देहली की ओर लौट गया।

खिज्र खा का सुल्तान को सीरी में घेर लेना

(१७८) जब यह समाचार मसनदे आली (खिज्र खा) को पहुचाये गये तो वह निरन्तर कूच करता हुआ फतहाबाद पहुचा। फतहाबाद के प्रजाजन को जो सुल्तान से मिल गये थे दण्ड दिया। १५ रमजान ८११ हि० (३१ जनवरी १४०९ ई०) को खिज्र खा ने मलिकुश्शर्क मलिक तुहफा को

१ शिक —देखिये पूर्व पृ० ४ नोट नं० ३।
२ फ़िरिश्ता के अनुसार ८१० हि०, बदायूनी के अनुसार ८१२ हि०।
३ कुछ पोथियों में 'फ़तहाबाद'।
४ कुछ पोथियों में 'धातरथ' है, प्रकाशित ग्रन्थ में 'धार तरहत' है।

अत्यधिक सेना देकर दोआब के मध्य में धातरथ पर आक्रमण करने के लिए भेजा। फतह खा अपने परिजनो सहित भाग कर दोआब की ओर चल दिया। कुछ लोग जोकि उस स्थान पर थे छिन्न-भिन्न हो गये और बन्दी बना लिए गये। बन्दिगी मसनदे आली रोहतक होता हुआ देहली पहुचा। सुल्तान महमूद सीरी के किले में तथा इख्तियार खा फीरोजाबाद के कूश्क[1] में बन्द हो गया। इसी प्रकार खाद्य सामग्री में कमी हो गयी। मसनदे आली यमुना नदी पार करके दोआब में प्रविष्ट हो गया। वहा से इन्द्री के सामने से पुन नदी के उस ओर होकर निरन्तर कूच करता हुआ फतहपुर पहुचा।

खिज्र खा का बैरम पर आक्रमण

८१२ हि० (१४०९-१० ई०) में बैरम खा तुर्क बच्चे ने मसनदे आली के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और दौलत खा से मिल गया। यह समाचार पाकर बन्दिगी मसनदे आली ने सरहिन्द की ओर चढाई की। बैरम खा ने अपने परिजन पर्वत में भेज दिए और स्वय सेना लेकर यमुना नदी पार की तथा दौलत खा से मिल गया। मसनदे आली ने उसका पीछा किया और यमुना नदी के तट पर पडाव डाल दिया। बैरम खा कोई उपाय न देख कर अत्यन्त शोचनीय दशा में मसनदे आली के पास पुन पहुचा। जो परगने उसके पास थे वे स्थायी रूप से उसे प्रदान कर दिये गये। मसनदे आली निरन्तर कूच करता हुआ फतहपुर की ओर पहुचा। इस वर्ष में सुल्तान भी शहर (देहली) ही में रहा और उसने किसी ओर प्रस्थान न किया।

खिज्र खा का रोहतक पर आक्रमण

८१३ हि० (१४१०-११ ई०) मे मसनदे आली न रोहतक की ओर प्रस्थान किया। मलिक इद्रीस ने ६ मास तक रोहतक के किले में बन्द होकर युद्ध किया। अत में विवश हो गया और पेशकश के (१७९) रूप में धन तथा बन्धक के रूप मे अपने पुत्र को देकर सन्धि कर ली एव आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। मसनदे आली सामाना होता हुआ फतहपुर की ओर लौट गया।

सुल्तान महमूद की दुर्दशा

मसनदे आली के लौट जाने के उपरान्त सुल्तान महमूद न कटिहर की ओर प्रस्थान किया और कुछ समय तक वहा शिकार खेलकर देहली की ओर लौट आया। सक्षेप मे, सुल्तान महमूद के कार्य में पूर्णत विघ्न पड गया। उसमें शासन प्रबन्ध तथा बादशाही करने की शक्ति न रही और वह सर्वदा भोग-विलास में ग्रस्त रहने लगा।

खिज्र खा का रोहतक, नारनौल, मेवात तथा देहली पर आक्रमण

८१४ हि० (१४११-१२ ई०) में मसनदे आली ने पुन रोहतक की ओर प्रस्थान किया। मलिक इद्रीस तथा उसका भाई मुबारिज़ खा हासी में शाही चरणो के चुम्बन के सम्मान द्वारा सम्मानित हुए। उसने उनके प्रति अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की। उस स्थान से नारनौल कस्बे को जो इकलीम खा बहादुर नाहिर के अधिकार में था विध्वस करता हुआ मेवात पहुच गया। उसने तजारा, सरहथ तथा खरोल नामक कस्बो को नष्ट कर दिया और मेवात के अधिकाश स्थानो को विध्वस करता हुआ लौटते

१ राजप्रासाद।

समय देहली पहुचा। उसने सीरी के किले को घेर लिया। सुल्तान महमूद किले में बन्द होकर युद्ध करता रहा। इसी प्रकार फीरोजाबाद के कूश्क[1] में इख्तियार खा, जो सुल्तान महमूद की ओर से वहा नियुक्त था, मसनदे आली से मिल गया। मसनदे आली सीरी के द्वार के सामने से प्रस्थान करके फीरोजाबाद के कूश्क में उतरा तथा दोआब के मध्य की अक्तायें तथा शहर के आस-पास के स्थान अपने अधिकार में कर लिये।

सुल्तान महमूद की मृत्यु

(१८०) अनाज तथा चारे की कमी के कारण मुहर्रम ८१५ हि० (अप्रैल-मई १४१२ ई०) में पानीपत होता हुआ फतहपुर की ओर लौट गया। जमादि-उल-अव्वल ८१५ हि० (अगस्त-सितम्बर १४१२ ई०) में सुल्तान महमूद ने कटिहर की ओर प्रस्थान किया। थोडे दिन तक वहा शिकार खेल कर वह देहली की ओर वापस हुआ। रजब मास (अक्तूबर-नवम्बर १४१२ ई०) में वह रुग्ण हो गया और मार्ग में उसकी मृत्यु हो गई। इन परिवर्तनो के बावजूद वह २० वर्ष तथा २ मास तक राज्य करता रहा।

सुल्तान की मृत्यु के उपरान्त अमीरो, मलिको तथा शाही दासा न दौलत खा की अधीनता स्वीकार कर ली। मुबारिज खा तथा मलिक इद्रीस ने मसनदे आली से विद्रोह कर दिया और वे दौलत खा से मिल गये। इस वर्ष मसनदे आली (खिज्र खा) भी फतहपुर मे रहा और देहली पर चढाई न की।

दौलत खा की कटिहर पर चढाई

मुहर्रम ८१६ हि० (अप्रैल-मई १४१३ ई०) में दौलत खा ने कटिहर की ओर प्रस्थान किया। राय हर सिंह तथा अन्य रायो ने उससे भेंट की। जब वह पटियाली कस्बे में पहुचा तो महाबत खा बदायूं का अमीर भी उससे मिल गया। इसी प्रकार सुल्तान इबराहीम के विषय मे ज्ञात हुआ कि उसने महमूद के पुत्र कादिर खा को घेर लिया है और दोनो में घोर युद्ध हो रहा है। किन्तु दौलत खा के पास इतनी (१८१) सेना न थी कि वह सुल्तान इबराहीम से युद्ध कर सकता।

खिज्र खा द्वारा हिसार फीरोजा, रोहतक, मेवात एव सम्भल पर चढाई

जमादि-उल-अव्वल ८१६ हि० (जुलाई-अगस्त १४१३ ई०) में वह देहली की ओर वापस हुआ। रमजान ८१६ हि० (नवम्बर-दिसम्बर १४१३ ई०) में मसनदे आली ने सेना लेकर देहली पर चढाई की। जब वह हिसार फीरोजा पहुँचा तो उस प्रदेश के अमीर तथा मलिक उससे मिल गये। मलिक इद्रीस रोहतक के किले में घिर गया। मसनदे आली मेवात की ओर चला गया। इकलीम खा[2] के भतीजे जलाल खा ने बहादुर नाहिर से भेंट की। वहा से लौट कर वह सम्भल के कस्बे में पहुचा और उसे नष्ट कर दिया।

खिज्र खा द्वारा देहली पर चढाई

जिलहिज्जा ८१६ हि० (फरवरी-मार्च १४१४ ई०) में वह पुन देहली पहुचा और सीरी के

१ महल।
२ प्रकाशित ग्रन्थ में 'इकलाम खा'।

द्वार के समक्ष पडाव किया। दौलत खा ४ मास तक घिरा रहा। अन्त मे मलिक लोना तथा शाही हितैषियो एव दासो ने भीतर ही भीतर विश्वासघात किया और नौबतखाने[1] के द्वार पर अधिकार जमा लिया। जब दौलत खा ने यह देखा कि अब उसके अधिकार में कुछ नही है तब उसने शरण की याचना की और मसनदे आली से भेट की। मसनदे आली ने दौलत खा को पदच्युत कर दिया और हिसार फीरोज़ा मे किवाम खा की देख-रेख में भेज दिया। उसने देहली पर स्वय अधिकार जमा लिया। यह घटना रबी-उल-अव्वल[2] ८१७ हि० (जून १४१४ ई०) में घटी।

१ नौबतख़ाना:—वह स्थान जहां से कुछ विशेष बाजे, जो केवल बादशाहों के महल मे बज सकते हैं, बजाये जाते हैं।

२ कुछ हस्तलिखित पोथियों के अनुसार '१७ रबी-उल-अव्वल ८१७ हि० (९ जून १४१४ ई०)'।

बन्दिगी रायाते आला[1] खिज्र खाँ

खिज्र खाँ की वशावली

(१८२) खिज्र खा मलिकुश्शर्क मलिक सुलेमान का पुत्र था। मलिक नसीरुलमुल्क मर्दान दौलत ने मलिक सुलेमान का बाल्यावस्था में पुत्र बनाकर, पालन-पोषण किया था। कहा जाता है कि वह एक सैयिद का पुत्र था। सैयिद जलालुद्दीन बुखारी मलिक मर्दान के घर में किसी कार्य से आये, मलिक मर्दान उनके समक्ष भोजन लाया और मलिक सुलेमान को आदेश दिया कि हाथ धुलवाये। सैयिद जलालुद्दीन ने कहा कि "यह सैयिद का पुत्र है, यह कार्य इसके लिए उचित नही।" क्योकि सैयिद जलालुद्दीन उसके सैयिद होने के साक्षी थे, अत वह नि सन्देह सैयिद होगा।

दूसरा प्रमाण उसके सैयिद होने का यह है कि वह दानी, वीर, सहनशील, दयालु, सत्यवादी, वचन का पक्का तथा पवित्र जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति था। यह समस्त गुण मुहम्मद साहब मे देखे गये हैं।

मलिक खिज्र को मुल्तान प्राप्त होना

मलिक मर्दान दौलत की मृत्यु के उपरान्त मुल्तान की अक्ता उसके पुत्र मलिक शेख को प्रदान की गई। उसकी भी शीघ्र मृत्यु हो गई। मुल्तान की अक्ता मलिक सुलेमान को दे दी गई। उसकी भी थोडे दिनो में मृत्यु हो गई। मुल्तान प्रदेश तथा उसके आस-पास के स्थान फीरोज शाह द्वारा बन्दिगी रायाते आला को प्राप्त हो गये। ईश्वर ने उसे महान् कार्यों के लिए उत्पन्न किया था और उसे बडा (१८३) भाग्यशाली बनाया था। उसका गौरव नित्यप्रति उन्नति पर था। देहली के राज्य पर अधिकार जमाने के पूर्व ईश्वर ने जो विजय बन्दिगी रायाते आला को प्रदान की, उसका उल्लेख इसके पूर्व हो चुका है।

खिज्र खा का सीरी मे प्रवेश, इनाम एव नियुक्तियाँ

१५ रबी-उल-अव्वल ८१७ हि० (४ जून १४१४ ई०) को वह शुभ मुहूर्त में सीरी के किले में पहुचा और सेना ने सुल्तान महमूद के कूश्क मे पडाव किया। शहर की प्रजा को जो इसके पूर्व पिछले राज्यकाल की दुर्घटनाओ के कारण छिन्न-भिन्न तथा दरिद्र हो चुकी थी उसने इनाम[2] दिया तथा अदरार[3]

१ रायाते आला —उच्च अथवा सम्मानित पताकायें। खिज्र खा की उपाधि सिंहासनारूढ होने के पूर्व मसनदे आला थी, किन्तु सिंहासनारूढ होने के उपरान्त उसने रायाते आला की उपाधि धारण की। इस उपाधि से पता चलता है कि सम्भवत वह बादशाह होने का दावा न करता था और अपने आप को केवल तैमूर का नायब समझता था।

२ वह भूमि जो किसी को उत्तम सेवा के कारण तथा पुरस्कार स्वरूप प्रदान की जाती थी।

३ विद्वानों तथा धार्मिक लोगों को दी जाने वाली सहायता, विशेष रूप से आर्थिक सहायता।

और वेतन निश्चित किये। उस भाग्यशाली के कारण सभी लोग सुखी तथा धन-धान्य सम्पन्न हो गय। उसने मलिकुश्शर्क, मलिक तुहफा को ताजुलमुल्क की उपाधि प्रदान की और उसे वज़ीर[1] नियुक्त किया। सैयदुस्सादात सैयिद सालिम को सहारनपुर की अक़्ता[2] तथा शिक़[3] प्रदान की और सभी कार्यों को उसके परामर्श से सम्पन्न कराता था। मलिक अब्दुर्रहीम को जिसे स्वर्गीय मलिक सुलेमान अपना पुत्र कहा करता था अलाउलमुल्क की उपाधि प्रदान की। मुल्तान तथा फतहपुर की अक्ता एव शिक उसको सौंप दी। मलिक सरोब को शहनये शहर[4] नियुक्त किया और अपना नायबे-गैबत[5] बनाया। मलिक खैरुद्दीन खानी आरिज़े ममालिक[6] तथा मलिक कालू शहनये पील[7] नियुक्त हुए। मलिक दाऊद को दबीरी[8] का पद प्रदान हुआ। इख्तियार खा को दोआब के मध्य की शिक प्रदान की गई। सुल्तान महमूद के जो दास उसके राज्यकाल में जिन परगना, ग्रामो तथा अक्ताओ के (१८४) स्वामी थे उन्हें उसने उसी प्रकार रहने दिया और उन्हें उनके परगनो में भेज दिया। राज्य क कार्य सुव्यवस्थित हो गये।

ताजुलमुल्क का कटिहर पर आक्रमण

८१७ हि० (१४१४-१५ ई०) में रायात आला न मलिकुश्शर्क ताजुलमुल्क को हिन्दुस्तान की सेनाओ सहित नियुक्त किया और वह स्वय शहर (देहली) में रहा। मलिक ताजुलमुल्क यमुना नदी पार करके लाहार[10] कस्बे में पहुचा और गगा नदी पार करके कटिहर की विलायत में प्रविष्ट हुआ। उस प्रदेश के अत्यधिक काफिरो को विध्वस कर दिया। राय हर सिंह भाग कर आवला[11] की घाटी में पहुचा। इस्लामी सेना के निकट पहुच जाने के कारण विवश होकर उसने कर तथा उपहार को प्रस्तुत किया। बदायूँ के अमीर महाबत खा न भी मलिक ताजुलमुल्क से भेंट की।

१ मुख्य मंत्री को वज़ीर कहते थे। राज्य के शासन प्रबन्ध तथा आय व्यय की व्यवस्था उसी क सिपुर्द होती थी।
२ देखिये पृ० ६ नोट न०१।
३ देखिये पृ० ४ नोट नं०३।
४ नगर का, विशेष रूप से राजधानी का, मुख्य प्रबन्धक।
५ राजधानी से बादशाह की अनुपस्थिति के समय जो अधिकारी राज्य के कार्य सम्पन्न करता था उसे 'नायबे गैबत' कहते थे।
६ आरिज़े ममालिक —दीवाने अर्ज़ (सेना विभाग) का मुख्य अधिकारी 'आरिज़े ममालिक' अथवा अर्ज़े ममालिक कहलाता था। सेना की भरती, निरीक्षण तथा सेना का समस्त प्रबन्ध उसके अधीन कर्मचारियों द्वारा होता था। युद्ध में सेनापति का कार्य करना उसके लिये आवश्यक न था किन्तु वह अथवा उसके नायब युद्ध में सेना के साथ जाते थे। रसद का प्रबन्ध तथा लूट के माल की देख भाल भी उसी को करनी होती थी।
७ शाही हाथियों का प्रबन्ध करने वाला मुख्य अधिकारी।
८ 'दीवाने इन्शा' का मुख्य अधिकारी दबीरे खास होता था। उसके अधीन अनेक दबीर होते थे। वे शाही पत्र, विजय पत्र आदि लिखा करते थे। सचिव का काय दबीर के सिपुर्द था।
९ साधारणत दोआब तथा अवध के मध्य का स्थान 'हिन्दुस्तान' कहलाता था।
१० अन्य हस्तलिखित पोथियों में 'आहार' है। यह बुलन्दशहर तथा मुरादाबाद के मध्य में है।
११ औला, आँला अथवा औलागंज, बरेली ज़िले में।

ग्वालियर, स्योरी तथा चदवार का अधीनता स्वीकार करना

वहा से रहव नदी के किनारे-किनारे वह स्वर्ग द्वार[1] के घाट पर पहुचा और गगा नदी पार की। खोर[2] तथा कम्पिल[3] के काफिरो को दण्ड देकर सकिया[4] कस्बे में होता हुआ बारहम[5] कस्बे में पहुचा। रापरी[6] का अमीर हसन खा तथा उसका भाई अमीर हमजा ताजुलमुल्क से मिल गये। राय सबीर चरण-चूमने के सम्मान द्वारा सम्मानित हुआ। ग्वालियर, स्योरी तथा चदवार[7] के काफिरो ने कर तथा धन प्रदान करके अधीनता स्वीकार कर ली। जलेसर[8] का कस्बा जोकि चदवार के काफिरों के हाथ में आ गया था, उनके हाथ से लेकर उसने वहा उस स्थान के प्राचीन मुसलमानों (१८५) को नियुक्त कर दिया और उन्हें अपना गुमाश्ता[9] बना दिया। वहा से काली नदी[10] के किनारे किनारे होता हुआ तथा इटावा के काफिरो को दण्ड देकर देहली की ओर लौट गया।

शाहजादा मुबारक को फीरोजपुर, सरहिन्द इत्यादि प्रदान किया जाना

८१८ हि० (१४१५-१६ ई०) में खिज्र खा ने अपने पुत्र शाहजादा मलिकुश्शर्क मलिक मुबारक को, जो बादशाही के योग्य था, फीरोजपुर, सरहिंद-का भूभाग तथा बैरम खा की मृत्यु के उपरान्त बैरम खा की समस्त अक्तायें प्रदान कर दी। पश्चिम दिशा के राज्य भी उसे दे दिये। मलिक सिद्धू नादिरा को शाहजादे का नायब[11] नियुक्त किया। वहा के कार्यों को भली भाति सपन्न करके जिलहिज्जा ८१८ हि० (फरवरी १४१६ ई०) में शाहजादा मलिक सिद्धू नादिरा, सामाना के अमीर जीरक खा तथा उस प्रदेश के अमीरो[12] एव मलिको[13] को लेकर शहर (देहली) की ओर लौटा।

१ स्वर्गद्वार अथवा स्वर्गद्वारी —फ़र्रुखाबाद जिले में जिसे सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ ने बसाया था। [इब्ने बत्तूता : *'यात्रा का विवरण'* (पेरिस), पृ० ३४२, बरनी· *'तारीखे फ़ीरोज़शाही'*, पृ० ४८५, रिज़वी· 'तुग़लुककालीन भारत', भाग १ (अलीगढ १६५६) पृ० ५३, २०३]

२ आधुनिक शम्साबाद, फ़र्रुखाबाद ज़िले मे।

३ कम्पिल अथवा कम्पिला :—यह भी फ़र्रुखाबाद ज़िले में है।

४ कुछ हस्तलिखित पोथियों में 'सकीना', कम्पिला तथा रापरी के मध्य में इटावा के १२ मील दक्षिण पूर्व।

५ कुछ हस्तलिखित पोथियों में 'पारहम'।

६ मैनपुरी ज़िले में मैनपुरी के दक्षिण-पश्चिम में ४४ मील पर।

७ यमुना नदी पर, आगरा के नीचे।

८ मथुरा के पूर्व ३८ मील पर, एटा ज़िले में।

६ एजेंट।

१० पुस्तक में 'आबे ब्याह—ब्याह नदी' है किन्तु इसे 'आबे सियाह—काली नदी' होना चाहिये।

११ नायब :—सहायक।

१२ अमीर :—दस सिपहसालारों का सरदार। इन्हें ३०-४० हज़ार तन्कों तक की अक्ता प्राप्त होती थी। दस सवारों के सरदार सरखेल तथा दस सरखेलों के सरदार सिपहसालार कहलाते थे। सिपहसालार को बीस हज़ार तन्कों तक की अक्ता प्राप्त होती थी।

१३ दस अमीरों का सरदार। इन्हें ५०-६० हज़ार तन्कों तक की अक्ता प्राप्त होती थी।

ताजुलमुल्क का ब्याना, ग्वालियर, कम्पिला की ओर प्रस्थान

८१९ हि० (१४१६-१७ ई०) में शाही सेना लेकर मलिक ताजुलमुल्क को ब्याना तथा ग्वालियर की ओर भेजा गया। ब्याना के क्षेत्र में पहुच कर उसने शम्स खा औहदी के भाई मलिक करीमुलमुल्क से भेंट की। वहां से वह ग्वालियर के क्षेत्र मे पहुचा। उसकी विलायत को विध्वस कर दिया। ग्वालियर तथा अन्य रायो से कर तथा उपहार लेकर उसने यमुना नदी चदवार के निकट पार की और कम्पिल तथा पटियाली[1] की ओर प्रस्थान किया।

कटिहर के हर सिह का अधीनता स्वीकार करना

कटिहर के शासक राय हर सिंह ने आज्ञाकारिता स्वीकार की। उससे कर तथा उपहार लेकर वह शहर की ओर लौट आया।

मलिक सिद्धू की हत्या

(१८६) मलिक सिद्धू नादिरा को सरहिन्द की अक्ता मे शाहजादे की ओर से भेजा गया था। जमादि-उल-अव्वल ८१९ हि० (जून-जुलाई १४१६ ई०) में बैरम खा के परिजन के कुछ तुर्क बच्चो ने विश्वासघात करके मलिक सिद्धू नादिरा की हत्या कर दी और सरहिन्द का किला अपने अधिकार में कर लिया। रायाते आला ने मलिक दाऊद दबीर[2] तथा जीरक खा को शाही सेना सहित उनके उपद्रव के दमन हेतु भेजा। तुर्क बच्चे भाग कर सतलदर[3] नदी के उस पार पर्वत मे घुस गये। शाही सेना ने भी पर्वत में उनका पीछा किया। वे दो मास तक पर्वत में रहे। पर्वत के अत्यधिक दृढ होने के कारण उस पर विजय न प्राप्त हो सकती थी। विजयी सेना लौट गई।

रायाते आला का नागौर, ग्वालियर तथा ब्याना की ओर प्रस्थान

रजब ८१९ हि० (अगस्त-सितम्बर १४१६ ई०) में सुल्तान अहमद गुजरात के बादशाह के नागौर[4] के किले को घेर लेने का समाचार प्राप्त हुआ। यह समाचार रायाते आला के समक्ष प्रस्तुत किया गया। रायाते आला ने तोक[5] तथा तोदा[6] से होकर नागौर की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान अहमद यह समाचार पाकर धार[7] की ओर चला गया। रायाते आला शहरे नौ झायन में प्रविष्ट हुआ। झायन के अमीर इलियास खा ने चरण चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। उस प्रदेश के उपद्रवियो को दण्ड देकर वह ग्वालियर की ओर बढा। ग्वालियर का राय घेर लिया गया। उपर्युक्त किले के अत्यधिक दृढ होने के कारण वह विजयी न हो सका। उसने ग्वालियर के राय से धन तथा कर लेकर ब्याना की ओर प्रस्थान

१ एटा जिले मे।
२ देखिये पृ० १५ नोट नं० ८।
३ सतलज।
४ जोधपुर के उत्तर पूर्व ७५ मील पर।
५ टोंक, राजपूताना में, अक्षाश २६° १०', देशान्तर ७५° ५६'।
६ जयपुर में, अक्षाश २६° ४, देशान्तर ७५° ३६'।
७ अक्षाश २०° ३६' देशान्तर ७५° २०' पर।

किया। शम्स खा औहदी ने भी धन, पेशकश तथा कर प्रस्तुत किये। वहा से विजय तथा सफलता पाकर वह देहली की ओर वापस हुआ।

तुगान रईस तथा तुर्क बच्चो का विद्रोह

(१८७) इसी प्रकार ८२० हि० (१४१७-१८ ई०) में तुगान रईस तथा कुछ तुर्क बच्चा के, जिन्होंने सिद्धू की हत्या की थी, विद्रोह के समाचार प्राप्त हुए। उनके विद्रोह को शान्त करने के लिए सामाना का अमीर जीरक खा बहुत बडी सेना देकर भजा गया। जब शाही सेना सामाना पहुची तो तुग़ान तथा कुछ अन्य तुर्क बच्चे, जिन्होंने सरहिन्द के किले में खाने जहा मुअज़्ज़म से सम्बन्धित मलिक कमाल बुद्धन को घेर लिया था, किला छोड कर पर्वत की ओर चले गये। जीरक खा उनका पीछा करता हुआ पायल[1] कस्बे में पहुचा। अन्त में तुगान रईस ने जुर्माने का धन देना स्वीकार किया और मलिक सिद्धू के हत्यारे तुर्क बच्चा को अपने समूह से पृथक् कर दिया। अपने पुत्र को उसने बन्धक के रूप में दिया। जीरक खा ने उसके पुत्र तथा जुर्माने के धन को राजधानी में भेज दिया और स्वय सामाना की ओर लौट गया।

ताजुलमुल्क का कटिहर के हर सिह के विरुद्ध भेजा जाना

८२१ हि० (१४१८-१९ ई०) में रायाते आला ने मलिक ताजुलमुल्क को बहुत बडी सेना देकर कटिहर के शासक हर सिंह के विद्रोह को शात करने के लिए भेजा। जब इस्लामी सेना ने गगा नदी पार की तो हर सिंह ने कटिहर की विलायत को नष्ट कर दिया और आवला के जगल में जो २४ कोस के घेरे में है प्रविष्ट हो गया। इस्लामी सेना ने उपर्युक्त जगल के निकट पडाव किया। हर सिंह जगल में घिर गया और उसे युद्ध करना पडा। ईश्वर ने इस्लामी सेना को विजय प्रदान की। अभागे काफिरो की समस्त धन सपत्ति, अस्त्र शस्त्र तथा घोडे, इस्लामी सेना को प्राप्त हो गये। हर सिंह भाग कर कुमायूँ पर्वत की ओर चला गया। दूसरे दिन २० हजार सवार उसका पीछा करने के लिए भेजे गये।

विजय के उपरान्त ताजुलमुल्क की वापसी

(१८८) मलिक ताजुलमुल्क न स्वय सेना तथा शिविर सहित उस स्थान पर पडाव किया। इस्लामी सेना ने रहब नदी को पार किया और कुमायूँ पर्वत तक उसका पीछा किया। हर सिंह पर्वत में प्रविष्ट हो गया। इस्लामी सेना को अत्यधिक लूट की सपत्ति प्राप्त हुई। वे वहा से पाचवें दिन वापिस हो गये। वहा से मलिक ताजुलमुल्क बदायू के निकट होता हुआ गगा तट पर आया और बजलाना घाट से नदी पार करके बदायूँ के अमीर महाबत खा को विदा करके स्वय निरन्तर कूच करता हुआ इटावा पहुचा। इटावा की विलायत विध्वस कर दी। राय सबीर इटावा का अधिकारी किले में बन्द हो गया। अन्त में उसने कर का धन तथा उपहार भेंट करके सधि कर ली।

ताजुलमुल्क का देहली पहुँचना

ताजुलमुल्क वहा से विजय तथा सफलता प्राप्त करके रबी-उल-आख़िर ८२१ हि० (मई-जून १४१८ ई०) में शहर (देहली) की ओर लौटा। जो कर तथा उपहार वह वहा से लाया

१ पायल अथवा बैला, अक्षाश ३०° ४५', देशान्तर ७७°।

था उन्हे उसने रायाते आला के समक्ष प्रस्तुत किया और शाही कृपा तथा दया द्वारा सम्मानित हुआ।

कटिहर, कोल, रहव तथा सम्भल की ओर रायाते आला का प्रस्थान

८२१ हि० (१४१८-१९ ई०) में रायाते आला ने कटिहर की ओर प्रस्थान किया। सर्व प्रथम कोल के विद्रोहियो को दण्ड दिया। तत्पश्चात् रहव तथा सभल[1] के जगलो का विनाश करके उस दिशा के उपद्रव का समूलोच्छेदन कर दिया।

वदायूं पर आक्रमण

उसने वहा से जीकाद ८२१ हि० (नवम्बर-दिसम्बर १४१९ ई०) में वदायूं की ओर प्रस्थान किया और पटियाली कस्वे के निकट गगा नदी पार की। जव महावत खा को रायाते आला के पहुँचन के समाचार मिले तो उसके हृदय पर आतक आरूढ हो गया और वह किले में वन्द हो जाने की व्यवस्था करने लगा। रायाते आला ने जिलहिज्जा ८२१ हि० (दिसम्बर १४१८, जनवरी १४१९ ई०) (१८९) में वदायूं के किले को घेर लिया। लगभग ६ मास तक महावत खा किले में वन्द होकर युद्ध करता रहा।

रायाते आला के विरुद्ध षड्यत्र

किले पर विजय प्राप्त होने वाली ही थी कि कुछ अमीर तथा मलिक, उदाहरणार्थ किवाम खा, इख्तियार खा तथा महमूद शाह के दास, जो दौल्त खा का साथ छोड कर रायाते आला से मिल गये थे, विश्वासघात की योजनायें वनाने लगे। जब रायाते आला को यह समाचार ज्ञात हुए तो वह वदायूं के किले को छोड कर देहली की ओर वापस हो गया। मार्ग में २० जमादि-उल अव्वल ८२२ हि० (१४ जून १४१९ ई०) को गगा तट पर किवाम खा, इख्तियार खा तथा महमूद शाह के दासो को रायाते आला ने बन्दी वना लिया और विश्वासघात के अपराध में सभी की हत्या करा दी तथा निरन्तर यात्रा करता हुआ शहर (देहली) पहुचा।

सारग खा का विद्रोह

इसी प्रकार रायाते आला को धूर्त सारग के समाचार पहुचाय गये और यह वहा गया कि जालन्धर के अधीनस्य वाजवारा पर्वत में एक व्यक्ति प्रकट हुआ है जो अपने को सारग कहता है और मूर्ख, अल्पदर्शी तथा जाहिल उसके सहायक वन गये हैं। रायाते आला ने मलिक सुल्तान शाह वहराम लोदी को सरहिन्द की अक्ता प्रदान करके जाली सारग के विद्रोह को शान्त करने के लिए भेजा। मलिक सुल्तान शाह वहराम ने रजव ८२२ हि० (जुलाई-अगस्त १४१९ ई०) में अपनी विशेष सेना लेकर सरहिन्द की ओर प्रस्थान किया। उपर्युक्त सारग गवारो तथा ग्रामीणो को लेकर युद्ध हेतु वजवारा से रवाना हुआ। जव वह सतलदर[2] नदी के निकट पहुचा तो अरूवर[3] कस्वे के लोग भी उससे मिल गये।

१ मुरादाबाद जिले में।
२ सतलज।
३ कुछ हस्तलिखित पोथियों में 'रुपर', अम्बाला जिले में, सतलज के दक्षिणी तट पर, अम्बाला नगर के ४३ मील उत्तर में।

शाबान ८२२ हि० (अगस्त-सितम्बर १४१९ ई०) में वह सरहिन्द के निकट उतरा। दूसरे दिन दानो (१९०) में युद्ध हुआ। मलिक सुल्तान शाह लोदी को ईश्वर ने सफलता प्रदान की किन्तु सारग को कोई हानि न हुई और वह भाग कर सरहिन्द के निकट के लहौरी नामक कस्बे में पहुचा।

सारग की पराजय

ख्वाजा अली माजिन्दरानी, जेहत[1] कस्बे के अमीर ने भी अपनी सेना सहित उससे (सारग से) भेंट की। इसी प्रकार सामाना का अमीर जीरक खा, जालन्धर का मुक्ता तुगान रईस तुर्क बच्चा सुल्तान शाह लोदी की सहायतार्थ सरहिन्द पहुचे। जब सारग को पता चला तो वह भाग कर अरुबर[2] चला गया। ख्वाजा अली सारग खा का साथ छोड कर जीरक खा से मिल गया। दूसरे दिन विजयी सेना ने जाली सारग खा का पीछा करते हुए अरुबर तक आक्रमण किया। सारग अरुबर से भाग कर पर्वत में प्रविष्ट हो गया। विजयी सेना ने उसी स्थान पर पडाव किया।

इसी बीच में रायाते आला ने मलिक खैरुद्दीन खानी को सेना सहित सारग के विद्रोह को शात करने के लिए नियुक्त किया। रमजान ८२२ हि० (सितम्बर-अक्तूबर १४१९ ई०) में मलिक खैरुद्दीन निरन्तर यात्रा करता हुआ अरुबर कस्बे में पहुचा। वहा से समस्त सेनायें एकत्र होकर उसके पीछे-पीछे पर्वत में पहुची। सारग के शक्तिहीन हो जाने तथा पर्वत के विजय योग्य न होने के कारण वे लौट गईं। मलिक खैरुद्दीन खानी शहर (देहली) की ओर लौट गया। जीरक खा सामाना पहुचा। मलिक सुल्तान शाह लोदी को अन्य सेनायें देकर अरुबर थाने में छोड दिया गया। शाही सेना के इधर-उधर हो जाने के कारण मुहर्रम ८२३ हि० (जनवरी-फरवरी १४२० ई०) में सारग ने तुगान रईस तुर्क बच्चे से भेंट की। भेंट के उपरान्त तुगान ने सारग से विश्वासघात करके उसे बन्दी बना लिया और तत्पश्चात् उसकी हत्या कर दी।

ताजुलमुल्क का इटावा भेजा जाना

(१९१) इस वर्ष रायाते आला शहर ही में रहा और मलिक ताजुलमुल्क को शक्तिशाली सेना देकर इटावा की ओर भेजा। विजयी सेना बरन[3] कस्बे में होती हुई कोल की विलायत में आई और उस प्रदेश के विद्रोहियो का विनाश करके इटावा चली गई। देहली जो काफिरो का सबसे दृढ स्थान था विध्वस कर दिया गया। वहा से उसने इटावा की ओर प्रस्थान किया। दुष्ट राय सबीर ने किले को बन्द कर लिया किन्तु अन्त में सधि कर ली। कर तथा उपहार, जो वह प्रत्येक वर्ष भेजा करता था, उसने अदा किये। तत्पश्चात् विजयी सेना चदवार की विलायत में पहुची और उसे विध्वस करके कटिहर में चली गई। कटिहर के शासक राय हर सिह ने भी कर तथा उपहार प्रस्तुत किये। वहा से विजय तथा सफलता प्राप्त करके मलिक ताजुलमुल्क शहर (देहली) की ओर वापस हुआ।

तुगान द्वारा पुन विद्रोह

रजब ८२३ हि० (जुलाई-अगस्त १४२० ई०) में तुगान रईस के विद्रोह के पुन समाचार प्राप्त

१ गुरगाव जिले में, देहली के दक्षिण-पश्चिम ४८ मील पर।
२ कुछ हस्तलिखित पोथियों में 'रूपर'।
३ बुलन्दशहर का प्राचीन नाम।

हुए। ज्ञात हुआ कि उसने सरहिन्द के किले को घेर लिया है और मसूरपुर तथा बाबुल[1] की सीमा तक आक्रमण कर रहा है। रायाते आला ने पुन. मलिक खैरुद्दीन खानी को सेनाओ सहित तुगान के विद्रोह को शात करने के लिए भेजा। मलिक खैरुद्दीन खानी निरन्तर प्रस्थान करता हुआ सामाना पहुचा। वहा से मजलिसे आली जीरक खा तथा मलिक खैरुद्दीन ने सगठित होकर उसका पीछा किया। तुग़ान को इसकी सूचना मिल गई। लुधियाना कस्बे के समीप सतलदर[2] नदी पार करके उसने उपर्युक्त नदी के (१९२) तट पर विजयी सेना के समक्ष पडाव किया। जल के कम हो जाने के उपरान्त शाही सेना नदी के पार हुई। तुगान पराजित होकर जसरथ खोखर की विलायत में चला गया। तुगान की अक्ता जीरक खा को सौंप दी गई। मलिक खैरुद्दीन शहर (देहली) की ओर लौट गया।

रायाते आला का मेवात की ओर प्रस्थान

८२४ हि० (१४२१ ई०) में रायाते आला ने मेवात की ओर प्रस्थान किया। कुछ मेवाती बहादुर नाहिर के कोटले (किले) में घिर गये और कुछ ने युद्ध किया।[3] रायाते आला ने कोटले के निकट पडाव किया। मेव युद्ध करने लगे। प्रथम आक्रमण ही में कोटला (किले) पर विजय प्राप्त हो गई। मेव भाग कर पर्वत में प्रविष्ट हो गये। रायाते आला ने कोटला को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। तदुपरान्त उसने ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया। इसी युद्ध मे ८ मुहर्रम ८२४ हि० (१३ जनवरी १४२१ ई०) को मलिक ताजुलमुल्क की मृत्यु हो गई। विज़ारत का पद[4] मलिकुश्शर्क मलिक सिकन्दर को, जो उसका ज्येष्ठ पुत्र था, प्रदान कर दिया गया।

रायाते आला की मृत्यु

जब रायाते आला ग्वालियर के क्षेत्र में पहुचा तो ग्वालियर के राय ने किले को बन्द कर लिया। रायाते आला उसकी विलायत को नष्ट भ्रष्ट करके उससे कर तथा उपहार वसूल करके इटावा की ओर पहुचा। दुष्ट राय सबीर नरक पहुच चुका था। उसके पुत्र ने आज्ञाकारिता स्वीकार की तथा उपहार एव कर प्रस्तुत किये। रायाते आला भी रुग्ण हो गया और निरन्तर कूच करता हुआ देहली शहर की ओर पहुचा। १७ जमादि-उल अव्वल ८२४ हि० (२० मई १४२१ ई०) को शहर (देहली) में पहुचने के उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई।

१ मंसूरपुर तथा पायल, पटियाला मे।
२ सतलज।
३ यह वाक्य स्पष्ट नहीं। पुस्तक में 'बाजे पैवस्तन्द' है। इसका अर्थ हुआ 'कुछ मिल गये' किन्तु सम्भवत. यह 'बे जंग पैवस्तन्द' है जिसका अर्थ हुआ 'कुछ ने युद्ध किया'।
४ प्रधान मन्त्री का पद।

सुल्ताने आज़म व ख़ुदायेगाने मुअज़्ज़म

मुइज्जुद्दुनिया वद्दीन अबुल फ़तह मुबारक शाह

मुबारक शाह का सिंहासनारूढ़ होना

(१९३) रायाते आला खिज्र खां ने अपनी मृत्यु के तीन दिन पूर्व अपने इस योग्य पुत्र को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया और समस्त अमीरों तथा मलिकों की सहमति से १७ जमादि-उल-अव्वल ८२४ हि० (२० मई १४२१ ई०) को उसे सिंहासनारूढ़ किया। रायाते आला की मृत्यु के उपरान्त सर्वसाधारण ने उसके राज्य के लिए पुन. वैअत[1] की।

नयी अक़्तायें

जिन जिन अमीरों, मलिकों, इमामों[2], सैयिदों, काज़ियों तथा अन्य अधिकारियों को जो जो पद, अक्तायें, परगने, ग्राम तथा वृत्ति निश्चित थी, उन्हें उसने उन्हीं के पास रहने दिया और उनमें उसने अपनी ओर से वृद्धि ही कर दी। फीरोज़ाबाद तथा हांसी की शिक[3] की अक्ता मलिक रजव नादिरा[4] से लेकर अपने भतीजे मलिकुश्शर्क मलिक बुद्ध को सौंप दी। मलिक रजव को दीवालपुर की शिक की अक्ता प्रदान कर दी गई।

जसरथ शेखा खोखर तथा तुगान रईस के विद्रोह

इस बीच में जसरथ शेखा खोखर तथा तुगान रईस के विद्रोह के समाचार प्राप्त हुए। जसरथ (१९४) के विद्रोह का कारण यह था. इसके एक वर्ष पूर्व जमादि-उल-अव्वल ८२३ हि० (मई-जून १४२० ई०) में कश्मीर का बादशाह सुल्तान अली अपनी सेना सहित थट्टा में आया था। जसरथ ने सुल्तान अली की वापसी के समय उसकी सेना से युद्ध किया। सुल्तान अली की सेना छिन्न-भिन्न हो गई। कुछ ही चीज़ें इस युद्ध के कारण वच सकी। युद्ध की शक्ति न होने के कारण सुल्तान अली पराजित हो गया। सुल्तान अली जीवित वन्दी बना लिया गया। उसकी सेना की अधिकांश धन-सम्पत्ति नष्ट हो गई।

जसरथ अल्पदर्शी तथा गवार था अत. नष्ट हो गया। मुट्ठी भर साधारण लोगों को अपने चारों ओर देख कर शहर देहली पर अधिकार जमाने का भूत उसके मस्तिष्क में प्रविष्ट हो गया। जैसे ही उसने रायाते आला की मृत्यु के समाचार सुने वैसे ही अश्वारोहियों तथा पदातियों के दल को लेकर व्याह[5] तथा सतलदर[6] को पार किया और राय कमाल मैंन की तिलौंदी पर आक्रमण किया। राय

१ अधीनता स्वीकार करने की शपथ ली।
२ इमाम: नेता, मुसलमानों को सामूहिक नमाज पढाने वाला व्यक्ति।
३ शिकः—देखिये पृ० ४ नोट नं० ३।
४ कुछ पोथियों में 'नादिर'।
५ ब्यास।
६ सतलज।

फ़ीरोज पराजित होकर रेगिस्तान की ओर चल दिया। जसरथ वहा से लदुरहाना[1] कस्बे में पहुचा और सतलदर के किनारे किनारे अरवर[2] की सीमा तक के स्थान विध्वस कर डाले। कुछ दिन उपरान्त उसने पुन सतलदर नदी पार करके जालन्धर की ओर प्रस्थान किया। ज़ीरक खा जालन्धर के किले में वन्द हो गया। जसरथ ने कस्वे से तीन कोस पर पीसी[3] नदी के तट पर पडाव किया। सधि की वार्ता होने लगी। अन्त में दोनो ओर से लोगो ने बीच में पड कर सधि करा दी। उसकी यह शर्त निश्चित हुई कि 'जालन्धर के क़िले को रिक्त करके तुग़ान को सौंप दिया जाय। मजलिसे आली ज़ीरक खा तुग़ान (१९५) के एक पुत्र को अपने साथ राजधानी में ले जाय। जसरथ भी राजधानी में पेशकश भेंट करके वापस लौट आये'।

जसरथ द्वारा ज़ीरक का वन्दी बनाया जाना

इस सन्धि के अनुसार २ जमादि-उल-आखिर ८२४ हि० (४ जून १४२१ ई०) को ज़ीरक खा ने जालन्धर के क़िले से निकल कर पीसी नदी के तट पर जसरथ की सेना से ३ कोस पर पडाव किया। दूसरे दिन जसरथ अपनी समस्त सेना सहित तैयार होकर ज़ीरक खा के द्वार पर आया और अपने वचन से फिर गया। मजलिसे आली ज़ीरक खा को उसकी पूरी रक्षा करते हुए अपने साथ लेकर प्रस्थान किया और सतलदर[4] नदी पार की और पुन लदुरहाना[5] कस्वे में पडाव किया।

जसरथ द्वारा सरहिन्द का अवरोध

वह वहा से निरन्तर कूच करता हुआ २० जमादि-उल-आखिर ८२४ हि० (२२ जून १४२१ ई०) को वर्षा ऋतु में सरहिन्द पहुचा। सरहिन्द का अमीर मलिक सुल्तान शाह लोदी किले में घिर गया। जसरथ ने अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु ईश्वर ने किले की रक्षा की। वह सरहिन्द के किले को कोई हानि न पहुचा सका।

सुल्तान का जसरथ के विरुद्ध प्रस्थान

जब मलिक सुल्तान शाह लोदी के विषय म उसके प्रार्थना पत्र से ससार को शरण प्रदान करन वाले स्वामी को ज्ञात हुआ तो वह रजब ८२४ हि० (जुलाई १४२१ ई०) में वर्षा ऋतु में ही शहर (देहली) से बाहर निकला। उसने सरहिन्द की ओर जहा जसरथ था प्रस्थान किया। जब वह निरन्तर कूच करता हुआ सामाना के समीप कोहरी[6] नामक कस्वे में पहुचा तो जसरथ ने विजयी सेना के पहुचने के समाचार सुने। २७ रजब ८२४ हि० (२८ जुलाई १४२१ ई०) को वह सरहिन्द के किले से प्रस्थान करके लदुरहाना की ओर चल दिया। मजलिसे आली ने ज़ीरक खा को मुक्त कर दिया। ज़ीरक खा (१९६) सामाना के भूभाग में पहुचा और ससार को शरण प्रदान करने वाले स्वामी के चरण चूमे। वहा से शाही सेना ने लदुरहाना की ओर प्रस्थान किया। जसरथ ने सतलदर नदी पार करके शाही

[1] लुधियाना।
[2] रूपर, अम्बाला के अधीन, लुधियाना से ५० मील उत्तर-पूर्व।
[3] कुछ पोथियों में 'बेनी'।
[4] सतलज।
[5] लुधियाना।
[6] कुछ पोथियों में 'कोहिला'। सम्भवत पटियाला में 'कोई' अथवा 'खोई' नामक ग्राम।

सेना के समक्ष पडाव किया। समस्त नौकाय उसके अधिकार मे थी। इस कारण वह विजयी सेना का नदी पार न करने देता था। ४० दिन तक विरोध करता हुआ नदी के उस पार रहा। वर्षा ऋतु के अन्त के कारण जल में कमी होने लगी। ससार को शरण प्रदान करने वाला स्वामी कुबूलपुर की ओर रवाना हुआ। जसरथ भी शाही सेना के सामने नदी के किनारे किनारे चला जाता था।

शाही सेना द्वारा जसरथ की पराजय

११ शव्वाल ८२४ हि० (९ अक्तूबर १४२१ ई०) को ससार के स्वामी ने, मलिक सिकन्दर तुहफा, मजलिसे आली जीरक खा, मलिकुश्शर्क महमूद हसन, मलिक कालू तथा अन्य अमीरो को विजयी सेनाओ सहित नदी के चढाव की ओर अरुवर[1] कस्बे के निकट भेजा। प्रात काल विजयी सेनाओं ने एक छिछले स्थान पर नदी पार की। उसी दिन ससार का स्वामी भी प्रस्थान करके उस स्थान पर जहा सेना ने नदी पार की थी, पहुच गया। जसरथ भी नदी के किनारे किनारे ससार के स्वामी के सामने यात्रा कर रहा था। उसे भी विजयी सेनाओं के नदी पार करने के समाचार मिल गये। उसके सहायक भयभीत हो गये। वह नदी पार करने के स्थान से चार कोस पूर्व ही ठहर गया। ससार के स्वामी ने भी समस्त सेना, परिजन तथा हाथियो सहित नदी पार की। विजयी सेना ने जसरथ से युद्ध करने के लिए प्रस्थान किया। जसरथ विजयी सेना को देख कर युद्ध किये बिना ही भाग खडा हुआ। विजयी सेना ने उसका पीछा किया। उसका समस्त शिविर शाही सेना के अधिकार में आ गया। उसके कुछ अश्वारोही तथा पदाती मार डाले गये। जसरथ अपने वीर अश्वारोहियो सहित भाग कर रातो रात जालन्धर कस्बे में पहुचा। दूसरे दिन उसने ब्याह नदी भी पार कर ली। जब विजयी सेनायें ब्याह नदी (१९७) के तट पर पहुची तो वह भाग कर रावी तट पर पहुचा। ससार के स्वामी ने ब्याह नदी पर्वत के आचल मे तथा रावी नदी भोह कस्बे के निकट, उसका पीछा करते हुए, पार की।

सुल्तान की जसरथ पर विजय

जसरथ जाहाओ[2] नदी पार करके तीखर[3] म पर्वत में प्रविष्ट हो गया। जम्मू के मुकद्दम[4] राय भीलम[5] ने चरण चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया और अपने नेतृत्व मे जाहाओ नदी पार करा दी। विजयी सेना ने तीखर को जो जसरथ का अत्यन्त दृढ स्थान था नष्ट कर दिया। कुछ लोग जो पर्वत में प्रविष्ट हो गये थे बन्दी बना लिये गये। ससार का स्वामी वहा से पूर्ण रूप से सुरक्षित, लूट की धन सम्पत्ति लेकर लाहौर के शुभ नगर की ओर वापस हुआ।

सुल्तान द्वारा लाहौर के किले की मरम्मत

मुहर्रम ८२५ हि० (दिसम्बर-जनवरी १४२१-२२ ई०) में शाही छत्र एव शुभ सौभाग्य की छाया लोहूर[6] के उजाड स्थान पर पडी। वह भूभाग जहा अशुभ उल्लू के अतिरिक्त कोई भी जानवर न

१ कुछ पोथियों में 'रूपर'।
२ बदायूनी के अनुसार 'छनाओ'। यहा 'चनाव' से तात्पर्य है।
३ कुछ पोथियों में 'तिलहर'।
४ यहा 'राजा' से तात्पर्य है।
५ कुछ पोथियों में 'भीम'।
६ लाहौर।

हुआ था, वोही[1] के घाट पर पहुचा। जसरथ में युद्ध की शक्ति न थी। उसने रावी तथा जाहाओ[2] नदी अपने सहायकों को पार कराई और अपने साथ तीक्षर[3] पर्वत में ले गया। मलिकुश्शर्क सिकन्दर ने वोही नामक घाट से ब्याह नदी पार की। १२ शव्वाल ८२५ हि० (२९ सितम्बर १४२२ ई०) को उसने मुवारकाबाद लोहूर[4] नगर में पडाव किया। मलिक महमूद हसन ने किले के बाहर निकल कर तीन कोस आगे बढकर उससे भेंट की।

इससे पूर्व मलिक रजब अमीर दीवालपुर[5], मलिक सुल्तान शाह लोदी अमीर सरहिन्द तथा राय फीरोज़ मीन, मलिक सिकन्दर से मिल गये थे। उपर्युक्त सेना रावी नदी के किनारे होती हुई कलानोर की ओर रवाना हुई। कलानोर के मध्य म भोह नामक कस्बे पर नदी पार करके जम्मू की सीमा मे प्रविष्ट हो गई। राय भीलम[6] भी उनसे मिल गया। तत्पश्चात् वे खुक्खरो के कुछ समूहो को, जो जाहाओ[7] तट पर जसरथ से पृथक् होकर ठहर गये थे, नष्ट करके शहर मुवारकाबाद लोहूर[8] को लौट आये। इसी प्रकार शुभ शाही फरमान प्राप्त हुआ कि मलिकुश्शर्क महमूद हसन जालन्धर की अक्ता[9] में चला जाय और तैयार होकर राजधानी में पहुचे। मलिक सिकन्दर शुभ शहर[10] के थाने की रक्षा करे। वह शाही आदेशानुसार अपनी सेना सहित शुभ शहर के किले में प्रविष्ट हो गया और मलिक महमूद हसन तथा अन्य अमीरो को लौटा दिया। विजारत[11] का पद मलिक सिकन्दर से लेकर मलिकुश्शर्क सरवरुलमुल्क शहनये शहर[12] को दे दिया गया। शहनये शहर का पद सरवरुलमुल्क के पुत्र को प्राप्त हुआ।

सुल्तान का कटिहर, राठौरो तथा इटावा पर आक्रमण

(२००) ८२६ हि० (१४२२-२३ ई०) म ससार को शरण प्रदान करने वाले स्वामी ने इस्लामी सेना को तैयार करके हिन्दुस्तान[13] की ओर प्रस्थान करना निश्चय किया। मुहर्रम ८२६ हि० (दिसम्बर-जनवरी १४२२-२३ ई०) में वह कटिहर[14] की विलायत[15] म प्रविष्ट हो गया और वहा वालो से कर तथा धन प्राप्त किया। इसी बीच में बदायूं के अमीर महाबत ने, जो स्वर्गीय खिज्र खा से आतंकित हो गया था, चरण चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया और शाही कृपा तथा दया द्वारा सम्मानित हुआ।

१ बदायूनी के अनुसार 'पोही', फ़िरिश्ता के अनुसार 'लोई'।
२ चनाब।
३ कुछ पोथियों के अनुसार 'तिलहर' बदायूनी के अनुसार 'तिलवारा'।
४ लाहौर।
५ मान्टगोमरी में।
६ राय भीम।
७ चनाब।
८ लाहौर।
९ अक्ता —देखिये पृ० ६ नोट नं० १।
१० मुवारकाबाद लाहौर।
११ वज़ीर का पद।
१२ नगर, विशेष रूप से राजधानी का मुख्य प्रबधक, कोतवाल।
१३ दोआब तथा अवध के मध्य का स्थान।
१४ रुहेलखड अथवा बरेली डिवीजन।
१५ विलायत — राज्य।

वहा से उसने गगा नदी पार की और राठौरो के प्रदेश पर आक्रमण करके वहुत से दुष्ट काफिरों को तलवार के घाट उतार दिया। उसने कुछ दिन तक गगा तट पर पडाव किया और कम्पिल[1] के किले मे मलिक मुवारिज, ज़ीरक खा तथा कमाल खा को सेना सहित राठौरो के विनाश हेतु नियुक्त कर दिया। इसी प्रकार राय सबीर का पुत्र, जो रायाते आला से सधि कर लेने के कारण रायाते आला की सवारी के साथ-साथ रहता था, भयभीत होकर भाग खडा हुआ। उसका पीछा करने के लिए मलिकुश् शर्क मलिक खैरुद्दीन खानी को शक्तिशाली सेना सहित नियुक्त किया गया। विजयी सेना उसे न पकड सकी किन्तु उसकी विलायत[2] को लूट कर तथा नष्ट करके वह भी इटावा पहुच गया। ससार का स्वामी भी निरन्तर कूच करता हुआ सेना के पीछे इटावा पहुच गया। दुष्ट काफिर किले में घिर गया। अन्त में विवश होकर राय सबीर के पुत्र ने चरण चूम कर जो कर तथा उपहार वह अदा करता था, उसे अदा किया। ससार का स्वामी इस्लामी सेना सहित विजय तथा सफलता पाकर लौट गया और शुभ (२०१) नक्षत्र तथा मुहूर्त में जमादि उल-अव्वल ८२६ हि० (अप्रैल-मई १४२३ ई०) में राजधानी (शहर देहली) में प्रविष्ट हो गया। इसी प्रकार मलिक महमूद हसन जालन्धर की अक्ता से अत्यधिक सेना सहित राजधानी में उपस्थित हुआ तथा अत्यधिक कृपा द्वारा सम्मानित हुआ। आरिजे ममालिक[3] का पद मलिक खैरुद्दीन खानी से लेकर मलिकुश्शर्क महमूद हसन को प्रदान कर दिया गया। क्योंकि वह सदाचारी, सत्यवादी तथा ससार को शरण प्रदान करने वाले स्वामी के प्रति निष्ठावान् था अत उसे नित्य प्रति उन्नति प्राप्त होने लगी।

जसरथ एव राय भीम में युद्ध

जमादि-उल-अव्वल ८२६ हि० (अप्रैल-मई १४२३ ई०) में जसरथ शेखा तथा राय भीलम[4] के मध्य में युद्ध हुआ। राय भीलम की हत्या हो गई। उसके अधिकाश अस्त्र-शस्त्र तथा घोडे जसरथ को प्राप्त हो गये। जब जसरथ को राय भीलम की हत्या के समाचार प्राप्त हुए तो उसने थोडी सी मुगल सेना को मिला कर दीवालपुर तथा लोहूर[5] के क्षेत्र में आक्रमण किया। मलिक सिकन्दर तैयार होकर उसका पीछा करना चाहता था। जसरथ भाग खडा हुआ और जाहाओं[6] नदी पार की।

शेख अली मुगल का आक्रमण

इसी बीच मे मुल्तान के अमीर अलाउलमुल्क की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुए तथा शेख अली, अमीरजादा पिसरे रगतमश के नायब[7] के विषय में ज्ञात हुआ कि वह बहुत भारी सेना लेकर काबुल से भक्कर तथा सिविस्तान की अक्ता के विनाश हेतु आ रहा है। ससार के स्वामी ने मुगलों के उपद्रव को शान्त करने तथा उस विलायत को सुव्यवस्थित करने के लिए, मुल्तान, भक्कर तथा सिविस्तान का

१ फर्रुखाबाद जिले मे।
२ यहाँ 'राज्य' से तात्पर्य है।
३ दीवाने अर्ज़ का मुख्य अधिकारी जो सेना की भरती एवं निरीक्षण करता था। उसके लिए सेनापति होना आवश्यक न होता था।
४ राय भीम।
५ लाहौर।
६ चनाव।
७ उत्तराधिकारी।

(२०२) भूभाग मलिकुश्शर्क मलिक महमूद हसन को सौप दिया तथा अत्यधिक सेना एव परिजन देकर मुल्तान की अक्ता की ओर रवाना कर दिया। मुल्तान पहुच कर उसने मुल्तान की प्रजा की सुख शान्ति की व्यवस्था की। प्रत्येक के लिए इनाम[1], अदरार[2] तथा वेतन निश्चित किये। मुल्तान की प्रजा सुखी तथा सम्पन्न हो गई। शहर तथा विलायत के लोगो को शान्ति प्राप्त हो गई। उसने मुल्तान के किले की, जो मुगलो के उत्पात के कारण नष्ट हो गया था, मरम्मत कराई। उसने बहुत बडी सेना भरती की।

सुल्तान का अलप खा पर आक्रमण

इसी प्रकार ससार के स्वामी को धार के अमीर अलप खा द्वारा ग्वालियर के राय पर चढाई के समाचार प्राप्त हुए। उसने (सुल्तान ने) बडी शक्तिशाली सेना लेकर ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया। जब वह ब्याना के निकट पहुचा तो उस समय ब्याना के अमीर औहद खा के पुत्र मुबारक खा ने अपने चाचा की विश्वासघात करके हत्या कर दी थी और रायाते आला[3] से विद्रोह करके ब्याना के किले को नष्ट करके पर्वत के ऊपर पहुच चुका था। रायाते आला ने उपर्युक्त पर्वत के आचल में पडाव किया। कुछ समय उपरान्त औहद खा का पुत्र विवश हो गया और उसने कर अदा करके आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली।

रायाते आला न स्वय वहा से ग्वालियर की ओर अलप खा पर चढाई की। अलप खा चम्बल तट पर घाट को रोके हुए पडाव डाले था। रायाते आला ने अचानक दूसरे घाट से नदी पार कर ली। मलिक महमूद हसन तथा अन्य अमीरो ने उदाहरणार्थ मेवो[4] तथा नुसरत खा ने जो विजयी सेना के अग्रिम भाग में थे तथा वीर अश्वारोहियों ने अलप खा के शिविर को नष्ट कर दिया। उसके कुछ अश्वारोही तथा पदाती बन्दी बना लिय गये और राजधानी में लाये गये। रायाते आला ने दोनों पक्षो के मुसलमान होने के कारण उन्हे क्षमा कर दिया और सभी को मुक्त कर दिया। दूसरे दिन अलप खा ने रायाते आला के पास राजदूत भेज कर सधि के विषय में वार्ता प्रारम्भ कर दी। ससार के स्वामी ने उसे अत्यधिक (२०३) दीनता एव व्याकुलता प्रदर्शित करते देख कर और इस्लाम के विरुद्ध कुछ करने को निषिद्ध समझ कर इस शर्त पर सधि कर ली कि अलप खा उपहार (कर) प्रस्तुत करे और ग्वालियर की विलायत से चला जाय। दूसरे दिन अलप खा ने रायाते आला की सेवा में पेशकश की वस्तुए प्रेषित की और स्वय निरन्तर कूच करता हुआ धार की ओर चला गया। ससार के स्वामी ने कुछ समय तक चम्बल तट पर पडाव किया और प्राचीन प्रथा के अनुसार धन तथा कर उस प्रदेश के काफिरो से प्राप्त करके सुरक्षित तथा लूट की धन सम्पत्ति लेकर शहर (देहली) को वापस चला आया और राज्य-व्यवस्था मे सलग्न हो गया।

१ वह भूमि जो किसी से प्रसन्न होकर अथवा सहायता के रूप में दी जाती थी।
२ विद्वानों तथा धार्मिक लोगों को दी जाने वाली सहायता जो अधिकाश धन के रूप में होती थी।
३ सुल्तान के लिए इस स्थान पर 'रायाते आला' शब्द का प्रयोग हुआ है।
४ मेवात निवासी। देहली के दक्षिण का भूभाग जिसमें मथुरा, गुरगांव अलवर का अधिकाश भाग तथा भरतपुर का थोड़ा सा भाग सम्मिलित है। वे देहली के सुल्तानों के लिए १२५६ से १५२६ ई० तक सवदा परेशानी का कारण बने रहे।

सुल्तान का कटिहर पर पुन. आक्रमण

मुहर्रम ८२८ हि० (नवम्बर-दिसम्बर १४२४ ई०) मे रायाते आला ने कटिहर की ओर प्रस्थान करना निश्चय किया। जब वह गगा तट पर पहुचा तो राय हर सिंह रायाते आला से मिला तथा अत्यधिक कृपा द्वारा सम्मानित हुआ किन्तु इस कारण कि तीन वर्ष से उसका कर शेष था उसे कुछ समय तक वन्दी रक्खा गया। सक्षेप में, विजयी सेना ने गगा नदी पार की और वहा के उपद्रवियो को दड देकर कोहपाया कुमायूँ[1] की ओर प्रस्थान किया। कुछ समय तक वह वहा रहा। वायु के गरम हो जाने के कारण रहव नदी के किनारे-किनारे होता हुआ वापस हुआ। वह गगा तट को पुन कम्पिल नामक वस्बे के निकट पार करके कन्नौज की ओर प्रस्थान करना चाहता था किन्तु हिन्दुस्तान के नगरो मे घोर अकाल पडा हुआ था अत वह आगे न बढा।

सुल्तान द्वारा मुल्तान पर आक्रमण

(२०४) इसी प्रकार मेवो के विद्रोह के समाचार प्राप्त हुए। निरन्तर कूच करता हुआ वह मेवात की विलायत मे प्रविष्ट हो गया। उस विलायत को विध्वस कर दिया। मेव समस्त विलायत को वीरान करके जहरा नामक पर्वत में जो उनका अत्यन्त दृढ स्थान है घुस गये। उस पर्वत के अत्यन्त दृढ होने के कारण उस पर विजय प्राप्त न हो सकती थी। अनाज की कमी हो गई अत संसार को शरण प्रदान करने वाला स्वामी सुरक्षित एव लूट की धन-सम्पत्ति सहित शहर की ओर लौट आया और शुभ मुहूर्त तथा नक्षत्र में रजब ८२८ हि० (मई-जून १४२५ ई०) में कूश्के दौलत[2] में पहुचा। विभिन्न दिशाओं के अमीरो तथा मलिको को विदा करके स्वय भोग-विलास मे ग्रस्त हो गया।

सुल्तान का मेवात पर तीसरी बार आक्रमण

दूसरे वर्ष ८२९ हि० (१४२५-२६ ई०) में उसने पुन मेवात पर चढाई की। बहादुर नाहिर के नाती जल्लू तथा कद्दू और कुछ अन्य मेव जो उनसे मिल गये थे अपने-अपने स्थानो को नष्ट करके इन्दौर के पर्वत में प्रविष्ट हो गये। वे कुछ दिन तक घिरे रहे। जब विजयी सेना ने शक्ति का प्रदर्शन किया तो वे इन्दौर के किले को खाली करके अलवर पर्वत में चले गये। दूसरे दिन ससार के स्वामी ने इन्दौर के किले को नष्ट-भ्रष्ट करके अलवर की ओर प्रस्थान किया। जब वह निकट पहुचा तो जल्लू तथा कद्दू ने उस स्थान पर भी किलाबन्दी की। विजयी सेना निरन्तर आक्रमण करती रही। फलत विवश होकर उन्होंने क्षमा-याचना कर ली और शरण की प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई। कद्दू सुल्तान के चरणो के चुम्बन द्वारा सम्मानित हुआ। वह पुन भाग कर पर्वत में प्रविष्ट होना चाहता था अत उसे पकड कर वन्दी बना लिया गया। ससार के स्वामी ने मेवात की विलायत तथा अधिकाश ग्रामो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। कुछ समय तक उसने कोहपाया[3] में विश्राम किया। तत्पश्चात् उस (२०५) प्रदेश मे अनाज तथा चारे की कमी के कारण वह राजधानी (देहली) वापस चला गया और शाबान ८२९ हि० (जून-जुलाई १४२६ ई०) में शुभ मुहूर्त तथा नक्षत्र में दौलत खाने के कूश्क में पहुचा।

१ कुमायूँ की पहाडिया।
२ राज प्रासाद।
३ मेवात की पहाडियों मे।

ब्याना की ओर सुल्तान का प्रस्थान

दूसरे वर्ष मुहर्रम ८३० हि० (नवम्बर-दिसम्बर १४२६ ई०) को सुल्तान ने ब्याना की ओर प्रस्थान किया और मेवात की विलायत में होता हुआ तथा उनको दुष्टता एव विद्रोह के लिए दड देता हुआ ब्याना पहुचा। औहद खा के पुत्र मुहम्मद खा ने जो ब्याना का अमीर था किला बन्द कर लिया। वह ब्याना के लोगों[1] को नष्ट करके उस किले में, जो पर्वत की ऊचाई पर था, भाग गया। १६ दिन तक पर्वत के कारण विजयी सेना से युद्ध करता रहा। २ रबी-उल-आखिर ८३० हि० (३१ जनवरी १४२७ ई०) को विजयी सेना ने महमूद खा पर धावा किया। ससार का स्वामी बहुत बडी सेना तथा वीरो को लेकर पीछ के द्वार की ओर से पर्वत पर चढ गया। जब औहद खा को इसकी सूचना मिली तो वह मुकाबला न कर सका और भाग कर किले के भीतर चला गया। जब रायाते आला आगे बढा तो मुहम्मद खा औहदी ने अपनी सेना को परेशान होते हुए तथा किले में विघ्न पडते हुए देखा और उसके हाथ-पाव फूल गये। विवश होकर वह अपनी ग्रीवा में पगडी डाल कर तथा अपने सिर को पाव बना कर भीतर से बाहर निकला[2] और खाक बोस[3] करके सम्मानित हुआ। ससार के स्वामी तथा नूशीरवा जैसे गुण वाले बादशाह ने उसको क्षमा कर दिया और उसकी हत्या न कराई। उसके पास किले में जो कुछ नकद (धन), उत्तम वस्तुएँ, घोडे अस्त्र-शस्त्र तथा कपडे और सामान थे उन्हें उसने विजयी सेना के घोडो की नाल के मूल्य के रूप में प्रदान कर दिया।[4] रायाते आला कुछ दिन तक उस भूभाग म पडाव किये रहा। मुहम्मद खा के परिजनो तथा सहायकों को किले से निकलवा कर रायाते आला ने देहली भेज दिया और कूइके जहापनाह उनके निवास हेतु निश्चित (२०६) कर दिया। ब्याना की शिक की अक्ता अपने दास मलिक मकबूल खानी को प्रदान कर दी और उपर्युक्त शिक की नियाबत[5] तथा सीकरी[6] का परगना मलिक खैरुद्दीन तुहफा को प्रदान कर दिया।

ग्वालियर की ओर सुल्तान का प्रस्थान

रायाते आला ने स्वय विजय तथा सफलता प्राप्त करके ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया। जब वह वहा पहुचा तो ग्वालियर, थनकीर तथा चन्दवार के रायो ने आज्ञाकारिता प्रदर्शित की और धन, कर तथा उपहार पूर्व प्रथानुसार अदा किये और वह पूर्ण रूप से सुरक्षित तथा धन सम्पत्ति सहित शहर की ओर लौट आया। जमादि-उल-आखिर ८३० हि० (मार्च-अप्रैल १४२७ ई०) में शुभ नक्षत्र तथा मुहूर्त में कूइके दौलत खाने में पहुचा।

१ 'खल्के ब्याना--ब्याना के लोग' किन्तु ब्याना नामक स्थान से तात्पर्य है।
२ बड़ी दीन अवस्था में।
३ धरती चुम्बन।
४ शाही सेना को भेंट कर दिया।
५ उत्तराधिकारी का पद। राज्य का बड़ा भाग जिसमें बहुत सी अक्तायें होती थीं शिक कहलाता था और शिक़ का हाकिम 'नायब'।
६ जो बाद में फ़तहपुर सीकरी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

क्ताओ का प्रबन्ध

सुल्तान ने मलिकुश्शर्क मलिक महमूद हसन की अक्ता लेकर उसे हिसार फीरोजा की अक्ता दान कर दी। मलिकुश्शर्क रजब नादिरा[1] को मुल्तान की अक्ता प्रदान कर दी गई।

मुहम्मद खा का विद्रोह

कुछ दिन उपरान्त मुहम्मद खा देहली से सपरिवार भाग कर मेवात चला गया। कुछ लोग, जो उसके सहायक थे और इधर-उधर छिन्न-भिन्न हो गये थे, एकत्र हुए। इसी प्रकार सुल्तान को ज्ञात हुआ कि मलिक मुकबिल ने समस्त सेना सहित महिर महावन[2] पर चढाई की है और मलिक खैरुद्दीन तुहफा को किले में छोड गया है तथा ब्याना का भूभाग खाली है। उसने उस भूभाग के निवासियो तथा उस विलायत के मुकद्दमो के भरोसे पर थोडी सी सेना लेकर चढाई कर दी। उस भूभाग तथा विलायत के अधिकाश लोग उससे मिल गये। कुछ दिन उपरान्त उसने किले पर भी अधिकार जमा लिया। जो सेना ब्याना में नियुक्त थी, वापस होकर शहर लौट गई। ससार के स्वामी ने ब्याना की अक्ता मलिक मुकबिल से लेकर मलिक मुबारिज़ को सौंप दी और उसे अत्यधिक सेना देकर मुहम्मद खा के विद्रोह को शान्त करने के लिए भेजा। जब विजयी सेना निकट पहुची तो मुहम्मद खा उपर्युक्त किले में बन्द हो गया। मलिक मुबारिज़ ने ब्याना का भूभाग तथा समस्त विलायत अपने अधिकार में कर ली। मुहम्मद खा के पास जितनी सेना थी, उसे किले में छोड कर स्वय शर्की[3] के पास चल दिया। इसी प्रकार मलिक मुबारिज को भी किसी कार्य हेतु राजधानी में बुलवाया गया। वह निरन्तर कूच करता हुआ वापस हुआ और राजधानी में पहुचा।

सुल्तान का कालपी की ओर प्रस्थान

(२०७) मुहर्रम ८३१ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १४२७ ई०) में ससार का स्वामी ब्याना की ओर प्रस्थान करना चाहता था। इस बीच में कालपी के अमीर कादिर खा के राजदूत राजधानी में पहुचे और उन्होंने शर्की के आक्रमण के समाचार पहुचाये। ससार के स्वामी ने ब्याना की ओर प्रस्थान करने की योजना त्याग कर शर्की के ऊपर चढाई की। इसी प्रकार समाचार प्राप्त हुए कि शर्की भूकानूर[4] कस्बे पर आक्रमण करके पडाव किये हुए है और बदायूँ के ऊपर चढाई करने वाला है। हज़रते आला[5] ने नोह पतल के घाट पर यमुना नदी पार की और चरतौली ग्राम पर आक्रमण करके निरन्तर कूच करता हुआ अतरौली[6] कस्बे में पहुचा।

मुखतस खा की पराजय

इसी बीच में रायाते आला को शर्की के भाई मुखतस खा के विषय में ज्ञात हुआ कि वह असख्य सेना तथा अत्यधिक हाथियो सहित इटावा के क्षेत्र में पहुच गया है। इस समाचार को पाते ही रायाते

१ कुछ पोथियों में 'नादिर'।
२ महावन।
३ सुल्तान इब्राहीम शर्की।
४ कुछ पोथियों के अनुसार 'भौगांव जो मैंनपुरी के पूर्व में ६½ मील पर है।
५ सुल्तान
६ अलीगढ जिले में, अलीगढ से १६ मील पर।

आला ने मलिकुश्शर्क महमूद हसन को १०,००० अश्वारोहियो सहित, जिनमें से प्रत्येक अनुभवी शूर वीर था, मुखतस खा पर चढाई करने के लिए भेजा। मलिकुश्शर्क मलिक महमूद हसन समस्त सेना लेकर, उस स्थान पर जहा शर्की की सेना उतरी हुई थी, पहुच गया। मुखतस खा को इस बात की सूचना मिल गई। विजयी सेना के पहुचने के पूर्व वह भाग कर शर्की से मिल गया। मलिक महमूद हसन ने कुछ दिन तक उस स्थान के निकट पडाव किया। वह शर्की की सेना पर रात्रि में छापा मारना चाहता था किन्तु उनके सचेत हो जाने के कारण यह सभव न हो सका और वह वापस होकर अपनी सेना से मिल गया।

(२०८) शर्की ब्याह[1] नदी के किनारे-किनारे होता हुआ इटावा की अक्ता में बुरहानावाद नामक कस्बे के निकट पहुचा। ससार को शरण प्रदान करने वाले स्वामी ने भी अतरौली मे प्रस्थान करके बायन कोतह नामक कस्बे में पडाव किया। दोनों सेनाओ के मध्य में थोडी सी दूरी रह गई थी।

जब शर्की को हज़रते आला की शक्ति, वीरता एव विजयी सेना की अधिकता का अनुभव हो गया तो वह जमादि-उल-अव्वल ८३१ हि० (फरवरी-मार्च १४२८ ई०) म विजयी सेना के सामने से भाग कर रापरी[2] कस्बे की ओर पहुचा और गदरग पर यमुना नदी पार की और वहा से ब्याना की ओर कम्भीर[3] नदी के तट पर पडाव किया। ससार के स्वामी ने भी उसका पीछा करते हुए निरन्तर प्रस्थान करके चँदवार में यमुना नदी पार की और उसकी सेना से चार कोस की दूरी पर पडाव किया। नित्य विजयी सेना के यजक[4] तथा दल शर्की की सेना के चारो ओर आक्रमण करते थे और इस प्रकार उनकी सेना से दास, मवेशी तथा घोडे प्राप्त कर लेते थे। २२ दिन तक दोनो सेनायें इस प्रकार एक दूसरे के निकट रहीं।

७ जमादि-उल-आखिर ८३१ हि० (२४ मार्च १४२८ ई०) को शर्की अश्वारोहियो तथा पदातियों की कुल सेना तथा हाथियो को लेकर युद्ध के लिए तैयार हुआ। रायाते आला स्वय, मलिकुश्शर्क सरवरुलमुल्क वज़ीर, सैयिदुस्सादात सैयिद सालिम तथा कुछ बडे बडे अमीर शिविर में रहे और कुछ अमीरा, उदाहरणार्थ मलिकुश्शर्क मलिक महमूद हसन, खाने आज़म फतह खा बिन (पुत्र) सुल्तान मुज़फ्फर, मजलिसे आली ज़ीरक खा, मलिकुश्शर्क मलिक सुल्तान शह जो इस्लाम खा की उपाधि (२०९) द्वारा सम्मानित हुआ था, स्वर्गीय खाने जहा का नाती मलिक चमन, मलिक कालू खा[5] शहनये पील, मलिक अहमद तुहफा तथा मलिक मुकबिल खानी, को तैयार करके शर्की से युद्ध करने के लिए भेजा। दोनों में मध्याह्न से सायकाल तक युद्ध होता रहा। रात्रि हो जाने के कारण दोनो ओर की सेनायें रण-क्षेत्र से वापस हुईं और अपने अपने शिविर में पहुची। दोनो में से किसी ने एक दूसरे के समक्ष से मुह न मोडा था। शर्की की अधिकाश सेना आहत हो गई थी। वह विजयी सेना की वीरता देख कर दूसरे दिन भाग खडी हुई और यमुना नदी की ओर चल दी।

१ सियाह नदी अथवा काली नदी होना चाहिये।
२ मैनपुरी जिले की शिकोहाबाद तहसील में।
३ कुछ पोथियों में 'कटिहर' नदी।
४ सेना का वह अग्रिम दल जो शत्रुओं का पता लगाने तथा अन्य समाचार प्राप्त करने के लिए मुख्य सेना के आगे रहता है।
५ कुछ पोथियों में 'मलिक कालू खानी'।

सुल्तान का ग्वालियर तथा ब्याना की ओर प्रस्थान

वे १७ जमादि-उल-आखिर (३ अप्रैल १४२८ ई०) को गदरग से नदी पार करके रापरी की ओर चल दिये। वहा से वे निरन्तर यात्रा करते हुए अपनी विलायत में पहुचे। बन्दिगी रायाते आला न गदरग तक उनका पीछा किया किन्तु दोनो पक्षो के मुसलमान होने के कारण समस्त अमीरो तथा मलिको ने उनकी सिफारिश की। ससार के स्वामी ने उनका पीछा करना त्याग कर विजय तथा सफलता प्राप्त करके हथीकान्त की ओर प्रस्थान किया और ग्वालियर के राय तथा अन्य राया से प्राचीन प्रथा के अनुसार धन, कर एव उपहार लेकर चम्बल नदी के किनारे किनारे होता हुआ ब्याना पहुचा। मुहम्मद खा औहदी ने इस कारण कि वह शर्की से मिल गया था, भयभीत होकर किला बन्द कर लिया। वन्दिगी रायाते (२१०) आला ने किला घेर लिया। यद्यपि उपर्युक्त किला ऊचाई में आकाश तक सिर उठाय था और अत्यधिक दृढ होने के कारण विजय न हो सकता था, किन्तु ससार के स्वामी के सौभाग्य से उन अभाग दुष्टो के जल के भडार में कमी पड गई। उनके अभिमान की वायु विजयी सेना के क्रोध की अग्नि से नष्ट हो गई। उनमें न तो युद्ध की शक्ति रही और न भागने की क्षमता। वे इस प्रकार सात दिन तक किले में घिरे रहे। अन्त में परेशान होकर उन्होंने क्षमा-याचना कर ली। रायाते आला ने बादशाही कृपा तथा इस्लामी दया को दृष्टि म रखते हुए उसे क्षमा कर दिया और अमानी की खिलअत प्रदान करके उसे सम्मानित किया। उसने सेना को किले से हट जाने का आदेश दिया। तदनुसार सेना हट गई।

ब्याना की ओर सुल्तान का प्रस्थान

२६ रजब (११ मई १४२८ ई०) को मुहम्मद खा किले से अपने सहायका सहित निकल कर मेवात की ओर चल दिया। वन्दिगी रायाते आला ने उस शहर (वालो) के, जो नष्ट हो चुका था, प्रोत्साहन हेतु वही पडाव किया। क्योकि ब्याना की अक्ता को सुव्यवस्थित रखने तथा किले की रक्षा की बादशाह को बडी चिन्ता थी अत मलिकुश्शर्क मलिक महमूद हसन को जिसके द्वारा राज्य-व्यवस्था एव सीमा की रक्षा के महान् कार्य सम्पन्न हुए थे और जिसकी वीरता एव निष्ठा को वह देख चुका था जिसने सिहासनारोहण के प्रारम्भ में जसरथ[1] शेखा खोखर से युद्ध किया था, लोहूर[2] के थान पर कब्जा रखते हुए शाहजादा खुरासान के नायब शेखजादा से युद्ध किया था, और मुल्तान की अक्ता में उसे प्रविष्ट न होने दिया था, उपर्युक्त किले की रक्षा तथा ब्याना की अक्ता एव उसके आसपास के स्थान सौंप दिये और स्वय यमुना के किनारे किनारे होता हुआ शहर (देहली) की ओर लौट गया। १५ शाबान (२११) ८३१ हि० (३० मई १४२८ ई०) को शुभ मुहूर्त में शहर मे प्रविष्ट हुआ और कूश्के सीरी[3] में उतरा। राज्य की अक्ताओ के अमीरो तथा मलिको को विदा करके स्वय भोग-विलास में ग्रस्त हो गया।

ईश्वर से प्रार्थना है कि सुलेमान[4] जैसे वैभव वाले इस बादशाह को ससार के नष्ट होने तक सिंहासन पर आरूढ रक्खे। इस शुभचिन्तक की यह इच्छा है कि उत्कृष्ट लेखकों की प्रथानुसार पुस्तक

१ यह नाम 'जसरत' भी छपा है।
२ लाहौर।
३ सीरी का राजप्रासाद।
४ एक प्रतापी पैग़म्बर जिनके विषय में प्रसिद्ध है कि वे वायु तक पर राज्य करते थे।

के अन्त में कुछ बातो की चर्चा करे और पुस्तक को ससार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह के प्रति शुभकामनायें प्रकट करके समाप्त करे किन्तु उसकी बादशाही के उद्यान तथा उसकी युवावस्था के उपवन के सहस्रो फूलो में से अभी तक एक भी फूल नही खिला है और उसके युद्धो तथा उसकी सभाओ के हजारो किस्मो में से एक किस्से का भी वर्णन इस बुल्बुल[१] ने नही किया है तब भी विवश होकर इस पुस्तक को समाप्त किया जाता है। यदि प्रार्थी जीवित रहा तो भविष्य में प्राप्त होने वाली विजयों तथा सुल्तान के चिरस्थायी कारनामो को इस ग्रन्थ में प्रत्येक वर्ष लिखता रहेगा, **यदि यह इच्छा हुई उस परमेश्वर की जो प्रत्येक चीज को भली भाँति सम्पन्न कराता है।**

कद्दू को दड, सरवरुलमुल्क का मेवात की ओर भेजा जाना

शव्वाल ८३१ हि० (जुलाई-अगस्त १४२८ ई०) में मलिक कद्दू मेवा[२] की इस अपराध पर कि वह सुल्तान इबराहीम से मिल गया है, और पेशकश तथा प्रार्थना पत्र प्रेषित करता है सुल्तान ने घर के भीतर हत्या करा दी। मलिक सरवरुलमुल्क सेनाओ सहित मेवात की ओर विद्रोह शान्त करने तथा उस विलायत[३] को सुव्यवस्थित करने के लिए भेजा गया। उनके कुछ कस्बे तथा ग्राम, जो जगलो में बसे (२१२) हुए थे, नष्ट करके पर्वत में चला गया। मलिक कद्दू का भाई जलाल खा तथा अन्य सरदार उदाहरणार्थ अहमद खा, मलिक फखरुद्दीन, मलिक अली तथा उनके सम्बन्धी अश्वारोहियो तथा पदातियो सहित इन्दौर के किले में एकत्र हो गये। जब मलिक सरवरुलमुल्क उपर्युक्त किले के निकट उतरा तो वह मुकाबला न कर सका। उन्होने सधि की वार्ता प्रारम्भ कर दी और यह निश्चय हुआ कि वह दासो के समान कर भेजा करेगा। तदनुसार धन, कर तथा दासो को लेकर मलिक सरवरुलमुल्क सेनाओ सहित शहर को लौट गया।

जसरथ द्वारा कलानोर का अवरोध, सिकन्दर तुहफा का उसके विरुद्ध प्रस्थान

इसी प्रकार जीकाद ८३१ हि० (अगस्त-सितम्बर १४२८ ई०) म समाचार प्राप्त हुए कि जसरथ खोखर ने कलानोर के कस्बे को घेर लिया है। मलिकुश्शर्क मलिक सिकन्दर तुहफा लोहूर[४] का अमीर (कलानोर वालो) की सहायतार्थ पहुचा। जसरथ कलानोर के किले को छोड कर कुछ कोस आगे बढा। उसमें तथा मलिक सिकन्दर में युद्ध हुआ। दुर्भाग्य से जसरथ को विजय प्राप्त हो गई। मलिक सिकन्दर की सेना पराजित हुई। मलिक सिकन्दर अपनी सेना सहित वापस होकर लोहूर चल दिया। जसरथ ने पुन कलानोर होते हुए जालन्धर की सीमा में ब्याह नदी को पार करके आक्रमण किया। जालन्धर का किला बडा दृढ था। वह उसे कोई हानि न पहुचा सका। वह आसपास के निवासियो को बन्दी बना कर पुन कलानोर पहुच गया।

जसरथ पर सिकन्दर तुहफा की विजय

इस समाचार के पाते ही रायाते आला ने सामाना के अमीर मजलिसे आली जीरक खा तथा

१ लेखक।
२ मेवाती।
३ प्रदेश।
४ लाहौर।

सरहिन्द के अमीर इस्लाम खा को आदेश भेजा कि वे अपनी सेनायें तैयार करके मलिकुश्शर्क मलिक सिकन्दर की सहायतार्थ प्रस्थान करें। उनकी सेनाओं के लोहूर[1] के शुभ नगर की ओर शिविर लगाने (२१३)के पूर्व ही मलिकुश्शर्क मलिक सिकन्दर कलानोर कस्बे में पहुचा। वह राय गालिब कलानोरी के अश्वारोहियो तथा पदातियो की सेना से मिल कर जसरथ से युद्ध करने के लिए कागडा के समीप व्याह नदी के तट की ओर अग्रसर हुआ। जसरथ भी तैयार होकर युद्ध के लिए डट गया। दोनों में युद्ध होने लगा। ईश्वर की कृपा से जब इस्लामी सेना को विजय प्राप्त होने लगी तो उसकी सेना की सख्या में कमी होने लगी। जो लूट की धन-सम्पत्ति वह जालन्धर की ओर से लाया था, उस सबको छोड कर पराजित होकर तीखर की ओर चल दिया और पराजय को ही उसने पर्याप्त समझा। मलिकुश्शर्क मलिक सिकन्दर विजय तथा सफलता प्राप्त करके लोहूर के शुभ नगर की ओर लौट गया।

महमूद हसन का ब्याना का विद्रोह शान्त करना

मुहर्रम ८३२ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १४२८ ई०) में मलिकुश्शर्क मलिक महमूद हसन ने ब्याना की विलायत के काफिरो का विद्रोह, जो मुहम्मद खा औहदी के अधीन एकत्र होकर उपद्रव मचा रहे थे, शान्त कर दिया। वह ब्याना के भूभाग से हज़रत हुमायूँने आला[2] के चरणो के चुम्बनार्थ शहर (देहली) पहुचा तथा चरण चूम कर सम्मानित हुआ। उसके प्रति अत्यधिक कृपा प्रदर्शित की गई। हिसार फीरोजा की अक्ता उसे प्रदान कर दी गई।

सुल्तान का मुल्तान की ओर प्रस्थान, मेवातियो का आज्ञाकारिता स्वीकार करना

तत्पश्चात् बन्दिगी रायाते आला ने कोहपाया मेवात[3] पर चढाई करने का सकल्प किया और हौजे खास पर बारगाह[4] लगवाई। राज्य के चारो ओर से अमीर तथा मलिक सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुए। वहा से प्रस्थान करके वह महदवारी[5] के कूच में उतरा। कुछ समय तक वह वहा ठहरा रहा। जलाल खा मेव[6], तथा अन्य मेवों[7], ने विवश होकर धन, कर तथा उपहार प्रथानुसार अदा करना स्वीकार कर लिया।

महमूद हसन का मुल्तान प्राप्त करना

शव्वाल ८३३ हि० (जुलाई-अगस्त १४२९ ई०) मे रायाते आला ने लूट की धन सम्पत्ति सहित सुरक्षित शहर (देहली) की ओर प्रस्थान किया। उस वर्ष उसने किसी स्थान पर आक्रमण न किया। इसी वर्ष मुल्तान के अमीर मलिक रजब नादिरा[8] की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुए। मुल्तान की अक्ता

१ लाहौर।
२ सुल्तान।
३ मेवात की पहाड़ियों।
४ शाही शिविर।
५ कुछ पोथियों के अनुसार 'हिन्दवारी'।
६ मेवाती।
७ मेवातियों।
८ कुछ पोथियों के अनुसार 'नादिर'।

(२१४) पुन मलिकुश्शर्क मलिक महमूद हसन को प्रदान कर दी गई। उसे एमादुलमुल्क की उपाधि प्रदान की गई और अत्यधिक सेना सहित मुल्तान भेजा गया।

सुल्तान का ग्वालियर तथा हथीकान्त पर आक्रमण

८३३ हि० (१४२९-३० ई०) में बन्दिगी रायाते आला ने ग्वालियर पर चढाई की और निरन्तर कूच करके ब्याना होता हुआ ग्वालियर के निकट पहुच गया। वहा के विद्रोहियो को दड देकर हथीकान्त की ओर चल दिया। हथीकान्त का राय पराजित होकर कोहपाया[1] जाल वाहर[2] की ओर चल दिया। उसने उसकी विलायत[3] को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। उस प्रदेश के अधिकाश काफिर बन्दी बना लिये गये। वहा से वह रापरी पहुचा। रापरी की अक्ता हसन खा से लेकर मलिक हमज़ा के पुत्र को दे दी। वह स्वय निरन्तर कूच करता हुआ लूट की धन सम्पत्ति सहित सुरक्षित रजब ८३३ हि० (मार्च-अप्रैल १४३० ई०) को लौट गया।

सैयिद सालिम की मृत्यु

मार्ग में सैयिद सालिम रुग्ण हो गया और उसी रोग के कारण उसकी मृत्यु हो गई। उसका ताबूत[4] तैयार करके उसे शीघ्रातिशीघ्र देहली पहुचाया गया और वहीं दफन कर दिया गया। स्वर्गीय सैयिद सालिम स्वर्गीय खिज्र खा की सेवा में ३० वर्ष तक रहा। तबरहिन्दा के किले के अतिरिक्त दोआब की बहुत सी अक्तायें तथा परगने उसके अधीन रहे। रायाते आला ने इनके अतिरिक्त उसे सरसुती का भूभाग तथा अमरोहा की अक्ता को भी सौंप दिया था। स्वर्गीय सैयिद को धन एकत्र करने का बडा लोभ था। अल्प समय में उसने तबरहिन्दा के किले में अत्यधिक धन, अनाज तथा कपडे एकत्र कर लिये। स्वर्गीय सैयिद की मृत्यु के उपरान्त उसकी समस्त अक्तायें तथा परगने उसके पुत्रो को सौंप दिये गये। उसके ज्येष्ठ पुत्र को सैयिद खा तथा छोटे लडके को शुजाउलमुल्क की उपाधि प्रदान कर दी गई।

पौलाद तुर्क वच्चे का विद्रोह

(२१५) शव्वाल ८३३ हि० (जून-जुलाई १४३० ई०) मे सैयिद सालिम का दास पौलाद तुर्क बच्चा सैयिद के पुत्रो के भडकाने से तबरहिन्दा के किले म प्रविष्ट हो गया तथा विद्रोह प्रारम्भ कर दिया। रायाते आला ने सैयिद के पुत्रो को बन्दी बना लिया और मलिक यूसुफ सरूप[5] तथा राय हीनू[6] भट्टी को पौलाद को अपनी ओर मिलाने तथा सैयिद की धन-सम्पत्ति पर अधिकार जमाने के उद्देश्य से भेजा।

पौलाद का विश्वासघात

जब वे तबरहिन्दा के किले के निकट पहुचे तो प्रथम दिन पौलाद न भेट की चर्चा की। सधि की

१ पहाड़ी।
२ कुछ पोथियों के अनुसार 'जलहार' अथवा जालहार'।
३ राज्य।
४ जनाज़ा, अर्थी।
५ बदायूनी के अनुसार 'सरवर'।
६ बदायूनी के अनुसार 'हन्नू भट्टी', फ़िरिश्ता के अनुसार 'राय हब्बू'।

वार्ता प्रारम्भ कर दी। उन्हे खाद्य सामग्री भेज कर निश्चिन्त कर दिया। दूसरे दिन उसने अचानक किले से निकल कर उनकी सेना पर छापा मारा। मलिक यूसुफ तथा राय हीनू को जब उसके विश्वासघात की सूचना मिली तो वे युद्ध के लिये तैयार होकर अग्रसर हुये। यद्यपि शाही सेना अधिकतर लोहे मे डूबी हुई थी, किन्तु दुष्ट पौलाद के सामने टूट कर एक ही आक्रमण मे बूंद-बूंद हो गई। उसने एक फरसग तक उनका पीछा किया। उपर्युक्त सेना पराजित होकर सरसुती की ओर चल दी। उनके शिविर में जो कुछ खेमे, सामग्री, कपडे तथा नकद धन था वह पौलाद को प्राप्त हो गया।

सुल्तान का पौलाद के विरुद्ध प्रस्थान

बन्दिगी रायाते आला को यह समाचार सुन कर बडी चिन्ता हुई। उसने शाही शिविर तबरहिन्दा की ओर लगवाये और निरन्तर कूच करता हुआ सरसुती पहुचा। उस ओर के अमीर तथा मलिक बन्दिगी रायाते आला की विजयी सेना से मिल गये। पौलाद के पास किले की रक्षा की अत्यधिक सामग्री उपलब्ध थी। उसके भरोसे तथा दृढता के कारण तबरहिन्दा के किले में बन्द हो गया। मजलिसे आली जीरक खा, मलिक कालू शहना[1], इस्लाम खा तथा कमाल खा ने तबरहिन्दा के किले को घेर लिया। (२१६) मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क, अमीर मुल्तान, को पौलाद के विद्रोह को शान्त करने के लिए मुल्तान से बुलवाया गया। एमादुलमुल्क जिलहिज्जा ८३३ हि० (अगस्त-सितम्बर १४३० ई०) मे अपनी सेना को मुल्तान में छोड कर जरीदा[2] थोडे से सहायको सहित सरसुती पहुचा और शाही चरण चूम कर सम्मानित हुआ।

एमादुलमुल्क का सन्धि करने के लिये भेजा जाना

इसके पूर्व पौलाद कहा करता था कि मुझे अपने सच्चे मित्र मलिक एमादुलमुल्क की बात पर विश्वास है। यदि वह मेरा हाथ पकड कर (रायाते आला के) समक्ष ले जायगा तो मैं आज्ञाकारिता स्वीकार कर लूँगा और खाक बोस[3] के सम्मान द्वारा सम्मानित हो जाऊँगा। रायाते आला ने उसे पौलाद को प्रोत्साहित करने के लिए तबरहिन्दा की ओर भेजा। पौलाद ने किले के बाहर निकल कर मलिक एमादुलमुल्क तथा मलिक कालू से द्वार के समक्ष भेंट की। दोनों में यह निश्चय हुआ कि कल पौलाद किले के बाहर निकल कर बन्दिगी रायाते आला के चरणो का चुम्बन करेगा। अन्त में शाही सेना में से किसी ने उसे भय दिला दिया कि तुझसे विश्वासघात किया जायगा। इस कारण उसने पुन किले में बन्द होकर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। मलिकुश्शर्क मलिक एमादुलमुल्क लौट कर रायाते आला के पास चला गया।

१ कुछ पोथियों के अनुसार 'शहनये पील' अर्थात् शाही हाथियों की देखरेख करने वाला सर्वोच्च अधिकारी।
२ जरीदा :—जरीदा का अर्थ "अकेला, शीघ्रातिशीघ्र अथवा कुछ थोडे से सवार जोकि बड़े दल का भाग हों" है। गयासुद्दीन तुगलुक की मृत्यु की घटना के सम्बन्ध में इस शब्द के कारण बड़ा मतभेद उत्पन्न हो गया है, किन्तु कुछ थोड़े से सवारों को लेकर शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करने के सम्बन्ध मे इस शब्द का प्रयोग अन्य स्थानों पर भी हुआ है। ('तुगलुक कालीन भारत', भाग २, पृ० ३४५, ४०५, बरनी। 'तारीखे फ़ीरोज़शाही' पृ० ४५२, 'तुगलुक कालीन भारत', भाग १, पृ० २५)।
३ धरती चुम्बन।

पौलाद का तबरहिन्दा के किले मे घेर लिया जाना

सफर ८३४ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १४३० ई०) में बन्दिगी रायाते आला ने मलिकुश्शर्क मलिक एमादुलमुल्क को विदा करके मुल्तान की ओर भेज दिया और स्वय सुरक्षित शहर (देहली) की ओर लौट गया। खाने आजम इस्लाम खा, कमाल खा तथा राय फीरोज कमाल मीन को आदेश दिया (२१७) कि वे तबरहिन्दा के किले को घेर लें। मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क वापिस होकर तबरहिन्दा पहुचा। उपर्युक्त अमीरो तथा मलिको को किले को घेरने के नियम तथा ढग समझाये। उसने किले को इस प्रकार घेर कर पडाव कर दिया कि किसी में भी बाहर निकलने की शक्ति न रही। जब अवरोध का कार्य दृढ हो गया तो वह स्वय निरतर कूच करता हुआ मुल्तान की ओर चल दिया। पौलाद इस प्रकार छ मास तक घिरा रहा और युद्ध करता रहा।

शेख अली का पौलाद की सहायतार्थ पहुँचना

इससे पूर्व पौलाद ने अपने आदमी शेख अली मुगल के पास भेज दिये थे और उसे कर अदा करना स्वीकार कर लिया था। इस लोभ से शेख अली अत्यधिक सेना लेकर काबुल से पौलाद की सहायतार्थ जमादि-उल-आखिर ८३४ हि० (फरवरी-मार्च १४३१ ई०) में झेलम नदी पर ऐनुद्दीन खुक्खर के तिलवारे[1] में पहुचा। अमीर मुजफ्फर तथा उसका भतीजा खाजिका, सीवर तथा सल्वन्त[2] से अत्यधिक सेना लेकर उससे मिल गये। वहा से सियूर वालो की भीड तथा खुक्खर लोग साथ साथ तबरहिन्दा पर आक्रमण करने के उद्देश्य से रवाना हुए। मार्ग में मलिक अबुल खैर खुक्खर ने भी भेंट की। ऐनुलमुल्क तथा मलिक अबुल खैर खुक्खर को वह मार्गदर्शक बना कर ब्याह नदी के तट पर पहुचा। कुसूर कस्बे से होते हुए उसने बोही घाट के निकट ब्याह नदी पार की और राय फीरोज की विलायत[3] पर आक्रमण किया। राय फीरोज तबरहिन्दा के किले के पास से अपने परिवार तथा सहायको की रक्षा के बहाने से अन्य अमीरो की अनुमति के बिना चल दिया। शेख अली और भी अन्धा हो गया।[4] जब वह तबरहिन्दा के समीप दस कोस पर पहुचा तो इस्लाम खा, कमाल खा तथा अन्य अमीर भी किले का घेरा छोड कर अपने अपने निवास-स्थान को चल दिये। शेख अली जब तबरहिन्दा के निकट पहुचा तो पौलाद किले के बाहर निकला और उसने उससे भेट की और दो लाख तन्के जो उसने अदा करना स्वीकार किया था अदा किये।

(२१८) शेख अली पौलाद की स्त्री तथा बालको को अपने साथ लेकर तबरहिन्दा से रवाना हो गया। मार्ग में उसने राय फीरोज की अधिकाश विलायत विध्वस कर दी। तिरहाना कस्बे के निकट उसने सतलदर[5] नदी पार की। जालन्धर की विलायत[6] वालो ने आरब मन्झूर[7] तक के निवासियो को बन्दी बना लिया। वह पुन ब्याह नदी के तट पर पहुचा। रजब ८३४ हि० (मार्च-अप्रैल १४३१ ई०)

१ सम्भवत अधीनस्थ ग्राम।
२ कुछ पोथियों के अनुसार 'सकुनत'।
३ प्रदेश।
४ उसका अभिमान बढ गया।
५ सतलुज।
६ प्रदेश।
७ कुछ पोथियों के अनुसार 'जारन मन्झूर' पजाब के फ़ीरोजपुर जिले मे आधुनिक 'जीरा'

को ब्याह नदी पार करके लोहूर[1] की ओर रवाना हुआ। लोहूर के अमीर मलिकुश्शर्क मलिक सिकन्दर ने वह कर जो वह प्रति वर्ष दिया करता था उसे देकर लौटा दिया। वहा से वह कुसूर होता हुआ प्रसिद्ध नगर दीवालपुर के समक्ष तिलवारे में उतरा और २० दिन तक वहा पडाव करके उस स्थान को नष्ट कर दिया।

एमादुलमुल्क का अग्रसर होना

जब मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क को उसकी वापसी, राय फीरोज की विलायत तथा जालन्धर की अक्ता के नष्ट होने के समाचार प्राप्त हुए तो वह अत्यधिक सेना लेकर ४० कोस आगे बढा और उसने तलुम्बा[2] कस्बे मे पडाव कर दिया। शेख अली मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क के भय से रावी नदी होता हुआ तलवनह कस्बे में पहुचा। वहा भी न ठहर सकने के कारण खूतपुर[3] चल दिया। इसी प्रकार रायाते आला की तौकी[4] मलिकुश्शर्क को प्राप्त हुई कि वह तलुम्बा से मुल्तान चला जाय तथा शेख अली से युद्ध न करे।

शेख अली की विजय

२४ शाबान ८३४ हि० (७ मई १४३१ ई०) को मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क ने प्रस्थान किया और मुल्तान पहुचा। शेख अली तबरहिन्दा से कुछ अमीरो तथा मलिको के भाग जाने तथा उस विलायत को नष्ट करने के कारण बडा अभिमानी हो गया था और विश्वासघाती आकाश के क्रोध तथा छल की अग्नि से भय न करता था। वह रावी नदी को पुन खून्तपुर के निकट पार करके मुल्तान की ओर चल (२१९) दिया। मुल्तान की अधिकाश विलायत रावी के सूखे होने के कारण दुर्दशा में थी। झेलम तट पर जो कुछ आबादी रह गई थी, उसे भी नष्ट करके उसने मुल्तान से १० कोस पर पडाव किया। मलिक सुलेमान शाह लोदी को मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क ने तलीये[5] के रूप में आगे भेजा था। शेख अली मुगल अपनी समस्त सेना सहित कूच करता हुआ आ रहा था। दोनो में युद्ध हो गया। सक्षेप में मलिक सुलेमान शाह लोदी की मौत आ गई और उसकी हत्या हो गई। उसकी सेना में से कुछ मारे गये और कुछ मुल्तान भाग गये।

३ रमजान ८३४ हि० (१५ मई १४३१ ई०) को शेख अली वहा से प्रस्थान करके खुसरवाबाद ग्राम में पहुचा और वही पडाव किया। ४ रमजान ८३४ हि० (१६ मई १४३४ ई०) को वह अपनी समस्त सेना सहित तैयार होकर मुल्तान की नमाजगाह[6] के निकट पहुचा। मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क भी युद्ध के लिए किले में उपस्थित था। कुछ पदाती युद्ध हेतु आगे बढे और उसकी सेना को उद्यानो में रोक कर उन्होने आगे बढने न दिया। वह विवश होकर पुन खुसरवाबाद की ओर लौट गया। नित्य

१ लाहौर।
२ मुल्तान के उत्तर पूर्व में ५२ मील पर।
३ कुछ पोथियों में 'खतीबपुर'।
४ वह फ़रमान जिसमें शाही मुहर बादशाह के नाम तथा उपाधियाँ सहित लगी हो।
५ सेना का वह अग्रिम दल जो मुख्य सेना के प्रस्थान के पूर्व शत्रुओं का पता लगाने तथा सेना के पड़ाव एवं रण क्षेत्र के विषय में सूचना प्राप्त करने के लिये भेजा जाता है।
६ सम्भवतः ईदगाह जहाँ ईद की नमाजें पढी जाती थीं।

प्रति उसकी सेना आसपास के स्थानो तथा झेलम के किनारे आक्रमण करके लोगों के मवेशी तथा अनाज लूट ले जाती थी।

शेख अली की पराजय

२५ रमज़ान ८३४ हि० (६ जून १४३४ ई०) को शेख अली ने अपनी समस्त सेना तथा परिजन युद्ध के लिये तैयार किये और उन्हें लेकर मुल्तान के द्वार के समक्ष आया। मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क (२२०) की सेना तथा नगर-निवासी भी बाहर निकल कर उद्यानो में युद्ध करने लगे। आक्रमणकारी जो सामग्री, मवेशी तथा सीढियाँ लाये थे, उन पर मुल्तान के पदातियो ने अधिकार जमा लिया। वे पराजित होकर पुन अपने क्षेत्र में लौट गये।

शुक्रवार २७ रमज़ान ८३४ हि० (८ जून १४३१ ई०) को उन लोगों ने पूर्ण तैयारी सहित मुल्तान पर आक्रमण किया। अश्वारोही द्वार तक पहुँचने के लिए घोडो से उतर पडे। मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क ने अपने अश्वारोहियो तथा पदातियो को लेकर उनपर आक्रमण किया। वे आक्रमण का मुकाबला न कर सके। सभी पलायन कर गये। कुछ लोगों की हत्या कर दी गई और कुछ भाग कर अपनी सेना से मिल गये। उस दिन पराजित हो जाने के उपरान्त वे पुन किले के निकट फटकने का साहस न कर सके।

एमादुलमुल्क की सहायतार्थ अन्य सेना का पहुँचना

सक्षेप में जब रायाते आला को यह समाचार प्राप्त हुए तो उसने मजलिसे आली खाने आज़म फतह खा बिन (पुत्र) सुल्तान मुज़फ्फर गुजराती, मजलिसे आली जीरक खा, मलिक कालू शाहनये पील[1], खाने आज़म इस्लाम खा, मलिक यूसुफ सरवरुलमुल्क, खाने आज़म कमाल खा तथा राय हीनू ज्वालजी भट्टी को अत्यधिक सेना देकर मलिकुश्शर्क मलिक एमादुलमुल्क की सहायतार्थ भेजा। उपर्युक्त अमीर निरन्तर कूच करते हुए २६ शव्वाल ८३४ हि० (७ जुलाई १४३१ ई०) को मुल्तान पहुचे। कुछ दिन तक उन्होने विश्राम किया। शुक्रवार ३ ज़ीकाद ८३४ हि० (१३ जुलाई १४३१ ई०) को नमाज़गाह के निकट से विजयी सेना ने कूच किया (२२१) और अलाउलमुल्क के कोटले[2] में वे उतरना चाहते थे कि शेख अली को सूचना मिल गई। वह अपने समस्त अश्वारोहियो तथा पदातियो को तैयार करके युद्ध के लिये निकला। विजयी सेना भी तैयार खडी थी। मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क मध्य भाग से, मजलिसे आली फतह खा, मलिक यूसुफ तथा राय हीनू, दायी पक्ति से, मजलिसे आली जीरक खा, मलिक कालू, खाने आज़म इस्लाम खा तथा खाने आज़म कमाल खा, बायें भाग से उससे युद्ध करने के लिए अग्रसर हुए। वह (शेख अली) विजयी सेना को देख कर दूर ही से पलायन कर गया। विजयी सेना के योद्धाओ ने उन पर एक साथ आक्रमण कर दिया। वे अव्यवस्थित एव पराजित होकर इस प्रकार भागे कि पीछे मुड कर भी न देखा। उसकी सेना के कुछ सरदारों की पलायन के समय हत्या कर दी गई।

१ शाही हाथियों की देख-रेख करने वालों का मुख्य अधिकारी।
२ किले।

शेख अली की पराजय तथा पलायन

वह स्वयं अपनी सेना सहित अपने शिविर मे, जिसकी उसने किलेबन्दी कर ली थी, प्रविष्ट हो गया। जब विजयी सेना ने वहा पहुच कर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया तो वे उस आक्रमण को सहन न कर सके। सभी झेलम नदी मे घुस गये। अधिकाश ईश्वर के आदेश से फिरऔन[1] की सेना के समान हो गये। शेष, कुछ मारे गये और कुछ बन्दी बना लिये गये। हाजीकार आहत होकर डूबने वालो में सम्मिलित हो गया। शेख अली तथा अमीर मुजफ्फर ने बिना किसी हानि के नदी पार कर ली और वे कुछ अश्वारोहियो सहित सियर कस्बे में पहुच गये। उनके समस्त घोड़, अस्त्र-शस्त्र तथा धन-सम्पत्ति विजयी सेना को प्राप्त हो गई। इस प्रकार की दुर्घटना तथा ऐसा घोर सकट पिछले युग तथा भूत काल मे किसी सेना पर न पड़ा था। जो कोई नदी की ओर बढा वह नदी में डूब गया और जो कोई पलायन (२२२) कर गया वह भी नष्ट हो गया। यहा तक कि किसी में भागने तथा युद्ध करने का सामर्थ्य न रह गया था। मानो वे सब एक साथ मौत के छिद्र में पहुच गये हो। मनुष्य को इस महान् सकट तथा विपत्ति से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।[2]

(२२३) मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क अर्थात् मलिक महमूद हसन तथा अन्य अमीरो ने, जो इस कार्य हेतु नियुक्त हुए थे, ४ जीकाद ८३४ हि० (१४ जुलाई १४३१ ई०) को शेख अली का सियूर कस्बे तक पीछा किया। अमीर मुजफ्फर ने सियूर के किले में किले की रक्षा की व्यवस्था कर रक्खी थी। उसने उसके भरोसे पर किले में बन्द होकर युद्ध किया। शेख अली अपने थोड़े से सैनिको सहित पराजित होकर काबुल की ओर चल दिया। इसी बीच मे शाही तौकी (आदेश) प्राप्त हुई और जो अमीर इस युद्ध हेतु नियुक्त हुए थे, वे सियूर के किले से शहर (देहली) की ओर चल दिये।

मलिक खैरुद्दीन को मुल्तान प्रदान किया जाना

इस कारण से मुल्तान की अक्ता मलिकुश्शर्क से लेकर मलिक खैरुद्दीन खानी को प्रदान कर दी गई। यह स्थानान्तरण बिना सोच-विचार के किया गया, इस कारण मुल्तान में इतने उपद्रव उठ खडे हुए कि उनका सविस्तार उल्लेख आगे के पृष्ठो में किया जायगा।

जसरथ का जालन्धर पर आक्रमण

रबी-उल-अव्वल ८३५ हि० (नवम्बर-दिसम्बर १४३१ ई०) में रायाते आला ने यह सुना कि 'मलिक सिकन्दर तुहफा जालन्धर की ओर गया हुआ था, जसरथ शेखा खोखर एक बहुत बड़ी सेना लेकर तीखर पर्वत से प्रस्थान करके झेलम, रावी तथा ब्यास नदिया पार करता हुआ जालन्धर के निकट पेनी[3] नदी के तट पर पहुचा। मलिक सिकन्दर असावधान था। थोडी सी सेना लेकर उसने मुकाबला किया। प्रथम आक्रमण ही में पराजित हो गया। दुर्भाग्य से उसके घोड़े का पाव दलदल में फस गया। जसरथ ने उसको जीवित बन्दी बना लिया। उसकी सेना के कुछ लोग युद्ध में मारे गये और कुछ भाग कर जालन्धर की ओर चल दिये।"

१ मिस्र का अत्याचारी बादशाह जिसकी सेना मूसा पैगम्बर से युद्ध हेतु अग्रसर होते समय नील नदी में डूब कर नष्ट हो गई।
२ शिक्षा हेतु प्रचलित वाक्यों का अनुवाद नहीं किया गया।
३ कुछ पोथियों में 'बेनी'।

जसरथ का लाहौर पर आक्रमण

जसरथ, सिकन्दर तथा उसकी सेना के कुछ सरदारों को, जो बन्दी बना लिये गये थे, साथ लेकर लोहूर[1] की ओर रवाना हुआ। लोहूर में किले को घेर लिया। सिकन्दर का नायब सैयिद नज्मुद्दीन (२२४) तथा उसका दास मलिक खुश खबर किले में थे। उन्होंने युद्ध प्रारम्भ कर दिया। दोनों के मध्य में रोजाना युद्ध होता था।

शेख अली का मुल्तान पर आक्रमण तथा उसके अत्याचार

इसी बीच में शेख अली ने भी पिशाचों के समूह को एकत्र करके मुल्तान के क्षेत्र पर आक्रमण कर दिया। खूतपुर[2] वालों तथा झेलम नदी के ग्राम के बहुत से निवासियों को बन्दी बना लिया और नदी पार की। १७ रबी-उल-अव्वल ८३५ हि० (२३ नवम्बर १४३१ ई०) को वह तल्अनह[3] कस्बे में पहुचा। कस्बे वालों से सधि की वार्ता प्रारम्भ करके उन्हें अपने अधिकार में कर लिया। उनमें से जो लोग उनके सरदार थे, उन्हें बन्दी बना लिया। तत्पश्चात् उसने अपनी पिशाचों की सेना को किले पर अधिकार कर लेने का आदेश दे दिया। दूसरे दिन समस्त मुसलमान अपवित्र काफिरों तथा धृष्ट अध र्मियों द्वारा बन्दी बना लिये गये। यद्यपि कस्बे के अधिकाश सदाचारी व्यक्ति, इमाम[4], सैयिद तथा काजी थे, किन्तु उन दुष्ट पिशाचों ने किसी के मुसल्मान होने अथवा खुदा के भय की ओर ध्यान न दिया। समस्त स्त्रिया, युवक तथा बालक खीच-खीच कर उसके घर पहुचाये गये और पुरुषों में कुछ तो तलवार के घाट उतार दिये गये और कुछ मुक्त कर दिये गये। तलवनह[5] का किला जो अपनी दृढता के लिये प्रसिद्ध था चूर-चूर कर दिया गया। ईश्वर पिशाचों का विनाश करे और मुसलमान बादशाह तथा इस्लाम धर्म को उन्नति प्रदान करे।

पौलाद द्वारा राय फीरोज की पराजय

इसी बीच में पौलाद तुर्क बच्चे ने तबरहिन्दा से अपनी सेना सहित राय फीरोज की विलायत पर आक्रमण किया। जब राय फीरोज को इस बात का पता चला तो उसने अपने अश्वारोहियों तथा पदातियों सहित युद्ध किया। दोनों में युद्ध हुआ। दुर्भाग्य से राय की मृत्यु हो गई। वह (पौलाद) (२२५) उसका सिर काट कर तबरहिन्दा में ले गया। उस विलायत के अधिकाश घोडे तथा अनाज पौलाद को प्राप्त हो गये।

सुल्तान का पौलाद के विरुद्ध प्रस्थान

यह सुन कर बन्दिगी हज़रत रायाते आला ने जमादि-उल-अव्वल ८३५ हि० (जनवरी फरवरी १४३२ ई०) में शाही शिविर लोहूर[6] तथा मुल्तान की दिशा में लगवाये। मलिक सरूप[7] को शाही

१ लाहौर।
२ कुछ पोथियों के अनुसार 'खतीबपुर'।
३ कुछ पोथियों के अनुसार 'तलुम्बा'।
४ जो सामूहिक अनिवार्य नमाज में आगे खड़े होकर नमाज पढाते है।
५ तलुम्बा।
६ लाहौर।
७ कुछ पोथियों के अनुसार 'सरवर'।

सेना का मुकद्दमा[1] नियुक्त करके उपर्युक्त विद्रोह को शान्त करने के लिए भेजा गया। जब शाही सेना सामाना के क्षेत्र में पहुची तो जसरथ हरामखोर किले को छोड कर तीखर[2] पर्वत की ओर चल दिया और मलिक सिकन्दर को अपने साथ लेता गया।

लाहौर तथा जालन्धर का नुसरत खा को प्रदान किया जाना

शेख अली भी विजयी सेना से भाग कर वारतूत की ओर चल दिया। लोहूर की अक्ता मलिकुश्शर्क़ शम्सुलमुल्क से लेकर खाने आजम नुसरत खा गुर्ग अन्दाज[3] को प्रदान कर दी गई। शम्सुलमुल्क के परिवार वालो को मलिक सरूप ने लोहूर के किले से निकाल कर राजधानी में भेज दिया। लोहूर का किला तथा जालन्धर की अक्ता पर नुसरत खा ने अधिकार जमा लिया।

जसरथ की पराजय तथा पलायन

ज़िलहिज्जा ८३५ हि० (जुलाई-अगस्त १४३२ ई०) में जसरथ खोखर पवन से अत्यधिक सेना लेकर लोहूर पहुचा। उसमें तथा नुसरत खा में युद्ध हुआ। अन्त में जसरथ विवश होकर लौट गया। बन्दिगी हज़रते रायाते आला यमुना तट पर पानीपत के निकट बहुत समय तक अपनी सेना के शिविर लगाये रहा। वहा से उसने मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क को अत्यधिक सेना देकर रमज़ान ८३५ हि० (मई १४३२ ई०) में ब्याना तथा गालीवर[4] की ओर वहा के विद्रोहियो तथा काफिरो को दड देने के लिये भेजा। वह स्वय शुभ मुहूर्त तथा ग्रह में शहर (देहली) की ओर लौट आया।

सुल्तान का सामाना पर आक्रमण

(२२६) मुहर्रम ८३६ हि० (अगस्त सितम्बर १४३२ ई०) में ससार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह ने सामाना पर उस ओर के विद्रोहियो को दड देने के लिए चढाई की। शक्तिशाली सेना लेकर वह पानीपत पहुचा। इसी बीच में मखदूमये जहा, रायाते आला मुबारक शाह की माता के रुग्ण होने के समाचार प्राप्त हुए। यह समाचार पाते ही वह थोडे से अश्वारोहियो को लेकर शहर (देहली) की ओर चल खडा हुआ। सेना, शिविर तथा समस्त अमीरो और मलिको को उसी भूभाग में छोड गया। कुछ दिन उपरान्त मखदूमये जहा का निधन हो गया। रायाते आला शोक सम्बन्धी प्रथाओ के पूर्ण होने के दस दिन पश्चात् तक शहर (देहली) में ठहरा रहा। तत्पश्चात् शहर से सेना के शिविर में पहुच गया।

मलिक सरूप का तबरहिन्दा को भेजा जाना

उसने मलिक सरूप[5] को आदेश दिया कि वह सेना लेकर तबरहिन्दा पर चढाई करे। पौलाद तुर्क बच्चे ने पूर्व ही से किले की रक्षार्थ अत्यधिक व्यवस्था कर ली थी। इसके अतिरिक्त उसने राय

१ अग्रिम दल का नेता।
२ तिलहर।
३ भेड़िये की हत्या करने वाला।
४ ग्वालियर।
५ सरवर।

फीरोज की विलायत[1] से भी सामग्री तथा अनाज किले में एकत्र कर लिया था। उसने किलेबन्दी करके विजयी सेना से युद्ध किया। मलिक सरूप सरवरुलमुल्क वहा की व्यवस्था ठीक करके, मजलिसे आली जीरक खा, इस्लाम खा तथा मलिक बहुनराज को वहा छोड कर स्वय थोडी सी सेना लेकर रायाते आला के पास पानीपत पहुचा।

लाहौर तथा जालन्धर का काका लोदी को प्रदान किया जाना

बादशाहे जहापनाह ने उस ओर प्रस्थान करने का विचार त्याग दिया। लोहूर[2] तथा जालन्धर की अक्ता नुसरत खा से लेकर मलिक अलहदाद काका लोदी को प्रदान कर दी। जब मलिक अलहदाद जालन्धर की विलायत में प्रविष्ट हुआ तो जसरथ तैयार था। ब्याह[3] नदी पार करके बजवारा[4] की हद में पहुचा। उसमें तथा अलहदाद में युद्ध हुआ। ईश्वर ने जसरथ को विजय प्रदान की। मलिक अलह (२२७) दाद पराजित होकर कोथी पर्वत की ओर चल दिया।

सुल्तान का मेवात की ओर प्रस्थान, जलाल खा का आज्ञाकारिता स्वीकार करना

रबी-उल-अव्वल ८३६ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १४३२ ई०) में सुल्तान ने मेवात की पहाडियो की दिशा में शिविर लगाये। निरन्तर कूच करता हुआ ताउरु कस्बे के निकट पहुचा। जलाल खा मेव[5] को जब यह समाचार प्राप्त हुए तो वह अत्यधिक सेना लेकर अन्दवर के किले में जो मेवातियो के किलो में अत्यन्त दृढ था बन्द हो गया। दूसरे दिन बादशाह ने तैयार होकर उस किले पर अधिकार जमाने के लिये आक्रमण किया। अभी विजयी सेना का अग्रिम दल भी वहा न पहुचा था कि जलाल खा किले के भीतर आग लगा कर कोटला की ओर भाग गया। जो सामग्री, वस्त्र, अनाज इत्यादि उसने किले में बन्द होकर युद्ध करने के लिये एकत्र किये थे उनमें से अधिकाश विजयी सेना के हाथ लग गये। रायाते आला ने वहा से कूच करके तजारा कस्बे में पडाव किया और अधिकाश मेवात प्रदेश नष्ट कर दिया। जब जलाल खा विवश तथा व्याकुल हो गया तो उसने आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली और प्रथानुसार धन तथा कर प्रदान किया। ससार के स्वामी ने उसकी धृष्टता क्षमा कर दी, उसे शाही कृपादृष्टि द्वारा सम्मानित किया गया। तजारा कस्बे मे मलिक एमादुलमुल्क ब्याना की अक्ता से अत्यधिक अश्वारोहियो तथा पदातियो को लेकर सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुआ।

कमालुद्दीन का ग्वालियर तथा इटावा के विरुद्ध भेजा जाना

रायाते आला ने मलिक कमालुलमुल्क को तजारा कस्बे के पडाव से ग्वालियर तथा इटावा के काफिरो की विलायत पर अधिकार जमाने के लिये भेजा और स्वय थोडे से अश्वारोहियो तथा पदातियो सहित शहर (देहली) की ओर लौट आया। जमादि-उल-अव्वल ८३६ हि० (दिसम्बर-जनवरी १४३२-३३ ई०) में वह शुभ मुहूर्त तथा ग्रह में राजधानी पहुचा और कुछ दिन तक वहा विश्राम किया।

१ अधिकार क्षेत्र, प्रदेश।
२ लाहौर।
३ ब्यास।
४ जालन्धर के उत्तर-पूर्व में २५ मील पर तथा होशियारपुर के पूर्व डेढ मील पर।
५ मेवाती।

शेख अली द्वारा लाहौर का अवरोध

(२२८) इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुए कि शेख अली अत्यधिक सेना एव बहुत बडा दल लेकर कुछ अमीरो के विरुद्ध, जो तवरहिन्दा पर अधिकार जमाने के लिये नियुक्त थे, आ रहा है। रायाते आला को चिन्ता हो गई। इस भय से कि उपर्युक्त अमीर जिस प्रकार प्रथम बार उसके (शेख अली के) डर से तवरहिन्दा के किले का घेरा छोड कर भाग गये थे, उसी प्रकार कहीं दूसरी बार भी न भाग जाय, मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क को उनकी सहायतार्थ भेजा गया। मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क के उन अमीरो की सहायतार्थ तवरहिन्दा में पहुच जाने के कारण उनका साहस बढ गया। सक्षेप में, शेख अली ने सियूर से बढ कर व्याह[1] नदी के तट की विलायत पर आक्रमण किया। साहनीवाल तथा अन्य ग्रामो के बहुत से लोगो को वन्दी बना कर लोहूर[2] की ओर रवाना हुआ। मलिक यूसुफ सरूप[3], मजलिसे आली जीरक खा का भतीजा मलिक इस्माईल तथा बिहार खा का पुत्र मलिक राजा, लोहूर के किले की रक्षार्थ नियुक्त थे। वे क़िले में वन्द होकर उससे युद्ध करते रहे। लोहूर निवासियों ने पहरे तथा चौकी में असावधानी प्रदर्शित की। इस कारण मलिक यूसुफ तथा मलिक इस्माईल एक पहर रात्रि व्यतीत हो जाने पर किले के बाहर निकल कर भाग खडे हुए। दुष्ट शेख अली को सूचना मिल गई। उसने उनका पीछा करने के लिए सेना भेजी। कुछ अश्वारोही पिशाचो द्वारा मार डाले गये, कुछ वन्दी बना लिये गये। मलिक राजा भी वन्दी बना लिया गया। दूसरे दिन उस दुष्ट पिशाच अर्थात् शेख अली ने नगर के समस्त मुसलमानो—स्त्रियो तथा पुरुषो—को वन्दी बना लिया। उस पिशाच के पास इस्लाम का नगर नष्ट करने तथा मुसलमानो को वन्दी बनाने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न था।

शेख अली का लाहौर पर अधिकार जमाना तथा दीवालपुर की ओर प्रस्थान

(२२९) सक्षेप में लोहूर[4] निवासियो को वन्दी बनाने के पश्चात् वह कुछ दिन वहा ठहरा रहा। लोहूर के किले का, जो विभिन्न स्थानों पर टूट-फूट गया था, जीर्णोद्धार कराया। २००० योद्धा अश्वारोही तथा पदाती किले में छोड कर किले की रक्षा की सामग्री उन्हें देकर स्वय दीवालपुर की ओर चल दिया। मलिक यूसुफ सरवरुलमुल्क की इच्छा थी कि जिस प्रकार उसने लोहूर का किला खाली कर दिया था उसी प्रकार दीवालपुर का किला भी रिक्त करके चला जाय। मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क को तवरहिन्दा में इस बात का पता लग गया। मलिकुलउमरा मलिक अहमद को, जो उसका अनुज था उसने दीवालपुर के किले की रक्षा हेतु भेजा। शेख अली, मलिकुश्शर्क के सामने से सहस्रों युक्तियों द्वारा अपने प्राण सुरक्षित ले जा सका। उसके हृदय में वही आतक आरूढ था और वह दीवालपुर की ओर जाने का साहस न कर सका।

सुल्तान का सामाना तथा तिलौदी की ओर प्रस्थान

जमादि-उल-आखिर ८३६ हि० (जनवरी-फरवरी १४३३ ई०) को मुबारक शाह ने उस अभागे की दुष्टता के समाचार सुने। वह वीरता के मैदान का सिंह बिना सोचे हुए जो थोडी सी भी सेना उप-

१ व्यास।
२ लाहौर।
३ सरवर।
४ लाहौर।

लब्ध थी उसी को लेकर निरन्तर कूच करता हुआ सामाना पहुचा। वहा उसने मलिकुश्शर्क कमालुल-मुल्क के कारण कुछ दिन तक पडाव किया। जब मलिकुश्शर्क समस्त नियुक्त सेना सहित पाबोस[१] कर चुका तो मुबारक शाह ने सामाना से सुनाम होते हुए राय फीरोज मीन की तिलौंदी के निकट पडाव किया। मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क तथा इस्लाम खा लोदी, जो तबरहिन्दा में नियुक्त थे, रायाते आला (२३०)की सेवा में उपस्थित हुए। उसने अन्य अमीरो को आदेश दिया कि वह किले के पास से पृथक् न हो। वह स्वय शीघ्रातिशीघ्र बोही के घाट पर पहुचा। जब उस अभागे को इसकी सूचना मिली तो वह व्याकुल होकर दूर ही से भाग खडा हुआ। विजयी सेना दीवालपुर के निकट पहुची तथा ब्याह नदी पार करके रावी तट पर उतरी। उस पिशाच ने भी झेलम नदी पार की।

सिकन्दर तुह्फा का दीवालपुर तथा जालन्धर प्राप्त करना

मलिकुश्शर्क सिकन्दर तुहफा को शम्सुलमुल्क की उपाधि दी गई और दीवालपुर तथा जालन्धर की अक्ता उसने प्राप्त की और उसे शक्तिशाली सेना देकर उन अभागो के विरुद्ध, जो लोहूर[२] के किले को बन्द किये हुए थे, नियुक्त किया और स्वय सुरक्षित सियूर के किले की ओर, जो उस अभागे के अधीन था, चल दिया। उसने रावी नदी तलुम्बा कस्बे के निकट पार की। मलिकुश्शर्क को शेख अली का पीछा करने के लिए नियुक्त किया।

शेख अली का पलायन

वह अभागा आतकित होकर इस प्रकार भागा कि उसने पीछे मुड कर न देखा। उसके अधिकाश घोडे, कपडे तथा सामग्री जो नौकाओ में थी इस्लामी सेना के अधिकार में आ गई। सियूर के किले में शेख अली का भतीजा अमीर मुज़फ्फर था। वह किले की दृढता के कारण किले में बन्द होकर बादशाह से लगभग एक मास तक युद्ध करता रहा। अन्त में विवश होकर सधि की वार्ता करने लगा।

शेख अली के भतीजे मुज़फ्फर का अधीनता स्वीकार करना

रमज़ान ८३६ हि० (अप्रैल-मई १४३३ ई०) में उसने अपनी पुत्री बादशाह के पुत्र[३] को देकर तथा कर का धन अदा करके बादशाह से सधि कर ली। शव्वाल ८३६ हि० (मई-जून १४३३ ई०) में जिन पिशाचो के समूह ने लोहूर[४] का किला बन्द कर रक्खा था, उसने मलिकुश्शर्क शम्सुलमुल्क को सौंप कर किला खाली कर दिया। उस किले पर मलिकुश्शर्क शम्सुलमुल्क ने अधिकार जमा लिया। जब समार को शरण प्रदान करने वाला बादशाह सियूर तथा लोहूर के युद्ध से निश्चिन्त हो गया तो उसने देहली की ओर लौटना निश्चय किया।

सुल्तान का मुल्तान की ओर प्रस्थान

(२३१) शव्वाल ८३६ हि० (मई-जून १४३३ ई०) में सुल्तान विजय तथा सफलता पाकर

१ चरणों का चुम्बन।
२ लाहौर।
३ फ़िरिश्ता के अनुसार 'बादशाह को'।
४ लाहौर।

अत्यधिक सेना सहित सम्मानित मशायख[1] के (मज़ारों के दर्शनार्थ) मुल्तान की ओर रवाना हुआ। हाथी, पायगाह[2], सेना तथा शिविर मलिकुश्शर्क कमालुलमुल्क के पास दीबालपुर नामक प्रसिद्ध नगर में छोड़ गया। पूज्य मशायख के मज़ारों[3] के दर्शन तथा उस प्रदेश के कार्यों को सम्पन्न करने के उपरान्त वह कुछ ही दिन में शीघ्रातिशीघ्र प्रसन्नचित्त दीबालपुर नगर में पहुंचा। अभागे शेख अली के भय से उसने लोहूर तथा दीबालपुर का किला राज्य-व्यवस्था के नियमानुसार एक शूरवीर तथा राजभक्त को, जो सर्वदा रणक्षेत्र में डटा रहता था, देकर वापस होना निश्चय किया। मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क के सर्वगुणसम्पन्न होने तथा अधिकांश युद्धों के उसके द्वारा विजय होने के कारण लोहूर[4], दीबालपुर तथा जालन्धर की अक्तायें शम्सुलमुल्क से लेकर उसे (मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क को) प्रदान कर दी। ब्याना की अक्ता मलिक एमादुलमुल्क से लेकर शम्सुलमुल्क को प्रदान कर दी गई। (मुबारक शाह) हाथी, पायगाह, सेना, परिजन तथा खेमे-डेरे इत्यादि मलिकुश्शर्क कमालुलमुल्क के पास छोड़ कर शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करता हुआ ईद[5] के दिन राजधानी देहली में पहुंच गया। अमीर, मुलूके शहरदार[6], सैनिक तथा बाजारी संसार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह के समक्ष खाक बोस[7] करके सम्मानित हुए।

नये पद

(२३२) १ ज़िलहिज्जा ८३६ हि० (१९ जुलाई १४३३ ई०) को मलिकुश्शर्क कमालुलमुल्क भी सुरक्षित विजयी सेना सहित बड़ी लम्बी यात्रा करके राजधानी में पहुंच गया। दीवाने विज़ारत[8] के कार्य सरवरुलमुल्क द्वारा सम्पन्न न हो पाते थे। उससे इशराफ[9] का कार्य लेकर मलिकुश्शर्क कमालुलमुल्क को, समस्त कार्यों एवं गुणों में दक्ष होने के कारण, दे दिया गया। विज़ारत सरवरुलमुल्क के अधिकार में रही। कमालुलमुल्क को दीवाने इशराफ प्रदान हुआ। दोनों मिल कर शासन प्रबन्ध करने लगे किन्तु दोनों में मतभेद रहता था। उच्च पदाधिकारी तथा दीवाने विज़ारत के दवावीन[10] समस्त कार्यों में (कमालुलमुल्क) से परामर्श करते थे। सरवरुलमुल्क इस चिन्ता के कारण घुला करता था। यद्यपि इसके पूर्व दीबालपुर की अक्ता के स्थानान्तरण के कारण वह बड़ा ही दुखी रहता था, अब उसके सौभाग्य के उपवन में दुर्भाग्य का यह नया कांटा उत्पन्न हो गया।

सरवरुलमुल्क द्वारा राज्य में परिवर्तन का प्रयत्न

वह मूर्खता के कारण राज्य में परिवर्तन करने की योजनायें बनाने लगा। कुछ हरामखोर काफ़िरों, उदाहरणार्थ कांगू के पुत्रों, कजू खत्री जिनके पूर्वजों का पालन-पोषण तथा जिनको आश्रय इस

१ प्रतिष्ठित सन्त।
२ अश्वशाला।
३ कब्रों।
४ लाहौर।
५ बदायूनी के अनुसार 'ईदे कुर्बा' अथवा 'बकरईद'।
६ देहली के मलिक।
७ धरती चुम्बन।
८ मुख्य वज़ीर के विभाग के कार्य।
९ राज्य के एकाउन्टेंट जनरल का कार्य। वह राज्य की आय पर नियन्त्रण रखता था।
१० अधिकारी।

वश द्वारा प्राप्त हुआ था और जिनमें से प्रत्येक अत्यधिक सेनाओ एव परिजनो तथा सम्पन्न विलायतो का अधिकारी हो गया था, और कुछ कृतघ्न मुसलमानो उदाहरणार्थ मीराने सद्र नायबे अर्ज़े ममालिक, काजी अब्दुस्समद खास हाजिब[1] तथा अन्य लोगो को मिला लिया और इसी प्रकार की चिन्ता में रहने लगा तथा योजनाये बनाने लगा किन्तु उसे कोई अवसर न मिलता था। ईश्वर का कोई भय तथा लोगो के प्रति लज्जा उसके लिये बाधक न थी।

खराबाबाद अथवा मुबारकाबाद का शिलान्यास

सक्षेप मे, ससार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह ने यमुना तट पर एक नये नगर का निर्माण कराना निश्चय किया। १७ रबी-उल-अव्वल ८३७ हि० (१ नवम्बर १४३३ ई०) को उसने इस नश्वर ससार में एक नगर का निर्माण प्रारम्भ कराया और उस अभागे नगर (२३३) का नाम मुबारकाबाद रक्खा। उसे यह न ज्ञात था कि उसकी आयु की नीव अत्यन्त शिथिल हो गई है और नष्ट होने वाली है। वह हर समय उस भवन के पूर्ण कराने का प्रयत्न किया करता था।

तबरहिन्दा की विजय

इस मास मे तबरहिन्दा के किले की विजय के समाचार बादशाह को प्राप्त हुए। इसी बीच म जो अभागे पौलाद के विनाश हेतु नियुक्त हुए थे उन्होने उसका सिर काट कर मीराने सद्र के हाथ राजधानी में भेजा। बादशाह ने दूसरे दिन शिकार की सवारी की प्रथानुसार उस प्रदेश के सुव्यवस्थित करने के लिए प्रस्थान किया। वह निरन्तर कूच करता हुआ तबरहिन्दा के किले में पहुचा। शीघ्र ही वहा से प्रसन्नतापूर्वक प्रस्थान करके शहर मुबारकाबाद पहुच गया।

इबराहीम तथा कालपी के अलप खा के मध्य मे युद्ध

हिन्दुस्तान की ओर से आने वालो ने सुल्तान इबराहीम तथा अलप खा के मध्य में कालपी के लिए जो युद्ध हुआ था उसके समाचार पहुचाये। सुल्तान इससे पूर्व उस ओर चढाई करना चाहता था। यह समाचार पाते ही उसने दृढ सकल्प कर लिया। उसने प्रत्येक दिशा में इस आशय से फरमान भेजे कि उमराये शहरदार[2] तथा प्रत्येक प्रदेश के मलिक अत्यधिक सेना लेकर तैयार होकर शीघ्रातिशीघ्र राजधानी में पहुच जाय।

सुल्तान का प्रस्थान

जब अत्यधिक सेना बादशाह के पास, चन्द्रमा के चारो ओर तारो के समान, एकत्र हो गई तो उसने जमादि-उल-आखिर ८३७ हि० (जनवरी फरवरी १४३४ ई०) में हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान किया और चबूतरये शेरगाह में कुछ दिन पडाव किया।

१ हाजिब —शाही दरबार मे सुल्तान तथा दरबारियों के मध्य में खड़े होते थे और उनकी आज्ञा बिना सुल्तान तक कोई न पहुँच सकता था। इनका सरदार अमीर हाजिब कहलाता था। समस्त प्रार्थना-पत्र भी अमीर हाजिब तथा हाजियों द्वारा ही सुल्तान की सेवा में प्रस्तुत किये जाते थे।

२ राजधानी के अमीर।

सुल्तान का वध

(२३४) मसार को शरण प्रदान करने वाला बादशाह वहां से शहर मुबारकाबाद के निर्माण कार्य के निरीक्षण हेतु थोडे से सहायका सहित जाया करता था। दुष्ट सरवरुलमुल्क ने, जो इस कार्य हेतु समय की खोज किया करता था, मीराने सद्र हरामखोर को इस बात पर तैयार किया कि एकान्त में इस कुत्सित योजना को सम्पन्न करा दे। शुक्रवार ९ रजब ८३७ हि० (१९ फरवरी १४३४ ई०) को बादशाह विजयी सेना से पृथक् होकर थोडे से सैनिकों सहित मुबारकाबाद में गया हुआ था। वह शुक्रवार की नमाज की तैयारी कर रहा था कि मीराने सद्र ने छल तथा विश्वासघात द्वारा उन अमीरों को, जो बादशाह की रक्षा तथा पहरे के लिये नियुक्त थे, हटा दिया। वे लोमडी रूपी मुरदार सुअर तथा खून के प्यासे गीदड दुष्ट काफिरों सहित तैयार होकर घोडों तथा अस्त्र-शस्त्र सहित विदा के बहाने से भीतर पहुंच गये। सुधारन काणू अपने दल सहित द्वार पर ठहर गया ताकि वह किसी को द्वार में प्रविष्ट न होने दे। क्योंकि उस सिंह के शिकार करने वाले शूरवीर अर्थात् बादशाह को उन पर पूर्ण विश्वास था अपितु वह उनके ऊपर अत्यधिक कृपा-दृष्टि प्रदर्शित किया करता था अतः उसने उनसे दयापूर्वक व्यवहार किया। अचानक पिशाच कज के नाती दुष्ट सिद्धपाल ने उस स्थान से जहां (२३५) वह घात लगाये बैठा था, इस प्रकार बादशाह पर प्रहार किया कि उसकी मृत्यु हो गई। अभागे रान तथा उसके दुष्ट एवं पिशाच सहायकों ने, जिनकी नरक प्रतीक्षा कर रहा था, बादशाह को शहीद कर दिया।

(आकाश तथा समय की शिकायत)

मुबारकशाह ने १३ वर्ष, ३ मास तथा १६ दिन तक राज्य किया।

सुल्तानुल अह्द वज़्ज़मान[1] मुहम्मदशाह

(२३६) मुहम्मदशाह बिन (पुत्र) फरीद शाह बिन (पुत्र) खिज्र शाह सहनशील तथा दयालु बादशाह था। समस्त उत्कृष्ट गुण उसमें विद्यमान थे। समस्त अवगुणों से उसका स्वभाव शून्य था। बादशाही तथा राज्य-व्यवस्था के चिह्न उसके ललाट से दृष्टिगत होते थे। ईश्वर की कृपा का प्रकाश तथा अगाध दैवी रहस्य उसके सौभाग्य द्वारा प्रकट होते थे।

मुबारकशाह की हत्या के उपरान्त दुष्ट काफिरो तथा नीच मीराने सद्र ने तुरन्त सरवरुलमुल्क के पास पहुच कर यह समाचार उसे पहुचाये। सरवरुलमुल्क तथा उसके सहायको के मस्तिष्क में अभिमान उत्पन्न हो गया। तत्पश्चात् अमीरो, मलिको, इमामो, सैयिदो, समस्त प्रजा, आलिमो तथा काज़ियो की सहमति से शुभ मुहूर्त एव ग्रह मे उत्तराधिकार के कारण तथा ईश्वर की सहायता से ९ रजब ८३७ हि० (१९ फरवरी १४३४ ई०) को शुक्रवार की नमाज के उपरान्त सिंहासनारूढ हुआ।

सरवरुलमुल्क की उद्दंडता

सरवरुलमुल्क ने यद्यपि बादशाह से बैअत कर ली थी[2] किन्तु उसने यथेच्छाचार प्रारम्भ कर दिया यहा तक कि समस्त खज़ाना, धन-सम्पत्ति, घोडे तथा शस्त्रागार अपने अधिकार में कर लिये। सरवरुल-(२३७) मुल्क को खाने जहा तथा मीराने सद्र को मुईनुलमुल्क की उपाधिया प्रदान की गई। दुष्ट काफिरो ने यथेच्छाचार तथा दिखावा प्रारम्भ कर दिया। वे जो कुछ करते अपने लिये करते; और अन्त में उन्होने उसका परिणाम देख लिया तथा फल भोग लिया।

कमालुलमुल्क द्वारा प्रतिकार का प्रयत्न

सक्षेप में, मलिकुश्शर्क कमालुलमुल्क, जो खानी तथा सर्वोच्च अधिकार के योग्य था, समस्त अमीरो, मलिको, सेना, हाथियो, पायगाह[3] और परिजन सहित, जो शहर के बाहर थे, शहर के भीतर प्रविष्ट हुआ और उसने बादशाह से बैअत की किन्तु वह इसी बात का प्रयत्न करता रहा कि किसी प्रकार अपने स्वामी मुबारक शाह के रक्त का बदला मार्गभ्रष्ट काफिरो, झूठो, दुष्ट सरवर तथा मीराने सद्र हरामखोर से ले और उसके सहायको की हत्या कर दे किन्तु उसे इसका अवसर न मिलता था। अन्त मे यह महान् कार्य ईश्वर की कृपा से उस आसिफ[4] द्वितीय एव ईश्वर के चुने हुए व्यक्ति, वीरता के रणक्षेत्र के शहसवार द्वारा इस प्रकार सम्पन्न हुआ कि इसका उल्लेख किसी भी इतिहास में न होगा कि किस प्रकार इतना बडा तथा कठिन कार्य इतने शीघ्र तथा इतनी सुगमता से सम्पन्न हो गया।

१ समकालीन सुल्तान।
२ अधीनता स्वीकार कर ली थी।
३ अश्वशाला।
४ आसिफ़ बिन बरखिया सुलेमान पैगम्बर का वजीर बताया जाता है। वह अपनी बुद्धिमत्ता के लिये बडा प्रसिद्ध था। बुद्धिमान तथा योग्य वजीर के लिये आसिफ़ शब्द का प्रयोग होता था।

सरवरुलमुल्क द्वारा मुबारकशाह के दासों का बन्दी बनाया जाना

दूसरे दिन सरवरुलमुल्क ने मुबारक शाह के कुछ दासो को, जो मरातिब तथा माही[1] के स्वामी (२३८) थे, बैअत के बहाने से बुलवा कर बन्दी बना लिया। मलिक सूरा अमीर कोह[2] की स्यासत[3] के मैदान में हत्या करा दी। मलिक कर्मचन्द्र, मलिक मुकबिल, मलिक फुतूह तथा मलिक बैरा को भी बन्दी बना लिया और वह मार्ग भ्रष्ट नमकहराम, मुबारक शाह के वश के विनाश करने हेतु यथासम्भव प्रयत्नशील रहने लगा और हृदय से इस विषय में चेष्टा करने में उसने कोई कमी न की। राज्य की कुछ अक्तायें तथा परगने स्वय ले लिये और कुछ, उदाहरणार्थ ब्याना, अमरोहा, नारनोल, कुहराम तथा दोआव के मध्य के कुछ परगने सिद्धपाल, सुधारन तथा उनके सम्बन्धियो को प्रदान कर दिये।

रानू का ब्याना की ओर प्रस्थान तथा यूसुफ खा औहदी द्वारा उसकी हत्या

रानू सियह, सिद्धपाल का दास अत्यधिक सेना एव दुष्टो का समूह लेकर सपरिवार ब्याना की शिङ्क पर अधिकार जमाने के लिए रवाना हुआ। शाबान ८३७ हि० (मार्च-अप्रैल १४३४ ई०) में ब्याना के भभाग के निकट पहुचा। १२ शाबान (२४ मार्च १४३४ ई०) को उस भूभाग में प्रविष्ट हो गया। रात्रि में वही पडाव किया और सुल्तान के किले पर वह मूर्ख अधिकार जमाने का प्रयत्न करने लगा। दूसरे दिन समस्त सेना तथा परिजन सहित तैयार होकर वह काफिर चढाई करने वाला था। यूसुफ खा औहदी को उसके आगमन की सूचना पहुचाई गई। वह हिंदवत[4] के कस्बे से निकल कर प्रयत्न करके अविलम्ब अत्यधिक सेना, अश्वारोहियो तथा पदातियो को लेकर युद्ध करने निकला। शाहजादे के मजार के निकट दोनो ओर की सेनाओ ने पक्तियां ठीक करके युद्ध प्रारम्भ कर दिया। वह दुष्ट, नीच तथा हरामखोर युद्ध करने की शक्ति न देख कर प्रथम आक्रमण ही में भाग खडा हुआ। पिशाच रानू सियह तथा उसकी अधिकाश सेना तलवार के घाट उतार दी गई और उस अभागे पिशाच का सिर काट (२३९) कर द्वार पर लटका दिया गया। उसका समस्त परिवार—स्त्री तथा बालक—इस्लामी सेना द्वारा बन्दी बना लिया गया। ईश्वर ने, जो इस्लाम का सहायक है, यूसुफ खा को विजय प्रदान की और मुबारक शाह के रक्त का उस मार्गभ्रष्ट पिशाच से बदला लेने का साहस प्रदान किया।

१ राज्य के कुछ विशेष चिह्न। इनका प्रयोग केवल बादशाह ही कर सकता था। बादशाह के शक्तिहीन हो जाने के उपरान्त माही व मरातिब का प्रयोग अन्य बड़े-बड़े अधिकारी भी करने लगते थे। इब्ने बत्तूता ने भी मरातिब का उल्लेख किया है। ('तुगलुक कालीन भारत', भाग १, पृ० १६१, १६२, १८७, १८८, २४७, २७४)।

२ जियाउद्दीन बरनी के अनुसार सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के राज्यकाल में दीवाने अमीर कोही नामक एक विभाग कृषि की उन्नति हेतु बनाया गया ('तारीखे फ़ीरोज़शाही', पृ० ४६८, 'तुगलुक कालीन भारत', भाग १ पृ० ६२) किन्तु 'तबक़ाते नासिरी' में मलिकुल उमरा इख्तियारुद्दीन अमीर कोह का उल्लेख सुल्तान इल्तुतमिश के अमीरों की सूची में है। ('तबक़ाते नासिरी,' कलकत्ता पृ० १७७, 'आदि तुर्क कालीन भारत', पृ० २६) मलिक हमीदुद्दीन अमीर कोह तथा उसके पुत्रों से सम्बन्धित एक घटना का उल्लेख बरनी ने अलाउद्दीन के हाल में किया है (बरनी पृ० २८१, 'खलजी कालीन भारत', पृ० १६४) इससे पता चलता है कि अमीर कोह इससे पूर्व भी नियुक्त होते थे।

३ वह स्थान जहाँ लोगों को मृत्यु दंड दिया जाता था।

४ कुछ पोथियों के अनुसार 'हिन्दवन' आगरा से दक्षिण-पश्चिम ७१ मील पर तथा ब्याना से दक्षिण २० मील पर।

अमीरो का विद्रोह

सक्षेप में, जब सरवरुलमुल्क की दुष्टता एव नीच काफिरो के दुराचार की कुप्रसिद्धि समस्त प्रदेशो मे प्रसरित हो गई तो अधिकाश अमीर एव मलिक, जिनका पोषण स्वर्गीय रायाते आला खिज्र खा द्वारा हुआ था और जिन्हें उसने आश्रय प्रदान किया था, आज्ञाकारिता के बाहर हो गये। अल्पदर्शी सरवरुलमुल्क उनके विषय में योजना बनाने लगा। इसी बीच में पता चला कि सम्भल तथा अहार[1] का अमीर मलिक अलहदाद काका लोदी, बदायू का मुक्ता[2] मिया जेमन[3] स्वर्गीय खाने जहा का नाती अमीर अली गुजराती तथा अमीर कीक तुर्क बच्चा विरोध हेतु उद्यत हैं। मलिकुश्शर्क कमालुलमुल्क तथा सैयिद सालिम का पुत्र खाने आजम सैयिद खा उपर्युक्त विद्रोह को शान्त करने के लिये नियुक्त हुए। *सरवरुलमुल्क का पुत्र मलिक यूसुफ तथा सुधारन कागू उसके साथ भेजे गये।*

विद्रोह के दमन का प्रयत्न

रमजान ८३७ हि० (अप्रैल-मई १४३४ ई०) मे उसने पूर्ण व्यवस्था एव तैयारी करके हौज़ रानी पर शिविर लगवाये। कुछ दिन उपरान्त वहा से कूच करके उसने यमुना तट पर शिविर लगवाये, और कीछ के घाट पर नदी पार करके निर्भीक होकर बरन के भूभाग में पहुचा। वहा उसने प्रतिकार (२४०) हेतु पडाव किया। जब मलिक अल्हदाद को विजयी सेनाओ के पहुचने के समाचार प्राप्त हुए तो उसने चाहा कि गगा नदी युद्ध किये बिना छोड कर किसी अन्य स्थान को चला जाय, किन्तु उसे ज्ञात था कि मलिकुश्शर्क कमालुलमुल्क प्रतिकार का अत्यधिक प्रयत्न कर रहा है, अत वह इस बल पर अहार कस्बे में पडाव किये रहा। सरवरुलमुल्क को इस बात की सूचना मिल गई। उसने अपने दास मलिक होशियार को मलिकुश्शर्क कमालुलमुल्क के पास उसको सहायता देने के बहाने से भेजा। बदायू के भूभाग से मलिक जेमन[4] शीघ्र प्रयत्न तथा तैयारी करके अहार कस्बे में मलिक अलहदाद से मिल गया। मलिक यूसुफ, होशियार तथा सुधारन, कमालुलमुल्क से भयभीत थे। वे और भी आतकित हो गये। युद्ध में उन्हे कठिनाई अनुभव हुई और वे विजयी सेना के कारण भाग खडे हुए और शहर (देहली) चले गये। रमजान के अन्तिम दिन ८३७ हि० (१० मई १४३४ ई०) को मलिक अलहदाद, मिया जेमन तथा अन्य अमीर, जो उनके सहायक थे, मलिकुश्शर्क कमालुलमुल्क से मिल गये। क्योंकि अत्यधिक भीड तथा असख्य सेना उससे मिल गयी थी, अत वह निरन्तर यात्रा करता हुआ २ शव्वाल ८३७ हि० (१२ मई १४३४ ई०) को कीछ के घाट पर पहुचा। सरवरुलमुल्क को इसकी सूचना प्राप्त हो गई। यद्यपि उसकी बडी ही शोचनीय दशा हो गई थी किन्तु उसने किले की रक्षा की व्यवस्था की।

दूसरे दिन प्रात काल मलिकुश्शर्क कमालुलमुल्क ने शत्रु पर आक्रमण किया और अपने उद्यानो के मैदान में सेना के शिविर लगवाये। नीच काफिरो तथा दुष्ट होशियार ने अपने समस्त सहायको तथा (२४१) हितैषियो सहित किले के बाहर निकल कर विजयी सेना से युद्ध प्रारम्भ कर दिया। जब दोनो सेनाओ का मुकाबला हुआ तो वे भाग खडे हुए। कुछ लोग जीवित बन्दी बना लिये गये और कुछ की हत्या हो गई। दूसरे दिन कमालुलमुल्क ने अपने उद्यानो से प्रस्थान करके सीरी के किले के निकट

१ बुलन्दशहर के उत्तर पूर्व २० मील पर।
२ अक्ता का स्वामी।
३ कुछ पोथियों के अनुसार 'चमन'।
४ कुछ हस्तलिखित पोथियों के अनुसार 'चमन'

पडाव किया। चारो ओर से अधिकाश अमीर तथा मलिक आ-आकर मलिक कमालुलमुल्क से मिल गये। शव्वाल ८३७ हि० (मई जून १४३४ ई०) में सीरी का क़िला इस प्रकार घेर लिया गया कि कोई भी उसमें से वाहर निकलने का साहस न कर सकता था किन्तु किले के अत्यन्त दृढ होने के कारण, (यद्यपि विजयी सेना के योद्धा नित्य किले पर आक्रमण करते और कई स्थानो पर उसे उन्होने तोड भी डाला) तीन मास तक युद्ध होता रहा।

जीरक खा की मृत्यु

ज़िलहिज्जा ८३७ हि० (जुलाई-अगस्त १४३४ ई०) में सामाना के अमीर जीरक खा की मृत्यु हो गई। उसकी अक्ताये उसके ज्येष्ठ पुत्र मुहम्मद खा को सौप दी गई। सक्षेप में, ससार का स्वामी दिखाने को तो किले के भीतर वालो का मित्र था किन्तु वह चाहता था कि किसी प्रकार मुवारक शाह के खून का वदला उनसे ले लिया जाय परन्तु उसे अवसर न मिलता था। उन लोगो को भी भय था कि वादशाह अवसर मिलने पर विश्वासघात करेगा। प्रत्येक अपने-अपने स्थान पर सावधान रहता था।

सुल्तान की हत्या के प्रयत्न मे सरवरुलमुल्क की हत्या

८ मुहर्रम ८३८ हि० (१४ अगस्त १४३४ ई०) को सरवरुलमुल्क हरामखोर तथा छली मीराने सद्र के पुत्र विश्वासघात के उद्देश्य से अचानक वादशाह के शिविर मे प्रविष्ट हो गये। ससार को शरण (२४२) प्रदान करने वाला वादशाह भी तैयार था। जब कार्य सीमा से वढ गया तो वादशाह ने उन नीचो की हत्या करना निश्चय कर लिया। सरवरुलमुल्क हरामखोर की तलवार तथा कटार से उसी स्थान पर हत्या कर दी गई। मीराने सद्र के पुत्रो को वन्दी बना कर दरवार के समक्ष उनकी हत्या कर दी गई। जब दुष्ट काफिरो को इस वात का पता चला तो वे अपने-अपने घरो में वन्द होकर युद्ध करने लगे। ससार के स्वामी ने मलिकुश्शर्क कमालुलमुल्क को इस घटना की सूचना दे दी ताकि वह तैयार होकर अपने सहायको सहित शहर में प्रविष्ट हो जाय। मलिकुश्शर्क अन्य अमीरो तथा मलिको सहित दरवाज़ये वगदाद से शहर में प्रविष्ट हो गया।

सिद्धपाल की मृत्यु

अन्त मे पिशाच सिद्धपाल ने अपने घर मे आग लगा दी और अपनी स्त्री तथा वालको को नरक का ईंधन वना दिया और स्वय घर से निकल कर युद्ध करने लगा और तलवार के घाट उतार दिया गया। सुधारन कागू तथा अन्य खत्रियो, जो वन्दी वनाये गये, के समूह की खाने शहीद मुवारक शाह के मज़ार के निकट ले जाकर हत्या कर दी गई। मलिक होशियार तथा मुवारक कोतवाल को, वन्दी वना कर लाल द्वार के समक्ष हत्या कर दी गई।

अमीरो तथा मलिको का अधीनता स्वीकार करना

सक्षेप में, दूसरे दिन मलिकुश्शर्क कमालुलमुल्क तथा समस्त अमीरो एव मलिको ने, जो वाहर थे, मज़ार को शरण प्रदान करने वाले वादशाह से पुन वैअत कर ली और एक-दूसरे एव समस्त प्रजा की सहमति से उसे सिहासनारूढ कर दिया। मलिकुश्शर्क कमालुलमुल्क को विज़ारत का पद[1] प्रदान

[1] मुख्य वज़ीर का पद।

किया गया और कमाल खा की उपाधि दी गई। मलिक जेमन[1] को गाज़िउलमुल्क की उपाधि दी गई। अमरोहा तथा बदायू की अक़्ता उसे प्रदान की गई। मलिक अलहदाद लोदी ने अपने लिये किसी उपाधि की व्यवस्था न कराई और अपने भाई को दरिया खा की उपाधि दिलवाई। मलिक खुनराज मुबारकखानी को इक़बाल खा की उपाधि दी गई और हिसार फीरोज़ा की अक्ता, जो उसके पास थी, उसी के पास रहने दी गई।

नये पद तथा अक्तायें

(२४३) समस्त अमीरो को बहुमूल्य खिलअतो तथा अत्यधिक इनाम द्वारा सम्मानित किया गया। जिस किसी को जो पद, अक़्ता, ग्राम, वृत्ति तथा वेतन प्राप्त था, वह उसके पास उसी रूप से रहने दिया गया अपितु उसने अपनी ओर से उसमें वृद्धि कर दी। अपने ज्येष्ठ पुत्र सैयिद सालिम को मजलिसे आली सैयिद खा की तथा कनिष्ठ पुत्र को शुजाउलमुल्क की उपाधि प्रदान की। अपने भागिनेय मलिक बुद्ध[2] को अलाउलमुल्क तथा मलिक रुक्नुद्दीन को नसीरुलमुल्क की उपाधि प्रदान की। उन लोगो को सुनहरी पेटी, मरातिब[3], दमामे[4] तथा अक़्तायें प्रदान की गईं। मलिकुश्शर्क हाजी शुदनी को राजधानी का शहना[5] नियुक्त किया गया।

सुल्तान का मुल्तान की ओर प्रस्थान

शासन-प्रबन्ध के सुव्यवस्थित हो जाने के उपरान्त बादशाह ने मुल्तान पर चढाई की। रबी-उल-आखिर ८३८ हि० (नवम्बर-दिसम्बर १४३४ ई०) में उसने चबूतरये मुबारकपुर पर शिविर लगवाये। अमीरो तथा मलिको को आदेश दिया कि वे तैयार होकर सेनायें ले-लेकर राजधानी में उपस्थित हों। मलिकुश्शर्क (एमादुलमुल्क) पाबोस[6] द्वारा सम्मानित हुआ। उसे अत्यधिक इनाम तथा बहुमूल्य खिलअत प्रदान किये गये और वह बादशाही कृपाओं तथा दया द्वारा सम्मानित हुआ। अधिकाश अमीर तथा मलिक, जो आने में विलम्ब कर रहे थे, मलिकुश्शर्क एमादुलमुल्क के आने के कारण राजधानी में उपस्थित हुए। इस प्रकार मजलिसे आली इस्लाम खा, मुहम्मद खा बिन (पुत्र) ज़ीरक खा, खाने आज़म असद खा, कमाल खा, मुहम्मद खा, नुसरत खा का पुत्र, यूसुफ खा औहदी, बहादुर खा मेव (२४४) का नाती अहमद खा, इकबाल खा अमीर हिसार फीरोज़ा, अमीर अली गुजराती सभी शाही कृपा द्वारा सम्मानित हुए।

१ कुछ हस्तलिखित पोथियों के अनुसार 'चमन'।
२ प्रकाशित पुस्तक में 'मलिक सुध' किन्तु एक पोथी में 'बुद्ध' तथा पीछे प्रकाशित ग्रन्थ में भी 'बुद्ध' है।
३ मरातिब :—तबल इत्यादि बाजे जो विशेष रूप से केवल बड़े-बड़े अधिकारी ही सुल्तान की अनुमति से प्रयोग में लाते थे।
४ दमामे :—एक प्रकार का छोटा नगाड़ा अथवा तुरही।
५ शहना :—प्रबधक अथवा अधीक्षक।
६ पाबोस :—चरणों का चुम्बन।

तबक़ाते अकबरी (भाग १)

लेखक– ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद

(प्रकाशन—कलकत्ता १९११ ई०)

तैमूर के आक्रमण के उपरान्त देहली के राज्य की दुर्दशा

इकबाल खा का देहली पर अधिकार जमाना

(२५६) दो मास तक देहली की बडी ही दुर्दशा रही।[1] रजब ८०१ हि० (मार्च-अप्रैल १३९९ ई०) में नुसरतशाह जो इकबाल खा के कारण दोआब में चला गया था थोडी सी सेना सहित मेरठ पहुचा। आदिल खा ४ हाथियो तथा अपनी सेना सहित नुसरत शाह से मिल गया। कुछ लोग, जो मुगलो के हाथो से मुक्त हो चुके थे, और दोआब में थे, बादशाह की सहायतार्थ उससे मिल गये। वह दो हजार अश्वारोहियो को लेकर फीरोजाबाद पहुचा। उसने देहली पर, जो नष्ट-भ्रष्ट हो चुकी थी, अधिकार जमा लिया। शिहाब खा १० हाथियो तथा सेना को लेकर मेवात से आया। मलिक अल्मास[2] दोआब से आया। जब उसकी सेना की सख्या अधिक हो गई, तो उसने शिहाब खा को इकबाल खा के विरुद्ध जो बरन में था, भेजा। मार्ग में उस स्थान के जमीदारो ने इकबाल खा के बहकाने पर रात में छापा मारा। शिहाब खा मारा गया। उसकी सेना छिन्न-भिन्न हो गई। उसकी सेना तथा हाथी इकबाल खा को प्राप्त हो गये। इकबाल खा की शक्ति नित्यप्रति बढने लगी और उसने देहली की ओर प्रस्थान किया। नुसरत शाह युद्ध की शक्ति न देख कर फीरोजाबाद छोड कर मेवात (२५७) पहुचा। देहली इकबाल खा के अधिकार में आ गई। जो लोग मुगलो के भय के कारण देहली छोड कर इधर-उधर चल दिए थे वे अल्प समय में ही आ गये और सीरी का किला थोडे समय में आबाद हो गया।

स्वतन्त्र प्रान्तीय राज्य

इकबाल खा ने दोआब के मध्य की विलायत तथा शहर (देहली) के निकट के स्थान अपने अधिकार में कर लिये। हिन्दुस्तान के समस्त विलाद[3] अमीरो के अधिकार में ही रहे। गुजरात जफर खा तथा उसके पुत्र तातार खा के अधीन हो गया। मुल्तान तथा दीपालपुर से लेकर सिन्ध के आसपास के स्थान तक

१ बदायूनी के अनुसार 'अकाल तथा महामारी व्यापक हो गई और जो लोग बच गये थे, वे नष्ट हो गये'।

२ कुछ पोथियों में 'इलियास' है।

३ 'विलाद' का अर्थ 'नगर क्षेत्र', 'प्रान्त' इत्यादि है किन्तु यहा तात्पर्य उन स्थानों से है जहा स्वतन्त्र शासन स्थापित हो गये थे।

खिज्र खा का अधिकार हो गया। महोवा तथा कालपी मलिकजादा फीरोज के पुत्र महमूद खा के हाथ में आ गये। कन्नौज, अवध, दलमऊ, सण्डीला, वहराइच, विहार तथा जौनपुर ख्वाजये जहा सुल्तानुश्शर्क के अधिकार में आ गये। मालवा प्रदेश को दिलावर खा ने, सामाना को गालिव खा ने तथा व्याना को शम्स खा औहदी ने अपने अधिकार में कर लिया। इनमें से प्रत्येक स्वतन्त्र शासक वन गया और कोई भी एक दूसरे के अधीन न था।

इकवाल खां का व्याना तथा कटिहर पर आक्रमण

रवी-उल-अव्वल ८०२ हि० (नवम्बर १३९९ ई०) मे इक़वाल खा ने व्याना की ओर प्रस्थान किया। शम्स खा उसका मुकावला करने के लिए निकला[1] किन्तु पराजित होकर व्याना के किले में प्रविष्ट हो गया। उसका हाथी इकवाल खा को प्राप्त हो गया।[2] वहा से वह केट्हर[3] की ओर, जो वदायू के निकट का प्रसिद्ध मवास[4] है, पहुचा और राय नर सिंह[5] से कर प्राप्त करके शहर (देहली) की ओर वापस हुआ।

ख्वाजये जहाँ की मृत्यु

इसी वर्ष ख्वाजये जहा की जौनपुर में मृत्यु हो गई। मलिक मुवारक करनफुल[6] को, जिसे वह अपना पुत्र कहा करता था, उसके स्थान पर राज्य प्रदान किया गया। उसकी उपाधि सुल्तान मुवारक शाह रक्खी गई। ख्वाजये जहा की विलायत उसके अधिकार में आ गई।

इकवाल खां तथा सुल्तान मुवारक शाह शर्की का युद्ध

जमादि-उल-अव्वल ८०३ हि० (दिसम्बर-जनवरी १४००-१४०१ ई०) मे इक़वाल खा ने मुवारक शाह शर्की के विरुद्ध प्रस्थान किया। व्याना के हाकिम शम्स खा, मुवारक खा[7] तथा वहादुर नाहिर ने उसका साथ दिया। जब वह गंगा तट पर स्थित बैताली[8] नामक कस्वे मे पहुचा तो राय सिर[9] तथा आसपास के समस्त जमीदार युद्ध करने के लिए आये। युद्ध के उपरान्त पराजित होकर वे इटावा चले गये। इक़वाल खा कन्नौज चला गया। मुवारक शाह[10] भी पूर्व से पहुच गया था। २ मास तक (२५८) दोनो सेनाओं में गंगा तट पर युद्ध होता रहा। अन्त मे सधि हो गई और दोनों सेनायें लौट गईं। मार्ग में इकवाल खा, मुवारक खा तथा शम्स खा औहदी के प्रति शंकित हो गया। उसने विश्वासघात करके दोनो की हत्या करा दी।

१ वदायूनी के अनुसार 'नोह व पतल' के स्थान पर युद्ध हुआ।
२ एक हस्तलिखित पोथी के अनुसार 'दो हाथी' प्राप्त हो गये।
३ कटिहर।
४ दुर्गम स्थान जहां विद्रोही तथा डाकू शरण हेतु छिप जाते थे।
५ कुछ पोथियों में 'वर सिंह'। वदायूनी के अनुसार 'हर सिंह' अथवा 'हर सिंह राय'।
६ वदायूनी के अनुसार 'करनफ़ल'।
७ वदायूनी के अनुसार 'मुवारक खां विन वहादुर नाहिर'।
८ पटियाली (एटा जिले में)।
९ राय सवीर।
१० मुवारक शाह शर्की।

तगी खा तथा खिज्र खा का युद्ध

इसी वर्ष सामाना के हाकिम गालिब खा के जामाता तगी खा तुर्क बच्चे ने बहुत बडी सेना लेकर खिज्र खा पर चढाई की। ९ रजब ८०३ हि० (२३ फरवरी १४०१ ई०) को अजोधन के निकट, जो शेख फरीद[1] के पटन के नाम से प्रसिद्ध है, पहुचा। दोनो दलो में युद्ध हुआ। युद्ध के उपरान्त तगी खा पराजित हो गया और भौदर[2] कस्बे में पहुचा। गालिब खा तथा अन्य अमीरो ने जो उसके साथ थे तगी खा को बन्दी बना लिया और उसकी हत्या कर दी।

सुल्तान महमूद का धार से आगमन

८०४ हि० (१४०१-२ ई०) में सुल्तान महमूद, जो साहिब किरान के भय से गुजरात चला गया था, साहिब किरान की वापसी के उपरान्त धार पहुच कर प्रतीक्षा कर रहा था। शाति स्थापित हो जाने के उपरान्त वह धार से देहली आया। इकबाल खा ने उसका स्वागत करके उसे जहापनाह नामक शुभ राजप्रासाद में उतारा, किन्तु राज्य की बागडोर इकबाल खा के हाथ में रही और वह सुल्तान के प्रति विश्वासघात की योजनायें बनाया करता था। महमूद शाह ने इकबाल खा को लेकर कन्नौज की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में उसे पता चला कि मुबारक शाह शर्की की मृत्यु हो गई है। उसके भाई सुल्तान इबराहीम ने भी सेनायें तैयार करके तथा पर्वतरूपी हाथियो को लेकर युद्ध किया। कुछ दिन तक दोनो ओर के योद्धा युद्ध करते रहे।

सुल्तान महमूद का कन्नौज पर अधिकार जमाना

क्योकि सुल्तान महमूद इकबाल खा से शकित तथा भयभीत था और सुल्तान इबराहीम को अपना सेवक तथा अपने वश का दास समझता था अत वह एक रात्रि में अपनी सेना से निकल कर अकेला सुल्तान इबराहीम की सेना में पहुच गया।[3] सुल्तान इबराहीम ने असालत की कमी तथा कृतघ्नता के कारण आतिथ्य सत्कार तथा उचित सेवा न की। उसके दुर्व्यवहार के कारण सुल्तान महमूद वहा भी न ठहरा और कन्नौज पहुचा तथा शाहजादा हरेवी[4] को जो शर्की की ओर से कन्नौज का हाकिम था निकाल कर, कन्नौज पर अधिकार जमा लिया। इकबाल खा देहली की ओर चला गया, सुल्तान इबराहीम भी (२५९) जौनपुर की ओर लौट गया। कन्नौज वाले साधारण तथा सम्मानित व्यक्ति महमूद शाह से मिल गये। उसके दास तथा समस्त सबन्धी, जो छिन्न भिन्न हो गये थे, प्रत्येक स्थान से कन्नौज पहुच गये। वह भी कन्नौज से सतुष्ट हो गया।

इकबाल खा का ग्वालियर पर आक्रमण

जमादि-उल-अव्वल ८०५ हि० (नवम्बर दिसम्बर १४०२ ई०) में इकबाल खा ने ग्वालियर

१ शेख फरीद गंज शकर ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के प्रसिद्ध खलीफा, जिनका कार्य-क्षेत्र पटन था। इनकी मृत्यु १२६५ ई० में हुई।
२ बदायूनी के अनुसार 'भौहर'।
३ सुल्तान महमूद ने युद्ध के प्रारम्भ होने के पूर्व इकबाल खाँ की सेना से शिकार के बहाने से निकलकर सुल्तान इबराहीम से भेंट की। सुल्तान इबराहीम ने उसके प्रति उपेक्षा प्रदर्शित की।
४ बदायूनी के अनुसार 'मलिक खा हरेवी'।

खिज्र खां का अधिकार हो गया। महोबा तथा कालपी मल्किजादा फीरोज के पुत्र महमूद खां के हाथ में आ गये। कन्नौज, अवध, दलमऊ सण्डीला, बहराइच बिहार तथा जौनपुर ख्वाजये जहां सुल्तानुश्शर्क के अधिकार में आ गये। मालवा प्रदेश को दिलावर खां ने, सामाना को गालिब खां ने तथा ब्याना को शम्स खां औहदी ने अपने अधिकार में कर लिया। इनमें से प्रत्येक स्वतन्त्र शासक बन गया और कोई भी एक दूसरे के अधीन न था।

इकबाल खां का ब्याना तथा कटिहर पर आक्रमण

रबी-उल-अव्वल ८०२ हि० (नवम्बर १३९९ ई०) में इकबाल खां ने ब्याना की ओर प्रस्थान किया। शम्स खां उसका मुकाबला करने के लिए निकला[1] किन्तु पराजित होकर ब्याना के किले में प्रविष्ट हो गया। उसका हाथी इकबाल खां को प्राप्त हो गया।[2] वहां से वह केह्तर[3] की ओर जो बदायूं के निकट का प्रसिद्ध मवास[4] है पहुंचा और राय नर सिंह[5] से कर प्राप्त करके शहर (देहली) की ओर वापस हुआ।

ख्वाजये जहाँ की मृत्यु

इसी वर्ष ख्वाजये जहां की जौनपुर में मृत्यु हो गई। मलिक मुबारक करनफुल[6] को, जिसे वह अपना पुत्र कहा करता था, उसके स्थान पर राज्य प्रदान किया गया। उसकी उपाधि सुल्तान मुबारक शाह रक्खी गई। ख्वाजये जहां की विलायत उसके अधिकार में आ गई।

इकबाल खां तथा सुल्तान मुबारक शाह शर्की का युद्ध

जमादि उल-अव्वल ८०३ हि० (दिसम्बर-जनवरी १४०० १४०१ ई०) में इकबाल खां ने मुबारक शाह शर्की के विरुद्ध प्रस्थान किया। ब्याना के हाकिम शम्स खां, मुबारक खां[7] तथा बहादुर नाहिर ने उसका साथ दिया। जब वह गंगा तट पर स्थित पटियाली[8] नामक कस्बे में पहुंचा तो राय सिर[9] तथा आसपास के समस्त जमींदार युद्ध करने के लिए आये। युद्ध के उपरान्त पराजित होकर वे इटावा चले गये। इकबाल खां कन्नौज चला गया। मुबारक शाह[10] भी पूर्व से पहुंच गया था। २ मास तक (२५८) दोनों सेनाओं में गंगा तट पर युद्ध होता रहा। अन्त में संधि हो गई और दोनों सेनायें लौट गईं। मार्ग में इकबाल खां, मुबारक खां तथा शम्स खां औहदी के प्रति शंकित हो गया। उसने विश्वासघात करके दोनों की हत्या करा दी।

१ बदायूनी के अनुसार 'नोह व पतल' के स्थान पर युद्ध हुआ।
२ एक हस्तलिखित पोथी के अनुसार 'दो हाथी' प्राप्त हो गये।
३ कटिहर।
४ दुर्गम स्थान जहां विद्रोही तथा डाकू शरण हेतु छिप जाते थे।
५ कुछ पोथियों में 'वर सिंह'। बदायूनी के अनुसार 'हर सिंह' अथवा 'हर सिंह राय'।
६ बदायूनी के अनुसार 'करनक्ल'।
७ बदायूनी के अनुसार 'मुबारक खां बिन बहादुर नाहिर'।
८ पटियाली (एटा जिले में)।
९ राय सबीर।
१० मुबारक शाह शर्की।

तगी खा तथा खिज्र खा का युद्ध

इसी वर्ष सामाना के हाकिम गालिब खा के जामाता तगी खा तुर्क बच्चे ने बहुत बडी सेना लेकर खिज्र खा पर चढाई की। ९ रजब ८०३ हि० (२३ फरवरी १४०१ ई०) को अजोधन के निकट, जो शेख फरीद[1] के पटन के नाम से प्रसिद्ध है, पहुचा। दोनो दलो में युद्ध हुआ। युद्ध के उपरान्त तगी खा पराजित हो गया और भौदर[2] कस्बे में पहुचा। गालिब खा तथा अन्य अमीरो ने जो उसके साथ थे तगी खा को बन्दी बना लिया और उसकी हत्या कर दी।

सुल्तान महमूद का धार से आगमन

८०४ हि० (१४०१ २ ई०) में सुल्तान महमूद, जो साहिब किरान के भय से गुजरात चला गया था, साहिब किरान की वापसी के उपरान्त धार पहुच कर प्रतीक्षा कर रहा था। शाति स्थापित हो जाने के उपरान्त वह धार से देहली आया। इक्बाल खा ने उसका स्वागत करके उसे जहापनाह नामक शुभ राजप्रासाद में उतारा, किन्तु राज्य की बागडोर इकबाल खा के हाथ में रही और वह सुल्तान के प्रति विश्वासघात की योजनायें बनाया करता था। महमूद शाह ने इकबाल खा को लेकर कन्नौज की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में उसे पता चला कि मुबारक शाह शर्की की मृत्यु हो गई है। उसके भाई सुल्तान इबराहीम ने भी सेनायें तैयार करके तथा पर्वतरूपी हाथियो को लेकर युद्ध किया। कुछ दिन तक दोनो ओर के योद्धा युद्ध करते रहे।

सुल्तान महमूद का कन्नौज पर अधिकार जमाना

क्योंकि सुल्तान महमूद इक्बाल खा से शकित तथा भयभीत था और सुल्तान इबराहीम को अपना सेवक तथा अपने वश का दास समझता था अत वह एक रात्रि में अपनी सेना से निकल कर अकेला सुल्तान इबराहीम की सेना में पहुच गया।[3] सुल्तान इबराहीम ने असालत की कमी तथा कृतघ्नता के कारण आतिथ्य सत्कार तथा उचित सेवा न की। उसके दुर्व्यवहार के कारण सुल्तान महमूद वहा भी न ठहरा और कन्नौज पहुचा तथा शाहजादा हरेवी[4] को जो शर्की की ओर से कन्नौज का हाकिम था निकाल कर, कन्नौज पर अधिकार जमा लिया। इकबाल खा देहली की ओर चला गया, सुल्तान इबराहीम भी (२५९) जौनपुर की ओर लौट गया। कन्नौज वाले साधारण तथा सम्मानित व्यक्ति महमूद शाह से मिल गये। उसके दास तथा समस्त सबन्धी, जो छिन्न भिन्न हो गये थे, प्रत्येक स्थान से कन्नौज पहुच गये। वह भी कन्नौज से सतुष्ट हो गया।

इकबाल खा का ग्वालियर पर आक्रमण

जमादि-उल-अव्वल ८०५ हि० (नवम्बर दिसम्बर १४०२ ई०) में इक्बाल खा ने ग्वालियर

१ शेख फरीद गंज शकर ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के प्रसिद्ध खलीफ़ा, जिनका कार्य-क्षेत्र पटन था। इनकी मृत्यु १२६५ ई० में हुई।

२ बदायूनी के अनुसार 'भौहर'।

३ सुल्तान महमूद ने युद्ध के प्रारम्भ होने के पूर्व इकबाल खाँ की सेना से शिकार के बहाने से निकलकर सुल्तान इबराहीम से भेंट की। सुल्तान इबराहीम ने उसके प्रति उपेक्षा प्रदर्शित की।

४ बदायूनी के अनुसार 'फ़तह खा हरेवी'।

की ओर प्रस्थान किया और ग्वालियर का किला, जो साहिब किरान के आगमन के काल से दिल्ली के सुल्तानों के हाथ से निकल कर राय नर सिंह[1] के अधिकार में आ गया था और उसकी मृत्यु के उपरान्त उसके पुत्र बीरम देव ने उसे अपने अधीन कर लिया था, घेर लिया। किले के अत्यन्त दृढ होने के कारण वह विजय न हो सका। वह ग्वालियर की विलायत को नष्ट करके देहली पहुचा। दूसरे वर्ष उसने पुन ग्वालियर के ऊपर चढाई की। बीरम देव ने उसका मुकाबला किया और धौलपुर के किले के सामने युद्ध करके पराजित हुआ और किले में प्रविष्ट हो गया। रात्रि में वह धौलपुर का किला खाली करके ग्वालियर की ओर चल दिया। इकबाल खा ने ग्वालियर के किले तक उसका पीछा किया और उसे खूब लूटा-खसोटा। तत्पश्चात वह देहली लौट आया।

तातार खा का गुजरात पर अधिकार प्राप्त करना

८०६ हि० (१४०३-४ ई०) में सूचना प्राप्त हुई कि गुजरात के हाकिम जफर खा के पुत्र तातार खा ने अपने पिता को पदच्युत कर दिया है और स्वय नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह की उपाधि धारण कर ली है।

इकबाल खा का इटावा पर आक्रमण

८०७ हि० (१४०४-५ ई०) में इकबाल खा ने इटावा की विलायत के जमीदारो पर विजय प्राप्त करने के लिए उस ओर चढाई की। राय सरवर[2], राय ग्वालियर, राय जालहार तथा अन्य राय इटावा के किले मे बन्द होकर ४ मास तक युद्ध करते रहे। अन्त में उन्होंने इस शर्त पर सधि कर ली कि वे प्रत्येक वर्ष ४ हाथी तथा जो धन ग्वालियर का राय देहली के हाकिम को भेजा करता था, भेजा करेंगे। इकबाल खा ने शव्वाल ८०७ हि० (अप्रैल-मई १४०५ ई०) में कन्नौज पर चढाई की और सुल्तान महमूद को घेर लिया। यद्यपि वह बहुत युद्ध करता रहा किन्तु कोई लाभ न हुआ। असफल होकर वह वहा से लौटा।

इकबाल खा की सामाना पर चढाई

(२६०) ८०८ हि० (१४०५-६ ई०) में इकबाल खा ने सामाना के ऊपर चढाई की। बहराम खा तुर्क बच्चा, जो सारग खा का विरोध कर रहा था, इकबाल खा के भय से अपना स्थान छोड कर बधनौर पर्वत में पहुच गया। इकबाल खा ने उसका पीछा किया और उस पर्वत के दर्रे के निकट उतर पडा। कुछ दिन उपरान्त शेख जलाल बुखारी[3] के नाती शेख इल्मुद्दीन ने मध्यस्थ बनकर सधि करा दी। इकबाल खा, बहराम खा को अपने साथ लेकर मुल्तान की ओर गया। जब वह तिलौंदी पहुचा तो उसने राय दाऊद, कमाल मईन[4] तथा राय खलजीन भट्टी[5] के पुत्र राय भू[6] को पकडवा कर बन्दी बना लिया। तीसरे दिन उसने सधि को तोड कर बहराम खा की खाल खिचवा ली।

१ कुछ पोथियों के अनुसार 'वर सिंह'।
२ सबीर।
३ देखिये पृ० ७ नोट न० ४।
४ बदायूनी के अनुसार 'कमाल मुबीन'।
५ अन्य स्थानों पर उसे 'राय दुलचीन' लिखा गया है।
६ उसके नाम को विभिन्न प्रकार से पोथियों में लिखा गया है और उन्हे बहू, हनू तथा पीहू सभी प्रकार से पढा जा सकता है।

खिज्र खा द्वारा इकबाल खा की हत्या

जब उसने धन्धा[1] नदी के निकट अजोधन के समीप पडाव किया, तो खिज्र खा दीपालपुर से उससे युद्ध करने के लिए आया। १९ जमादि-उल-अव्वल ८०८ हि० (१२ नवम्बर १४०५ ई०) को दोनों में युद्ध हुआ। इकबाल खा प्रथम आक्रमण में खिज्र खाँ के सैनिकों द्वारा बन्दी बना लिया गया और उसकी हत्या करा दी गई। नमकहरामी तथा विश्वासघात का परिणाम उसे शीघ्र ही मिल गया।

छन्द

'विश्वासघात करने में धृष्टता प्रदर्शित मत कर,
तेरे कर्म का फल तेरी गोदी में शीघ्र आ जायगा।"

महमूद खा का देहली मे सिंहासनारोहण

जब यह समाचार देहली मे प्राप्त हुआ तो दौलत खा, इख्तियार खा तथा उन अमीरो ने जो उस स्थान पर थे, महमूद शाह को कन्नौज से बुलवाया तथा जमादि-उल-आखिर ८०८ हि० (नवम्बर दिसम्बर १४०५ ई०) में महमूद शाह देहली पहुचा और सिंहासनारूढ हुआ। इकबाल खा के परिवार तथा परिजनो को उसने देहली से कोल भेज दिया और किसी को कोई कष्ट न पहुचाया। दोआब के मध्य की फौजदारी[2] दौलत खा को प्रदान की। फीरोजाबाद को इख्तियार खा के सिपुर्द कर दिया। इसी समय इक्लीम खा तथा बहादुर नाहिर ने दो-दो हाथी पेशकश के रूप में भेंट किये और अधीनता स्वीकार की।

सुल्तान महमूद का इबराहीम शाह शर्की के विरुद्ध प्रस्थान

सुल्तान महमूद ने अपने उद्देश्य की पूर्ति तथा सफलता के उपरान्त प्रतिकार हेतु ८०९ हि० (१४०६ ७ ई०) में जौनपुर की ओर चढाई की दौलत खा को बहुत बडी सेना देकर सामाना की ओर बैरम खा तुर्क बच्चे के विरुद्ध जिसने बहराम खा की हत्या के उपरान्त सामाना पर अधिकार जमा (२६१) लिया था, भेजा। जब महमूद शाह कन्नौज के निकट पहुचा तो सुल्तान इबराहीम जौनपुर से मुकाबले के लिये आया। गगा तट पर दोनो सेनायें बराबर उतर पडी। कुछ दिन तक युद्ध होता रहा। अत म अमीरों के प्रयत्न से संधि हो गई और प्रत्येक अपने अपने स्थान को चला गया।

सुल्तान इबराहीम का कन्नौज पर अधिकार जमाना

सुल्तान इबराहीम लौटने के उपरान्त, यह सोच कर कि सुल्तान महमूद के अधिकाश अमीर तथा सैनिक इस समय छिन्न भिन्न हो गये होंगे, अवसर पाकर कन्नौज पहुचा। मलिक महमूद तुरमती, जो सुल्तान महमूद की ओर से कन्नौज का हाकिम था, घिर गया और ४ मास तक युद्ध करता रहा। जब वह सुल्तान महमूद की सहायता से निराश हो गया तो उसने शरण की याचना की और सुल्तान इबराहीम से भेंट करके कन्नौज उसे सौंप दिया। सुल्तान इबराहीम ने कन्नौज को मलिक दौलतयार कम्पिला के पौत्र इख्तियार खा को प्रदान कर दिया और वर्षा ऋतु वहीं व्यतीत की।

१ धन्धा अथवा देहेन्दा, जो सतलज नदी से अजोधन के पूर्व में निकल कर दक्षिण-पश्चिम में ३५ मील पर मिल जाती है।

२ फौजदारी —देखिये पृ० ८ नोट नं० ४।

सुल्तान इबराहीम द्वारा देहली पर आक्रमण

८१० हि० (१४०७-८ ई०) में नुसरत खा गुर्गअन्दाज, तातार खा, सारग खा का पुत्र, मलिक मरहबा तथा गुलाम इकबाल खा, महमूद शाह से पृथक् हो गये और सुल्तान इबराहीम से मिल गये। सुल्तान इबराहीम वहा से सबल[1] पहुचा। असद खा लोदी ने, जोकि सुल्तान महमूद का गुमाश्ता था, दो दिन उपरान्त सबल के किले को सधि करके समर्पित कर दिया। सुल्तान इबराहीम ने उस स्थान को तातार खा को सौंप कर देहली की ओर प्रस्थान किया। जैसे ही वह यमुना तट पर पहुचा और नदी पार करना चाहता था कि उसे समाचार प्राप्त हुए कि "गुजरात के हाकिम ज़फर खा ने मालवा प्रदेश पर विजय प्राप्त कर ली है, दिलावर खा का पुत्र अल्प खा, जिसकी उपाधि होशग थी उसके द्वारा बन्दी बना लिया गया है।" यह समाचार पाते ही वह वापस हो गया और उसने अपने आपको जौनपुर पहुचा दिया।

सुल्तान महमूद द्वारा बरन तथा सम्भल पर आक्रमण

ज़ीकाद ८१० हि० (मार्च-अप्रैल १४०८ ई०) में सुल्तान महमूद ने मलिक मरहबा पर, जो सुल्तान इबराहीम की ओर से बरन के कस्बे का हाकिम था, चढाई की। मरहबा ने किले से निकल कर मुकाबला किया, किन्तु प्रथम आक्रमण ही में पराजित हो कर किले में प्रविष्ट हो गया। महमूद शाह की (२६२) सेना भी उसका पीछा करती हुई किले में प्रविष्ट हो गई। मरहबा की हत्या कर दी गई। महमूद शाह सबल पहुचा। तातार खा युद्ध न करके सबल को छोड कर कन्नौज भाग गया। महमूद खा, असद खा लोदी को सबल में छोड कर देहली लौट गया।

दौलत खा तथा बैरम खा का युद्ध

५ रजब ८०९ हि०[2] (१६ दिसम्बर १४०६ ई०) में मिया दौलत खा तथा बैरम खा तुर्क बच्चे के मध्य में सामाना से दो कोस पर युद्ध हुआ। बैरम खा पराजित होकर सरहिन्द पहुचा और किले में बन्द हो गया। अन्त में उसने शरण की याचना की और दौलत खा से भेंट की। क्योंकि बैरम खा ने इससे पूर्व खिज्र खा की अधीनता स्वीकार करके विश्वासघात किया था अत खिज्र खा ने भी सेना एकत्र करके दौलत खा पर चढाई की। दौलत खा युद्ध न कर सका अत उसने यमुना नदी पार की। समस्त अमीर, जो दौलत खा से मिल गये थे उससे पृथक् हो गये और खिज्र खा के समक्ष उपस्थित हुए। उसने हिसार फीरोज़ा को किवाम खा को प्रदान कर दिया। सामाना तथा सुनाम को बैरम खा से लेकर ज़ीरक खा को सौप दिया। सरहिन्द तथा कुछ अन्य परगने बैरम खा को प्रदान कर दिये और वह स्वय फतहपुर की ओर चल दिया। इस समय महमूद शाह के अधिकार में केवल दोआब तथा रोहतक रह गये।

सुल्तान महमूद के अभियान

८११ हि० (१४०८-९ ई०) में सुल्तान महमूद ने किवाम खा पर चढाई की। वह हिसार फीरोज़ा में बन्द हो गया। कुछ दिन उपरान्त उसने अपने पुत्र को अत्यधिक पेशकश देकर सुल्तान की

१ सम्भल, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) जिले में।
२ जिस क्रम में घटनाओं के उल्लेख हो रहे थे, उसके विरुद्ध इस घटना का उल्लेख किया गया है। 'तारीखे मुबारकशाही' में भी इस घटना का उल्लेख इसी प्रकार है।

सेवा में भेजा और क्षमा याचना की। सुल्तान देहली वापस चला गया। खिज्र खा यह समाचार पाकर फ़तहाबाद आया। फतहाबाद के लोगों के महमूद शाह से मिल जाने के कारण, उसने उन्हें दड दिया और मलिक तुहफ़ा को उस स्थान पर नियुक्त किया और यह आदेश दिया कि दोआब तथा धातरत[1] पर, जो सुल्तान के अधिकार में थे, वह आक्रमण किया करे। फतह खा[2] धातरत से प्रस्थान करके दोआब के मध्य में पहुचा। बहुत से लोग जो धातरत में रह गये थे बन्दी बना लिए गये। खिज्र खा रोहतक से देहली (२६३) पहुचा। महमूद शाह ने फीरोज़ाबाद पहुच कर अपनी स्थिति दृढ कर ली। उसने कुछ दिन तक फ़ीरोज़ाबाद के किले को घेरे रक्खा किन्तु असफल होकर फ़तहपुर लौट गया।

खिज्र खा का बैरम के विरुद्ध प्रस्थान

८१२ हि० (१४०९-१० ई०) में बैरम खा ने खिज्र खा से विद्रोह कर दिया और दौलत खा के पास चला गया। उसने अपने परिवार को पर्वत में भेज दिया। खिज्र खा उसका पीछा करता हुआ जब यमुना तट पर पहुचा तो बैरम खा लज्जित होकर दीनता प्रकट करते हुए खिज्र खा की सेवा में उपस्थित हो गया। जो परगने इसके पूर्व उसकी जागीर में थ वह उसे दे दिय गये। खिज्र खा लौट कर फतहपुर पहुचा।

खिज्र खा का रोहतक पर आक्रमण

८१३ हि० (१४१०-११ ई०) म खिज्र खा ने मलिक इद्रीस पर जो महमूद शाह की ओर से रोहतक का हाकिम था चढाई की। मलिक इद्रीस ने रोहतक के किले में शरण ली और ६ मास तक युद्ध करता रहा। अन्त में विवश होकर उसने अपने पुत्र को बन्धक के रूप में भेजा तथा धन सपत्ति देकर अधीनता स्वीकार कर ली। खिज्र खा सामाना के मार्ग से फतहपुर पहुचा। खिज्र खा की वापसी के उपरान्त, महमूद शाह कैथल की ओर शिकार खेलता हुआ देहली लौट आया और भोग विलास में ग्रस्त हो गया।

खिज्र खा का रोहतक, नारनौल, मेवात तथा देहली पर आक्रमण

८१४ हि० (१४११-१२ ई०) में खिज्र खा ने रोहतक की ओर जो महमूद शाह की विलायत[3] में सम्मिलित था प्रस्थान किया। मलिक इद्रीस तथा उसके भाई मुबारिज़ खा उसका स्वागत करके हासी में उसकी सेवा में उपस्थित हुए। उसने उन्हें अपनी कृपा तथा दया द्वारा प्रसन्न कर दिया। तत्पश्चात् वह नारनौल नामक कस्बे को, जो इकलीम खा तथा बहादुर नाहिर के अधिकार में था, विध्वस करके देहली पहुचा। उसन सीरी के किले को घर लिया। महमूद शाह किले में घिर गया और विचित्र प्रकार की हरकतें करने लगा। इख्तियार खा, जो महमूद शाह की ओर से फीरोज़ाबाद का हाकिम था, खिज्र खा से मिल गया। खिज्र खा ने सीरी के किले के द्वार के सामने से प्रस्थान किया और वह फ़ीरोज़ाबाद के कृश्क[4] में उतरा। दोआब के मध्य के कस्बे तथा शहर के आसपास के स्थान अपने अधि-

१ इस शब्द को देहात रत' भी पढा जा सकता है। इस स्थान के विषय में कोई ज्ञान नहीं।
२ 'तारीखे मुबारक शाही', बाद के इतिहासों तथा अन्य हस्तलिखित पोथियों में भी 'फ़तह खा' है।
३ राज्य।
४ राजप्रासाद।

वार में कर लिये। अनाज तथा चारे की कमी के कारण वह घेरा छोड कर पानीपत के मार्ग से ८१५ हि० (१४१२-१३ ई०) में फतहपुर पहुचा। रजब ८१५ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १४१२ ई०) में महमूद (२६४) शाह ने शिकार खेलने के उद्देश्य से कैथल की ओर प्रस्थान किया और शिकार खेल कर देहली लौट आया। मार्ग में जीकाद ८१५ हि० (फरवरी १४१३ ई०) में वह रुग्ण हो गया और उसी मास में उसकी मृत्यु हो गई। उस तिथि से फीरोज शाह के वश के राज्य का अन्त हो गया। सुल्तान महमूद शाह बिन (पुत्र) सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फीरोज शाह जो केवल नाम मात्र को बादशाह था २० वर्ष तथा २ मास तक बादशाह रहा।

राज्य की अव्यवस्थित दशा

तत्पश्चात् २ मास तक देहली बडी ही अव्यवस्थित दशा में रही। सुल्तान महमूद शाह के अमीरो ने दौलत खा की अधीनता स्वीकार कर ली। मलिक इद्रीस तथा मुबारिज खा, खिज्र खा से विद्रोह कर के दौलत खा से मिल गये। खिज्र खा ने यह वर्ष फतहपुर में व्यतीत किया। मुहर्रम ८१६ हि० (अप्रैल १४१३ ई०) में दौलत खा ने कैथल की ओर चढाई की। राय नर सिंह तथा अन्य रायो ने उपस्थित होकर उसके प्रति अधीनता प्रदर्शित की। जब वह पटियाली कस्बे में पहुचा तो महाबत खा बदायूनी भी उसकी सेवा में उपस्थित हुआ। इसी बीच में यह समाचार प्राप्त हुए कि सुल्तान इबराहीम शर्की ने महमूद खा के पुत्र कादिर खा को कालपी में घेर लिया है। दौलत खा के पास इतनी सेना न थी कि वह सुल्तान इबराहीम से युद्ध कर सकता, अत वह वापस होकर देहली पहुच गया। रमजान ८१६ हि० (नवम्बर-दिसम्बर १४१३ ई०) में, खिज्र खा ने देहली की ओर प्रस्थान किया। जब वह हिसार फीरोजा पहुँचा, तो उस प्रदेश के अमीर उसकी सेवा में उपस्थित होकर उसके हितैषी बन गये। मलिक इद्रीस रोहतक के किले को बन्द किये रहा। खिज्र खा ने उसका विरोध न किया और वह स्थान छोड कर मेवात की ओर चला गया। बहादुर नाहिर का भतीजा, जलाल खा उस स्थान पर उसकी सेवा में पहुचा। वहा से प्रस्थान करके वह सबल कस्बे में पहुच गया। उसे नष्ट-भ्रष्ट करके वह जिलहिज्जा ८१६ हि० (फरवरी-मार्च १४१४ ई०) में पुन देहली लौट आया और पुन सीरी द्वार के समक्ष पडाव किया। दौलत खा ४ मास तक किले की रक्षा करता रहा। अन्त में मलिक यूनान[1] तथा खिज्र खा के समस्त हितैपियो ने अपनी कुशल नीति से दौलतखाने[2] के द्वार पर अधिकार जमा लिया। दौलत खा ने (२६५) जब यह देखा कि उसे सफलता नही मिल सकती तो उसने विवश होकर क्षमा याचना की और खिज्र खा से भेंट की। उसने दौलत खा को किवाम खा को सौंप दिया और कहा कि वह उसे हिसार फीरोजा मे बन्दीगृह में बन्द रक्खे। यह घटना रबी-उल-अव्वल ८१७ हि०[3] (मई-जून १४१४ ई०) में घटी।

१ यह नाम विभिन्न रूप से लिखा गया है, तुनान, यूनान, बरना, बोना।
२ नवल किशोर प्रेस द्वारा प्रकाशित 'तबकाते अकबरी' में 'दरवाजये दौलत खां रा' (दौलत खां का द्वार) है। कलकत्ता के प्रकाशित ग्रन्थ में 'तहखाना' है। डे के अंग्रेज़ी अनुवाद में 'बुतखाना' है। एक हस्त-लिखित पोथी में 'दौलत खाना' अथवा राज प्रासाद है अत इसी शब्द को रक्खा गया।
३ प्रकाशित पुस्तक में '८१६' है किन्तु अन्य पोथियों में '८१७' है और यही उचित है।

मलिक सुलेमान का पुत्र, रायाते आला खिज्र खां

खिज्र खा के वश का प्रमाण

कहा जाता है कि मलिक मर्वान दौलत ने, जो सुल्तान फीरोज शाह का अमीर था, खिज्र खा के पिता मलिक सुलेमान का बाल्यावस्था में, पुत्र कह कर, पालन-पोषण किया था। यह बात सत्य है कि एक दिन मलिक मर्वान दौलत ने अमीर जलाल बुखारी को अपने यहा अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया था। भोजन के समय मलिक मर्वान दौलत के आदेशानुसार मलिक सुलेमान सभा वालो के हाथ धुल्वाने के लिए खडा हुआ। सैयिद जलाल ने कहा कि, "यह युवक सैयिद का पुत्र है और यह सेवा उसके योग्य नही।" इस प्रकार अमीर सैयिद जलाल द्वारा उसके वश की पुष्टि होती है। खिज्र खा पवित्र तथा नैतिकतापूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला, सत्यवादी, सदाचारी व्यक्ति था। उसके आचरण की श्रेष्ठता से उसके वश की श्रेष्ठता का पता चलता है। यद्यपि परिश्रम से उत्तम कार्य प्रकट होते है किन्तु प्रशसनीय गुणो का प्रादुर्भाव उच्च वश से होता है।

खिज्र खा का मुल्तान प्राप्त करना

सक्षेप मे, सुल्तान फीरोज शाह के राज्य काल मे मुल्तान, मलिक मर्वान दौलत के अधीन था। उसकी (मर्वान की) मृत्यु के उपरान्त उसे मलिक शह को प्रदान कर दिया गया। कुछ समय उपरान्त उसकी भी मृत्यु हो गई। सुल्तान फीरोज शाह ने मुल्तान को खिज्र खा को प्रदान कर दिया। तदुपरान्त खिज्र खा बहुत बडा अमीर हो गया। देहली पर विजय प्राप्त करने के पूर्व उसने बडे-बडे युद्ध किये और महान् विजय, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, प्राप्त की।

तैमूर तथा शाह रुख के नाम का खुत्बा

१५ रबी-उल-अव्वल ८१७ हि० (४ जून १४१४ ई०) को उसने देहली पर अधिकार जमा लिया। बादशाही तथा राज्य के समस्त वैभव के होते हुए भी, उसने बादशाह की उपाधि अपने लिए (२६६) ग्रहण न की और अपनी उपाधि रायाते आला रक्खी। प्रारम्भ मे वह सिक्का तथा खुत्बा अमीर तैमूर के नाम से चलाता था। अन्त मे मिर्जा शाह रुख के नाम से चलाने लगा। अन्त मे खिज्र खा का नाम भी खुत्बे मे लिया जाने लगा और उसके प्रति शुभ कामनायें की जाने लगी।

नयी नियुक्तिया

उसने मलिक तुहफा को ताजुलमुल्क की उपाधि देकर वजीर[1] नियुक्त कर दिया। सैयिद सालिम को सहारनपुर प्रदान कर दिया। मलिक अब्दुर्रहीम को, जिसे सुलेमान अपना पुत्र कहा करता था, अलाउलमुल्क की उपाधि प्रदान की और मुल्तान तथा फतहपुर उसके अधीन कर दिये। मलिक सरवर

1 देखिये पृ० १५ नोट नं० १।

को शहना[1] नियुक्त किया। मलिक खैरुद्दीन खानी को आरिजे ममालिक[2] बनाया। मलिक कालू को शहनये पील तथा मलिक दाउद को दबीरी[3] का पद प्रदान किया। इख्तियार खा को दोआब में नियुक्त किया। सुल्तान महमूद शाह के खानाजादों[4] में से जिसे भी वृत्ति तथा अदरार[5] प्राप्त थे उन्हें उसने उसी प्रकार रहने दिया और उनको उनकी जागीर में भेज दिया।

बदायू तथा कटिहर की ओर सेना का भेजा जाना

८१७ हि० (१४१४-१५ ई०) में उसने ताजुलमुल्क को भारी सेना देकर बदायू तथा केहतर[6] की ओर भेजा और वहा के जमीदारो को दण्ड देने का आदेश दिया। राय नर सिंह[7] भागकर आवला के दर्रे में प्रविष्ट हो गया, किन्तु जब उसे सफलता की कोई आशा न रही तब वह दीनता प्रकट करते हुए कर देना स्वीकार करके उसकी प्रजा बन गया। बदायू के हाकिम महाबत खा ने भी उपस्थित होकर अधीनता प्रदर्शित की।

शम्साबाद की ओर प्रस्थान

वहा से वह (ताजुलमुल्क) रहब नदी के किनारे-किनारे होता हुआ, सुर्ग द्वारी[8] के घाट पर पहुचा और गगा नदी पार करके खोर, जो अब शम्साबाद[9] कहलाता है, के काफिरो को दण्ड देकर कम्पिला[10] को नष्ट करता हुआ सकेत[11] कस्व के मार्ग से बाघम कस्बे में पहुचा। रापरी[12] के हाकिम हसन खा तथा उसके भाई हमजा ने उपस्थित होकर उससे भेंट की। राय सर[13] भी उसकी अधीनता स्वीकार करके उसकी सेवा में पहुचा। ग्वालियर, रापरी तथा चदवार के राजाओ ने भी मालगुजारी अदा करना स्वीकार कर लिया। उसने जलेसर के कस्बे को चदवार के राजपूतो से लेकर उस कस्बे के प्राचीन मुसलमानो को दे दिया और शिकदार[14] नियुक्त कर दिया। वहा से वह ग्वालियर की विलायत[15] में पहुचा और उसे नष्ट-भ्रष्ट कर (२६७) दिया। निश्चित वार्षिक कर ग्वालियर के राय से लेकर वह चदवार पहुचा। कम्पिला

१ नगर का मुख्य अधिकारी।
२ देखिये पृ० १५ नोट न० ६।
३ देखिये पृ० १५ नोट न० ८।
४ सेवकों।
५ अदरार देखिये पृ० १४ नोट न० ३।
६ कटिहर लगभग आधुनिक रुहेलखड।
७ कुछ पोथियों में 'हर सिंह' तथा कुछ में 'वरसिंह' है।
८ स्वर्ग द्वारी।
९ फ़र्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) जिले में।
१० कुछ पोथियों में 'कम्वला'।
११ सकेत, कम्पिला तथा रापरी के मध्य म।
१२ मैनपुरी के दक्षिण पश्चिम में ४४ मील पर।
१३ सबीर।
१४ देखिये पृ० ४ नोट न० ३।
१५ राज्य।

तथा वैताली[1] के जमीदार नर सिंह से कर वसूल करके चंदवार के निकट यमुना नदी पार की और देहली पहुंचा।

तुर्कों का विद्रोह

जमादि-उल-अव्वल ८१७ हि० (जुलाई-अगस्त १४१४ ई०) को यह सूचना प्राप्त हुई कि बैरम खां तुर्क बच्चे की कौम के तुर्कों के एक समूह ने मलिक सिद्धू नाहिर की, जो शाहजादा मुबारक खा की ओर से सरहिन्द का हाकिम था, विश्वासघात द्वारा हत्या कर दी है और सरहिन्द के किले पर अधिकार जमा लिया है। खिज्र खा ने ज़ीरक खां को बहुत बडी सेना देकर उनके विरुद्ध भेजा। तुर्क सतलद[2] नदी पार करके पर्वत में प्रविष्ट हो गये। ज़ीरक खा उनका पीछा करता हुआ पर्वत में प्रविष्ट हुआ और दो मास तक युद्ध करता रहा। अन्त में सफलता पाये विना वापस हो गया।

खिज्र खां का गुजरात के विरुद्ध प्रस्थान

रजब ८१७ हि० (सितम्बर-अक्तूबर १४१४ ई०) में समाचार प्राप्त हुआ कि सुल्तान अहमद गुजराती ने नागौर[3] के किले को घेर लिया है। खिज्र खा ने इस विद्रोह को शान्त करने के लिए तोदा के मार्ग से नागौर की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान अहमद युद्ध न करके अपनी विलायत[4] में लौट गया और शहर नव उरूसे जहा में, जिसका निर्माण सुल्तान अलाउद्दीन खलजी ने करवाया था, चला गया। उस शहर के हाकिम इलियास ने आकर उससे भेंट की। उस प्रदेश के विद्रोहियों को दण्ड देकर उसने ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया। क्योंकि किले पर विजय प्राप्त करना कठिन था अत. ग्वालियर के राय से निश्चित कर लेकर वह ब्याना चला गया और ब्याना के हाकिम शम्स खा औहदी से भी कर लेकर देहली लौट गया।[6]

तुगान का अधीनता स्वीकार करना

८२० हि० (१४१७-१८ ई०) में तुगान तथा कुछ अन्य तुर्कों के विद्रोह के, जिन्होने मलिक सिद्धू की हत्या कर दी थी, समाचार प्राप्त हुए। ज़ीरक खा, सामाना का हाकिम, उसके विरुद्ध भेजा गया। जब वह सामाना[1] के निकट पहुचा तो विद्रोही सरहिन्द के किले को छोड कर पर्वत की ओर चले गये। मलिक कमाल बुद्धन, जो किले मे था, मुक्ति पाकर जीरक खा की सेवा में उपस्थित हुआ। जीरक खा विरोधियों का पीछा करता हुआ पायल कस्बे में पहुचा। तुगान ने जो तुर्कों का नेता था आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली और कर देना कुबूल किया तथा अपने पुत्र को बन्धक के रूप में दिया। (२६८) जिन तुर्कों ने मलिक सिद्धू की हत्या की थी उन्हें अपने पास से पृथक् कर दिया। जीरक खा सामाना की ओर वापस हुआ और कर तथा उसके पुत्र को खिज्र खा की सेवा मे भेज दिया।

१ पटियाली।
२ सतलज।
३ नसीराबाद से उत्तर-पश्चिम की दिशा में ४८ मील पर और जोधपुर नगर से उत्तर-पूर्व में ७५ मील पर।
४ राज्य।
५ नवल किशोर प्रेस सस्करण में 'शहरे नव उरूसे भायन' है।
६ 'सरहिन्द' उचित होगा।

ताजुलमुल्क का नर सिंह पर आक्रमण

८२१ हि० (१४१८-१९ ई०) में ख़िज्र ख़ा ने ताजुलमुल्क को केथर[1] के राजा नर सिंह पर आक्रमण करने के लिए भेजा। शाही सेना के गगा-पार कर लेने के उपरान्त नर सिंह उस विलायत को खाली करके आवला के जगल में चला गया और जगल में शरण का स्थान ढूढता रहा किन्तु (शाही सेना द्वारा) पराजित होकर वापस हुआ। उसके घोडे, अस्त्र-शस्त्र तथा समस्त सपत्ति को अधिकार में कर लिया गया। शाही सेनाओ ने कुमायू पर्वत तक उसका पीछा किया और अत्यधिक लूट की धन सपत्ति प्राप्त की। पाचवें दिन (शाही) सेना वापस आ गई।

तत्पश्चात् ताजुलमुल्क वदायू के मार्ग से गगा तट पर पहुचा और बजलाना घाट से नदी पार की। वदायू के हाकिम महाबत खा को विदा करके इटावा पहुचा। राय सिर[2] इटावा के किले में बन्द हो गया। ताजुलमुल्क ने इटावा की विलायत विध्वन्स कर दी। अन्त में सधि करके रबी-उल-आख़िर ८२१ हि० (मई-जून १४१८ ई०) में वह शहर (देहली) की ओर लौट आया।

ख़िज्र ख़ा का कटिहर की ओर प्रस्थान तथा विश्वासघातियो की हत्या

उसी वर्ष में ख़िज्र ख़ा ने केथर[3] के उपद्रवियो तथा विद्रोहियो को दण्ड देने के लिए प्रस्थान किया। सर्व प्रथम कोल के विद्रोहियो को दण्ड दिया और रहव नदी पार करके सबल को नष्ट भ्रष्ट किया। ज़ीकाद ८२१ हि० (दिसम्बर १४१८ ई०) मे उसने वदाय की ओर प्रस्थान किया और पटियाली के निकट गगा नदी पार की। यह देखकर महावत खा के हृदय में आतक आरूढ हो गया और वह वदायू की ओर चल दिया। ज़िलहिज्जा ८२१ हि० (जनवरी १४१९ ई०) में वह वदायू के किले में बन्द हो गया और ६ मास तक युद्ध करता रहा। इसी बीच में कुछ अमीर उदाहरणार्थ क़िवाम ख़ा इख़्तियार ख़ा तथा महमूद शाह के समस्त सेवक जो दौलत ख़ा से पृथक् होकर ख़िज्र ख़ा से मिल गये थे विश्वासघात की योजना बनाने लगे। ख़िज्र ख़ा यह सूचना पाकर किले का घेरा छोड कर देहली की ओर वापस हो गया। मार्ग में गगा तट पर २० जमादि उल-अव्वल ८२२ हि० (१४ जून १४१९ ई०) को क़िवाम ख़ा, इख़्तियार ख़ा तथा महमूद शाह के सेवको एव समस्त विश्वासघातियो की हत्या करा दी और देहली लौट आया।

सारग के विरुद्ध शाही सेनाओ का प्रस्थान

(२६९) कुछ दिनो के उपरान्त यह समाचार प्राप्त हुए कि एक व्यक्ति विद्रोह के विचार से अपना नाम सारग रख कर बजवारा पर्वत में सेनायें एकत्र कर रहा है। ख़िज्र ख़ा ने मलिक सुल्तान शाह बहराम लोदी को सरहिन्द प्रदान करके उसके विरुद्ध नियुक्त किया। वह रजब ८२२ हि० (जुलाई अगस्त १४१९ ई०) मे सरहिन्द पहुचा और सारग पर्वत से निकल कर सतलद[4] नदी तक आया। रूपर के लोग उससे मिल गये। सरहिन्द के निकट युद्ध हुआ। सारग पराजित हुआ और ल्होरी वस्त्र की ओर जो सरहिन्द के अधीन था चला गया। ख़्वाजा अली इन्दरानी ने अपनी सेना सहित उपस्थित

१ कटिहर, लगभग आधुनिक रुहेलखड। इस शब्द को 'केहतर' भी लिखा गया है।
२ सबीर।
३ कटिहर।
४ सतलज।

होकर सुल्तान शाह से भेंट की। सामाना का हाकिम जीरक खा, जालन्धर का हाकिम तुगान तुर्क बच्चा, सुल्तान शाह की सहायतार्थ सरहिन्द पहुचे। सारग भाग कर रूपर पहुच गया। शाही सेना ने रूपर तक उसका पीछा किया। सारग भाग कर पर्वत में प्रविष्ट हो गया और शाही सेना ने उसी स्थान पर पडाव किया।

इसी बीच में मलिक खैरुद्दीन को बहुत बडी सेना देकर सारग के विरुद्ध नियुक्त किया गया। रमज़ान ८२२ हि० (नवम्बर-दिसम्बर १४१९ ई०) में वह रूपर पहुचा और कुछ समय पर्वत के निकट पडाव किये रहा। जब सारग की सेना छिन्न भिन्न हो गई तब वह थोडे से आदमियो को लेकर पर्वत में छिप गया और शाही सेना लौट गई।

मलिक खैरुद्दीन शहर (देहली) की ओर वापस चला गया। जीरक खा सामाना लौट गया। सुल्तान शाह उस सेना को लेकर जो उसकी सहायतार्थ आई थी रूपर थाने में रह गया। उसी समय सारग पर्वत से निकल कर ८२३ हि० (१४२० ई०) में तुगान से मिल गया। तुग़ान ने विश्वासघात करके उसकी हत्या करा दी। इस बीच में खिज्र खा शहर मे विश्राम करता रहा।

इटावा पर आक्रमण

उसने ताजुलमुल्क को इटावा के ज़मीदारो पर विजय प्राप्त करने के लिए नियुक्त किया। वह बरन के मार्ग से कोल पहुचा। उसने उस प्रदेश के विद्रोहियो को नष्ट कर दिया और देहली नामक[1] एक दृढ स्थान को नष्ट करके इटावा पहुचा। राय सिर[2] बन्द होकर बैठ गया। अन्त में सधि करके निश्चित खराज अदा करना स्वीकार कर लिया। ताजुलमुल्क ने चदवार पहुच कर उसे नष्ट भ्रष्ट कर दिया और वहा से प्रस्थान करके राय नर सिंह से खराज वसूल करके शहर (देहली) लौट आया।

तुगान तुर्क बच्चे का विद्रोह

(२७०) रजब ८२३ हि० (१४२० ई०) म समाचार प्राप्त हुए कि तुगान तुर्क बच्चे ने पुन विद्रोह कर के सरहिन्द के किले को घेर लिया है और मसूरपुर तथा पायल की सीमा तक आक्रमण कर रहा है। खिज्र खा ने खैरुद्दीन को उसके विरुद्ध नियुक्त किया। वह सामाना पहुचा और ज़ीरक खा के साथ उसने तुगान का पीछा किया। तुगान ने लुधियाना के निकट सतलद[3] नदी पार की और जसरथ खोखर की विलायत[4] में प्रविष्ट हो गया। उसके महाल तथा जागीर को जीरक खा को प्रदान कर दिया गया। मलिक खैरुद्दीन देहली लौट आया।

खिज्र खा द्वारा मेवातियो पर विजय

खिज्र खा ने ८२४ हि० (१४२१ ई०) में मेवात के विद्रोहियो पर विजय प्राप्त करने के लिए उस ओर प्रस्थान किया। उन विरोधियो में से कुछ लोग कोटला बहादुर नाहिर में बन्द हो गये और कुछ ने उपस्थित होकर खिज्र खा से भेंट की। जब उसने किले का घेरा डाला तो मेवातियो ने उसका

1 मूल ग्रन्थ में 'मौजा देहली' है। मौजा देहली किसी स्थान का भी नाम हो सकता है।
2 सबीर।
3 सतलज।
4 राज्य।

मुकाबला किया, किन्तु प्रथम आक्रमण में ही वे भाग खड़े हुए। कोटला पर विजय प्राप्त हो गई। मेवाती पर्वत की ओर चले गये। खिज्र खा किले का विनाश करके ग्वालियर की ओर चला गया।

खिज्र खा की मृत्यु

८ मुहर्रम ८२४ हि० (१३ जनवरी १४२१ ई०) को ताजुलमुल्क की मृत्यु हो गई। उसका ज्येष्ठ पुत्र सिकन्दर वजीर नियुक्त किया गया और उसे मलिकुश्शर्क की उपाधि प्रदान की गई। जब ग्वालियर के राजा ने किला बन्द कर लिया तो खिज्र खा ने उसको विलायत नष्ट भ्रष्ट कर दी। उससे भी खराज लेकर इटावा की ओर वापस चला आया। राय सिर[1] की मृत्यु हो चुकी थी। उसका पुत्र आज्ञाकारिता स्वीकार करके कर अदा करने पर उद्यत हो गया। इसी बीच में खिज्र खा रुग्ण हो गया और देहली की ओर लौट गया। १७ जमादि-उल-अव्वल ८२४ हि० (२० मई १४२१ ई०) को उसकी मृत्यु हो गई। उसने ७ वर्ष २ मास तथा २ दिन तक राज्य किया। उसने अत्यधिक दान पुण्य के कार्य किये। जो लोग साहिब किरान के आक्रमण के समय निर्धन तथा गृहहीन हो गये थे वे उसके राज्य काल में सुखी तथा समृद्ध हो गये।

सुल्तान मुबारक शाह बिन रायाते आला खिज्र खां

नई नियुक्तिया

जब खिज्र खा का रोग बहुत बढ़ गया तो उसने अपनी मृत्यु के ३ दिन पूर्व मुबारक खा को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। मुबारक खा खिज्र खा की मृत्यु के एक दिन उपरान्त अमीरो की सहमति (२७१) से सिंहासनारूढ हुआ। उसकी उपाधि सुल्तान मुबारक शाह निश्चित की गई। खिज्र खा के राज्यकाल में जिन अमीरो, मलिका, प्रतिष्ठित व्यक्तिया तथा इमामो[2] को परगने ग्राम तथा वृत्ति एव अदरार[3] प्राप्त थे, वह उसने पूर्व की भाति उन्ही के पास रहने दिये और कुछ में वृद्धि की। फीरोजाबाद हासी को मलिक रजब नादिरा से लेकर अपने भतीजे मलिक बुद्ध को दे दिया। इसके बदले में उसने दीपालपुर को मलिक रजब को प्रदान कर दिया।

शेखा खोखर का विद्रोह

इसी समय शेखा खोखर तथा तुगान रईस के विद्रोह के समाचार प्राप्त हुए। शखा खोखर[4] के विद्रोह का कारण यह था कि जमादि उल-अव्वल ८२३ हि० (मई-जून १४२० ई०) म कश्मीर का बादशाह सुल्तान अली थट्टा आया था। उसके थट्टा से लौटने के समय शेखा ने उसका मार्ग रोक कर युद्ध आरम्भ कर दिया। क्योकि सुल्तान अली की सेना छिन्न भिन्न थी अत वह पराजित हुआ और शेखा द्वारा बन्दी बना लिया गया। लूट की धन सपत्ति की अधिकता के कारण शेखा का मस्तिष्क फिर गया और उसन विद्रोह कर दिया। उसने देहली विजय करने तथा हिन्दुस्तान के राज्य पर अधिकार जमाने

१ सबीर।
२ इमाम —मुसलमानों के धार्मिक नेता। जो व्यक्ति नमाज पढाता है वह भी इमाम कहलाता है।
३ अदरार —देखिये पृ० १४ नोट न० ३।
४ 'तारीखे मुबारकशाही' के अनुसार 'जसरथ'।

की योजनायें बनानी प्रारम्भ कर दी। आसपास के परगनों को नष्ट-भ्रष्ट करना प्रारम्भ कर दिया। उसने सतलद[1] नदी पार करके राय कमाल मईन की तिलौंदी[2] को नष्ट कर दिया। उस स्थान का जमींदार राय फीरोज़ भाग कर यमुना की ओर पहुंचा। शेखा ने लुधियाना कस्बे में पहुच कर रूपर की सीमा तक आक्रमण किया। तत्पश्चात् उसने सतलद नदी पार करके जालन्धर के किले को घेर लिया। उस स्थान का हाकिम ज़ीरक खा किले में घिर गया और युद्ध करता रहा। शेखा ने सधि कर ली और यह निश्चय किया कि वह (ज़ीरक) जालन्धर के किले को खाली करके तुगान को सौंप दे और तुगान के पुत्र को मुबारक शाह की सेवा में भेज दिया जाय, शेखा भी उचित उपहार (कर) प्रेषित करे।

२ जमादि-उल-आखिर ८२४ हि० (४ जून १४२१ ई०) को ज़ीरक खा जालन्धर के किले से निकला और शेखा की सेना से एक कोस पर मईन[3] नदी के तट पर उतरा। दूसरे दिन शेखा ने विश्वासघात करके ज़ीरक खा पर आक्रमण किया और उसे बन्दी बना लिया तथा पुन विरोध का झण्डा ऊंचा कर दिया। सतलद नदी पार करके वह लुधियाना आया और २० जमादि-उल-आखिर ८२४ हि० (२२ जून १४२१ ई०) को सरहिन्द पहुचा। सुल्तान शाह लोदी, सरहिन्द का हाकिम किले में घिर गया। वर्षा (२७२) ऋतु प्रारम्भ हो जाने के कारण शेखा के अत्यधिक प्रयत्न के बावजूद किले पर विजय न प्राप्त हो सकी।

मुबारक शाह का शेखा के विरुद्ध प्रस्थान

सुल्तान मुबारक शाह ने रजब ८२४ हि० (जुलाई १४२१ ई०) म वर्षा ऋतु के बावजूद शहर देहली से प्रस्थान किया और सरहिन्द पर आक्रमण करना निश्चय किया। जब वह सामाना के निकट पहुचा तो शेखा लुधियाना की ओर चल दिया। ज़ीरक खा सामाना में सुल्तान मुबारक शाह से मिला। सुल्तान सामाना से लुधियाना पहुचा। शेखा ने सतलद पार करके नदी के उस पार (शाही) सेना के समक्ष पडाव किया। नदी के बडी होने तथा शेखा द्वारा नौकाओ पर अधिकार जमा लिये जाने के कारण, मुबारक शाह नदी न पार कर सका। ४० दिन तक दोनो सेनायें एक दूसरे के समक्ष पडी रहीं। शुभ ग्रह के उदय होने तथा जल के कम हो जाने के कारण मुबारक शाह ने नदी के किनारे-किनारे कुबूलपुर की ओर प्रस्थान किया। शेखा भी नदी के किनारे-किनारे प्रतिदिन मुबारक शाह की सेना के समक्ष पडाव करता था।

११ शव्वाल ८२४ हि० (९ अक्तूबर १४२१ ई०) को सुल्तान मुबारक शाह ने मलिक सिकन्दर तुहफा, ज़ीरक खा, महमूद हसन, मलिक कालू तथा अन्य अमीरो को अत्यधिक सेना एव हाथी देकर नदी के चढाव की ओर इस आशय से भेजा कि वे जिस स्थान पर भी नदी को छिछला पायें उसी स्थान पर नदी को पार करें। सुल्तान ने भी नदी पार करने की व्यवस्था की। शेखा अपने आप में युद्ध की शक्ति न देखकर जालन्धर की ओर भाग गया। उसकी धन सपत्ति तथा उसके सैनिक सुल्तान की सेना के अधिकार में आ गये। उसकी सेना के अत्यधिक अश्वारोही तथा पदाती मारे गये। सुल्तान की सेना ने चनाब नदी तक शेखा का पीछा किया। शेखा नदी पार करके पर्वत[4] में प्रविष्ट हो गया।

१ सतलज।
२ ग्राम।
३ 'तारीखे मुबारकशाही' के अनुसार 'बेनी'।
४ 'तारीखे मुबारकशाही' के अनुसार 'तिलहर' पर्वत।

जम्मू के राजा राय भीम[1] ने सुल्तान की सेवा में उपस्थित होकर सेना का पथ-प्रदर्शक बन कर चनाव नदी पार करा दी और थीका तक, जो शेखा के अत्यन्त दृढ स्थानो में से एक स्थान था, पहुचा दिया। सुल्तान ने थीका को नष्ट कर दिया। शेखा के बहुत से सहायक जो पर्वतो मे छिन्न-भिन्न हो गये थे, बन्दी बना लिये गये। सुल्तान मुहर्रम ८२५ हि० (दिसम्बर १४२१, जनवरी १४२२ ई०) में सुरक्षित लाहौर पहुचा। लाहौर पूर्णत नष्ट हो चुका था। एक मास तक ठहर कर वह किले तथा द्वारो का निर्माण कराता रहा। किले के पूरा हो जाने के कारण अधिकाश लोग आ-आकर अपने स्थान पर बसाने (२७३) लगे। सुल्तान ने लाहौर मलिक महमूद हसन को सौंप दिया और २ हज़ार अश्वारोही उसे प्रदान कर दिये। किले की रक्षा का उचित प्रबन्ध करके वह देहली लौट गया ।

शेखा का लाहौर पर असफल आक्रमण

जमादि-उल-आखिर ८२५ हि० (मई-जून १४२२ ई०) में शेखा खोखर ने ज़मीदारो से मिल कर अत्यधिक अश्वारोहियो तथा पदातियो को एकत्र करके उपद्रव तथा विद्रोह प्रारम्भ कर दिया। लाहौर पहुच कर वह सैयिद हुसेन ज़जानी के मज़ार के निकट उतरा । उसने ११ जमादि-उल-आखिर ८२५ हि० (२ जून १४२२ ई०) को लाहौर के मिट्टी के किले पर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। अत्यधिक मनुष्यों की हत्या कर दी। २१ जमादि-उल-आखिर ८२५ हि० (१२ जून १४२२ ई०) को उसने अत्यधिक सेना एकत्र करके मिट्टी के किले पर घोर युद्ध किया किन्तु सफलता प्राप्त न हुई। वह कुछ कोस पीछे हट गया। वह १ मास ५ दिन तक युद्ध करता रहा किन्तु कोई सफलता प्राप्त न कर सका। शेखा युद्ध में सफलता न प्राप्त करने के कारण कलानोर[2] की ओर चल दिया और राय भीम से, जो मलिक महमूद हसन की सहायतार्थ कलानोर आया था, युद्ध किया। रमज़ान ८२५ हि० (अगस्त-सितम्बर १४२२ ई०) को सधि हो गई और शेखा व्याह नदी की ओर चल दिया।

शेखा खोखर की पराजय

इस समय मलिक सिकन्दर तुहफा उस सेना सहित जो उसे मुबारक शाह की ओर से मलिक महमूद हसन की सहायतार्थ प्राप्त हुई थी पोही[3] के घाट पर पहुचा। शेखा में युद्ध का साहस न रह गया था, अत वह रावी तथा चनाव नदी को पार करके पर्वत मे प्रविष्ट हो गया। मलिक सिकन्दर ने पोही के घाट से व्याह नदी पार की। १२ शव्वाल ८२५ हि० (२९ सितम्बर १४२२ ई०) को वह लाहौर पहुचा। मलिक महमूद हसन ने उसका स्वागत किया और उसका आगमन अपने लिये बडा बहुमूल्य समझा। दीपालपुर का हाकिम मलिक रजब सरहिन्द का हाकिम मलिक सुल्तान शाह, राय फीरोज मईन तथा ज़मींदार इससे पूर्व मलिक सिकन्दर से मिल गये थे। उपर्युक्त सेना रावी के किनारे-किनारे होती हुई कलानोर की ओर रवाना हुई। जब वह जम्मू की सीमा पर पहुचे तो राय भीम भी उनसे मिल गया और उसने उनके प्रति सेवा-भाव प्रदर्शित किया। खुक्खरो के इस समूह को, जो शेखा से पृथक् हो गया था, नष्ट करके वे लाहौर लौट आये। इसी बीच में सुल्तान मुबारक शाह के आदेशानुसार मलिक महमूद ने जालन्धर की ओर प्रस्थान किया, और वापसी की व्यवस्था करके देहली चल दिया। मलिक

१ कुछ पोथियों के अनुसार 'राय भीलम'।
२ गुरदासपुर से पश्चिम की ओर १७ मील पर।
३ मूल ग्रन्थ में इसे 'बोही' भी लिखा गया है।

(२७४) सिकन्दर लाहौर पहुचा। उसी समय विजारत का पद मलिक सिकन्दर से लेकर सरवरुल-मुल्क को प्रदान कर दिया गया।

सुल्तान द्वारा कटिहर तथा इटावा पर आक्रमण

८२६ हि० (१४२२-२३ ई०) मे सुल्तान मुबारक शाह ने गगा नदी पार की और उस प्रदेश के काफिरो तथा विद्रोहियो पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रस्थान किया। मुहर्रम ८२६ हि० (दिसम्बर १४२२, जनवरी १४२३ ई०) में कैथर[1] की विलायत[2] मे प्रविष्ट हो गया। खराज प्राप्त करके कुछ विद्रोहियो को दण्ड दिया। उस स्थान पर बदायू के हाकिम ने, जो खिज्र खा से आतकित हो गया था, आकर सुल्तान से भेट की। सुल्तान ने गगा नदी पार करके राठौरो की विलायत को विध्वस कर दिया तथा अत्यधिक मनुष्यो को बन्दी बना लिया और उनकी हत्या करा दी। कुछ दिन तक उसने गगा तट पर पडाव किया। कम्पिला के किले मे मलिक मुबारिज, जीरक खा तथा कमाल खा को एक भारी सेना देकर राठौरो की विजय हेतु नियुक्त कर दिया। राय सिर[3] के पुत्र के विरुद्ध, जो खिज्र खा से भाग कर पृथक् हो गया था, मलिक खैरुद्दीन खानी को उसने इस आशय से भेजा कि उसकी विलायत को विध्वस कर दे। वह (खैरुद्दीन खानी) इटावा पहुचा। राजपूत लोग किले में बन्द हो गये और युद्ध करने लगे। अन्त मे विवश होकर उन्होने दीनता प्रकट की तथा आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। राय सिर के पुत्र ने अधीनता स्वीकार कर ली और निश्चित खराज अदा किया। सुल्तान मुबारक शाह विजय तथा सफलता प्राप्त करके देहली पहुचा। इस बीच में मलिक महमूद हसन अपनी सेना सहित जालन्धर से देहली आया और सेवा में उपस्थित हुआ। उसे बख्शीगीरी[4] का पद, जो उस समय आरिजये लश्कर कहलाता था, प्रदान किया गया।

शेखा का दीपालपुर तथा लाहौर पर आक्रमण

जमादि उल-आखिर ८२६ हि० (मई-जून १४२३ ई०) में शेखा तथा राय भीम के मध्य म युद्ध हुआ। राय भीम की हत्या हो गई और उसकी सेना तथा धन-सपत्ति शेखा के अधिकार में आ गयी। शेखा की शक्ति बढ गई। उसने दीपालपुर तथा लाहौर के आसपास तक आक्रमण किया। मलिक सिकन्दर ने उसे भगाने के विचार से प्रस्थान किया और चनाब नदी पार की किन्तु सफलता प्राप्त न करके लौट आया। इसी बीच मे अलाउलमुल्क के पुत्र मलिक अलाउद्दीन की, जो मुल्तान (२७५) का हाकिम था, मृत्यु के समाचार प्राप्त हुए।

शेख अली नायब का आक्रमण

इसके अतिरिक्त यह भी सूचना प्राप्त हुई कि शेख अली नायब तथा सूरगतमश[5] या पुन बहुत बडी सेना लेकर काबुल से भक्कर तथा सिविस्तान पर आक्रमण करने के लिए आ रहे हैं।

१ कटिहर।
२ राज्य।
३ सबीर।
४ बख्शीगीरी —मुगल काल म आरिजे ममालिक को बख्शी कहते थे। सेना की भरती, निरीक्षण तथा अन्य प्रबन्ध बख्शी करता था।
५ यह नाम पोथियों में विभिन्न प्रकार से लिखा है सरगमश, सियूर अतमश, सियूर गतमश।

सुल्तान ने मलिक महमूद हसन को एक भारी सेना देकर मुगलो के उपद्रव को शान्त करने के लिए भेजा। उसने मुल्तान से सिन्ध तक के प्रदेश उसे प्रदान कर दिये। जब मलिक महमूद मुल्तान पहुचा तो उसने वहा की समस्त प्रजा तथा मुसलमानो को पुरस्कार एव आश्रय प्रदान करके प्रसन्न कर दिया। मुल्तान के किले का, जो मुगलो के उत्पात के कारण नष्ट हो गया था, पुन निर्माण कराया। इसी समय मुगलो की सेना भी लौट गई।

सुल्तान द्वारा अल्प खा के विरुद्ध प्रस्थान

इसी समय यह समाचार प्राप्त हुये कि धार का हाकिम अल्प खा, जिसने अपनी उपाधि सुलतान होशग रख ली थी, ग्वालियर के क़िले पर आक्रमण हेतु आ रहा है। मुबारक शाह ने ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया। जब वह ब्याना के निकट पहुचा, तो उसे ज्ञात हुआ कि औहद खा ने पुन अमीर खा ने ब्याना के हाकिम मुबारक खा की, जो उसका चाचा था, हत्या कर दी है और ब्याना को नष्ट करके पर्वत के ऊपर किलाबन्द हो गया है। मुबारक शाह ने पर्वत के आँचल में पडाव किया। पत्र-व्यवहार के उपरान्त अमीर खा ने प्रतिवर्ष खराज अदा करने की प्रतिज्ञा करके अधीनता स्वीकार कर ली। सुल्तान मुबारक शाह ने वहा से ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया। अल्प खा चम्बल नदी के घाट पर पडाव किये हुए था। मुबारक शाह ने दूसरे घाट का पता लगा कर शीघ्रातिशीघ्र नदी पार की। कुछ अमीरो ने जोकि शाही सेना के अग्रिम दल में थे, अल्प खा की सेना के विभिन्न दिशाओ के भाग को नष्ट कर दिया और अत्यधिक मनुष्यो को बन्दी बना लाये। बन्दियो के मुसलमान होने के कारण सुल्तान ने सबको मुक्त कर दिया। दूसरे दिन अल्प खा ने सधि की वार्ता करके उचित पेशकश भेजी और धार की ओर लौट गया। मुबारक शाह ने चम्बल नदी के तट पर पडाव किया और उस प्रदेश के ज़मीदारो से प्रथानुसार खराज वसूल किया। रजब ८२७ हि० (जून १४२४ ई०) को लौट कर वह देहली पहुचा।

सुल्तान का कटिहर के विरुद्ध प्रस्थान

मुहर्रम ८२८ हि० (नवम्बर दिसम्बर १४२४ ई०) में उसने केथर[1] की ओर प्रस्थान किया। केथर के राय नर सिंह ने गगा तट पर उपस्थित होकर अधीनता प्रदर्शित की। ३ वर्ष का कर शेष होने (२७६) के कारण उसे ३ दिन तक बन्दी रहना पडा। अन्त में कर अदा करके मुक्त हो गया। सुल्तान ने उस स्थान से गगा नदी पार की, और नदी के उस पार के विद्रोहियो को दण्ड देकर लौट आया।

सुल्तान द्वारा मेवातियो पर आक्रमण

इसी बीच में मेवातियो के विद्रोह तथा उपद्रव के समाचार प्राप्त हुए। सुल्तान ने उस ओर प्रस्थान किया और लूट-मार प्रारम्भ कर दी। मेवात का अधिकाश भाग नष्ट कर डाला। मेवाती अपनी विलायत को उजाड कर तथा खाली करके झार[2] पर्वत की ओर चल दिये। सुल्तान अनाज तथा चारे की कमी के कारण एव स्थान की दृढता की वजह से लौट कर देहली पहुच गया। वहा उसने अमीरो को अपनी-अपनी जागीरो को लौट जाने की अनुमति दे दी और स्वय भोग-विलास में ग्रस्त हो गया।

१ कटिहर।
२ हस्तलिखित पोथियों में इस स्थान को विभिन्न प्रकार से लिखा गया है: भार, भारा, छारा

८२९ हि० (१४२५-२६ ई०) मे उसने पुन उस प्रदेश के विद्रोहियों को दण्ड देने के लिए मेवात की ओर प्रस्थान किया। जल्लू, कद्दू तथा समस्त मेवाती जो एक दूसरे के सहायक थे अपने-अपने स्थानो को वीरान तथा खाली करके पर्वत के भीतर वन्द हो गये। कुछ दिन तक वे विचित्र प्रकार के प्रदर्शन करके किले को खाली करके अलवर की ओर चल दिये। सुल्तान नित्य प्रति युद्ध करता था और दोनो पक्षा के मनुष्यों की हत्या होती थी। मेवातियों ने विवश होकर क्षमा-याचना कर ली और कद्दू ने उपस्थित होकर अधीनता स्वीकार कर ली। वह वन्दी बना लिया गया। सुल्तान मेवात की विलायत को नष्ट करके लौट आया। ४ मास ११ दिन के उपरान्त मुहर्रम ८३० हि० (नवम्वर १४२६ ई०) में उसने मेवात पर पुन चढाई की। उस स्थान के विद्रोहिया को दण्ड देकर व्याना पहुचा।

व्याना तथा ग्वालियर पर आक्रमण

औहद खा का पुत्र मुहम्मद खा व्याना का हाकिम अपने पर्वतीय किले में वन्द हो गया। १६ दिन तक युद्ध होता रहा। उसके अधिकाश सहायक उससे पृथक् होकर सुल्तान मुवारक शाह से मिल गये। जव उसमें युद्ध करने की शक्ति न रही तो वह रबी-उल्-आखिर ८३० हि० (फरवरी १४२७ ई०) में विवशता एव दीनता के कारण अपनी ग्रीवा में रस्सी डाल कर किले के वाहर निकला और अधीनता प्रदर्शित की। घोडे, अस्त्र-शस्त्र तथा उत्तम वस्तुएँ जो किले में थीं उन सबको उसने पेशकश के रूप में भेंट किया। मुबारक शाह ने उसके परिवार तथा सम्वन्धियो को किले से निकाल कर देहली भेज दिया। व्याना को मुकबिल खा को प्रदान कर दिया। सीकरी को, जो अब फतहपुर कहलाता है, मलिक खैरुद्दीन (२७७) तुहफा को सौंप कर ग्वालियर की ओर पहुचा। ग्वालियर, तेहकर[1] तथा चंदवार के रायो ने अधीनता स्वीकार करके प्राचीन प्रयानुसार मालगुजारी अदा की और सुल्तान जमादि-उल-अव्वल ८३० हि० (मार्च १४२७ ई०) में देहली पहुचा। मलिक महमूद हसन का महाल तथा जागीर स्थानान्तरित करके उसे हिसार फीरोजा प्रदान कर दिया। मुल्तान मलिक रजव नादिरा को दे दिया।

मुहम्मद खा का विद्रोह

मुहम्मद खा अपने परिवार सहित भाग कर मेवात चला गया। उसके कुछ सहायक जो उससे छिन्न भिन्न हो गये थे उससे पुन मिल गय। इसी बीच में उसे ज्ञात हुआ कि मलिक अहमद मुकबिल खानी अपनी सेना सहित महाबन की ओर चला गया है और मलिक खैरुद्दीन तुहफा को किले में छोड गया है, व्याना नगर खाली है।[2] मुहम्मद खा समय पाकर व्याना के जमीदारा के भरोसे पर थोडी सी सेना लेकर वहा पहुचा। व्याना की विलायत तथा कस्बे के अधिकाश लोग उससे मिल गये। मलिक खैरुद्दीन किले की रक्षा न कर सका। क्षमा याचना करके, किला समर्पित करने के उपरान्त वह देहली पहुचा। मुबारक शाह ने व्याना को मलिक मुवारिज को सौंप कर मुहम्मद खा के विरुद्ध भेजा। मुहम्मद खा किले में वन्द हो गया। मलिक मुवारिज न उसकी विलायत पर अधिकार जमा लिया और उसे अपने अधीन कर लिया। मुहम्मद खा अपने कुछ विश्वासपात्रा को किले में छोड कर जरीदा[3], यलगार[4] करता हुआ सुल्तान

१ यह नाम कई प्रकार से लिखा है तहकर, थनकर, भक्कर।
२ उसकी रक्षा करने वाला कोई नहीं।
३ देखिये पृ० ३७ नोट नं० २।
४ शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करता हुआ।

इबराहीम की सेवा मे उपस्थित हुआ। सुल्तान मुबारक शाह ने मलिक मुबारिज को किसी कार्य हेतु अपनी सेवा में बुला लिया और स्वय ब्याना की विजय हेतु प्रस्थान किया।

सुल्तान इबराहीम शाह शर्की की सेनाओ का देहली की ओर प्रस्थान

इसी बीच में कालपी के हाकिम कादिर खा का प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ कि सुल्तान इबराहीम शर्की एक सुसज्जित सेना सहित कालपी पर चढाई करने के लिए आ रहा है। सुल्तान मुबारक शाह ब्याना के युद्ध को छोड कर सुल्तान इबराहीम से युद्ध करने के लिए रवाना हुआ। उसी समय शर्की सुल्तान की सेनाओ ने भोगाओ[1] को नष्ट करके बदायू की ओर प्रस्थान कर दिया था। सुल्तान मुबारक शाह ने यमुना नदी पार करके जरतौली ग्राम को जो प्रसिद्ध मवास[2] था विध्वस कर दिया और वहा से अतरौली[3] पहुचा। महमूद हसन को १० हजार अश्वारोहियों सहित सुल्तान इबराहीम शर्की के भाई मुखतस खा के (२७८) विरुद्ध, जिसने इटावा पर आक्रमण किया था, भेजा। जब महमूद हसन की सेना का शर्कियो की सेना से युद्ध हुआ तो शर्की सेना युद्ध न कर सकने के कारण भाग कर अपने सुल्तान के पास चली गई। महमूद हसन कुछ दिन प्रतीक्षा करके अपनी सेना से मिल गया।

सुल्तान इबराहीम तथा मुबारक शाह का युद्ध

सुल्तान इबराहीम शर्की काली नदी[4] के किनारे किनारे मारहरा[5] के अधीन बुरहानाबाद के निकट पहुँचा। मुहम्मद शाह ने अतरौली से प्रस्थान किया और मालूकोता नामक कस्बे में पहुँचा। सुल्तान शर्की मुहम्मद शाह की सेना का वैभव एव दृढता देखकर जमादि-उल्-अव्वल ८३० हि० (मार्च १४२७ ई०) में युद्ध त्याग कर रापरी कस्बे की ओर चला गया। वहा से यमुना नदी पार करके ब्याना पहुचा और गैथर के किनारे पडाव किया। मुबारक शाह ने यमुना नदी चदवार के निकट पार की और सुल्तान इबराहीम की सेना से ५ कोस पर पडाव किया। मुहम्मद शाह के सैनिको ने उसकी सेना के चारो ओर आक्रमण करके उसके घोडो, मवेशियो तथा मनुष्यो को बन्दी बना लिया। २० दिन तक यही दशा रही। ७ जमादि उल-आखिर ८३० हि० (५ अप्रैल १४२७ ई०) को सुल्तान शर्की ने युद्ध हेतु प्रस्थान किया। सुल्तान मुहम्मद शाह ने, महमूद हसन, फतह खा बिन (पुत्र) सुल्तान मुजफ्फर, जीरक खा, इस्लाम खा और खाने जहा के पौत्र मलिक चमन, मलिक कालू, शहनये फीलान तथा मलिक अहमद मुकबिल खानी को उससे युद्ध करने के लिए भेजा। मध्याह्न से लेकर सायकाल तक युद्ध होता रहा। अन्त में दोनों पक्षो ने वापस होकर एक दूसरे के बराबर पडाव किया। दूसरे दिन १७ जमादि उल-आखिर ८३० हि० (२५ अप्रैल १४२७ ई०) को सुल्तान शर्की प्रस्थान करके जौनपुर की ओर चल दिया। सुल्तान मुबारक शाह हस्तकान्त[6] के मार्ग से ग्वालियर पहुचा।

१ मैनपुरी जिले में, मैनपुरी से ६½ मील पर पूर्व की ओर।
२ विद्रोहियों के शरण का स्थान।
३ अलीगढ से १६ मील पर।
४ 'आबे सियाह' कुछ पोथियों में 'आबे ब्याह' है।
५ एटा जिले में।
६ अन्य स्थानों पर यह शब्द 'हथीकात' छपा है।

मुहम्मद खा औहदी का क्षमा-याचना करना

उसने प्राचीन नियमानुसार ग्वालियर के राय से खराज लेकर व्याना के मार्ग से प्रस्थान किया। मुहम्मद खा औहदी ने यद्यपि बडा प्रयत्न किया किन्तु सफलता प्राप्त न हो सकी। सुल्तान इबराहीम शर्की की सहायता से भी निराश होकर उसने क्षमा-याचना कर ली और मुबारक शाह से मिल गया।

(२७९) सुल्तान ने उसके अपराधो को क्षमा कर दिया। २० रजब ८३० हि० (१७ मई १४२७ ई०) को मुहम्मद खा किले से निकल कर मेवात की ओर चल दिया और सुल्तान महमूद हसन को किले की रक्षा तथा उस विलायत[1] पर अधिकार जमाने का आदेश देकर लौट आया और ११ शाबान ८३१ हि० (२६ मई १४२८ ई०) को देहली पहुचा।

मेवात की व्यवस्था

शव्वाल ८३१ हि० (अगस्त-सितम्बर १४२८ ई०) म सुल्तान ने मलिक कद्दू मेवाती को सुल्तान इबराहीम शर्की का साथ देने के कारण बन्दी बना कर हत्या करा दी और मलिक सरवर को मेवात पर अधिकार जमाने के लिए भेजा। उस विलायत[1] के अधिकाश लोगो ने अपने निवासस्थानो को नष्ट कर दिया और पहाडियो में प्रविष्ट हो गये। मलिक कद्दू का भाई जलाल खा, अहमद खा, मलिक फखरुद्दीन तथा उसके समस्त सम्बन्धी अन्दरून नामक किले के भीतर एकत्र हुए। मलिक सरवर खराज लेकर शहर की ओर लौट गया।

जसरथ का आक्रमण

ज़ीकाद ८३१ हि० (सितम्बर-अक्तूबर १४२८ ई०) में सूचना प्राप्त हुई कि "जसरत बिन शेखा खोखर ने कलानोर को घेर लिया और लाहौर का हाकिम मलिक सिकन्दर, जो उसके विरुद्ध आक्रमण करने गया था, पराजित होकर लाहौर लौट गया। जसरत ने ब्याह[2] नदी पार करके जालन्धर के किले की विजय हेतु प्रस्थान किया। उस पर अधिकार न प्राप्त कर सकने के कारण उसने आसपास के स्थानो पर छापा मारा और वहा के लोगो को बन्दी बनाकर पुन कलानोर की ओर चल दिया।" सुल्तान मुबारक शाह ने सामाना के हाकिम ज़ीरक खा तथा सरहिन्द के अमीर इस्लाम खा को आदेश दिया कि वे मलिक सिकन्दर की सहायता करें। उनके पहुचने के पूर्व ही मलिक सिकन्दर, राय गालिब कलानोरी तथा उसके सहायको को अपने साथ लेकर ब्याह नदी पर पहुचा। जसरथ ने मुकाबला किया किन्तु पराजित हुआ और तहीका[3] की ओर चल दिया। जालन्धर के आसपास से लूट की धन-सपत्ति में जो कुछ भी प्राप्त हुआ था, वह मलिक सिकन्दर की सेना के अधिकार में आ गया।

सुल्तान का मेवात की ओर प्रस्थान

मुहर्रम ८३२ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १४२८ ई०) में मलिक महमूद हसन ब्याना के विद्रोह को जिसे मुहम्मद खा औहदी ने प्रारम्भ किया था शान्त करके देहली पहुचा। तत्पश्चात् सुल्तान मुबारक

१ प्रदेश।
२ ब्यास।
३ हस्तलिखित पोथियों में इस शब्द को विभिन्न रूप से लिखा गया है. तहबका, तहोका, बतहका बतक तथा भक्कर जिन्हें थबका, थीका, बथका इत्यादि भी पढा जा सकता है।

शाह ने मेवात के पर्वत की ओर प्रस्थान किया और महदुराई पहुचा और वहा पर कुछ दिन पडाव किया। जलाल खा मेवाती तथा समस्त मेवातियो ने विवश होकर, मालगुजारी अदा करना स्वीकार कर लिया। (२८०) तत्पश्चात् उन्होंने आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। सुल्तान शव्वाल ८३२ हि० (जुलाई-अगस्त १४२८ ई०) में देहली वापस आया। इसी बीच में मुल्तान के हाकिम मलिक रजब नादिरा की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुए। सुल्तान ने मलिक महमूद हसन को एतमादुलमुल्क की उपाधि देकर मुल्तान भेज दिया।

ग्वालियर पर आक्रमण

८३३ हि० (१४२९-३० ई०) में सुल्तान ने ग्वालियर पर चढाई की और व्याना के मार्ग से ग्वालियर पहुचा। वहा के विद्रोह को शात करके वह हस्नकान्त गया। हस्नकान्त का राय पराजित हो कर पर्वतो मे प्रविष्ट हो गया। सुल्तान ने उसकी विलायत[१] को विध्वस करके वहा के अत्यधिक लोगो को बन्दी बना लिया और उन्हें रापरी[२] लाया। उस विलायत को हुसेन खा[३] के पुत्र से लेकर मलिक हमजा को दे दिया। रजब ८३३ हि० (मार्च-अप्रैल १४३० ई०) में वह लौट गया। मार्ग में सैयिद सालिम की मृत्यु हो गई। उसके ज्येष्ठ पुत्र को सालिम खा को और दूसरे पुत्र को शुजाउलमुल्क की उपाधि प्रदान की गई। सैयिद सालिम ३० वर्ष तक खिज्र खा की सेवा मे प्रतिष्ठित अमीरो की श्रेणी में सम्मिलित रहा। वर्षों तक वह तवरहिन्दा में खजाना तथा किलेदारी[४] की सामग्री एकत्र करता रहा था।

फ़ौलाद का विद्रोह

शव्वाल ८३३ हि० (जून-जुलाई १४३० ई०) मे फौलाद[५] तुर्क बच्चा तवरहिन्दा के क़िले में प्रविष्ट हो गया और विरोध की पताका बुलन्द कर दी। मुबारक शाह ने सैयिद सालिम के पुत्रो को बन्दी बनाकर राय हनू[६] भट्टी को फौलाद के प्रोत्साहन तथा सैयिद सालिम की धन-सपत्ति पर अधिकार जमाने के लिए तवरहिन्दा भेजा। जब वह तवरहिन्दा के निकट पहुचा तो फौलाद ने सधि की वार्त्ता प्रारम्भ करके उन्हें असावधान कर दिया। दूसरे दिन अचानक किले से निकल कर उनकी सेना पर रात्रि में छापा मारा। मलिक यूसुफ तथा राय हन्नू जिन्हें उसके विश्वासघात की सूचना न थी, पराजित हुए और सरसुती की ओर चल दिये। उनकी सेना तथा सपत्ति फौलाद के अधिकार मे आ गई और इस कारण उसकी शक्ति तथा प्रभुत्व में वृद्धि हो गई। सुल्तान ने यह सूचना पाकर तवरहिन्दा की ओर चढाई की। अमीर तथा सैनिक प्रत्येक दिशा में उसकी सेना में मिल गये। जमीदार लोग भी उसकी सेवा में उपस्थित (२८१) हुए। क्योकि फौलाद वडा शक्तिशाली था अत' उसने तवरहिन्दा का किला वन्द कर लिया। सुल्तान मुबारक शाह ने मार्ग से जीरक खा, मलिक कालू, इस्लाम खा तथा कमाल खा को तवरहिन्दा के अवरोध हेतु भेजा। मुल्तान के हाकिम एमादुलमुल्क को भी फौलाद के विद्रोह को शान्त करने के लिए

१ राज्य।
२ मूल पुस्तक तथा हस्तलिखित पोथियों में 'रावरी' है।
३ बदायूनी के अनुसार 'हसन खां'।
४ किले की रक्षा।
५ अन्य स्थानों पर यह शब्द 'पौलाद' भी छपा है।
६ अन्य स्थानों पर यह शब्द 'राय हीनू' भी छपा है।

बुलवाया गया। जिलहिज्जा ८३३ हि० (अगस्त-सितम्बर १४३० ई०) में एमादुलमुल्क सरसुती पहुचा और सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुआ। क्योंकि फौलाद को एमादुलमुल्क के वचन पर विश्वास था अत उसको फौलाद के प्रोत्साहन हेतु तबरहिन्दा भेजा गया। फौलाद ने इधर-उधर की बातचीत और कहानिया छेड दीं और विद्रोह पर डटा रहा। एमादुलमुल्क असफल होकर मुबारक शाह की सेवा में लौट गया।

शेख अली का फौलाद की सहायतार्थ पहुँचना

सुल्तान सफर ८३४ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १४३० ई०) में एमादुलमुल्क को मुल्तान जाने की आज्ञा देकर स्वय देहली लौट गया और इस्लाम खा, कमाल खा तथा राय फीरोज मईन को तबरहिन्दा को घेरने के लिए नियुक्त कर दिया। एमादुलमुल्क ने तबरहिन्दा में पहुच कर अमीरों द्वारा किले का अवरोध प्रारम्भ करा दिया और स्वय मुल्तान पहुचा। फौलाद ६ मास तक युद्ध करता रहा। उसने अपने विश्वासपात्रों के हाथ शेख अली बेग के पास काबुल में धन प्रेषित करके सहायता की याचना की। शेख अली जमादि-उल-अव्वल ८३४ हि० (जनवरी-फरवरी १४३१ ई०) में तबरहिन्दा की ओर चल खडा हुआ। जब वह तबरहिन्दा के समीप १० कोस पर पहुच गया तो इस्लाम खा, कमाल खा तथा समस्त अमीर अवरोध त्याग कर अपने-अपने स्थान को चले गये।

शेख अली का उत्पात

फौलाद ने किले के बाहर निकल कर शेख अली से भेंट की और २ लाख तन्के जो उसने देना स्वीकार किये थे, प्रदान किये। शेख अली फौलाद के परिवार को अपने साथ लेकर वापस चला गया और जालन्धर की विलायत[1] की प्रजा को बन्दी बनाकर रजब ८३४ हि० (मार्च-अप्रैल १४३१ ई०) में लाहौर पहुचा। मलिक सिकन्दर ने उसे जो कुछ वह प्रतिवर्ष दिया करता था अदा करके लौटा दिया। शेख अली वहा से तिलवारा[2] पहुँचा और उसके विनाश का प्रयत्न करने लगा। एमादुलमुल्क शेख अली को पराजित करने के लिए तलुम्बा[3] कस्बे में पहुँचा। शेख अली युद्ध की शक्ति न देख कर खतीबपुर की ओर चला गया। इसी बीच में शाही आदेश प्राप्त हुआ कि एमादुलमुल्क तलुम्बा को छोड कर मुल्तान की ओर चला जाय। २४ शाबान ८३४ हि० (७ मई १४३१ ई०) को एमादुलमुल्क ने मुल्तान की ओर कूच (२८२) किया। शेख अली अभिमानी हो चुका था। उसने खतीबपुर के निकट रावी नदी पार की और झेलम नदी के किनारे के परगना को जो पजाब के नाम से प्रसिद्ध है नष्ट-भ्रष्ट करके मुल्तान की ओर बढा। जब वह मुल्तान से १० कोस पर पहुच गया, तो एमादुलमुल्क सुल्तान शाह लोदी को, जो मलिक बहलोल लोदी का चाचा था, उससे युद्ध करने के लिए भेजा गया। उसने मार्ग में शेख अली से युद्ध किया किन्तु लडाई में मारा गया। उसकी सेना में से कुछ लोगों की हत्या कर दी गई और कुछ मुल्तान भाग गये। ३ रमजान ८३४ हि० (१५ मई १४३१ ई०) को शेख अली ने खैराबाद में जो मुल्तान के निकट है पडाव किया। ४ रमजान ८३४ हि० (१६ मई १४३१ ई०) को उसने किले के द्वार पर युद्ध किया। एमादुलमुल्क ने शहर के पदातियों को इस आशय से बाहर भेज दिया कि वे शेख अली की सेना को बातों में उलझाये रक्खें। उस दिन शेख अली कोई सफलता न पाकर अपनी सेना के शिविर को लौट गया।

१ प्रान्त।
२ सम्भवत तलहर, कश्मीर के पर्वतीय प्रदेश में।
३ रावी के बायें तट पर, मुल्तान से ५२ मील उत्तर-पूर्व में।

शुक्रवार २७ रमज़ान (८ जून १४३१ ई०) को शेख अली ने पुन युद्ध की पताका बुलन्द करके किले की ओर प्रस्थान किया और बहुत से लोग मारे गये। शेख अली ने लौट कर अपनी सेना के शिविर मे पडाव किया। इस प्रकार बहुत समय तक नित्यप्रति युद्ध होता रहा।

शेख़ अली की पराजय तथा काबुल की ओर पलायन

सुल्तान मुबारक शाह ने फतह खा बिन जफर खा गुजराती को प्रसिद्ध अमीरो उदाहरणार्थ जीरक खा, मलिक कालू, शहनये फील[1], इस्लाम खा, मलिक यूसुफ कमाल खा तथा राय हनू भट्टी को एमादुलमुल्क की सहायतार्थ भेजा। २६ शव्वाल ८३४ हि० (७ जुलाई १४३१ ई०) को अमीर लोग मुल्तान के निकट पहुचे और दूसरे दिन शेख अली से युद्ध करके विजय प्राप्त कर ली। शेख अली मुकाबला न करके उस गढ के भीतर जो उसने अपनी सेना के चारो ओर तैयार कर लिया था प्रविष्ट हो गया। वह वहा भी न रुक सका और उसने झेलम नदी को पार किया और भाग खडा हुआ। उसकी सेना के अधिकाश लोग नदी में डूब गये, कुछ मारे गये और कुछ बन्दी बना लिये गये। शेख अली थोडे से सहायको सहित शोर कस्बे को चला गया। उसके घोडे, ऊट, अस्त्र-शस्त्र तथा समस्त धन-सपत्ति नष्ट हो गई। एमादुलमुल्क ने समस्त अमीरो सहित शोर कस्बे तक उसका पीछा किया। शेख अली के भतीजे मीर (२८३) मुजफ्फर ने वहा गढबन्दी कर ली। शेख अली ने थोडे से सहायको सहित काबुल की ओर प्रस्थान किया। जो अमीर एमादुलमुल्क की सहायतार्थ आये थे, वे आदेशानुसार देहली की ओर लौट गये। मुबारक शाह ने मुल्तान को एमादुलमुल्क से लेकर खैरुद्दीन खानी को पदान कर दिया।

शेख़ा खोखर का विद्रोह

इस समय शेखा खोखर ने अवसर पाकर तथा अपनी शक्ति बढा कर विद्रोह प्रारम्भ कर दिया। *मलिक सिकन्दर तुहफा ने उसके विद्रोह को शात करने के लिए जालन्धर की ओर प्रस्थान किया।* शेखा सेना लेकर तेहकर[2] पर्वत से निकला और झेलम, रावी तथा ब्यास नदियो को पार करके जालन्धर के निकट पहुच गया और मईन नदी के तट पर पडाव किया। मलिक सिकन्दर को असावधान करके उसने उस पर आक्रमण किया। मलिक सिकन्दर पराजित होकर बन्दी बना लिया गया। शेखा ने पूर्ण तैयारी सहित लाहौर पहुच कर उसे घेर लिया। मलिक सिकन्दर का नायब सैयिद नज्मुद्दीन तथा उसका दास मलिक खुशखबर क़िले में घिर गये, और नित्यप्रति युद्ध करने लगे।

शेख़ अली का आक्रमण

इसी बीच में शेख अली ने पुन काबुल से पहुच कर मुल्तान के निकट के *स्थानो पर आक्रमण* किया और खतीबपुर तथा झेलम नदी के किनारे के बहुत से ग्रामो के निवासियो को बन्दी बना लिया। १७ रबी-उल-अव्वल ८३५ हि० (२३ नवम्बर १४३१ ई०) को तलुम्बा कस्बे में पहुचा और वहा के निवासियो को वचन देकर, प्रतिष्ठित लोगो को बन्दी बना लिया तथा किले पर अधिकार जमा लिया। कुछ मुसलमानो की हत्या कर दी और कुछ को मुक्त कर दिया। वहा के लोगो की बडी ही दुर्दशा हो गई।

१ देखिये पृ० १५ नोट न० ७।

२ कुछ पोथियों के अनुसार 'सकर'।

फौलाद तुर्क बच्चे का विद्रोह

उन्ही दिनो में फौलाद तुर्क बच्चे ने तबरहिन्दा से सेना एकत्र करके राय फीरोज़ की विलायत पर आक्रमण कर दिया। राय फीरोज़ युद्ध में मारा गया।

सुल्तान मुबारक शाह का लाहौर तथा मुल्तान की ओर प्रस्थान

सुल्तान मुबारक शाह ने उपर्युक्त घटनाओ को सुनकर, जमादि-उल-अव्वल ८३५ हि० (जनवरी-फरवरी १४३२ ई०) में लाहौर तथा मुल्तान की ओर प्रस्थान किया। मलिक सरवर को अग्रिम भाग का सेनापति बनाकर भेजा। जब मलिक सरवर सामाना पहुचा तो शेखा खोखर किले का घेरा छोड कर तक्र[1] पर्वत की ओर चल दिया और मलिक सिकन्दर को भी अपने साथ ले गया। शेख अली सुल्तान मुबारक शाह की सेना के भय से बिलौत[2] चला गया। सुल्तान ने लाहौर की विलायत मलिकुश्शर्क (२८४) एमादुलमुल्क से लेकर नुसरत खा गुर्ग अन्दाज़ को प्रदान कर दी। मलिक सरवर ने मलिकुश्शर्क के परिवार को लाहौर के किले से देहली भेज दिया।

जिलहिज्जा ८३५ हि० (जुलाई-अगस्त १४३२ ई०) मे शेखा पुन एक बहुत बडी सेना लेकर पर्वत से निकला और कुछ परगनो को हानि पहुचा कर पर्वत मे प्रविष्ट हो गया। इस समय सुल्तान मुबारक शाह यमुना नदी के तट पर पानीपत क़स्बे के निकट अपने शिविर लगाये प्रतीक्षा कर रहा था। रमज़ान ८३५ हि० (मई १४३२ ई०) में एमादुलमुल्क को एक सुसज्जित सेना देकर बयाना तथा ग्वालियर के जमीदारो को विजय करने के लिए भेजा और स्वय देहली लौट आया।

सुल्तान का सामाना की ओर प्रस्थान

मुहर्रम ८३६ हि० (अगस्त-सितम्बर १४३२ ई०) में उसने (सुल्तान ने) सामाना की विलायत के विद्रोह को शात करने के लिए सामाना की ओर प्रस्थान किया। मलिक सरवर को फौलाद तुर्क बच्चे के विरुद्ध भेजा। फौलाद किले में बन्द होकर युद्ध करने लगा और मलिक सरवर जीरक खा तथा इस्लाम खा को अत्यधिक सेना सहित तबरहिन्दा के किले के निकट छोड कर स्वय सुल्तान की सेवा मे पहुच गया। सुल्तान ने उस ओर प्रस्थान करने का विचार त्याग कर लाहौर तथा जालन्धर को नुसरत खा से लेकर, मलिक अल्हदाद लोदी को दे दिया। जब मलिक अलहदाद जालन्धर की विलायत में पहुचा, तो शेखा ने व्याह नदी पार करके युद्ध किया। मलिक अलहदाद पराजित होकर कोतही बजवारा पर्वत की ओर चल दिया। शेखा के उपद्रव को शक्ति प्राप्त होने लगी।

सुल्तान का मेवात पर आक्रमण

सुल्तान ने रबी-उल-अव्वल ८३६ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १४३२ ई०) मे मेवात की ओर प्रस्थान किया। जब वह नावर[3] कस्बे में पहुचा, तो जलाल खा मेवाती अत्यधिक सेना सहित अन्दरन नामक किले के भीतर प्रविष्ट हो गया। दूसरे दिन जलाल खा भाग कर किले के बाहर चला गया और किले का अनाज तथा धन सपत्ति सुल्तान को प्राप्त हो गई। सुल्तान वहा से प्रस्थान करके तजारा पहुचा और

१ इससे पूर्व इसे 'तेहकर' लिखा गया है।
२ यह शब्द विभिन्न रूप से लिखा गया है : बारतूत, मालूत तथा मारतूत।
३ यह शब्द विभिन्न रूप से मिलता है : नावर, वावर, बावर्द, नावर्द।

यह कुछ दिन तक सेना एकत्र करने के लिए प्रतीक्षा करता रहा। सयोगवश शुक्रवार ९ रजब ८३७ हि० (१९ फरवरी १४३४ ई०) को सुल्तान मुबारक शाह मुबारकाबाद के निर्माण का प्रबन्ध देखने के लिए उस ओर गया। उसके विश्वासपात्रों तथा विशेष व्यक्तियों के अतिरिक्त कोई भी उसके साथ न था। सरवरुलमुल्क ने जोकि समय तथा अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था फिदाइयों[1] के एक समूह को जो उसके सहायक थे सकेत कर दिया और वे तलवार लेकर सुल्तान मुबारक शाह पर टूट पडे और उसकी हत्या कर दी। सुल्तान मुबारक शाह ने १३ वर्ष ३ मास तथा १६ दिन तक राज्य किया।

मुहम्मद शाह बिन मुबारक शाह बिन खिज्र खाँ

मुहम्मद शाह के पिता का नाम

मुहम्मद शाह, शाहजादा फरीद बिन खिज्र खा का पुत्र था। क्योंकि मुबारक शाह उसे अपना पुत्र कहा करता था, अत 'तारीखे मुबारकशाही' के सकलनकर्ता ने जो उसका समकालीन था उसे मुबारक शाह का पुत्र लिखा है। 'तारीखे बहादुरशाही' के लेखक ने उसे शाहजादा फरीद का पुत्र लिखा है। क्योंकि अन्य इतिहासों में भी उसे मुहम्मद शाह का पुत्र बताया गया है अत इस पुस्तक म भी उसी की पुनरावृत्ति की गई है।

नई उपाधियाँ

(२८८) जब शुक्रवार को दिन के अन्त में सुल्तान मुहम्मद शाह की हत्या हो गई तो सुल्तान मुहम्मद शाह अमीरों तथा राज्य के कुछ अधिकारियों की सहमति से सिंहासनारूढ हुआ। यद्यपि सरवरुलमुल्क ने वाह्य रूप से बैअत[2] कर ली थी किन्तु राजसी चिह्न उदाहरणार्थ राजकोष, हाथी तथा शस्त्रागार उसी के अधिकार में थे। सरवरुलमुल्क को खाने जहा तथा मीराने सद्र को मुईनुलमुल्क की उपाधि प्रदान की। मलिकुश्शर्क कमालुद्दीन ने इस बात का प्रयत्न आरम्भ कर दिया कि सरवरुलमुल्क मीराने सद्र तथा समस्त हरामखोरों से मुहम्मद शाह की हत्या का बदला ले।

सरवरुलमुल्क द्वारा शासन प्रबन्ध

मुहम्मद शाह के सिंहासनारोहण के दूसरे दिन सरवरुलमुल्क ने मुहम्मद शाह के कुछ दासों को जिनमें से प्रत्येक बडी-बडी सेनाओं का स्वामी था, बैअत के बहाने से बुलवाया। कुछ को अर्थात् कर्मचन्द मलिक मुकबिल तथा मलिक फतूह को बन्दी बना लिया और मुबारक शाह के दासों के विनाश का प्रयत्न करने लगा। आसपास के परगनों पर जोकि चुने हुए तथा बडे ही उत्तम थे स्वय अधिकार जमा लिया। थोडे से अन्य अमीरों को बाट दिये। ब्याना, अमरोहा नारनौल तथा कुहराम के परगने एव दोआब के मध्य के कुछ परगने सिद्धपाल, सुधारन तथा उनके सबन्धियों को प्रदान कर दिये। उसने अपने दास अब् शह को कई वर्षों का कर वसूल करने के लिए ब्याना भेजा। वह १२ रजब ८३७ हि० (२२ फरवरी १४३४ ई०) को ब्याना पहुचा और किले पर अधिकार जमाने का प्रयत्न करने लगा। यूसुफ खा औहदी

१ हसन बिन सब्बाह इस्माईली के साथी उसके सकेत पर बड़े से बड़ा कार्य प्राण को हथेली पर रखकर कर डालते थे। उसकी मृत्यु ११२४ ई० में हुई। उसके साथी 'फिदाई' कहलाते थे।

२ अधीनता की शपथ लेना।

सूचना प्राप्त करके हिन्दौन[1] से व्याना पहुचा और अबू शह से युद्ध करके उसकी हत्या कर दी और उसके परिवार तथा पुत्रों को वन्दी बना लिया। जब सरवरुलमुल्क की नमकहरामी का सभी लोगो को पता चल गया तो अधिकाश अमीर, जो खिज्र खा तथा सुल्तान मुबारक शाह के नमक से पले हुए थे, उसका अन्त करने की योजनायें बनाने लगे। सरवरुलमुल्क भी उनको वन्दी बनाने की योजना बना रहा था।

सम्भल तथा बदायूँ इत्यादि मे विद्रोह

इसी बीच में सूचना प्राप्त हुई कि अल्हदाद काका लोदी सम्भल तथा आहार के हाकिम, बदायूँ के हाकिम मलिक चमन, अमीर अली गुजराती तथा अमीर कीक[2] तुर्क बच्चे ने विरोध की पताका बुलन्द कर रखी है। सरवरुलमुल्क ने कमालुद्दीन, सैयिद खान तथा सुधारन वागू के लघु पुत्र यूसुफ खा को (२८९) उनके उपद्रव को शात करने के लिए भेजा। रमज़ान ८३७ हि० (अप्रैल मई १४३४ ई०) में कमालुद्दीन यमुना तट पर उतरा और वहा से बरन कस्बे में पहुचा। सरवरुलमुल्क के पुत्र तथा सुधारन से मुबारक शाह की हत्या का बदला लेने के लिए बरन में ठहर गया। मलिक अलहदाद, कमालुद्दीन के विषय में समझता था कि वह हृदय से उसका मित्र है। वह आहार के आगे न बढा। सरवरुलमुल्क ने कमालुद्दीन के विश्वासघात के विषय मे सूचना पाकर अपने दास मलिक होशियार को सहायता के बहाने कमालुद्दीन के पास इस आशय से भेजा कि उसके विश्वासघात से परिचित होकर वह यूसुफ तथा सुधारन की रक्षा करता रहे। इसी बीच में मलिक चमन आहार से आकर मलिक अलहदाद से मिल गया। मलिक यूसुफ, सुधारन तथा होशियार को कमालुद्दीन के विश्वासघात की शका थी। उनकी इस शका में और भी वृद्धि हो गई। वे सेना से पृथक् होकर देहली पहुँचे। रमजान ८३७ हि० (मई १४३४ ई०) के अन्त में मलिक अलहदाद, मलिक चमन तथा वे अमीर जो कमालुद्दीन से सहमत थे सगठित हो गये। कमालुद्दीन ने बहुत बडी सेना लेकर देहली पर चढाई की। सरवरुलमुल्क देहली के किले में बन्द होकर ३ मास तक युद्ध करता रहा।

सरवरुलमुल्क की हत्या

इसी बीच में सामाना के हाकिम जीरक खा की मृत्यु का समाचार प्राप्त हुआ। उसकी जागीर उसके पुत्र मुहम्मद खा को प्रदान कर दी गई। मुहम्मद शाह यद्यपि वाह्य रूप से किले वालो का साथ दे रहा था किन्तु वह अपने पिता की हत्या के प्रतिकार के लिए उचित अवसर तथा समय की प्रतीक्षा कर रहा था। सरवरुलमुल्क इस बात की सूचना पाकर मुहम्मद शाह की घात में रहने लगा। सयोगवश ८ मुहर्रम ८३८ हि० (१४ अगस्त १४३४ ई०) को सरवरुलमुल्क तथा मीराने सद्र के पुत्र विश्वासघात एव छल से वशीभूत होकर तलवारें लिए मुहम्मद शाह के सरापर्दे[3] में प्रविष्ट हो गए। मुहम्मद शाह सर्वदा उनके भय के कारण अपने हितैषियो की बहुत बडी सख्या तैयार रखता था। उन्होने तत्काल सरवरुलमुल्क की हत्या कर दी और मीराने सद्र के पुत्रों को बन्दी बनाकर दरबार के समक्ष उन्हें मरवा डाला।

१ हिन्दौन अथवा हिन्दवान, व्याना से २० मील पर दक्षिण में।
२ यह शब्द कई प्रकार से लिखा गया है : कीक, क्वीक, कक इत्यादि।
३ सरापर्दा :—यहा महल से तात्पर्य है।

(२९०) सिद्धपाल तथा अन्य हरामखोर किले में बन्द होकर युद्ध की तैयारी करने लगे। मुहम्मद शाह, कमालुद्दीन को शहर (देहली) लाया। सिद्धपाल ने अपने घर में आग लगा दी और अपनी स्त्री तथा बालकों को अग्नि का भोजन बना कर अपने प्राण त्याग दिये। मुहम्मद शाह के आदेशानुसार सुधारन कांगू तथा कहतरयानी[1] की, जो बन्दी बना लिया गया था, मुहम्मद शाह के मक़बरे के निकट हत्या कर दी गई। मलिक होशियार तथा मुबारक कोतवाल की लाल द्वार के समक्ष हत्या कर दी गई।

नये पद

दूसरे दिन कमालुद्दीन ने समस्त अमीरों सहित, जो किले के बाहर थे, मुहम्मद शाह से पुन बैअत की और सर्वसाधारण की सहमति से उसे सिंहासनारूढ़ किया गया। कमालुद्दीन को विज़ारत का पद प्रदान किया गया और उसकी उपाधि कमाल खा निश्चित हुई। मलिक चमन[2] को ग़ाज़ियुल्मुल्क की उपाधि दी गई और पूर्व की भाति अमरोहा तथा बदायू की विलायत उसके अधिकार में रहने दी गईं।

मलिक अलहदाद लोदी ने कोई भी उपाधि स्वीकार न की और अपने भाई[3] को दरिया खा की उपाधि दिलवाई। मलिक खबीरराज[4] मुबारकखानी को इकबाल खा की उपाधि दी गई और पूर्व की भाति हिसार फीरोज़ा की विलायत उसके पास रहने दी गई। समस्त अमीरो को इनाम प्रदान हुआ और उनके वेतन में वृद्धि की गई। सैयिद सालिम के ज्येष्ठ पुत्र को मजलिसे आली सैयिद खा की उपाधि, लघु पुत्र को शुजाउलमुल्क और मलिक बुद्ध को अलाउलमुल्क की उपाधि दी गई। मलिक रुकनुद्दीन को नसीरुलमुल्क की उपाधि प्रदान हुई और मलिकुत्तुज्जार हाजी को देहली का शहना नियुक्त किया गया।

सुल्तान द्वारा मुल्तान तथा सामाना की यात्रा

रबी-उल-अव्वल ८३८ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १४३४ ई०) में मुहम्मद शाह ने मुल्तान की ओर प्रस्थान किया। मुबारकपुर के पडाव पर अधिकाश अमीर उदाहरणार्थ एमादुलमुल्क इस्लाम खा, मुहम्मद खा बिन नुसरत खा, यूसुफ खा औहदी, इकबाल खा तथा समस्त शाही सेवक सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुए। मुहम्मद शाह मुल्तान के शेख के मकबरो के दर्शनार्थ वहा गया और खानखाना को मुल्तान में छोड कर ८३८ हि० (१४३४ ३५ ई०) में देहली लौट गया।

८४० हि० (१४३६-३७ ई०) में उसने सामाना की ओर प्रस्थान किया और शखा खोखर के विरुद्ध एक सेना भेज कर उसकी विलायत को नष्ट करने के उपरान्त देहली पहुच गया।

राज्य में विद्रोह

(२९१) ८४१ हि० में यह सूचना प्राप्त हुई कि लगाह के सहायको के विद्रोह के कारण मुल्तान में अशाति फैली हुई है। यह भी सूचना प्राप्त हुई कि "सुल्तान इबराहीम शर्की ने कुछ परगनो पर अपना अधिकार जमा लिया है। ग्वालियर के राय तथा अन्य रायो ने मालगुजारी देना बन्द कर दी है।" मुहम्मद

१ कुछ पोथियों के अनुसार 'खत्री'।
२ अन्य स्थानों पर इसे जमन, जेमन तथा जम्मन भी लिखा गया है।
३ केवल एक हस्तलिखित पोथी के अनुसार 'छोटा भाई'।
४ यह नाम विभिन्न रूप से लिखा है : खरित राज, खुनराज, खुबरान, खुतराज।

शाह को इससे किसी प्रकार की लज्जा न आई और उसने असावधानी तथा भोग-विलास में अपना समय व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया।

मालवा के सुल्तान का आक्रमण

कुछ मेवाती अमीरों ने मालवा के बादशाह सुल्तान महमूद खलजी को आमंत्रित किया। ८४४ हि० (१४४०-४१ ई०) में सुल्तान महमूद देहली पहुंचा। मुहम्मद शाह ने सेनायें तैयार करके अपने पुत्र को युद्ध के लिए भेजा। मलिक बहलोल लोदी को अग्रिम दल की सेना प्रदान की। सुल्तान महमूद खलजी ने अपने दोनों पुत्रों—सुल्तान गयासुद्दीन तथा कदर खां—को युद्ध के लिए भेजा। प्रातःकाल से सायंकाल तक युद्ध होता रहा। रात्रि में दोनों दल अपने-अपने पड़ाव को वापस चले गये। दूसरे दिन मुहम्मद शाह ने संधि की वार्ता प्रारम्भ कर दी। इसी बीच में सुल्तान महमूद को सूचना प्राप्त हुई कि सुल्तान अहमद गुजराती मन्दू[1] की ओर आ रहा है। सुल्तान महमूद तत्काल संधि करके लौट गया। इस संधि से मुहम्मद शाह के विषय में लोगों की दृष्टि तथा हृदय में बड़े ही तुच्छ विचार उत्पन्न हो गये। जब सुल्तान महमूद ने प्रस्थान किया तो मलिक बहलोल लोदी ने उसका पीछा करके उसके शिविर के भारी सामान पर अपना अधिकार जमा लिया और लूट की धन-सम्पत्ति लेकर वापस आया। मलिक बहलोल की इस सेवा से मुहम्मद शाह बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने उसे शाही कृपाओं द्वारा सम्मानित किया और उसे अपना पुत्र कहने लगा।

बहलोल की महत्वाकांक्षायें

सुल्तान मुहम्मद शाह ने ८४५ हि० (१४४१-४२ ई०) में सामाना की ओर प्रस्थान किया और मलिक बहलोल को दीपालपुर तथा लाहौर की विलायत प्रदान कर दी और उसे जसरत खोखर से युद्ध करने के लिए भेज कर स्वयं देहली लौट गया। जसरत ने मलिक बहलोल से संधि कर ली और (२९२) उसे देहली की सल्तनत की सुखद आशायें दिलाईं। मलिक बहलोल के मस्तिष्क में सल्तनत का लोभ उत्पन्न हो गया और वह सेना एकत्र करने लगा तथा इधर-उधर से अफगानों को बुलाने लगा। वह इस बात का प्रयत्न करने लगा कि अत्यधिक लोग उसके सहायक हो जायं। आसपास के बहुत से परगनों तथा स्थानों को उसने अपने अधिकार में कर लिया और सुल्तान मुहम्मद शाह का विरोध प्रारम्भ कर दिया। उसने बड़े समारोह के साथ देहली पर आक्रमण किया और कुछ समय तक उसे घेरे रहा किन्तु बिना सफलता प्राप्त किये हुए ही लौट आया। मुहम्मद शाह के राज्य का कार्य नित्यप्रति शिथिल होने लगा और इस सीमा तक दुर्दशा हो गई कि देहली के २० कोस के क्षेत्र के अमीर भी विद्रोह करके स्वतन्त्र बनने लगे। ८४७ हि० (१४४३-४४ ई०) में सुल्तान मुहम्मद शाह की मृत्यु हो गई। उसने १० वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

सुल्तान अलाउद्दीन बिन मुहम्मद शाह बिन मुबारक शाह बिन खिज़्र खां

सुल्तान मुहम्मद शाह की मृत्यु के उपरान्त राज्य के अमीरों तथा प्रतिष्ठित लोगों ने उसके पुत्र को सुल्तान अलाउद्दीन की उपाधि देकर सिंहासनारूढ कर दिया। मलिक बहलोल तथा समस्त अमीरों

[1] मांडू।

ने उससे बैअत[1] कर ली। अल्प समय में यह स्पष्ट हो गया कि राज्य के कार्य में सुल्तान अलाउद्दीन अपने पिता से भी अधिक शिथिल तथा अयोग्य है। मलिक बहलोल की महत्वाकाक्षा और भी बढ गई।

सामाना पर सुल्तान की चढाई

(२९३) सुल्तान अलाउद्दीन ने ८५० हि० (१४४६-४७ ई०) में सामाना पर चढाई की। मार्ग में उसे पता चला कि जौनपुर का बादशाह देहली पर आक्रमण करने आ रहा है। सुल्तान शीघ्राति-शीघ्र लौट कर देहली पहुचा। हुसाम खा ने, जो वजीरे ममालिक तथा नायबे गैबत था, निवेदन किया कि शत्रु के पहुचने के झूठे समाचार पाते ही सुल्तान का लौट आना राज्य के लिए उचित न था। सुल्तान अलाउद्दीन इस बात से जो उसके स्वभाव के प्रतिकूल थी, दुखी तथा परेशान हुआ।

बदायूँ का राजधानी बनाया जाना

८५१ हि० (१४४७-४८ ई०) में उसने बदायू की ओर प्रस्थान किया और कुछ समय तक वहा ठहर कर देहली लौट आया। उसने यह प्रसिद्ध किया कि "मै बदायू से बडा प्रसन्न हुआ और मेरी इच्छा है कि मै सर्वदा वही निवास करू।" हुसाम खा ने निष्ठापूर्वक निवेदन किया कि "देहली को त्याग कर बदायू को राजधानी बनाना राज्य के लिए उचित नहीं।" सुल्तान उसकी इस बात से और भी अधिक रुष्ट हुआ और उसे पृथक् करके देहली में छोड दिया। उसने अपनी पत्नी के दो भाइयो में से एक को शहनये शहर[2] और दूसरे को अमीरे कोई[3] नियुक्त किया।

सुल्तान की पत्नी के भाइयो मे परस्पर शत्रुता

८५२ हि० (१४४८-४९ ई०) में उसने बदायू की ओर प्रस्थान किया और वही भोग-विलास मे ग्रस्त रहने लगा और थोडी सी विलायत से जो उसे पसन्द थी सतुष्ट हो गया। कुछ समय उपरान्त उसकी पत्नी के दोनो भाइयो में जो देहली में थे विरोध उत्पन्न हो गया और वे एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध करने लगे। उनमें से एक मारा गया। दूसरे दिन शहर के लोगो ने हुसाम खा के बहकाने पर दूसरे भाई की भी हत्या कर दी।

बहलोल का देहली पर अधिकार जमाना

इसी समय सुल्तान ने विश्वासघातियो की बातो पर विश्वास करके हमीद खा जो वजीरे ममालिक था, की हत्या का सकल्प कर लिया। वह भाग कर शहर (देहली) पहुचा और हुसाम खा से मिल कर उसने शहर पर अधिकार जमा लिया। मलिक बहलोल को उसने राज्य पर अधिकार जमाने के लिए (२९४) बुलवाया। इसका सविस्तार उल्लेख मलिक बहलोल के इतिहास में दिया गया है। सक्षेप म, मलिक बहलोल लोदी बहुत बडी सेना लेकर देहली पहुचा और उसने उस पर अधिकार जमा लिया। कुछ दिन उपरान्त उसने अपने हितैषियो का एक समूह देहली छोडकर दीपालपुर की ओर प्रस्थान किया और सेना एकत्र करने लगा। उसने सुल्तान अलाउद्दीन से निवेदन किया कि, "मै आपके प्रति निष्ठावान्

१ अधीनता की शपथ ले ली।
२ शहर का अधीक्षक अथवा कोतवाल।
३ देखिये पृ० ५१ तथा उसी पृष्ठ का नोट नं० २। इसे अमीरे कोही लिखा गया है।

होने के कारण आपके लिए प्रयत्नशील हू और अपने आपको सुल्तान का दास समझता हू।" सुल्तान अलाउद्दीन ने उत्तर भेजा कि, "क्योंकि मेरा पिता तुझे अपना पुत्र कहा करता था अत मुझे किसी बात की चिंता नही। मैं बदायू के एक परगने से सतुष्ट हू और राज्य तेरे लिए छोडता हू।"

मलिक बहलोल विजय तथा सौभाग्य के कारण एव बादशाही के वस्त्र अपने शरीर पर ठीक देख कर सफलतापूर्वक दीपालपुर से देहली पहुचा और राज-सिंहासन पर आरूढ हुआ। उसकी उपाधि *सुल्तान बहलोल* निश्चित हुई। *सुल्तान अलाउद्दीन के अमीरो में से जो लोग उसके साथ थे* उनके वेतन उसने उसी प्रकार रहने दिये। कुछ समय उपरान्त सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु हो गई और ससार सुल्तान बहलोल के अधीन हो गया। सुल्तान अलाउद्दीन ने ७ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

भाग ब

अफगान सुल्तानों के इतिहास

शेख रिज्कुल्लाह मुश्ताकी

(क) वाक़ेआते मुश्ताक़ी

ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद

(ख) तबक़ाते अकबरी

अब्दुल्लाह

(ग) तारीखे दाऊदी

अहमद यादगार

(घ) तारीखे शाही

मुहम्मद कबीर बिन शेख इस्माईल

(च) अफसानये शाहाने हिन्द

वाक़ेआते मुश्ताक़ी

[लेखक—शेख रिज्कुल्लाह मुश्ताकी]

(ब्रिटिश म्यूजियम मैनुस्क्रिप्ट, रियु, भाग २, पृ० ८०२ व)

(२) अल्लाहवाला का सेवक मुश्ताकी उर्फ रिज्कुल्लाह इस प्रकार निवेदन करता है कि जब मैं बाल्यावस्था से युवावस्था को प्राप्त हुआ तो अपना अधिकाश समय अपने समकालीन योग्य व्यक्तियों के साथ व्यतीत किया करता था और उनकी बातों से लाभान्वित हुआ करता था। मैंने उनसे कुछ विचित्र कहानिया तथा आश्चर्यजनक घटनायें सुनी और उनमें से कुछ स्वय अपनी आखों से देखी। जब उन योग्य व्यक्तियों का निधन हो गया तो उन लोगों के अभाव में शोक प्रकट करने के अतिरिक्त मेरे पास (३) कोई अन्य कार्य न रहा। मुझे किसी भी बात से कोई सतोष न प्राप्त होता था। मेरे लिए वह वियोग मृत्यु से कम दुखदायी न था। मेरे पास कुछ लोग कागज और दावात लाकर जिन घटनाओं का मैं उल्लेख किया करता था उन्हें लिख-लिख कर गोष्ठियों में ले जाया करते थे। एक दिन मुझसे मेरे एक मित्र ने आग्रह किया कि जो कुछ मैंने सुना है अथवा जिन घटनाओं का मुझे ज्ञान है उन्हें मैं लिख डालू ताकि अन्य लोगों को उससे लाभ हो। इस बात से प्रेरित होकर मैंने कुछ बातें, जो अनुभवी लोगों से सुनी थी अथवा जिनका अवलोकन मैंने स्वय किया था, एक पुस्तक के रूप में सकलित की और उसका नाम 'वाकेआते मुश्ताकी' रखा। आशा है कि इस प्रस्तावना तथा पुस्तक के लेखक के प्रति लोग शुभ कामनायें प्रकट किया करेंगे। इस ग्रन्थ में सुल्तान बहलोल लोदी के राज्य-काल से लेकर जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह गाजी (ईश्वर उसके राज्य को समृद्धि तथा उन्नति प्रदान करे) के राज्य-काल तक जो घटनायें घटी है, उनका उल्लेख इस आशय से किया जाता है कि उनकी स्मृति बनी रहे।

सुल्तान बहलोल की बादशाही

बहलोल की बाल्यावस्था

सुल्तान बहलोल अपनी बाल्यावस्था में प्रतिष्ठा प्राप्त करने तथा ईश्वर की एबादत का प्रयत्न किया करता था। वह अपने चाचा के घर रहता था। उसके चाचा का नाम इस्लाम खा था। वह एक दिन नमाज पढ रहा था, कि बहलोल ने खेलते खेलते-उसकी जानेमाज[1] पर पाव रख दिया। घर वालों[2] में से किसी ने उसे जबरदस्ती हटा कर कहा कि, 'हे बालक खेलने के लिए अन्य स्थान है, खान के मुसल्ले[3] पर तू पाव रखता है'। खान ने कहा कि "बच्चा है। यदि वह मेरे सिर पर भी पाव रखे तो भी उचित

१ वह चटाई अथवा कपड़ा जिसे बिछाकर नमाज पढ़ी जाती है।
२ 'ब' के अनुसार 'सेवकों'।
३ जानेमाज़

है"। लोगो को इस बात पर बडा आश्चर्य हुआ। उन्होने उससे इस विषय में पूछा तो उसने कहा कि "एक दिन उसे ऐसा सम्मान प्राप्त हो जायेगा जिससे मेरा वंश चमक उठेगा"।

घोडो का व्यापार तथा मजजूब से भेंट

जब वह युवावस्था को प्राप्त हुआ तो वह घोडों का व्यापार करने लगा। एक बार ३ व्यक्ति हिन्दुस्तान में घोडो के व्यापार के लिए गये थे। वे लौटते समय सामाना में ठहरे हुए थे। बहलोल[1] (४) फीरोज खा तथा कुतुब खा तीनों व्यक्ति एक सैयिद के दर्शनार्थ जो कि मजजूब[2] था पहुचे।[3] जैसे ही वे उसके पास बैठे, शेख ने कहा कि, "तुम लोगो मे से कौन देहली की बादशाही जिसे मैं २ हज़ार तन्के में बेचता हू लेगा?" बहलोल के पास एक हजार छ सौ तन्के थे। उसने कहा कि, "यदि आप कहे तो इन्हें प्रस्तुत करू"। शेख ने कहा, 'मुझे स्वीकार है। ले आ"। बहलोल उठ खडा हुआ और अपनी कमर से १६०० तन्के की थैली खोल कर उसके सामने रख दी। शेख ने कहा कि, "जा तू बादशाह होगा[4] और ये लोग तेरे सेवक होगे"। उन दोनो ने वहा से आने के उपरान्त पूछा कि, "तू ने यह क्या किया?" बहलोल ने कहा कि, "मैंने बडा अच्छा किया। इतने धन से मैं अपना समस्त जीवन व्यतीत नही कर सकता था। कुछ दिनो मे यह धन व्यय हो जाता। यदि वह पहुचा हुआ है और उसकी बात सत्य है तो मैं बादशाह हो जाऊगा अन्यथा जो धन मैंने व्यय किया वह इस कारण भी व्यर्थ न जायगा कि मैंने एक सैयिद की सेवा की। दोनो ही बातें मैंने अच्छी की"। उन लोगा ने बधाई दी।

घोडे बेचने के लिये देहली पहुँचना

सक्षेप में, वह बहुत समय तक घोडों का व्यापार करता रहा। एक बार बहलोल अपने चाचा इस्लाम खा के साथ राजधानी देहली मे खिज्र खा के पौत्र सुल्तान मुहम्मद की सेवा में घोडे बेचने पहुचा और उसके हाथ घोडे बेचे। उसे एक ऐसे परगने से अपना धन वसूल करने का आदेश दे दिया गया जिसने विद्रोह कर दिया था।[5] जब बहलोल के आदमी वहा पहुचे तो उन्होने उसे आकर इस बात की सूचना दी। उसने इस विषय में सुल्तान मुहम्मद को सूचना दी और यह निवेदन किया कि, "मैं अपने साथियों सहित जाता हू, जो कुछ मुझसे सभव हो सकेगा करूगा"। सुल्तान मुहम्मद ने आदेश दिया कि, "यदि तू उन विरोधियो को पराजित कर देगा तो वह परगना तुझे प्रदान कर दिया जायगा, और जो कुछ वहा से प्राप्त होगा वह तुझे प्राप्त हो जायगा"।[6] वे वहा पहुचे और उन्होने हत्याकाण्ड तथा लूट-मार द्वारा वहा के लोगो

१ 'ब' के अनुसार 'बिल्लो'।
२ वह व्यक्ति जो ईश्वर में इस प्रकार लीन हो चुका हो कि उसे किसी बात की कोई सुध बुध न रहे।
३ 'ब' के अनुसार 'सैयिद इब्न मजजूब के पास पहुँचे'।
४ 'ब' के अनुसार 'देहली का बादशाह होगा'।
५ 'ब' के अनुसार 'घोड़ों के मूल्य का धन ऐसे स्थान पर बरात किया गया जो कि मवास था। वहां के निवासी बड़े ही उद्दड तथा विद्रोही थे'। मवास की व्याख्या इससे पूर्व हो चुकी है। 'दस्तूरुल अलबाब फ़ी इल्मिल हिसाब' के अनुसार यदि दीवान को किसी व्यक्ति को कुछ अदा करना होता था तो उसे किसी आमिल अथवा ग्राम में बरात कर देते थे अथवा उस स्थान से धन वसूल करने का आदेश-पत्र दे देते थे और दीवान पर कोई उत्तरदायित्व न रहता था।
६ 'ब' के अनुसार 'यदि तू उस मवास को अपने अधीन करले तो मैं उसे तुझे प्रदान कर दूगा और जो कुछ लूट की धन-सम्पत्ति तेरे हाथ लगेगी वह भी तुझे मिल जायगी'।

को पराजित कर दिया और अपना धन वसूल कर लिया।[1] लूट द्वारा जो धन-सम्पत्ति उन्हें प्राप्त हुई उसे सुल्तान ने उसको प्रदान कर दिया और उसे अमीर नियुक्त कर दिया। उसे सम्मानित करके अन्य परगने भी प्रदान किये।[2] तदुपरान्त वह सैनिकों के समान जीवन व्यतीत करने लगा,[3] उसके सम्मान में नित्य प्रति वृद्धि होने लगी। समस्त राज्य में उसके समान कोई न था।[4]

मन्दू के बादशाह महमूद खलजी का देहली पर आक्रमण

(५) जब मन्दू के बादशाह सुल्तान महमूद खलजी ने देहली पर आक्रमण किया जो फतह खा तथा कुतुब खा ने अत्यधिक वीरता एव पौरुष प्रदर्शित किया। सुल्तान महमूद खलजी वापस चला गया।[5] फतह खा को खानेखाना की उपाधि प्रदान हुई। खानेखाना सहरिन्द में रहने लगा। इसी बीच में सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु हो गई और उसका पुत्र सुल्तान अलाउद्दीन सिंहासनारूढ़ हुआ। उसका राज्य नित्य प्रति शक्तिहीन होने लगा और वह हमीद खा को देहली के क़िले में छोड़ कर स्वय बदायू के किले में चला गया।[6]

बहलोल का देहली बुलाया जाना

हमीद खा ने दो व्यक्तियों को बादशाही का कार्य सौंपने के लिए बुलवाया—क़ियाम खा बाक़री तथा बिल्लू को। क़ियाम खा मार्ग ही में था कि बिल्लू देहली पहुच गया और कियाम खा मार्ग से लौट गया। वह हमीद खा की सेवा में उपस्थित हुआ। हमीद खा ने कहा कि, "हे बिल्लू तुझे राज्य मुबारक हो, मैं वज़ीर रहूगा"। उसने उत्तर दिया कि, "मैं सिपाही हू, शासन-प्रबन्ध के विषय में मैं कुछ नही जानता। आप बादशाह रहें और मैं सालारे लश्कर (सेनापति)। आप जिस कार्य के विषय में आदेश देंगे मैं उसे सम्पन्न करूँगा।' हमीद खा ने कहा कि, "यह कार्य मैंने अपने लिए नही किया है अपितु इसे इस्लाम के हित के लिए किया है। मुझे इस बात का विश्वास हो गया था कि इस्लाम शक्तिहीन हो चुका है। मुझे भय हुआ कि कहीं मुसलमानो पर कोई अन्य विपत्ति न आ जाय, कारण कि कहा गया है कि राज्य प्रभुत्वशालियों को प्राप्त होता है। मैंने तुम्हारे अतिरिक्त किसी को प्रभुत्वशाली न देखा, अत मैंने तुम्हें सूचना

१ 'ब' के अनुसार 'उन लोगों ने वहाँ पहुँच कर युद्ध करके विद्रोहियों को अपने अधीन कर लिया और लूट की धन सम्पत्ति तथा मवेशी इत्यादि जो कुछ उन्हें प्राप्त हुए उन्हें वे सुल्तान की सेवा में लाये'।

२ 'ब' के अनुसार 'मन्सब तथा परगना प्रदान किया'।

३ 'ब' के अनुसार 'उस तिथि से वे व्यापार छोड़ कर सैनिक जीवन व्यतीत करने लगे'।

४ 'अ' में यह भाग स्पष्ट नहा, 'ब' के अनुसार 'वह सरहिन्द तथा लुधियाना में समय व्यतीत करने लगा। चारों ओर से लोग उसकी सेवा में आकर एकत्र होने लगे। उसकी सेना में वृद्धि होने लगी। वह प्रत्येक वर्ष अपना यराक़ (अस्त्र शस्त्र) सुल्तान को दिखलाता था और इनाम द्वारा सम्मानित होता था। उसकी सेना इतनी अधिक हो गई कि अधिकांश विलायत (प्रान्त) उसके अधिकार में आ गये। उसी समय इस्लाम खाँ की मृत्यु हो गई। बिल्लू उसका उत्तराधिकारी हो गया। कुतुब खाँ वल्द इस्लाम खाँ उस समय सरहिन्द में था। संक्षेप में बिल्लू ने बड़े ही उचित कार्य तथा योग्य सेवायें प्रदर्शित कीं और फ़तह खाँ की उपाधि द्वारा सम्मानित हुआ'।

५ 'ब' के अनुसार 'युद्ध के उपरान्त वापस चला गया'।

६ 'ब' के अनुसार 'उसके राज्य का पतन होने लगा और हमीद खा मुलतानी को जो उसका वज़ीर था देहली सौंपकर बदायूँ चला गया'।

कर दी।" उसने देहली के कोट तथा खजानों की कुंजियां लाकर बहलोल के समक्ष रख दीं। बहलोल ने कहा कि, "जो सेवा तू मुझे प्रदान करता है, मैं उसे स्वीकार करता हूं, शहर तथा द्वारों की रक्षा का उत्तरदायित्व मैंने ले लिया, शासन-प्रबन्ध तथा प्रजा की रक्षा तेरे सिपुर्द है"।

बहलोल द्वारा राज्य प्राप्त करने का प्रयत्न

बहुत समय इसी प्रकार कार्य होता रहा। बहलोल, हमीद खां के अभिवादन हेतु जाया करता था, किन्तु वह अपनी सेना तथा शक्ति में वृद्धि करता रहता था। एक दिन हमीद खां ने उसे भोजनार्थ बुलवाया। उसने अपने साथियों से मिल कर निश्चय किया कि वे हमीद खां के समक्ष मूर्खतापूर्ण व्यवहार (६) करें और अज्ञानता प्रदर्शित करें ताकि उनका आतंक हमीद खां के हृदय से निकल जाय और वह उन्हें साधारण व्यक्ति समझने लगे। जब वे वहां उपस्थित हुए तो कुछ लोगों ने अपने जूते कमर में बांध लिये और कुछ लोगों ने जिस स्थान पर हमीद खां बैठा था उसी स्थान पर जो आला उसके सिर पर था वहीं अपने जूते रख दिये। हमीद खां ने कहा कि, "यह क्या बात है?" अफ़गानों ने कहा कि, "हम जूतों की चोरी से रक्षा करते हैं"। हमीद खां ने उनसे मुस्करा कर कहा कि, "निश्चिन्त रहो। यहां से कोई न ले जायेगा"।

कुछ क्षण उपरान्त अफ़गानों ने हमीद खां से कहा कि, "हे खान तेरे कालीन बड़े सुन्दर हैं। यदि एक कालीन हम लोगों को प्रदान कर दिया जाय तो हम अपने पुत्रों के लिए टोपियां बनवा कर भेज दें ताकि संसार वालों को यह ज्ञात हो जाय कि हमें कितना सम्मान प्राप्त है"। हमीद खां ने कहा कि, "मैं इससे अधिक उत्तम इनाम दूंगा"। तदुपरान्त वे बैठ गये और भोजन करने लगे। जब वे भोजन कर चुके तो सुगंधित वस्तुएँ लाई गईं। कुछ लोगों ने उन्हें मला और कुछ लोग फूलों को खा गये। कुछ लोग पान के बीड़े को खोल कर केवल चूना चाट गये। जब मुंह जलने लगा तो बीड़ों को फेंक दिया। हमीद खां ने बिल्लू[1] से पूछा कि "ये कैसे लोग हैं?" बिल्लू ने कहा, "वहशी लोग हैं, खाने और मरने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं जानते, उन्होंने कभी ऐसे समारोह नहीं देखे हैं"।

इसके अतिरिक्त उस समय यह प्रथा थी कि बिल्लू[2] जब हमीद खां की सेवा में जाता था तो उसके साथ केवल थोड़े से लोग ही होते थे, अन्य लोग बाहर रहते थे। एक दिन उसने उनसे यह निश्चय किया कि "जब मैं भीतर चला जाऊं तो तुम लोग मुझे गालियां देते हुए भीतर प्रविष्ट हो जाना और द्वारपालों को पृथक् कर देना'। उन्होंने उसके आदेशों का पालन किया और गालियां देते हुए घुस आये। वे कहते जाते थे, "बिल्लू कौन होता है जो भीतर जाता है। वह भी हम लोगों के समान हमीद खां का एक सेवक है"। जब कोलाहल बहुत बढ़ गया तो हमीद खां ने पूछा कि, "क्या बात है?" लोगों ने बताया कि, "अफ़गान लोग बिल्लू को गाली दे रहे हैं और कहते हैं कि बिल्लू खान के अभिवादन हेतु जाता है। हम क्या न उसका अभिवादन करके सम्मानित हों"। हमीद खां ने कहा कि, "उन्हें आने दो'। वे लोग स्वयं ही घुस आये थे अतः हमीद खां की सेवा में प्रविष्ट हुए और उन्होंने अभिवादन किया। हमीद खां के चारों ओर जो लोग एकत्र थे उनके पास दो-दो व्यक्ति खड़े हो गये। इसी बीच में कुतुब खां लोदी ने जंजीर निकाल कर हमीद खां के सामने रख दी और कहा कि, "इस समय यही उचित है कि तू इस जंजीर को पहन ले"। हमीद (७) खां ने कहा कि, 'मैंने तुम लोगों के प्रति क्या दुष्टता की थी?" उसने उत्तर दिया कि, "हम भी तेरे

१ 'ब' के अनुसार 'खाने खाना'।
२ 'ब' के अनुसार 'खाने खाना'।

प्राणों के सम्बन्ध में कोई विश्वासघात न करेंगे। क्योंकि तूने अपने स्वामी के साथ हरामखोरी[1] (कृतघ्नता) की है तो हमें भी कोई विश्वास नही रहा"। सक्षेप में, उसे बन्दी बना लिया गया और किले के बाहर एक महल में जो उसके लिए बनवाया गया था बन्दी अवस्था में रखा गया। बहलोल ने गाजी की उपाधि धारण कर ली।

बहलोल का बादशाह होना

उसने सुल्तान अलाउद्दीन के नाम बदायू[2] में एक पत्र भेजा। उसने भी राज्य-व्यवस्था से हाथ खींच लिया।

सुल्तान महमूद शर्की द्वारा आक्रमण

इसके उपरान्त उसके सम्मान में नित्यप्रति वृद्धि होने लगी। जिस समय वह सहरिन्द में था, सुल्तान महमूद शर्की[3] ने उसके (राज्य) ऊपर चढाई कर दी। देहली के कोट के भीतर [4] तथा इस्लाम खा की पत्नी नगर की रक्षा करने लगी। कुछ स्त्रिया पुरुषो के वेश में कोट का पहरा देती थी। अफगान लोग बाणो की वर्षा करते थे।[5] एक दिन खाने जहाँ लोदी का जामाता शाह सिकन्दर शिरवानी जो कि बडा दक्ष धनुर्धारी था, कोट के कगूरे पर बैठा हुआ पहरा दे रहा था। वह अपने बाणो की नोक के ऊपर अपना नाम सोने (के अक्षरो) से खुदवा दिया करता था। एक दिन एक सक्का[6] सुल्तान महमूद शर्की के लिए कगूरे के पास के कुए से जल ले जा रहा था। वह वहा से ३ बाणो के पहुचने की दूरी पर था। सिकन्दर ने उसके ऊपर बाण चलाया। वह बाण इस प्रकार लगा कि दोनो पखालो तथा बैल[7] को छेदता हुआ भूमि में घुस गया। सक्का बाण को लेकर महमूद की सेवा में पहुचा और सब हाल बताया। जिसने भी यह घटना सुनी उसे बडा आश्चर्य हुआ।

क़िले वालो द्वारा सन्धि की वार्ता

जब सुल्तान बहलोल के आने में विलम्ब हुआ तो किले वालो ने सधि करना निश्चय कर लिया और यह निश्चय किया कि मुबारक खा को जो सुल्तान महमूद का एक विश्वासपात्र था मध्यस्थ बना कर शहर सौंप दिया जाय[8] और वे लोग बाहर चले जाय। क़िले में से सैयिद शमसुद्दीन नामक एक व्यक्ति

[1] 'ब' के अनुसार, 'कृतघ्नता तथा हराम नमकी (नमक हरामी)'।
[2] 'ब' के अनुसार 'सुल्तान अलाउद्दीन के पास पत्र भेजकर बदायूँ को सुल्तान की रसोई के व्यय हेतु उसे दे दिया'।
[3] 'ब' के अनुसार महमूद शर्की ने जौनपुर से'।
[4] 'अ' में यह वाक्य पूरा नहीं, 'ब' के अनुसार 'क़िलें के भीतर इस्लाम खाँ की पत्नी बीबी मस्तू तथा समस्त अफ़ग़ान सिपाही थे। बीबी मस्तू कुछ स्त्रियों को पुरुषों के वस्त्र पहना कर कोट के ऊपर भेज देती थी और इस प्रकार क़िले की रक्षा करती थी'।
[5] 'ब' के अनुसार 'तोप चलाने वाले भी अपने कार्य में व्यस्त रहते थे'।
[6] पानी ले जाने वाला, भिश्ती।
[7] वह बैल जिसके दोनों ओर पखालें लटकी थीं।
[8] 'ब' के अनुसार 'जब सुल्तान बहलोल के आने में विलम्ब हुआ तो देहली के प्रतिष्ठित लोगों ने सधि का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने संभल के हाकिम मुबारक खा से जोकि सुल्तान महमूद के साथ था इस शर्त पर सधि की कि शहर सुल्तान महमूद को प्रदान कर दिया जावे और सुल्तान बहलोल के सैनिक क़िले के बाहर चले जायं'।

कुजिया लेकर मुबारक खा लोदी की सेवा में पहुचा और उससे एकात में भेंट की। सैयिद ने उससे पूछा (८)"कि तुझमें तथा सुल्तान महमूद में क्या सम्बन्ध है?" उसने कहा कि "कोई भी नही। मै उसका सेवक हू और वह मेरा बादशाह है"। तदुपरान्त उसने पूछा कि "तुझमें तथा सुल्तान बहलोल में क्या सबन्ध है?" उसने उत्तर दिया कि "हम दोनो एक दूसरे के भाई है। उसकी मातायें तथा बहिनें मेरी मातायें और बहिनें है"। सैयिद ने कुजिया निकाल कर उसके समक्ष रख दीं और कहा कि "अपनी माताओ तथा बहिनो को चाहे पर्दे में रख, चाहे अपमानित कर"। खान ने कहा कि "मै क्या करू, यदि सुल्तान बहलोल होता तो मै कुछ न कुछ करता"। सैयिद ने कहा कि "सुल्तान बहलोल किले में पहुचने का अवसर ढूढ रहा है"। खान ने कहा "यदि यही बात है तो कुजिया लेकर चला जा, मुझसे जो कुछ हो सकेगा मै करूगा"।

बहलोल तथा सुल्तान महमूद की सेना मे युद्ध

खान वहा से उठकर सुल्तान महमूद की सेवा मे पहुचा और कुजिया के विषय में कहा और यह बताया कि "क्योकि सुल्तान बहलोल भी पहुच गया है अत मैंने कुजिया नही ली कारण कि यदि हम उस पर विजय प्राप्त कर लेते है तो समस्त राज्य हमारा हो जायगा"। सुल्तान ने पूछा कि, "क्या करना चाहिए?" खान ने उत्तर दिया कि, "मुझे तथा फतह खा हरेवी को उससे युद्ध करने के लिए प्रस्थान करने का आदेश दिया जाय और आप अपने स्थान पर रहें"। तदनुसार दोनो अमीरो को नियुक्त किया गया। वे नरीला[1] नामक स्थान पर पहुचे ही थे कि सुल्तान बहलोल के निकट पहुच जाने के समाचार प्राप्त हुए। उन्होने वही पडाव किया। खान के साथ ३० हजार अश्वारोही थे। सुल्तान बहलोल की सेना की सख्या ७ हजार थी।

बहलोल की विजय

जब दोनो सेनाओ में मुठभेड हुई तो मुबारक खा अपनी सेना सहित खडा रहा। फतह खाँ रणक्षेत्र मे मारा गया और आज तक उसकी कब्र नरीला नामक स्थान पर है। उनकी सेना पराजित होकर अपने शिविर की ओर लौट गई। जब कोट वाला ने उन्हें आते हुए देखा तो यह समाचार बीबी के पास पहुचाये। बीबी ने पूछा कि, "कुछ पता चलता है कि वे पराजित होकर आ रहे है अथवा विजय पा कर?" लोगो ने अपनी अज्ञानता प्रदर्शित की। बीबी ने कहा कि, "देखो कि जो लोग आ रहे हैं वे बादशाह के दरबार में जा रहे है अथवा अपने शिविर में"। जब उन लोगो ने सावधानी से देखा तो उन्हें पता चला कि सैनिक अपने खेमों में पहुच कर अपना सामान एकत्र कर रहे है। जब बीबी को यह समाचार प्राप्त हुआ तो उसने आदेश दिया कि जाकर खुशी के नक्कारे बजा दो। किले पर नक्कारे बजने लगे। नक्कारे की आवाज सुल्तान महमूद के कानो म पहुची। उसने पूछा कि, "नक्कारे क्यो बज रहे हैं?" लोगो ने बताया कि, "किले वालो द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि हमारी सेना पराजित हो गई"। सुल्तान ने आदेश दिया कि इस विषय मे पता चलाओ। जब पता लगाया गया तो उसकी पुष्टि हो गई। वे इसी (९) सोच में थे कि मुबारक खा सम्भली पहुच गया और फतह खा की हत्या तथा सेना की पराजय के समाचार दिये। सुल्तान महमूद समझ गया कि विश्वासघात किया गया है। वह ठहर न सका और

१ 'अ' के अनुसार 'लम्बरा'

२ यह अश 'ब' मे बडे सक्षिप्त रूप से दिया गया है।

उसने तत्काल वहा से कूच कर दिया और शीघ्रातिशीघ्र चल खडा हुआ। मेरा उससे अधिक सम्बन्ध नही और अपने विषय के सबन्ध में उल्लेख करता हू।

सुल्तान बहलोल का चरित्र

सुल्तान बहलोल बडा ही धर्मनिष्ठ तथा वीर एव दानी बादशाह था। वह भिखारी को वापस न करता था और खजाना एकत्र न करता था। जिस विलायत पर भी वह अधिकार जमाता उसे बाट देता था।[1] वह अमीरो तथा सैनिको से भाइयो के समान व्यवहार करता था। यदि कोई व्यक्ति रुग्ण हो जाता था तो वह उसे देखने के लिए उसके पास जाता था और सवेदना प्रकट करता था। देहली में सवेदना प्रकट करने के समय यह प्रथा थी कि तीजे के दिन पान, मिश्री तथा शकर वितरण की जाती थी।[2] सुल्तान ने इस प्रथा को बन्द करा दिया और केवल फूल तथा गुलाबजल ही वितरण करने की प्रथा निकाली। उसका कथन था कि "हमसे ये प्रथायें समव न हो सकेंगी, कारण कि यदि एक दरिद्र अफगान मर जायेगा तो उसके समूह वाले लाखो व्यक्ति उपस्थित होंगे, ऐसी अवस्था में वह ये प्रबन्ध किस प्रकार कर सकेगा"। वह कभी शरा[3] के विरुद्ध कोई कार्य न करता था। वह बडा ही सौजन्यपूर्ण व्यवहार करता था। उसके कोई पर्दादार[4] न था। भोजन के समय जो कोई उपस्थित हो जाता वह भोजन करता था। वह गोष्ठियो में सिहासन पर नही बैठता था और न लोगो को खडे रहने की अनुमति देता था। सब लोग रगीन फर्श पर बैठते थे। जब वह अमीरो को पत्र लिखता तो 'मसनदे आली' शब्द से सबोधित करता था।[5] यदि कोई अमीर उससे रुष्ट हो जाता तो वह उसके घर पहुचता और कमर से तलवार खोल कर उसके समक्ष रख देता और क्षमा-याचना करते हुए कहता कि "यदि आप मुझे इस कार्य के योग्य नही समझते तो मुझे कोई अन्य कार्य सौंप दे और किसी अन्य को बादशाह बना लें"। कहा जाता है कि जिस दिन वह सिहासनारूढ हुआ, जुमा मस्जिद मे उपस्थित हुआ। बन्दगी मिया (मुल्ला कादन) वाज[6] कह रहे थे। सुल्तान बहलोल भी उपस्थित था, वाज समाप्त करने के उपरान्त उसने कहा कि, "ईश्वर को धन्य है, बडा विचित्र समय आ गया है, मेरी समझ में नही आता कि ये लोग दज्जाल[7] के पूर्वगामी हैं या बाद के। इनकी भाषा ऐसी है कि ये लोग माता को मूर, भाई को रर तथा ग्राम को शूर, सेना को तूर तथा जननेंद्रिय को नूर कहते हैं"। वह यह वार्ता कर ही रहा था कि सुल्तान बहलोल ने मुख पर रूमाल रख कर हसते हुए कहा कि "मुल्ला कादन बस करो, हम लोग भी मनुष्य हैं"। ....

१ 'ब' के अनुसार 'युद्ध में जो विलायत वह विजय करता था वह अमीरों तथा सैनिकों को बांट देता था'।
२ 'ब' के अनुसार 'सुगन्धित वस्तुयें, शरबत तथा मिठाइयां'।
३ इस्लामी नियमों को शरा कहते हैं। शरा का मुख्य आधार क़ुरान तथा हदीस हैं।
४ भीतरी द्वारों का रक्षक।
५ 'ब' के अनुसार 'वह दरबारे आम में ग़ालीचे पर बैठता था और कुछ लोगों के सम्बन्ध में खड़े रहने का आदेश होता था। गोष्ठियों में वे लोग नहीं बैठते थे। वह लोगों को प्रसन्न करने का अत्यधिक प्रयत्न किया करता था'।
६ धार्मिक प्रवचन।
७ दज्जाल का अर्थ है झूठा किन्तु मुसलमानों के विश्वास के अनुसार दज्जाल नामक एक व्यक्ति क़यामत अथवा प्रलय के पूर्व प्रकट होगा। वह बड़ा कुरूप तथा काना होगा।
८ 'अ' में यह भाग स्पष्ट नहीं। 'ब' के अनुसार 'एक विद्यार्थी ने जो कि ठिंगना तथा बड़ा ही रूपवान् था कहा कि हे मुल्ला! तू दो कारणों से काफ़िर हो गया। तुझे अपने ईमान को पुन: ठीक करना चाहिए।

(१०) वह पाचों समय की नमाज जमाअत के साथ पढता था। रणक्षेत्र में शत्रु की सेना का देखकर शीघ्र घोडे से उतर कर ईश्वर से इस्लाम और मुसलमानों की कुशलता के लिए प्रार्थना करता था।[१] इसके उपरान्त जब वह बादशाह हुआ तो कोई भी विरोधी उस पर विजय न पा सका। बादशाह होने के *पूर्व भी उसने कभी किसी रणक्षेत्र मे पीठ नही दिखाई, या तो विजय प्राप्त की या घायल हुआ।*[२]

सुल्तान हुसेन शर्की के आक्रमण

उसके बादशाह हो जाने के उपरान्त जौनपुर के सुल्तान हुसेन ने देहली पर (दो बार) आक्रमण किया। यमुना तट पर कजवा घाट पर पडाव किया। वह दोनों बार पराजित हुआ। जब उसने प्रथम बार आक्रमण किया तो सुल्तान बहलोल, कुतुब आलम ख्वाजा कुतुबुद्दीन[३] के शुभ मकबरे में जाकर रात भर नगे सिर खडे होकर प्रार्थना करता रहा। सूर्योदय के पूर्व एक व्यक्ति परोक्ष से प्रकट हुआ। (११) उसने सुल्तान बहलोल के हाथ मे एक डण्डा दिया और कहा कि, "जा ये थोडी सी भैंसें जो आई हैं इन पर इसकी सहायता से सवारी कर।"[४] उसने सुल्तान हुसेन के मुकाबले में अपने शिविर लगाये। सुल्तान हुसेन युद्ध मे पराजित हुआ और जौनपुर में बन्दगी शेखुल मशायख शेख बुद्ध के पास, जोकि बडे पहुचे हुए थे, गया और उनसे प्रार्थना की कि, "आप मेरे लिए ईश्वर से दुआ करे"। उन्होंने कहा कि

प्रथम इस कारण से कि तू ने विद्वान् होकर विद्या का अपमान किया और दूसरे इस कारण कि तू ने ईश्वर के प्राणियों की खिल्ली उड़ाई। इस प्रकार तूने ईश्वर का अपमान किया। मुल्ला ने तत्काल क्षमा याचना करके तोबा की'।

'एक रोज वह (बहलोल) पेशाब करके बाहर निकला था और ढेले का प्रयोग इस भय से कर रहा था कि कहीं यदि कोई मूत्र की बूँद रह गई हो तो वह दूर हो जाये। इसी बीच मे मुल्ला तुगलुक नामक एक व्यक्ति पहुँच गया। सुल्तान वजू करने लगा। मुल्ला ने सोचा कि वह मेरी उपेक्षा करके घर के भीतर जा रहा है। वह शीघ्रातिशीघ्र सुल्तान के पास पहुँचा और मुल्तान का बाजू पकड़ कर अपनी ओर खींचा। बादशाह की लुगी (तहमत) खुल गई। वह तत्काल भूमि पर बैठ गया और अपने (गुप्तागों) को छिपा लिया और कहा कि 'हे धृष्ट मुल्ला। तू ने यह क्या किया?' उसने उत्तर दिया कि 'मैं केवल ईश्वर के लिये आता हूँ और तू मेरी उपेक्षा करता है'। सुल्तान ने कहा कि 'मैं नेक कार्य के लिये जा रहा था'। मुल्ला ने कहा 'दीन (इस्लाम) के कार्य से बढकर कौन सा कार्य है?' सुल्तान ने कहा कि 'जरा सा ठहर जा ताकि मैं आ जाऊँ और जो कुछ तू कहता है वह करूँ'। उसने कहा 'नेक कार्य में विलम्ब न होना चाहिए'। सुल्तान ने कहा 'कौन सा नेक कार्य है?' मुल्ला ने कहा 'मैं इस सहायता के पात्र को लाया हूँ। तू इसके लिए अदरार निश्चित करदे'। सुल्तान ने उसी स्थान पर उसके लिये जीविका साधन की व्यवस्था कर दी और विदा कर दिया"।

१ 'ब' के अनुसार 'घोड़े से उतर कर नमाज पढता तथा तथा इस्तखारा करता था'।

२ 'ब' के अनुसार 'बादशाह होने के पूर्व भी उसने कभी भी किसी युद्ध मे पीठ न दिखाई और विजय प्राप्त करके लौटता था। वह प्राय बडे प्रयत्न के उपरान्त रणक्षेत्र में पड़ाव करता था। वह युद्ध के पूर्व ही सभी बातों को देख-भाल लेता था। जिस समय सुल्तान बहलोल की शक्ति मे नित्य प्रति वृद्धि होने लगी तो सुल्तान हुसेन शर्की ने जौनपुर से देहली के राज्य पर अधिकार जमाने के लिये आक्रमण किया और यमुना नदी के तट पर पड़ाव किया। यह बात प्रसिद्ध है कि उसने दो बार देहली विजय करने का प्रयत्न किया और दोनों बार पराजित होकर वापस हुआ'।

३ कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी जिनका निधन २७ नवम्बर १२३५ ई० को हुआ।

४ 'ब' के अनुसार 'इस डडे से भगा दे'।

"अब मैं सुल्तान बहलोल[1] के लिए प्रार्थना करता हू, कारण कि उसके द्वारा इस्लाम की उन्नति प्राप्त होगी।"

दूसरी बार उसने अत्यधिक सेना एकत्र करके देहली पर आक्रमण करना निश्चय किया और समस्त जमीदारो तथा राजाओ को बुलवाया। जिस दिन वह प्रस्थान करना चाहता था उसने मलिक शम्स नामक एक वृद्ध को बुलवाया। बीबी खुन्दा पर्दे के पीछे बैठी थी। सुल्तान ने मलिक शम्स से कहा कि "मैंने देहली पर आक्रमण करना निश्चय कर लिया है। इस विषय में आप क्या कहते हैं?" मलिक ने कहा, 'बडा अच्छा है किन्तु आप इस बात में शीघ्रता से कार्य न लें। आप इस वर्ष अपनी सेना के शिविर अपने राज्य की सीमा पर लगाय और सेना को एकत्र करें तथा अपनी विलायत को अपने पीछे करके प्रस्थान कर। देहली की विलायत नित्य प्रति अव्यवस्थित एव नष्ट-भ्रष्ट होती जायेगी और वहा के लोग, सेना तथा प्रजाजन आपके पास सहायतार्थ आयेंगे। दूसरे वर्ष आप देहली के राज्य की सीमा पर अपने शिविर लगायें। उसके राज्य में नि सन्देह ही अव्यवस्था उत्पन्न हो जायगी। वह भागकर अपने राज्य की सीमा पर चला जायेगा अथवा विवश होकर युद्ध प्रारम्भ कर देगा। लोग उसका साथ न दगे और सभी लोग अपने परिवार तथा धन-सम्पत्ति की चिन्ता में ग्रस्त हो जायेंगे। जब शत्रु की दशा शोचनीय हो जाय तो जो कुछ आपसे सम्भव हो सके वह कीजिये।" मलिक ने इतनी ही बात कही थी कि बीबी खुन्दा ने पर्दे के पीछे से कहना प्रारम्भ किया कि, "इन सिपाहियो तथा सरदारो को क्या हो गया है और कौन सी ऐसी घटना घटी है कि वे हतोत्साहित हो गये हैं। उन्होने कहा रणक्षेत्र में अपने सिर कटाये हैं जो इस नामर्दी तथा बेहिम्मती का प्रदर्शन करते हैं और क्यो भयभीत हो गये हैं?" मलिक ने कहा कि, "बीबी! रणक्षेत्र में सिर कटाना आसान कार्य नही है। ईश्वर न करे कि वह दिन आये। उस दिन पायजामे के पायचे भारी हो जायेंगे।" मलिक यह कह कर उठ खडा हुआ और कहा कि, "जब आप इनकी (बीबी) बात पर आचरण करते हैं तो मुझसे क्यो पूछते हैं।"

अन्ततोगत्वा जब वे देहली पहुचे तो युद्ध के उपरान्त पराजित हो गये। मलिक शम्स भी जिसका उल्लेख हो चुका है मारा गया। बीबी खुन्दा को अफगानो ने बन्दी बना लिया। मलिक शम्स बडा पहुचा हुआ व्यक्ति था। जो बात वह अपनी जिह्वा से निकालता था वह (१२) पूरी हो जाती थी। प्रारम्भ में वह फतह खा हरेवी के साथ रहता था। सुल्तान हुसेन एक दिन अतिथि के रूप में फतह खा के पास पहुचा और कहा कि, 'मैं तुमसे एक चीज की प्रार्थना करता हू।" खान ने निवेदन किया कि, 'आप मलिक शम्स को मेरे पास रहने दें। इसके अतिरिक्त आप जो कुछ भी कहेंगे उसे मैं करूगा।' सुल्तान ने कहा कि, 'मैं मलिक शम्स को तुमसे मागता हू।" फतह खा के नेत्रो में आसू आ गये। मलिक ने कहा कि "आप मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति के लिए क्या आसू बहाते हैं? सुल्तान की बात को आप स्वीकार कर लें। मैं यहा भी सुल्तान की सेवा करता था और वहा भी सुल्तान की सेवा करूगा किन्तु मैं जिस स्थान पर भी रहूगा आप ही का हितैषी रहूगा। यदि मेरा सिर भी कट जायेगा तो वह

[1] 'ब' के अनुसार मैं तेरे लिये शुभकामना नहीं कर सकता। मेरी शुभकामनायें सुल्तान बहलोल के साथ हैं कारण कि उसके द्वारा इस्लाम की उन्नति होगी'।

सर्व प्रथम आप ही के द्वार पर आयेगा तदुपरान्त किसी अन्य स्थान पर जायेगा।" जब सुल्तान बहलोल ने मलिक शम्स का सिर बीबी खुन्दा सहित सुल्तान की सेवा में भेजा तो सर्व प्रथम मलिक का सिर फतह खा के द्वार पर ले जाया गया तदुपरान्त बादशाह के दरबार में।

एक बार सुल्तान हुसेन ने ग्वालियर के किले की मुक्ति हेतु प्रस्थान किया। वहा बडा ही घोर युद्ध हुआ। मलिक शम्स के दो योग्य पुत्र किले के द्वार पर मारे गये। वीरो ने यद्यपि अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु वे मलिक के पुत्रो के समान युद्ध न कर सके। जब वे युद्ध के उपरान्त लौटने लगे तो सुल्तान हुसेन ने व्यगात्मक ढग से कहा कि, "जो लोग वीरता तथा पौरुष की डीग मारते हैं वे मलिक शम्स के पुत्रो की धूल तक को नहीं पहुच सकते।" मलिक शम्स ने उस समय कहा कि, "हे ससार के बादशाह ! शम्स के पुत्रो की ऐसे स्थान पर हत्या हुई है कि यदि समस्त ससार के बादशाह एकत्र होकर वहा पहुचने का प्रयत्न करें तो भी वे न पहुच सकेंगे। यदि ईश्वर ने चाहा तो रणक्षेत्र में मेरी ऐसे स्थान पर हत्या होगी कि आप वहा दृष्टिपात भी न कर सकेंगे। आप इस बात को निश्चित ही समझें।" जिस दिन मलिक शम्स की हत्या हुई, सुल्तान हुसेन अत्यधिक प्रयत्न के बावजूद भी मलिक की लाश तक न पहुच सका। जो कुछ मलिक शम्स ने कहा था वही हुआ।

प्रात काल सुल्तान हुसेन ने पूर्व की ओर प्रस्थान कर दिया। मसनदे आली कुतलुग खा, अफगाना द्वारा बन्दी बना लिया गया।

सुल्तान बहलोल की मृत्यु

सुल्तान बहलोल जब पूर्व की विलायत में था तो उसकी मृत्यु हो गई। समस्त अमीरा न सर्व सम्मति से मिया निज़ाम को देहली से बादशाही के लिए बुलवाया। जब उसने चलने का सकल्प किया तो जमाल खा सारगखानी को खिलअत प्रदान करके सम्मानित किया और उसे देहली में छोडकर उस ओर रवाना हुआ। वह जलाली परगने के निकट पहुचा था कि सुल्तान बहलोल का जनाज़ा आ गया। उसने वही पडाव कर दिया और फातेहा[1] पढा तथा लाश को देहली की ओर भेज दिया। जलाली के समीप काली नदी के तट पर एक टीला है जिसे सुल्तान फीरोज का कुश्क[2] कहते थे। मिया निज़ाम वही सिंहासनारूढ हुआ और उसकी उपाधि सुल्तान सिकन्दर हुई। उसने वहा से प्रस्थान कर दिया।

जमाल खा

(१३) जमाल खा का, जिसे उसने देहली में छोड दिया था, हाल इस प्रकार है कि वे दो भाई थे। उनके पास एक ही जोडा कपडा था। यदि उनमें से कोई भी वस्त्र धारण कर के दीवान[3] में चला जाता तो दूसरा चादर बाध कर घर में कोने में बैठा रहता। उनके पास एक ही घोडा था। एक बार एक भाई अभिवादन हेतु गया था। उसी समय एक भिखारी पहुच गया और उसने भिक्षा मागी और कहा कि, "मैं सैयिद हू। मेरे एक प्रौढ पुत्री है, मैं उसका विवाह करना चाहता हू, तुझसे जो कुछ हो सके ईश्वर

१ मृतक के लिये शुभ कामना सम्बन्धी कुरान के कुछ अश।
२ राज प्रासाद।
३ मुख्य वज़ीर का अथवा वित्त विभाग का कार्यालय।

के लिए प्रदान कर।" जमाल खा ने कहा कि, "मेरे पास यही घोडा है, ले जा।" जब उसने घोडा खोला तो कहा कि, "काठी को किस लिए रख छोडा है ?" काठी भी उसने घोडे की पीठ पर रख ली। जब वह भाई दीवान से वापस आया तो उसे घोडा न मिला। उसने पूछा कि, "घोडा कहा है ?" जमाल खा ने उत्तर दिया कि, "ईश्वर की प्रसन्नता के लिए मैंने उसे दे दिया।" उसने कहा कि, "अब हम क्या करेंगे ?" जमाल खा ने कहा, "एक व्यक्ति सवार होता था और एक व्यक्ति पैदल चलता था, अब हम दोनों पैदल हो जायेंगे। यदि ईश्वर चाहेगा तो हम दोनों सवार होंगे।" सयोग से उसे बुलवा कर (सुल्तान द्वारा) खिलअत प्रदान की गई और इनाम तथा परगने दिये गये। उसी दिन उसने १२० घोड़े क्रय कर लिये।

सुल्तान सिकन्दर

सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल में प्रजा की उन्नति

सुल्तान सिकन्दर बडा प्रतापी बादशाह था। वह दारा का पालन करता था और उसमें न्याय कारिता तथा वीरता अत्यधिक सीमा तक पाई जाती थी। उसके राज्यकाल में प्रजा सुखी थी, कृषि को बडी उन्नति प्राप्त थी और सैनिको का बडा सम्मान होता था। व्यापारी, शिल्पकार तथा कृषक सभी सुखी थे। विलायत (राज्य) मे इतनी सुख शांति थी कि किसी भी चोर डाकू, विद्रोही तथा उद्दड का कोई चिह्न न मिलता था। सभी विद्रोही काफिर आज्ञाकारी बन गये थे। जो कोई भी विरोध करता उसकी या तो हत्या करा दी जाती थी या उसे उस विलायत से निर्वासित कर दिया जाता था। जिस सैनिक (१४) को नियुक्त किया जाता यदि उसके पास साज तथा यराक[1] न होता तो उसके विषय में पूछ ताछ कराई जाती और जागीर देकर उससे यह कह दिया जाता कि अपनी जागीर से साज तथा यराक की व्यवस्था कर ले। समस्त विलायत में बिना कृषि की एक हाथ अथवा एक तस्व[2] भूमि न रह गई थी।

यदि किसी दास को उसके स्वामी[3] द्वारा उसका हिसाब न मिल पाता था तो वह बादशाह के द्वार पर पहुच कर न्याय की प्रार्थना करता था और उसे ठीक-ठीक हिसाब मिल जाता था। कोई भी किसी से बगार नही लेता था। कोई भी प्रजा के घर से चारपाई अथवा कोई बर्तन बिना मूल्य अदा किये नही लेता था अपितु जिसे आवश्यकता होती थी वह मूल्य देकर लेता था।

मन्दिरो का विनाश

उसने काफिरो के मदिरो को नष्ट करा दिया था। मथुरा म जिस स्थान पर काफिर स्नान करते थे, वहा कुफ्र का कोई भी चिह्न न रह गया था। लोगो के ठहरने के लिए उसने वहा पर कारवा सरायो का निर्माण कराया था। वहा पर विभिन्न व्यवसाय वालो अर्थात् कसाइयो, बावर्चियो, नानवाइयो तथा शीरा बनाने वालो की दुकानें बनवा दी। यदि कोई हिन्दू अज्ञानवश भी वहा स्नान करता तो उसे पगु बना दिया जाता था और उसे कठोर दण्ड दिया जाता था। कोई भी हिन्दू वहा पर अपनी दाढी मूँछ नही मुडवा सकता था। नाई को कोई चाहे जितना भी धन देता, वह हिन्दू के समीप न जाता।

इस्लाम की उन्नति

प्रत्येक नगर में इस्लाम को बडी ही उन्नति प्राप्त थी। मस्जिदें भरी रहती थी। पाचो समय

१ यराक अस्त्र शस्त्र।
२ किसी नाप का चौबीसवा भाग।
३ 'ब' के अनुसार 'यदि कोई स्वामी अपने किसी दास से हिसाब करना चाहता तो वह बादशाह के दरबार में पहुँच कर न्याय मागता था तदुपरान्त हिसाब प्रारम्भ करता था। कोई भी प्रजा के घर से जबरदस्ती न तो एक चारपाई ले सकता था और न बेगार, इन विदअतों से जिनके कारण प्रजा को कष्ट होता था पूर्णत बन्द करा दिया था। काफ़िरों के पूजागृहों तथा मन्दिरों का समूलोच्छेदन कर दिया था,।

की नमाज जमाअत के साथ होती थी। यात्री तथा विद्यार्थी मस्जिदो एव जमाअत खानो[1] मे सुख शांति से रहते थे। कार्य करने वाले लोग अपने-अपने कार्य में तल्लीन रहते। मदरसो म रौनक रहती थी। अमीर तथा सिपाही इत्यादि विद्याध्ययन और ईश्वर की उपासना म व्यस्त रहते थे।

दान-पुण्य

जिस किसी के ऊपर भी निसाब[2] लागू होता था वह उसे यथारूप अदा करता था। शीत ऋतु में विधवाओ को चादर, नगे तथा दरिद्र लोगो को वस्त्र और फकीरो को वर्षा ऋतु म कम्बल प्रदान किया जाता था। प्रत्येक घर के द्वार पर भिखारियो के लिए अनाज का ढेर रहता था।[3] शुक्रवार के दिन फकीरो को घरो पर जुमागी[4] प्रदान की जाती थी और शुक्रवार की नमाज के समय फकीरो को (धन) प्रदान किया जाता था। प्रत्येक नगर मे आलिमो, फकीरो तथा विधवाओ को दो बार शाही धन प्रदान किया जाता था, प्रतिष्ठित लोगो को आदेश था कि वे ऐसे लोगो की सूची तैयार रखे। जिसे धन प्रदान होता वह उसे अपनी आवश्यकतानुसार व्यय करता।

भूमि प्रदान करने का नियम

(१५) जिस किसी के नाम जो कुछ लिख दिया जाता वह बिना किसी कमी के उसे प्राप्त होता रहता। जो आमिल[5] परगनो के शासन तथा व्यवस्था हेतु नियुक्त होते थ वे उसमें किसी प्रकार का परिवतन न कर सकते थे। जिस किसी को भी परगने जागीर में दिये जाते थे उनकी तौकी[6] म यह लिख दिया जाता कि इमलाक तथा वजाएफ[7] को छोड कर प्रदान किया जाता है।[8]

फरमान प्राप्त करने का नियम

जब किसी को कोई फरमान पहुचता तो कोई एक कोस पर तथा कोई दो कोस पर पहुच कर फरमान का स्वागत करता। वहा चबूतरा बनाया जाता। जो कोई फरमान ले जाता था वह उस चबूतरे पर खडा हो जाता था। जिसके पास फरमान पहुचता वह फरमान लेता और अपने सिर पर रखता। यदि आदेश होता तो वह उसे उसी स्थान पर पढता अन्यथा अपने घर ले आता।

१ वह स्थान जहा दरवेश लोग एकत्र होते थे।
२ वह कम से कम सम्पत्ति जिसके पूरे वर्ष तक एकत्र रहने के कारण मुसलमानों को ज़कात (एक धार्मिक कर) अदा करना पड़ता था।
३ 'ब' के अनुसार 'लोग प्रस्थान करते समय फ़क़ीरों को दान दिया करते थे। यदि वे दिन में दस बार भी कहीं जाते तो इसी प्रथा का अनुसरण करते थे'।
४ शुक्रवार के दिन दिया जाने वाला दान।
५ कर की व्यवस्था करने वाले अधिकारी।
६ फ़रमान।
७ दान स्वरूप प्रदान की हुई भूमि।
८ 'ब' के अनुसार यह अनुवाद किया गया है। इसम लिखा है कि '''दर फ़रमान मी नविश्तन्द कि ख़ारिज इमलाकं व वज़ाएफ़ मुसल्लम फ़रमूदेम'। कोई व्यक्ति किसी अन्य पर निर्भर न रहता था। जो अमीर सुल्तान की सेवा म उपस्थित रहते अथवा किसी अन्य स्थान को भेजे जाते तो उनके वकील (प्रतिनिधि) सर्वदा दरबार में उपस्थित रहते थे और यथारूप शासन प्रबन्ध करते थे।''

इस्लाम के विरुद्ध प्रथाओ पर रोक-टोक

सालार गाजी[1] के नेजे की प्रथा विलायत (राज्य) मे न रही थी। बिना लाश की कबरों तथा सीतला[2] की प्रथाओ का उसने अपने राज्य में अन्त करा दिया था। वह समस्त मुसलमान बादशाहो से भाइयो के समान तथा निष्ठापूर्वक व्यवहार करता था। एक दूसरे के पेशकश तथा पत्र आते-जाते रहते थे।

राज्य की सुख-सम्पन्नता

अनाज, वस्त्र, सोना, चादी, घोड़ा, ऊट, गाय, भेंड तथा मनुष्य की आवश्यकता की जितनी भी वस्तुयें थी वे इतनी सस्ती हो गई थी कि सभी लोग उनसे लाभान्वित होते थे, किसी को भी किसी प्रकार की कोई कठिनाई न होती थी, यहा तक कि फकीर तथा दरिद्र लोग भी, जो मार्गो पर एकान्तवास ग्रहण किये थे, यात्रियो तथा सैनिको इत्यादि से, जो उस मार्ग से गुजरते थे, कुछ न मागते थे। उनके मागने के पूर्व ही जो कुछ उन लोगो से हो सकता था वे प्रदान कर देते थे। यदि किसी भी फकीर की मृत्यु हो जाती तो उसके पास हजारो तथा लाखो की सम्पत्ति मिलती थी जो उसके उत्तराधिकारियो को दे दी जाती थी, यदि कोई उत्तराधिकारी न होता था तो उसे फकीरों को प्रदान कर दिया जाता था।[3]

कुरुक्षेत्र पर आक्रमण की योजना

बाल्यावस्था में ऐसा हुआ कि एक बार उसने कुरुक्षेत्र पर आक्रमण करना निश्चय किया। इस विषय पर आलिमो का मत ज्ञात करने के लिए उसने उन्हें एकत्र किया। उस युग के सबसे बड़े आलिम (१६) मिया अब्दुल्लाह अजोधनी भी उपस्थित थे। सभी ने उनकी ओर सकेत किया कि, "इनकी उपस्थिति में हम कुछ भी नही कह सकते।" मिया निजाम ने मिया अब्दुल्लाह से इस विषय में पूछा। उन्होने पूछा, "वहा क्या होता है?" मिया निजाम ने कहा कि, "उस स्थान पर प्रत्येक प्रदेश से काफिर एकत्र होकर स्नान करते हैं।" मिया अब्दुल्लाह ने पूछा कि, "यह प्रथा कब से चल रही है?" शाहजादे ने कहा कि, "यह बडी प्राचीन प्रथा है।" मिया अब्दुल्लाह ने पूछा कि, "आपके पूर्व मुसलमान बादशाहो ने इस सम्बन्ध में क्या किया?" शाहजादे ने कहा कि, "इसके पूर्व किसी बादशाह ने कुछ भी नही किया।" मुल्ला ने कहा कि, "इसका उत्तरदायित्व उन लोगो पर है। प्राचीन मदिर को नष्ट करना उचित नही।" मिया निजाम ने रुष्ट होकर कटार निकाल ली और कहा कि, "सर्व प्रथम मैं तुम्हारी हत्या करूगा तदुपरान्त वहा आक्रमण करूगा।" उन्होने कहा कि, "सभी के लिए मरना अनिवार्य है। बिना ईश्वर के आदेश के कोई भी नही मरता। जब कोई भी व्यक्ति किसी अत्याचारी के पास जाता है तो अपने लिए मृत्यु निश्चय करके जाता है। जो कुछ होना है वह होगा किन्तु आपने मुझसे शरा की समस्या के विषय में प्रश्न किया तो मैंने उसका उत्तर दिया। यदि आपको शरा की चिन्ता नही है तो पूछने की कोई आव-

१ सालार साहू का पुत्र तथा सुल्तान महमूद गजनवी का एक भागिनेय जो उत्तरी भारत पर आक्रमण करते हुये बहराइच तक पहुँच गया और १५ जून १०३३ ई० को बहराइच मे एक युद्ध मे मारा गया। उसकी मृत्यु के दिन ज्येष्ठ के पहले रविवार को बहुत बड़ा मेला लगता है और गाजी मिया का झडा बहुत स्थानों से बहराइच ले जाया जाता है। सम्भवत उस समय नेजा अथवा भाला ले जाते होंगे। कट्टर मुसलमान इसे धर्म के विरुद्ध समझते हैं।

२ सीतला अर्थात शीतला।

३ 'ब' में इस विषय में बड़े सक्षिप्त रूप से लिखा गया है।

रखता नही।" सुल्तान ने अपने क्रोध को रोका और कहा कि, "यदि अनुमति प्रदान कर देते तो कई हज़ार काफ़िरों को नरक पहुचा देता और अधिकाश मुसलमान उससे लाभान्वित होते।" मिया अब्दुल्लाह ने कहा कि, "मुझे जो कुछ कहना था मैंने कह दिया, अब आप जानें।" वह दरबार से उठ खड़ा हुआ। अन्य आलिम लोग उसके साथ चल दिये। मलिकुल उलमा[1] अपने स्थान पर खडे रहे। मिया निज़ाम ने किसी अन्य ओर ध्यान न दिया और कहा, "मिया अब्दुल्लाह आप कभी-कभी मुझसे भेंट करते रहें।" यह कह कर उन्हें विदा कर दिया। बाल्यावस्था में उसकी यह दशा थी।

तातार खा यूसुफ खेल से युद्ध

सुल्तान बहलोल के राज्य-काल में तातार खा यूसुफखेल ने लाहौर में विद्रोह कर दिया और अत्यधिक विलायत अपने अधिकार में कर ली। शाहज़ादा मिया निज़ाम खा उन दिनो पानीपत में था। उसने अन्य अमीरो के परगना के कुछ ग्राम अपने आदमियो को दिलवा दिये। उन लोगो ने सुल्तान बहलोल से फरियाद की। सुल्तान ने ख्वाजगी शेख सईद फर्मुली को जो शाहज़ादे का पेशवा[2] (१७) था फरमान लिखा कि, "ये कार्य तेरे परामर्श से होते हैं। यदि तुझमें पौरुष है तो तातार खा की विलायत[3] में से ले ले और हमारी विलायत[3] को नष्ट मत कर। यह कैसी वीरता है?" शेख सईद उसी फरमान को लेकर मिया निज़ाम के पास पहुचा और उसे बादशाही की बधाई दी। मिया निज़ाम ने पूछा कि, "क्या समाचार है?" उसने उत्तर दिया कि "सब कुशल है किन्तु सुल्तान ने अपनी इच्छा से आपको बादशाही प्रदान की है।" शाहज़ादे ने पूछा कि, 'किस प्रकार तू यह कहता है?" उसने उत्तर दिया "इसे देखिये" और फरमान को खोल कर पढा। उसमें लिखा हुआ था कि, "यदि तुझमें शक्ति है तो तातार खा की विलायत में से ले ले।" शाहज़ादे ने कहा कि, "बडी विचित्र बादशाही है।" उसने उत्तर दिया कि, "बादशाही मुफ्त नही मिलती, आपके लिए एक कार्य का आदेश हुआ है यदि आप इस कार्य को सम्पन्न कर लेंगे तो बादशाही आपको अवश्य प्राप्त हो जायेगी। बादशाह को जो कार्य करना चाहिये उसके लिए आपको आदेश हुआ है यही बादशाही का सकेत है।" शाहज़ादे ने पूछा कि, "क्या करना चाहिए?" उसने कहा कि, "उठ खडे हो और अपने भाग्य की परीक्षा करें?"

छन्द

"राज्य किसी को मीरास[4] मे नही प्राप्त होता,
जब तक कि वह दो दस्ती[5] तलवार को नही चलाता।"

उस समय मिया निज़ाम के पास डेढ हज़ार प्रसिद्ध अश्वारोही थे। उमर खा शिरवानी नामक एक प्रसिद्ध अमीर के पास ५०० सवार थे, ३०० उसके भाइयो तथा पुत्रो के पास थे, इनके अतिरिक्त २०० अन्य सवार थे। इन ५०० सवारो के अतिरिक्त १००० अन्य सवार थे। शेख सईद फर्मुली, उसके भाइयो, भतीजो, सम्बन्धियो, मिया गदाई, मिया हुसेन, उसके तीन भाइयो दरिया खा, नसीर

१ मिया अब्दुल्लाह।
२ शाहज़ादे के अधिकार म जो स्थान थे, उनकी देख रेख करने वाला।
३ राज्य।
४ तरका, बपौती।
५ दोधारी।

खा, शेर खा, वहल खा नोहानी, इख्तियार खा तोग तथा मुकीम खा इत्यादि ने एक दिन एक परामर्श गोष्ठी आयोजित की और यह निश्चय किया कि इस कार्य को प्रारम्भ कर देना चाहिये। कुछ सवार तातार खा की विलायत पर अधिकार जमाने के लिए नियुक्त हुए। तातार खा के आदमियो ने कुछ को बन्दी बना लिया और कुछ भाग कर तातार खा से मिल गये। तातार खा तैयार होकर शाहजादे से युद्ध करने के लिये निकला। अम्बाला के रणक्षेत्र मे युद्ध हुआ। इस्लाम शाह तथा हैबत खा न्याजी ने इसी रणक्षेत्र में युद्ध किया। इसका उल्लेख उचित स्थान पर किया जायेगा।

सक्षेप में जिस दिन युद्ध प्रारम्भ हुआ और दोनो ओर की पक्तियो में मठभेड होने वाली थी कि ख्वाजगी शेख सईद ने दो तीन बार मिया निजाम की ओर देखा। शाहजादे ने पूछा कि, "क्या देखते हो?" उसने उत्तर दिया कि, "मैं यह देखता हू कि आपके चारो ओर बड कुशल सरदार है, यदि आप सरदारी पर दृढ रहे तो विजय की आशा है। आपने इतने आदमियो को जो एकत्र किया है तो अब उनके परिश्रम तथा उनकी सेवा को भी देखिय कि वे कैसा कार्य करते हैं। यद्यपि उस ओर बहुत बडी भीड है किन्तु ऐसे सवार नही हैं।" उस ओर १५ हज़ार सवार थे। ख्वाजगी ने कहा कि "यदि हमारी ओर के लोग कार्य सपन्न कर लेते है तो बडा अच्छा है अन्यथा आप हवा पर सवार है, कोई भी आपके निकट न पहुच सकेगा।" शाहजादा यह वाक्य सुनकर हसा और उसने ख्वाजगी से कहा कि, "मैं तुम्हारे घोडे का पाँव भूमि पर (१८) देखता हू और अपने घोडे को सीने तक भूमि में डूबा हुआ पाता हू। वह कहाँ जायगा?" ख्वाजगी ने शीघ्र बधाई देने के लिए हाथ बढाया और कहा कि, "विजय का चिह्न यही है। सरदार को ऐसा ही साहसी होना चाहिए।"

जब वे रणस्थल में पहुचे तो सर्वप्रथम दरिया खा नोहानी ३० सवारो सहित युद्ध के लिए निकला और दोनो पक्तियो के बीच में खडा हो गया और सभी को सगठित करके अग्रसर हुआ। उस ओर से एक सरदार ५०० अश्वारोहियो सहित सामने आया और दोनो सेनायें युद्ध की लीला देखने लगी। दरिया खा अपने साथियो सहित शत्रुओ के ऊपर टूट पडा और इस प्रकार तलवार चलाने लगा कि लोहे से चिनगारियाँ निकलने लगी और दर्शकों की दृष्टि न ठहरती थी। अन्त मे दरिया खा विजयी हुआ और शत्रु लोग पराजित होकर पीछे हट कर अपनी सेना में चले गये। दरिया खा भी अपनी सेना में पहुच गया। दूसरी बार जब शत्रुओ की सेना से लोग निकले तो वही अपने सवारो सहित सर्व प्रथम बाहर आया और उसने उनसे युद्ध किया। इस बार भी वे लोग पराजित हुए और दरिया खा को विजय प्राप्त हुई। यहाँ तक कि शत्रु अपनी सेना में पहुच गय। ३ बार इसी प्रकार युद्ध हुआ। क्योकि दरिया खा अपने प्राण त्यागने पर तुला हुआ था और कोई भी उस ओर से नही निकल रहा था अत दरिया खा ने अपने साथियो से कहा कि, "तुम लोग यही खडे रहो, मैं इन पर अकेला आक्रमण करूँगा।" अन्त में ३ बार उसने अकेले शत्रु की सेना पर आक्रमण किया और प्रत्येक बार सेना में घुस कर बाहर निकल आया।

जब दरिया खा अपने निश्चित स्थान पर पहुच गया तो मिया हुसेन फर्मुली १७ व्यक्तियो सहित शाहजादे की ओर से बाहर निकला और दरिया खा की भाँति युद्ध किया। जब वह अपने स्थान से बढा तो शत्रुओं की सेना की ओर से डेढ हजार व्यक्तियों ने मिया हुसेन पर आक्रमण किया। दोनों दलो मे युद्ध होने लगा। जिस प्रकार दरिया खा अपने समूह सहित उन लोगो को भगा देता था इसी प्रकार उसने भी ३ बार शत्रुओ को भगाया और ३ बार उसने अकेले आक्रमण किया। वह आक्रमण करके तलवार चलाता और लौट आता था।

(१९) तदुपरान्त उमर खा शिरवानी ने ५०० सवारो सहित शाहजादे से आज्ञा प्राप्त की। जब वह मिया हुसेन के निकट पहुचा तो उसने मिया हुसेन से कहा कि, "दरिया खा तथा तुमने बडे पराक्रम

का प्रदर्शन किया, ससार को इसकी प्रशसा करनी होगी।" मिया ने उत्तर दिया कि, "हमने कुछ भी नही किया। इस समय मैं इसी लिए आया हू कि आपकी अधीनता में कुछ करूँ।" उमर खा ने कहा कि, "आपने अपना उत्तरदायित्व पूरा कर दिया।" मिया हुसेन ने पुन शपथ लेकर कहा कि, "मैं आपके अधीन हू।" खान ने कहा, "अच्छा मैं जो कुछ कहता हू तुम करो।" मिया हुसेन ने कहा कि, "मुझे स्वीकार है।" मिया उमर ने कहा कि, "जब तक मैं जीवित रहू तुम अपने स्थान से मत हिलो। जब तक मैं जीवित रहूगा किसी न किसी प्रकार तुम्हारे पास तक पहुच जाऊगा।" यह निश्चय करके वह चल दिया। उमर खा का पुत्र इबराहीम खा घोडे को भगा कर उमर खा के पास पहुचा और उमर खा को शपथ दी कि, "अपने घोडे को आगे न बढाये।" उमर खा ने जब कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया कि 'जिस प्रकार मिया मुबारक ने अपने पुत्र दरिया खा तथा ख्वाजा मुहम्मद फर्मुली ने अपने पुत्र मिया हुसेन के पराक्रम का दृश्य देखा है उसी प्रकार आप भी अपने पुत्र की वीरता का दृश्य देखें।" उसने उत्तर दिया कि, 'हम सब इसी कार्य के लिए खडे हैं।" इबराहीम खा ने कहा कि, "भीड में कुछ पता न चलेगा पृथक् देखना चाहिये।" यह कह कर उसने शत्रुओ पर आक्रमण कर दिया। ३ बार शत्रुओं की सेना पर आक्रमण किया और भाला चला कर अपने केन्द्र को लौट आया। दोनो सेनायें उसकी वीरता को देख रही थी। प्रत्येक बार जब वह आक्रमण करता तो ३-४ व्यक्तियों को घोडे की पीठ पर से भूमि पर गिरा देता और घोडे सवार बिना भाग जाते। जब उसन इस प्रकार ३ बार युद्ध किया तो उमर खा ने बुर्का फेंक कर शत्रु पर आक्रमण किया। बडा घोर युद्ध हुआ। तातार खा मारा गया। उसका भाई हसन खा वन्दी बना लिया गया। मिया निज़ाम को विजय प्राप्त हो गई। उस दिन से उसे उन्नति प्राप्त (२०) होती रही, यहा तक कि वह बादशाह हो गया।

बारबक शाह से युद्ध

युवावस्था में, जब कि उसकी आयु १८ वर्ष की थी, उसका अपने छोटे भाई बारबक शाह से युद्ध हो गया। बारबक शाह जौनपुर से सेना लेकर निकला। कन्नौज के समीप[1] दोनो सेनाओं में युद्ध हुआ। जिस समय वह सवार होने लगा एक दरवेश उसके पास पहुचा और उसने उससे कहा कि, "अपना हाथ ला।" सुल्तान ने अपना हाथ बढाया। दरवेश ने उसका हाथ पकड कर कहा कि, "जा तुझे विजय हो।" सुल्तान ने अपना हाथ खीच लिया। दरवेश ने पूछा कि, 'तू हाथ क्यो खीचता है ?" सुल्तान ने कहा, 'मैंने इस कारण हाथ खीच लिया कि तूने अच्छी बात नही कही।" दरवेश ने कहा कि, "मैं कहता हू कि तुझे विजय होगी।" सुल्तान ने उत्तर दिया कि, "यही बात अनुचित है।" जब दरवेश ने इसका कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया कि, "जब दो मुसलमानो के बीच में युद्ध हो तो एक के विषय में यह न कहना चाहिए कि उसे विजय होगी अपितु यह कहना चाहिये कि इस्लाम का कल्याण हो।'

जब सुल्तान सिकन्दर बहलोल की मृत्यु के उपरान्त ब्याना[2] के किले को विजय करके देहली पहुचा तो ३ दिन उपरान्त चौगान[3] खेलने के लिये सवार होकर निकला। वह खेल के मैदान ही में था कि उसे पूर्व की दिशा के यह समाचार प्राप्त हुए कि मुबारक खा नोहानी ने चौका नामक हिन्दू से युद्ध किया था किन्तु उसकी सेना पराजित हो गई और मुबारक खा, चौका द्वारा वन्दी बना लिया गया है। यह

१ 'ब' के अनुसार 'कन्नौज के रणक्षेत्र में'।
२ 'ब' के अनुसार केवल 'ब्याना'।
३ पोलो।

समाचार सुनते ही सुल्तान ने अपने हाथ से चौगान[1] फेंक दिया और खेल के मैदान से खाने जहा लोदी के घर पहुचा। उसे सब हाल बता कर पूछा कि, "क्या करना चाहिए?" खाने जहा ने कहा कि, "भोजन उपस्थित है। आप खाकर सवार हो जाय"। सुल्तान ने कहा कि, "भोजन भी मैं मजिल पर पहुच कर ही करूगा।" लौट कर सवार हुआ और शिविर बाहर लगा दिया। निरन्तर शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करता हुआ १० दिन उपरान्त वह चौका के पास पहुच गया। जब वह कोदी[2] नदी के निकट पहुचा तो उसने उस स्थान पर गुप्तचरो से जो कि वहा पहुचे थे पूछा कि, "दुष्ट चौका इस स्थान से कितने कोस पर है?" उन्होने उत्तर दिया कि, "७ कोस पर है।" सुल्तान ने पूछा कि, "उसे हमारी सूचना है अथवा नही।" गुप्तचरो ने उत्तर दिया, "अभी उसे कोई सूचना नही।" जो सैनिक उसके साथ थे उनसे उसने कहा कि तैयार हो जाओ। कुछ अमीरो ने निवेदन किया कि सेना को आने दें। सुल्तान ने पूछा कि, "हमारे साथ कितने लोग हैं?" उत्तर मिला कि, "लगभग ५०० सवार होगे।" सुल्तान ने कहा, "इस्लाम का सौभाग्य उन्नति पर है, इतना ही बहुत है।" उन्ही को लेकर वह लपका। उस ओर १५००० अश्वारोही तथा ३ लाख पदाती थे। कई कोस की यात्रा के उपरान्त दूसरा समाचार-वाहक पहुचा। सुल्तान ने उससे पूछा कि, "चौका इस स्थान से कितने कोस पर है?" उसने उत्तर दिया, "३ कोस पर।" सुल्तान ने पूछा, "उसे हमारी सूचना है अथवा नही?" उसने उत्तर दिया, "नही।" सुल्तान ने कहा कि, 'हे मित्रो! प्रयत्न करो। शत्रु को अभी सूचना नही मिली है और वह भागा नही है। हम उसके पास तक पहुच जायें।"

(२१) जब वह २ कोस और बढा तो एक अन्य समाचार वाहक ने आकर बताया कि, "हिन्दू को अभी-अभी सुल्तान के पहुचने के समाचार प्राप्त हुए। वह जिस दशा में था उसी दशा में भाग खडा हुआ और अपने साथ किसी भी व्यक्ति को नही ले गया है।" सुल्तान ने कहा कि, "यदि वह सुनकर ठहर जाता तो उसे फिर पता चलता।" जब सुल्तान उसके शिविर में पहुचा तो उसने देखा कि, "वह अपने पहनने के वस्त्र भी अपने साथ नही ले गया और उसी प्रकार भाग गया।" सुल्तान ने उस स्थान से उसका पीछा किया। चौका, जौंद[3] के किले तक पहुच गया। सुल्तान हुसेन शर्की स्वय वहा उपस्थित था। चौका सुल्तान हुसेन की सेवा में पहुचा। सुल्तान सिकन्दर भी पीछा करता हुआ जौंद के किले तक पहुच गया। उसने सुल्तान हुसेन के पास एक आदमी को भेज कर यह कहलाया कि, "आप मेरे चाचा के स्थान पर हैं। आप म तथा सुल्तान बहलोल के मध्य में जो कुछ होना था वह हुआ। मुझे आपसे कोई भी शत्रुता नही और मुझे आपके सम्मान का ध्यान है। यह किला तथा भूमि जो आज आपके अधिकार में है उसे आप अपने पास ही रखें। मेरे इस स्थान पर आने का उद्देश्य यह है कि आप चौका हरामखोर को दण्ड दें अथवा अपने पास से भगा दें ताकि मैं उसे उचित दण्ड दे सकूँ। आशा है आप काफिरो का पक्षपात न करेंगे।" सुल्तान हुसेन ने यह सूचना पाकर अपने एक बहुत बडे अमीर मीर सैयिद खा को राजदूत के साथ भेजा और यह कहलाया कि, "चौका मेरा सेवक है, तेरा पिता एक सैनिक था, मैं उससे युद्ध करता था। तू मूर्ख बालक है। यदि तू व्यर्थ के कार्य करेगा तो तुझे तलवार के स्थान पर जूते से मारूगा।" सुल्तान सिकन्दर ने यह सुनकर कहा कि, "मैं उसे पहले चाचा कहता था अत मुझे उसके सम्मान का ध्यान था। मेरा उद्देश्य काफिर को दण्ड देना है। यदि वह काफिर का साथ देगा तो मुझे विवश होकर युद्ध करना पडेगा।

१ बल्ला
२ गोमती।
३ रोहतास सरकार में (आईने अकबरी)।

मैंने स्वय कोई अनुचित बात नही कही है। उन लोगों ने मुसलमान होकर अपने मुह से जूते का नाम लिया है। यदि ईश्वर ने चाहा तो वह उसी मुख पर पडेगा।" सुल्तान हुसेन का प्रतिष्ठित अमीर सैयिद खा यह सन्देश लाया था। सुल्तान सिकन्दर ने कहा कि, "तुम मुहम्मद साहब की सतान हो। उसे क्यो नही समझाते ताकि वह लज्जित हो।" मीरान ने उत्तर दिया कि, "इस बात में हम उसके अधीन हैं, जो कुछ वह कहेगा वह होगा।" सुल्तान ने कहा कि, "सौभाग्य तथा बुद्धि एक दूसरे से सबद्ध होते हैं। सौभाग्य के विमुख हो जाने के उपरान्त बुद्धि का भी अन्त हो जाता है। तुम लोग विवश हो, यदि ईश्वर ने चाहा तो कल जब कि वह पलायन करेगा तो मैं तुम्हें इस बात की स्मृति दिलाऊगा। यदि आज ही समझ जाओ तो अच्छा है।" यह कह कर सुल्तान ने उसे विदा कर दिया। तदुपरान्त उसने अपने अमीरो से मिल कर युद्ध करना निश्चय किया। वह प्रत्येक अमीर के शिविर में पहुचता और उससे कहता, 'कि सुल्तान (२२) बहलोल शाह के साथ तुम्हारे जैसे भाईचारे के सम्बन्ध थे वैसा ही तुमने किया। मेरा यह प्रथम कार्य है, प्रयत्न करने में किसी प्रकार कोई कमी न करना।"

जब दूसरे दिन प्रातःकाल सेनाओ की पक्तियाँ ठीक हुईं तो दाईं ओर लोदी तथा शाहू खेल थे, बाईं ओर फर्मुली तथा नोहानी थे। सेना के पीछे शिरवानी तथा विशेष दस्ते के अमीर थ। उमर खा जो अपने समय का बहुत बडा योद्धा था सेना के अग्रिम दल म था। सुल्तान सिकन्दर ने मध्य में स्थान ग्रहण किया और हाथी पर सवार हुआ और प्रत्येक को प्रोत्साहन देता जाता था। अचानक उसकी दृष्टि जौंद के किले पर पडी। उसने कहा कि, "यह वही किला है जिस पर सुल्तान हुसन अभिमान करता है। हम अभी सहनशीलता से कार्य ले रहे हैं, सभव है वह समझ जाय।" वह यह बात कह रहा था कि सुल्तान हुसन अपनी सेना लेकर किले के बाहर निकला। सेना के अग्रिम भाग से उसका युद्ध हुआ और वह भाग खडा हुआ। इसी बीच में मीरान सैयिद खा तथा अन्य लोग बन्दी बना कर लाये गये, अचानक सुल्तान सिकन्दर की दृष्टि मीरान के ऊपर पडी। वह नगे सिर तथा पैदल था। उसकी पगडी उसकी ग्रीवा में बधी हुई थी। सुल्तान ने उसकी ओर मुख करके कहा कि, "उसे घोडे पर सवार करके लाया जाय।" ऐसा ही किया गया। जब उसे सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया गया तो सुल्तान ने उसकी प्रशसा करते हुए कहा कि, "स्वामी-भक्ति की दृष्टि से जो तुम्हें करना चाहिए था तुमने किया। सुल्तान हुसेन ही भाग्यहीन है, तुम क्या कर सकते थे। तुम लोग सन्तुष्ट रहो।" सुल्तान हुसन के जितने अमीर बन्दी बनाकर लाये गये थे उनमें से प्रत्येक को उसने चहार-चोबी-सुतून का एक खेमा, दो घोडे, दो ऊँट, १० दास, पलग तथा वस्त्र प्रदान किये। इस प्रकार शिविर लगवा कर उसने आदेश दिया कि उन्हें शिविरो में रखा जाय।

जिस समय सुल्तान हुसेन के पलायन के समाचार प्राप्त हुए तो मुबारक खा नोहानी ने सुल्तान के समक्ष पहुच कर निवेदन किया कि, "यदि आपका आदेश हो तो मैं उसका पीछा करू।" सुल्तान ने कहा कि, 'इस बात का पता चलाया जाय कि वह किस ओर गया है।" मुबारक खा ने उत्तर दिया कि, "हमारे आदमी यह देख कर आये हैं कि वह अमुक ओर गया है। मैंने भी अपने आदमी उस ओर भेजे हैं।" सुल्तान ने कहा कि, "यह अच्छे समाचार नही। वह तुम्हारे पास से नही भागा है। ईश्वर के कोप से भागा है। यह वही सुल्तान हुसेन है जो कि कछा[1] के घाट पर पहुच गया था और तुम लोग पराजित हो गये थे। इस समय ईश्वर ने तुम्हें शक्ति दी और उसे पराजित किया। यदि तुम ईश्वर की ओर दृष्टि रखते हो तो अभिमान से परिपूर्ण वाक्य मत कहो और सहनशीलता से कार्य करो। वह अभिमान के

१ 'ब' के अनुसार 'कच्छ'।

समाचार सुनते ही सुल्तान ने अपने हाथ से चौगान[1] फेंक दिया और खेल के मैदान से खाने जहा लोदी के घर पहुचा। उसे सब हाल बता कर पूछा कि, *"क्या करना चाहिए?" खाने जहा ने कहा कि, 'भोजन* उपस्थित है। आप खाकर सवार हो जाय"। सुल्तान ने कहा कि, "भोजन भी मैं मजिल पर पहुच कर ही करूगा।" लौट कर सवार हुआ और शिविर बाहर लगा दिया। निरन्तर शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करता हुआ १० दिन उपरान्त वह चौका के पास पहुच गया। जब वह कोदी[2] नदी के निकट पहुचा तो उसने उस स्थान पर गुप्तचरो से जो कि वहा पहुचे थे पूछा कि, "दुष्ट चौका इस स्थान से कितने कोस पर है?" उन्होंने उत्तर दिया कि, "७ कोस पर है।" सुल्तान ने पूछा कि, "उसे हमारी सूचना है अथवा नही।" गुप्तचरो ने उत्तर दिया, "अभी उसे कोई सूचना नही।" जो सैनिक उसके साथ थे उनसे उसने कहा कि तैयार हो जाओ। कुछ अमीरो ने निवेदन किया कि सेना को आने दें। सुल्तान ने पूछा कि, "हमारे साथ कितने लोग हैं?" उत्तर मिला कि, "लगभग ५०० सवार होंगे।" सुल्तान ने कहा, "इस्लाम का सौभाग्य उन्नति पर है, इतना ही बहुत है।" उन्ही को लेकर वह लपका। उस ओर १५००० अश्वारोही तथा ३ लाख पदाती थे। कई कोस की यात्रा के उपरान्त दूसरा समाचार-वाहक पहुचा। सुल्तान ने उससे *पूछा कि, "चौका इस स्थान से कितने कोस पर है?" उसने उत्तर दिया, "३ कोस पर।" सुल्तान ने पूछा,* "उसे हमारी सूचना है अथवा नही?" उसने उत्तर दिया, "नही।" सुल्तान ने कहा कि, 'हे मित्रो' प्रयत्न करो। शत्रु को अभी सूचना नही मिली है और वह भागा नही है। हम उसके पास तक पहुच जायें।"

(२१) जब वह २ कोस और बढा तो एक अन्य समाचार-वाहक ने आकर बताया कि, 'हिन्दू को अभी-अभी सुल्तान के पहुचने के समाचार प्राप्त हुए। वह जिस दशा में था उसी दशा में भाग खड़ा हुआ और अपने साथ किसी भी व्यक्ति को नही ले गया है।" सुल्तान ने कहा कि, "यदि वह सुनकर ठहर जाता तो उसे फिर पता चलता।" जब सुल्तान उसके शिविर में पहुचा तो उसने देखा कि, "वह अपने पहनने के वस्त्र भी अपने साथ नही ले गया और उसी प्रकार भाग गया।" सुल्तान ने उस स्थान से उसका पीछा किया। चौका, जौंद[3] के किले तक पहुच गया। सुल्तान हुसेन शर्की स्वय वहा उपस्थित था। चौका सुल्तान हुसेन की सेवा में पहुचा। सुल्तान सिकन्दर भी पीछा करता हुआ जौंद के किले तक पहुच गया। उसने सुल्तान हुसेन के पास एक आदमी को भेज कर यह कहलाया कि, "आप मेरे चाचा के स्थान पर हैं। आप में तथा सुल्तान बहलोल के मध्य में जो कुछ होना था वह हुआ। मुझे आपसे कोई भी शत्रुता नही और मुझे आपके सम्मान का ध्यान है। यह किला तथा भूमि जो आज आपके अधिकार में है उसे आप अपने पास ही रखें। मेरे इस स्थान पर आने का उद्देश्य यह है कि आप चौका हरामखोर को दण्ड दें अथवा अपने पास से भगा दें ताकि मैं उसे उचित दण्ड दे सकूँ। आशा है आप काफिरो का पक्षपात न करेंगे।" सुल्तान हुसेन ने यह सूचना पाकर अपने एक बहुत बडे अमीर मीर सैयिद खा को राजदूत के साथ भेजा और यह कहलाया कि, "चौका मेरा सेवक है, तेरा पिता एक सैनिक था, मैं उससे युद्ध करता था। तू मूर्ख बालक है। यदि तू व्यर्थ के कार्य करेगा तो तुझे तलवार के स्थान पर जूते से मारूगा।" सुल्तान सिकन्दर ने यह सुनकर कहा कि, 'मैं उसे पहले चाचा कहता था अत मुझे उसके सम्मान का ध्यान था। मरा उद्देश्य काफिर को दण्ड देना है। यदि वह काफिर का साथ देगा तो मुझे विवश होकर युद्ध करना पड़ेगा।

१ बल्ला
२ गोमती।
३ रोहतास सरकार मे (आईने अकबरी)।

मैंने स्वय कोई अनुचित बात नही कही है। उन लोगों ने मुसलमान होकर अपने मुह से जूते का नाम लिया है। यदि ईश्वर ने चाहा तो वह उसी मुख पर पडेगा।" सुल्तान हुसेन का प्रतिष्ठित अमीर सैयिद खा यह सन्देश लाया था। सुल्तान सिकन्दर ने कहा कि, "तुम मुहम्मद साहब की सतान हो। उसे क्यों नही समझाते ताकि वह लज्जित हो।" मीरान ने उत्तर दिया कि, "इस बात में हम उसके अधीन है, जो कुछ वह करेगा वह होगा।" सुल्तान ने कहा कि, "सौभाग्य तथा बुद्धि एक दूसरे से सबद्ध होते हैं। सौभाग्य के विमुख हो जाने के उपरान्त बुद्धि का भी अन्त हो जाता है। तुम लोग विवश हो, यदि ईश्वर ने चाहा तो कल जब कि वह पलायन करेगा तो मैं तुम्हें इस बात की स्मृति दिलाऊगा। यदि आज ही समझ जाओ तो अच्छा है।" यह कह कर सुल्तान ने उसे विदा कर दिया। तदुपरान्त उसने अपने अमीरो से मिल कर युद्ध करना निश्चय किया। वह प्रत्येक अमीर के शिविर में पहुचता और उससे कहता, "कि सुल्तान (२२) बहलोल शाह के साथ तुम्हारे जैसे भाईचारे के सम्बन्ध थे वैसा ही तुमने किया। मेरा यह प्रथम कार्य है, प्रयत्न करने में किसी प्रकार कोई कमी न करना।"

जब दूसरे दिन प्रात काल सेनाओ की पक्तियां ठीक हुई तो दाईं ओर लोदी तथा शाहू खेल थे, बाईं ओर फर्मुली तथा नोहानी थे। सेना के पीछे शिरवानी तथा विशेष दस्ते के अमीर थे। उमर खा जो अपने समय का बहुत बडा योद्धा था सेना के अग्रिम दल में था। सुल्तान सिकन्दर ने मध्य में स्थान ग्रहण किया और हाथी पर सवार हुआ और प्रत्येक को प्रोत्साहन देता जाता था। अचानक उसकी दृष्टि जौंद के किले पर पडी। उसने कहा कि, "यह वही किला है जिस पर सुल्तान हुसेन अभिमान करता है। हम अभी सहनशीलता से कार्य ले रहे है, सभव है वह समझ जाय।" वह यह बात कह रहा था कि सुल्तान हुसेन अपनी सेना लेकर किले के बाहर निकला। सेना के अग्रिम भाग से उसका युद्ध हुआ और वह भाग खडा हुआ। इसी बीच में मीरान सैयिद खा तथा अन्य लोग बन्दी बना कर लाये गये, अचानक सुल्तान सिकन्दर की दृष्टि मीरान के ऊपर पडी। वह नगे सिर तथा पैदल था। उसकी पगडी उसकी ग्रीवा में बधी हुई थी। सुल्तान ने उसकी ओर मुख करके कहा कि, "उसे घोडे पर सवार करके लाया जाय।" ऐसा ही किया गया। जब उसे सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया गया तो सुल्तान ने उसकी प्रशसा करते हुए कहा कि, "स्वामी भक्ति की दृष्टि से जो तुम्हें करना चाहिए था तुमने किया। सुल्तान हुसेन ही भाग्यहीन है, तुम क्या कर सकते थे। तुम लोग सन्तुष्ट रहो।" सुल्तान हुसेन के जितने अमीर बन्दी बनाकर लाये गये थे उनमें से प्रत्येक को उसने चहार-चोबी-सुतून का एक खेमा, दो घोडे, दो ऊँट, १० दास, पलग तथा वस्त्र प्रदान किये। इस प्रकार शिविर लगवा कर उसने आदेश दिया कि उन्हें शिविरो में रखा जाय।

जिस समय सुल्तान हुसेन के पलायन के समाचार प्राप्त हुए तो मुबारक खा नोहानी ने सुल्तान के समक्ष पहुच कर निवेदन किया कि, "यदि आपका आदेश हो तो मैं उसका पीछा करू।" सुल्तान ने कहा कि, "इस बात का पता चलाया जाय कि वह किस ओर गया है।" मुबारक खा ने उत्तर दिया कि, "हमारे आदमी यह देख कर आये हैं कि वह अमुक ओर गया है। मैंने भी अपने आदमी उस ओर भेजे हैं।" सुल्तान ने कहा कि "यह अच्छे समाचार नही। वह तुम्हारे पास से नही भागा है। ईश्वर के कोप से भागा है। यह वही सुल्तान हुसेन है जो कि कछा[1] के घाट पर पहुच गया था और तुम लोग पराजित हो गये थे। इस समय ईश्वर ने तुम्हें शक्ति दी और उसे पराजित किया। यदि तुम ईश्वर की ओर दृष्टि रखते हो तो अभिमान से परिपूर्ण वाक्य मत कहो और सहनशीलता से कार्य करो। वह अभिमान के

१ 'ब' के अनुसार 'कीछ' ।

कारण इस दुर्दशा को प्राप्त हो गया, तुम लोग ईश्वर से क्षमा याचना करो और उसे ईश्वर को सौप दो।" (२३) मुबारक खा ने सिर नीचे करके कुछ न कहा। उसे युवावस्था में इतनी आश्चर्यजनक सहनशीलता प्राप्त थी।

छन्द

"पुत्र की माता इस यश के लिए बधाई की पात्र है,
जो अपनी गोद में ऐसे पुत्र का पालन पोषण करती है।।"

मेरी यह इच्छा है कि सुल्तान सिकन्दर के राज्य-काल की कुछ घटनाओ का उल्लेख करू। उसके कुछ मशायख[1] तथा अमीरो के गुणो के विषय मे लिखूं।

शेख हसन से सम्बन्ध

सुल्तान सिकन्दर को जब कि वह शाहजादा था निज़ाम खा कहा जाता था। ईश्वर ने उसे इतना अधिक रूपवान् बनाया था कि जो भी सुहृद उसकी ओर दृष्टिपात करता वह किसी अन्य को कुछ न समझता था। शेख अबुल अला के पौत्र शेख हसन जिनकी कब्र रापरी मे है शाहज़ादे पर आसक्त हो गये थे। एक दिन मिया निज़ाम एकान्त में बैठा था। अचानक शेख हसन उस स्थान पर पहुच गये। शाहज़ादे ने पूछा कि, "तू बिना सूचना के किस प्रकार आ गया?" मिया शेख हसन ने कहा कि, "क्या तू नही जानता कि मै किस प्रकार आया?" शाहज़ादे ने पूछा कि, "तू अपने आपको मेरा आशिक कहता है?" शेख ने उत्तर दिया कि, "इस बात मे मेरा कोई अधिकार नही है।" शाहज़ादे ने उससे आगे आने के लिए कहा। शेख आगे बढे। सुल्तान के समक्ष एक जलती हुई अगीठी रखी हुई थी। सुल्तान ने शेख की गर्दन को पकड कर शेख के सिर को धधकती हुई अगीठी पर रख दिया। शेख हसन ने अपना सिर तथा मुख आग पर रहने के बावजूद कोई भी व्याकुलता प्रदर्शित न की। शाहज़ादा अपनी पूरी शक्ति से शेख की गर्दन को पकड कर अगीठी पर रखे हुए था। इसी बीच में मुबारक खा नोहानी पहुच गया। उसने यह देख कर पूछा कि "यह कौन है?" शाहज़ादे ने उत्तर दिया कि, "शेख हसन हैं।" मुबारक खा ने कहा कि, "हे धृष्ट! तू क्या कर रहा है? शेख हसन को इस अग्नि से कोई हानि नही पहुची है। तुझे अपनी हानि का भय करना चाहिए।" शाहज़ादे ने कहा कि, "यह अपने आपको मेरा आशिक बताता है।" खान ने कहा कि, "तुझे ईश्वर के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए कि एक बुजुर्ग ने तुझे पसन्द कर लिया। यदि तू लोक तथा परलोक में अपना कल्याण चाहता है तो इनकी सेवा कर।" उस समय उसने मिया निज़ाम का हाथ पकड कर शेख के सिर को आग से हटा दिया। आग का शेख पर कोई प्रभाव न हुआ था। तदुपरान्त सुल्तान ने आदेश दिया कि "शेख के गले, हाथ तथा पाव में जजीर डाल कर कोठरी मे बन्द कर दिया जाय और उसमें ताला लगा दिया जाय।" कुछ समय उपरान्त बाजार से कुछ लोगो ने आकर यह समाचार पहुचाये कि शेख हसन बाज़ार में नृत्य कर रहे हैं। सुल्तान ने आदेश दिया कि, "उसे पकड लाया जाय।" शाहज़ादे ने पूछा कि, 'तू अपने आपको मेरा आशिक बताता है फिर तू क्यो मेरे बन्दीगृह (२४) से बाहर निकला?" शेख ने कहा कि, "मै स्वय नही निकला। मेरे दादा शेख अबुल अला मेरा हाथ पकड कर ले गये।" शेख ने जो कुछ कहा था, सत्य था, कारण कि कोठरी में ताला लगा हुआ था और

१ सूफ़ी सन्त।

जजीरें पडी हुई थीं[1] और शेख बाजार में नृत्य कर रहे थे। इसके उपरान्त फिर कभी शाहजादे ने शेख की परीक्षा न ली और उनके प्रति कोई धृष्टता प्रदर्शित न की।

सुल्तान सिकन्दर का शेख समाउद्दीन द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करना

उसकी बुद्धिमत्ता तथा सूझबूझ के विषय में निम्नांकित घटना से अनुमान लगाना चाहिए। जब सुल्तान बहलोल की मृत्यु हो गई तो मिया निजाम को राज्य के समस्त उच्च पदाधिकारियों ने बादशाही के लिए बुलवाया। देहली से प्रस्थान करने के पूर्व वह शेख समाउद्दीन के पास विदा हेतु पहुचा। मीजान[2] नामक पुस्तक अपने साथ ले ली और विदा के सम्बन्ध में कुछ न कहा। अभिवादन करके वह आदरपूर्वक बैठ गया। पुस्तक रखकर उनसे पाठ पढाने की प्रार्थना की। उन्होंने उसके प्रति शुभकामना प्रकट करके उसे प्रारम्भिक पाठ पढाना शुरू किया। पाठ को ईश्वर की वन्दना तथा मुहम्मद साहब एव उनकी सतान की प्रशसा से प्रारम्भ करके लोक तथा परलोक में उसके कल्याण से सबधित शब्द कहे। जब लोक तथा परलोक के कल्याण के सम्बन्ध में शेख ने कहा तो मिया निजाम ने कहा कि, "एक बार आप पुन इस वाक्य को कहें।" इसी प्रकार ३ बार शेख की शुभ वाणी से य वाक्य कहलवाये। तदुपरान्त उसने पुस्तक को बगल म रख कर विदा चाही और प्रस्थान करने के विषय में शेख से कहा तथा धरती चुम्बन करके रवाना हो गया। इस घटना से पता चलता है कि वह कितना बुद्धिमान् तथा समझदार था।

न्याय

जिन लोगो पर अत्याचार होता था उनके प्रति न्याय करने में वह अत्यधिक परिश्रम करता था। वह किसी मलिक को अत्याचार नही करने देता था। उसका वकील दरिया खा नोहानी न्याय हेतु चबूतरे पर समस्त दिन तथा एक घडी रात्रि तक उपस्थित रहता था। काजियो तथा आलिमो में से १२ व्यक्ति फतवा[3] देने के लिए शाही दरबार में उपस्थित रहते थे। दीवाने विजारत के चबूतरे पर जो अभियोग प्रस्तुत होता था उसे उन विद्वानो के पास भेज दिया जाता था। वे लोग शरा के अनुसार अभियोगो का निर्णय करते थे और फतवा लिख कर सुल्तान की सेवा में भेजते थे। विजारत के चबूतरे पर अथवा आलिमो की गोष्ठी में जो भी वार्ता होती उनमें से प्रत्येक को गुलाम बच्चे, जो इसी कार्य हेतु नियुक्त रहते थे, सुल्तान की सेवा में पहुचाया करते थे। गुलाम बच्चे प्रात काल से लेकर सभा के अन्त तक उपस्थित रहते थे और एक-एक बात पहुचाया करते थे।

भूमि के सम्बन्ध मे निर्णय

एक दिन अवल[4] कस्बे के एक सैयिद ने एक प्रार्थना पत्र भेजा कि "अवल परगने के मिया वजहदार मलीह ने हमारी इमलाक की भूमि का अपहरण कर लिया है और यद्यपि उससे बडा आग्रह किया गया किन्तु वापस नही करता।' सुल्तान ने आदेश दिया कि इस अभियोग को दीवाने विजारत के सिपुर्द कर (२५) दिया जाय ताकि वे लोग पूछताछ करके इसका निर्णय कर सकें। दो मास तक इस अभियोग के विषय में वादविवाद होता रहा और कोई निर्णय न हो सका। नित्यप्रति दोनो पक्ष की बात सुल्तान

१ ब' के अनुसार 'जजीर भूमि पर पड़ी हुई थी'।
२ अरबी व्याकरण की एक पुस्तक।
३ धार्मिक समस्याओं में परामर्श।
४ ब' म भी 'अवल' है, सम्भवत कोल'।

की सेवा में प्रस्तुत की जाती थी। दो मास उपरान्त सुल्तान ने आदेश दिया कि, "यह कौन सी विपत्ति है जो एक अभियोग का निर्णय नही हो पाता। आज यही बैठे रहो, जब तक इस अभियोग का निर्णय न हो जाय कोई भी यहा से न जाय।"[1] आलिम, दीवाने विजारत के अधिकारी तथा मिया मलीह सभी उपस्थित हुए और वादविवाद करते रहे। पूरा दिन व्यतीत हो गया, ३ घडी रात व्यतीत हो गई। हर बार उन लोगो की वार्ता सुल्तान तक पहुचायी जाती थी। यहा तक कि अभियोग समाप्त हो गया और जो बात सत्य थी उसका पता चल गया। यह निर्णय हुआ कि सैयिद पर मलीह तुर्क ने अत्याचार किया है। सुल्तान ने आदेश दिया कि मलीह से पूछा जाय कि, "मैंने आदेश दिया था या नही कि कोई किसी पर अत्याचार न करे? सभी की तौकी[2] पर यह बात बार-बार लिखी जाती है कि 'इमलाक तथा वजायफ के अतिरिक्त[2]।' तूने आदेश की अवहेलना क्यो की?" उसने लज्जित होकर सिर झुका लिया और कहा कि "मैंने भूल की।" सुल्तान ने आदेश दिया कि "तू ३ बार इस बात की घोषणा कर कि मलीह अपराधी तथा जालिम है और सैयिद मजलूम है।"[3] जब उसने ३ बार यह वाक्य कहे तो सुल्तान ने कहा कि, 'तू इसी योग्य है कि मुहकमे[4] म अपमानित हो।" उसने उसकी जागीर जब्त कर ली और जब तक वह जीवित रहा गैर वजही रह कर भूखा मरता रहा।[5]

घोडे की चोरी

एक दिन शाही अश्वशाला से एक घोडा जो जलाल मीर आखुर के अधीन था चोरी चला गया। जब सुल्तान को इसकी सूचना दी गई तो सुल्तान ने पूछा कि, "घोडा किससे सबधित था?" उत्तर दिया गया कि, "मलिक नत्थू कासी से सम्बन्धित था।' सुल्तान ने आदेश दिया कि, "जलाल को आगरा के शिकदार मुहम्मद जैतून के सिपुर्द कर दिया जाय ताकि वह उससे घोडे का असली मूल्य वसूल कर ले।" तीसरे दिन चोर को घोडे सहित धौलपुर के निकट बन्दी बना लिया गया और उसे उपस्थित किया गया। सुल्तान ने आदेश दिया कि, "मुहम्मद जैतून से पूछा जाय कि उसने जलाल से धन वसूल किया था अथवा नही।" मुहम्मद जैतून बडी कठिनाई में पड गया। यदि वह कहता कि मैंने धन नही लिया है तो यह पूछा जाता कि इतने दिन तक विलम्ब क्या किया गया। यदि वह कहता कि मैंने धन ले लिया तो यह झूठ होता। उसने ऐसा उत्तर दिया जिसमें दोनो ही बातें आती थी। उसने कहा कि, "जलाल ने दास को उसी दिन सतुष्ट कर दिया था।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "क्योंकि जलाल ने मूल्य अदा करना निश्चय कर लिया है अत घोडा उसे दे दिया जाय।" जलाल ने घोडा १० हज़ार तन्के में बेच डाला। ४ हज़ार तन्के उसने मुहम्मद को दे दिये और ६ हज़ार स्वय ले लिये। चोर को ३ दिन तक बन्दी रक्खा गया।

दरबारे आम के दिन खानेखाना नोहानी ने जब चोर को देखा तो कहा कि, "चोर को किस कारण रख छोडा है? ले जाकर इसकी हत्या कर दो।" इसी बीच मे सुल्तान बाहर निकल आया और पहुचते

१ 'ब' के अनुसार 'फ़रमान'।
२ 'ब' के अनुसार, 'इमलाक तथा वजायफ़ पर अधिकार न जमाया जाय। इमलाक तथा वजायफ़ को जागीर से पृथक् रक्खा जाय'।
३ 'ब' में 'सैयिद न्याय के अनुसार आचरण करता था'।
४ 'ब' के अनुसार 'मुहक्मये शरईया'।
५ 'ब' के अनुसार 'जागीर का स्थानान्तरण कर दिया गया और जब तक वह जीवित रहा बिना जागीर के रहा'।

(२६) ही कहा कि, "चोर की हत्या करने का एक समय वह था जब कि उसने चोरी की थी, यदि उसी स्थान पर उसकी हत्या कर दी जाती तो उचित था, दूसरा स्थान वह था जहा उसे सपत्ति सहित पकडा गया था। वह उस स्थान पर मार डाला जाता तो उचित था। मेरे द्वार के समक्ष जो कि दारे अमान[1] है उसकी हत्या का आदेश ऐसे अवसर पर देना जब कि सपत्ति भी प्राप्त कर ली गई है बडे विचित्र प्रकार के इस्लाम का प्रदर्शन करना होगा।" उसने आदेश दिया कि चोर को मलिक मुहम्मद जैतून को सौंप दिया जाय जो उसे बन्दीगृह में रखे। उसके आदेशानुसार उसे बन्दी बना दिया गया। उस समय यह प्रथा थी कि ईद तथा बकरीद, आशूरे[2] एव मुहम्मद साहब की मृत्यु के दिन[3] उन बन्दियो की सूची लाई जाती थी जोकि धन के सम्बन्ध मे बन्दी न बनाये जाते थे[4]। उनमें से कुछ लोगो को मुक्त कर दिया जाता था। यह चोर भी ७ वर्ष तक बन्दी रहा। ७ वर्ष उपरान्त सुल्तान ने आदेश दिया कि "उससे पूछा जाय कि यदि वह इस्लाम स्वीकार कर ले तो उसे मुक्त कर दिया जायगा।" उसने कहा, "यदि दास को ७ दिन उपरान्त भी इस्लाम स्वीकार करने का आदेश होता तो वह इस्लाम स्वीकार कर लेता। अब जब कि ७ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं तो यह अपनी इच्छा से मुसलमान होता है।" उसे बन्दीगृह से निकाला गया और उसे इस्लाम की शिक्षा दी गई। उसका खतना[5] कराया गया, नमाज तथा इस्लाम के आदेशो की शिक्षा दी गई। तदुपरान्त सुल्तान की सेवा में उसे उपस्थित करने की अनुमति मागी गई। सुल्तान ने आदेश दिया कि, "उसे वस्त्र प्रदान किये जाय। इसके अतिरिक्त उसे १५ तन्के भी प्रदान करके कह दिया जाय कि यदि वह जाना चाहे तो यह धन उसे मार्ग-व्यय हेतु दिया जाता है अन्यथा इतने ही तन्के उसे वेतन के रूप में प्राप्त होते रहेंगे।" उसने निवेदन किया कि, "अब मैं कहा जाऊ ? ७ वर्ष वन्दीगृह में रहने के उपरान्त मैं चोरी करना इस प्रकार भूल गया हू कि अब यह कार्य करने की मेरी इच्छा नही। इस्लाम स्वीकार करके मै अपने सम्बन्धियो से भी पृथक् हो गया। यदि सुल्तान चोरी की रोक थाम इसी प्रकार करते रहगे तो दास का विश्वास है कि सुल्तान के राज्यकाल में कोई भी चोरी न करेगा। कारण कि चोर जान पर खेल कर काम करता है। जो कुछ उसे मिल जाता है उसे वह पर्याप्त समझता है और जो कुछ पैदा करता है उसे एक दिन में खा जाता है और भविष्य की कोई चिन्ता नही करता। जब वह चोरी करने के लिए निकलता है तो प्राण से हाथ धो लेता है और यह समझ लेता है कि या तो प्राण जाय या सफलता प्राप्त हो, किन्तु इस कुकर्म को वह अच्छा नही समझता। अब दास इस दरबार से कहा जाय। दास से जो कुछ भी सेवा हो सकेगी वह करेगा।"[6] सुल्तान ने पूछा कि, "क्या सेवा कर सकते (२७) हो ?" उसने कहा कि, 'मेरे साथ कुछ लोग नियुक्त कर दिये जाय, मैं किले के द्वार पर बैठा रहूगा, यदि समस्त सेना में चोरी हो जाय तो दास पर उसका उत्तरदायित्व होगा।'"[7] उसकी प्रार्थना

१ शान्ति का घर अर्थात् जहाँ पहुँच कर किसी पर अत्याचार नहीं हो सकता।
२ १० मुहर्रम।
३ १२ रबी-उल अव्वल।
४ सम्भवत न का प्रयोग ठीक नहीं।
५ मुसलमान बच्चे के लिङ्ग के अगले भाग की त्वचा काट देने का संस्कार। इस्लाम स्वीकार कर लेने के उपरान्त प्रत्येक व्यक्ति के लिये चाहे उसकी जो भी अवस्था हो इस संस्कार का पालन उचित समझा जाता है।
६ 'ब' में चोर की वार्ता बड़े संक्षिप्त रूप में दी गई है। सारांश इस प्रकार है कि 'जो कष्ट मैंने ७ वर्ष तक भोगे, यदि उनका ज्ञान चोरों को हो जाय तो वे चोरी करना त्याग देंगे'।
७ 'ब' के अनुसार 'शहर का द्वार मेरे सिपुर्द कर दिया जाय। यदि चोरी हो जाय, तो फिर उसका उत्तर-दायित्व मेरे ऊपर होगा'।

स्वीकार कर ली गई। एक दिन चारसू नामक बाजार में चोरी हो गई। बजाजो की दूकानो को तोड कर कपडे इत्यादि चुरा लिए गये, बजाजो ने न्याय की याचना की और सुल्तान से फरियाद की। सुल्तान ने आदेश दिया कि, "उस नवमुस्लिम से पूछा जाय कि वह तो कहता था कि यदि चोरी हो जाय तो मैं जमानत करता हू, अब वह इस बात का उत्तर दे।" उसने कहा कि, "मुझे चार दिन का अवकाश दिया जाय ताकि मैं इस विषय में पूछताछ करू।"[1] ३ दिन उपरान्त उसने कहा कि "यह चोरी सेना वालो ने की है। सेना में जहा कही भी माविया̆न[2] हो उन्हें उपस्थित करके मेरे सिपुर्द कर दिया जाय।" उन दिनो में कोई भी अमीर तथा सिपाही ऐसा न था जो मावियो को पहरे के लिए न रखता हो। कई सौ मावी एकत्र हो गये। जब पूछताछ की गई तो चोर भी उन्ही लोगो में से निकला। उन लोगो ने उससे नम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि, "हमें बन्दी न बनवाया जाय, हमें मुक्ति प्रदान कर दी जाय। सामान भी हमस न दिलवाया जाय, अपितु जिस मूल्य पर वह क्रय किया गया था वह हम दे देंगे।"[3] तदुपरान्त उसने उन लोगो को क्षमा करवा दिया और वादियो को धन दिला कर सतुष्ट करा दिया। चोरो का नाम भी उसने किसी को न बताया और उनसे प्रतिज्ञा करा ली कि इस बार उन्हें क्षमा किया जाता है, यदि वे पुन चोरी करेंगे तो उन्हें बन्दी भी बनवा[4] दिया जायेगा और जो सामान चुराया है उसे भी वसूल कर लिया जायगा। इस घटना के उपरान्त बहुत समय तक कोई चोरी न हुई।

सुल्तान का राज्य के सम्बन्ध मे ज्ञान

वह सुल्तान (हर बात की) अत्यधिक छानबीन करता था। लोगो के विषय में इस सीमा तक जानकारी रखता था कि यदि किसी घर में कोई बात कही जाती तो वह उस तक पहुच जाती थी।[5] यह बात प्रसिद्ध है कि एक रात्रि में भीकन खा लोदी कोठे पर सो रहा था। वर्षा आ गई। उस समय उसके विश्वासपात्रो तथा सेवको में से कोई भी उपस्थित न था। वह तथा उसकी पत्नी वर्षा के कारण पलग को भीतर ले गये। प्रात काल जब भीकन खा दरबार में उपस्थित हुआ तो सुल्तान न कहा कि, 'इतने बडे-बडे अमीर रात्रि मे अपने पास कोई सेवक नही रखते और स्वय पलग बाहर से भीतर ले जाते हैं।"

सेना को फ़रमान भेजने की प्रथा

यदि वह विलायत की सीमा पर अर्थात् बिहार अथवा चन्देरी[6] की सीमा पर सेनायें भेजता तो रोजाना दो फरमान उनके पास पहुचते थे। एक उस समय जब कि सेनायें कूच करती थी और दूसरा उस समय जब सेनायें पडाव करती थी और यह आदेश दिया जाता था कि अमुक स्थान पर शिविर लगाये जायँ।[7] जिस स्थान पर शिविर लगाने का आदेश होता था उसके विषय में वह लिखता था। यदि (सेना)

१ 'ब' के अनुसार 'पूछ-ताछ करके चोर का पता लगा सकू'।
२ सम्भवत मेवाती।
३ 'ब' के अनुसार 'उन लोगों ने आग्रह किया कि हमारे विषय में सुल्तान को सूचना न दी जाय। जो सामान चोरी गया है उसका मूल्य अदा करके हम उसके स्वामी को संतुष्ट कर लेंगे'।
४ 'ब' के अनुसार 'हत्या करा दी जायगी'।
५ 'ब' के अनुसार जब कोई अपने घर जल पीता तो उसकी भी सूचना सुल्तान को हो जाती'।
६ 'ब' में इन स्थानों का उल्लेख नहीं है।
७ 'ब' के अनुसार एक प्रस्थान के समय कि किस समय प्रस्थान करें और कितनी यात्रा करे और दूसरा पड़ाव के समय कि अमुक स्थान पर पड़ाव करें। उस स्थान का पता बताया जाता था।

५०० अथवा १००० कोस पर भी होती तो भी दो फरमान पहुचते थे। यह पता नही कि यह किस (२८) प्रकार सपन्न होता था।

सुल्तान का न्याय

जिन दिनो मे रायसेन के किले में काफिरो का अधिकार हो गया था तो बोरवा कौम के दो व्यक्ति आगरा से रायसेन पहुच कर नौकर हो गये। एक दिन एक ग्राम मे उन्हें अत्यधिक लूट की सपत्ति प्राप्त हुई। मुजफ्फरी, अत्यधिक रगीन वस्त्र तथा दो बहुमूल्य लाल प्राप्त हुए। उन दो भाइयो में से एक ने कहा कि, 'हमें इतनी अधिक धन-सपत्ति प्राप्त हो गई है कि अब हम नौकरी के अपमान को सहन न करें और अपने घर चल कर शाति से जीवन व्यतीत करे।" दूसरे ने कहा, "हम लोग सिपाही हैं, पहली बार हमें इतना धन प्राप्त हुआ, यदि किसी दिन हमने कोई अन्य पौरुष का कार्य कर लिया तो हमें बडी उन्नति प्राप्त हो जायगी।" उस भाई ने कहा, "यदि तेरी इच्छा है तो तू रुक जा, मैं न रुकूँगा।" जो कुछ मिला था उसे दोनो भाइयो ने बाट लिया। मुजफ्फरी, आधे वस्त्र तथा एक लाल उस भाई को प्राप्त हुए। वह विदा होकर जाने लगा तो दूसरे भाई ने भी अपना हिस्सा उसे दे दिया और यह कहा कि, "इसे मेरे घर पहुचा देना।" जब वह घर पहुचा तो उसने लाल के अतिरिक्त अपने भाई की समस्त सम्पत्ति उसके घर पहुचा दी। २ वर्ष उपरान्त वह भाई भी अपने घर पहुचा। जब वह अपनी पत्नी से मिला तो उसने उससे पूछा कि, 'जो कुछ मैंने अपने भाई के हाथ भेजा था वह सब तुझे मिल गया अथवा नही? विस्तार से बता कि तुझे क्या-क्या मिला।" उसने कहा कि, "इतनी मुजफ्फरी, इतने रगीन वस्त्र तथा इतने टुकडे महमूदी वस्त्र के मुझे प्राप्त हुए हैं।" उसने पूछा कि, "एक लाल भी प्राप्त हुआ अथवा नही?" उसने उत्तर दिया कि, "लाल नाम का कोई वस्त्र नही प्राप्त हुआ।" सिपाही ने कहा कि, 'वह वस्त्र नही है। रत्न है।" स्त्री ने कहा कि, "मेरी समझ में नही आता कि तू क्या कहता है।" उसने उत्तर दिया कि, "वह एक पत्थर का टुकडा है जो चमकदार तथा लाल रग का होता है।" उसने उत्तर दिया कि, "मैंने उसे नही देखा।" यह बात उसकी समझ में न आई। उसने कहा कि, "तू झूठ बोल रही होगी।" स्त्री ने शपथ ली कि, "तू जो कुछ कहता है मैंने उसे कदापि नही देखा है।" दोनो भाइयो के घर मिले हुए थे। उसन अपने घर के भीतर से भाई को पुकार कर कहा कि, 'जो कुछ मैंने अपने घर भेजा था उसमें से तूने सब कुछ तो पहुचाया किन्तु उस लाल नगीने को क्यो नही दिया?" उसने उत्तर दिया कि, "उसे भी मैंने तेरी पत्नी को दे दिया। तू उसे चेतावनी देकर पूछ, स्त्री का मामला है। सभवत उसने तुझसे छुपा कर कही रख दिया हो। तू कई वर्ष से बाहर यात्रा कर रहा है, इन लोगो पर विश्वास न करना चाहिए। किसी को दे दिया होगा। कुछ डाट फटकार कर।" उसके पति ने उससे पुन चेतावनी देकर पूछा और कठोर शब्द कहे। स्त्री समझ गई कि वह अपने भाई के कहने पर मुझे अपमानित करेगा, अत उसन कहा कि, "मैं तेरी परीक्षा ले रही थी, तू जरा सा ठहर मैं उसे अपनी माता के घर रख आई हू, ला दूँगी।" वह व्यक्ति समझ गया और उसने कोई कठोरता प्रदर्शित न की। प्रात काल स्त्री ने कहा कि, "मैं अपनी (२९) माता के घर जा रही हू।" उसने कहा कि, "जा।" वहा से निकल कर वह मिया भूवा के दीवान[1] में पहुची और फरियाद की। मिया ने कहा कि, "कोई जाकर देखे कि कौन न्याय चाहता है।" उस स्त्री

यदि शिविर ५०० अथवा १००० कोस पर भी होता तो इसी नियम का पालन किया जाता। सभी लोग को बडा आश्चर्य होता था'।

१ न्याय विभाग।

के विषय में समाचार मिया को पहुचाये गये। उसने कहा कि, "जो बात यह कहना चाहती है उसका पता चलाया जाय।" जब उससे पूछा गया कि, "तू क्या कहना चाहती है," तो उसने उत्तर दिया कि, "मै मिया के समक्ष ही निवेदन करूगी।" जब मिया के समक्ष उसे उपस्थित किया गया तो मिया ने पूछा कि, "हे स्त्री! तू क्या कहना चाहती है?" उसने कहा कि "मेरा पति मेरे प्रति कठोरतापूर्वक व्यवहार करता है।"[1] मिया ने पूछा कि, "इसका क्या कारण है?" उसने कहा कि, "मेरे पति के भाई ने मेरे ऊपर झूठा अपराध लगाया है। वह इस प्रकार है कि दोनो भाई नौकरी हेतु गये थे। उसका भाई कुछ समय उपरान्त अपने घर लौट आया और मेरे पति ने उसके हाथ जो कुछ मेरे लिए भेजा था उसे पहुचा दिया, पत्थर के एक टुकडे जिसे लाल कहते हैं के विषय में उसने उस समय मुझसे कुछ कहा भी न था। अब मेरे पति ने घर आकर मुझसे पूछा कि 'मैंने अपने भाई के हाथ जो कुछ भेजा था वह तुझे मिल गया अथवा नही?' मैंने बताया कि हा मिल गया। जब उसने पूरा ब्योरा पूछा तो जो कुछ भी मुझे प्राप्त हुआ था उसके विषय में मैंने उसे बता दिया। उसने पूछा कि, 'क्या लाल नही मिला?' मैंने उत्तर दिया कि मैंने लाल का नाम भी नही सुना है कि वह क्या होता है। अन्त में उसने अपने भाई से पूछा कि, 'लाल मेरे घर क्यो न पहुचाया।' उसने मेरे ऊपर झूठा इल्जाम लगाया कि 'मैंने तेरी पत्नी को दे दिया था, उससे पूछो।' दोनो को[2] उपस्थित किया गया और जब उससे पूछा गया तो उसने कह दिया कि, "मैंने उसे स्त्री को दे दिया था"। मिया ने पूछा कि, "कोई साक्षी भी है?" उसने कहा कि, "हा, कई साक्षी हैं।" उसने पूछा कि, "कौन है?" उसने उत्तर दिया कि, "दो ब्राह्मण हैं।" मिया ने उन्हें बुलाने का आदेश दिया। वह वहा से जुआघर पहुचा। वहा उसे दो दरिद्र जुआडी[3] मिले। उनसे उसने कहा कि "मेरा थोडा सा कार्य है। यदि हो सके तो करो। दोनो को ३-३ तन्के दूंगा।" उन्होंने पूछा कि, "क्या कार्य है?" उसने कहा कि, "मिया भूवा के समक्ष गवाही देना है।" उन लोगो ने उत्तर दिया कि, "जहा ले चलो गवाही दे देंगे।" वह उन्हें अपने घर ले गया तथा स्नान कराया और उत्तम वस्त्र पहना कर उनके गले म यज्ञोपवीत डाला और उनके सीने तथा मस्तक पर चन्दन मल दिया। वह उन्हें पान खिला कर अपने साथ लेकर मिया भूवा की सेवा में पहुचा। मिया भूवा ने उन्हें देख कर कहा कि, "तेरे साक्षी विश्वस्त ज्ञात होते है।" उसने उनसे प्रश्न किया। उन लोगो ने उत्तर दिया कि, "जो कुछ उसने दिया है उसके विषय मे हम गवाही देते हैं।" जिस प्रकार उन्हें सिखाया गया था उन्होने एक-एक करके बता दिया कि "मुजफ़्फ़री तथा वस्त्र दो टुकडा में रखे हुए थे और दो लाल, वस्त्र के ऊपर दोनो ओर रखे हुए थे। हम लोग उस मार्ग से जा रहे थे। उसने चिल्लाकर कहा कि, 'ईश्वर के लिए एक कार्य है, थोडी देर के लिए आ (३०) जाओ।' जब हम पहुचे तो उसने हमारे हाथ में दो पासे दिये और कहा कि इनमें से प्रत्येक को इन पर रखो। हमने ऐसा ही किया और चले गये।" मिया ने उनकी गवाही स्वीकार कर ली। स्त्री के पति से कहा कि, 'जाकर अपनी पत्नी से जिस प्रकार तू समझ ले ले।'"[4] स्त्री के विलाप का उस पर कोई भी प्रभाव न हुआ। दोनों भाई तथा वह स्त्री घर पहुचे। पति ने उसे दण्ड देना चाहा। स्त्री समझ गई कि 'वह मुझे मारे पीटेगा और मेरी कोई इज्जत न रह जायेगी। नगर में मैं चोर प्रसिद्ध हो जाऊगी।'

१ 'ब' में यह वाक्य भी है 'आप कृपया मेरे प्रति न्याय करें ताकि मेरे ऊपर अकारण अत्याचार न हों'।
२ 'ब' के अनुसार 'दोनो कोरवों को उपस्थित किया गया'।
३ 'ब' के अनुसार 'दरिद्र ब्राह्मण'।
४ 'ब' के अनुसार, 'तसल्ली देकर ले ले'।

उसने उससे कहा कि, "हे पुरुष! तू मुझे न मार, यदि तू मुझे मारेगा तो मैं आत्म-हत्या कर लूँगी, तुझे कुछ भी प्राप्त न होगा और तू भी लज्जित होगा और मैं भी। यदि तू धैर्य धारण करे तो मैंने उसे एक स्थान पर छिपा दिया है, तुझे लाकर दे दूँगी।" पति ने धैर्य धारण किया। जब रात्रि समाप्त हो गई तो वह वहा से भाग कर बादशाह के महल के विशेष द्वार पर पहुची और फरियाद करने लगी। भीतर से लोग दौडते हुए आये और उन्होने उसके विषय में पूछा। उसने जो कुछ हाल कहा वह सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया गया। सुल्तान ने पुछवाया कि वह मिया भूवा के पास भी गई अथवा नही? उसने उत्तर दिया कि, "सर्व प्रथम मैं मिया भूवा के पास ही गई थी। उनके छानबीन न करने के उपरान्त सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुई हूँ। यदि मुझे यहा से भी न्याय प्राप्त न हुआ तो मेरा पति मुझे अकारण ही दण्ड देगा और मैं आत्महत्या कर लूँगी। अत यही उचित है कि मैं इसी स्थान पर आत्महत्या कर लूँ।" सुल्तान ने आदेश दिया कि दोना को बुलवाया जाय। जब वे दोनो आय तो इसी बीच में मिया भूवा भी पहुच गया। मिया भूवा से सुल्तान ने पूछा कि, "तुमने इस स्त्री के अभियोग में छानबीन की?" मिया ने निवेदन किया कि, "मैंने साक्षियो का ब्यान सुना और तदनुसार निर्णय कर दिया।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "साक्षियों को भी उपस्थित किया जाय।" वह भाई पुन जुआघर पहुचा और उन दोनों व्यक्तिया को दो-दो तन्के दिये और पूर्व की भाति वस्त्र पहना कर ले आया। सुल्तान की दृष्टि जैसे ही उन लोगो पर पडी उसने कहा कि, "ये दोनों जुआडी हैं, ३-४ तन्के देकर इन्हें लाया होगा।" मिया भूवा ने कहा कि, "देखने में ये लोग सदाचारी ज्ञात होते हैं, वास्तव में क्या है इसका पता नही।" सुल्तान ने कहा कि, "यह भी छिपा न रहेगा।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "दोना को अलग-अलग कोठरियो मे बैठा दिया जाय, जिसे बुलाया जाय वह उपस्थित हो। उसके वापस जाने के उपरान्त फिर दूसरे को बुलवाया जाय।" सुल्तान के आदेशानुसार प्रत्येक व्यक्ति को पृथक्-पृथक् बैठा दिया गया। सर्व प्रथम (३१) पति को बुलवाया गया। उसके बुलवाने के पूर्व थोडा सा मोम मगवा लिया गया था। सुल्तान ने उससे पूछा कि, "जो लाल तूने भेजा था वह कैसा था? इस मोम से उस आकृति का लाल बना।" उसने जिस प्रकार का लाल था वैसी ही आकृति बना दी। सुल्तान ने उसे लौटा दिया और उस आकृति को छुपा लिया। तदुपरान्त उसने उसके भाई को बुलवाया और पूछा कि, "लाल कैसा था? इस मोम से वैसा ही लाल बना।" उसने भी बनाया। दोना ने जो लाल बनाये थे वह एक ही प्रकार के निकले। उसने उन दोना को लौटा दिया और अपने स्थान पर बैठा दिया। तदुपरान्त उसने एक साक्षी को बुलाया और पूछा कि, "तू ने जिन लालो को देखा था उनके समान लाल इस मोम से बना।" उसने अनुमान से लाल बनाया। दोनों के बनाये हुए लाल एक दूसरे से भिन्न निकले। उसने (सुल्तान ने) उन्हें भी वापस लौटा दिया और उस स्त्री को भी उपस्थित कराया। उसने उससे भी पूछा कि, "उन लालो की आकृति को इस मोम से बना दे।" उसने कहा कि, "मैंने उसे कभी देखा ही नही कि वह कैसा था तो मैं क्या बनाऊ।" उससे अत्यधिक आग्रह किया गया किन्तु उसने वही उत्तर दिया। उसे भी लौटा दिया गया। तदुपरान्त उसने चारो को एक साथ बुला कर पूछा कि, "तुममें से प्रत्येक ने अपनी आख से लाल देखा था?" जिस व्यक्ति ने भेजा था उसने कहा कि, "मैंन स्वय भेजा था।" उसके भाई ने कहा कि, "मैं लाया था, क्यों न देखता।" साक्षियों से पूछा गया कि, "तुमने भी देखा था?" उन लोगो ने कहा कि, "हम गवाही देते हैं कि हमने देखा था।' जब उस स्त्री से पूछा गया तो उसने वही उत्तर दिया, "मैंने उसे कदापि नही देखा था।" तदुपरान्त सुल्तान ने उन (मोम के लालो) को निकाल कर मिया भूवा से कहा कि, "तुम इसी प्रकार का न्याय करते हो? इस स्त्री को अकारण ही चोर बना दिया। चोर इसके पति का भाई है।" तदुपरान्त सुल्तान ने कहा कि, "यदि सच बोलेगा और उसका हक वापस कर देगा तो तुझे क्षमा कर दिया

जायेगा अन्यथा तेरी हत्या कर दी जायेगी।" उसने लाल देना स्वीकार किया। तदुपरान्त सुल्तान ने साक्षियो से पूछा कि, "तुमने ऐसी धृष्टता क्यो की और मेरे समक्ष झूठी गवाही क्यो दी ?" उन लोगो ने उत्तर दिया, "हम लोग जुआडी है, भूखे, प्यासे और दरिद्र अवस्था में बैठे थे, प्रथम बार उसने हमें ३-३ तन्के दिये और इस वस्त्र को पहना कर स्वय लाया। हमने इसी को बहुत समझा कारण कि हम लोग बाजारो में मारे मारे घूमते थे और अपने आपको नष्ट किया करते थे।" उन्होने सुल्तान के समक्ष (३२) अपने मुह से भूमि को इतना मला कि उनके होठ सूज गये, तदुपरान्त उन्होंने ऐसा (कार्य कभी) न किया।

एक बार एक व्यक्ति की नाव यमुना नदी में डूब गई और उसकी डेढ हज़ार अशर्फिया भी उसी में डूब गईं। उसने मल्लाहो से कहा, "यदि कोई उसे बाहर निकाल लाये तो मै उसे सौ अशर्फिया दे दूंगा।" किसी ने इस बात को स्वीकार न किया। उन लोगो में से एक व्यक्ति ने कहा कि, "जो कुछ मै पसन्द करू उसे देने का यदि तू वचन दे तो फिर मै प्रयत्न करू।" उसने विवश होकर कहा कि, "मुझे स्वीकार है।" यह निश्चय करके मल्लाह जल में घुस गया और कई बार डुबकी लगाई। अचानक एक बार उसे वह थैली मिल गई। उसने जल से निकल कर उससे पुन वचन लिया कि, "तेरी सपत्ति मुझे मिल गई है, मै उसे उसी अवस्था में बाहर लाऊगा जब कि तू मुझे जो मै चाहू वह प्रदान करे।" उसने उत्तर दिया कि, "मै ऐसा ही करूगा।" अत वह उसे बाहर लाया। जब उसने उसे उस व्यक्ति के समक्ष रखा तो उसके विचारो में परिवर्तन हो गया और उसने कहा कि, "मैंने इससे पूर्व सौ अशर्फिया देने के लिए जो कहा था वह तुम्हे दूगा, तेरे कहने से क्या होता है ?" मल्लाह ने कहा कि, "मै पुन इसे जल में फेंक दूंगा, मेरा परिश्रम नष्ट होगा और तेरी सपत्ति।" दोनो मे झगडा होने लगा और वे विज़ारत के चबूतरे के समक्ष उपस्थित हुए और उन्होने अपना अभियोग पेश किया। कई दिन व्यतीत हो गये किन्तु कुछ निर्णय न हो सका। दैनिक विवरण प्रथानुसार सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया जाता था। सुल्तान ने कहा कि, "यह कौन सी आफत है कि इतने दिन हो गये और अभी तक निर्णय नही हुआ।" कुछ लोगो ने निवेदन किया कि, "हम लोग कोई आदेश नही देना चाहते। जो कुछ सुल्तान का आदेश हो उसके अनुसार कार्य किया जाय।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "दोनो को सम्पत्ति सहित उपस्थित किया जाय।" जब वे सुल्तान के दरबार मे उपस्थित हुए तो सुल्तान ने उनसे पूछा कि, "तुम लोगो ने क्या निश्चय किया था ?" सर्व प्रथम सम्पत्ति के स्वामी ने कहा कि, "मैने सौ अशर्फियो के लिए कहा था, उसे मै देता हू।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "जो कुछ तूने कहा था उसे गिन कर पृथक् कर दे।" तदुपरान्त उसन मल्लाह को बुलवाया और कहा कि, "किस शर्त पर इसे बाहर लाया था ?" उसने कहा कि, "जो कुछ इस व्यक्ति ने कहा था मैंने उसे स्वीकार नही किया था। मैंने जो बात कही वह उसने स्वीकार कर ली, अत मै जल मे घुस गया। जब मै बाहर निकला तो यह अपनी बात पर नही रहा।" सुल्तान ने पूछा कि, "तू न क्या (३३) कहा था ?" उसने कहा कि, "मैंने कहा था कि जो कुछ मुझे अच्छा लगेगा वह मुझ मिल जायेगा ? उसने यह बात स्वीकार कर ली थी।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "सौ अशर्फिया पृथक् रखी हुई है और १४०० अलग रखी है। तुझे कौन अच्छी लगती है ?" उसने कहा कि, "मुझे सौ लेना स्वीकार नही। मुझे १४ सौ अच्छी लगती है जिन्हें मै लेना चाहता हू और सौ उसे देना चाहता हू।" सुल्तान ने कहा कि, "अपनी बात से क्यो फिर रहा है।" उसने कहा कि, 'किस प्रकार ?" सुल्तान ने कहा, "तूने कहा था कि जो कुछ तेरा जी चाहेगा मै तुझे दे दूंगा। अब इस समय तुझे १४ सौ अच्छे लगे। उसको इसे दे दे।" सुल्तान ने यह आदेश देकर झगडे को समाप्त कर दिया।

एक बार एक व्यक्ति ने एक सर्राफ को सौ[1] सोने की मुहर एक थैली म रख कर धरोहर के रूप में सौंप दी। थैली किसी स्थान से सिली हुई न थी। जब वह लौटा तो उसने अपनी थैली सर्राफ से ले ली और अपनी गिरह तथा मुहर की परीक्षा कर ली। जब वह घर पहुचा तो उसे उसमें अपनी चीज न मिली। उसके स्थान पर अन्य वस्तुयें ही रखी थी। वह पुन सर्राफ के पास पहुचा और कहा कि, "यह मेरी थैली नही है।" सर्राफ ने उत्तर दिया कि, "तूने अपनी थैली पहचानी, अपनी गिरह तथा मुहरें देख ली ?" उसने कहा कि, "मुहर तथा थैली यही हैं किन्तु जो धन मैंने उसमें रखा था वह मौजूद नही है।" उसने पूछा कि, "तूने जो कुछ रखा था उसे इसी प्रकार बधा हुआ मुझे सौंपा था अथवा खुला हुआ ?" उसने कहा कि, "मैंने बधा हुआ सौपा था। उसी प्रकार बधा हुआ अपने घर ले गया। जब मैंने उसे खोला तो मुझे धन नही मिला।" उसने कहा कि, "तू मुझसे क्यों कहता है, इससे पूर्व किसी व्यक्ति ने तेरे घर में (तुझसे) विश्वासघात किया होगा। आज झूठ बोल रहा है, उत्तरदायित्व तेरे ऊपर है मेरे ऊपर कुछ नही।" वह भी वहा से विज़ारत के चबूतरे पर पहुचा। सर्राफ को भी बुलवाया गया। दोनों मे वादविवाद होने लगा। इस झगडे का भी किसी प्रकार निर्णय न होता था। सुल्तान ने पुन कहा कि, "आखिर निर्णय क्या नही होता ?" उसे उत्तर मिला कि, "बिना साक्षियो के हम लोग किसी प्रकार इसका निर्णय नही कर सकते, इसके पास कोई साक्षी नही है।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "हमारे पास भेज दिया जाय।" जब वे उपस्थित हुए तो सुल्तान ने प्रत्येक से अलग-अलग पूछा। सर्व प्रथम उसने वादी से पूछा और कहा कि, "झूठ मत बोलना।" उसने कहा कि, "जो सत्य बात है उसे मैंने दीवान के उच्च अधिकारियो से कह दिया है। मैंने जिस प्रकार अपनी थैली को मुहर लगा कर सर्राफ को सौपा था वह उसी प्रकार मेरे पास है, उसमें किसी प्रकार का अन्तर नही है किन्तु मेरी सम्पत्ति उसमें नही है। जो कुछ भी विश्वासघात हुआ है वह सम्पत्ति के सम्बन्ध में हुआ है।" तदुपरान्त सुल्तान ने सर्राफ से कहा कि, "ठीक-ठीक बता कि क्या बात है।" उसने निवेदन किया कि, "जिस प्रकार उसने मुझे थैली दी थी मैंने उसी प्रकार उसे लौटा दिया है, इसमें मेरा कोई दोष नही है और यह मेरे ऊपर दोषारोपण करता है।" सुल्तान ने कहा, "थैली जैसी इससे पूर्व थी उसी प्रकार मुहर लगा कर मुझे दे दी जाय।" लोगो ने लाकर थैली दे दी और वापस चले गये।

(३४) तदुपरान्त सुल्तान ने जो वस्त्र उतारे थे उनमें से अपने कमरबन्द को मगवाया। उसे लपेट कर सुल्तान ने एक व्यक्ति को आदेश दिया कि वह कमरबन्द को जोर से खीचे।[2] उसने सुल्तान के आदेशानुसार उसे जोर से खीचा। उसमें बीच-बीच मे बहुत से छेद हो गये। इसके पश्चात् सुल्तान ने उसे वस्त्रों में मिला कर धोबी के पास भेज दिया। जब धोबी ने वस्त्र खोले तो उसे सुल्तान के कमरबन्द में बहुत से छेद मिले। उसने सोचा कि इससे उसे अवश्य हानि पहुचेगी। वह उसे एक रफू करने वाले के पास ले गया। उस रफू करने वाले ने कहा कि, "यह मैं नही कर सकता। अमुक रफू बनाने वाले को, जो कि दूकानो के पीछे रहता है, ले जाकर दे दो कारण कि यह उसका कार्य है।" धोबी उसके पास पहुचा और उसने कमरबन्द को दिखा कर उससे कहा कि, "यह बादशाह का कमरबन्द है। मेरे घर में यह

१ 'ब' के अनुसार '६०'।

२ 'ब' के अनुसार 'सुल्तान ने आदेश दिया कि मेरे प्रयोग के पाजामे को लाया जावे। जब पाजामा उपस्थित किया गया तो उसने आदेश दिया कि इसको तह करके कटार की नोंक से इसमें छेद कर दिये जावें। पाजामे में कई सूराख़ हो गये। सुल्तान ने आदेश दिया कि अन्य वस्त्रों के साथ इसे धोबी (धोबी) को दे दिया जाय'।

खराब हो गया है। उसे इस प्रकार से ठीक कर दे कि पता न चले।" उसने कहा कि, "एक सोने की मुहर[1] इसकी मजदूरी होगी उसे ले आ।" धोबी ने उसे सोने की मुहर लाकर दे दी। उसने समय निश्चित करके धोबी को बुलवाया। जब वह निश्चित समय पर पहुचा तो उसने उसे इस प्रकार ठीक कर दिया था कि कोई भी पता न चलता था। धोबी ने जाकर वस्त्रों को धोकर जामादार[2] को सौंप दिया। सुल्तान ने जामादार को आदेश दे दिया था कि, "जब ये वस्त्र धोबी के घर से आयें तो मेरे सामने प्रस्तुत किये जाय।" जब वस्त्र धुल कर आ गये तो जामादार ने इसके विषय में सूचना दी। सुल्तान ने वस्त्र अपने पास मगवा कर कमरबन्द को खोला किन्तु अत्यधिक छानबीन करने पर भी कुछ पता न चला। तदुपरान्त सुल्तान ने धोबी को बुलवाया और कहा कि, "यह मेरा कमरबन्द नही है ?" धोबी ने कहा कि, "वही कमरबन्द है।" सुल्तान ने कहा कि, "इसमें छेद हो गये थे, वह कहा गये ?" उसने कहा कि, "दास को भय हुआ कि सभव है मुझे इसके लिए दण्ड दिया जाय अत मैंने उसे ठीक करा दिया।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "उस रफू करने वाले को बुलाओ।" धोबी रफू करने वाले को लाया। जब वह सुल्तान के समक्ष उपस्थित हुआ तो सुल्तान ने उससे पूछा कि, "तूने इस कमरबन्द को ठीक किया है ?" उसने उसे देख कर कहा कि, "हा मैंने ठीक किया है।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "खोल कर दिखा कि तूने कहा मिलाया है ?" उसने उसे उसी स्थान से खोल दिया। सुल्तान ने उसे विदा करके सर्राफ को बुलवाया और कहा कि, "मैंने तेरी चोरी पकड ली है। यदि तू सच बोलेगा तो तुझे क्षमा कर दिया जायेगा अन्यथा तेरी हत्या कर दी जायेगी।" सुल्तान ने थैली को खोल कर उसे दिखा दिया कि थैली अमुक स्थान से खोली गई थी। उसने उसे स्वीकार कर लिया। सुल्तान ने आदेश दिया कि, "जो वस्तु इसके भीतर थी उसे भी ला।" वह उसे ले आया। तदुपरान्त उसने उसे ठीक करके उसमें पैवन्द (३५) लगवा दिया और उसके स्वामी को बुलवा कर थैली उसे दे दी कि, "तेरी थैली और सपत्ति यह है। वह थैली तेरी न थी।" उसने अपने घर पर पहुच कर उसे खोला। अपनी चीजें देख कर उसे पहचान लिया।

सुल्तान के चमत्कार

सुल्तान की कुछ ऐसी बातें भी प्रसिद्ध हैं जोकि उसका चमत्कार बताई जाती है। एक बार चन्देरी के भूभाग का एक निवासी अपनी पत्नी को लेकर यात्रा हेतु पैदल चल खडा हुआ। एक दिन की यात्रा ही में वे थक गये और स्त्री के पाव मे छाले पड गये और वह बडी कठिनाई से यात्रा करने लगी। अचानक दो अश्वारोही भी उधर से यात्रा करते हुए निकले। स्त्री की दशा को देख कर उन्होने खेद प्रकट करते हुए उसके पति से कहा कि, "तू इस स्त्री को पैदल क्यो ले जा रहा है और उसे कष्ट क्यों दे रहा है ?" उसने कहा कि, "मै क्या करू, मेरे पास कोई साधन नही है।" उन्होने कहा कि, "हम एक बात कहते है यदि तू स्वीकार करे तो अच्छा है।" उसने पूछा कि "क्या बात है ?" उन लोगो ने कहा कि, "हमारा घोडा कोतल जा रहा है तू अपनी पत्नी को सवार कर दे और घोडे की लगाम को पकड कर चल।" उसने कहा कि, "मुझे विश्वास नही होता।" उन लोगों ने शपथ ली और कहा कि, "हम ईश्वर को बीच में दे कर कहते है कि तू कोई भय मत कर और तू घोडे को पकड कर ले चल।" अन्त मे उसने यह बात स्वीकार कर ली और स्त्री को सवार कर दिया और स्वय घोडे की लगाम पकड कर चलने लगा। जब वह जगल

१ 'ब' के अनुसार 'अशर्फी'।
२ वह अधिकारी जो सुल्तान के वस्त्र रखता था।

में पहुचे तो उनके हृदय में कुत्सित विचार उत्पन हो गये। उन्होने उसके पति की हत्या कर दी और स्त्री को एक के घोडे के पीछे बैठा लिया तथा चल दिये। वह स्त्री बार बार पीछे देखती जाती थी। उन लोगो ने पूछा कि, "क्या कोई अन्य व्यक्ति भी तेरे साथ है जो तू देख रही है ?" उसने उत्तर दिया कि, "कोई भी अन्य व्यक्ति नही है किन्तु मैं उसे देख रही हू जिसे मध्यस्थ बनाया गया था और जिसके विश्वास पर मेरे पति ने तुम्हारी बात को स्वीकार कर लिया था।" वे हसने लगे और उन्होने कहा कि, "इस प्रकार के विचार मत कर।" वे यह बात कह ही रहे थे कि बुरका[1] पहने हुए दो सवार हाथो में भाले लिए हुए पहुच गये और उन्होने दोनो की हत्या कर दी। उन्हाने स्त्री से कहा कि, "बता तेरा पति कहा पडा हुआ है ?" वे वहा पहुच कर घोडे से उतर पडे और उसके सिर को ग्रीवा से मिला दिया तथा चादर ढाक कर स्वय सवार हो गये और उस स्त्री से कहा कि, "जब हम लोग अदृश्य हो जाय तो चादर को उसके ऊपर से हटा लेना। ये तीनो घोडे हम तुम्हें प्रदान करते हैं।" जब वे लोग चले गये और अभी दिखाई ही पड रहे थे कि उस मुर्दे ने सास ली और चादर हिलने लगी। वह स्त्री प्रतीक्षा न कर सकी और उसने चादर को खोला तो देखा कि उसके पति का सिर शरीर से मिला हुआ है और वह सो रहा है। स्त्री ने उसे जगाया। जब वह जागा तो उसने पूछा कि, "तू कहा बैठी हुई है और वे लोग कहा हैं ?" उसने उत्तर दिया कि, "तेरी यह दशा हो गई थी। परोक्ष से दो व्यक्तियों ने उपस्थित होकर तुझे पुन जीवित किया। वे लोग वह जा रहे हैं।" उस व्यक्ति ने एक घोडे पर सवार होकर उनका पीछा किया। जब वह उनके निकट (३६) पहुचा तो उसने उन्हें शपथ देकर कहा कि, "ईश्वर के लिए खडे हो जाओ और मुझे अपना शुभ मुख दिखाओ।" उन लोगो ने पूछा कि, "तू हमसे क्या चाहता है ? ईश्वर का जो आदेश था वह हुआ। अब चला जा और अपना काम कर।" उसने पुन शपथ देकर कहा कि, "एक बार अपना मुख दिखा दो।" उन लोगो ने बुरका हटा लिया। उनमें से एक वृद्ध था और एक युवक। वह दोनो को सलाम करके लौट गया तथा स्त्री के पास पहुच कर इस घटना पर आश्चर्य प्रकट करते हुए वहा से चल दिया।

सयोग से वे आगरा पहुचे। उस व्यक्ति की ग्रीवा में चिन्ह बना हुआ देख कर प्रत्येक व्यक्ति उसके विषय में पूछता था और वह कुछ न कुछ उत्तर दे देता था किन्तु सत्य बात किसी से न बताता था। सयोग से एक दिन सुल्तान की सवारी निकली। लोग गलियो में दर्शनार्थ खडे हो गये। यह व्यक्ति भी खडा होकर दर्शन करने लगा। सवारी के समय मलिक आदम काकर के लिए यह आदेश था कि वह निपग लेकर चला करे और पक्षियो की ओर तकमार[2] फेंकता जाय।[3] मलिक प्रथानुसार पक्षियो के समक्ष तक्मार फेंकता जाता था। जब इस व्यक्ति की दृष्टि मलिक के ऊपर पडी तो उसे बडा आश्चर्य हुआ और उसने कहा कि, "मैं एक विचित्र घटना देख रहा हू जिसका मैं कोई उल्लेख नही कर सकता।" लोगो ने उससे पूछा, "क्या बात है ?" उसने कहा कि, "मैं कुछ नही बता सकता।" वह यह बात कह ही रहा था कि सुल्तान भी पहुच गया। इस बार उसे और भी आश्चर्य हुआ और उसने कहा कि, "यह और भी विचित्र बात है। यह तो उसी का मित्र है।" लोगो ने पूछा कि, "क्या बात है ?" उसने कहा कि, "तुम लोग मेरी ग्रीवा पर जो यह चिह्न देख रहे हो इसका कारण यह है कि मेरा गला काट डाला गया था।" उसने अपनी हत्या और अपने पुन जीवित होने का वृत्तान्त अपने मित्रो को दिया और बताया कि, "दो

१ लम्बा पहनावा जिससे बाहर निकलने के समय मुसलमान स्त्रियाँ अपना शरीर ढक लेती हैं।
२ एक प्रकार का बिना लोहे की नोक का बाण जिसमें लोहे की नोक के स्थान पर बटन होता है।
३ 'ब' के अनुसार 'मलिक सेना के आगे-आगे चलता था और تیر (तीता) फेंकता जाता था'।

व्यक्ति जो बुरका पहने हुए मेरी सहायतार्थ आये थे उन दोनों को मैंने आज देख कर पहचान लिया है।" उन लोगों ने पूछा कि, "वे दोनो कौन हैं ?" उसने कहा कि, "मैं नही समझता कि तुम्हें विश्वास होगा अथवा नही।" लोगों ने कहा कि, "बताओ क्या बात है। हम विश्वास करेंगे।" तदुपरान्त उसने कहा कि, "वृद्ध व्यक्ति मलिक आदम था और युवक सुल्तान सिकन्दर था।"

जब कुतुब आलम सैयिदुस्सादात शेख हाजी अब्दुल वह्हाब मक्का गये हुए थे तो सुल्तान ने आगरा के विद्वान् मियां शेख लादन को उनके वापस पहुंचने की सूचना दे दी कि, "आज शेख हाजी जहाज से उतरे हैं।" बन्दगी मियां ने उस दिन को याद कर लिया।[1] कुतुब आलम की वापसी के उपरान्त जब शेख ने उनसे इस विषय में पूछा तो ज्ञात हुआ कि वास्तव में बात सत्य थी।

उन्ही दिनों में जब कि मसनदे आली आज़म हुमायूँ शिरवानी पटना की विलायत पर चढाई करने (३७) गया था, तो १७ दिन व्यतीत हो जाने पर भी उसके कोई समाचार प्राप्त न हुए। १७ दिन उपरान्त सुल्तान ने आज़म हुमायूँ के पुत्र फतह खा से पूछा कि, "आज़म हुमायूँ के भी कोई समाचार प्राप्त हुए हैं अथवा नही ?" उसने उत्तर दिया कि "बहुत समय व्यतीत हो गया किन्तु अभी तक उनका कोई समाचार नही प्राप्त हुआ।" सुल्तान ने बताया कि, "वह वापस हो चुका है और प्रयाग को पार कर चुका है, कुछ ही दिनों में अपनी विलायत[2] में पहुच जायेगा।" सुल्तान ने फतह खा के घर १ लाख तन्के भेजे और कहलाया कि "मैंने मनौती की थी कि जब आज़म हुमायूँ की कुशलता के समाचार प्राप्त हो जायगे तो १ लाख तन्के फकीरो को दान करूगा। तू इन १ लाख तन्को को फकीरो को दान कर दे।" इसके अतिरिक्त १ लाख तन्के और भी शाही महल के द्वार पर फकीरो को दान किये गए। कुछ दिन उपरान्त आज़म हुमायूँ का पत्र प्राप्त हुआ कि, "मैंने अमुक स्थान पर पहुच कर उस विलायत को विजय किया और अब वापस लौट रहा हूँ।" सुल्तान ने जैसा कहा था उसी के अनुसार वह बात सत्य निकली।

सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल की विचित्र कहानियाँ

जौनपुर में एक व्यक्ति का विवाह हुआ। वह अपनी दुलहिन को अपने घर ज़फराबाद ले जा रहा था। नगर के समीप एक वृक्ष के नीचे वे लोग ठहरे और एक स्थान पर बैठ कर भोजन करने लगे। दुलहिन के डोले को जिस पर पर्दा पडा हुआ था एक स्थान पर उतार दिया गया। वह डोले से पर्दा उठा कर बैठी हुई थी। उसकी दाई उसके समक्ष थी। सयोग से उस वृक्ष के नीचे एक फकीर[3] बैठा हुआ था। उसकी दृष्टि उस स्त्री की सुन्दरता पर पडी और वह आसक्त हो गया। वह उसकी ओर निरन्तर देखता रहा। जब वह स्त्री उसकी ओर देखती तो उसे अपनी ओर दृष्टि डालता हुआ पाती। उसे आश्चर्य हुआ और उसके विषय में उसे कुछ सन्देह हो गया। उसने अपनी दाई से पूछा कि, "हम लोग इस स्थान पर पुन कब आयेंगे।" उसने उत्तर दिया कि, "४ दिन उपरान्त इस स्थान पर पुन पहुचेंगे।" स्त्री ने कहा कि, "जब मैं इस स्थान पर पुन पहुचूँ तो मुझे सूचना दे देना ताकि इस स्थान पर फिर थोडी देर बैठूँ।" दाई ने कहा कि, "अच्छा।" ४ दिन तक वह फकीर[3] उसके आगमन की प्रतीक्षा करता रहा। अतिम दिन उसने दिन भर प्रतीक्षा की और सूर्य अस्त होने के समय निराश होकर प्राण त्याग दिये। जो

१ 'ब' के अनुसार 'उस तिथि को अपने पास लिख कर रख दिया'।
२ प्रान्त (राज्य)
३ 'ब' के अनुसार 'यात्री'।

मुसलमान वहा उपस्थित थे उन्होंने उसे दफ़न कर दिया। जब वे दफन कर चुके तो उस स्त्री का डोला वहा पहुचा। दाई ने उसे उस स्थान की सूचना दी। उसने डोले को उतरवाया और जिस स्थान पर पहले बैठी थी वही बैठ कर दायें बायें दृष्टि डालने लगी। जब उसे फकीर[1] न मिला तो उसने अपनी दाई से कहा कि, "मैंने मनौती की थी कि जब मैं इस स्थान पर वापस आऊगी तो उस फक़ीर[1] को कुछ दूँगी। वह दिखाई नही पडता। किसी से उसके विषय में पता लगा।" दाई ने लोगो से पूछा कि, "जो फकीर[1] इस स्थान पर था वह दिखाई नही देता, कहा चला गया ?" उन लोगों ने बताया कि उसकी अचानक मृत्यु (३८) हो गई और उसकी यह कब्र है। जब स्त्री ने पुछवाया कि "उसकी मृत्यु किस प्रकार हुई ?" तो लोगो ने उत्तर दिया कि, "वह केवल एक बात कहता था कि 'खेद है कि वह न आई' और प्राण त्याग दिये।" यह बात सुनकर उस स्त्री की दशा में विशेष परिवर्तन हो गया। उसने अपनी दाई से कहा कि "मैं अपनी मनौती के अनुसार उसके लिए कुछ लाई थी। अब मे चाहती हू कि उसकी कब्र के दर्शन कर लूँ और फातेहा[2] पढ लूँ।" चारो ओर चादर घेर ली गई और वह चादर के भीतर कब्र के दर्शनार्थ चली गई। कब्र के समीप पहुच कर उसने अपना सिर कब्र के पायँती रख दिया। जब देर हो गई तो दाई ने चाहा कि वह उससे उठने के लिए कहे। उसने जब सिर उठा कर देखा तो पता चला कि चादर के भीतर कोई नही है। जो पुरुष साथ थे उन्हें दाई ने इस घटना की सूचना दी। उन लोगो ने पूछा कि, "यह कैसे हो गया ?" दाई ने पहले दिन तथा इस दिन की घटना का उल्लेख किया। वे लोग समझ गये कि यह प्रेम का रहस्य है। उन्होंने कब्र खोदी तो देखा कि वह मुर्दा उस स्त्री के समस्त वस्त्र, फूल तथा आभूषण धारण किये हुए है और मेहँदी हाथ और पाव में लगाये हुए है तथा स्त्री का पता नही। इस घटना से उन लोगो को बडा आश्चर्य हुआ और वे लोग रोते-पीटते लौट गये।

जिस समय में सुल्तान सिकन्दर की सेना चन्देरी में थी तो एक सिपाही उदयपुर के कस्बे के एक मदिर में पहुचा। वहा उसने मदिर के एक खम्भे पर एक मूर्ति देखी। वह उस पत्थर की मूर्ति पर आसक्त हो गया। ४ दिन और ४ रात वहीं खडा रहा। तदुपरान्त वह वहा से चल दिया। जब मदिर के पुजारियो ने यह देखा कि पत्थर पर वह मूर्ति नही है तो वे उसके पीछे दौडे और उन्होने उसे पकड लिया। उसे पकड कर वे आमिल[3] के पास ले गये और कहा कि, "यह व्यक्ति पत्थर पर से मूर्ति निकाल कर ले जा रहा था।" उसने उत्तर दिया कि, "ये लोग रात दिन मदिर में रहते थे। यदि मैंने मूर्ति उखाडी होती तो इन्हें पता चल जाता।" उन लोगो ने उत्तर दिया कि, "हमने मूर्ति इसके पास से निकाली है।" आमिल[3] ने मूर्ति उन लोगों को लौटा दी और वे लोग चले गये। उन लोगो ने जाकर मूर्ति को उसके स्थान पर लगा दिया और उसकी रक्षा करते रहे किन्तु प्रात काल मूर्ति उन्हें अपने स्थान पर न मिली। वे लोग उस व्यक्ति के पास आये और उन्हें मूर्ति उसी के पास मिली। उन लोगो ने[4] कहा कि, "हमने मूर्ति उसके स्थान-पर (३९) रख दी थी, पुन किसी व्यक्ति ने लाकर इसे दे दी।" जब उससे पूछा गया तो उसने उत्तर दिया कि, "कोई भी व्यक्ति नहीं लाया है, यह मूर्ति मेरे पास स्वय आ गई।" दीवान के आमिल[5] ने मूर्ति को

१ 'ब' के अनुसार यानी।
२ कुरान का पहला सूरा (अध्याय)। परलोकगत आत्मा की शान्ति के लिये इस अध्याय को पढा जाता है।
३ 'ब' के अनुसार "कस्बे के हाकिम"।
४ 'ब' के अनुसार 'उन लोगों ने दीवान में निवेदन किया'।
५ 'ब' के अनुसार 'दीवान ने'।

अपने पास रख लिया और उसे बक्स में बद कर दिया। वह मूर्ति वहा से भी निकल गई और उसके पास पहुच गई। दीवान के अधिकारी ने आदेश दिया कि इसे पुन उस व्यक्ति को दे दिया जाय। वह मूर्ति उसे दे दी गई और यह कहानी उस प्रदेश में प्रसिद्ध हो गई।

नौहानी कबीले के एक व्यक्ति का विवाह गाज़ीपुर में हुआ था। वह अपनी दुलहिन को विदा करा कर ले जा रहा था। जब वह नदी के किनारे पहुचा तो उसने दुलहिन के डोले को नाव पर रख दिया। जो लोग नाव पर थे उन्हें उतरवा दिया गया। डोला नौका के ऊपर रख दिया गया। एक भिखारी कमली ओढ़े हुए नौका के कोने में पड़ा हुआ था। उसे किसी ने नही देखा। जब नौका चली तो उस स्त्री ने डोले के भीतर से दाई को पुकारा और कहा कि, "मैंने कभी गगा तथा नौका नही देखी। जब कोई न हो तो मैं पर्दा उठाऊँ और नदी तथा नौका को देखूं।" दाई ने कहा कि, "यहा एक भिखारी के अतिरिक्त कोई अन्य नही है। वह एक कोने में बैठा है।" स्त्री पर्दे को उठा कर दायें बायें देखने लगी। अचानक उसकी दृष्टि उस भिखारी पर पड़ी। वह किसी अन्य ओर न देखता था। जब भी वह उसकी ओर दृष्टि डालती तो उसे अपनी ओर देखता हुआ पाती। वह कुछ समझ गई। वह अपने पाव नौका के किनारे पर ले जाकर हिलाने लगी। दाई ने कहा कि, "पाव मत हिला कारण कि जूती गिर पड़ेगी।" स्त्री ने कहा कि, "यदि जल में गिर पड़ेगी तो क्या कोई है जो उसे निकाल कर ला सकता है?" यह कह कर उसने भिखारी की ओर देखा। भिखारी ने हाथ से सकेत किया कि, "मैं ले आऊगा।" उसने अपनी जूती जल में डाल दी। वह भिखारी नौका से कूद कर जल में घुस गया। जब थोड़ी देर तक वह दृष्टिगत न हुआ तो स्त्री अपने कार्य के ऊपर लज्जित हुई, उसके ऊपर एक विशेष दशा छा गई और वह डोले से गगा में कूद पड़ी। शोर होने लगा। लोगो ने आकर नदी में जाल डलवाये। सयोग से दोनो जाल में एक दूसरे को आलिंगन किये हुए मिले। भिखारी अपने एक हाथ में जूती लिए हुए था और दूसरा हाथ उस स्त्री की ग्रीवा में डाले हुए था। लोगो को इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ। इसकी सूचना नसीर खा नौहानी को दी गई। वह स्वय सवार होकर पहुचा और उसने सब हाल देख कर कहा कि, "इन दोनो को पृथक् न किया (४०) जाय और एक साथ दफन कर दिया जाय।" लोगो ने कहा कि, "दो मुर्दों को एक कब्र मे नही दफन किया जा सकता।" अन्त में यह निश्चय हुआ कि दोनो की कब्रें एक दूसरे के समीप बना दी जाय। ऐसा ही किया गया। जब रात हो गई तो स्त्री के घर वाले स्त्री की लाश इस आशय से कब्र से निकालने के लिए आये कि उसे ले जाकर अपने पूर्वजो के कब्रिस्तान मे दफन कर दें। जब उन्होने कब्र खोदी तो वहा उन्हें स्त्री न मिली। जब उन्होने फकीर की कब्र खोदी तो उन्हें दोनो आलिंगन की अवस्था में मिले। वे लोग भयभीत होकर वहा से भाग गये और उस कब्र को बन्द करा दिया गया।

कहा जाता है कि एक विद्यार्थी एक बार कही जा रहा था। वह भूगाँव[1] पहुँचा। वह एक कुए पर जल पीने के लिए गया। कुए पर उसे एक रूपवती दृष्टिगत हुई। जब उस व्यक्ति ने किसी अन्य के हाथ से भी जल पीना स्वीकार न किया और उस रूपवती के विषय में कहा कि, "यदि यह जल पिलाये तो मैं जल पी सकता हू" तो अन्य स्त्रियो ने कहा कि, "यह यात्री है, तुझे इसकी ओर ध्यान देना चाहिए।" अन्य लोगो के कहने से युवती जल लेकर उसके पास गई। उसने अपने मुह के समक्ष अपने दोनो हाथ रख कर जल डालने के लिए कहा। विद्यार्थी रूपवती की ओर देखता जाता था किन्तु जल की एक बूंद भी उसके मुख में न पहुचती थी। रूपवती ने क्रोधवश जल को फेंक दिया और अपना डोल भरने चल दी।

१ 'ब' के अनुसार 'परगना गाव पहुँचा'।

वह व्यक्ति उसी प्रकार जल की माग करता रहा। अन्य स्त्रिया जल देती थी किन्तु वह जल न पीता था और कहता था कि, "यदि वही जल पिलायेगी तो पीऊगा अन्य लोगो के हाथ से जल नही पीऊगा।" अन्य स्त्रियो ने कहा कि, "वह दूसरो के हाथ से जल नही पीता तेरे ही हाथ से जल पीयेगा।" उसने कहा कि, "मै कहती हू कि वह कुयें में कूद पडे तो क्या वह कुयें मे कूद पडेगा ?" उसने यह बात सुन ली और तुरन्त कुयें में कूद पडा। सभी स्त्रिया कोलाहल मचाने लगी और कहने लगी कि, "यह तू ने क्या किया, यह खून तेरी गर्दन पर है।" जब वह लज्जित हुई तो वह स्वय कुयें में कूद पडी। अत्यधिक कोलाहल मचने पर उस नगर का शिकदार, उसके घर के लोग तथा कस्बे वाले एकत्र हो गये। कुयें में जाल डाला गया। दोनो जाल के बाहर आलिंगन किये हुए निकले। स्त्री के आदमियो ने कहा कि, "हम उसे ले जाकर जलायग।" शिकदार ने कहा कि, "वह एक मुसलमान के लिए मरी है और दोनो साथ ही निकले है। उसे जलाना नही चाहिये और दफ्न कर देना चाहिए।" अन्त में यह निश्चय हुआ कि उस स्त्री को भी पुरुष के निकट दफ्न कर दिया जाय। जब स्त्री के आदमियो ने उसे निकाल कर जलाना चाहा तो लाश वहा न मिली। उन्होने देखा कि उस स्त्री की कब्र से पुरुष की कब्र में एक खिडकी लगी हुई है और उसमें (४१) एक दीपक जल रहा है। दोनो पलग पर बैठे हुए है। जब उन्होने यह देखा तो वे वहा से चले गये और कब्र को बन्द कर दिया गया। यह कहानी प्रसिद्ध हो गई और इसे बहुत से लोग जानते है।

भादीर के एक ग्राम में एक व्यक्ति किसी माली[1] के घर पर मेहमान हुआ। ग्रामीणो में यह प्रथा है कि जब उनके घर कोई मेहमान जाता है तो उसके हाथ पैर धोने के लिए जल घर के स्वामी की स्त्री देती है और उसके समक्ष चौकी ले जाती है। यहा भी माली की स्त्री अतिथि की सेवार्थ जल ले गई। उसकी दृष्टि उस पर पडी। तदुपरान्त वह अपने घर में कार्य करने लगी। वह व्यक्ति उसी की ओर देखता जाता था। स्त्री भी यह बात समझ गई। जब भोजन लाया गया तो वह स्त्री भोजन कराने लगी। पुरुष अपने हाल में मग्न था। वह एक दो दिन[2] तक वहा ठहरा रहा और फिर चला गया। कुछ समय उपरान्त वह फिर वहा आया। इस बीच में उस स्त्री की मृत्यु हो गई थी और उसे जला कर उसकी राख एक बर्तन में रख कर छीके पर लटका दी गई थी। अन्य स्त्री अतिथि के लिये जल लाई और चौकी उसके समक्ष रखी। उसने देखा कि वह स्त्री वहा नही है। वह वहा बैठ कर चारो ओर देखने लगा किन्तु उसे वह स्त्री न मिली। उसने उससे पूछा कि "वह स्त्री कहा है ?" उसने बताया कि 'उसकी मृत्यु हो गई है और उसकी हड्डिया लटकी हुई है।" उसने सिर को ऊपर उठा कर देखा। उसके देखते ही देगची तथा हड्डिया उसके सिर पर गिर पडी। वह मूर्च्छित हो गया और प्रेम के प्रभाव से मृत्यु को प्राप्त हो गया।

'इश्क में ऐसी ही विचित्र घटना घटती है।'

किन्तु यह बात उसी समय थी आज का युग न तो ऐसा है और न उस प्रकार का इश्क है और न वैसे लोग है।

सिरकार की विलायत में एक दिन कुछ हिन्दू एक व्यक्ति के विवाह हेतु एक ग्राम के निकट पहुचे। उन्हें वहा एक बहुत बडा हौज़ मिला। युवक ने जिसका विवाह होने वाला था कहा कि, 'इस स्थान पर मैं शौच के लिए जाना चाहता हू।" सभी बराती आगे चल दिये। वह व्यक्ति तथा एक ब्राह्मण शौच के

१ 'अ' के अनुसार 'काछी'।
२ 'ब' के अनुसार 'दो तीन दिन'।

लिए जल के निकट पहुचे। सयोग से वहा कुछ स्त्रिया स्नान कर रही थी और उनके वस्त्र जल के निकट रखे हुए थे। युवक ने देखा कि जगल से एक सर्प निकल कर एक स्त्री के वस्त्रो में घुस गया। जो स्त्रिया (४२) स्नान कर रही थी उन्हें उसने चेतावनी दे दी कि उन वस्त्रों में सर्प घुस गया है अत वे लोग सावधानी से वस्त्र धारण करें। अन्य स्त्रियो ने निकल कर शीघ्र ही अपने वस्त्र पहन लिये। वह स्त्री जिसके वस्त्र में सर्प था रोने लगी और नगी जल में खडी रही। युवक ने कहा कि, "मै तेरे वस्त्र तुझे दे दूंगा।" सोच के उपरान्त उसने एक डडा लेकर वस्त्रो को उससे उठाया। अचानक सर्प ने उस युवक के हाथ को डस लिया और जगल की ओर चला गया। स्त्री वस्त्र पहन कर अपने घर चली गई। जब वरातियो को यह पता चला कि वर को सर्प ने डस लिया है तो उन्होंने कुछ लोगो को ग्राम में इस आशय से भेजा कि जो लोग सर्प के विष के सम्बन्ध में झाड-फूंक करते हो वे उपस्थित हो। वे लोग इस विषय में पता चला ही रहे थे कि उस युवक की मृत्यु हो गई। स्त्री भी रोती हुई "जै राम जै राम" कहती हुई घर से निकली और लाश के समीप आई। लाश के सिर को उसने अपनी जाघ पर रख कर कहा कि, "इसने मेरे कारण प्राण त्यागे है मै अपने आपको इसके साथ जला डालूंगी।" उसे बहुत समझाया गया किन्तु उसने स्वीकार न किया और कहा कि, "मेरे भाग्य में यही लिखा था, तुम लोग हमारी चिन्ता न करो।" स्त्री तथा उस युवक के माता-पिता ने इस बात की अनुमति दे दी। स्त्री तथा पुरुष के विवाह हेतु जो कुछ उन्होने एकत्र किया था उससे उस हौज़ के निकट एक भव्य भवन का निर्माण कराया और समस्त धन सम्पत्ति उस देहरा के व्यय हेतु दे दी।

उस राज्य-काल में किसी को भी परोक्ष से[1] जो धन मिलता था उसके प्रति सुल्तान कोई लोभ प्रदर्शित नही करता था। जिसे जो कुछ मिलता वह उसे स्वय ले लेता।[2] सभल के भूभाग में एक भूमि खोदी जा रही थी। वहा भूमि से एक मटका[3] निकला उसमें ५ हज़ार सोने की मुहरें थी।[4] सभल के आमिल मिया कासिम को इसकी सूचना मिल गई। उसने सुल्तान को इस विषय में सूचना प्रेषित की। सुल्तान ने आदेश दिया कि वह धन जिसे प्राप्त हुआ है उसी को दे दिया जाय। मिया कासिम ने पुन निवेदन किया कि वह इतने धन के योग्य नही है। सुल्तान ने आदेश दिया कि, "हे मूर्ख! जिसने दिया है यदि वह उसे इस योग्य न समझता तो क्यो देता। सभी उसके दास हैं। कौन जानता है कौन योग्य है और कौन अयोग्य।"

एक बार अजोधन में बन्दगी शेख मुहम्मद की भूमि के खेतो मे एक हलवाहा हल चला रहा था। वहा पत्थर का एक बहुत बडा टुकडा दृष्टिगत हुआ। वह हलवाहा हल छोड कर शेख की सेवा में पहुचा (४३) और इस घटना की सूचना दी। शेख ने अपने आदमियो को पता लगाने के लिए नियुक्त किया। जब भूमि खोदी गई और पत्थर उठाया गया तो वहा एक गड्ढा मिला जिसमें खज़ाना भरा हुआ था। उन लोगों ने गढे को उसी प्रकार बन्द कर के शेख के पास पहुच कर सूचना दी। शेख स्वय सवार होकर वहाँ पहुचे और पत्थर हटवाया। उस पत्थर के नीचे एक कुआ निकला जिसमें खज़ाना भरा हुआ था। शेख खज़ाना निकलवा कर अपने घर ले आये। जब इस घटना के विषय में पूछताछ की गई तो पता चला

१ वह धन जो गड़ी हुई धन सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हो।
२ 'ब' में यह वाक्य इस घटना के अन्त पर है।
३ 'ध' के अनुसार 'बरतन'।
४ 'ध' के अनुसार 'अशर्फी'।

कि यह खजाना जुलकरनैन[1] के समय से वहा बन्द है। कुछ बर्तन सोने के थे जिन पर जुलकरनैन का तमगा बना हुआ था। दीपालपुर के मुक्ता अली खा लोदी को इस बात की सूचना मिल गई। उसने शेख के पास सूचना भेजी कि "यह विलायत मेरे अधीन है अत परोक्ष से जो धन प्राप्त हुआ है उसका सम्बन्ध मुझसे है।" शेख ने कहा कि, "यदि यह धन ईश्वर तुझे देता तो मैं तुझसे कुछ न कहता किन्तु यह धन मुझे प्रदान किया है अत तुझे इसमें से कुछ भी नही प्राप्त हो सकता।" अली खा के वाक्या-निगार[2] ने सुल्तान सिकन्दर को लिखा कि, "शेख की भूमि म बादशाहो का खजाना निकला है।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "तुझे इससे क्या मतलब ?" शेख ने भी अपने वकील[3] सुल्तान की सेवा में भेज और कुछ सोने के बर्तन जुलकरनैन के सिक्को सहित प्रेषित किये और लिखा कि, "इस प्रकार की इतनी-इतनी चीजें प्राप्त हुई हैं। आप जिसे आदेश दें उसे इन वस्तुओ को प्रदान कर दिया जाय।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "इन वस्तुओ को आप अपने पास ही रखे। आपको भी हिसाब देना है और मुझे भी, राज्य ईश्वर का है वह जिसे चाहता है देता है।"

मैंने बन्दगी शम्सुद्दीन से सुना है कि एक व्यक्ति शाबान[4] मास म २० ता० से कोठरी में एकान्तवास ग्रहण कर लेता था और ४० दिन तक कोठरी में ही रहता था। वह कोठरी से न निकलता और अन्न-जल भी त्याग देता था।[5] ईद के दिन वह बाहर निकलता था और पूर्व की भाति स्वस्थ पाया जाता था। जब लोग उसके दर्शनार्थ पहुचे तो उन्हें पता चला कि वह एक साधारण सा ग्रामीण है। जब लोगो ने उसे देखा तो उससे पूछा कि, "बाह्य रूप से तुझमें यह शक्ति दृष्टिगत नही होती, किस प्रकार तू इतनी रियाजत[6] करता है ?" उसने कहा कि, "मैं एक बार कुतुब आलम शेख फरीद[7] (की कब्र) के दर्शनार्थ गया था। बन्दगी शेख अहमद वहा उपस्थित थे। शाबान का महीना था, सूफियो को कोठरिया बाटी जा रही थी और उन्हें हाथ पकड कर कोठरियो में बैठाया जा रहा था। सयोग से मैं भी उस भीड में उपस्थित यह लीला देख रहा था। उन्होने अपने शुभ हाथ मेरी ग्रीवा पर रख कर कहा कि, 'कोठरी में बैठ जा।' मेरे ऊपर मूर्छा छा गई और मैं कोठरी में चला गया। ४० दिन तक मै वहा बिना अन्न-जल के रहा और मुझे वहा कोई सूचना न हुई और न किसी ने मेरी खबर ली। इसका कारण यह था कि जिन सूफियो (४४) के नाम लिख हुए थे उनमें से प्रत्येक की देखभाल की जाती थी। मेरा नाम उस सूची में न था अत किसी को भी मेरी सूचना न थी और मुझे भी अपनी सूचना न थी। उस दिन से जब यह मौसम आता है तो मेरी वैसी ही दशा हो जाती है और मैं उनके हाथ अपनी ग्रीवा पर पाता हू। इस शक्ति के सहारे मैं ४० दिन व्यतीत करता हू।"

१ जुलकरनैन दो सीगों वाला आदमी। सिकन्दर महान् को मध्यकालीन फ़ारसी अरबी इतिहास तथा साहित्य में सिकन्दर जुलकरनैन लिखा जाता है। इसके सम्बन्ध में बडी विचित्र घटनाओं का उल्लेख किया जाता है।
२ वह अधिकारी जो राज्य में घटने वाली समस्त घटनाओं की सूचना बादशाह को भेजा करता था।
३ प्रतिनिधि।
४ हिजरी वर्ष का ८वां महीना।
५ 'द' के अनुसार 'कोठरी को मिट्टी से बन्द करवा देता था'।
६ तपस्या।
७ शेख फ़रीदुद्दीन गजशकर: ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के शिष्य जिनका जन्म ११७३ ई० तथा मृत्यु १२६५ ई० में हुई। उन्होंने अजोधन अथवा पाक पटन में, जो मुल्तान में है, विशेष रूप से प्रचार किया।

दास ने अपनी आखो से यह देखा है कि मलिक अल्लाहदी जलवानी के दायरे[1] में एक व्यक्ति रहता था। उसे १६ वर्ष से पेशाब पाखाना न हुआ था। जो अन्न अथवा जल उसे मिलता था उसे वह निश्चिन्त होकर खा लेता था। उससे यह पूछा गया कि "तेरे लिए यह बात किस प्रकार सभव हो सकी?" उसने उत्तर दिया कि, "मै नदी के किनारे यात्रा कर रहा था। वहा एक दरवेश से मेरा सत्सग हो गया और मै उसकी सेवा करने लगा। मैने उसे कभी यह कार्य करते हुए नही देखा, अत मैने उससे आश्चर्य से पूछा कि, 'मैने आपको कभी भी यह कार्य करते हुए नही देखा।' उसने कहा कि, 'क्या तेरी भी यही इच्छा है?' मैने कहा कि, 'यदि हो जाय तो अहो भाग्य।' उसने उत्तर दिया कि, 'तुझमें भी यह शक्ति आ जायगी।' इसके उपरान्त फिर कभी मुझसे यह बात प्रकट न हुई। उनको २४ साल से यह शक्ति प्राप्त थी। मुझे भी १६ वर्ष हो चुके है।" बहुत से लोग उसके पास जाते थे और उसके विषय में पता लगाते थे किन्तु इस सम्बन्ध में कुछ पता न चलता था अपितु उसके पास इस प्रकार का भोजन जैसे दूध, उरद तथा चना भोजनार्थ ले जाते थे किन्तु उसकी दशा सर्वदा एक ही सी रहती थी।

जौनपुर में एक विद्यार्थी बडा ही दरिद्र था। ३ दिन तक उसे कुछ भी भोजन न मिला और उसके परिवार वाले भूख के कारण बडी दुर्दशा को प्राप्त हो गये। उन लोगो ने उससे कहा कि "जाकर कही अपने भाग्य की परीक्षा करो, सभव है कि कही कुछ प्राप्त हो जाय, अब हममें शक्ति नही है।" यह व्यक्ति चौथे दिन शहर के बाहर निकला। वहा उसे एक चने का खेत मिला। उसने सोचा कि अन्य लोगो की सम्पत्ति पर हाथ डालना अनुचित है किन्तु इतने दिनो से भोजन न करने के उपरान्त भी चाहे मै स्वय न खाऊ किन्तु परिवार वालो के लिए ले चलूँ। यह सोच कर वह चना प्राप्त करने के लिए खेत में घुस गया। उस खेत के निकट एक हौज था जिसके किनारे एक दरवेश बैठा हुआ था। उसने चिल्ला कर कहा कि, "क्यो दूसरे की सपत्ति नष्ट कर रहा है?" विद्यार्थी ने कहा कि, 'तूने अभी तक न जाने कितने घरो का भोजन किया होगा, तुझे क्या पता कि मै किस दशा में यहा आया हू।' उसने कहा कि, "मेरे पास आ और जो हाल हो मुझे बता।" यह व्यक्ति उसके पास पहुचा। उसने देखा कि एक व्यक्ति नगे सिर तथा नगे पाव एक तहबन्द बाधे खाली अम्बानी[2] अपने समक्ष रखे हुए बैठा है। उसने पूछा कि, "कुछ (४५) भोजन करेगा?" उसने उत्तर दिया कि, "क्यो न करूगा।" दरवेश ने अम्बानी मे हाथ डाल कर १० सिकन्दरी तन्के निकाले और उसे देकर कहा कि 'जाकर इससे घी, मास तथा जो कुछ भी आवश्यकता हो ले आओ।" उसने पूछा कि, "पक्का कर लाऊ?" उत्तर मिला कि, 'नही, बिना पका हुआ ला, यही पक्का लेंगे।" उसने जाकर जो कुछ बताया गया था क्रय किया और ले आया। दरवेश ने अम्बानी से चाकू तथा तख्ता निकाल कर कहा कि मास को काट। तदुपरान्त उसने चकमक[3] निकाल कर दिया और देग[4], तगाक[5] तथा दस्तरख्वान[6] भी निकाल कर दिये। देग तैयार करने के लिए लोहे के यत्र भी दिये। सक्षेप में उसे जिस वस्तु की आवश्यकता होती थी उसे वह अम्बानी से निकाल लेता था, यहा तक

१ गोल घेरा। कार्य अथवा अधिकार का क्षेत्र।
२ कमाया हुआ चमडा।
३ एक प्रकार का पत्थर जिस पर आघात करने से अग्नि निकलती है। दियासलाई के आविष्कार के पूर्व इसी से आग सुलगाई जाती थी।
४ खाना पकाने का ताबे का बड़ा बरतन।
५ थाल।
६ वह कपड़ा जिस पर भोजन रख कर खाया जाता है।

कि लकडी भी।[1] जब भोजन पक गया और थालो में लग गया तो दरवेश ने स्वय भोजन किया तथा उसे भोजन कराया और खाली अम्बानी को कधे पर रखकर चल खडा हुआ। उस व्यक्ति ने सोचा कि यह व्यक्ति अकेला है और इसे किसी वस्तु की चिन्ता नही अत वह बैठ कर उन वस्तुओ को इस आशय से एकत्र करने लगा कि उन्हें बाध कर ले जाये। दरवेश ने उसे पीछे देख कर पुन रोका और कहा कि "ऐसा विचार मत कर और उठ कर चला जा।" वह उसके कहने से उठ खडा हुआ और वह वस्तुयें वही पडी रह गईं। एक दिन यात्रा करने के उपरान्त दूसरे दिन भी उसने इसी प्रकार भोजन की व्यवस्था की और भोजन किया। इस व्यक्ति ने सोचा कि, "मैं तो भोजन कर रहा हूँ पता नही मेरे घर वालो की क्या दशा होगी।" दरवेश ने अपने अन्त करण के प्रकाश से उसकी इच्छा का पता लगा लिया और पूछा कि, "क्या तू अपने घर जाना चाहता है?" उसने कहा कि "हा।" दरवेश ने अम्बानी से १० तन्के निकाल कर दिये और कहा कि जा। जब वह जाने लगा तो उसने उसे पुन बुलवाया और कहा कि, "मैं तुझे एक ऐसी वस्तु देता हू जो आजीवन तेरे काम आयेगी" और आदेश दिया कि "वजू[2] कर तथा दुगाना[3] पढ।" जब वह दुगाना पढ चुका तो उसने उसे अपने पास बैठाया और कहा कि, "अपनी आखें बन्द कर ले।" जब उसने आखें बन्द की तो दरवेश ने आदेश दिया कि "आखे खोल।" जब उस व्यक्ति ने आखे खोली तो उसने देखा कि एक व्यक्ति फकीरो के वस्त्र धारण किये हुए उसकी दायी ओर बैठा हुआ है और एक तुर्की घोडा सुनहरी जीन सहित उसके पीछे खडा है। दरवेश ने उस परोक्ष के व्यक्ति का हाथ पकड कर उस व्यक्ति की उससे बैअत[4] करायी और सिफारिश की और कहा कि, "जिस प्रकार तू मेरे साथ व्यवहार करता है उसी प्रकार इस व्यक्ति के साथ व्यवहार कर।" यह कह कर वह मर्दे गैब[5] अदृश्य हो गया और उसने इस व्यक्ति को यह कह कर विदा कर दिया कि "तुझे जिस बात की आवश्यकता हो उसे माग लिया करना और जो कुछ प्राप्त हो उसे उचित अवसर पर व्यय करना, अनुचित स्थान पर (४६) व्यय मत करना।" व्यक्ति अपने घर पहुचा और उसके आदेशानुसार आचरण करने लगा। उसकी दरिद्रता का अन्त हो गया। एक दिन उससे एक भूल हो गई। जो कुछ प्राप्त हुआ था वह भी लुप्त हो गया और उसका प्रभाव भी न रहा।

उमर खा कम्बोह, जो मिया शेख लादन का ससुर[6] था, सुल्तान सिकन्दर का अमीर आखुर था। एक दिन उसकी अश्वशाला के एक जानवर पर जिन्नात[7] का प्रभाव हो गया। झाड फूंक करने वाले उपस्थित हुए किन्तु किसी का कोई भी प्रभाव न हुआ। अपितु जो कोई भी झाड फूंक करता जिन्नात उससे अधिक अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता। दो तीन दिन इसी प्रकार व्यतीत हो गये। जिन्नात ने कहा कि, "तुम मुझे शैतान न समझो और तुम जिस कष्ट में पडे हो उससे कोई लाभ न होगा। मेरा एक

१ 'ब' में इतना विस्तृत उल्लेख नहीं है।
२ नमाज से पूर्व यथाविधि हाथ मुँह तथा पाव धोना।
३ दो रकात नमाज में खडे होकर यथाविधि कुरान के कुछ अश पढ कर झुकना पुनः खडे होना तथा भूमि पर दो बार बैठे बैठे सिर रख कर पुन: खडा होना एक रकात कहलाता है। इसी प्रकार से दो बार करना।
४ अधीनता स्वीकार करने की शपथ। किसी पीर का मुरीद अथवा चेला बनना।
५ वह व्यक्ति जो परोक्ष से आया था।
६ 'ब' के अनुसार 'उमर खा कम्बोह जो मिया शेख लादन के जामाता का ससुर था'।
७ मुसलमानों के विश्वास के अनुसार एक तैजस योनि।

सुल्तान के कार्य करने की विधि

सुल्तान की यह प्रथा थी कि वह रात्रि में न सोता था, केवल दिन के भोजन के उपरान्त सोता था। रात भर वह न्याय करता था और शासन प्रबन्ध की व्यवस्था किया करता था। सीमान्त के अमीरो तथा समकालीन बादशाहो को पत्र लिखवाया करता था इसी कारण वह रात्रि में कार्य करता था। १७ आलिम तथा विद्वान् उसके विश्वासपात्र थे। जब रात्रि समाप्त होने में ६ घडी रह जाती तो वह उनके साथ भोजन करता। उस समय यह प्रथा थी कि वे लोग हाथ धोकर सामने बैठ जाते थे, सुल्तान पलग पर बैठता था, एक बडी कुर्सी पलग के समीप लाई जाती थी, भोजन का थाल उस कुर्सी पर रखा जाता था। उसमें से वह स्वय भोजन करता था। अन्य लोगो के समक्ष सहनक[1] (थाल) रखा जाता था। सुल्तान के समक्ष कोई भी भोजन न करता था। सब हाथ धोकर बैठे रहते थे। जब सुल्तान भोजन कर चुकता तो वे लोग अपना अपना सहनक (थाल) अपने अपने सेवको को सौंप देते थे। यदि आवश्यकता होती तो वे लोग भोजन करते अन्यथा अन्य लोग भोजन करते थे। रसोई से प्रत्येक व्यक्ति के लिए सहनक (थाल) निश्चित थे, प्रत्येक के घर वे पहुचते रहते थे। सुल्तान की यह प्रथा थी कि, "जिस व्यक्ति के लिए एक बार भोजन तथा वस्त्र से सबधित एव नकद इत्यादि जो वस्तु निश्चित हो जाती थी तो आजीवन उसमें कोई परिवर्तन न होता था। उदाहरणार्थ कुतुब आलम शेख हाजी अब्दुल वह्हाब, शाह जलालुद्दीन मुहम्मद शीराजी को अपने साथ मक्का से लाये। जिस दिन वे सुल्तान के दर्शनार्थ गये सुल्तान ने उनके लिए भोजन के थाल भिजवाने का आदेश दिया। उस दिन भेंड का मास, कुछ हलवे तथा समोसे उपस्थित थे वही भेज दिये गये और प्रथा अनुसार वही भेजा जाता रहा।

एक बार बन्दगी शेख अब्दुल गनी जौनपुरी ग्रीष्म ऋतु में सुल्तान से भेंट करने पहुचे। प्रथम दिन शरबत के छ गिलास उनके पास आतिथ्य सत्कार हेतु भेजे गये। जब तक वे वहा रहे वही शरबत (५०) तथा भोजन उन्हें भेजा जाता रहा। उनकी मृत्यु के उपरान्त जब शेख अब्दुल गनी के पुत्र शेख अब्दुस्समद सुल्तान के दर्शनार्थ आये तो सुल्तान ने आदेश दिया कि जो कुछ शेख अब्दुल गनी को भेजा जाता था वही उनको भेजा जाया करे। वे कभी-कभी सुल्तान के दर्शनार्थ आया करते थे। यह निश्चित वस्तुयें उन्हें सर्वदा प्राप्त होती रहती थी। शीत ऋतु हो अथवा ग्रीष्म ऋतु शरबत में कभी कमी नही होती थी। इसी प्रकार जिसके लिए एक बार आदेश हो जाता वह सर्वदा चलता रहता।

सुल्तान से जब कभी कोई एक बार भेंट कर लेता और फिर उसकी सेवा में उपस्थित होता तो उसके प्रति वही सम्मान प्रदर्शित किया जाता था जो प्रथम बार प्रदर्शित होता था। उसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन न होता था। वह उनसे वार्तालाप भी उसी प्रकार करता था। जो अमीर जिस स्थान पर खडा होकर अभिवादन करता था वह सर्वदा उसी स्थान पर खडे होकर अभिवादन करता। जिस समय सुल्तान की सवारी निकलती तो जो व्यक्ति अपनी गली में खडा हो जाता था वह उसी स्थान से अभिवादन करता था। यदि वह किसी स्थान पर किसी से कोई वार्ता कर लेता अथवा किसी की कोई फरियाद सुन लेता तो जब कभी भी वह उस गली में पहुचता तो वहा ठहर जाता और अभिवादन स्वीकार करता था।

१ 'ब' के अनुसार 'तबक'

जागीर के सम्बन्ध में नियम

सुल्तान ने प्रत्येक कार्य के लिए ऐसे योग्य अधिकारी नियुक्त किये थे कि किसी भी फरियादी को उसके पास आने की आवश्यकता न पडती थी। यदि कोई भी फरियादी सुल्तान की सवारी के समय फरियाद करता था तो सुल्तान देखते ही कहता था कि वह किसका दामाद (जामाता) है।[1] प्रत्येक व्यक्ति के वकील उपस्थित रहते थ। वे उसका हाथ पकड कर ले जाते थे और उसे सतुष्ट करते थे।[2] वह जब कभी किसी को एक वार जागीर प्रदान कर देता था तो जब तक उससे कोई बहुत वडा अपराध न हो जाता उसमें कोई परिवर्तन न किया जाता था। जिस किसी से कोई अपराध हो जाता तो सुल्तान उसे फिर कोई वस्तु न प्रदान करता था। यदि सुल्तान किसी के विषय में यह आदेश दे देता कि इस व्यक्ति को १ लाख तन्के की जागीर दे दी जाय और वहा से १० लाख तन्के प्राप्त होते और कोई व्यक्ति सुल्तान से इस विषय में चुगली खाता तो सुल्तान उससे कहता कि, "इस व्यक्ति ने जागीर स्वय प्राप्त की है अथवा मेरे आदेश से ?" उत्तर मिलता कि "सुल्तान के आदेशानुसार प्राप्त हुई है।" इस पर सुल्तान उसको जवाव देता, 'जो कुछ उसके भाग्य में था उसे प्राप्त हो गया।"

मलिक वदरुद्दीन भीलम को एक वार ७ लाख तन्के की जागीर किसी परगने में प्रदान की गई। उस परगने से ९ लाख प्राप्त हुए। मलिक ने निवेदन किया कि, "इस परगने की जागीर ७ लाख तन्के की थी। अब ९ लाख प्राप्त हुए हैं। जहा कही सुल्तान का आदेश हो मैं उसे दे दूँ।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "इसे अपने पास रखो।" दूसरी फसल में १२ लाख तन्के पैदा हुए, उस मलिक ने पुन इस विषय में निवेदन किया। सुल्तान ने आदेश दिया कि, "इसे भी अपने पास रख।" अन्य फसल में १५ लाख तन्के पैदा हुए, उसने पुन निवेदन किया। सुल्तान ने आदेश दिया कि, "यह सब तेरा है। वारवार क्यो इस विषय में सूचना देता है।"

(५१) कोल के मीरान सैयिद फजलुल्लाह रसूलदार[3] तथा उसके भाइयो को ५ लाख की जागीर प्राप्त थी। एक व्यक्ति ने इस प्रकार निवेदन किया कि "वन्दगी मीरान की जागीर को मैं ९० लाख के इजारे[4] पर लेता हू। जो उनकी जागीर की प्राप्ति है वह उन्हें दे दूंगा, ३ लाख खजाने में अदा करूगा, शेष जो कुछ मेरे भाग्य में होगा वह मुझे मिल जायेगा।" सुल्तान ने कहा कि, "तु वडा डीग मारता है।" उसने कहा कि, "यदि मैं डीग मारता हू तो मेरी गर्दन उडा दी जाय।" सुल्तान ने आदेश दिया कि एक जानदार[5] को इस आशय से नियुक्त किया जाय कि वह उन ग्रामों में से एक ग्राम की नाप करके पता लगाये और जो सत्य वात हो उसे प्रस्तुत करे। जो जानदार इस स्थान से भेजा गया था उसे उस ग्राम के छर्द[6] ने डेढ सौ तन्के दिये। सुल्तान ने उसी समय एक अन्य व्यक्ति को इस आशय से नियुक्त किया कि वह उस जानदार को लौटा लाये और उस ग्राम के मुकद्दमो, पटवारियो तथा प्रजा को अपने साथ ले आये। तदनुसार वे उपस्थित किये गये। सुल्तान ने उनसे कहा कि "सच सच वताओ कि इन

१ किसको उसके प्रति न्याय करना चाहिये।
२ 'च' में इन गुणों का विवरण वडे सक्षिप्त रूप से किया गया है।
३ रसूलदार अथवा हाजिवुल इरसाल, देश के प्रान्तों तथा देश के वाहर के राज्यों से सम्पर्क स्थापित रखता था। वह एक प्रकार से राजदूतों का अफ़सर होता था।
४ ठेका।
५ सुल्तान के अगरक्षक।
६ मूल ग्रन्थ में यह शब्द स्पष्ट नहीं, सम्भवत चौधरी।

ग्रामों का हासिल (आय) क्या है।" उन्होंने बताया कि, "१५ लाख तन्के हैं।" सुल्तान ने दीवान के अधिकारियों से पूछा कि, "तुम लोग किस प्रकार जागीर प्रदान करते हो? इसमें दो बातों के अतिरिक्त कोई अन्य बात नहीं। या तो तुम रियायत करते हो अथवा घूस लेते हो।" उन लोगों ने कहा कि, "हम लोग आज्ञा की अवहेलना किस प्रकार कर सकते हैं? जब यह आदेश हो जाता है कि अमुक परगने से इतने ग्राम लिख कर दे दो तो हम लोग आदेशानुसार कार्य करते हैं। इसके अतिरिक्त सब बादशाह के अधिकार में हैं।" सुल्तान ने आदेश दिया कि "क्योंकि सैयिदों की जागीर ऊपर के हुक्म से दी गई है अतः जो कुछ प्राप्त होता है वह उनका है।"

यदि किसी स्थान से कोई गायक अथवा वादक सुल्तान की सेवा में उपस्थित होता तो सुल्तान अपने समक्ष उसे नहीं बुलवाता था। मीरान सैयिद रुहुल्लाह तथा सैयिद इब्नुर्रसूल को शाही सरापर्दे के समीप स्थान दे दिया गया था जो कलाकार उपस्थित होता था वह उनके समक्ष अपनी कला का प्रदर्शन करता था। यदि वे योग्य होते थे तो सुल्तान के दरबार में उपस्थित किये जाते थे। शहनाई बजाने वाले १० व्यक्ति एक पहर रात्रि व्यतीत हो जाने पर खास सरापर्दे के समक्ष उपस्थित होते थे और शहनाई बजाते थे। सुल्तान का आदेश था कि इन चार मुकामों के अतिरिक्त कुछ न गाया जाय। सर्व प्रथम गौरा, तदुपरान्त कल्याण, इसके पश्चात् काणा[1] और फिर हुसैनी और इसे इस प्रकार समाप्त किया (५२) जाता था। यदि इन चारों मुकामों के अतिरिक्त वे अपनी इच्छा से कुछ बजाते थे तो इसके लिए उनसे पूछताछ की जाती थी।[2]

सुल्तान ने प्रत्येक कार्य के लिए समय निश्चित कर दिया था और हर एक का एक क्रम था जिसमें कमी बेशी न होती थी। उसने अपना समस्त राज्यकाल इसी प्रकार व्यतीत किया। उसके कार्य के विषय में किसी प्रकार की कोई आपत्ति न प्रदर्शित की जा सकती थी। केवल वह दाढ़ी मुड़वाता था और कहा जाता है कि कभी-कभी वह मदिरापान करता था, किन्तु कोई ऐसा व्यक्ति न था जिसने उसे बादशाही के समय मदिरापान करते देखा हो अथवा किसी समय उसे मादक अवस्था में पाया हो।

जब उसका अंतिम समय आ गया तो उसने मियां शेख लादन नामक एक आलिम से जोकि इमाम थे पुछवाया कि, 'नमाज न पढ़ने, रोज़ा न रखने, दाढ़ी मुड़वाने, मदिरापान करने तथा दण्ड हेतु नाक कान कटवाने जैसे अपराधों का क्या प्रायश्चित हो सकता है?' जब बन्दगी मियां ने आदेशानुसार उसकी सेवा में पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया तो सुल्तान ने आदेश दिया कि वाकया नवीसों[3] को हुक्म दिया जाय कि उसने अपने जीवन काल में जितनी नमाज न पढ़ी हो और रोज़ा न रखा हो और नाक और कान कटवाये हों उनमें से प्रत्येक का अलग-अलग हिसाब करें। जब उन लोगों ने हिसाब करके सुल्तान की सेवा में विवरण प्रस्तुत किया तो सुल्तान ने खज़ानेदार[4] को आदेश दिया कि बैतुलमाल[5] के खज़ाने से जो कुछ धन पृथक् है उस आलिमों के व्यय के लिए प्रदान कर दिया जाय। आलिमों ने खज़ानेदार से पूछा कि, "यह खज़ाना जो पृथक् किया गया है वह कहां से प्राप्त हुआ?" उसने उत्तर दिया कि, "जो पेशकश बादशाह लोग भेजा करते थे और अमीर लोग उसके सम्मान में अपनी ओर से जो वस्तुयें प्रेषित

१ 'ब' में 'कारा'।
२ यह वाक्य 'ब' में नहीं है।
३ समाचार लिखने वाले।
४ कोषाध्यक्ष।
५ शाही खज़ाने।

करते थे वे प्रत्येक वर्ष एकत्र होती रहती थी। जब वह उनके विषय में निवेदन करते थे तो आदेश होता था कि 'उन्हें पृथक् रखा जाय और जिस स्थान पर व्यय करने का हम आदेश दे वहा व्यय किया जाय। आज उसके व्यय का आदेश हुआ है।" सभी उसके पवित्र विचारो की प्रशसा करने लगे।

उसके कण्ठ में जो रोग उत्पन्न हो गया था उसका कारण यह है कि मिया शेख़ हाजी अब्दुल वहहाब ने सुल्तान को दाढी रखने के विषय में शरा[1] के आदेश बताये और कहा कि, "आप मुसलमानो के बादशाह है और दाढी नही रखते ?" सुल्तान ने कहा कि, "मेरी इच्छा है। मै रखूँगा।" शेख़ ने कहा कि, "किसी उत्तम कार्य के लिए विलम्ब न करना चाहिए।" सुल्तान ने कहा कि, "मेरी दाढी बडी छोटी है। यदि मै दाढी रखाऊगा तो लोग हसी उडायेंगे और उनको इससे हानि होगी, मै मुसलमानो की हानि नही चाहता।" शेख़ ने कहा कि, "मै अपना हाथ तुम्हारे मुख पर मलता हू। तुम्हारे घनी दाढी निकल (५३) आयेगी। सभी दाढिया इस दाढी के अभिवादन हेतु आया करेंगी। आपकी हसी उडाने का किसी को साहस नही होगा।" सुल्तान ने सिर झुका लिया और कोई उत्तर न दिया। शेख़ ने कहा "उत्तर क्यो नही देते ?" सुल्तान ने कहा कि, "जब मेरे पीर का आदेश होगा तो मै रखा लूँगा।" शेख़ ने पूछा कि "आपके पीर कहा है ?" सुल्तान ने कहा कि "वे शाहपुर नामक ग्राम के जगल में रहते है और कभी कभी मेरे पास आते है।" शेख़ हाजी ने पूछा कि "उनके दाढी है अथवा नही ?" सुल्तान ने उत्तर दिया, "नही। वे चारज़र्बी[3] है।"[4] शेख़ ने कहा कि, "जब मै उनसे मिलूँगा तो उन्हें भी शरा के आदेश का पालन करने के लिए कहूगा। आपको जल्दी करनी चाहिए।" सुल्तान ने मुह फेर लिया और चुप हो गया।

कुतुब आलम उठकर सलाम करके चले गये। उनके चले जाने के उपरान्त सुल्तान ने कहना प्रारम्भ किया कि, "शेख़ समझते है कि जो लोग उनकी सेवा में जाते है और उनके चरणो का चुम्बन करते है यह सब उनकी योग्यता के कारण है। वे इतनी बात नही समझते कि हम एक तुच्छ दास को यदि डोले[5] पर बैठा दें तो सभी अमीर उस डोले को कन्धे पर उठाये घूमेंगे।" शेख़ सीदी अहमद के पुत्र शेख़ अब्दुल जलील उस स्थान पर उपस्थित थे। जब वे शेख़ हाजी अब्दुल वहहाब के पास पहुचे तो उन्होने कहा कि, "सुल्तान आपकी अनुपस्थिति में यह बात करता था।" शेख़ ने अब्दुल जलील के कन्धे पर हाथ रख कर कहा कि, "आप मुहम्मद साहब की सतान है। सुल्तान ने आपको दासो से सम्बन्धित किया है, आप सन्तुष्ट रहें, उसका कण्ठ पकडा जायेगा।" शेख़ देहली आ गये। सुल्तान के कण्ठ के रोग का कारण यही था।

इस समय में स्वर्गीय सुल्तान के कुछ अमीरो का सविस्तार उल्लेख करता हू तदुपरान्त सुल्तान इबराहीम के राज्यकाल की घटनाओ का उल्लेख करूगा।

सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल के अमीर

मै उन अमीरो तथा पदाधिकारियो का उल्लेख नही करता जिन्हें मैंने नही देखा था किन्तु जिन्हे

१ इस्लामी नियम।
२ गुरु।
३ जिसकी दाढी, मूँछ, भवें तथा पलकें कटी रहती हों।
४ 'ब' में यह शब्द नहीं है।
५ 'ब' के अनुसार 'चुडवल'।

मैंने स्वय देखा था उनका उल्लेख प्रारम्भ करता हू। सर्वप्रथम मैं उन अमीरो की चर्चा करता हू जो आगरा में सुल्तान के साथ उपस्थित रहते थे।

मसनदे आली, हुसेन खा, खाने जहाँ लोदी

खाने जहा लोदी की यह प्रथा थी कि वह जब किसी सिपाही को नियुक्त करता था तो जो इस्तेकामत (जीविका साधन) उसे प्रदान कर देता था उसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन न करता था।[1] ९० वर्ष उपरान्त जब अफगानो की बादशाही में परिवर्तन हुआ तो उस समय उसकी दी हुई वजह (जीविका साधन) समाप्त हुई। उसका यह नियम था कि जब कभी वह सेना में होता तो सभी सैनिक उपस्थित रहते थे। जब वह घर पर आता और कोई व्यक्ति अभिवादन हेतु उपस्थित होता तो वह उससे उपस्थिति का कारण पूछता था। वह उसका उत्तर देता कि, "मैं अभिवादन हेतु आया हू।" वह कहता कि, "जब (५४) तक मैं सेना में रहू तब तक तुम बिना बुलायें हुए आओ। इस समय जब कि मैं घर में बैठा हू तब भी तुम मेरे सामने आ रहे हो, तुम्हारे परिवार वाले बुरा भला कहते होगे। ऐसा ज्ञात होता है कि तुम्हें अपने परिवार वालो से स्नेह नही है।" वह उसे तत्काल विदा कर देता और बैठने न देता।

जब कभी वह किसी के लिए कुछ निश्चित कर देता था तो उसकी वृत्ति उसकी मृत्यु के उपरान्त उसके पुत्र को प्रदान कर दी जाती। यदि उसके पुत्र न होता तो उसके भाई को दे दी जाती। यदि भाई भी न होता तो भतीजे, भागिनेय, जामाता तथा जो कोई भी उसका सम्बन्धी होता उसे प्रदान कर दी जाती। यदि उनमें से कोई भी न मिलता तो उसकी बिरादरी में से कोई भतीजा अथवा भागिनय मिलता तो उसे बुलवा कर प्रदान कर दी जाती। यदि उनमें से भी कोई व्यक्ति न मिलता तो फिर यह आदेश होता कि आकाजियो में से किसी के पुत्र को गोद ले लिया जाय। यदि उनमें से भी कोई न मिलता तो वह यह आदेश देता कि 'किसी भी एहगरजादे'[2] को पुत्र बनाकर उसे किसी ऐसे दास के जोकि सेवा योग्य हो सिपुर्द कर दिया जाय और उसे पेशवा बना दिया जाय।" उस बालक को गुरु को सौप कर बाण चलाना तथा घुडसवारी सिखाई जाती थी। सक्षेप में, किसी कारण भी वृत्ति को बन्द न किया जाता था।

आलिमो तथा सूफियो में से जो कोई भी उससे भेंट करता उसे वह कोई ग्राम, भूमि अथवा अदरार प्रदान कर देता था। वह अपने पडोसियो तथा आसपास की मस्जिदो की देखरेख रखता था। एक दिन बन्दिगी मिया कादन नामक एक आलिम प्रात काल खाने जहा के पास पहुचे। खाने जहा ने उनसे उस समय उपस्थित होने का कारण पूछा। मिया ने कहा कि, 'मैं खिचडी खाना चाहता हू। मैंने सोचा कि यदि मैं इस समय खिचडी अपने घर में पकाता हू तो विलम्ब हो जायेगा और खिचडी का समय निकल जायेगा अत किसी ऐसे भाग्यवान् का स्मरण करना चाहिए जिसके यहा खिचडी मौजूद हो। तदुपरान्त आपकी याद आई और मैं उठ कर चला आया।" उसने कहा कि "मैं खिचडी नही खाता, भोजन उपस्थित किया जा सकता है।" उसन कहा कि, 'फिर वही बात आ गई। खिचडी का समय न रहेगा।" खाने जहा ने कहा कि, "जब तक भोजन उपस्थित किया जायगा मैं बाजार से हल्वा मगवाता हूँ।" शेख ने कहा, "बहुत अच्छा, किन्तु धन लेकर मेरे पास आओ, जो कुछ मैं कहू उसे मगवाओ।"

१ 'ब' के अनुसार 'उसकी यह प्रथा थी कि वह जिस सैनिक को भी जागीर प्रदान करता था उसमें किसी कारण परिवतन न करता था। अपितु ६० वर्ष उपरान्त जब अफ़गानों की बादशाही का अन्त हो गया तो उनकी जागीरों में परिवर्तन हुआ'।

२ 'ब' में 'बुज़ुर्गज़ादे' किसी सम्मानित व्यक्ति की सतान।

खाने जहा ने एक व्यक्ति को आदेश दिया कि वह धन लेकर शीघ्र उपस्थित हो। जब वह धन लाया तो शेख ने कहा कि, "इसे मुझे दे दो और भोजन मगवाओ।" सक्षेप में, भोजन मगाया गया और शेख ने भोजन किया। जब वह भोजन कर चुका तो शेख ने कहा कि, "मैंने निश्चिन्त होकर भोजन किया है, डोले में कष्ट होगा।" खान ने कहा कि, "आप डोले पर क्यो बैठते है, क्या आपके पास घोडा नही है?" (५५) शेख ने कहा कि, "मन्दगति का घोडा डोले से भी खराब होता है। मेरे पास कोई ऐसा उत्तम घोडा नही है।" उसने कहा कि, "मैं अपनी सवारी का एक घोडा जोकि बडा ही उत्तम है आपको देता हू।" शेख ने कहा कि, "यदि ऐसा घोडा हो तो मै क्यो न सवार हूगा।" खाने जहा ने आदेश दिया कि, 'अमुक घोडा ले आओ।" घोडा जिस प्रकार अश्वशाला में बधा था उसी प्रकार लाया गया। खाने जहा ने आदेश दिया कि घोडा शेख के आदमियो को सौंप दिया जाय। मिया कादन ने कहा कि, "मैंने अत्यधिक भोजन कर लेने के कारण डोले की शिकायत की किन्तु यह तो उससे भी अधिक कठिन हो गया।" खाने जहा ने पूछा कि, "किस प्रकार?" उसने कहा कि, "मै कभी नगी पीठ के घोडे पर सवार नही हुआ।" खाने जहा ने कहा कि, "जीन भी लाओ।" जीन भी लाकर घोडे पर रखा गया। मिया ने पूछा कि, "यह घोडा मेरे घर रहेगा या पुन इस स्थान पर आ जायेगा?" खाने जहा ने कहा कि, "आपके घर रहेगा।" मिया ने कहा कि, "वहा कोई व्यक्ति इसकी देखरेख करना नही जानता।" खाने जहा ने कहा कि, "एक व्यक्ति को मासिक वेतन अदा करके इस कार्य हेतु नियुक्त कर दिया जाय।" मिया ने पुन कहा कि, "यह क्या खाता है?" उत्तर मिला कि "उरद, मिश्री तथा घी सर्वदा खाता है।" मिया ने कहा कि, "ये वस्तुएँ फकीर के घर में कहा है?" खाने जहा ने उसे भी निश्चित कर दिया। मिया ने कहा कि, "जब यह जीन पुरानी हो जायगी तो दूसरी जीन की आवश्यकता होगी और झूल भी जब फट जायेगी तो दूसरी झूल की आवश्यकता होगी।" खाने जहा ने कहा कि, "उसे भी यहा से ले लो।" तदुपरान्त मिया ने कहा कि, "सेवक अपने दैनिक व्यय की आवश्यकता हेतु आया करेगा इससे चिन्ता बढेगी, कृपा करके एक ग्राम हमें दे दिया जाय ताकि सेवक वेतन, जीन, साज, झूल इत्यादि का प्रबन्ध करता रहे।" खाने जहा ने उसकी प्रार्थनानुसार बदायूँ के परगने का एक ग्राम उसे मददे मआश में इनाम के रूप में दे दिया। चलते समय मिया ने कहा कि, "हमने भोजन किया, घोडा पाया, जो लोग डोला लाये थे उन्हें कुछ नही प्राप्त हुआ।" खाने जहा ने उन्हें कुछ धन देकर लौटा दिया।

खाने जहाँ के उत्तराधिकारी जैनुद्दीन

खाने जहाँ एसा महान् व्यक्ति था[1]। जब खाने जहा की मृत्यु हो गई तो उसके पुत्र अहमद खा को न तो खाने जहा की उपाधि मिली और न उसका स्थान। मिया जैनुद्दीन तथा मिया जबरुद्दीन स्वर्गीय खाने जहा के पदाधिकारी थे। खान की सेना तथा परगने उन्हें सौंप दिये गये। शाही कलम से उनके लिए लिखा गया कि 'जैनुद्दीन को ज्ञात होना चाहिए कि उसके मवाजिब शाही सरकार से निश्चित हुए हैं। मसनदे आली तथा उसके पदाधिकारियो से उसका कोई सम्बन्ध नही।" तदुपरान्त मिया जैनुद्दीन सेना तथा परगनो की गणना[2] करते रहे और तर्कशबन्दो[3] की जागीर भी उसी समान रही। खाने जहा के पुत्र

१ 'ब' में इस घटना का उल्लेख सक्षिप्त रूप में किया गया।
२ 'ब' के अनुसार 'प्रबन्ध'।
३ 'ब' के अनुसार 'सिपाहियों'।

अहमद खा को कैथल के समीप उसकी माता के नाम से एक तत्ता[1] दिया गया, उसे (जैनुद्दीन को) प्रति वर्ष एक लाख तन्के घोडे के क्रय हेतु तथा १ लाख वस्त्रो के क्रय के लिए और १ लाख पान तथा अन्य वस्तुओ (५६) के लिए प्रदान होते थे[2]। इसका ब्योरा प्रति वर्ष जब सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया जाता तो वह आदेश देता कि दे दिया जाय। कई वर्ष इसी प्रकार व्यतीत हो गये। एक बार जब उसने प्राचीन प्रथानुसार प्रार्थना ब्योरा प्रस्तुत किया तो सुल्तान ने आदेश दिया कि, "न तो बन्द न तो खुला।" सुल्तान ने स्वय अपने हाथ से ये शब्द लिखे। उसे आश्चर्य हुआ कि "हमने सविस्तार प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया किन्तु सक्षिप्त उत्तर प्राप्त हुआ। इसका समाधान किस प्रकार किया जाय ? कोई कुछ कहता और कोई कुछ।" मिया जैनुद्दीन ने कहा कि "मै समझ गया।" लोगो ने कहा कि "आप बतायें कि क्या समझे ?" उसने कहा कि, "सुल्तान ने आदेश दिया कि खालसे के परगनो में से जो रह गया है उसे बाट दिया जाय ताकि उसके मागने का कोई प्रश्न ही न रहे।" तदुपरान्त उसे उतना न प्राप्त हुआ।

मिया जैनुद्दीन इतने धर्मनिष्ठ तथा भाग्यशाली थे कि उनके विषय में यह छन्द पढा जा सकता है—

छन्द

"मै अपने काल का आसिफ[3] हू और निष्ठा के इस अकाल में
मेरा रूप स्वामियो का है और चरित्र दरवेशो का।"

अब मै उसके चरित्र के विषय में लिखता हू ताकि लोगो को यह पता चल सके कि उस काल के पदाधिकारी ऐसे थे जैसे कि आज के मशायख (सन्त) भी नही हैं। उसका नियम यह था कि रात्रि के अतिम समय से उठता था और थोडी सी रात रह जाने पर स्नान करता और तहज्जुद पढता। जमाअत के उत्तरदायित्व को भी वह न त्यागता था[4]। इशराक तथा नवाफिल में भी व्यस्त रहता था। दिन में कुरान के १० सिपारे वह खडे-खडे पढ डालता था। वह १७ सिपारे पढा करता था। कभी वह बैठ कर न पढता था। वह हजरत गौसुस्सकलैन का एक तकमिला[5] पढता था। पूरी 'हिस्ने हसीन" एव विभिन्न

१ 'ब' के अनुसार 'तप्पये हापरी' सम्भवत ग्राम।
२ 'ब' के अनुसार "उसे प्रत्येक वर्ष एक लाख तन्के खासे के व्यय हेतु १ लाख तन्के घोड़ों की खूराक तथा १ लाख तन्के पान के लिये निश्चित थे। प्रत्येक वर्ष जब वह प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करता तो यह आदेश होता कि पिछले वर्ष की भाँति दे दिया जाये। 'उनचे अज पर्गनाते खालसा मान्दा अस्त ओरा किस्मत कुनेद कि जाय तलबे ऊ न मानद। हमचुनी कर्दन्द। बाज ऊ रा मवाजिब न रसीद"।
३ मुसलमानों के विश्वास के अनुसार सुलेमान पैगम्बर का वजीर जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिये प्रसिद्ध था।
४ 'ब' के अनुसार 'तहज्जुद की नमाज पढता तथा कुरान के सिपारे खड़े-खड़े पढता था यहा तक कि प्रात काल की नमाज का समय आ जाता जिसे वह घर में पढता था। जमाअत की नमाज बहुत बडे समूह के साथ पढता था'।
५ 'ब' के अनुसार वह गौसुस्सकलैन के अवराद का एक भाग पढता'। गौसुस्सकलैन, शेख़ अब्दुल कादिर जीलानी अथवा जीली, जो पीरे दस्तगीर गौसुल आजम मुहीउद्दीन कहलाते हैं, का जन्म १०७८ ई० में गीलान अथवा जीलान मे हुआ जो ईरान में है। उनकी मृत्यु ११६६ ई० में हुई और वे बगदाद में दफन हुए। कादिरी सूफ़ी आप ही के अनुयायी होते हैं। उन्होंने सूफ़ी मत से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थों की रचना की जिसमें फ़ुतूहाते गैब, मल्फ़ूज़ाते कादिरी, गुनयतुत्तालेबीन, बहजतुल असरार, इत्यादि बड़ी प्रसिद्ध हैं।

दुआये पढा करता था। रात-दिन में ५०० रकातें नवाफिल की खडे-खडे पढा करता था। दोपहर से आधी रात तक ईश्वर की उपासना में व्यस्त रहता था। इस बीच में वह कभी भी सासारिक विषयो पर वार्तालाप न करता था। यदि यह वार्ता आवश्यक होती तो सकेत से बता देता था कि ऐसा ऐसा किया जाय। भोजन के समय भी विभिन्न ज्ञानो के सम्बन्ध में बातचीत हुआ करती थी। आलिमों तथा पवित्र व्यक्तियों के साथ वह भोजन करता था। तदुपरान्त वह विश्राम करता। मध्याह्नोत्तर की नमाज़ जमाअत के साथ पढता था। नमाज़ के उपरान्त दरद तथा अवराद पढने लगता था। इन दोनों कार्यों के बीच में जो आवश्यक बातें कहनी होती थी वह उससे कह दी जाती थी। दिन के अतिम समय की नमाज़ पढ कर वह अवराद पढने लगता था। तदुपरान्त वह मगरिब की नमाज़ पढता था। वह अत्यधिक नवाफिल पढता था। जब अवराद तथा नवाफिल पढ चुकता तो एक घडी रात्रि व्यतीत हो जाती थी। थोडी देर वह अपने मित्रो तथा विश्वासपात्रो के साथ बैठता था और मेवा अथवा थोडी सी शीर बिरज (५७) खाता था। तदुपरान्त वह घर के भीतर चला जाता था। उसके सेवको में से कोई भी स्त्री अथवा पुरुष ऐसा न था जो नमाज़ न पढता हो। यदि वह बाज़ार से किसी दास को बुलवाता तो उसे शिक्षक के सिपुर्द कर देता ताकि वह उसे नमाज़ पढाये और शरा सबधी आदेश दिखाये। जब जुमे की रात्रि होती तो वह अस्र की नमाज़ के समय से एबादत प्रारम्भ कर देता था। यदि कोई हिन्दू उस समय उपस्थित होता तो उसे लौटा देता था। और उस रात्रि में वह किसी हिन्दू का मुह न देखता था।

जुमे की एक रात्रि में सुल्तान ने उसको बुलवाने के लिए ३ बार दूत भेजे। जब सुल्तान को इस बात का ज्ञान हो गया कि "मैंने ३ बार आदमी भेजे और मिया ज़ैनुद्दीन उपस्थित नही होता 'तो उसने आदेश दिया कि "आज जुमे की रात्रि है नमाज़ के उपरान्त बुलाया जाय।" वह प्रत्येक मास में बैज़ के दिनों में तथा बृहस्पतिवार एव शुक्रवार को अनिवार्य रूप से रोज़ा रखता था। इनके अतिरिक्त जो आवश्यक रोज़े होते थे उन्हें भी वह रखता था। ग्रीष्म ऋतु हो अथवा शीत ऋतु इसमें कोई कमी नही होती थी। यदि वह इस बात को सुन लेता कि १० कोस पर भी शुक्रवार की नमाज़ हो रही है तो वह जिस दशा में भी होता उसे न छोडता था। प्रत्येक जुमे की रात्रि में छ मन शरबत तथा हलवा दरबार में उपस्थित किया जाता था। प्रत्येक शबे कदर[1] में उसमें वृद्धि कर दी जाती थी। उसकी रसोई सभी के लिए खुली रहती थी। प्रत्येक साधारण तथा सम्मानित व्यक्ति, गोरे और काले, विशेष और साधारण को ३ बार भोजन प्रदान किया जाता था। मित्रो तथा शत्रुओ एव आने-जाने वालो में से जो कोई उपस्थित होता उसे भोजन मिल जाता। रमज़ान के पवित्र महीने में अफतार का भोजन तथा सहर का खाना जिसमें शीर बिरज के प्याले होते थे प्रत्येक के पास पहुच जाते थे। वह जो कुछ स्वय खाता वही अन्य लोगों को भी खिलवाता था। प्रत्येक वर्ष वह अपने सबन्धियो में से समस्त स्त्रियो तथा पुरुषो को देहली से आगरा भेंट करने के लिए बुलवाता था। विदा के समय वह प्रत्येक व्यक्ति को यह आदेश दे देता था कि जो कुछ भी उसकी इच्छा हो उसे वह कह दे। वही वस्तु वह उसे प्रदान कर देता था। जो कोई पुत्री के विवाह के सम्बन्ध में कहता था चाहे वह उसका सम्बन्धी हो, पडोसी अथवा अपरिचित व्यक्ति, वह उसे पूरा सामान, वस्त्र, पलग, सोने के समय के कपडे और यदि वह पालकी के योग्य होता था तो पालकी भी प्रदान करता था। जो कुछ एक पिता को करना चाहिए उसे वह सपन्न करता था। यदि उसके दायरे के किसी व्यक्ति के घर में कोई अतिथि आ जाता तो वह उसके भोजन हेतु उसकी रसोई से भोजन मगवा लेता, उसे वह

1 शक्ति की रात अर्थात् २७ रमज़ान की रात।

अपना अतिथि समझता था। नाना प्रकार के उत्तम भोजन वह इतनी अधिक मात्रा में उसके पास भेजता था कि सभी निश्चिन्त होकर खाते थे और अपने सेवको को दे देते थे। मुहम्मद साहब की मृत्यु के १२ (५८) दिनो के बीच में वह नित्यप्रति २ हजार तन्के का भोजन वितरण करता था। प्रथम और अंतिम दिन ४, ४ हजार तन्के के उत्तम भोजन तथा अत्यधिक हलवे तैयार होते थे। यह समझ लेना चाहिए कि उस समय के ४ हजार तन्को का मूल्य आजकल क्या होगा।

सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु के उपरान्त उसका अधिकार क्षीण हो गया और अहमद खा वल्द खाने जहा को प्राप्त हो गया। जब वह पदच्युत हुआ तो उसने कोई धन एकत्र न किया था। बहुत से लोग उसकी सेवा में उसी प्रकार निष्ठावान् रहे। वह प्रत्येक की योग्यतानुसार उसकी सहायता करता था, यद्यपि उसके पास व्यय हेतु धन की कमी हो जाती थी। एक दिन लेखक के पिता शाख सादुल्ला जो कि बाल्यावस्था से उस समय तक मियां के प्रति निष्ठावान् थे मियां के पास पहुचे। उन्होने देखा कि उनके समक्ष कागज रखे हुए हैं जिन्हें वे फाड-फाड कर दास को देते जा रहे हैं और दास उन्हे धोता जाता है। मेरे पिता ने पूछा, कि "आप क्या कर रहे है ?" उत्तर मिला कि, "सम्मानित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति मुझसे जो धन मागते थे उसे मैं ऋण के उद्देश्य से न देता था। वे लोग ऋण से सवन्धित पत्र लिख कर भेज देते थे। यदि मैं नही लेता था तो उन्हें दुख होता था। आज मैं गैरवजही हो गया हू, सभव है कि मेरे हृदय में कुछ अन्य विचार आ जाय। मेरे पास ३ लाख के पत्र हैं। चाहे कितनी भी व्यय की कमी हो किन्तु मैं इन्हें फाडे डालता हू ताकि इनसे लाभान्वित होने के विषय में न सोच सकूं। इसके अतिरिक्त यदि मेरी मृत्यु हो जाय तो कही ऐसा न हो कि मेरे पुत्र अज्ञानवश ऋण का अभियोग चला दें।" उनके समस्त मित्र भी उन्ही के समान साहसी थे। उनमें से एक मेरे पिता भी थे जिनका एक बहुत बडा परिवार था। जब उन्हें व्यय की कमी हो जाती तो घर वाले तथा कुछ मित्र उनके हितैषी होने के कारण कहते थे कि, "अन्य लोग जो आपके पूर्व मिया की सेवा में थ, वे न रहे, आप दो-तीन साल रहे। यह ईश्वर की कृपा है किन्तु इस प्रकार समय व्यतीत न हो सकेगा।" वे उत्तर देते कि, जिन लोगो का उद्देश्य धन तथा रोजगार था वे इन वस्तुओ के चले जाने के उपरान्त न रहे। हमारा जो कुछ उद्देश्य है वह अपने स्थान पर है।" जब लोग उनके उद्देश्य के विषय में पूछते तो वे कहते कि 'बाल्यावस्था से इस समय तक हमारा उद्देश्य आप लोगो के प्रति निष्ठा है। इसमें कोई भी कमी नही। आप लोगो के सौभाग्य से मैं यह समझता हू कि दो-तीन वर्ष तक मैं काम चला ले जाऊगा।" मित्रगण कहते कि, हम भली भाति ज्ञात है कि आपके घर में कुछ भी नही है।" इसका उत्तर वे यह देते कि, 'भवन को बच कर खायेंग (५९) और पुस्तकालय भी इतना बडा है कि उसे बेच कर खाते रहेंगे। जब तक इस सपत्ति के चिह्न हैं मुझे कोई दुख नही है।" मिया जैनुद्दीन तीन-चार वर्ष तक जीवित रहे और इसी प्रकार बिना वजह के जीवन व्यतीत करते रहे। वे ५५ वर्ष तक सेवा करते रहे।

मामून नामक एक मुगल एक स्थान से नौकरी छोड कर मिया जैनुद्दीन के पास पहुच गया था। उन दिनो में सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु हो गई। मिया गैर वजही[1] हो गये। उस व्यक्ति न भी अन्तिम सीमा तक स्वामी भक्ति प्रदर्शित की। वह सैनिक था और उत्तम घोड़े तथा सिपाहियो के वस्त्र रखता था। जब आय का अभाव हो गया तो लोगो ने उससे कहा कि, 'तुझे यहा कुछ भी भोजनार्थ नही मिलता। क्यो परेशान होता है ?" वह कहता था कि 'आजकल मेरी जीविका के साधना म ईश्वर ने कमी कर दी है। जहा कही भी मैं जाऊगा मेरा यही भाग्य मेरे साथ रहेगा। यदि सफलता भाग्य में है तो वह यहा भी

१ 'ब' के अनुसार 'माज़ूल (पदच्युत) हो गये थे'।

आ जायेगी किन्तु ऐसे धर्मनिष्ठ व्यक्ति का साथ छोडकर जोकि अत्यधिक मूल्यवान् है कहा जाऊ।" उसके जितने घोडे थे वे एक-एक करके नष्ट होने लगे। यदि उससे कोई यह कहता कि, "एक घोडे का बेच कर अन्य घोडो के भोजन का प्रबन्ध करो" तो इसका उत्तर वह यह देता कि, "इन्हें भी मैंने ईश्वर के लिए क्रय किया था। अब मै इन्हें अपनी आवश्यकता हेतु नही बेच सकता।" अत उसने उन्हें नही बचा। उसके पास एक भैंस थी, लोग उससे कहते कि "इसे बेच डाल", तो वह उत्तर देता कि, "मैंने इसका दूध पीकर ईश्वर की उपासना की है। उसने ईश्वर की उपासना में मेरा साथ दिया है। यह कयामत मीजान[1] के पलडे में मेरे साथ होगी।"

खोई हुई वस्तु के सम्बन्ध में नियम

एक बार एक घोडा बीमार हो गया। उसके पुत्र उसे नदी में जल पिलाने ले जा रहे थे। बालू में उसके पाव के नीचे कोई वस्तु आ गई, बालक ने उसे उठा लिया। उसने देखा कि एक तलवार[2] तथा सोने का खोल है। उसे लेकर वह अपने पिता की सेवा में पहुचा और उसे अपने पिता को दिखाया कि, "मैंने इसे बालू में पाया है। मामून उठकर अपने पुत्र के हाथ पकड कर मिया की गोष्ठी में पहुचा और उस खोल को पुत्र के हाथ से लेकर भूमि पर फेंक दिया और जैनुद्दीन से कहा कि, "आप मेरे स्वामी हैं। (६०) मेरे पुत्र ने यह वस्तु पाई है। यह जिस किसी का हक हो उसे दे दी जाय।" मिया ने उसे विज़ारत के चबूतरे पर भेज दिया और कहलाया कि, "एक व्यक्ति ने इसे पडा हुआ पाया है अत आप लोगो को मैं इसे सौंपता हू।" उस समय यह प्रथा थी कि "जिस किसी को कोई वस्तु पडी हुई मिलती थी वह उसे चबूतरे तक पहुचा देता था अथवा नगर के द्वार की जजीर में इस आशय से लटका देता था कि किसी दिन उसका स्वामी मिल जायेगा और पूछताछ के उपरान्त वह वस्तु उसे दे दी जायगी।'

बेगराज नामक एक हिन्दू उस द्वार से जा रहा था। उसने खोल को पहचान कर चबूतरे वाला से कहा कि, "यह मेरा है।" उससे पूछा गया कि, "इसका क्या प्रमाण है?" उसने उत्तर दिया, "यह १५ तोले का है।" पूछताछ के उपरान्त वह उसे दे दिया गया। उसने पूछा कि "यह किस व्यक्ति को मिला था जिसने इसे दीवान में लाकर दिया?" लोगो ने बताया कि, "मिया जैनुद्दीन के दायरे में से किसी व्यक्ति ने इसे पाया है।" वह वहा से उठ कर मिया के पास आया और उनसे पूछा कि, "इसे किसने पाया है?" मिया ने मामून मुगल का नाम बता दिया। बेगराज ने उसके देखने की इच्छा प्रकट की। जब वह बुलवाया गया तो बेगराज ने २०० तन्के उसके समक्ष रख दिये, किन्तु उसने स्वीकार न किया। लोगो ने कहा कि, "वह अपनी इच्छा से शुकराना देता है। इसे ले लो।" उसने उत्तर दिया कि, "यदि मेरे पुत्र को यह वस्तु न मिलती तो वह मुझे यह धन न देता इस प्रकार यह उसी का एक भाग है। क्योकि वह मेरे लिए हराम था अत यह भी हराम है।"

इसके अतिरिक्त वह प्रत्येक सोमवार को १ लाख बार दरूद पढता था और मुहम्मद साहब की आत्मा की शाति हेतु ४०० ताबे के तन्के दान करता था। बृहस्पतिवार के दिन १ लाख बार एखलास पढता था और गौसुस्सकलैन की आत्मा की शाति हेतु ४०० तन्के का हलवा दान करता था। यह कार्य-क्रम उसके लिए प्रत्येक सप्ताह में आवश्यक था। ईश्वर को धन्य है कि वह ऐसा उत्तम काल था और उसमें इतना महान् बादशाह और इतने उत्कृष्ट पदाधिकारी थे।

[1] तराज़ू। मुसलमानों के विश्वास के अनुसार उनके सासारिक कर्म एक तराज़ू पर तौले जायेंगे।
[2] 'ब' के अनुसार चाकू।

जवरुद्दीन

अव में दूसरे भाई मिया जवरुद्दीन के विषय में लिखता हू। वे वडा ही पवित्र जीवन व्यतीत करते थे। नफल तथा रोजे उसी प्रकार से रखते थे किन्तु उतनी अधिक कुरान न पढते थे। अनिवार्य नमाजो के पूर्व तथा नवाफिल के पूर्व अलग-अलग वजू करते थे। वे अधिकाश देहली में रहते थे। ८ मास देहली में तथा ४ मास आगरा में। जव तक वे देहली म रहते तो सोमवार के दिन शम्सी हौज़ पर आलिमो, (६१) सूफियो, कवियो, विद्वानो, कव्वालो तथा वादको के साथ समय व्यतीत करते थे। उनकी रसोई में अत्यधिक भोजन पकता था। वुधवार को सुल्तानुल मशायख[1] की खानकाह में यमुना नदी के तट पर उपर्युक्त गोष्ठी के समान एक गोष्ठी का आयोजन होता था। वृहस्पतिवार को कदम रसूल नामक स्थान पर इसी प्रकार की गोष्ठी का आयोजन होता था। शुक्रवार के दिन फीरोज़ावाद म इसी प्रकार की गोष्ठी आयोजित होती थी। शुक्रवार के दिन वह शहर देहली में जुमे की नमाज हेतु उपस्थित होता था। शनिवार के दिन मालचा[2] नामक स्थान के महल में गोष्ठी का आयोजन होता था। वह वहाँ दो दिन तक शिकार खेलता। उसका अन्त पुर तथा उसका शिविर उसके साथ रहता था। यदि वह एक रात्रि के लिए भी कही ठहरता तो विना अन्त पुर के न रहता था। वह बडा वीर था और सुल्तान इवराहीम के युद्ध के समय मारा गया। उसने वादशाह से दो मास तक कुछ नही लिया और केवल ईश्वर के लिए शिविर में रहा यहाँ तक कि शहीद हो गया। मिया जैनुद्दीन के शम्सी हौज़ के ऊपर दफन हुआ और उसका मकवरा तथा खानकाह शम्सी हौज के किनारे हैं।

मुजाहिद खाँ काला

इनके अतिरिक्त एक अन्य अमीर महामिद था। उसे मुजाहिद खा काला कहते थ। उसका यह नियम था कि जव वह किसी को कोई कार्य सौंप देता था तो वह उसे बुलवा कर यह कहता था कि, 'मैंने तुम्हें सेवा इस कारण प्रदान की है कि मैं अकेला हू। मेरे वहुत से मित्र हैं। मैं सभी स्थानो पर नही पहुच सकता। जिन स्थानो पर मुझे जाना चाहिए वहा मैं तुम्हें अपना वकील[3] वनाकर भेजता हू।" जव वह इसे स्वीकार कर लेता तो वह उससे कहता कि "तेरी प्राचीन जागीर उदाहरणार्थ २० हज़ार थी अव तेरे मन्सव में ृद्धि हो गई तो तुझे व्यय में भी वृद्धि करनी ही होगी। वह वेतन सेना के प्रवन्ध हेतु था, अव मैं तेरे वेतन को दुगना करता हू।" वह उससे कहता कि, "तेरे वहुत से सम्वन्धी तथा मित्र तेरी उन्नति के विषय में सुनकर तेरे पास उपस्थित होगे। तुझे आतिथ्य सत्कार करना पडेगा। इस वेतन से तू अपना प्रवन्ध करेगा। उन लोगों को कहा से दे सकेगा? २० हज़ार तन्के नक्द मेरे खजाने से ऋण के रूप में ले ले और फस्ल के समय जो वस्तु सस्ती हो उसे क्रय कर ले। कुछ समय उपरान्त उसे वेच डाल। जो लाभ हो उसे अपने अधिकार में कर ले और ऋण का धन अपने स्थान पर पहुचा दे। परगने में उदाहरणार्थ ५० अथवा सौ ग्राम होगे, प्रत्येक ग्राम में एक हल की खेती कर। वह तेरे अतिरिक्त व्यय (६२) हेतु पर्याप्त होगी।" तदुपरान्त वह उसे अपने पास बुलवा कर पान प्रदान करता था और

१ देहली के प्रसिद्ध सूफी शेख निज़ामुद्दीन औलिया जिनका जन्म वदायूँ में अक्तूबर १२३३ ई० में हुआ और मृत्यु देहली में १३२५ ई० में हुई।

२ 'व' के अनुसार 'आलचा'।

३ प्रतिनिधि।

विदा कर देता था और कहता था कि, "अपनी सपत्ति की रक्षा के विषय मे जहा तक तेरी ईमानदारी का सबन्ध था मैंने व्यवस्था कर दी। इसके अतिरिक्त यदि तू वेईमानी करेगा तो तू जाने और तेरा कार्य।"

ख्वाजा जौहर

ख्वाजा जौहर खवास खा तथा मिया भूवा का परवाना नवीस था। इसकी यह प्रथा थी कि जब वह दीवान में उपस्थित होता था तो उसके समक्ष पजिकायें रख दी जाती थी। जब तक वह ईश्वर के लिए कोई कार्य न कर लेता था वह कलम हाथ में न लेता और पजिकाओ को न खोलता था। स्वर्गीय सुल्तान सिकन्दर उसके परवाने को इतना विश्वस्त समझता था कि यदि कोई यह प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करता कि मेरे पास ख्वाजा जौहर का परवाना है तो अविलम्ब ही उसके उद्देश्य की पूर्ति हो जाती थी।

खवास खाँ

खवास खा को सुल्तान ने नगरकोट की ओर पर्वतीय प्रदेशो को अधिकार में करने के लिए भेजा। उसने उसे विजय किया और वहा के मदिर का खण्डन करके मूर्ति को उठा लाया। उसके ऊपर जो पीतल का छत्र था उसे भी ले आया। उस छत्र पर हिन्दवी लिपि में कुछ लिखा हुआ था और वह लेख २ हजार वर्ष पुराना था। जब वे वस्तुए सुल्तान के पास पहुची तो काफिरो की मूर्ति को उसने कसाइयो को इस आशय से दे दिया कि वे इससे मास तौलने के बाट तैयार करायें। पीतल के छत्र के जल गरम करने हेतु बरतन बनवा डाले और उन्हें मस्जिदो तथा अन्य स्थानो पर इस उद्देश्य से भेज दिया कि लोग उसके जल से वजू किया करें।

जिन दिनो खवास खा को उस स्थान पर भेजा गया तो उसके अधिकार की विलायत वालो के लिए वजहे मआश[1] हेतु तीन लाख निश्चित थे। वह १५ लाख तक दिया करता था। राजधानी में लौटने के उपरान्त खान अत्यधिक रुग्ण हो गया। उसने सुल्तान के पास सन्देश भेजा कि "मुझे दो बातें कहनी हैं।" सुल्तान ने पुछवाया कि, "वह मेरे समक्ष प्रार्थना करेगा अथवा किसी के द्वारा कहला भेजेगा?" उसने उत्तर भिजवाया कि, "बादशाह की सेवा में स्वय निवेदन करूगा।" सुल्तान ने कहलाया कि, "यदि आ सकते हो तो यहा तक आओ अन्यथा मैं स्वय आऊगा।" तदुपरान्त वह पालकी में बैठ कर सुल्तान की सेवा में पहुचा। सुल्तान ने पालकी अपने पास मगवाई और कहा, "जो कुछ कहना है वह कहो।" उसने निवेदन किया कि, "पता नही इस रोग के कारण मेरी मृत्यु हो जाय अथवा मैं जीवित रहू। मुझे दीवान के सबन्ध में जो हिसाब करना है उसके कागज लाया हू। किसी को आदेश हो कि वह हिसाब ले ले।" सुल्तान ने कहा कि, "मैंने तुझे वकीले मुतलक[2] कर दिया था तुझसे किस प्रकार (६३) हिसाब हो सकता है?" उसने निवेदन किया कि, "मैंने सुल्तान के आदेश बिना कुछ लोगो को कुछ वस्तुएँ दे दी हैं। यदि उन्हें उन्ही के पास रहने दिया जाय तो अच्छा है अन्यथा मेरे मवाजिब[3] से मुजरा कर लिया जाय।" सुल्तान ने पूछा कि, "किस प्रकार के व्यक्तियो को चीजें दी गई हैं?" उसने उत्तर दिया कि, "उनमें से बहुत से लोग सहायता के पात्र थे और उनकी जीविका के साधन अच्छे न थे।

१ विद्वानों तथा पवित्र लोगों की जीविका हेतु वृत्ति।
२ पूर्ण अधिकार सम्पन्न वकील (प्रतिनिधि)।
३ वेतन।

किसी के पास या तो कुछ न था और या यदि ३ लाख तन्के थे तो १५ लाख तन्के कर दिये गये।[1] जो कुछ भी आदेश हो उसका पालन किया जाय।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "तू मेरा वकील था मैं समझता हू कि तूने जो कुछ किया होगा वह मेरे हित के लिए किया होगा। मैं इसे उचित समझता हू और हिसाब तेरे सिपुर्द करता हू।" सुल्तान ने उससे कागज लेकर धुलवा दिया। उसने पुन निवेदन किया कि, "मैंने कुछ मुसाहिबो को कुछ कार्य हेतु नियुक्त किया था। मैंने उनसे हिसाब ले लिया है। उनके बारे में क्या आदेश होता है?" सुल्तान ने कहा कि, "क्योकि तूने उनसे हिसाब ले लिया है, मुझे स्वीकार है।" वह जो कुछ निवेदन करता उसका उत्तर कृपायुक्त पाता। सुल्तान ने उसके प्रति नाना प्रकार से कृपादृष्टि प्रदर्शित करके उसे विदा कर दिया। *खवास खा रोने लगा। सुल्तान ने पूछा कि, "तू क्यो रोता है?"* खवास खा ने उत्तर दिया कि, "आपने मेरे प्रति अत्यधिक कृपा प्रदर्शित कर दी। इस समय मैं वास्तविक बादशाह के भय से रोता हू कि वह मेरे साथ किस प्रकार का व्यवहार करेगा।" सुल्तान ने उससे कहा कि, "जो कुछ मैंने किया है यह उसकी कृपा का चिह्न है। क्योकि उसकी तेरे प्रति कृपा है अत उसने मेरे हृदय में कृपा डाल दी। जब तुझे यहा सुगमता प्राप्त हो गई तो वहा भी यही आशा कर।" तदुपरान्त सुल्तान ने उसे वापस कर दिया।

जब खवास खा की मृत्यु हो गई तो मिया भूवा उसके स्थान पर नियुक्त हुआ। सर्वप्रथम *सुल्तान ने यही आदेश दिया कि, "स्वर्गीय खवास खा के पदाधिकारियो को स्थानान्तरित न किया जाय।* वे जिस प्रकार कार्य करते थे उसी प्रकार कार्य करते रहें।'

मियाँ भूवा

खवास खा के उपरान्त मिया भूवा उसके स्थान पर हुआ। उसकी गोष्ठी में सर्वदा आलिम, विद्वान् तथा दार्शनिक लोग बैठे रहा करते थे। उसने प्रत्येक ज्ञान से सम्बन्धित ग्रन्थ एकत्र किये थे। वह उत्तम सुलेख लिखने वालो को प्रोत्साहन देता रहता था। वह खुरासान, एराक तथा मावराउन्नहर से विद्वानो को एकत्र कराता रहता था और उनके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करता रहता था। उसने चिकित्सा सम्बन्धी ग्रन्थों को एकत्र करके उनमें से (महत्वपूर्ण भाग) चयन करके एक ग्रन्थ की रचना कराई जिसका नाम 'तिब्बे सिकन्दर शाही' रखा। हिन्दुस्तान में चिकित्सा सम्बन्धी उससे अधिक विश्वस्त कोई अन्य ग्रन्थ नही है। जिस किसी ने उसे देखा है वही भली भाति समझ सकता है कि वह कैसा ग्रन्थ है।

(६४) *वह पाचो समय की नमाज जमाअत के साथ पढता था और बहुत से लोगो के साथ मिल* कर भोजन करता था। उसकी रसोई में अत्यधिक भोजन बनता था। रोजाना डेढ हजार पक्षियो का मास पकाया जाता था। उसकी यह प्रथा थी कि यदि कोई सिपाही उसके पास नौकरी हेतु आता था तो चेहरा नवीस[2] उसका धनुष तथा कारकुन लोग उसके पास जो घोडे तथा ऊट होते थे उन्हें रखवा लेते थे और उसके लिए खेमे तथा घोडे और ऊट की व्यवस्था कर देते थे। शिविर के घोडो का दाना, झूल, रसोई का सामान, पान, काफूरदान[3], खुशबूदान, पलग, सोने के कपडे, पहनने के कपडो के फर्श, अस्त्र-शस्त्र तथा युद्ध के यत्रों में से एक-एक के विषय में लिख कर सुल्तान की सेवा म ब्योरा प्रस्तुत होता था *मिया के समक्ष सूची पेश की जाती थी। वह सूची रख दी जाती थी और* विशेष स्थान पर रहती थी

१ सम्भवत उसने जो १५ लाख की वृद्धि कर दी थी उसकी अनुमति इस प्रकार ली है।
२ सैनिकों का पूर्ण विवरण लिखने वाले।
३ कपूर रखने का पात्र।

उस सिपाही को बादशाह के घर की चौकी[1] सिपुर्द कर दी जाती थी। चौकी नवीस उसका नाम चौकीदारी में लिख कर ले जाता था। वह सर्वदा चौकी की सूची का स्वयं निरीक्षण करता था। वह घोडो को बेच डालता था और दूसरे स्थान पर नौकरी का प्रयत्न करना चाहता था। एक घोडा अपने पास रख लेता था। दूसरे दिन उपस्थित होता था। यदि उसके पास व्यय का अभाव हो जाता तो बाज़ार में सर्राफो के पास जाकर ऋण मागता था। वे उससे पूछते कि, "क्या मिया भुवा ने तेरी धनुष रख ली है?" वह उत्तर देता कि, "हा रख ली है।" तदुपरान्त प्रत्येक बडी प्रसन्नता से उसके दैनिक व्यय की व्यवस्था कर देता था। उसके भोजन हेतु जिस वस्तु की आवश्यकता होती थी उसे प्रदान कर दी जाती थी। २, ३ वर्ष इसी प्रकार व्यतीत हो जाते। मिया को स्वयं उसका स्मरण हो जाता और महला[2] की वह सूची दीवान के अधिकारियो के पास इस आशय से भेज देता था "कि अमुक व्यक्ति को बुला लिया जाय। इस साज व महला के अनुसार जो कुछ उचित हो उसका वेतन निश्चित कर दिया जाय।[3] जब वह सतुष्ट हो जाय तो हमें सूचना दी जाय।" दीवान के अधिकारी उसे सतुष्ट करने के उपरान्त मिया को इस बात की सूचना देते थ। तदुपरान्त उससे वे पूछते कि 'किस परगने म उसके वेतन हेतु जागीर दी जाय?" जहा उसका निवास-स्थान होता वहा के निकट के परगने मे वह आदेश देता कि अमुक परगने से प्रदान कर दी जाय। मिया के ग्राम प्रत्यक विलायत में थे। उनमें उसे जागीर प्रदान की जाती थी। जिस दिन से उसकी भेंट हुई थी उस दिन से लेकर समस्त बातो के निश्चित होने के दिन तक हिसाब करके दो अथवा ३ वर्ष का वेतन वह ख़ज़ाने से दिलवा दिया करता था ताकि उसे ऋण से मुक्ति प्राप्त हो जाय। वह विदा होकर जो कुछ बच जाता उसे अपने घर इस आशय मे ले जाता कि निश्चित होकर जीवन व्यतीत करे।

१ पहरा।

२ इस शब्द का अर्थ स्पष्ट नहा।

३ यह भाग स्पष्ट नहीं है। 'ब' के अनुसार, 'नित्य प्रति नाना प्रकार के उत्तम भोजनों के अतिरिक्त १५० प्रकार के हलवों की व्यवस्था कराता था। सैनिकों के सम्बन्ध में उसकी यह प्रथा थी कि यदि कोई सिपाही नौकरी के लिये आता तो चेहरा नवीस धनुष और कारकुन घोड़ा, ऊँट और जो कुछ उसके पास होता था दाख़िल दफ़्तर करा लेते (रख लेते थे) उसके लिये ख़ेमे, भोजन, घोड़े, ऊँट इत्यादि दे देते। भोजन की वस्तुये, पान, काफ़ूरदान, ख़ुश्बूदान, पलग, पहनने के वस्त्र, अस्त्र शस्त्र उसके लिये निश्चित कर देते थे। उस सिपाही को बादशाह की चौकी के लिये नियुक्त कर दिया जाता था। मिया भुवा के नियुक्त किये हुये चौकी के व्यक्तियों को बादशाह अपने समक्ष बुलवाता था और उन्हे सिपाहियों में भरती कर लेता था। मिया भुवा बादशाह से उसके लिये इनाम भी निश्चित करा देता था। यदि इस बीच में उसके पास व्यय हेतु धन न रहता तो वह सर्राफ़ के पास जाकर ऋण ले लेता। वे उससे पूछते कि क्या उसे मिया भुवा के समक्ष प्रस्तुत किया जा चुका है? यदि वह उत्तर देता कि हा मेरे चेहरे का वरक (कागज) मिया भुवा के ख़ास ख़रीते में हैं तो सर्राफ़ लोग उसे उसके दैनिक व्यय हेतु धन दे देते थे। २, ३ वर्ष इसी प्रकार व्यतीत हो जाते थे। जिस समय बख़्शी तथा दीवान वाले उसका महला तथा साज वाजिब देखते तो मिया भुवा के समक्ष उसे मुजरा करा देते थे। मिया आदेश देता था कि दो-तीन वर्ष का वेतन ख़ज़ाने से नक़द दे दिया जाय और उससे पूछा जाय कि उसके लिये किस परगने में जागीर निश्चित की जाये। जहा वह पसन्द करता उसे जागीर दे दी जाती थी और आदेश दे दिया जाता था कि कुछ समय के लिये जाकर निश्चिन्त होकर सेना के सामान की व्यवस्था करता रहे। मैंने मिया भुवा का कुछ थोड़ा सा हाल यहा लिखा, अब कुछ अन्य अमीरों का हाल लिखता हू।'

(६५) यह विवरण जो मैने दिया वह उसके पदाधिकारियो से सबन्धित था। अब मै उसके अमीरो के विषय में जो कुछ जानता हू उसका उल्लेख करूगा। अब थोडा सा खाने जहा लोदी के विषय में उल्लेख करता हू।

दौलत खाँ लोदी

दौलत खा लोदी लाहौर का हाकिम था और शरा पर पूर्ण रूप से आचरण करता था। उसने *अपने महल में ज्योतिषियो के परामर्श से प्रत्येक घडी तथा क्षण के शुभ तथा अशुभ होने के विषय में लिखवा* लिया था। वह शरा पर इतना अधिक आचरण करता था कि उसके अधीनस्थ राज्य में मदिरा, सुअर, दुराचार तथा जुआ कही भी दृष्टिगत न होता था। झूठ तथा अपशब्द उसकी शुभ जिह्वा से कभी न निकलते थे। वह सभा तथा एकान्त में कुरान का पाठ किया करता था और कुरान का वरक लौटने के लिए गुलाब का प्याला इस आशय से अपने पास रखता था कि थूक, जैसा कि सर्वसाधारण की प्रथा है, अगुलियो में न लगाना पडे। वह उचित रूप से ज़कात का धन प्रदान किया करता था। इसी प्रकार उसके अन्य कार्यों के विषय में भी अनुमान लगाना चाहिए।

मिया सुलेमान फर्मुली

मिया सुलेमान फर्मुली शेख मुहम्मद सुलेमान का पौत्र था और आगरा में निवास करता था। उसके भी बडे विचित्र नियम थे। वह भी सर्वदा उचित समय पर जमाअत की नमाज के लिए उपस्थित होता था।

मिया बदरुद्दीन उसके इमाम[1] थे। लेखक ने उनके पास कंज़ नामक पुस्तक पढ़ी है। इमाम नमाज के पूर्व ही नमाज की व्यवस्था प्रारम्भ कर देते थे और अपने शिष्यो को विदा कर देते थ। एक दिन मैंने उनसे पूछा कि 'अभी तो समय है आप इतनी जल्दी क्यो कर रह हे ?' उन्होंने कहा कि 'मे यद्यपि बहुत पहले पहुचने का प्रयत्न करता हू किन्तु मिया के पूर्व नही पहुच पाता। उन्हे मै सदा मुसल्ले[2] पर पाता हू।'[3]

जब वह दरबार करता था तो सिपाही अभिवादन हेतु उपस्थित होते थ। जब तक वह बैठा (६६) रहता तो २००० अश्वारोहियो से कम उपस्थित न होते थे। उसके पास ६००० अश्वारोही थे। उनमें से कोई वापस न जाता था। अन्य सवार आते जाते थ। जब वह स्वय पान खाता था तो सभी उपस्थित गणो को पान खिलवाता था। उसके सेवक कई-कई सौ बीडे लगवा कर लाते थ और दरबार में जितने लोग उपस्थित रहते थे उन्हें वे पान खिलाते थे। यदि वह १० बार स्वय पान खाता तो १० बार ही उपस्थित लोगो को देता था। यदि वह कपूर खाता तो अपने दोनो ओर तीनो अगुलियो से कपूर लेकर बाटता था। पाच-पाच सौ तोले की काफूरदानी उसके दोनो ओर लोग लिये खडे रहते थे। यदि वह कस्तूरी खाता था तो भी इसी प्रकार बाटता था। जब तक वह अन्य लोगो को न खिला लेता उस समय तक कोई वस्तु न खाता था। उसकी रसोई म अत्यधिक भोजन बनता था। उसके सहनक (थाल)

१ धार्मिक नेता। वह व्यक्ति जो सामूहिक नमाज पढ़ाये।
२ नमाज की चटाई।
३ 'ब' में इन कहानियों का क्रम कुछ परिवर्तित है और कुछ बातों का उल्लेख नहीं किया गया है।

इतने बडे होते थे कि १० व्यक्तियो के लिए पर्याप्त होते थे। वर्षा ऋतु में वह दरिद्रियों को वस्त्र[1] तथा कम्बल प्रदान करता था। आशूरे के दिनो में वह विधवाओ को चादरें प्रदान करता था। मुहम्मद साहब की मृत्यु के दिना में तथा रजब मास में वह सहायता के पात्रो को नक़द धन देता था। यदि कोई सिपाही उसके दर्शनार्थ आता और दरबार के समय वह खडा हो जाता तो वह उसे आलिंगन करता था। यदि वह सवारी में रहता था तो घोडे से उतर पडता था। उसने कभी किसी से घोडे पर बैठे-बैठे भेंट नही की। वह कुछ सासारिक बातो में भी तल्लीन रहता था किन्तु यह मेरे लिए उचित नही कि मैं उसके विषय में लिखूँ।

मिसरा

'मेरा उद्देश्य तेरी ही प्रशसा करना है।"

जलाल खा लोदी, खानेखाना नोहानी तथा मिया मूसा के पुत्र दिलावर खा अपव्यय तथा भोग-विलास में व्यस्त रहते थ। उनके अत्यधिक पत्निया थी और तदनुसार उनका व्यय भी था। दिलावर खा के घर में बाजार से ढाई हजार तन्के का प्रति दिन फूल आता था।

मियाँ गदाई फर्मुली

मिया गदाई फर्मुली कन्नौज का मुक्ता भी बडा सम्मानित व्यक्ति था। उसमें अत्यधिक सूझ बूझ तथा बुद्धिमत्ता थी। वह विद्वानो एव आलिमो के साथ रहा करता था। जब वह सेना म था तो उसने कुछ ऊटो को इस बात के लिए पृथक् कर दिया था कि उन पर 'देग हाय रवा' पकाये जाते थे। बादशाह के शिविर में से अमीरो एव अन्य सम्मानित व्यक्तियो में कोई ऐसा न था जिसे उसकी श्रेणी के अनुसार हल्वा न प्रदान होता हो। शाही सवारी के समय वह सर्वदा बादशाह के साथ रहता था।

सैयिद खाँ

(६७) मुबारक खा यूसुफ खेल के पुत्र सैयिद खा, जो लखनौती की अक्ता में से खाता था और स्वय तातारे के अधीन रहता था, का यह नियम था कि जब कभी भी कोई उसके द्वार पर पहुचता था तो उस तत्काल सूचना दे दी जाती थी चाहे आने वाला कह अथवा न कहे। चाहे कलन्दर आता चाहे सिपाही अथवा अमीर सभी के लिए यही नियम था। जब वह भोजन के लिए बैठता और उसके समक्ष भोजन लगाया जाता तो उसके समक्ष एक बहुत बडी चीनी[2] जिसमें प्रत्येक प्रकार का भोजन आ जाय रखी जाती थी। प्रत्येक प्रकार का अत्यधिक भोजन भी उसमें रखा जाता था। उसके ऊपर अत्यधिक रोटी तथा अचार जो उपलब्ध होता था रखा जाता था। उसके ऊपर पान का बीडा और बीडे के ऊपर एक सोने की मुहर रखी जाती थी। उसे वह उन फ़क़ीरो को जो द्वार पर उपस्थित रहते थे भेज देता था। जब फकीरो की शुभ कामनाओ की ध्वनि उसके कान में पहुचती तो वह ईश्वर का नाम लेकर भोजन प्रारम्भ करता था। जिस स्थान पर भी वह बैठता था उसके पास एक गठरी रहती थी। उसमें ३ प्रकार के वस्त्र होते थे। एक मलमल का, दूसरा जोवार, तीसरा खासा[3]। दरवेशो

१ एक लम्बा ढीला पहनावा जो सब वस्त्रों के ऊपर पहना जाता था।
२ चीनी की प्लेट।
३ विभिन्न प्रकार के वस्त्र।

से आशीर्वाद के रूप में जो वस्त्र उसे प्राप्त होते थे वे भी उसके पास रहते थे। वह इतना अधिक दानी था कि यदि वह किसी सेवक से भी वार्तालाप कर लेता तो उसे अमीर बना देता था। कोई भी ऐसा व्यक्ति न होता था जिसे वह एक लाख तन्के न दे दे।

एक दिन मिया एमाद फर्मुली का पुत्र शेख अहमद उसके पास उपस्थित हुआ। उसे इस विषय में सूचना दी गई। उसने उसे अपने पास बुलवाया और पूछा कि, "तू किस कारण आया है ?" उसने कहा कि, "मैं विदा होने आया हू, कारण कि मैं अपनी पुत्री का विवाह करने के लिए घर जा रहा हू।" उसने उसे पान का बीडा दिया और जो गुलाम बच्चा उपस्थित था उससे कहा कि, "पलग के नीचे जवाहरातो का जो बक्स रखा हुआ है उसे निकाल कर खोल।" जब उसने उसे खोला तो उसमें सोने की मुहरें निकली। उसने आदेश दिया कि 'दोनो हाथों से मुहरें निकाल कर उसके पल्लू में डाल दे।" तदुपरान्त उसने उसे विदा कर दिया।

जब वह वहा से चला गया तो वही गुलाम बच्चा पीछे से पहुचा और उसने कहा कि "दीवान के अधिकारियो के सामने चलो ताकि वे हिसाब कर लें कि कितनी मुहरें हैं।" जब उन लोगो ने हिसाब किया तो ७० हजार तन्के निकले। जब मिया को इसकी सूचना मिली तो उसने आदेश दिया कि 'जाकर एक लाख तन्के पूरे कर दो।"

एक दिन वह शिकार खेल रहा था। कोई ग्रामीण उसके पास दही लाया और निवेदन किया कि इस बरतन को सोने की मुहरो से भर दिया जाय। उसके आदेशानुसार उसे सोने से भर दिया गया। मुहरो की सख्या एक लाख से अधिक थी। एक बार चन्देरी की एक स्त्री एक थाल मे नीम की पत्तिया लेकर खान के समक्ष आई। खान ने देखा कि नीम की पत्तिया बडी हरी तथा ताजी है। खान के पूछने (६८) पर उसने उत्तर दिया कि, "मैं इस प्रकार साग पका कर लाई हू कि इसके रूप मे कोई परिवर्तन नही हुआ है किन्तु भोजन का स्वाद पूर्ण रूप से विद्यमान है।" उसने एक व्यक्ति को आदेश दिया कि वह उसे चखे। चखने पर साग बडा स्वादिष्ट निकला और उसमें नीम की कडवाहट का कोई भी प्रभाव न था।

एक दिन पायगाह के घोडो का वह अर्ज[1] कर रहा था। सद्दू खा उसके समक्ष उपस्थित था। वह उसका एक अमीर था। उस समय एक घोडा लाया गया। उसने घोडा देख कर सद्दू से उसके विषय में पूछा। सद्दू ने उसकी बडी प्रशसा की। उसने आदेश दिया कि सद्दू खा के आदमियो को घोडा दे दिया जाय। दूसरा घोडा लाया गया। उसने पुन उसके विषय में पूछा, सद्दू ने उसकी पुन प्रशसा की। वह भी उसके आदमियो को दे दिया गया। इसी प्रकार उसने २० घोडा के विषय में पूछा, वह प्रशसा करता जाता था और घोडा उसे मिलता जाता था। अन्त में वह चुप हो गया। मिया ने उसके चुप होने का कारण पूछा। सद्दू ने कहा कि, "दान सीमा से अधिक बढ गया, मैं कहा तक कहू।" मिया ने मुस्करा कर कहा कि, "एक-एक लेने से थक गये।" जितने भी घोडे उपस्थित थे उसके विषय में उसने आदेश दिया कि वे सब सद्दू खा के घर भेज दिये जाय। कुल १२० घोडे थे। उसने सब घोडे उसे प्रदान कर दिये।

एक रात्रि मे उसने सद्दू खा से पूछा कि, "तू ने चकमक बोधा देखा है ?" उसने कहा कि, मैंने चकमक बोधे का नाम सुना है किन्तु देखा नही है। वह एक प्रकार का नक्श है जिससे लोग गाना गाते हैं।" मिया न कहा, "जो कुछ तूने सुना है उसे इस स्थान पर देख।"

1 निरीक्षण।

तीना को खोला गया और सफ़ेद चादर पर रखा गया। सामने मोमबत्तियां लाई गईं। उस चबूतरे पर ९४ सफ़ेद तार के समान थी। चारों ओर मोमबत्तियां खड़ी कर दी।

"यह चकमक कोषा है इसे देखो। चकमक हिन्दुस्तानी भाषा में दुर्पेश को कहते हैं।" सद्द खां ने उसकी बड़ी प्रशंसा की और कहा कि, "जो कुछ मैंने सुना था आज अपनी आंख से देख लिया।"[1] उसने कहा कि 'किस डिबिया के विषय में तूने सोचा है कि तुझे मिल जायेगी ?" उसने कहा कि "मैंने किसी के विषय में नहीं सोचा है।" मियां ने उससे फिर जोर देकर पूछा तो उसने उत्तर दिया कि, "मैंने इस नीचे वाली डिबिया के विषय में सोचा है।" वह तीन लाख की थी। मियां ने मुस्करा कर कहा कि, "बड़ी दर्जक डिबिया को छोड़ कर छोटी के विषय में सोचा है। बड़ी ७ लाख की थी।" उसने कहा कि, "मैं समझता था कि इस छोटी को जो एक ओर रखी है मुझे प्रदान करेंगे।" मियां ने कहा कि, "बहुत अच्छा तू ने इसके विषय में सोचा और मैंने इसके (बड़ी को) विषय में। तीसरी रही जाती है। मैं तुझे तीनों प्रदान करता हूं।" तीसरी ५ लाख की थी।

(६९) एक बार खान को बादशाह ने चन्देरी की ओर भेजा। यात्रा बड़ी लम्बी थी। जो जानवर खजाना ले जा रहे थे उनकी पीठ घायल हो गई। मियां को सूचना दी गई कि, "जानवर थक गये हैं। अब दूसरे जानवर नहीं मिलते यदि आदेश हो तो सैनिकों को खजाना दे दिया जाय। उनके पास व्यय हेतु धन नहीं है। जानवरों को जो कोई ग्रामों में ले उन्हें दे दिया जाय।" खान ने कहा कि, "दे दिया जाय।" जब प्रत्येक को खजाना दे दिया गया तो इसकी सूची तैयार करके खान के समक्ष भेजी गई। खान ने सूची को टुकड़े-टुकड़े कर डाला और कहा कि, "क्या मैं बक्काल अथवा सर्राफ हो गया जो ऋण दिया करूं ? मैं प्राप्त करता हूं और दान करता हूं।" इस प्रकार ७ लाख का वितरण कर दिया गया।

आज़म हुमायूं शिरवानी

मसनदे आली आज़म हुमायूं शिरवानी कड़ा का मुक्ता[2] बड़ा ही प्रतापी योद्धा था। धार्मिक एवं सांसारिक कार्यों में अत्यधिक योग्य था। उसकी यह प्रथा थी कि वह प्रत्येक वर्ष २ हज़ार कुरान शरीफ क्रय करता था और उनमें से कुछ को तो वह अध्ययन हेतु अंतःपुर में रखता था और कुछ को हाफ़िज़ों को इस आशय से दे देता था कि वे उसे ठीक कर दें। जब मुहम्मद साहब की मृत्यु का मास अथवा रजब आता तो वह उन्हें आलिमों को प्रदान कर देता था और अन्य कुरान क्रय कर लेता था। मुल्तान तथा उच्छ की सीमा तक से लोग कुरान की इच्छा से उसके पास आते थे। वह उन्हें कुरान देकर विदा कर देता था। दूसरे वर्ष फिर उतनी ही कुरान क्रय करता था।

ईदुरज़ुहा[3] के दिन वह ३ हज़ार गाय, दुम्बे तथा ऊंट की कुर्बानी करता था। रात्रि के पिछले पहर में तहज्जुद की नमाज पढ़ कर कुरान का पाठ करता था और नाश्ते के समय तक या तो कुरान का पाठ करता या नमाज़ पढ़ता रहता था। इस बीच में वह कोई सांसारिक बात न करता था। उसके पास ४५ हज़ार सवार थे और उसकी गजशाला में ७०० हाथी थे। प्रत्येक प्रकार के घोड़ों की पायगाह पृथक् थी। उसके दो हज़ार पांच सौ मरातिबदार[4] थे और कई बड़े-बड़े अमीर उसकी सेवा में रहते थे।

१ इसका अर्थ स्पष्ट नहीं।
२ 'ब' में 'हाकिम', अक्ता का अधिकारी।
३ हिजरी वर्ष के अन्तिम (१२वां) मास की १०वीं तारीख बकरईद।
४ 'ब' के अनुसार 'मन्सबदार'।

उनमें से एक सैफ खा अचा खेल उसका नायब था। उसके पास छ हजार अश्वारोही थे। दौलत खा खानी के पास ४ हजार अश्वारोही थे। अली खा ऊशी के पास ४ हजार अश्वारोही थे। फीरोज खा शिरवानी के पास छ हजार थे। इनके अतिरिक्त विभिन्न अमीरो के पास २५ हजार अश्वारोही थे। उसने दो बार पटना के काफिरो पर आक्रमण किया और उन्हें भगा कर उनका पीछा किया।[1]

एक दिन वह मध्याह्न के भोजन के पश्चात् सो रहा था। उठने के उपरान्त उसने सैफ खा को बुलवा कर कहा कि, "यह ढिढोरा पिटवा दो कि समस्त सेना तैयार रहे। मैं शीघ्रातिशीघ्र आक्रमण करूगा।" वह स्वय जौशन पहन कर तथा अस्त्र शस्त्र लगा कर चल खडा हुआ। २० कोस की यात्रा के (७०) उपरान्त सैफ खा ने पूछा कि, "हे खान! हमें भी बताया जाय कि आप कहा जा रहे हैं।" उसने कहा कि, "मुहम्मद साहब ने मुझे स्वप्न में बताया है कि सवार हो जाओ। अमुक स्थान पर काफिर बहुत बडी सख्या में हैं, तुझे विजय प्राप्त हो जायगी। मुझे जिस स्थान पर जाने का आदेश हुआ है मैं वहा तक जा रहा हू।" सैफ खा ने कहा कि, *"कोई भी स्वप्न के आधार पर अपनी सेना को इस प्रकार नहीं परेशान* करता।" उसने दातो के नीचे अगुली दबा कर कहा कि, "तुझे तावा[2] करनी चाहिए। मैंने स्वप्न में मुहम्मद साहब के शुभ अस्तित्व को देखा है।" उसने कहा कि, "मैं २० कोस यात्रा कर चुका हू कुछ पता चलना चाहिए कि कहा जाना है।" खान ने कहा कि, "मुझे स्थान दिखा दिया गया है, उस स्थान तक चलना है। वह चाहे जहा भी हो।" उसने पूछा कि, 'किस प्रकार इस बात का पता चलेगा कि वह स्थान कहा है?" खान ने कहा कि, "वह स्थान मेरी दृष्टि में है। जब वह स्थान आ जायगा तो मैं तुम्हें बता दूंगा।" इसी प्रकार वे यात्रा करते रहे।[3] अचानक एक स्थान पर पहुच कर खान ने कहा कि, मित्रो! तैयार हो जाओ। जो स्थान मुझे दिखाया गया था वह आ गया है।" अल्प समय में वे अचानक काफिरो के विरुद्ध पहुच गये और उन पर आक्रमण करके विजय प्राप्त कर ली। कुछ दिन वहा ठहर कर वे लौट आये।

अहमद खा

जमाल खा लोदी सारग खानी का पुत्र अहमद खा जौनपुर का हाकिम था। उसके पास २० हजार अश्वारोही थे। उसका बडा ही उत्तम स्वभाव था। उसने प्रत्यक कार्य के लिए एक समय निश्चित किया था, वह कार्य उस समय पर करता था। यदि वह कार्य उस समय पर पूर्ण न हो जाता तो दूसरे दिन उसी समय पर करता था। रात्रि के अन्त में वह स्नान करता तथा तहज्जुद पढता था। दो सफद वस्त्र धारण करता था और गुलाब की दो कुमकुमें[4] वस्त्रो पर छिडकता था। प्रात काल सुन्नत[5] की नमाज घर के भीतर पढता था और अनिवाय नमाजें जमाअत के साथ पढता था। जानमाज़[6] पर बैठ बैठे सौ बार ईश्वर का नाम लेता था। वह ख्वाजा हुसैन नागौरी का मुरीद था। तदुपरान्त वहा से उठ कर

१ 'ब' के अनुसार 'पटना का राजा भागकर समुद्र में प्रविष्ट हो गया उसने समुद्र तक उसका पीछा किया। राजा का राज्य तथा वश छिन्न भिन्न हो गया। तदुपरान्त वह लौट आया।
२ तोबा घृणित अथवा निन्द्य कर्म पुन न करने की प्रतिज्ञा अथवा शपथ पूवक की गयी दृढ प्रतिज्ञा।
३ 'ब' के अनुसार 'उन्होंने ६० कोस यात्रा की'।
४ 'ब' के अनुसार 'शीशे।
५ वह नमाज जो अनिवार्य न हो।
६ नमाज पढने की चटाई अथवा वह कपड़ा जिसे बिछा कर नमाज पढी जाती है।

अपने पिता के समक्ष अभिवादन हेतु जाता था। कुछ अवराद[1] वहा पढता था। ३ घडी तक वह घर में रहता था। गुलाम बच्चे आकर उसे सूचना देते थे। जब २ घडी व्यतीत हो जाती तो वह वहा से अखाडे की शिक्षा के स्थान पर पहुचता था। वहा जो कुछ भी कहना, देखना तथा सुनना होता था कहता सुनता था। २ घडी वहा रहता था। वहा से उठ कर वह पेशख़ाने[2] में पहुचता था जहा से वह प्रत्येक व्यक्ति का अभिवादन स्वीकार करता था। वहा बैठे-बैठे वह हाजिब[3] को बुलवाता था और उन्हें आदेश देता (७१) था कि वे विशेष पदाधिकारियों को लायें। ४ व्यक्ति आते थे, एक नायब परवाना नवीस[4], एक मजमूआदार[5], एक वकील जोकि घर के द्वार पर चबूतरे[6] पर बैठता था। उन लोगो से सम्बन्धित जो कार्य होते थे उनके विषय में पूछताछ करता था। तदुपरान्त वह हाजिब को बुलवा कर आदेश देता था कि जो कोई भी उसके द्वार पर कोई आवश्यकता लेकर आया हो उसे बुलवाया जाय। ४ घडी तक वह समस्त प्रबन्ध करता था। तदुपरान्त वह पूछता था कि, "क्या कोई व्यक्ति ऐसा रह गया है जिसे कुछ कहना है?" वे लोग जाकर पूछताछ करते थे। जब कोई न मिलता तो वह आदेश देता कि द्वारपाल को द्वार से हटा दिया जाय ताकि प्रत्येक व्यक्ति अभिवादन हेतु उपस्थित हो सके। विशेष तथा साधारण व्यक्ति अभिवादन हेतु उपस्थित होते थे। वह ४ घडी तक बैठा रहता था। दिन व्यतीत हो जाने के उपरान्त वह उठ कर अन्तःपुर में चला जाता था। भोजन इत्यादि से निवृत्त होकर वह विश्राम करता था। फिर लोगो का अभिवादन स्वीकार करता था। एशा[7] की नमाज़ के समय तक वह बैठा रहता था।

मशायख़ (सन्त) आलिम, पदाधिकारी तथा उच्च पदाधिकारियों के पुत्र इत्यादि अपने-अपने निश्चित स्थान पर बैठते थे। यदि सिपाही भूल से आलिमो की सभा में आ जाता तो वह उनसे कहता कि, "अपना स्थान पहचानो।" वह उसे वहा से उठवा कर सिपाहियों की पक्ति में बैठा देता। यदि आलिमो तथा सूफियों की पक्ति में से कोई सिपाहियो की पक्ति में बैठ जाता तो वह यही कहता कि "आप अपना स्थान पहचानें" और उसे अपने समीप बुलवा कर बैठाता था।

एक दिन उसने एक ज़मुर्रद[8] क्रय किया। उसका मूल्य २५ हजार तन्के दिया। धन की थैलियाँ दीवान खाने के प्रागण में एकत्र थी कि नमाज़ का समय आ गया। खान ने आकर पूछा कि, "इन थैलियों को इस स्थान पर क्यो रख छोडा है?" उत्तर मिला कि, "सैयिदो से जो ज़मुर्रद खरीदा गया है, यह उसका मूल्य है।" खान ने स्वय ज़मुर्रद न देखा था। उसने कहा कि, "ज़मुर्रद लाया जाय।" जब उसने ज़मुर्रद देखा तो कहा कि, "यह उचित नही कि इस पत्थर के टुकडे के लिए इतना धन दिया जाय।" उपस्थित

१ कुरान के विभिन्न भागों का विभिन्न अवसरों पर पाठ।
२ 'ब' के अनुसार 'दीवान ख़ाने'।
३ दरबार में सुल्तान तथा दरबारियों के मध्य में हाजिब लोग खड़े होते थे और उनकी आज्ञा बिना कोई सुल्तान तक न पहुँच सकता था। उनका सरदार अमीर हाजिब कहलाता था। समस्त प्रार्थना-पत्र भी अमीर हाजिब तथा हाजिबों द्वारा ही सुल्तान के सम्मुख प्रस्तुत होते थे। लगभग इसी प्रकार के कार्यों के लिये बड़े-बड़े अमीर भी हाजिब रखते थे।
४ परवाना लिखने वाले।
५ वह अधिकारी जो कर वसूल करने वालों के हिसाब किताब की जाच किया करता था। अभिलेख का प्रबन्ध करने वाले भी मजमूआदार कहलाते थे।
६ सम्भवतः कचहरी के चबूतरे पर।
७ रात की अन्तिम अनिवार्य नमाज़।
८ हरे रग का रत्न।

गण में से एक ने कहा कि, "यह अनुचित नही है। अपितु यह कूटनीति के अनुसार है। उन लोगो ने कई बार इस प्रकार का अपराध किया है। उन्हें इस धन को लादने के लिए बहुत से जानवरो की आवश्यकता होगी। ये लोग अपने कमर में कटार रखते है।" खान ने पूछा कि, "क्यो रखते है?" उत्तर मिला कि, "काल के कुचक्र के विषय में सभी को ज्ञान है। यदि वे इतना अपने पास रखेंगे तो कभी काम आयेगी।" खान ने कहा कि, "यह उससे भी अनुचित है। एक यह कि वह अपने विषय में किसी बुरे समय को सोचता है और इस पत्थर के टुकडे के भरोसे पर ईश्वर के समक्ष अपना विश्वास खोता है।" जिन लोगो ने उसे बेचा था उन्हें अपने समक्ष बुलवाया और उनसे पूछा कि, "तुम्हें यह कहा से मिला?" उन्होंने उत्तर दिया कि, "हमें यह अपने पूर्वजो से पैतृक सपत्ति के रूप मे प्राप्त हुआ है।" खान ने पूछा (७२) कि, "उन्होने कितने में क्रय किया था?" उन्होने उत्तर दिया कि, 'एक लाख तन्के में।" खान ने उन लोगो से कहा कि, "तुम लोग बडी विचित्र बात कहते हो। एक लाख तन्के की सपत्ति को २५ हजार तन्के में बेचते हो।" उन्होने उत्तर दिया कि, "जब से हम इसे रखे हुए थे उस समय से इसके लिए ग्राहक ढूढ रहे थे किन्तु कोई ग्राहक न मिलता था।" खान ने पुन मुस्करा कर कहा कि, "यह विचित्र बात है। यह तुम्हारी आवश्यकता के समय तुम्हारे काम आयेगा।" यह कह कर उसने उस रत्न को लौटा दिया। जो बात कठिन थी उसे सरल कर दिया। २५ हजार तन्के उसने ईश्वर के लिए दान कर दिये। ५ हजार तन्के उसने उन्हें दे दिये, ५ हजार बन्दगी मीरान सैयिद को दान कर दिये। शेष १५ हजार तन्के आलिमो, सूफियो तथा दरिद्रियो को बाट दिये और कहा कि "यह सौदा अच्छा है या वह? तुम लोग निर्णय करो।" सभी उसकी प्रशसा करने लगे।

लाद खाँ

अहमद खा का ज्येष्ठ पुत्र आज़म[1] लाद खा बडा सदाचारी एव दानी था। वह सासारिक कार्यों के प्रति इतना उदासीन था कि कभी भी सासारिक कार्यों को जिह्वा पर न लाता था। उसके पदाधिकारी तथा वकील ऐसे उत्तम थे कि वे इसके लिए उसके समस्त कार्यों को ईमानदारी से सपन्न कर देते थे और उसके लिए कोई कार्य न छोडते थे। वे जब कोई कार्य सपन्न कर लेते थे तो उसे उस विषय में सूचना दे देते थे। वह गणना मे पूर्ण सख्या से अधिक कुछ भी न जानता था। वह स्वय ढाई अथवा डेढ के विषय में कुछ न समझता था। यदि इसकी चर्चा होती तो वह पूछता कि "ढाई क्या होता है?" यदि फारसी भाषा में उसे समझाया जाता तो वह समझ लेता किन्तु हिन्दी भाषा में यदि उसे समझाया जाता तो वह न समझ पाता। जिस किसी को वह कुछ दान करता तो यही आदेश देता कि १ सेर अथवा दो सेर सोना तथा चादी उसे दे दिया जाय। तोलचे तथा दिरहम का वह कभी उल्लेख न करता था। जहा कही से भी कोई उपहार आता उसे वह स्वय अपनी आख से न देखता और न उसे खजाने में भिजवाता। कागज अथवा पत्र में वस्तुओ की जो सूची दी होती थी वही उसे सुना दी जाती थी। उसकी यह भी प्रथा थी कि यदि वह किसी के साथ शतरज खेलता होता और उस समय कोई पेशकश उसकी सेवा में आती तो वह उसे उसी व्यक्ति को प्रदान कर देता था। यदि वह शाहनामा[2] अथवा सिकन्दरनामा[3] सुनता तो

१ 'ब' मे 'आज़म' नहीं है।

२ फ़िरदौसी (मृत्यु १०२० ई०) का प्रसिद्ध काव्य जिसमें प्राचीन ईरानी बादशाहों का विषद विवरण दिया गया है।

३ निजामी गजवी (मृत्यु १२०६ ई०) का प्रसिद्ध काव्य जिसमें सिकन्दर की कुछ काल्पनिक कहानियों का उल्लेख है।

उस समय जो कुछ भी सामने आता वह पढने वाले को दे देता। यदि कोई चीज़ जल पीने के समय आती तो वह उसे जल पिलाने वाले को दे देता था। यदि चौगान खेलते समय कोई चीज़ आती तो वह रिकाबदारो[1] को मिल जाती। यदि वह चिकित्सको, ज्योतिषियो, वादको तथा कहानी कहने वालो में से किसी के साथ, जिन्हें मत्यक कहते थे, होता तो जो कोई भी वहा उपस्थित होता वह वस्तु उसी व्यक्ति को प्रदान (७३) कर दी जाती थी। यह लेखक बहुत समय तक उसका इमाम[2] रह चुका है। पाचो समय की नमाज के वक्त जो कुछ मुसल्ले[3] पर प्रस्तुत किया जाता वह मुझे प्रदान कर दिया जाता था। मेरे मित्रो को जब यह पता चल जाता कि किसी स्थान से कोई उत्तम वस्तु आई है तो वे उसे विशेष रूप से उसी समय प्रस्तुत करते थे। उत्तम प्रकार के वस्त्र अथवा किमाश अथवा बाण अथवा गुजरात की वस्तुए उदाहरणार्थ कलमदान, जवाहरातो का सन्दूक, चौकी इत्यादि में से जो वस्तु पेशकश के रूप में आती उसे वह जिससे भी प्रसन्न होता उसे प्रदान कर देता था। एक दिन पटना के राजा ने एक हाथी, दो गधों के बोझ के बराबर उत्तम वस्त्र, बेलबूटो से सजा हुआ एक खेमा जो अत्यधिक उत्तम था और बगाल में तैयार हुआ था, भेजा। शुक्रवार के दिन उसका प्रार्थनापत्र प्रस्तुत किया गया। शेख मुहम्मद सिलाहदार[4] (की उपस्थिति) के लिए शनवार का दिन निश्चित था, वह वस्तुओ को ले गया। मिया चन्दू कुकिल्ताश खा भी उस समय उपस्थित था। उसने कहा कि, "खेमा बडा ही उत्तम है। यदि आदेश हो तो शेख मुहम्मद को इसका मूल्य खज़ाने से दिला दिया जाय और उसे दास को सौप दिया जाय, कारण कि वह उसके कार्य की वस्तु नही। हाथी तथा खेमे को वह बेच डालेगा अपने पास न रखेगा। केवल वस्त्र, चन्दन इत्यादि अपने पास रख लेगा।" उसने कहा कि "तू मेरे नियम में परिवर्तन कराना चाहता है। जाकर उसी प्रकार की वस्तुए तैयार करा और उसे ले ले।" इस प्रकार ५० हज़ार तन्के में उन वस्तुओ को तैयार करा कर उसने ले लिया।

यदि कोई बाज़ अथवा शिकरा भेजता था तो उसे भी वह कारखाने में न भिजवाता था। यदि किसी दरवेश के घर से कोई शुभ वस्तु अथवा पगडी आ जाती तो वह उस वस्तु को अपने हाथ में लेकर चूमता था और उन्हे किसी व्यक्ति को दे देता था। पगडी को अपने सिर पर बाध लेता था। यदि लाने वाला किसी अन्य स्थान से आता तो वह उसके आतिथ्य-सत्कार के लिए उसी दिन चीज़ें भेजता था। बादशाहो के समान उसका दैनिक व्यय निश्चित कर देता था। यदि वह इस योग्य होता कि वह उसके दर्शनार्थ स्वय जाय तो वह स्वय जाता था अन्यथा उसे अपने पास बुलवाता था। यदि कलन्दरो का कोई समूह आ जाता तो उन्हें वह उसी दिन अपनी प्रथानुसार एक तन्का भिजवाता था और उन्हें विदा कर देता था। इसी नियम से आतिथ्य-सत्कार होता रहता था और पूछने की कोई आवश्यकता न होती थी। जो कोई द्वार पर होता था उसे इस बात की आज्ञा होती थी कि वह प्रत्येक व्यक्ति को एक अथवा दो तन्के उसकी आवश्यकतानुसार प्रदान कर दे। शीत ऋतु में वह सेवको तथा अतिथियो को कद[5] प्रदान करता किन्तु किसी को एक कद न प्रदान करता था, किसी को चार तो किसी को दो। किसी को कबायें[6]

१ वे लोग जो बादशाह तथा अमीरों के घोडों के साथ साथ चलते हैं।
२ देखिये पृ० १४६, नोट नं० १।
३ देखिये पृ० १४६, नोट नं० २।
४ सुल्तान के अंगरक्षक। शस्त्रागार के अध्यक्ष भी सिलाहदार कहलाते थे।
५ सम्भवत कपड़े की कोई किस्म।
६ एक लम्बा ढीला पहनावा जो अन्य वस्त्रों के ऊपर पहना जाता था।

तथा कद प्रदान करता था। प्रत्येक दिन वह दो कबायें पहनता था और उन्हें दान कर देता था। दो (७४) दिन उपरान्त वह लबादा पहनता था। शीत ऋतु में वह सोने के समय के वस्त्र तथा रगीन कद के वस्त्र तैयार कराता था और उनमें उत्तम प्रकार के मलमल का अस्तर लगवाता था। ८वें दिन वह उन्हें दान कर देता था। दो सौ अथवा इससे अधिक लोग उसके विश्वासपात्र थे, जिनमें से प्रत्येक अपने घर में घोडो के तवेले रखता था। घोडो का भोजन सवारी के समय उन लोगो को दीवान से प्रदान किया जाता था। यदि सेना के लौटने के उपरान्त वे लोग पायगाह के घोडो को अच्छा घी तथा चारा प्रदान करते थे तो घोडा उन्ही को दे दिया जाता था अथवा उनके हाथ बेच दिया जाता था।

उसके लिए रात-दिन रेशमी वस्त्र सिये जाते थे। उसके घर कोई धोबी न आता था। जो वस्त्र पुराना हो जाता अथवा फट जाता वह दान कर दिया जाता था। उस समय के खानो का यही नियम था।

उसने अपने अत पुर के लिए मदल का निर्माण कराया था। किसी ने भी उस प्रकार का भवन ससार में न देखा था। रात्रि में वह मदल में रहता था और छज्जे पर बैठ कर चारो ओर दृष्टिपात करता था।

घरा की छत पर जाने का कोई मार्ग न था। वाहर से भीतर जल भेजा जाता था। कारीज़ तथा फौवारे बनवा लिये गये थे। भीतर हौज़ था। बाहर से जल डाला जाता था। वह उस हौज में एकत्र होता था। वहा से लोग ले जाते थे। दरबार के द्वार पर हाजिब बैठा रहता था। भीतर की चौखट के समक्ष पर्दादार बाहर खडा रहता था। भीतर की ओर ख्वाजासरा रहता था। भीतर की दीवार के पीछे एक वृद्धा रहती थी। यदि कोई कार्य होता तो हाजिब पर्दादार से कहता। वह ख्वाजासरा से कहता और वह दीवार के पीछे से वृद्धा से कहता था। वृद्धा उस स्त्री से जो हाजिब के पद पर नियुक्त होती थी कहती थी। वह इस बात को खान तक पहुचाती थी। यदि कोई बात कहने के योग्य होती थी तो इसी क्रम से कहलाई जाती थी। यदि किसी को कोई सूचना करानी होती थी तो उसके नायब अथवा परवाना नवीस के द्वारा इसी क्रम से सूचना कराई जाती थी।

महल के भीतर दान हेतु एक सप्ताह निश्चित था। जिन लोगों को दान प्राप्त होता था वे एकत्र हो जाते थे और उन्हे दान प्राप्त हो जाता था। रसोई के लिए लकडी दीवार के ऊपर से फेंकी जाती थी और वहा ले ली जाती थी। रसोई की अन्य वस्तुएँ पर्दादार को दे दी जाती थी। वह ख्वाजासरा को दे देता था। ख्वाजासरा दीवार पर रख देता था वहा से वह स्त्री लेकर रसोई में पहुचा देती थी। सहनक (थाल) भी इसी क्रम से भजे जाते थे और दीवार पर रख दिये जाते थे। स्त्री वहा से लेकर ख्वाजासरा को पहुचा देती थी। ख्वाजासरा पर्दादारा को दे देता था। वह फर्राशो को सौप देते थे। फर्राश जिन लोगो के लिए वह निश्चित होते थे उन्हें पहुचा देता था। मौसम के मेवे उदाहरणार्थ आम एव (७५) खरबूज़े तथा तरबूज़ समस्त सेना वाले खाते थे। अधिकाश लोगो को रोज़ाना टोकरिया प्राप्त होती रहती थी। किसी किसी को दो-दो टोकरिया भी दी जाती थी।[1]

स्त्रिया यात्रा के समय अराबो[2] में यात्रा करती थी। इनमें सन्दूक रखे रहते थे। प्रत्येक सन्दूक में एक स्त्री रहती थी। सन्दूक में ताला लगा दिया जाता था। प्रत्येक सन्दूक के साथ एक डोला रहता था। उसमें स्त्री की गठरी तथा अन्य सामान रहता था। डोले पर दो खोल चढे रहते थे। ३ स्थानो पर

१ 'ब' में इस विषय में बड़े सक्षिप्त रूप में लिखा गया है।
२ 'ब' के अनुसार 'बहल'। अराबा का भी अर्थ गाड़ी होता है।

शिविर लगाये जाते थे। प्रत्येक स्थान के लिए ऊँट तथा फर्राश निश्चित थे। वे प्रत्येक स्थान का सामान लदवा कर ले जाते थे। यदि भूल से एक स्थान का बोझ दूसरे स्थान पर पहुच जाता था तो वह ऊट पुन. उस स्थान पर वापस भेजा जाता था।

मसनदे आली मिया मुहम्मद फर्मुली

वह अवध का मुक्ता[1] था। उसे काला पहाड[2] कहते थे। जब सुल्तान हुसन शर्की की बादशाही का अन्त हो गया तो मिया मुहम्मद को अवध प्रदान किया गया। शम्स खा जो सुल्तान हुसेन के अमीरो में से था बहराइच में रह गया था। सुल्तान सिकन्दर उस समय पटना में था। वहा बादशाह के दरबार में किसी ने निवेदन किया कि, "समस्त विलायत में सुल्तान हुसेन के अमीरो म से कोई नही रह गया है। केवल बहराइच में शम्स खा रह गया है। वह किसी शक्ति के आधार पर नही है।" एक व्यक्ति ने कहा कि, "हम लोगो में से कौन उस स्थान पर रह सकता है?" खानेखाना फर्मुली वहा उपस्थित था। उसने मिया मुहम्मद को लिखा कि, 'यहा इस प्रकार की वार्ता होती है। अपने कार्य की देखभाल किया करो।" जब खानेखाना का पत्र मिया मुहम्मद को प्राप्त हुआ तो उसने सेना के सरदारो को बुलवा कर परामर्श किया कि, "हम सरयू नदी पार करके शम्स खा पर आक्रमण करना चाहते हैं।" सभी तैयार हो गये। उस समय उसने समस्त सिपाहियो तथा सरदारो को एक स्थान पर एकत्र किया और मलमल का एक टुकडा मगवा कर अपने समक्ष रखा तथा बहुत से पान के बीडे अपने सामने रख और चिल्ला कर कहा कि, "मैं इस कफन को अपने सिर पर बाधता हू। जिस किसी को भी अपने प्राण त्यागने हो वह (७६) हमारा साथ दे अन्यथा मुझसे यह पान लेकर प्रसन्नतापूर्वक विदा हो जाय, मैं उससे सतुष्ट रहूगा। यदि कोई युद्ध में विश्वासघात करगा तो यह अच्छा न होगा। मैं इस बात को अपनी इच्छा से कहता हू कि ऐसा व्यक्ति मेरे साथ न आये।" सभी ने उसका साथ देना निश्चय किया। वह सब को लेकर सरयू नदी के तट पर पहुचा। तदुपरान्त उसने सबसे कहा कि, "मैं नौका पर बैठता हू। प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार है कि वह नाव पर बैठे या न बैठे।" जिन लोगो ने नाव पर बैठना निश्चय किया उन्हें उसने नावो पर बैठा कर रवाना कर दिया। घोडे नदी के इसी ओर रह गये। शम्स खा नदी के उस ओर घाट पर पहुच गया। सबको विदा करके मिया मुहम्मद स्वय नौका पर बैठा। जैसे ही नौकायें आगे बढी युद्ध होने लगा। मिया मुहम्मद पीछे से पहुच गया और आदेश दिया कि, "सभी लोग धनुप बाण अपने हाथ में ले लें और तलवार चलाने की इच्छा न करें।" जब उन लोगो ने बाण चलाने प्रारम्भ किये तो दुर्भाग्यवश शम्स खा के एक बाण लगा। उसकी सेना भाग खडी हुई। मिया के प्रयत्न से विजय प्राप्त हो गई और यह ज्ञात हुआ कि शम्स खा मारा गया। वह विलायत भी मिया मुहम्मद को प्रदान कर दी गई।

मिया मुहम्मद का एक बडा युद्ध यह था और दूसरा वह था जब कि मिया की विलायत में २४ राजाओ ने सगठित होकर विद्रोह कर दिया। मिया स्वय सवार होकर मैदान मे पहुचा। जिस दिन युद्ध हुआ उस दिन मिया मुहम्मद ने सेना को ३ भागो में विभाजित किया। मध्य भाग की सेना का सरदार मिया नेमत को नियुक्त किया। अपनी पताका तथा मरातिब[3] उसे सौंप दिये। दायें भाग की सेना को

१ 'ब' के अनुसार 'हाकिम'।
२ 'अ' के अनुसार 'काला तवार'।
३ 'ब' के अनुसार तोग अलम तथा कूसे नक्कारा'। मरातिब विशेष रूप से बड़े-बड़े अमीरों को प्राप्त होते थे। इनमें नक्कारा इत्यादि सम्मिलित थे।

मलिक अलह दाद कन्नौजी के सिपुर्द किया। बायें भाग की सेना कयाम खा को दी। मिया के साथ १२० योग्य अश्वारोही थे। एक जोडा नक्कारा तथा एक हाथी भी उसके साथ था। एक स्थान पर ठहर कर उसने तीनो सेनाओ को युद्ध करने का आदेश दिया। युद्ध प्रारम्भ हो गया। वह स्वय शतरज खेलने लगा। काफिरो के दल आने लगे। मिया को समाचार पहुचाये जाते थे। वह सुन कर कुछ पूछता था और खेलने में व्यस्त हो जाता था। उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन न हुआ। जब इस बात की सूचना प्राप्त हुई कि हिन्दुओ तथा उसकी सेना में युद्ध होने लगा है तो भी वह शतरज खेलने में व्यस्त रहा। वह इस बात को पूछता जाता था "कि क्या दशा है?" जब उसे यह समाचार पहुचाये गये कि हमारी दोनो सेनायें पराजित हो गई तो उसने पूछा कि 'नेमतुल्ला अपने स्थान पर है अथवा उसने अपना स्थान छोड (७७) दिया है?" यह पूछ कर वह पुन शतरज खेलने लगा और उसने कहा कि "यदि नेमतुल्ला अपने स्थान पर है तो वे लोग कहा जा सकते है?" यह वार्ता हो ही रही थी कि उसे समाचार प्राप्त हुए कि वह दोनों सेनायें लौट आईं और तीनो सेनाये सगठित हो गईं। उस समय उसने खेलना बन्द किया और कहा, "बाजी को इसी प्रकार रहने दिया जाय।" वह उठ कर जिस स्थान पर घात लगाये हुए बैठा था वहा से अग्रसर हुआ और नक्कारा बजवाया, कहा कि, "सब लोग मिल कर आक्रमण करें और इस बात का नारा लगायें कि मिया मुहम्मद आ गये।" हिन्दू लोग नक्कारे की आवाज़ तथा मिया मुहम्मद का नाम सुनकर न ठहर सके और भाग खडे हुए। उन्होने इतना घोर युद्ध किया कि उनके हाथ तलवार की मूठ में चिपके रह गये। हाथी के शरीर में जितने लोहे चुभ गये थे उन्हें निकाल कर तौला गया तो ८ मन लोहा निकला। इससे पूर्व हाथी का नाम अकासारी था। उस दिन से उसका नाम मगदल बहार[1] हो गया। विजयोपरान्त वह फिर शतरज खेलने में व्यस्त हो गया। जो लोग उसके साथ थे उनसे मैंने सुना है कि उसकी दशा में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन न हुआ था, न उसके मुख पर न उसकी वार्ता में।

हिन्दू लोग भाग कर एक स्थान पर एकत्र हुए। इसी बीच में बादशाह की ओर से सहायतार्थ एक सेना आ गई। उसी दिन वह पुन सवार होकर अवध पहुचा। आलिम तथा मशायख उसके स्वागतार्थ निकले। दूसरी ओर से प्रजा की स्त्रिया सिर पर घडे रखे हुए गाती हुई पहुची। अमीर लोग मशायख से बात कर रहे थे। हिन्दुओ में से किसी व्यक्ति ने कहा कि, "सर्वप्रथम आप जल से भरे इन घडो में हाथ डालें कारण कि यह बात शुभ मुहूर्त की द्योतक है।" अमीरो ने मशायख की उपेक्षा करके उन स्त्रियो की ओर मुख किया। उन प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने उन लोगो से भेंट न की और अपने घरो को चले गये। बन्दिगी शेख़ दरवेश उस समूह के साथ थे। उन्होने कहा कि, "उन लोगो ने हमसे मुख फेर कर जल की ओर मुख किया है। देखते है कि जल उन लोगो की कैसे सहायता करता है।"

जब अमीर लोग हिन्दुओ की ओर बढे तो उसी समय वायु तीव्र गति से चलने लगी, आकाश पर कोई बादल न था किन्तु अचानक जल तथा ओले गिरने लगे। रणक्षेत्र असमतल तथा प्रतिकूल था। खेतो की समस्त भूमि में पुश्ते थे। उस ओर यह प्रथा है कि खेतो के लिए एक गज़ अथवा दो गज़ की दीवारें पुश्ते के रूप में खडी कर दी जाती हैं। उस दिन वर्षा के कारण वह दीवारे जल में डूब गईं। वे लोग (७८) घोडो पर सवार थे। घोडे आगे न बढ सके। हिन्दू पदातियो ने चारो ओर से उन्हें घेर लिया और उनकी विजय हो गई। अश्वारोही पराजित हो गये। इस सेना के बहुत से लोग मारे गये। कुछ अमीरो का पता न चला। मिया मुहम्मद का नक्कारा तथा नक्कारा बजाने वाला हिन्दुओ द्वारा बन्दी बना लिया

१ 'ब' के अनुसार 'मन्दल पहाड़'।

गया। उन लोगो ने उससे कहा कि, "तू अपनी प्रथानुसार नक्कारा बजा।" वह नक्कारा बजाता था, जो लोग नक्कारे को सुनते थे चारो ओर से नक्कारे की आवाज पर एकत्र हो जाते थे। हिन्दू लोग उन्हें मार डाल्ते थे। बन्दगी शेख दरवेश अवध से देहली चले गये। उनकी कब्र सिकन्दराबाद में है।

बादशाह मिया मुहम्मद का इतना सम्मान करता था कि जब वह उसे ख़िलअत प्रदान करता था तो १०१ घोडे[1] प्रदान करता था। अन्य लोगों को एक घोडा दिया जाता था। वह सुल्तान बहलोल का भागिनेय था। उसकी यह प्रथा थी कि वह वर्ष भर में ३ मास[2] शिकार हेतु सवार होकर जाया करता था। वह शेर, भेडिय तथा जगली भैसो का शिकार करता था। वे सीख[3] से मारे जाते थे और सिंह बाण से। मिया मुहम्मद का आदेश था कि सिंह की कोई भी हत्या न करे। वह स्वय सिंह का शिकार करता था। उसका एक हाथ घाव के कारण बकार हो गया था। केवल एक दाहिना हाथ ठीक था। बाण को बेकार हाथ से पकड कर सीने पर रखता था और बायें हाथ से धनुष को खीचता था। जिस स्थान पर सिंह होता था वहा मिया मुहम्मद का डोला[4] रख दिया जाता था। सिंह को हकाया जाता था। मिया के समक्ष कोई न ठहरता था। केवल सिंह मिया के डोले की ओर आक्रमण करता था। मिया सिंह के ऊपर इतनी ज़ोर से बाण फेंकते थे कि वह उसी स्थान पर गिर पडता था और उसी एक बाण से उसकी हत्या हो जाती थी। दूसरे बाण की आवश्यकता न होती थी। डोले तथा सिंह मे केवल एक बाण के पहुचने की दूरी होती थी।

मियाँ हुसेन फर्मुली

वह सारन तथा चम्पारन का मुक्ता[5] था। उसे जग्घट[6] कहते थे। वह बडा वीर तथा दानी था। उसकी मिल्क[7] अत्यधिक थी। उसने अपने मवाजिब के अतिरिक्त २०,००० ग्राम[8] काफिरो से प्राप्त कर लिये थे। जिन दिना में उसने मलिक चम्पारन[9] के विरुद्ध आक्रमण किया और राजा के विरुद्ध जा रहा था तथा गण्डक नदी के तट पर उतरा हुआ था, उस समय मगूला मगली करारानी एक उसका अमीर था। उसने उससे पूछा कि, 'राजा इस स्थान से कितने कोस पर है?" उत्तर मिला कि, "नदी के उस ओर एक किला है और वह उस किले में है।" उसने पुन पूछा कि, "वह कितने कोस पर होगा?" उत्तर मिला कि, "यही नदी बीच में है। इस नदी की चौडाई ७ कोस है।" मगूला ने जब यह सुना कि केवल (७९) नदी बीच में है तो उसने कहा कि, "यह कैसा इस्लाम है कि काफिर नदी के उस तट पर रहें और

१ 'ब' के अनुसार 'कुछ घोडे'।
२ 'ब' के अनुसार 'तीन बार'।
३ लोहे की छड।
४ 'ब के अनुसार 'पालकी'।
५ 'ब' के अनुसार 'हाकिम'।
६ 'ब' के अनुसार 'जगहित' कहते थे। हिन्दवी भाषा के अनुसार जगहित का अर्थ यह है कि उसका दान समस्त संसार मे प्रसिद्ध था।
७ इसका अर्थ सम्पत्ति है, किन्तु वह भूमि जो किसी को सवदा के लिये प्रदान की जाती हो। यह भूमि हमेशा मिल्क के स्वामी के वश में रहती थी। इस प्रकार की भूमि अधिकतर दान एव धार्मिक कार्यों के लिये प्रदान की जाती थी।
८ 'ब' के अनुसार '२० हजार'।
९ 'ब' के अनुसार 'राजा चम्पारन'।

में इस तट पर बैठा रहू ?" उसने शपथ ली कि "उस पर आक्रमण करने के समय तन में जो कुछ अन्न-जल भी खाऊ वह मुरदार खाऊ।" यह यह कर वह उठ खडा हुआ और ईश्वर का नाम लेकर घोड़े पर सवार हुआ। लोगो ने कहा कि, "नदी की चौडाई ७ कोस है, जल्दी न करो।" उसने कहा कि, "यदि ७० कोस भी हो तो मैंने शपथ ले ली है जो कुछ होना होगा वह होगा।" घोडे को उसने नदी में डाल दिया, घोडा कही अपने पाव से, कही तैर कर चलने लगा। उसके समस्त सहायक भी इसी प्रकार उसके पीछे चल खडे हुए। हैबत खा, बहादुर खा इख्तियार खा तथा करारानी इत्यादि अमीर उसके साथ थे। जब करारानी समूह वालो ने सुना कि मगूला ने जल में आक्रमण कर दिया है तो उन लोगो ने भी आक्रमण कर दिया। समस्त सेना मे से जो कोई भी वहा पडाव किये हुए था वही जल में कूद पडा। हाहाकार मच गया। मिया हुसेन अपने सरापर्दे[1] में था उसने पूछा कि 'यह शोर कैसा हो रहा है ?" लोगो ने बताया कि समस्त सेना ने नदी में आक्रमण कर दिया है। सर्व प्रथम मगूला प्रविष्ट हुआ तदुपरान्त जिस किसी ने सुना उसके पीछे चल खडा हुआ। मिया स्वय शीघ्रातिशीघ्र सवार हुआ, मगूला के पास नदी के बीच में पहुच कर कहा कि, "लौट चल, आज आक्रमण करना उचित नही है।" उसने उत्तर दिया कि, "आप जब उचित समझें उस समय सवार हो, हमें इससे कोई सम्बन्ध नही। आपने हमें सेवा के लिए रखा है मैं सेवा करता हू। यदि सेवक कार्य सपन्न न कर सके तो स्वामी को कष्ट करना चाहिए। आज आप मरी सेवा को देखें और कुशलतापूर्वक वापस चले जाय। हम वापस नही लौटेंगे।" मिया ने उसे बहुत समझाया किन्तु उसने स्वीकार नही किया। मिया के लिए भी यह आवश्यक हो गया कि वह समस्त सेना सहित, जब कि वह जल में प्रविष्ट हो चुकी थी, प्रस्थान करे। सूर्यास्त के समय वे राजा के किले के पास पहुचे। वह काफिर इस बात से प्रसन्न था कि बडी विशाल नदी मध्य म है। एक वर्ष तक भी इसे पार करना सभव नही। अचानक नगर में हाहाकार मच गया। वह उस स्थान पर बैठा था जहा नर्तकियो को शिक्षा दी जाती है। उसे समाचार पहुचाया गया कि अफगान लोग आ गय। उसने इस पर विश्वास नही किया और उसी प्रकार खेल में व्यस्त रहा। अफगानो न जोर का आक्रमण किया। वे भाग खडे हुए। दुर्भाग्यवश मगूला की उस दिन हत्या हो गई। मिया हुसेन अत्यधिक खेद प्रकट करता हुआ कहा करता था कि "काश उस दिन विजय न होती। यह लूट की धन-सपत्ति मगला के बिना किसी भी काम की नही।"

(८०) दो सौ वर्ष उपरान्त उस राजा के राज्य म विघ्न पडा। उसका दो सौ वर्ष का खजाना तथा गडी हुई धन सपत्ति लूट ली गई। जितने काफिर उस युद्ध में मारे गये उनकी पायजार[2] मिया हुसेन के शिकदार शख दाऊद कम्बोह न एकत्र करा ली थी। उन सब को जलवा दिया गया। २० हजार सोने की मुहरें उन पायजारो से निकली।

मसनदे आली दरिया खा नोहानी

वह बिहार का मुक्ता[3] था और बगाल, उडीसा तथा तिरहुट की सीमा उसस सम्बन्धित थी। उसकी अत्यधिक वीरता के कारण उसके द्वारा महान् कार्य सम्पन्न हुए। सर्व प्रथम जब सुल्तान सिकन्दर जौनपुर से वापस हुआ तो २२ हरामखोर अमीरों ने विद्रोह कर दिया। किसी ने भी वहा रहना स्वीकार

१ 'शिविर'।
२ जूते।
३ 'च' के अनुसार 'हाकिम'।

न किया। केवल जमाल खा सारगखानी जौनपुर में था। दरिया खा विहार में रह गया। अल्प समय में सुल्तान हुसेन विहार पहुचा। दरिया खा ने किसी से भी सहायता की याचना न की और किले से वाहर निकल कर युद्ध किया। रात रणक्षेत्र ही में व्यतीत की। दूसरे दिन वह किले में प्रविष्ट हो गया। सुल्तान वही ठहर कर युद्ध करने लगा। जिस दिशा से भी वह आक्रमण करता था दरिया खा कोट की दीवार को तोड कर वाहर निकलता था और युद्ध करता था। जब वे लोग लौट जाते तो वह पुन किले में प्रविष्ट हो जाता था। सुल्तान हुसेन न उसके प्रति न्याययुक्त यह वात कही कि, "दरिया खा कैसा साहसी व्यक्ति है। हम इस वात की इच्छा करते रहे हैं कि किसी न किसी प्रकार किले की एक ईंट ही उखाड ल किन्तु वह अपनी इच्छा से किले की दीवार को तुडवा कर वाहर निकलता है, यद्यपि उसका वादशाह इस स्थान से ५०० कोस दूर है।" २ मास तक वह इसी प्रकार किले की रक्षा करता रहा। जब शाही सेना सहायतार्थ पहुची तो सुल्तान हुसेन ने युद्ध करना वन्द कर दिया।

जव सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु हो गई तो वगाल के वादशाह तथा उडीसा के राजा ने उस पर आक्रमण किया। उसने कहा कि, "सुल्तान सिकन्दर अपने स्थान पर रहता था, मै सर्वदा इस स्थान पर राज्य करता था। यदि सुल्तान की मृत्यु हो गई तो फिर क्या हुआ ? मै तो जीवित हूँ मै वही हूँ जो इससे पूर्व था। मेरा एक शिविर वगाले की ओर तथा दूसरा शिविर उडीसा की ओर लगा दो। जिसको (८१) आना हो वह आये।" यह देख कर कोई भी अपने स्थान से न हिल सका।

ख्वाजा हसन ने इस युग की प्रशसा इस मसनवी में की है

'यह बडा विचित्र काल है, सभी धन धान्य सम्पन्न हैं,
प्रत्येक घर में खुशी तथा सुख पाया जाता है। "

सुल्तान इवराहीम

सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र सुल्तान इवराहीम सिंहासनारूढ हुआ। उसने सर्व प्रथम अपने भाइयो से दुर्व्यवहार प्रारम्भ कर दिया। उसने सुल्तान जलालुद्दीन से, जोकि एक ही माता से उसका भाई था, प्रतिज्ञा करके राज्य को दो भागो में वाट दिया किन्तु वाद में उसने अपना प्रण पूरा न किया और उसे निर्वासित कर दिया। अन्य भाइयो को भी उसने वन्दी वना लिया और हिसार फीरोजा[1] के किले में वन्द करवा दिया। मिया भूवा की अकारण हत्या करा दी। आजम हुमायूँ को ग्वालियर से बुलवा कर वन्दी वना दिया और वन्दीगृह में ही उसकी मृत्यु हो गई।

आजम हुमायू की हत्या

आजम हुमायूँ का वृत्तान्त इस प्रकार है कि वह ग्वालियर के किले को घेरे हुए था। वहा वाले ऐसी दीन अवस्था को प्राप्त हो गये थे कि वडी दीनतापूर्वक किले को समर्पित कर रहे थे। सुल्तान ने उसे उस स्थान से बुलवाया। उसके समस्त अमीर तथा सैनिक उसके पास उपस्थित हुए और उससे कहा कि, "तुझे वन्दी वनवाने अथवा तेरी हत्या कराने के लिए बुलवाया जाता है। तू मत जा।" उसने कहा कि, "मैंने कोई अपराध नही किया है।" पुन यह वात प्रमाणित हुई कि उसे वन्दी वनवाने के लिए ही बुलवाया जा रहा है। लोगो ने उससे फिर कहा कि, "तेरे पास ५० हजार अश्वारोही हैं। तू अपना

१ 'ब' के अनुसार 'फ़ीरोजावाद के किले में'।

खुदा स्वय क्यो नही पढवा देता', उसके पास क्यों जाता है?" उसने उत्तर दिया कि, "मैं यह नही कर सकता, मैंने उसके पूर्वजों का ३ पीढियो का नमक खाया है। मुझे नही ज्ञात कि मैं कब तक जीवित रहूँगा। मैं यह नही चाहता कि मुझे लोग हरामखोर कहें।" तदुपरान्त आलिमों से परामर्श किया गया तो उन्होने कहा कि, "जाना उचित नही है।" किन्तु आजम हुमायूं ने उत्तर दिया कि, "आलिमो का कहना ठीक ही है किन्तु मैं यह उचित नही समझता कि सर्वसाधारण मुझे हरामखोर कहे।" इसके उपरान्त जब उसने उस स्थान से प्रस्थान किया तो उसके अमीर लोग उसके साथ हो गये। वह सभी को वापस लौटाता था किन्तु कोई भी वापस न जाता था। जब वह चम्बल नदी के तट पर पहुचा तो उस समय तक नौका पर सवार न हुआ जब तक उसने लोगों को लौटा न दिया।

अन्त में जब वह आगरा के निकट पहुचा तो उसके लिए एक साधारण सा याबू[२] लाया गया और कहा गया कि, "तेरे लिए यही आदेश है कि तू इस पर सवार हो।" वह शीघ्र घोडे से उतर कर उस पर सवार हो गया। जो लोग उपस्थित थे उन्होंने पुन कहा कि, "अब भी कुछ नही बिगडा है। हम मरने (८२) के लिए उद्यत है। यदि तेरा आदेश हो तो तुझे सुरक्षित यहा से ले जाय।" उसने उत्तर दिया कि, "मित्रो! मेरी चिन्ता मत करो। मेरा जो कुछ कर्त्तव्य था मैंने उसे सम्पन्न किया। मैंने उसके कार्य हेतु अपने प्राणो की बलि दी, जितने दिन मुझ जीवित रहना है मैं उतने दिन तक ही जीवित रहूगा, मेरे प्राण उसके कार्य हेतु है, चाहे मैं जीवित रहू अथवा मर जाऊ। यह मेरा बहुत बडा सौभाग्य है कि मैंने कोई बुराई नही की। वह जाने और उसका कार्य, उसे ईश्वर के समक्ष उत्तर देना है।"

सुल्तान ने उस सरीखे हितैषी तथा निष्ठावान् को बन्दी बना दिया। मन[३] की जजीर उसके पाव में डलवा दी। जिस दिन उसे बन्दीगृह में भेजा गया उसने सुल्तान इबराहीम के पास यह सदेश भेजा कि, "जो तू उचित समझे वह करे। मेरी एक इच्छा है कि वजू[४] के पानी और स्तन्जे[५] के ढेले के भेजने का आदेश दे दे। मेरा पुत्र इस्लाम खा बडा उद्दड है उसको शीघ्र उपाय करें ताकि उसके पास लोग शीघ्र ही एकत्र न होने पाय।" इसके उपरान्त उसने कोई अन्य बात न कही। सुल्तान ने ऐसे व्यक्ति को बन्दी बनवा दिया जिसकी बन्दीगृह में मृत्यु हो गई।

अन्य अमीरो का बन्दी बनाया जाना

सुल्तान ने आजम हुमायूं के पुन फतह खा को बन्दी बना लिया, सैयिद खा लोदी को बन्दी बना कर उसकी हत्या कर दी। मिया भूवा तथा कबीर खा लोदी को बन्दी बनवा दिया। दौलत खा लोदी का पुत्र लाहौर से सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुआ। सुल्तान उसे भी बन्दी बनवाना चाहता था किन्तु वह सूचना पाकर भाग गया। उस समय कुछ अन्य अमीर भी भाग खडे हुए।

सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह

सैयिद खा लोदी, खाने जहा लोदी मिया हुसैन फर्मुली तथा मिया मारूफ़ फर्मुली आतकित होकर

१ स्वतन्त्र रूप से सुल्तान क्यों नहीं हो जाता।
२ 'ब' के अनुसार '१ खराब घोड़ा'।
३ 'अ' में यह स्थान छूटा है। 'ब' के अनुसार केवल जजीर।
४ देखिये पृष्ठ १२६ नोट नं० २।
५ मूत्र-क्रिया के उपरान्त ढेले से शिश्न को सुखाने का कार्य।

पूर्व[1] की विलायत में सगठित हुए और आज्ञाकारिता त्याग दी। मसनदे आली दरिया खा वजीर, जो बिहार में था, को सुल्तान नष्ट कराना चाहता था। उसके अमीरो ने उसे सुल्तान के विरुद्ध भडकाया। दरिया खा को इस बात की सूचना मिल गई। अमीरो को जब यह पता लगा तो उनमें से कुछ लोग भाग खडे हुए। उदाहरणार्थ कमाल खा कम्बोह तथा हुसैन खा दोनों अमीर भाग कर आगरा पहुचे। हुसेन खा के पास ६ हजार अश्वारोही तथा ३०० हाथी थे और वह राज्य की सीमा पर रहता था। उसकी अधिकाश सेना उसके साथ आई। कमाल खा के साथ अधिक समूह न था अत उसके साथ थोडे से लोग आये। दरिया खा अपने विषय में योजनायें बना रहा था कि अचानक उसकी मृत्यु हो गई। उसके पुत्र बिहार खा ने उसका स्थान ग्रहण किया। जो अमीर सुल्तान इब्राहीम के पास से पलायन कर गये थे उसके पास एकत्र हो गये। एक लाख अश्वारोहियो से अधिक उसके पास जमा हो गये और उन्होने उसे बादशाह बनाकर उसकी उपाधि सुल्तान मुहम्मद कर दी। बिहार से सभल तक की विलायत के स्थान उसके अधीन हो गये। २ वर्ष तथा कई मास तक उसका खुत्बा पढ़ा जाता रहा।

(८३) सुल्तान ने मिया मुहम्मद फर्मुली के जामाता मियाँ मुस्तफा फर्मुली तथा फीरोज खा सारगखानी को अमीरो एव अत्यधिक सेना सहित नियुक्त किया। मिया मुस्तफा फर्मुली को मिया मुहम्मद की जागीर प्रदान की। उन लोगो में कई बार घोर युद्ध हुआ। मिया मुस्तफा ने गाजीपुर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। नसीर खा नोहानी गाजीपुर से निकल कर सुल्तान मुहम्मद की सेवा में पहुचा। मिया मुस्तफा बिहार की सीमा पर पहुचा। सोन नदी के तट पर युद्ध हुआ। मिया मुस्तफा की भी मृत्यु हो गई। फीरोज खा तथा मिया मुस्तफा के भाई शेख बायजीद उसी अव्यवस्थित दशा में थे कि सुल्तान मुहम्मद की सेना ने नदी पार कर ली। इन्हें सूचना मिली कि सुल्तान मुहम्मद की सेनाओ ने अमुक स्थान पर नदी पार की है। दोनो सेनाओ में घोर युद्ध हुआ। सुल्तान इब्राहीम के अमीरों की सेना उसके विश्वासघात के कारण छिन्न-भिन्न हो गई और पलायन कर गई। उस स्थान पर आजम हुमायूँ का पुत्र फतह खा तथा नसीर खा थे। उन लोगों में युद्ध हुआ। इनके पास दो ओर की सेनायें एकत्र हुईं। एक फीरोज खा की दूसरी शेख बायजीद की। उस ओर दो सेनायें एकत्र हुईं एक फतह खा दूसरी नसीर खा की। शेख बायजीद फतह खा के समक्ष था। फतह खा की सेना आगे आ गई। एक बहुत बडी नदी बीच में थी। शेख बायजीद ने बडा प्रयत्न किया। वह नदी तक पहुचा भी न था कि शेख बायजीद ने नदी पार कर ली और उस पर आक्रमण किया। शेख बायजीद को भली भाँति ज्ञात था कि उस ओर के दोनो सरदार एक स्थान पर है। शेख बायजीद के अग्रसर होते ही फतह खा भाग खडा हुआ। शेख बायजीद ने उसका पीछा किया और भोजपुर[2] को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। बायजीद की सेना लूट की धन-सपत्ति लेकर छिन्न भिन्न हो गई। उस ओर नसीर खा पताका को भूमि में गाड कर खडा हो गया। बादशाही अमीर जो उसके साथ नियुक्त हुए थे नसीर खा से बहाना बनाकर एक-एक करके पृथक् हो गये। नसीर खा के पास ३०० सवार थे। उसकी सेना में २७ अमीर थे। सभी भाग खडे हुए। शेख बायजीद को सूचना मिली कि फीरोज खा की समस्त सेना भाग खडी हुई। उसने पूछा कि, "यह वही सेना थी जिसे हम पराजित किया करते थे ? वे लोग किसके समक्ष से भागे ?" उत्तर मिला कि, "नसीर खा के समक्ष से।" नसीर खा का नाम सुनकर वह उस ओर चल खडा हुआ। उसके अपने आदमी छिन्न भिन्न हो चुके थे। अधिकाश अपरिचित लोग साथ थे। वे नसीर खा के समक्ष पहुच गये। वह विजय प्राप्त किये

१ 'ब' के अनुसार 'बंगाले में'।
२ 'अ' के अनुसार 'कानपुरा'।

हुए खडा था। शेख बायजीद ने तीन बार आक्रमण किया किन्तु उसने अपना स्थान न छोडा। लोगो ने शेख बायजीद के घोडे की लगाम पकड कर उसे वहा से भगा दिया और यह छन्द पढा।

छन्द

(८४) "जब तू यह देखे कि तेरे मित्र तेरी सहायता नहीं कर रहे हैं
तो तुझे रणक्षेत्र से भागना ही अपने लिए उचित समझना चाहिए।"

कुछ समय उपरान्त सुल्तान मुहम्मद की भी मृत्यु हो गई। इधर से फीरोज खा की भी मृत्यु हो गई। शेख बायजीद भोजपुर पहुचा। वह सेनायें गगा तट पर पहुच चुकी थी कि उन्हें सूचना मिली कि "दौलत खा लोदी बाबर बादशाह के पास गया था और उसे बादशाह बनाकर लाया है। दौलत खा की मृत्यु हो चुकी है।" बाबर बादशाह ने सुल्तान इबराहीम की अयोग्यता तथा अमीरो के विरोध के विषय में भली भाति ज्ञान प्राप्त करके उस पर आक्रमण किया।[1]

सुल्तान इबराहीम के राज्य-काल की कुछ अन्य घटनायें

(११७) उसने मिया आजम हुमायू तथा मिया भवा को बन्दी बनवाया और दोनो की बन्दीगृह में मृत्यु हो गई। अन्य लोग उसके पास से भाग खडे हुए। उनमें से एक दरिया खा वज़ीर था जो बिहार में था। उसका हाल मैं लिख चुका हू।

मिया मारूफ तथा मिया हुसेन

दूसरा मिया हुसेन फर्मुली था जिसे सुल्तान ने मिया मकन की अधीनता में अन्य अमीरो के साथ राणा सागा के विरुद्ध नियुक्त किया था। उसने मियां को ४० हज़ार अश्वारोही प्रदान किये थे। अन्त में सुल्तान ने मिया मकन को यह आदेश भेजा कि 'किसी न किसी प्रकार मिया हुसेन तथा मिया मारूफ़ को बन्दी बना लो।" मिया हुसेन को इस बात की सूचना मिल चुकी थी। मिया मकन मिया मारूफ के शिविर में पहुचा। मिया मारूफ का एक पुत्र मन्दू की विलायत में मृत्यु को प्राप्त हो चुका था और इसको बहुत समय व्यतीत हो गया था। उसकी मृत्यु के प्रति समवेदना प्रकट करने के बहाने वह मिया मारूफ के शिविर में प्रविष्ट हुआ। मिया हुसेन मिया मकन के पहुचने का समाचार पाकर मिया मारूफ के शिविर मे पहुचा और मिया मकन से कहा कि "मिया (११८) मारूफ को बन्दी बनाने का विचार अपने हृदय से निकाल दे अन्यथा यदि तू उसके पीछे पडेगा तो हम किसी के ओह्देदार[2] नही हैं जोकि निर्लज्जता प्रदर्शित करें।" मिया मकन ओहदेदार था और यह सकेत उसकी ओर था। "सिंह[3] को कोई जीवित बन्दी नही बना सका है। यहा से उठ कर चला जा। हमारा सुल्तान तो पागल हो गया है। तुझे क्या हो गया है?' मिया मकन उठ कर अपने शिविर में पहुचा और उसने सुल्तान इबराहीम को समस्त घटना की सूचना दे दी। सुल्तान इब्राहीम ने कुछ समय उपरान्त यह फरमान भेजा कि, "सर्व प्रथम मिया हुसेन को बन्दी बना ले। तू किसी के शिविर में क्यो जाता है? बादशाही सरापर्दा[4] लगवा कर प्रथानुसार जिस प्रकार अमीर लोग फरमान

१ पृ० ८४ से ११७ तक बाबर से लेकर अकबर के राज्य के प्रारम्भिक वर्षों का इतिहास दिया गया है।
२ साधारण पदाधिकारी।
३ 'ब' के अनुसार 'सिंह तथा चीते'।
४ शाही शिविर।

पढने के लिए बुलवाये जाते हैं उसी प्रकार मिया हुसेन तथा मिया मारूफ को बुलवा कि बादशाह का फ़रमान आया है। जब वे आयें तो यह फरमान समस्त अमीरो को दिखा कर उन्हें बन्दी बना ले।" मिया मक्कन ने सुल्तान के आदेशानुसार समस्त अमीरो के साथ फिर उन्हें भी बुलवाया। मिया सुलेमान फर्मुली[1] अपनी समस्त सेना सहित, जिसमें ५ हजार अश्वारोही थे, पहुचा और अपने आदमियो से कहा कि, "शिविर के खूँटो को उखाड डालो।" इस प्रकार समस्त शिविर भूमि पर गिर पडा और पूरी सेना जगल में उसके चारो ओर खडी हो गई। मिया सुलेमान पहुच कर अमीरो के घेरे में बैठ गया और कहा कि, 'मिया मक्कन! फरमान निकाल कर क्यो नही पढते ?" उसने कहा कि, "इस प्रकार फरमान पढने का आदेश नही है।" मिया हुसेन ने कहा कि, "जो योजना तूने बनाई है वह असभव है। हमें भली भाति ज्ञात है कि यह सेना हमारे लिये आई है। हम लोग सिपाही हैं। हम बादशाह के कार्य हेतु प्राण त्याग देंगे किन्तु निर्लज्जता से जान न देंगे। राणा काफिर हमसे युद्ध करने आया है। तुम्हें बादशाह ने जो आदेश दिया हो वह करो। हम राणा पर आक्रमण करने के लिए जाते हैं। जो कुछ होना होगा वह होगा।" प्रातःकाल मिया हुसेन प्रस्थान करके तोदा नामक स्थान पर पहुचा, राणा की सेना वहा निकट थी। मिया ने उससे सधि कर ली और उससे मिल गया। इस ओर के बहुत से अमीरो ने मिया हुसेन का साथ दिया। इस प्रकार मिया इस्माईल जलवानी, मिया लोधा[2] काकर, खिज्र खा लोदी, मिया मारूफ तथा मिया ताहा फर्मुली उसी के भाई थे। राणा की सेना के ऊपर बौली कस्बे के निकट आक्रमण किया गया और युद्ध हुआ। उस ओर से मिया इस्माईल जलवानी दूत बना कर भेजा गया। मिया हुसेन तथा राणा सवार होकर (११९) बढे। शाही सेना अव्यवस्थित हो गई। उसमें युद्ध की शक्ति न रही और वह पलायन कर गई।

मिया हुसेन इस आक्रमण के समय धीरे-धीरे बढ रहा था और घोडे को तेज़ नही बढा रहा था। मिया ताहा प्रयत्न करता था कि वह तीव्र गति से रवाना हो। उसने उत्तर दिया कि, "धीरे-धीरे चलना उचित है।" मिया ताहा ने कहा कि, "हमें भी बताया जाय।" मिया हुसेन ने कहा कि, "सेना में दो व्यक्ति हैं जिनकी चिन्ता है। कही वे मार न डाले जाय। इसी कारण धीरे-धीरे अग्रसर हो रहा हूँ।" जब दोनो सेनाओ में युद्ध हुआ तो इन्हें विजय हुई।

अचानक यह समाचार प्राप्त हुआ कि इबराहीम खा शिरवानी आहत होकर रणक्षत्र में गिर चुका है। इसका कारण यह था कि वह राणा के समक्ष था। राणा का नायब नर सिंह उसकी सेना के अग्रिम दल में था। इबराहीम खा ने उस पर आक्रमण किया। उसकी सेना की सख्या थोडी थी। काफिर ने समस्त सेना तथा हाथियो को लेकर उस पर आक्रमण किया। जब तक उसका हाथ चलता रहा उसने कोई कमी न की, अन्त में आहत होकर अचेत हो गया और घोडे से गिर पडा। शेख फरीद भी जो इबराहीम खा का सेवक था घोडे से उतर पडा। दोनो हाथो में बर्छा लेकर वह इबराहीम खा के शरीर के समीप खडा हो गया। हाथी उस पर आक्रमण करते थे। वह बर्छे द्वारा उन्हें भगा देता था। नर सिंह ने जब शेख फरीद सूर का पौरुष देखा तो उसने अपने आदमियो से कहा कि, "यह व्यक्ति बहुत बडा सिपाही है। इसकी रक्षा करो। उससे कहो कि वह अस्त्र शस्त्र रख दे, हम उसकी हत्या न करेंगे।" जब शेख फरीद से यह बात कही गई तो उसने उत्तर दिया कि, "हमें मरने का कोई भय नही है। यह व्यक्ति जो मैदान में गिरा हुआ है वह मेरा स्वामी है। मैं उसका सिपाही हू। यदि वह सुरक्षित रहता है तो अच्छा है। मुझे

१ 'मियाँ हुसेन' होना चाहिये।
२ 'ब' के अनुसार 'मियाँ बिल्लू'।

अपने जीवन की आवश्यकता नही।" उसने पूछा कि "उसका क्या नाम है ?" उत्तर मिला, "इबराहीम खा शिरवानी।" नर सिंह ने जैसे ही इबराहीम खा का नाम सुना घोडे से उतर पडा और इबराहीम खा को हाथी पर सवार कर लिया। मिया हुसेन को उसने सूचना दी। सिंह ने पूछा कि, "वह जीवित है अथवा मर गया ?" उत्तर मिला कि, "उसके मुख तथा समस्त शरीर पर गहरे घाव लगे है किन्तु सास चल रही है।" मिया हुसेन ने मिया ताहा से कहा कि, "मै शनै-शनै चलने के लिए इन्ही दो व्यक्तियो के कारण कह रहा था। इनमें से एक इबराहीम खा तथा दूसरा दरिया खा, मिया मारूफ नोहानी का पुत्र था। इन्हें (१२०) मै इस दशा में देख रहा हू। उसे जीवित बडी कठिनाई से ही पा सकता हू।" जो लोग मारे गये थे उनके विषय में जब पूछताछ कराई गई तो दरिया खा रणक्षेत्र में मिला। उसकी हत्या हो चुकी थी। मिया हुसेन ने जब यह देखा तो घोडे से कूद पडा और उन लोगो को उठा लिया। वह आजीवन उन लोगों के साथ रहता चला आया था। सुल्तान अलाउद्दीन तथा हैबत खा उनके पुत्र थे और वे दोनों भाई थे। उनकी अवस्था १२ तथा १५ वर्ष की थी। वे दोनो मारे गये। उनके भाइयो एव भतीजो एव पुत्रो की सख्या १८ थी। उनमें से एक-दो घायल हुए और कुछ मार डाले गये।

कहा जाता है कि जब शत्रु की सेना के पहुचने के समाचार प्राप्त हुए और सेना सुव्यवस्थित न रही तो दरिया खा ने अपने भाई सुल्तान अलाउद्दीन से कहा कि, "इन लोगो की व्यवस्था ठीक ज्ञात नही होती। यह उचित होगा कि शीघ्र ही इनसे पृथक् हो जाया जाय।" सुल्तान अलाउद्दीन ने कहा कि, "यह हमारे लिए उचित नही कि विना देखे यह बात कहें कि चले जायें।" दरिया खा ने कहा कि, "जाने का समय यही है। जब शत्रु दृष्टिगत हो जायगा तव जाना सभव न हो सकेगा।" वे खडे रहे, यहा तक कि शत्रुओ की सेना दृष्टिगत हो गई। सुल्तान अलाउद्दीन ने कहा कि, 'अब यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि शत्रु पहुच चुके है। उस समय हमारे लिए कुछ निश्चित न था। हमारा विचार था कि यह झूठे समाचार थे। हममें तथा उन लोगो में सधि हो गई है। यदि वे लोग न आते और हम चले जाते तो इससे हमें लज्जित होना पडता।" दरिया खा ने उत्तर दिया कि, "मै जाता तो उसी समय जाता। अब मै कहा जाऊ। मुझे दरिया खा कहते है, दरिया अपने स्थान से नही हिलता।"

मिया हुसेन फर्मुली तथा राणा अग्रसर हुए। सुल्तान इबराहीम ने आगरा से सेना लेकर चढाई कर दी थी। वह कफरा नदी तक पहुच गया था। कफरा[1] नदी के ऊपर स्वर्गीय सुल्तान सिकन्दर के जो पडाव के स्थान थे उन्हें उसने जलवा डाला। बहलोल की एक सतान का नाम सुल्तान गयासुद्दीन था। उसे बादशाह बनाकर उन घरो में उतरवा दिया गया था। मिया हुसेन अपने शिविर में था और समस्त (१२१) हिन्दू एक स्थान पर पडाव किये हुए थे। परामर्श हेतु समस्त हिन्दू तथा मुसलमान सरदार एव सुल्तान गयासुद्दीन एक स्थान पर बैठे हुए थे कि हिन्दुओ के शिविर से राम राम की ध्वनि आने लगी। जो हिन्दू इस समूह में थे वे भी नारा लगाने लगे। उस दिन मिया हुसेन ने सिर हिला कर अपने कान में अगुली डाल ली। सब लोग उठ खडे हुए। जब मिया अपने शिविर में पहुचा तो उसने मिया ताहा को अपने समक्ष बुलवा कर पूछा कि, "मेरे सिर हिलाने के विषय मे तुमने कुछ पता चलाया ?" मिया ताहा ने कहा कि, "नही।" उत्तर मिला कि, "मै वृद्धावस्था को प्राप्त हो गया हू और आजीवन काफिरो से युद्ध तथा शत्रुता करता रहा हू। इस वृद्धावस्था में काफिरो से, जोकि निष्ठावान् नही होते, मैने कह दिया था कि मुझे बादशाह से कोई शत्रुता नही है किन्तु मेरा उद्देश्य यह है कि वह मुझे नही पहचानता और मेरा

१ 'ब' के अनुसार 'कश्मीर'।

मूल्य नही समझता। मैं कुछ ऐसा उपाय करू कि वह मुझे पहचानने लगे और मैं उसे अपनी योग्यता का परिचय दे दूँ ताकि वह समझ जाय कि जिन लोगो को स्वर्गीय सुल्तान सिकन्दर ने फर्द¹ की श्रेणी से उठाकर अमीरी तथा प्रतिष्ठा प्रदान की और उसने जो हमें अक्तायें² दी तो हममें इस बात की योग्यता थी अन्यथा वह अयोग्य सैनिको से महान् कार्य सपन्न नही करा सकता था। हमें अपनी प्रतिष्ठा का परिचय देना था वह हमने दे दिया। मेरी यह एक और इच्छा है कि यदि बादशाह सैयिद खा यूसुफ खेल तथा आज़म हुमायूँ के पुत्र फतह खा शिरवानी को जिन्हें उसने बन्दी बना लिया है मुक्त कर दे, वे यहा चले आयें तो मैं बादशाह का विरोध नही करूगा और जो कुछ मुझसे हो सकेगा वह मैं करूगा।"

सुल्तान ने उन लोगो को इस स्थान पर बन्दीगृह से मुक्त कर दिया और खिलअत प्रदान की। वे लोग सेना एकत्र करके आगरा से रवाना हुए और मिया हुसेन से मिल गये। जब वे इस स्थान पर पहुचे तो सैयिद खा, इस कारण कि वह बहुत बडा विरोधी था, ने अभिमान प्रदर्शित करना प्रारम्भ कर दिया। एक दिन राणा, सैयिद खा के पास था। मिया हुसेन के आगमन के समाचार पाकर वह घबडा कर स्वागत हेतु उठ खडा हुआ। सैयिद खा ने कहा कि, "इतनी व्याकुलता की आवश्यकता नही। यहीं आने दो।" इसी बीच में मिया हुसेन सैयिद खा के शिविर में प्रविष्ट हो गया। राणा ने खेमे से निकल कर अभिवादन किया। सैयिद खा उसी स्थान पर रह गया। जब वह (मिया हुसेन) के शिविर में प्रविष्ट हुआ तो सैयिद खा ने भी अभिवादन किया। वह थोडी देर बैठ कर चला गया, राणा भी उसके साथ लौट गया। अन्य समय जब राणा सैयिद खा के पास पहुँचा तो सैयिद खा ने कहा कि, "हे राणा! तू जानता है कि मिया हुसेन कौन है?" उसने कहा कि, "मैं जानता हू कि वह बडा सम्मानित व्यक्ति तथा प्रतिष्ठित अमीर है।" सैयिद खा ने कहा कि, "वह शेखज़ादा है, तुम लोगो में जैसे ब्राह्मण होते हैं वैसे ही सम्मानित वह है। (१२२) हम बादशाह के भाई हैं, शाहू खेल अथवा यूसुफ खेल वाले बादशाही तक पहुच जाते हैं। अन्य लोदी नौकर हैं।" जब कभी राणा, सैयिद खा के समक्ष पहुचता तो सैयिद खा कुछ न कुछ दान करता था। राणा बडा लोभी था। जब उसने सैयिद खा को इस प्रकार दान करते हुए देखा तो उसे यह ज्ञात हो गया कि सैयिद खा से बढ कर कोई भी नही है। वह उससे मिलने लगा और मिया हुसेन से मिलना कम कर दिया।

एक दिन मिया हुसेन तथा मिया ताहा ने किसी कार्य के विषय में राणा को सूचना कराई। मिया ताहा जब पहुचे तो सब लोग राणा के शिविर में एकत्र थे। यहा तक कि सुल्तान गयासुद्दीन भी वहीं था। मिया ताहा के विषय में सूचना भेजी गई। किसी ने कहा कि, "सूचना का अवसर नही है।" मिया ताहा लौट गया और मिया हुसेन के समक्ष आया और स्थिति का उचित परिचय दिया। मिया हुसेन ने कहा कि, 'ये लोग उस मादक के कहने पर अपमानित तथा अभिमानी हो गये हैं। वे यह बात नही समझते कि मेरे परामर्श के बिना जो भी निश्चय करेंगे उससे उनका उपकार न होगा। वह मादक यह नही जानता कि हमारे ही कारण उसके पाव से बेडिया तथा ग्रीवा से ज़जीर निकल सकी है। बडा अच्छा है। देखता हू कि वे लोग किस प्रकार मिल कर कोई कार्य कर सकते हैं।" उसने मिया ताहा से कहा कि, "सुल्तान के पास जाकर कहो कि मैंने उसे अपना स्वामी स्वीकार कर लिया है। मैं चाहता हू कि जो लोग मेरे सहायक हैं उनके कार्यों की व्यवस्था किसी न किसी प्रकार करू। सुल्तान इबराहीम तीन पीढियो से मेरा आश्रयदाता है। उससे निवदन करो कि हमारा उद्देश्य यही था कि वह अपने पिता के सेवको को पहचान

१ साधारण सैनिक।
२ वह भूमि जो सेना के सरदारों को सेना रखने तथा उसके प्रबन्ध के लिये दी जाती थी।

ले। मैं उसकी आज्ञाकारिता हेतु आता हूँ। जो कोई भी मेरे साथ आयेगा वह भी उसका ही आज्ञाकारी होगा।" मियां ताहा ने बादशाह के समक्ष उपस्थित होकर मियां हुसेन की आज्ञाकारिता के विषय में समाचार पहुँचाये। सुल्तान ने कहा कि, "मियां हुसेन मेरा चाचा है जो कुछ हुआ वह हुआ।" मियां के लिए उसने तीन अक्तायें[1] लिख भेजी और कहलाया कि इन तीनों में से जो कोई भी अक्ता मियां स्वीकार करेगा वह उसे प्रदान कर दी जायेगी। (१) उसकी प्राचीन जागीर सारन तथा चम्पारन। (२) चन्देरी की अक्ता। (३) सम्भल की अक्ता।" मियां हुसेन ने मियां लोधा काकर, खिज्र खां लोदी तथा मसनदे आली फतह खां को अपने साथ मिला लिया। जब राणा तथा सैयिद खां को यह समाचार प्राप्त हुए कि मियां हुसेन सुल्तान इबराहीम से मिल गया तो वे रात भर समस्त सेना तथा फतह खां शिरवानी सहित तैयार होकर मियां हुसेन के शिविर को घेरे खड़े रहे।

(१२३) प्रातःकाल मियां हुसेन को समाचार प्राप्त हुए कि उसकी समस्त सेना उसके शिविर को घेरे हुए है। मियां ने भी अपनी सवारी के लिए घोड़ा मँगवाया। खिज्र खां लोदी, मलिक लोधा काकर तथा मियां हुसेन के सिपाही भी तैयार होकर आये। मियां ने मलिक लोधा तथा खिज्र खां से पूछा कि, "तुमने अस्त्र-शस्त्र क्यों धारण किये?" उन लोगों ने कहा कि, "ये लोग रात भर तैयार थे।" मियां ने कहा कि, "सब लोमड़ियां एकत्र हुई हैं तुम अस्त्र-शस्त्र उतार दो और अपने शिविर में चले जाओ। उन्हें मुझसे मतलब है। मैं उनसे मिलने जाता हूँ। मेरे साथ कोई भी न आये।" उसने अपने आदमियों को भी रोक दिया और किसी को भी साथ नहीं लिया। स्वयं सफेद वस्त्र धारण करके सवार हुआ। अपने दो विशेष सेवक साथ लिये। उनमें एक सहजन तूनूर उसका एक प्राचीन हिन्दू सिपाही था। वह कभी-कभी धृष्टतापूर्वक वार्तालाप भी करने लगता था। वह भी उसके साथ हो लिया। मियां ने उसे मना किया कि, "तू भी अपने शिविर में ठहर।" उसने कहा कि, "मैं आपके साथ नहीं आ रहा हूँ, तमाशा देखने के लिए आ रहा हूँ। सती के समय जो स्त्री अपने आपको जला देती है, उसे देखने के लिए बहुत से लोग आते हैं। इसी प्रकार आप अकेले शत्रुओं के लाखों सवारों के समक्ष जा रहे हैं। मैं यह तमाशा देखने जा रहा हूँ।" मियां ने कोई उत्तर न दिया और चल खड़ा हुआ और उनकी सेना के घेरे में पहुँच गया। सेना के बीच में घोड़े से उतर पड़ा और बैठ गया। उन विश्वासपात्रों में से एक से कहा कि "एक व्यक्ति राणा के पास चला जाय और एक फतह खां तथा सैयिद खां के पास और कह दे कि, मियां हुसेन तुम्हें बुला रहे हैं।" जब उन्हें सूचना मिली तो राणा तथा सलाहदी राजा उस ओर से दोनों आये। फतह खां भी अकेला पहुँचा। सैयिद खां न आया। जब सभी एक स्थान पर बैठ गये तो मियां हुसेन ने राणा से कहा कि, "हमने तुम्हें देख लिया और तुम्हारी परीक्षा कर ली। हम लोगों ने जो निश्चय किया था तुमने उसका पालन नहीं किया और हमारा साथ छोड़ दिया। हमें यह ज्ञात नहीं है कि तुम्हारी क्या इच्छा है, तुम्हारे हृदय में जो आये तुम वह करो। अब हम तुम्हारे साथ नहीं परेशान होंगे। अब यह उचित है कि सेना के दो भाग कर दिये जायं, एक तुम्हारे साथ रहे और एक में से जो मेरे साथ रहना चाहें वह मेरे साथ रहें। मुझे जो कुछ कहना था मैंने कह दिया।" वहां से उठ कर वह फतह खां तथा सलाहदी का हाथ पकड़ कर अपने साथ ले गया और पूछा कि, "तुम क्या कहते हो? राणा तथा सैयिद खां ने जो कुछ निश्चय किया है वह करोगे अथवा मेरा साथ दोगे?" उन लोगों ने कहा कि, "हमें राणा से क्या मतलब, हमें तुमसे मतलब है।" मियां ने कहा कि, "मैं तुमसे प्रतिज्ञा करता हूँ कि सर्वप्रथम मैं तुम्हारी व्यवस्था करूँगा फिर अपनी।"

१ 'ब' के अनुसार 'तीन परगने'।

(१२४) राणा वहा से ऐसी अवस्था में वापस हो गया। उसके शिविर को ग्रामीणो ने नष्ट कर दिया और उसने पीछे मुड कर न देखा। कोई भी खेमा अपने साथ न ले गया। प्रथम दिन उसने २२ कोस की यात्रा की। राणा के नायब सत्यसिंह ने कहा कि, "पता नही चलता कि यह मिया हुसेन कैसा आदमी है। २०० अश्वारोहियों से उसने देहली के बादशाह का विरोध किया। अब वह उससे मिल गया है। हम लोगो के पास यद्यपि ७० हजार अश्वारोही हैं किन्तु उसके भय से हम इस प्रकार पलायन कर रहे हैं कि हमें इसकी कोई सूचना नही कि हमारे पीछे क्या हो रहा है।" सैयिद खा भी उनके साथ धौलपुर तक गया। सुल्तान इबराहीम ने उसके दासो द्वारा उसकी मदिरा में विष दिला दिया। जब उसकी बडी दुर्दशा हो गई तो मिया हुसेन उसके देखने के लिए पहुचा और पूछा कि, "तुम क्या कहते हो? हमें सुल्तान इबराहीम ने बुलवाया है। हम लोग जा रहे हैं। तुमने क्या निश्चय किया है?" उसने कहा कि, "मैंने निश्चय किया है कि जब तक मैं जीवित रहूगा इबराहीम का साथ न दूंगा और मदिरापान को न त्यागूंगा।" यह बात कह कर वह उठ खडा हुआ। उसकी उसी रात्रि में मृत्यु हो गई।

मिया हुसेन का चन्देरी को प्रस्थान

मिया हुसेन, सुल्तान इबराहीम की सेवा में पहुचा और चन्देरी की अक्ता स्वीकार कर ली। सलाहदी को भी वह अपने साथ लाया और उसे भी कुछ परगने दिलवा दिये। फतह खा को आजम हुमायूं की विलायत प्रदान कर दी गई। मलिक लोया को उसके पिता का वेतन[1] प्रदान कर दिया गया। बादशाह ने खिज्र खा लोदी को कुछ न दिया और कहा कि 'तू मेरा सेवक न था। अपने भाई का सेवक था। यदि तेरा भाई मिया भीखन खा तुझे कुछ दे दे तो वह ले ले, मैं कुछ न दूंगा।" मिया भीखन खा लोदी उसका विरोधी था। मिया हुसेन चन्देरी के लिए चल खडा हुआ और फतह खा अपनी विलायत के लिए।

मिया हुसेन ने चन्देरी की अक्ता स्वीकार करते समय मिया ताहा से परामर्श किया कि "इन तीन अक्ताओं[2] में से कौन सी स्वीकार करनी चाहिये?" मिया ताहा ने कहा कि, "यदि हमसे पूछते हो तो यही उचित है कि सारन तथा चम्पारन की विलायत को स्वीकार करो, कारण कि वह तुम्हारे अधीन रह चुकी है तथा सुल्तान से दूर है और विलायत की सीमात पर है। यदि वह भी न हो तो सभल की विलायत भी सीमात पर है। क्योकि बादशाह तथा तुममें शत्रुता हो गई है अत सीमात पर रहना उचित है। (१२५) चन्देरी यद्यपि सीमात पर है किन्तु वह विश्वासघातियों की विलायत है। पता नही वहा क्या हो।" मिया हुसेन ने कहा कि, "मै चन्देरी को अच्छा समझता हू कारण कि वह बहुत बडी अक्ता है और वहा से अन्य राज्यो पर आक्रमण भी हो सकता है और उस स्थान से राणा से भी बदला लिया जा सकता है।" मिया ताहा ने कहा कि, "यदि तुम चन्देरी ही को चुनते हो तो फिर चन्देरी के किले के भीतर न रहना। अपने लिए अन्य स्थान निश्चित करना।" यह निश्चय करके वे लोग चल दिये। मिया ताहा को आगरा में रखा गया। जब मिया हुसेन चन्देरी में पहुचा तो किले के भीतर दौलत खा के महल में उतरा। अपने पुत्रों को सेना देकर विभिन्न स्थानो के लिए नियुक्त किया और उन्हें इस क्रम से जागीर प्रदान की। एक भाग राणा की विलायत में, एक भाग कयूला परगने में लिख कर

१ 'ब' के अनुसार 'जागीर'।
२ 'ब' के अनुसार 'परगना'।

दिया। एक तिहाई भाग चन्देरी की विलायत में दिया। प्रत्येक व्यक्ति खुशी खुशी जागीर लेने लगा।

सुल्तान इबराहीम द्वारा मियां हुसेन की हत्या

इसी बीच में सुल्तान इबराहीम इस बात का प्रयत्न करने लगा कि वह किसी न किसी प्रकार मिया हुसेन से बदला ले। मिया हुसेन के एक विश्वासपात्र शेख फरीद दरियाबादी को सौ सोने की मुहरें तथा १० ग्राम प्रदान करके मिला लिया। उस हरामखोर ने शरफुलमुल्क से जोकि चन्देरी का एक निवासी था मिलाया। चन्देरी के शेखजादों के पास १२ हज़ार अश्वारोही थे। शरफुलमुल्क ने उनसे मिलकर षड्यंत्र रचना प्रारम्भ कर दिया। मिया हुसेन को इस बात की सूचना मिल गई। उसने शेख फरीद से पूछा कि "शरफुलमुल्क का क्या हाल है?" शेख फरीद ने सर्वप्रथम शरफुलमुल्क की मिया हुसेन से भेंट कराई थी और उसकी ओर से कुरान की शपथ ली थी। शरफुलमुल्क ने भी हाथ में कुरान लेकर शपथ ली और कहा कि "इस स्थान पर मेरे बहुत बडी सख्या में शत्रु है। स्वामी किसी के कहने की ओर ध्यान न दें।" मिया हुसेन को शेख फरीद के प्रति किसी विश्वासघात की शका न थी। उसने उसकी शपथ पर विश्वास कर लिया। शरफुलमुल्क को भी उसने सच्चा समझा।

शेख दाऊद कम्बोह मिया हुसेन के महल में चबूतरे पर बैठता था[1]। सारन तथा चम्पारन की विलायत में भी उसे यही पद प्राप्त था।[2] चोरी के अपराध में उसने कई हजार आदमियो के गले अपने हाथ से काट डाले थे। इस स्थान पर भी उसने उसी प्रकार शासन प्रारम्भ कर दिया। जो कोई भी बागो में से आम अथवा फूल तोडता वह उनके हाथ कटवा डालता था। बाग शेखजादों के थे। उन्हें यह बात (१२६) अच्छी न लगी। शेख दाऊद जब चबूतरे पर बैठता था तो लोगो के समक्ष चाकू खीच कर उन्हें दिखाता और यह कहता था कि, "यह वही चाकू है जिससे २० हजार दुष्टो के गले काट चुका हूँ। यदि ईश्वर ने चाहा तो शेखजादों से भी इसी प्रकार का व्यवहार करूगा।" वे लोग अत्यधिक आतंकित हुये। शरफुलमुल्क उन्हें अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न कर रहा था। जब उन लोगो ने शरफुलमुल्क के समक्ष शिकायत की तो उसने उन लोगों से कहा कि "मिया हुसेन की शक्ति में अभी वृद्धि नही हुई है। उसकी सेना छिन्न-भिन्न है। हम लोग विद्रोह कर दें। किले में कोई भी उसका सहायक नही है।" शेखजादो की १२ हजार सख्या है। नगर के लोग एक साथ उपद्रव करके उसे उसी महल में जहा वह उतरा है घेर लें और उसकी हत्या कर दें।" उसने सुल्तान इबराहीम का फ़रमान लोगो को दिखलाया। सभी लोगो ने यह बात स्वीकार कर ली और सगठित होकर उसकी हत्या करना निश्चय कर लिया। उन लोगो ने यह निश्चय किया कि जब द्वार बन्द हो और लोग इधर-उधर चले गये हों तो कुछ लोग द्वारो को दृढतापूर्वक बन्द कर लें। कुछ लोग मिया हुसेन के घर में प्रविष्ट हो जाय। मिया एमाद फर्मुली का पुत्र शेख मुहम्मद तथा मिया उस्मान फर्मुली का पुत्र शेख जमाल बादशाही अमीर किले के भीतर थे। उनके द्वारो पर तथा उनके प्रत्येक सिपाही के द्वार पर लोग नियुक्त कर दिये गये और उन लोगों से कहा गया कि, "हम लोग शाही आदेशानुसार कार्य कर रहे हैं। तुम लोग अपने घर से मत निकलो।" मिया

१ न्याय का कार्य करता था।
२ 'अ' में यह वाक्य नहीं है।

शेख जमाल को इस विषय में कुछ सूचना मिल चुकी थी। वह जुहर[1] की नमाज के समय मिया हुसेन के समक्ष पहुचा और उसे इस विषय की सूचना दी। मिया ने मुस्करा कर कहा कि, "अच्छा मेरा भतीजा इतना बुद्धिमान् हो गया कि मुझे शिक्षा प्रदान करता है। इन पोस्तीनो तथा कोकनारों[2] को यह साहस हो गया कि मेरा विरोध करें। यदि मैं उनकी ओर थूक दूं तो उस थूक से कई व्यक्ति भूमि पर गिर पड़ेंगे। मैं कल क्या करता हू तुम देख लोगे।" मिया जमाल ने कहा कि, "कल तुम्हारे भाग्य में कुछ और ही लिखा है; ईश्वर का आदेश इसी प्रकार है। यदि कोई अन्य उपाय नही कर सकते तो घर से निकल कर द्वार पर बैठ जाओ।" भाग्य के लिखे के समक्ष शेख जमाल की बात का कोई प्रभाव न हुआ। उसने कहा कि, "मुझे जो कुछ कहना था मैंने कह दिया, तुम स्वय बुद्धिमान् हो।" वह उठ कर अपने घर चल दिया।

जब मिया हुसेन के आदमी अभिवादन करके लौटने लगे तो किले के बाहर अपने शिविर में पहुचे। सायकाल की नमाज के समय उन्होने द्वार बन्द कर लिया। थोडी सी रात्रि व्यतीत हो जाने (१२७) के उपरान्त जैसा कि निश्चय हो चुका था वे एकत्र होकर शरफुलमुल्क के द्वार पर पहुचे। ख्वाजा अहमद चन्देरी के शेखजादो में एक सम्मानित व्यक्ति समझा जाता था। वह मिया हुसेन के पास आता जाता रहता था। उसे उस विश्वासघात की सूचना (पहले) न की गई थी (केवल) उसी समय उसे सूचना की गई। उसने उन्हें रोका और कहा कि, "हे मूर्खो! शेर खा के उपरान्त चन्देरी में यही एक प्रेमी वीर आया है। तुम लोग देखोगे कि हमें उसकी छत्रछाया में कितनी सुख-सम्पन्नता प्राप्त होगी। हम लोग काफिरो से बदला लेंगे। तुम लोग यह कैसा विश्वासघात कर रहे हो? यह तुम्हारे विनाश तथा पतन का द्योतक है।" क्योकि उन लोगो ने समस्त प्रबन्ध दृढतापूर्वक कर लिया था अत कुछ लोगो ने ख्वाजा अहमद की बात न सुनी। ख्वाजा अहमद ने कहा कि, "मैं तुम्हारा साथ नही दे सकता और मैं अपने घर जाता हू।"

वह वहा से लौट कर अपने घर न गया। मिया हुसेन के पास उपस्थित होकर उसने उसे यह सूचना पहुचाई। वे लोग ख्वाजा अहमद का पीछा करते हुए वहा पहुचे। द्वार के आदमी द्वार की ओर बढे। शेख मुहम्मद, शेख जमाल तथा प्रत्येक सैनिक के द्वार पर उनके सेवक जैसा कि निश्चित हो चुका था, नियुक्त कर दिये गये। एक अन्य समूह मिया हुसेन के घर पहुचा। हाहाकार मच गया। सभी लोग एकत्र होकर घर की प्रत्येक दिशा से प्रविष्ट हो गये। मिया हुसेन भी द्वार पर पहुचा। थोड़े से लोगो के साथ उसने धनुष अपने हाथ में ले लिया और तीन बाण चलाये। तीनो बाण लक्ष्य पर न लगे। तत्पश्चात् उसने धनुष को भूमि पर फेंक दिया और कहा कि, "मैं समझता हूं कि आज ईश्वर का आदेश इसी प्रकार है। मेरा लक्ष्य कभी नही चूका था।" प्रत्येक दिशा से पत्थरो की वर्षा होने लगी और लोग घायल होने लगे। इसी बीच में मिया के एक विश्वासपात्र शेर खा ने कहा कि "लोग अन्त पुर में प्रवेश कर रहे हैं। यदि आप आदेश दें तो मैं उनकी हत्या कर दूं।" मिया ने कहा कि, "हम मर्द हैं और ये लोग भी मर्द हैं। इस समय स्त्रियो का स्मरण न करना चाहिये। यदि तुम वीर हो तो वीरता का प्रदर्शन करो और अपनी मृत्यु को शोभा प्रदान करो तथा पौरुष प्रदर्शित करते हुए मरो।" तदुपरान्त मलिक बहलाई खासा खेल ने आकर कहा कि, "वे लोग अमान[3] प्रदान करते हैं और कहते हैं कि अस्त्र-शस्त्र रख दो हम

१ मध्याह्नोत्तर की प्रथम नमाज।
२ अर्थात् हीन व्यक्तियों का।
३ क्षमा, शान्ति।

तुम्हें छोड़ देंगे।" उसने मलिक बहलाई पर क्रोध प्रदर्शित करते हुए कहा कि, "हे निर्लज्ज ! क्या वे लोग यह चाहते हैं कि हमें बन्दी बना लें ?[1] वे इतनी बात नही समझते हैं कि ईश्वर ने मुझे शहीद होने का सम्मान प्रदान किया है। तुम लोग साहस से काम लो और उन लोगों की कोई चिन्ता मत करो।" एक खुरासानी (१२८) हुसेन अली नामक उसका वकील मिया शाह के पास आता जाता था। मिया ने उससे कहा कि, "हे हसन अली ! यदि तू जीवित रहे तो सुल्तान इबराहीम से कह देना कि मैंने तेरी कोई बुराई नही की। तू मुझसे ईर्ष्या रखता था। मुझे तथा तुझे दोनो ही को मरना है।" अचानक एक पत्थर मिया हुसेन के सिर पर लगा वह व्याकुल होकर भूमि पर बैठ गया। उसके हाथ में तलवार थी जिसे वह हिलाता जाता था। एक व्यक्ति ने जो काले वस्त्र धारण किये हुए था मिया के समीप आकर मिया पर तलवार का वार करना चाहा। मिया ने उसी दशा में उसके ऐसी तलवार मारी कि उसका एक बाजू तथा सिर कट गया और सिर पृथक् होकर गिर पड़ा। उसके उपरान्त कोई भी मिया के समीप न आया। दूर ही से पत्थर बाण तथा बर्छे फेंकते थे, यहा तक कि उसकी हत्या हो गई। उसके सिर को काट लिया गया और द्वार पर लटका दिया गया। प्रात काल सेना वालो, जो किले के बाहर थे और सहायतार्थ आ रहे थे, ने मिया के सिर को द्वार पर देखा। वे निराश हो गये। शिविरो में लूट मार होने लगी। चन्देरी वालो ने घोड़े, धन-सपत्ति तथा अस्त्र-शस्त्र प्राप्त कर लिये। कई हजार अश्वारोही मुकम्मल[2] हो गये और उन्होंने अर्ज़[3] लिया। वे अपने आपको बहुत बडा समझने लगे। जो लोग अनुभव-शून्य थे, वे प्रसन्न होते रहते थे। अनुभवी लोग उदाहरणार्थ ख्वाजा अहमद तथा अन्य लोग हाथ मलते थे और पतन की प्रतीक्षा करते रहते थे। अचानक राणा तथा सलाहदी ने चन्देरी पर आक्रमण कर दिया। वे लोग केवल अपनी ही चिन्ता रखते थे और भीड को अत्यधिक महत्व प्रदान करते थे। वे राणा से युद्ध करने लगे। राणा के पास १ लाख अनुभवी अश्वारोही थे। ये लोग भाग खड़े हुए और अल्प समय में सभी की हत्या हो गई। बहुत थोडे से लोग शेष रह गये। स्त्रिया बन्दी बना ली गईं और वह स्थान नष्ट हो गया। आबादी का वहा से अन्त हो गया।

उन्ही दिनो में किसी ने शेख मुहम्मद सुलेमान को स्वप्न में देखा। वे नगे सिर जा रहे थे। लोगो ने उनसे पूछा कि, "आप पगडी क्यो नही बाधते और अभी तक कहा थे ?" उन्होंने उत्तर दिया कि, "हम चन्देरी में थे और हमने मिया हुसेन खा का बदला शेखज़ादो से ले लिया। अब आगरा जा रहा हू। जब इबराहीम की भी यही दशा हो जायेगी तब मैं पगडी बाँधूँगा।"

स्वर्गीय सुल्तान सिकन्दर के अन्य अमीर

आधा राज्य फर्मुलियो की जागीर में था और आधे में समस्त अफगान थे। उस युग में नोहानियो तथा फर्मुलियो को प्रभुत्व प्राप्त था। शिरवानियो में आजम हुमायूँ सब से अधिक प्रतिष्ठित था। लोदियो में ४ व्यक्ति अधिक प्रतिष्ठित थे। एक महमूद खा जिसके पास कालपी था। दूसरा मिया आलम जो इटावा तथा चन्दवार का हाकिम था। तीसरे मुबारक खा जो लखनऊ का स्वामी था। चौथे दौलत (१२९) खा जिसके अधीन लाहौर था। शाहू खेलो में से हुसेन खा तथा खाने जहा सुल्तान बहलोल के दादा की सतान से थे और इसका क्रम इस प्रकार था

१ 'ब' के अनुसार 'बन्दी बना कर बादशाह के पास भेज दें'।
२ सशस्त्र एव उत्तम घोड़ों के स्वामी।
३ सेना में भरती हो गये।

बहलोल
बिन
काला (पहाड)
बिन
बहराम
हुसेन खा
बिन
फीरोज खा
बिन
बहराम

फर्मुलियो का हाल

कुतुब खा लोदी शाहू खेल सुल्तान बहलोल के राज्य-काल में था। सारन तथा चम्पारन की अक्ता मिया हुसेन के पास थी। अवध, अनयाला तथा होघना मिया मुहम्मद काला पहाड के पास थ। क़न्नौज मिया गदाई के अधीन था। शम्साबाद तथा थानेसुर एव शाहाबाद मिया एमाद के अधीन था। (जलेसर तथा इन्द्री की जागीर मिया सुलेमान के अधीन थी। महावन, अली खा की जागीर में था, झज्झर का परगना मियाँ उस्मान के पास था)[1], मारहरा मिया मुहम्मद के भाई तातार खा के पास था। हरियाना, दुईसुइया तथा कुछ अन्य परगने ख्वाजगी शेख सईद के अधीन थे। यद्यपि सभी वीरता तथा तलवार चलाने में श्रेष्ठ थे किन्तु शेख सईद के पुत्र योग्य तथा दानी थे और सभी से श्रेष्ठ थे। शेख सईद में अमीरी के अतिरिक्त अत्यधिक गुण पाये जाते थे। सुल्तान सिकन्दर उन्हें अपना बहुत बडा मित्र समझता था। एक दिन सुल्तान ने कहा कि, "३० वर्ष से ख्वाजगी मेरा मुसाहिब[2] है। कभी उसने कोई ऐसा कार्य नही किया जिससे कि मै असतुष्ट होता। कभी उसने कोई बात दुबारा नही कही। मैंने जिस कठिनाई के विषय में भी उससे प्रश्न किया उसका मुझे उत्तर मिल गया।"

ख्वाजगी शेख सईद

एक दिन सुल्तान सिकन्दर आलिमो के साथ बैठा था। सुल्तान ने आलिमो से पूछा कि, "पक्षी एक दूसरे की भाषा समझते हैं अथवा नहीं?" (समस्त आलिमा ने एक मत होकर कहा कि तफसीरा[3] में लिखा है कि सभी पक्षी एक दूसरे से वार्तालाप करते हैं और एक दूसरे की बात समझते हैं)। इसी बीच में ख्वाजगी शेख सईद आ गये। सुल्तान ने कहा कि, "मैं इन लोगो से यह बात पूछ रहा हू। वे कहते हैं कि तफसीरा में इस प्रकार लिखा हुआ है।" ख्वाजगी ने कहा कि, 'मेरी भी श्रद्धा इसी पर है।" सुल्तान ने कहा कि, "धार्मिक विश्वास तो इसी प्रकार है किन्तु मै माकूल[4] बात चाहता हू। तुम्हारी समझ में कुछ आता है?" ख्वाजगी ने कहा कि, "मनकूल[5] में बुद्धि का हस्तक्षेप नही होना चाहिए।" सुल्तान ने कहा

१ कोष्ठ के वाक्य 'अ' में नहीं हैं।
२ सहचर।
३ कुरान की टीका।
४ तर्क अथवा बुद्धि के अनुसार उचित।
५ जो बातें प्रामाणिक धार्मिक ग्रन्थों मे लिखी हों अथवा मुहम्मद साहब या उनके मित्रों एव अन्य धार्मिक व्यक्तियों की वाणी।

कि, "मेरा भी यही विश्वास है किन्तु जो कुछ तुम्हारी समझ में आता हो उसका उल्लेख करो।" ख्वाजगी ने कहा कि, "ऐसा ज्ञात होता है कि कुछ पक्षी समझते होंगे किन्तु सभी नहीं समझते। इसका प्रमाण यह है कि चिडीमार जाल बिछाकर मुह में घास की पत्ती लेकर पक्षियो की बोली बोलता है। पक्षी उसके (१३०) पास एकत्र हो जाते हैं और जाल में फस जाते हैं। वे इतना नही समझते कि बोलने वाला हमारे समूह का नही है। इसके अतिरिक्त किसी गौरय्ये को सीकर बैंठाल दिया जाता है और उसे हिलाया जाता है। वह शोर मचाती है। पक्षी उसके सिर के चारो ओर चक्कर काट कर जाल में फस जाते हैं और इतना नही समझते कि वह परेशान होकर चिल्ला रही है। हम वहा न जाय। वहा पहुच कर हम नष्ट हो जायेंगे। कुछ पक्षी समझते भी हैं, जैसे कौवा। अधिकाश पक्षी, जोकि वृक्षो तथा पर्वतों पर रहते हैं जैसे कुलग[1] तथा दुर्राज[2], एक दूसरे की भाषा समझते हैं और एक दूसरे की आवाज पर एकत्र हो जाते हैं और छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। कुछ लोगो को इनके विषय में कोई भी जानकारी नही हो पाती।"

एक दिन सुल्तान के समक्ष यह छन्द पढा गया :

छन्द

"यदि पुत्र उद्दड है तो उसे दण्ड देना आवश्यक है।
दीवाने कुत्ते के लिए कुलूख (ढला) औषधि है।"

सुल्तान ने कहा कि "पहली पक्ति में अनुशासन तथा उद्दंड पुत्र का उल्लख किया गया है। दूसरी पक्ति में पागल कुत्ते तथा कुलूख (ढेले) का। अनुशासन का सम्बन्ध कुत्ते से है किन्तु औषधि का सबध कुलूख (ढेले) से क्या हो सकता है?" कोई कुछ कहता था और कोई कुछ। सुल्तान इस उत्तर से सतुष्ट न होता था। उसने कहा कि, "ढेले से कुत्ते को दण्ड दिया जाता है। उसके रोग का उपचार नही होता। औषधि रोग निवारण हेतु होती है।" इसी वार्तालाप के समय ख्वाजगी आ गया। सुल्तान ने कहा कि "अच्छा हुआ कि ख्वाजगी भी आ गया।" उसने इस वार्तालाप के विषय में ख्वाजगी से पूछा। ख्वाजगी ने कहा कि, "अन्य मित्र लोग क्या कहते हैं?" सुल्तान ने कहा कि, "जो कुछ वे कहते हैं उससे मै सतुष्ट नही हू।" ख्वाजगी ने कहा कि "यह शब्द कुलूख (ढेला) नही है अपितु 'किलूख' है जो पागल कुत्ते की औषधि है और वर्षा ऋतु में घास की पत्तियो पर होती है। कुछ काली होती हैं और कुछ लाल और दोनो पर सफद बिन्दी होती है। उसे हिन्दी में पिंदली कहते हैं। यह पागल कुत्ते की तथा उस व्यक्ति की जिसे कुत्ते ने काट खाया हो औषधि है। खीर तथा भगरे के शीरे में गोली बनाकर देते हैं और जिस व्यक्ति को कुत्ते ने काट लिया हो उसे खिलाते हैं।" उपस्थित गणो ने प्रश्न किया कि, "दण्ड के उद्देश्य का क्या उल्लेख है? यह भी औषधि है दण्ड नही?" ख्वाजगी ने कहा कि, "पागलपन समाप्त हो जाने के उपरान्त अनुशासन प्राप्त हो जाता है और पुत्र के अनुशासन के लिए इसी उदाहरण को दे दिया गया है ताकि लोग इस बात को समझें कि पुत्र को नरमी से तथा समझा-बुझा कर अनुशासन देना चाहिए, कठोरता तथा निष्ठुरता से नही। यदि ऐसा न हो तो पागल कुत्ता मारने से और भी पागल न हो जाता।"

१ एक प्रकार का सारस।
२ तीतर।

मिया महमूद (टोडर मल)

(१३१) ख्वाजगी का पुत्र मिया महमूद था जिसे टोडर मल भी कहते थे। वह वीरता तथा दान में अद्वितीय था। एक दिन सुल्तान सिकन्दर ने उसे एक घोडा प्रदान किया जोकि बडा ही उत्तम था। सुल्तान ने उससे यह कहा कि, "इसे किसी अन्य व्यक्ति को मत देना।" एक दिन एक मागने वाला बादफरोश[1] उसके पास आया और उसने उसी घोडे को मागा। मिया महमूद ने कहा कि,"बादशाह ने इस घोडे को प्रदान किया है और मुझसे मना किया है कि किसी को मत देना। दो घोडे या चार घोडे इसके बदले में ले लो।" उसने कहा कि, "आप यदि यही घोडा प्रदान करते हैं तो आपकी कृपा है अन्यथा मैं नही लेता।" मिया ने कहा कि, "सुल्तान ने मुझे मना किया है।" उस बादफरोश ने कहा, "तो फिर तू भिखारी के प्रोत्साहन का प्रयत्न नहीं करता, बादशाह की इच्छा की चिन्ता करता है। मैं निराश जाता हू। एक दिन यह घोडा मर जायगा और तुझे खेद प्रकट करना पडेगा।" यह कह कर वह चल दिया। मिया ने कहा कि, "अच्छा जा कर ले लो। जो कुछ होगा देखा जायेगा। मैं भिखारी को लौटा नही सकता।" मिया ने घोडा उसे दे दिया। दूसरे दिन सुल्तान कही सवार होकर जा रहा था। मिया महमूद उसके साथ उपस्थित था। वह बादफरोश भी घोडे पर सवार होकर सुल्तान के समक्ष आया और उसने मिया महमूद के विषय में शुभकामनायें की। उसने एक कवित्त पढा जिसकी एक पक्ति इस प्रकार है:

"दान खडग महमूद न चूका विरह रहा आलम सुल्तान।"

जब सुल्तान ने बादफरोश की ओर देखा तो उसे पता चला कि वह उसी घोडे पर सवार है। उसने अपने महल में जाकर कहा कि, "महमूद ने वह घोडा बादफरोश को प्रदान कर दिया। मैंने मना किया था, उसने कोई भय न किया और बादफरोश की इच्छा का ध्यान दिया और मेरी बात को साधारण समझा।" सुल्तान की यह प्रथा थी कि जब वह किसी से रुष्ट हो जाता था तो उसे मवाजिब[2] नही देता था किन्तु उसके प्रति कृपा तथा उसकी श्रेणी में कमी न करता था। जब मिया महमूद कुछ समय बगैर वजह[3] के रहा तो ख्वाजगी ने बादशाह की इच्छा पर दृष्टि रखते हुए, अपने पुत्र को कुछ न दिया। मिया, ख्वाजगी से पृथक होकर बादशाह का सेवक हो गया था। अत वह उस स्थान से अलग होकर नौकरी के लिए रवाना हुआ। उसके ६० प्रसिद्ध तथा वीर सैनिक थे जो तलवार चलाने में उसी के समान दक्ष थे, वे उसके साथ हो लिये। जब वह इस स्थान से रवाना हुआ तो उसने अपने साथ कोई भी घोडा खेमा इत्यादि न लिया। पैदल काले जूते पहन कर रवाना हुआ। उसके साथी भी इसी प्रकार रवाना हुए। उसने कहा कि, "यदि ईश्वर मुझे सम्मान प्रदान करेगा तो सब चीजें दे देगा अन्यथा मैं घोडों को क्यो ले जाऊं।" उसके सभी सहायको ने उसकी इस बात से सहमति प्रकट की। उन लोगो ने एक छोटा सा (१३२) साधारण याबू[4] अपने साथ ले लिया, समस्त सैनिकों के अस्त्र-शस्त्र भी उसी पर थे। सर्वप्रथम वह मेवात पहुचा। वहा के हाकिम अलाउल खा ने उसे अत्यधिक प्रोत्साहन प्रदान किया किन्तु ख्वाजगी ने उसकी

१ चापलूस भाट।
२ 'ब' के अनुसार 'उसकी जागीर ले लेता था'।
३ 'ब' के अनुसार 'बिना जागीर के रहा'।
४ 'ब' के अनुसार 'ऊँट'।

सेवा करना स्वीकार न किया और कहा, "घर से निकलना और प्रांगण में बैठना[1] नामर्दों का काम है।" वहां से चल कर वह ब्याना के परगने[2] के एक ग्राम में पहुंचा। वहा के ग्रामीण भागे जा रहे थे और हाहाकार मचा था। किसी ने आकर सूचना दी कि यह ग्राम नष्ट हुआ जा रहा है। ख्वाजगी ने एक व्यक्ति को उस ग्राम के मुकद्दम के पास भेज कर पुछवाया कि, "वे लोग क्यों भाग रहे हैं?" उसने उत्तर दिया कि, "हमारे विरुद्ध सुल्तान अहमद की सेना भेजी गई है स्वयं इस कारण हम भागे जा रहे हैं।" मिया ने कहा कि, "यदि तुम लोग स्वयं सरदार होते तो भाग जाते। अब मैं तुम्हारे ग्राम में उतरा हू। यदि हमारे रहते हुए कोई भी व्यक्ति तुम्हें कोई हानि पहुचाता है तो उससे बदला लेना हमारे लिए आवश्यक है। तुम निश्चिन्त होकर अपने घर में रहो। हम उस सेना से समझ लेंगे।" उन लोगो ने कहा कि, "तुम अतिथि तथा यात्री हो। इतना भार अपने ऊपर किस प्रकार ले सकोगे? यदि तुम्हें कोई हानि पहुची तो हमारा मुह काला हो जायेगा।" मिया ने कहा कि, "यदि हमारे रहते हुए तुम्हें हानि पहुचेगी तो हमारा भी मुह काला होगा।" सक्षेप में मिया ने उन लोगों को प्रोत्साहन तथा दिलासा दिया। सूर्योदय के समय वह सेना आ गई। मिया के सहायक ग्राम को अपनी पीठ के पीछे करके पक्तियों में खडे हो गये और अपने साथ किसी भी ग्रामीण को न ले गये। जब सेना वालों ने उन्हें इस प्रकार सुव्यवस्थित देखा तो उन्होंने एक व्यक्ति को उन लोगों के विषय में पता लगाने के लिए भेजा। पूछताछ के उपरान्त ज्ञात हुआ कि वे यात्री मालूम होते हैं और सम्मानित व्यक्ति प्रतीत होते हैं। इस ग्राम में उनके समान कोई एक भी नही है। पता लगाना चाहिये कि ये लोग कौन हैं? उन्होने एक व्यक्ति को पता लगाने के लिए उनके पास भेजा। उसने पता लगाकर सूचना दी कि, "ये लोग यात्री हैं।" उन्हें इतना ही पता चल सका। उन लोगो ने पुन उनके नाम का पता लगाने के लिए भेजा। उसने उपस्थित होकर उन लोगो के सरदार का नाम पूछा। उन लोगों ने उत्तर दिया कि, "तुम इस ग्राम पर आक्रमण करने आये हो। हमारा नाम पूछ कर क्या करोगे? अपना कार्य करो।" उस व्यक्ति ने कहलाया कि, "तुम लोग यात्री हो। तुम्हें इस प्रकार वार्तालाप नही करना चाहिये। हम ग्राम पर आक्रमण करने आये हैं। हमें तुमसे कोई मतलब नही। तुम हट कर अपने स्थान को चले जाओ। हमको जो कुछ करना है हम ग्राम वालो से करेंगे।" उन्होंने कहलाया कि, "आज रात्रि में हमने इस ग्राम में विश्राम किया है और यहा का जल पिया है। हमारे लिए (१३३) यह बडी लज्जा की बात है कि हमारे होते हुए इन लोगों को किसी प्रकार की हानि पहुचे।" इस वार्तालाप के उपरान्त उन लोगो ने अपने आदमी सुल्तान अहमद जलवानी के पास भेजे और उसे इस विषय मे सूचना दी। सुल्तान ने कहा कि, "इस बात का ठीक-ठीक पता लगाओ कि वे लोग कौन हैं।" उन लोगों ने ग्रामीणो से पूछा तो पता चला कि उसे लोग मिया महमूद फर्मुली कहते हैं। वह अपने पिता से पृथक् होकर चला आया है। जब सुल्तान अहमद को यह सूचना मिली तो उसने अपने विश्वासपात्र तथा पत्र मिया की सेवा मे भेजे और वे (उसके सैनिक) उस ग्राम से चले गये। उन्हें अपने पास बुलवा कर (सुल्तान अहमद जलवानी ने) क्षमा याचना की और कहा कि, "तुमने हमें लज्जित कर दिया था। यह तो अच्छा हुआ कि सेना दिन में पहुची और तुम्हें देख लिया। यदि रात्रि होती तो युद्ध हो जाता और पता नही क्या होता।" तदुपरान्त उसने उसके (मिया के) आने का कारण पूछा। उसने उत्तर दिया कि, "मैं नौकरी की खोज में जा रहा हू।" सुल्तान अहमद ने सुल्तान सिकन्दर की कुछ शिकायत की।

१ 'ब' के अनुसार 'घर से निकल कर घर के द्वार पर बैठना नामर्दों का कार्य है'।
२ 'अ' के अनुसार 'किला'।

मिया ने उत्तर दिया कि, "तू यह समझता है कि मैं तेरे समक्ष उपस्थित हुआ हू। और तू मेरे स्वामी की तेरे समक्ष शिकायत करता है। तू अपने आपको नही पहचानता।" यह कह कर वह उठ खडा हुआ और नागौर की ओर चल दिया। नागौर के मुक्ता[1] फीरोज खा ने उन लोगो को रख लिया। उन लोगो द्वारा वहा महान् कार्य सम्पन्न हुए। फीरोज खा ने उसे पताका तथा नक्कारा प्रदान किया। चार सौ अश्वारोही उसके साथ हो गये। सुल्तान सिकन्दर को जब इस बात की सूचना मिली तो उसने ख्वाजगी से कहा कि, "जो लोग मेरे काम के थे उन्हें तूने पृथक् कर दिया और अपने (उन) पुत्रो को जोकि तेरे काम के थे उन्हें अपने पास रख लिया। उसके कारण मैं तेरे पुत्रो की देख-रेख करता था।" ख्वाजगी ने मिया महमूद को बुलवाने के लिए कुछ आदमियो को भेजा। वे उसे ले आये। वह पैदल काले जूते पहन कर गया था। चार सौ अश्वारोहियो, पताका तथा नक्कारा सहित लौट आया।

मिया ताहा

वह बडा बुद्धिमान्, आलिम तथा कला-कौशल में निपुण था। कोई कला ऐसी न थी जिसका ज्ञान उसे न हो। सुल्तान सिकन्दर कहा करता था कि, "मिया ताहा एक हजार आदमियो का काम करता है।" यह ऐसा महान् बुद्धिमान् था। एक दिन दास उसकी सेवा में पहुचा। वह कुतबी नामक ग्रंथ पढा रहा था और उसे इस योग्यता से समझा रहा था कि मानो खाक़ानी[2] तथा अनवरी[3] के (१३४) दीवान[4] अथवा शाहनामा[5] को पढा रहा हो। वह सगीत में इतना अधिक निपुण था कि इस कला के बडे-बडे जानने वाले जो उसके समकालीन थे उसके विषय में कहते थे कि स्वर के ज्ञान में उसके समान कोई अन्य नही है। एक दिन एक वादक उसके द्वार पर वीणा बजा रहा था उसके बाजे में एक तार की कमी थी। मिया घर के भीतर से सुन रहा था। उसने खवास खा द्वारा यह सदेश भेजा कि "आठवें तार को किस कारण पृथक् कर दिया?" जब देखा गया तो पता चला कि जैसा मिया ने कहा था वैसा ही था।

तिब[6] के ज्ञान में सभी लोग उसकी योग्यता का लोहा मानते थे। तिब के ज्ञान के २४ हजार श्लोक उसे कठस्थ थे। बडे-बडे ब्राह्मण तथा सगीतज्ञ उससे शिक्षा प्राप्त करते थे। एक दिन इस ग्रथ का सकलनकर्ता उपस्थित था। इबराहीम खा शिरवानी के पुत्र को उपस्थित करके लोगो ने कहा कि, "यह किसी प्रकार स्वस्थ नही होता।" मिया ने कहा कि, "यदि ईश्वर ने चाहा तो साधारण प्रकार से स्वस्थ हो जायेगा। जाकर कनार के वृक्ष तथा नीम के वृक्ष की छाल को जल में उबालो। घाव को उसमे धोओ तथा गोभी को मल कर बाध दो अच्छा हो जायेगा।" वह व्यक्ति जो उस बालक के साथ था

१ 'त्र' के अनुसार 'हाकिम'।

२ अफ़ज़लुद्दीन इबराहीम बिन अली शिरवानी खाक़ानी फ़ारसी का बड़ा प्रसिद्ध कवि था। तबरेज़ में उसकी ११८६ ई० में मृत्यु हो गई।

३ अनवरी भी फ़ारसी का बड़ा प्रसिद्ध कवि था। उसकी मृत्यु १२०० ई० में बलख़ में हुई।

४ कविताओं का 'सग्रह'।

५ फ़िरदौसी की प्रसिद्ध रचना 'शाहनामा' जिसमें इस्लाम से पूर्व ईरानी बादशाहों का वृत्तान्त दिया गया है। इसकी रचना फ़िरदौसी ने ३० वर्ष में की और इसमें लगभग ६०,००० छन्द हैं। फ़िरदौसी की मृत्यु तूस (मशहद) में १०२० ई० में ८६ वर्ष की अवस्था में हुई।

६ चिकित्सा।

योगी न समझा। मिया ने कहा कि, "ग्रामीण उसे भत्तल कहते हैं।" फिर भी वह न समझा तो मिया ने कहा कि, "योगी लोग उसे यह कहते हैं और गुजराती यह।" जिस भाषा में भी मिया कहते उसकी समझ में न आता। अन्त में मिया ने कहा कि, "इबराहीम खा से जाकर कह दो कि अफगान लोग उसे चम-वल्ली कहते हैं। वह समझ जायेगा। जिस प्रकार से मैंने बताया है उसी प्रकार से उपचार करें वह स्वस्थ हो जायेगा।" मिया ने जिस प्रकार बताया था, उसकी चिकित्सा की गई। वह स्वस्थ हो गया।

मिया के आविष्कारों में एक आविष्कार यह है कि उसने हाथी दात से कागज का एक ताव बनाया था। उसे जितना मोडा जाता कोई प्रभाव उस पर न पडता। उसने हाथी दांत की एक पताका तैयार की थी। मूल पताका से उसमें बाल बराबर भी अन्तर न था केवल यह कि वह अधिक सफेद थी। उसने लाख की एक पताका तैयार की थी। मोडते तथा लपेटते समय उसे कोई हानि न पहुचती थी। उसने बादशाह के लिए हाथी दात की एक टोपी तैयार की थी। उसे जितना भी मला अथवा मोडा जाता उसे कोई हानि न होती थी।

खाने जहा लोदी के पुत्र अहमद खा की पत्नी के लिए उसने हाथी दात की नीलोफर[1] की कली के समान एक कुम्भी तैयार करायी थी और उसमें आबनूस[2] का एक भौंरा छिपा दिया था। जब तक वह सिर न हिलाती कली बधी रहती। जब वह सिर हिलाती तो नीलोफर खिल जाता और भौंरा (१३५) भीतर से निकल कर आख के समक्ष उडता रहता था। वह सोने के तार से बधा रहता था। जब तक वह बातचीत करती रहती और सिर हिलता रहता, भौंरा भी हिलता रहता, जब वह सिर को रोक लेती तो भौंरा भी नीलोफर के भीतर चला जाता और वह फूल कली बन जाता था।

मिया मुहम्मद के भतीजे शेख बायजीद फर्मुली ने जो बडा बुद्धिमान् था, एक दिन मिया ताहा से कहा कि, "हमारे पास एक हिन्दुस्तानी तलवार, जिसे दोधारी खाडा लगवानी कहते हैं, बडी ही उत्तम है।" मिया ताहा ने कहा कि, "जो कोई कुशल कारीगर तलवार बनाता है वह उत्तम ही होती है और प्रत्येक वस्तु को काट देती है।" मिया शेख बायजीद ने कहा कि, "लगवानी किसी मनुष्य की बनाई हुई नही है। वह ईश्वर की एक लीला है जो आकाश से प्राप्त हुई है।" मिया ताहा ने कहा कि, "मिया बायजीद हमें तेरी समझ पर बडा विश्वास था। किसी ने यह बात नही सुनी कि तलवार आकाश से आई हो अथवा भूमि से निकली हो। यदि वह लगवानी तेरे पास हो तो उसे १ वर्ष के लिए भूमि में गाड दे तदुपरान्त तू उसे देख। यदि वह सुरक्षित रह जाय और उसमें मोरचा न लगे तो इस कथन पर विश्वास कर अन्यथा यह झूठ है।" शेख बायजीद ने कहा कि, "हिन्दुओं के ग्रथो में इसी प्रकार लिखा है।" मिया ताहा ने शेख बायजीद से कहा कि, "यह बात उससे भी अधिक असत्य है। हिन्दुओं का धर्म, उनके ग्रन्थ तथा उनकी बातें झूठी है। यदि मुसलमान लोग हिन्दुओं की बातो पर विश्वास करेगे तो मार्ग-भ्रष्ट हो जायगे।" शेख बायजीद ने कहा, "आपको सभी विद्याओं का ज्ञान है, आपको इसके विषय में ज्ञात होगा। मैंने इस प्रकार की किसी तलवार का हाल नही सुना है। आपने तलवारें भी बनाई होगी।" मिया ने कहा कि, "नही, किन्तु मैं यह बात समझता हू कि यदि मै बनाऊ तो मुझ आशा है कि वह लगवानी के समान होगी और उसके चिह्न न तो आग से और न उन यत्रो से मिट सकेंगे जिनसे तलवारें तेज की जाती हैं।" शेख बायजीद ने कहा कि, "हम इसकी परीक्षा करना चाहते हैं।" मिया ताहा ने कहा कि, "एक

१ नील कमल, कुई।
२ तेंदू नामक एक जंगली वृक्ष।

खाडा मुझे दे दो।" शेख बायजीद ने कहा कि, "लगवानी आप ही के घर रहेगी आप औषधियो को मगवायें। मैं उसे आपके पास भेज दूंगा।" मिया ने कहा कि, "मैं आज औषधिया मगवाता हूं। कल तुम खांडा लाओ। मैं कल सूर्य, चन्द्रमा तथा लिंग का चिह्न उस पर बनाऊगा। खाडा तुम अपने पास रख लेना। कुछ दिन उपरान्त मैं उसे निकालूगा। यदि चिह्न बने रहें तो तुम जिस वस्तु पर चाहना अनुभव कर लेना। जब तक वह तलवार न टूटेगी वह चिह्न न जायेंगे।"

एक दिन मिया हुसेन फर्मुली के पुत्र मिया शेख मुहब्बत ने मिया ताहा के पास दास को भेजा। वे मगरिब[1] की एक तलवार क्रय कर रहे थे। उसका मूल्य २५० तन्के लग गया था। उन दिनों में मगरिबी तलवारें कम मिलती थीं। उसने मुझे आदेश दिया कि, "इसे मिया ताहा को दिखलाओ। यदि अच्छी होगी तो मैं क्रय कर लूगा।" दास उनकी सेवा में पहुचा। मैंने देखा कि वे अपने घर के प्रागण के समक्ष इस्तिजा[2] करके खडे हुए है। उनकी दृष्टि मुझ पर पडी। उन्होंने मुझे अपने पास बुलवाया। मैंने तलवार के विषय में कहा कि मिया शेख मुहब्बत ने भेजी है। मिया ने कहा कि, "इसे मियान से निकालो।" मैंने उसे आधा खींचा। उन्होने देख कर कहा कि, "सभवत मुड भी गई होगी।" मैंने कहा कि, "हां।" मिया ने कहा कि "२०० तन्के कुछ अधिक मूल्य लगा दिया गया है।" मैंने कहा कि, "२५० तन्के मूल्य (१३६) लगाया गया है। यदि अच्छी हो तो ले ली जाय।" मिया ने कहा कि, "इतना अधिक मूल्य लगा दिया गया!" और कहा कि, "यदि मिया मुहब्बत को तलवार की इच्छा हो तो फौलाद की एक ईंट मेरे पास भेज दें। अबू सईदी, मिस्री, खुरासानी, मगरिबी तथा फिरगी जैसी भी तलवार की इच्छा होगी हम अपने दासो से तैयार करा कर भेज देंगे, जोकि इस मगरिबी तलवार से अच्छी होगी।"

सुल्तान सिकन्दर के पास एक खाडा था। वह कुछ टेढा हो गया था। उसे रापरी के लोहारो के पास जो अपने कार्य में कुशल थे तथा उसके सेवक थे उसे भेजा। लोहारो ने बडा प्रयत्न किया किन्तु वह सीधा न हो सका। २ मास व्यतीत हो चुके थे और वे कुछ भी न कर सके थे। यदि वे उसे आग में डालते तो उसकी तेजी का अन्त हो जाता। यदि ठडी अवस्था में पीटते तो टूट जाने का भय था। वे उसे उसी प्रकार रखे हुए थे। एक दिन मिया ताहा लोहारों की ओर गया। उन्होने उसके चरणो का चुम्बन करके निवेदन किया कि, "दास बडी कठिनाई में पडे हुए है," और खाडे के विषय में निवेदन किया। मिया ने खांडे को मगवा कर देखा तो पता चला कि वह बडा अव्यवस्थित हो गया है। मियाँ ने कहा कि, "थोडा सा तिल्ली का तेल लाकर मलो।" तेल मला गया। तदुपरान्त उसे धूप में रखा गया। जब वह खूब गरम हो गया तो मिया ने उठकर खाडे को असमतल भूमि पर रख दिया और कई लातें जोर से मारी। तदुपरान्त उसे देखा तो पता चला कि वह सीधा हो गया है और उसमें टेढापन नही रहा है। मिया ने उठा कर उसे उन लोगो के हाथ में दे दिया। वे मिया के चरणो में गिर पडे, और उन्होने कहा कि, "हमारी मर्यादा की आप रक्षा करें और इस रहस्य को किसी को न बतायें ताकि हम लोगो के कार्य को कोई हानि न पहुचे।"

एक दिन मिया ताहा सुल्तान के पास अभिवादन हेतु जा रहा था। उसने देखा कि जौहरी लोग बादशाह के द्वार के समक्ष एकत्र है, मिया ने उन लोगो से उनके आने का कारण पूछा। उन लोगो ने कहा

१ अफ्रीका।
२ पेशाब के उपरान्त शिश्न को सुखाने का कार्य।

कि, "दीवान[1] से हमें एक ऐसी वस्तु के लिये आदेश मिला है जिसकी हम व्यवस्था नही कर सकते।" मिया ताहा ने पूछा कि, "क्या बात है?" उत्तर मिला कि, "दासो को एक मोती दिखा कर यह आदेश (१३७) हुआ है कि इसी के समान एक मोती कही से ढूढ कर लाओ।" *मिया ताहा ने सुल्तान की सेवा* में उपस्थित होकर निवेदन किया कि, "जौहरियो को क्या आदेश हुआ है?" सुल्तान ने कहा कि, "मैने उन लोगो को एक मोती दिखा कर वैसा ही दूसरा मोती लाने का आदेश दिया है। वे इसे स्वीकार नही करते।" मिया ने कहा कि "दास को दिखाया जाय कि वह मोती कैसा है।" मोती मगवा कर मिया को दिखाया गया। मिया ने कहा कि, "यदि दास को आदेश दिया जाय तो वह कही से ढूढ कर ले आये।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "बहुत अच्छा।" मिया उसे अपने घर ले आया। दूसरे दिन जब वह अभिवादन हेतु गया तो वह दो मोती अपने साथ ले गया जिनमें एक ही प्रकार की चमक-दमक थी और जो एक ही प्रकार के थे। एक दूसरे में कोई अन्तर ज्ञात न होता था। मिया ने उसे दरबार में प्रस्तुत करके निवेदन किया कि, "बादशाह निरीक्षण के उपरान्त बता दें कि पुराना मोती कौन है।" सुल्तान ने यद्यपि बहुत देखा किन्तु वह पहचान न सका। उसने कहा कि, "कोई अन्तर ज्ञात नही होता। तुम्ही बताओ।" मिया ने एक मोती दिखा कर कहा कि, "यह प्राचीन है और इसे दास लाया है।" उसे जौहरियो के पास भेजा गया और उनको उस मोती के मूल्याकन करने का आदेश दिया गया। उन्होने निवेदन किया कि, "इसका मूल्य एक हजार सिकन्दरशाही तन्के हो सकता है।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "यह धन मिया ताहा के आदमियो को दे दिया जाय।" मिया ताहा ने निवेदन किया कि, "बादशाह के सौभाग्य से इस प्रकार के बहुत से मोती दास के पास है। मै इसका मूल्य न लूगा।" सुल्तान ने कहा कि, "यदि मूल्य न लोगे तो मै मोती भी न लूगा।" मिया ताहा ने कहा कि, "मुझे कुछ निवेदन करना है। यदि आदेश हो तो मै निवेदन करू।" सुल्तान ने कहा कि, "कहो।" मिया ने कहा कि, "यह मोती दास ने बनाया है। इसमें कुछ व्यय नही हुआ है अत क्या मूल्य लिया जाय।" बादशाह ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि, "इस बात का क्या प्रमाण है कि तूने बनाया है?" मिया ने कहा कि, "यदि सब लोग हट जाय तो मै निवेदन करूगा।" *जो लोग वहा थे वे हटा दिये गये। मिया ताहा ने वह मोती अबरक से बनाया था और* उसने उसका एक एक छिल्का निकाल कर सुल्तान को दिखा दिया।

मिया ताहा सोना तथा चादी रासायनिक क्रिया द्वारा बनाना जानता था। उसने अपने ख्वाजगी *को शपथ दे दी थी कि "इसका उल्लेख कही न करना।" सुलेख, नक्काशी तथा कैंची के काम में वह* अद्वितीय था। उसके समान इस कला में कोई व्यक्ति भी दक्ष न था।

मिया मारूफ फर्मुली

मिया मारूफ फर्मुली भी बडा अद्वितीय व्यक्ति था। वह बडा ही ज्ञानी, वीर तथा दानी था। (१३८) सुल्तान बहलोल के समय से लेकर इस्लाम शाह के राज्य-काल तक वह प्रत्येक रणक्षेत्र में उपस्थित रहा। उससे अच्छी तलवार कोई भी न चला सकता था। वह किसी बादशाह से कोई भी इनाम तथा दान न लेता था। उसने कभी किसी हिन्दू के घर भोजन न किया था। एक बार मिया हुसेन फर्मुली तथा अन्य अमीर चित्तौड के राणा के अतिथि हुए। राणा ने बडी नम्रता से मिया के समक्ष खडे होकर निवेदन किया कि, "अन्य अमीरो ने हमें सम्मानित करके हमारे यहा भोजन किया है। आप भी हमारे

[1] 'ब' के अनुसार 'बादशाह'।

ऊपर कृपा करके भोजन करें।" मिया ने कहा कि, "मैंने कभी किसी हिन्दू के घर भोजन नही किया है।" राणा ने कहा कि, "आप हमारे अतिथि होना स्वीकार करें।" मिया ने कहा कि, "मैंने आजीवन ऐसा कार्य नही किया है। मैं नही कर सकता।" मिया हुसेन ने अफ़ग़ान भाषा में कहा कि, "बहुत से कार्य आवश्यकतावश किये जाते हैं। आप समय को देखते हुए इसके साथ भोजन कर लें।" मिया ने कहा कि, "आप हमारे बुज़ुर्ग हैं, आप इसकी प्रसन्नता के लिए कार्य करें।" जब समस्त अमीरो तथा राणा ने आग्रह किया तो उसने थोडा सा भोजन दोनों अगुलियों से उठा कर रूमाल के कोने में बाध लिया और कहा कि, "खा लूँगा।" वहा से वापिस होकर उसने रूमाल में से भोजन खोल कर फेंक दिया।

उसने उस युद्ध में भी भाग लिया था जोकि शेरशाह तथा मालदेव में हुआ था। उस समय उसकी अवस्था १०७ वर्ष की थी। यह भी उसका एक चमत्कार था। जब शेरशाह ने उसके पास ३ लाख तन्के पुरस्कार स्वरूप भेजे तो उसने स्वीकार न किये और कहा कि, "मैंने कभी किसी बादशाह का दान स्वीकार नही किया है। मैं विशेष रूप से ईश्वर के लिए युद्ध करता हू।"

जब बाबर बादशाह देहली पहुचा तो वह सुल्तान बहादुर के पास गुजरात चला गया। एक दिन वह सुल्तान के पास बैठा हुआ था कि समुद्र से वस्त्रो तथा अन्य वस्तुओ के दो जहाज़ो के पहुचने के समाचार प्राप्त हुए। उस जहाज़ में जो वस्त्र तथा वस्तुयें थी वे एक एक करके सुल्तान बहादुर के समक्ष दिखाने के लिए लाई गईं। दोनो जहाज़ो के सामानो का मूल्य ७ करोड था। सुल्तान ने आदेश दिया कि, "दोनो जहाज़ मिया मारूफ के सेवको को दे दिये जाय।" मिया मारूफ ने कहा कि, "हे बादशाह! मैंने कभी किसी सुल्तान से कोई पेशकश स्वीकार नही किया। जब मैं कोई सेवा करूगा और जो मेरी वजह[1] होगी उसे म स्वीकार कर लूगा।" सुल्तान ने कहा कि, "यह धन मैं आतिथ्य सत्कार के रूप में देता हू।" मिया मारूफ ने कहा कि, "मैं किसी बादशाह का दान नही लेता।" सुल्तान बहादुर चुप हो गया। लोग उसके (१३९) विषय में यह कहते थे कि वह कीमिया[2] बनाना जानता था और धन के प्रति उसकी उपेक्षा का यही कारण था।[3]

बहलोल के राज्य-काल की एक व्यभिचारिणी की कहानी

(१७४) सुल्तान बहलोल के राज्य-काल मे एक सिपाही था, वह कहीं यात्रा हेतु जाने वाला था। यात्रा हेतु प्रस्थान करते समय उसने अपने पडोसी से आग्रह किया कि, "तुम कभी-कभी मेरे घर के विषय में पूछताछ कर लिया करना, सभवत किसी बात की कोई आवश्यकता पड जाय।" जब वह चला गया तो पडोसी कभी-कभी आकर पूछ जाता था कि, "यदि कोई कार्य हो तो बता दो।" पडोसी कभी-कभी उसके द्वार पर एक व्यक्ति को खडा देखता था। वह व्यक्ति पडोसी को देख कर हट जाता था। पडोसी ने सोचा कि "यदि यह व्यक्ति उसका सम्बन्धी होता तो फिर उसके होते हुए वह मुझसे क्यो सिफारिश करता और बाज़ार से कुछ लाने के लिए मुझसे क्यो कहता? यदि कोई अपरिचित व्यक्ति है तो फिर क्या यहा आता है? इस बात के सम्बन्ध में पता लगाना चाहिये।" पडोसी ने अपने घर में पहुच कर अपने घर की उस दीवार में जो उस व्यक्ति तथा अपने घर के बीच मे थी एक छेद कर दिया। वह उस

१ वेतन।

२ सोने-चादी के बनाने की क्रिया।

३ इस वाक्य के उपरान्त घर बादशाहों के इतिहास (पृ० १३६-१४५) तथा मालवा के बादशाहों के इतिहास (पृ० १४६-१७३) का उल्लेख है।

छेद से देखा करता था कि वह अपरिचित व्यक्ति उसके घर में आता जाता है। पडोसी ने सोचा कि उसके हृदय में कोई न कोई बुराई अवश्य है। एक रात्रि में वह व्यक्ति उस स्त्री के घर में पहुचा। स्त्री का पुत्र दूसरी चारपाई पर सो रहा था। वह जाग उठा और रोने लगा। स्त्री ने उठ कर उसे सुला दिया और फिर उस पुरुष के पास आ गई। कुछ समय उपरान्त वह बालक उठकर फिर रोने लगा। स्त्री ने जाकर उसका गला काट डाला। कुछ समय तक जब बालक न जागा तो पुरुष ने पूछा कि, "वह बालक बार-बार जागता था, बडी देर से वह नही जागा। इसका क्या कारण है ?" उसने कहा कि, "मैंने उसे अच्छी तरह सुला दिया है।" उस व्यक्ति ने जाकर देखा तो पता चला कि उसका गला कटा हुआ है। वह बडा भयभीत हुआ और उसने आकर कहा कि, "तूने कैसी दुष्टता प्रदर्शित की ! तेरे ऊपर विश्वास न करना चाहिये, कारण कि तूने अपने पुत्र का गला काट डाला है।" स्त्री ने कहा कि, "मैंने तेरे लिए अपने पुत्र की हत्या कर दी और तुझ पर उसे न्योछावर कर दिया, तेरा भी विश्वास मुझसे हट गया और पुत्र भी हाथ से गया। जो कुछ होना था वह हो गया किन्तु तू मुझे अपमानित मत होने दे। मैं इस लाश को घर ही में दफन किये देती हू। मैं समझती हू कि तेरा मुझसे प्रेम नही रहा, अब तू लौट कर न आयेगा। इसे दफन करने में तू मेरी सहायता कर, कारण कि मुझसे अकेले यह कार्य न हो सकेगा।" घर के भीतर से उसने कुदाल लाकर उसे दे दी। एक स्थान पर कब्र खोदी गई। उस व्यक्ति ने कब्र के पास खडे होकर लाश को लाने के लिए कहा और कुदाल कब्र के किनारे पर रख दी। स्त्री ने लाश उसे दे दी। उसने लाश को (१७५) कब्र में रखा। वह सिर झुकाये हुए ही था कि उस स्त्री ने दोनो हाथ में कुदाल पकड कर उस व्यक्ति के सिर पर इतनी जोर से प्रहार किया कि उसका भेजा बाहर निकल पडा और वह कब्र ही में पडा रह गया। तदुपरान्त उसने ऊपर से मिट्टी डाल दी और उसे बन्द कर दिया। पडोसी समस्त घटनाओ को अपनी आख से देखता रहा और इस कार्य पर आश्चर्य प्रकट करता रहा। उसने सोचा कि, "यदि मैं आज इस कार्य की सूचना कर दूंगा तो यह मुझे भी कष्ट पहुचायेगी। जब इसका पति आये तभी उससे यह बात कहू।"

प्रात काल उस स्त्री ने रोना-चिल्लाना प्रारम्भ कर दिया कि "मेरे पुत्र को भेडिया उठा ले गया।" जब उसका पति यात्रा से आया तो उसके सम्बन्धी समवेदना प्रकट करने के लिए उपस्थित हुए। यह पडोसी भी पहुचा और देर तक बैठा रहा। जब लोग लौट गये तो उस पडोसी ने कहा कि, "मैंने तेरे पुत्र की मृत्यु का जो हाल अपनी आखो से देखा है वह कह रहा हूं। तू जो कुछ भी कर सकता हो कर अन्यथा इसमें तेरे प्राणो का भय है।" उस व्यक्ति ने पूछा कि, "क्या बात है ?" उस व्यक्ति ने उस आदमी को अपने घर ले जाकर उस छेद में से वह स्थान दिखाया जहा वह बालक दफन किया गया था और कहा कि, "जाकर यदि तू उस स्थान को किसी बहाने से खोद सकता है तो खोद ले। जो बात होगी वह प्रकट हो जायेगी।" वह व्यक्ति घर के भीतर जाकर भूमि की ओर देखने लगा। स्त्री ने पूछा कि, 'क्या देखता है, क्या कोई चीज़ खो गई है ?" उस व्यक्ति ने कहा कि "हा, इस स्थान पर मैंने एक चीज़ भूमि में गाड दी थी और अब मैं उस स्थान को भूल गया हू। यदि कुदाल हो तो मैं उसे खोद कर देखूं।" स्त्री ने कहा कि, "कुदाल कोठरी में है जा कर ले आ।" वह व्यक्ति कोठरी में चला गया। स्त्री ने द्वार बन्द कर लिया और ताला चढा दिया तथा घर में आग लगा दी, यहा तक कि वह व्यक्ति जल गया। पडोसी ने सामाना के आमिल[1] के पास पहुचकर उससे समस्त घटना का उल्लेख किया। वहा से वह प्यादो को ले आया।

1 हाकिम।

उन लोगों ने सर्व प्रथम उस व्यक्ति को देखा जो कोठरी में था। तदुपरान्त उन्होंने कब्र खोदी उसमें युवक तथा बालक दोनो निकले। उस अभागी स्त्री को वे लोग बन्दी बनाकर ले गये और उसकी हत्या कर दी।[1]

डाकुओ की सहायक स्त्री की कहानी

(१७८) सुल्तान सिकन्दर के राज्य-काल में एक घटना के विषय में हुसेन खा शिरवानी, जो मिया सुलेमानी सनपथी का पुत्र था, कहा करता था कि, "मै लखनऊ की विलायत में यात्रा कर रहा था। मैं एक ऐसे स्थान पर पहुचा जहा एक रूपवती अपने मुख को छिपाये हुए रो रही थी। मैंने पूछा कि, 'तू कौन है और यहा क्यो रो रही है ?' उसने कहा कि, 'मै अपने पति के घर से रुष्ट होकर निकल खडी हुई हू। अब इस समय जब कि दिन निकल आया है मुझे न अपने पति के घर का मार्ग ज्ञात है और न पिता के। मै विवश होकर रो रही हू कि सभवत कोई मेरी सहायता करे और मुझे मेरे पिता के घर जो अमुक ग्राम में है पहुचा दे, वह ग्राम मार्ग पर है। मै अपने पति के घर नही जाना चाहती, सभव है कोई व्यक्ति मुझे मेरे पिता के घर पहुचा दे।" हुसेन खा ने कहा, "यदि तू पैदल चल सकती है तो उठ खडी हो।" उसने कहा कि, "रात्रि में मैंने बडी यात्रा की है। अब मैं पैदल नही चल सकती।" हुसेन खा ने कहा कि, "अच्छा मेरे पीछे सवार हो जा" और उसने हाथ पकड कर उसे सवार कर दिया। थोडी सी यात्रा के उपरान्त स्त्री ने पूछा कि, 'आप पान खाते हैं ?" हुसेन खा ने पूछा कि, "पान कहा है ?" उसने उत्तर दिया कि, "मेरे पास है।" और बीडे को बगल से निकाल कर हुसेन खा के हाथ में दे दिया। हुसेन खा ने सोचा कि पता नही इस बीडे में क्या हो, उसने उसे न खाया और उसे बगल में रख लिया। जैसे ही उसने बीडा बगल में रखा वह असावधान हो गया। स्त्री ने अपने हाथ में लगाम लेकर उसे निश्चित स्थान पर पहुचा दिया। जब वह वहा पहुची तो जो डाकू वहा उपस्थित थे वे हुसेन खा के समक्ष आ गये और उसे घोडे से उतार लिया। जब उन्होंने निपग तथा तलवार उसकी कमर से खोली तो पान का वह बीडा भूमि पर गिर पडा। वह सावधान हो गया और उसने घोडे के ऊपर से खाडा जो उसने ज़ीन में लगा रक्खा था निकाल लिया। वे लोग भाग खडे हुए। वह शीघ्र ही घोडे पर सवार हो गया और उस स्त्री को घोडे की दुम में बाध कर ले जाने लगा। यहा तक कि वह अपनी मजिल पर पहुच गया। यह स्त्री बडी ही रूपवान् थी अत उसने उसे अपने पास रख लिया और उसकी हत्या न कराई। जिन दिनो उसने लेखक को यह कहानी सुनाई थी वह स्त्री उसके अन्त पुर में थी।

डाकुओ की सहायक एक वृद्धा की कहानी

सुल्तान इब्राहीम के राज्य-काल में सिकन्दर नामक एक युवक चन्दौस कस्बे के समीप जा रहा था। सूर्य चढ चुका था। मार्ग में एक वृक्ष था। वह उसकी छाया में खडा हो गया। एक वृद्धा भी उस वृक्ष के नीचे थी। उसने युवक से कहा कि, "तेरी पगडी में तिनका है। यदि तू कहे तो मैं निकाल दूँ।" उसने कहा कि, "बहुत अच्छा" और सिर को झुका लिया। उस वृद्धा ने उसके सिर में कोई वस्तु रख दी जिससे उसकी चेतना का अन्त हो गया और वह उस स्त्री के पीछे-पीछे घोडे पर बैठ कर यात्रा करने लगा यहा तक कि वह एक जगल में पहुच गया। जो लोग उस स्त्री के सहायक थे वे दौडते हुए वहा पहुच गये। इसी बीच में इस युवक की पगडी वृक्ष की डाली में उलझ कर सिर से गिर पडी। वह सावधान हो गया।

1 पृ० १७५ से १७८ तक इस्लाम शाह के राज्य काल की विभिन्न कहानियों का उल्लेख है।

उसने देखा कि कुछ दुष्ट तलवार खीचे हुए उसकी ओर आ रहे हैं। जब उसने यह देखा तो धनुष-बाण निकाल लिये। वे लोग भाग खडे हुए। वह वृद्धा को बाध कर चन्दौस ले आया और बाजार में कुन्दे[1] में किया और दारोगा को सौप कर वहा से चला गया।[2] ..

जोधपुर मे एक जादूगर का चमत्कार

(१८४) कहा जाता है कि जोधपुर में भूतकाल में एक जादूगर पहुचा और उसने जोधपुर के राय के समक्ष कुछ जादू दिखाना प्रारम्भ किया और कहा कि, "आप जिस प्रकार के उद्यान का आदेश दें उसे मैं एक दिन में तैयार कर दूंगा। वृक्ष बढकर बडे हो जायेंगे और उनमें फल आने लगेंगे और उस फल को सभी खा सकेंगे।" उद्यान के लिए एक स्थान निश्चित किया गया। हल चलाने वालो को आदेश दिया गया कि वे हल चलाना प्रारम्भ करें। खेत बराबर किया गया। इस खेत के चारो ओर शिविर लग गये। जोधपुर का राय शिविरो के बाहर बैठ गया। वह जादूगर शिविर के भीतर चला गया और राय से पूछने लगा कि "कौन सा वृक्ष लगाऊ?" राय के दिल में जो नाम आया वह उससे कहने लगा। यहा तक कि उद्यान पूरा हो गया और खेती भी पूर्ण हो गई। लोगों ने देखा कि एक पूरा तथा सुसज्जित उद्यान लगा हुआ है और उसमें मेवे के वृक्ष लगे हुए हैं। राय ने सोचा कि, "यह जादू का उद्यान है वह जब चाहेगा इसका अन्त कर देगा।" उसने सोचा कि, "यदि इसकी हत्या कर दी जाय तो यह उद्यान जोधपुर ही में रह जायगा। ऐसा उद्यान न तो किसी ने देखा है और न किसी को इसका ज्ञान है।"

मैंने सुना है कि जादूगर का पुत्र अपने घर में था। जब वह बडा हुआ तो उसने अपने पिता की मृत्यु का हाल सुना और उसे पता चला कि उसका पिता जोधपुर में मार डाला गया। वह अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए चल खडा हुआ और जोधपुर में पहुच कर उसने यह समाचार प्रसारित किये कि, "एक जादूगर आया है जो कहता है कि यदि राय का आदेश हो तो मैं बिना फस्ल का खरबूजा खिला सकता हू। एक दिन में उसे बो दूंगा और दूसरे दिन उसमें ऐसे पके फल निकल आयेंगे कि लोग खा सकें।" राय ने आदेश दिया कि, "एक खेत इस प्रकार का तैयार किया जाय।" शाही शिविर लग गये। उसने खरबूजे उपस्थित किये और दरबारियो से कहा कि वे सब एक-एक चाकू तथा एक-एक रकाबी ले लें। हर एक के समक्ष खरबूजे रख दिये गये और उसने कहा कि, "जब मैं कहू तो इन खरबूजो को सब एक साथ चाकू से काटें और काटने में किसी प्रकार का कोई अन्तर न होना चाहिये।" उसने अपने सब साथियो को विदा कर दिया और उनसे कह दिया कि, "मैं इन लोगो की दृष्टि से लुप्त हो सकता हू।" अपने मित्रो को विदा करके वह दरबारियो के समक्ष आया और कहा कि, "आप लोग चाकू तथा खरबूजा अपने हाथ में लेकर एक साथ काटें।" सभी का सिर एक साथ कट गया और वह सब के समक्ष से लुप्त हो गया।[3] ..

ग्वाले की प्रेम कथा

(१८५) सुना जाता है कि सुल्तान बहलोल के राज्य-काल के प्रारम्भ में जब अफगान हिन्दुस्तान में आये तो यह घटना घटी कि कन्नौज के अधीनस्थ नीमखार कस्बे के निकट अफगानो ने एक ग्राम पर

१ दड की एक विधि जिसमें मनुष्य को लकडी के दो बडे चपटे टुकडों में रख कर दड दिया जाता था।
२ शेरशाह तथा मन्दू के बादशाहों के राज्य काल की कुछ विभिन्न कहानियां हैं।
३ इसके बाद हुमायूं के राज्य काल की एक कहानी है।

आक्रमण किया। कुछ लोगो की हत्या कर दी और कुछ को वन्दी वना लिया। एक दिन ख्वाजा खा किसी स्थान पर जा रहा था। वर्षा ऋतु थी। वर्षा प्रारम्भ हो गई। ख्वाजा ने एक वृक्ष के नीचे शरण ली। उस वृक्ष के निकट एक ग्वाला अपनी भैस को दुह रहा था। उसकी पत्नी वर्षा में उसके ऊपर कपडे की छाया किये हुए थी। वह व्यक्ति मना करता था और कहता था कि, "वर्षा से मुझे कोई हानि नही (१८६) पहुचेगी तू अपने वस्त्र को क्यो भिगाती है।" स्त्री ने कहा कि "यद्यपि तुझे कोई हानि न पहुचेगी फिर भी मैं तेरे शरीर की इतनी हानि भी नही देख सकती।" उसने कहा कि, "ईश्वर को धन्य है, एक दिन वह था और एक दिन यह है कि वर्षा की बूँद भी तू मेरे शरीर पर नही देख सकती और उस समय मुझे इतना कष्ट पहुचाती थी।" स्त्री ने कहा कि, "तू अभी तक उस बात को नही भूला।" पुरुष ने कहा कि, "जब तक मैं जीवित रहूगा उस घटना को नही भूल सकता।" ख्वाजा खा ने यह बात सुनकर पूछा कि, "क्या बात है मुझे बताओ।" ग्वाले ने कहा कि, "यह कहानी ऐसी नही है कि इस स्थान पर बताई जा सके। यदि आज रात्रि में तू यहा ठहर जाय तो मैं तुझे बताऊ।" ख्वाजा ने कहा कि, "मुझे इस कहानी के सुनने की इच्छा है। आज मै यही ठहर जाऊगा और जब तक कहानी न सुन लूँगा न जाऊगा।" स्त्री ने कहा कि, "एक तो यह पागल था ही और मैं समझती हू कि अब तू इससे अधिक पागल है। तू जहा जा रहा हो वहा जा। तुझे इस वार्ता से क्या मतलब है?" उसके पति ने कहा कि, "इस कहानी को सुनना ही चाहिए। आज तू इस स्थान पर ठहर। जो नमक रोटी होगी वह मैं उपस्थित करूगा, कल तुझे जहा जाना हो वहा चले जाना।" वह ख्वाजा को अपने घर ले गया और उसने उसे एक स्थान दिया। उसके घोडे को एक स्थान पर बाध दिया और स्वयं विदा हो गया। रात्रि में जब वह अपने घर आया तो आतिथ्य सत्कार में व्यस्त हो गया। सोते समय वह अपनी चारपाई को अतिथि के पास लाया। थोडी सी रात्रि व्यतीत हो जाने के उपरान्त उसने अपनी कहानी कहनी प्रारम्भ की और बताया कि, "एक बार सुल्तान बहलोल की सेना ने कन्नौज की विलायत पर आक्रमण किया। हम लोगों का ग्राम नीमखार परगने में था। मेरे ग्राम को भी नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया। मैं ग्वालिन के साथ कही गया था और ग्राम में न था। मुझे सूचना मिली कि सब लोग वन्दी बना लिए गये। मेरे पडोस मे एक बक्काल का घर था। मैं इस स्त्री को जो आज मेरे घर में है और बक्काल की पुत्री है बडा प्रिय रखता था और इस पर आसक्त था, किन्तु मेरे प्रेम का कोई स्वार्थ न था। जब उसे लोग वन्दी बना ले गये तो मैं इसके वियोग में पागल होकर योगी (१८७) बन गया और घर से निकल खडा हुआ तथा इसके विषय में पता लगाने लगा।" इसी बीच में उस स्त्री ने घर के भीतर से पुकारा कि, "हे पुरुष! वह मूर्ख तो पागल हो गया है, तुझे क्या हो गया है?" उसके पति ने उसे फिर मना किया और कहा कि, "जा अब तुझसे कौन पूछता है।" उसके पति ने बताया कि, "घर से निकलने के उपरान्त कोई नगर अथवा ग्राम ऐसा न था जहा मैंने प्रत्येक घर में इसके विषय में पूछताछ न की हो। जहा मैं पहुचता था वहा मैं उसके विषय में पूछताछ किया करता था। अचानक मैं एक अफगान के घर पहुचा। मैंने देखा कि अफगान बैठा है और यह स्त्री उसके समक्ष बैठी हुई चावल साफ कर रही है। मैंने योगियो की भाति पुकारा। स्त्री ने मेरी आवाज़ पहचान ली और मेरी ओर मुख करके देखा तथा अपने कार्य में व्यस्त हो गई। उस अफगान ने कहा कि, 'जाकर भिखारी को कुछ दे दे।' यह उठ कर थोडा सा चावल लेकर मेरे पास आई। जब यह मेरे पास आई तो मैंने धीरे से इससे कहा कि, 'अब तू मुझे मिल गई है मैं कहा जाऊ। या तो मैं तुझे ले जाऊगा या अपने प्राण त्याग दूँगा।' इस स्त्री ने कुछ न कहा और जाकर अपने कार्य में लग गई। मैं उसी प्रकार खडा रहा और वहा से जाना भूल गया। किसी ने कहा कि 'वह योगी अभी खडा हुआ है।' स्त्री ने कहा कि 'यह योगी नही है हराम-खोर है मुझे भगाने आया है।' अफगान कोठे पर था। वह इस बात को सुन कर कोठे से उतर आया।

में उसी प्रकार खड़ा देख रहा था कि उसने अपने आदमियो से कहा कि, 'इसे बाध लो।' वे जितना मुझे मार सकते थे उतना उन्होंने मारा और मुझे मुर्दा समझ कर घर के बाहर गली में फिकवा दिया। चार दिन उपरान्त मैंने आख खोली, किन्तु मैं उठ न सकता था। जो लोग मार्ग पर जाते रहते थे उन्होंने मेरे ऊपर कृपा-दृष्टि करके मुझे कुछ भोजन तथा जल दिया। कुछ समय उपरान्त मैं थोडा बहुत चल लेने लगा। उस अफगान की पायगाह[1] निकट थी। मैं उसकी पायगाह में पहुचा और वहा पडा रहता था। जब मैं कुछ चल फिर लेने लगा तो घोडो की सेवा करने लगा। घोडों के लिए दाना मिलाया करता था। साईस लोग भी मेरे प्रति कृपा करते थे और मैं एक कोने में बैठा रहता था। रात भर मैं घोडों का पहरा दिया करता था। सब लोगो ने मिल कर कहा कि 'यह बडा अच्छा सेवक है और रात भर पहरा देता है।' अन्त (१८८) में यह अफगान भी कृपा प्रदर्शित करने लगा और उसने कहा कि, 'यदि यह सेवक है तो इसे कोई कार्य दे दिया जाय। यह घोडियो की रक्षा करता रहे। जहा उन्हें भोजन दिया जाता है वहा ले जाकर बाधा तथा खोला करे।' घोडियों के लिए घर के भीतर एक स्थान था। मैं वहा नित्य प्रति उनको बाधने तथा खोलने जाया करता था और इस बहाने से देर तक वहा ठहर कर इस स्त्री के दर्शन किया करता था। एक दिन इस स्त्री को अपने निकट देख कर मैंने इससे कहा कि, 'अपने हृदय से यह बात निकाल दे। मैं जब तक जीवित रहूगा तुझे न छोडूंगा। या तो तुझे ले जाऊगा या अपने प्राण त्याग दूंगा।' इस स्त्री ने अपने पति से फिर कहा कि 'यह धूर्त मुझे भगाना चाहता है।' अफगान ने, जो मेरा कार्य देख चुका था, मेरा पक्ष लिया और कहा कि, 'जब तक तू न भागेगी तुझे कोई नही भगा सकता।' इससे मुझे कुछ प्रोत्साहन मिला। मैं रात भर उसके घर के चारो ओर पहरा दिया करता था। उसने मुझे वस्त्र तथा अस्त्रशस्त्र प्रदान किये। घोडियो की देख-रेख अन्य व्यक्ति के सिपुर्द कर दी। वह मुझे अपने द्वार पर रखने लगा और मेरे द्वारा क्रय-विक्रय कराने लगा। मुझे उसने अपने घोडो का मीर आखुर[2] नियुक्त कर दिया और मैं उसका विश्वासपात्र हो गया। जब कभी मैं इसे अपने निकट देखता था इससे यही कहता था कि, 'तू मेरे पास से कहा जाती है, यदि मैं जीवित रहा तो तू मेरे ही पास रहेगी।' यह उत्तर न देती थी और शत्रुता प्रदर्शित करती थी और कोई भी इसकी बात को स्वीकार न करता था। आज यह मेरे शरीर पर वर्षा की कुछ बूंदें नही देख सकी तो मैंने इसे उस दिन की स्मृति दिलाई और कहा कि ईश्वर को धन्य है कि एक दिन वह था जब कि मेरे ऊपर इतना अत्याचार करती थी और एक दिन यह है।' अन्त में जब मेरे प्रति विश्वास बढ गया तो समस्त कार्य मेरे सिपुर्द हो गये।

"२ वर्ष उपरान्त सुल्तान बहलोल ने पुन पूर्व की ओर प्रस्थान किया। यह अफगान भी सेना के साथ गया। जब वह वहा पहुचा तो उसने इस स्त्री को भी अपने पास बुलवाया और मुझे लिखा कि 'उसे अपने साथ ले आ। अमुक घोडा स्त्री के लिए और अमुक घोडा तेरे लिए है।' शिविर तथा अन्य वस्तुयें निश्चित कर दी और लिखा कि, 'कुछ प्यादों को अपने साथ ले आ' मैं उसे अपने साथ लेकर चल खडा हुआ। मार्ग में भी मैं इससे यही बात कहता जाता था, यहा तक कि मैं सेना के निकट पहुच गया। सब (१८९) लोगो ने यह निश्चय किया कि 'रात्रि में यहीं पडाव करना चाहिये, प्रात काल सेना में जायगे।' सेना वहां से ३, ४ कोस पर थी। प्रात काल सब लोगो ने वहा से प्रस्थान किया, मैंने रात्रि में शिविर उतरवा कर समस्त व्यवस्था कराई। प्रात काल मैंने इसे सवार किया और स्वय सवार हुआ। मैं जिस

१ अश्वशाला।
२ मुख्य देख रेख करने वाला।

मार्ग पर जाना चाहता था उस मार्ग पर चल दिया। प्यादे तथा बैल सेना में पहुच गये। अफ़ग़ान ने पूछा कि, 'अमुक व्यक्ति तथा स्त्री कहा है?' उन्होंने कहा कि, 'पीछे आ रहे हैं।' कुछ देर तक उसने प्रतीक्षा की। जब हमारे पहुचने में विलम्ब हुआ तो उसने पूछा कि, 'रात्रि में इस स्थान से कितने कोस पर उसने पडाव किया था?' लोगों ने कहा कि '३ कोस होगा।' उसने कहा कि 'फिर इतना विलम्ब क्यो हुआ। तुम लोग और वे क्या साथ ही रवाना हुए थे?' उन्होने उत्तर दिया कि, 'उसने हमें पहले ही भज दिया था और स्वय घोडे पर ज़ीन लगाने लगा था।' अफगान ने कहा कि 'वह अवश्य ही भाग गया होगा।' घोडे को भगाकर वह २ घडी दिन उपरान्त हमारे समीप पहुच गया और बडे ज़ोर से चिल्लाया। मैं सोच रहा था कि जब वह आयेगा तो ऐसा-ऐसा करूगा। जब मैंने उसका नारा सुना तो अपना हिसाब भूल गया। उसने मेरे समीप पहुच कर मुझे कई कोडे मारे और घोडे से उतार कर मेरे हाथो को रस्सी से बाघ कर एक वृक्ष के नीचे पहुचा। स्वय घोडे से उतर कर उसने घोडे को एक स्थान पर बाध दिया और मुझ एक डाल में लटका दिया। स्त्री ने कहा कि, 'मैं तुझसे जो कहती थी वह तू स्वीकार न करता था।' अफ़ग़ान ने उत्तर दिया कि, 'अब देख मैं क्या करता हू।' उसके कुछ ज्वर था। उसने थोडी सी मिश्री निकाल कर सुराही से जल लिया और कटोरे में शर्बत बनाकर थोडा सा शर्बत पिया। कटोरे में थोडा सा शर्बत छोड कर पगडी उतार दी। इस स्त्री के जानू पर सिर रखकर लेट गया। स्त्री उसके सिर को खुजलाने लगी। अफगान सो गया। मैं उसी प्रकार लटका रहा और ईश्वर की ओर देखता रहा। मैंने देखा कि वृक्ष पर एक काला नाग चक्कर लगा रहा है। मैंने दिल में सोचा कि ईश्वर इस नाग को आदेश देता कि वह मुझे खा जाता और मैं इस कष्ट से मुक्त हो जाता। वह नाग डालियो पर होता हुआ नीचे (१९०) उतरा और मेरे शरीर पर से होता हुआ भूमि पर उतरा। कटोरे में से उसने शर्बत पिया और अपना विष उस कटोरे में डाल दिया। किसी को इस बात की सूचना न थी। मैं इस घटना को देख रहा था। सर्प मेरे शरीर पर से होता हुआ वापस लौट गया। अफगान जब सोकर उठा तो उसने पुन शर्बत पिया और सो गया। जब वह पुन जागा तो उसने स्त्री से कहा कि, 'मुझे ज्वर चढ रहा है और मेरी आखो में आग जल रही है।' इसने कहा कि,'तू घोडे को भगाता हुआ आ रहा है यह गर्मी उसी कारण होगी।' शष शर्बत जो रह गया था वह उसे पी गया और कहने लगा कि 'मेरी आखो के सामने अँधेरा छा रहा है और मेरा सीना तथा गला जल रहा है। मैं अपनी दशा अच्छी नही देखता।' यह कह कर उसने तलवार निकाल ली और उठ कर मेरे पास आया। जब वह मेरे समीप पहुचा तो उसने मुझे तलवार मारी। रस्सी कट गई और मैं गिर पडा। उस तलवार द्वारा मुझे कोई हानि न हुई। उसकी मृत्यु हो गई। इस स्त्री ने कहा कि, 'जो कुछ ईश्वर चाहता है वह अवश्य होता है। अब यहा से शीघ्र चल दे और विलम्ब मत कर।' हम लोग उठ कर चल दिये।"

फ़िरिश्तो की कहानी

बन्दगी मिया ख्वाजगी से मैंने यह कथा सुनी है। उन्होने एक व्यापारी से सुनी थी, जिसने इस घटना का उल्लेख किया था। वह कहता था कि, "मैं एक जहाज़ पर सवार था। अचानक समुद्र में तूफ़ान आ गया और वह जहाज़ जल में डूब गया। मैं जल में पहुच कर एक लहर से दूसरी लहर पर पहुचता हुआ दूसरे दिन एक द्वीप में पहुचा। वहा जिन लोगो ने मुझे देखा उन्होने दौड कर मुझे बन्दी बना लिया। वे मुझे किले में ले गये और मेरी रक्षा करने लगे। मैं भी थोडे ही दिनो में उनका मित्र हो गया और उस स्थान पर भ्रमण किया करता था। मैंने देखा कि वहा कई हज़ार घर थे जहा लोग लोहे के अस्त्र-शस्त्र इत्यादि बनाते थे। कोई घर ऐसा न था जहा लोगो का यह व्यवसाय न हो। मैंने सोचा कि

'ये लोग यह कार्य किसके लिए करते हैं ?' मैंने एक दिन एक व्यक्ति से जिसके घर में मैं था पूछा कि, 'तुम (१९१) सब लोग लोहारी का पेशा करते हो किन्तु कोई व्यक्ति ऐसा नही दृष्टिगत होता जो इन वस्तुओ को मोल ले।' उन्होंने बताया कि 'हम लोग साल भर यही कार्य करते रहते हैं। प्रत्येक वर्ष व्यापारियो का एक जहाज आता है। हमें जिन वस्तुओं की आवश्यकता होती है उन्हें हम उनसे ले लेते हैं और हम जौशन तथा अस्त्र-शस्त्र उन्हें दे देते हैं।' मैंने उनसे कहा कि, 'जब वह व्यापारी आयें तो उनसे मेरी सिफारिश कर देना कि मुझे खुश्की पर पहुचा दें। वहा से यदि मेरे भाग्य में होगा तो मैं किसी स्थान को पहुच जाऊगा।' उन्होंने कहा कि, 'बहुत अच्छा।' जब उनके आने का समय आया तो लोग कोट पर चढ कर देखने लगे। एक दिन यह प्रसिद्ध हुआ कि जहाज आ गया। मैं भी ऊंचाई पर पहुचा। मैंने देखा कि लोग आ रहे हैं। मैं उस किले के नीचे पहुचा। वे लोग उनके स्वागतार्थ गये और जो व्यक्ति जिसे पहचानता था वह उसे अपने घर ले गया और उसे ठहराया। तदुपरान्त नित्य प्रति क्रय-विक्रय होने लगा। यहा तक कि वे निश्चिन्त होकर जाने की योजनायें बनाने लगे। मैंने अपने मित्र से कहा कि, "हमारी सिफारिश उन लोगों से कर दो।" उसने अपने अतिथि से कहा कि, 'यह यात्री तूफान की दुर्घटना के कारण यहा पहुच गया है और चाहता है कि तुम लोगों के साथ खुश्की में किसी स्थान पर पहुच जाय।' उनमें से एक व्यक्ति राजी हो गया। दूसरे व्यक्ति ने कहा कि, 'हम किसी अन्य व्यक्ति को अपने साथ नही ले जाते।' उसके अतिथि ने कहा कि, 'हम तुझे इस शर्त पर ले जा सकते हैं कि तू चुपचाप बैठा रहे और हमसे कुछ मत पूछे।' मैंने प्रतिज्ञा की कि, 'मैं ऐसा ही करूगा'। जहाज वहा से चल खडा हुआ। दो दिन तक मैंने कोई विचित्र बात न देखी। तीसरे दिन उन्होंने जो कुछ जहाज पर लदा था उसे फेंकना प्रारम्भ कर दिया। मुझे बडा आश्चर्य हुआ और मैं चुप न रह सका। मैंने कहा कि, 'तुम लोग इतना कष्ट भोग कर इस स्थान पर आये और इन वस्तुओ को क्रय किया और इस समय जब कि कोई विपत्ति नही है अपना धन क्यो नष्ट कर रहे हो ?' जो व्यक्ति मना कर रहा था उसने अपने दूसरे साथी से कहा कि, 'मैं नही कहता था कि यह व्यक्ति हम लोगो के समूह से सम्बन्धित नही है। यह हमारा साथ न दे सकेगा, तूने इसे अपने साथ ले लिया।' मैंने कहा कि, 'अब मैं कुछ न पूछूंगा।'

"दूसरे दिन वे लोग फिर अपना सामान फेंकने लगे। मैं इसे न देख सका और मैंने अपने मित्र से कहा कि, 'मेरा हृदय उस समय तक जलता रहेगा जब तक मैं इस रहस्य से अवगत न हो जाऊँगा।' उसने (१९२) कहा कि, 'तू सतुष्ट रह। जिस दिन हम लोग विदा होगे उस दिन तुझे सब हाल बता देंगे।' दो तीन दिन तक वे यही कार्य करते रहे। जब उन्होंने अपना समस्त सामान जल में फेंक दिया तो मुझसे कहा कि 'आज हम तुझे विदा करते हैं।' मैंने पूछा कि, 'यह क्या बात थी ?' उन लोगो ने उत्तर दिया कि, 'हम लोग फिरिश्ते हैं। इन लोगो की जीविका के सम्बन्ध में हमें आदेश हुआ है; हम इस बहाने से इन्हें रोजी देते हैं, हम इन वस्तुओ का व्यापार नही करते।' यह कह कर उन्होंने आदेश दिया कि मैं आख बन्द कर लूँ। जब मैंने अपनी आखें बन्द की तो मेरे पाव भूमि पर थे। और जब मैंने आखें खोल कर देखा तो पता चला कि मैं भूमि पर हू।"

एक विचित्र द्वीप

मैंने मिया ख्वाजगी से सुना है कि एक बार एक जहाज तूफान के कारण एक कोने में पहुच गया और बहुत समय तक वह उसी अवस्था में रहा। उन लोगो के जल के भण्डार का अन्त हो गया। अचानक वे एक द्वीप में पहुचे। उस द्वीप के लोग उनके पास आये, उन लोगो के घोडो के समान दुमें थी। उन्होंने अपने बादशाह को जहाज की सूचना पहुचाई। बादशाह स्वय पहुचा। उसकी दुम जवाहरात की थी

और उसके सेवक उसे दोनो हाथ से पकडे पीछे-पीछे आ रहे थे। जहाज़ वालो ने बादशाह के समक्ष पेशकश प्रस्तुत करके अभिवादन किया। उसने उन लोगो से आने का उद्देश्य पूछा। समुद्र के कोनो पर जो टापू है वहा लोग बहुत कम जाते हैं और उन लोगो को (अन्य लोगो की) भाषा का ज्ञान नही होता। वहा यह प्रथा है कि दलाल लोग पुस्तकें रखते हैं जिनमें विभिन्न स्थानो के लोगो की भाषायें लिखी रहती हैं। वे लोगों को भाषा सिखाते हैं। जब व्यापारी आते हैं तो वे उनके उद्देश्य का पता लगा कर अपनी भाषा में बादशाह को बताते हैं। उन लोगा (दलालो) ने बताया कि, "इन्हें जल की आवश्यकता है और ये लोग इतना उपहार प्रस्तुत कर रहे हैं।" बादशाह ने आदेश दिया कि जल दे दिया जाय। कुछ लोग उनके साथ हो लिये और उन्हें जगल में ले गये और कहा कि, "जल ले लो।" उन लोगो ने पूछा कि, "जल कहा है?" उत्तर मिला कि, "आगे आओ।" जब वे आगे बढे तो उन्हें छोटे-छोटे वृक्ष मिले जिनके पत्ते थैलो के समान थे। पूरा जगल इन्ही वृक्षो से भरा हुआ था और सभी पत्ते जल से भरे हुए थे। जल ऐसा सुन्दर तथा मीठा था कि किसी ने ऐसा जल कभी न देखा था और न पिया था। जितने जल की उन्हें आवश्यकता थी उतना जल उन्होने ले लिया। जहाज़ वाला ने पूछा कि, "तुम लोग जल कहा से पीते हो?" उत्तर (१९३) मिला कि "उसी स्थान से।" जहाज़ वालो ने पूछा कि, "इन पत्तियो में जल रखने का क्या कारण है?" उत्तर मिला कि, "यह ईश्वर की लीला है। यहा कही भी जल नही मिलता और यदि कहीं मिलता है तो वह समुद्र के जल से भी अधिक खारा होता है। अत ईश्वर ने हमे इस प्रकार जल प्रदान कर दिया है। जब हमें जल की आवश्यकता होती है तो हम आकर यही से जल ले जाते हैं। कोई ऐसा समय नही होता जब कि हमें जल न मिले।"

मिया वलीद

मैंने मिया वलीद के विषय में सुना है और उन्हें अपनी आख से देखा है। वह सिपाहियो की प्रथा के अनुसार जीवन व्यतीत करता था। वह लाद खा सारगखानो का सेवक था। सैन्य-कला में उससे बढकर मैंने कोई व्यक्ति नही देखा। वह अपने सम्बन्धियो, परिचित तथा अपरिचित लोगों से एक ही प्रकार का व्यवहार करता था। वह अपना समस्त समय ईश्वर की उपासना में व्यतीत करता था। उसे किसी वस्तु से कोई विशेष लगाव न था, किन्तु उसे सभी बातो की योग्यता प्राप्त थी। सिपाहियों के समान वस्त्र धारण करता था। सोने के समय उत्तम वस्त्र पहनता था। मैंने उसे कभी पलग पर सोते हुए नही देखा। यह तुच्छ अधिकाश उसके साथ रहा करता था। वह आधी रात तक जागता रहता था और अपने कार्यों में व्यस्त रहता था। आधी रात के समय वह नमाज पढता था और उसी स्थान पर सो जाता था। जब एक घडी रात रह जाती तो वह उठ कर स्नान करता और ईश्वर के ध्यान में लीन हो जाता था। जो लोग उसके सेवक थे वे दिन में अधिकाश समय तक उसके पास बैठे रहते थे। वह उन्हें नाना प्रकार से दान दिया करता था। कोई समय ऐसा व्यतीत न होता था जब कि उसका घर अतिथियो से रिक्त हो और बाह्य रूप से वह इतना व्यय करता था कि लोग उसे कीमिया[1] बनाने वाला कहते थे। वह बडा कुशल (१९४) कारीगर था। वह हर महीने एक अथवा दो मन ऊद[2] क्रय करता था और १४ तैयार कराता था।[3] नाना प्रकार की सुगधिया उसके घर में उपलब्ध रहती थी। व्यापारी उत्तम प्रकार की जितनी सुगधिया तथा अन्य प्रकार की वस्तुयें लाते थे उनकी सूचना उसे कर देते थे। जो चीजें उसे पसद आती

१ रासायनिक विधि से सोना बनाने वाला।
२ अगर।
३ इसका अर्थ स्पष्ट नहीं।

वह सर्व प्रथम उन्हें क्रय कर लेता। तदुपरान्त वह उन्हें अपने साथियो को बेचने के लिए दे देता था, उनसे उनका उचित मूल्य ले लेता था। वे लोग जो कुछ उसमें मिलावट अथवा जाल करते थे और उससे जो लाभ होता था उसे वे ले लेते थे। वह स्वय मूल वस्तु का मूल्य ले लेता था।

वह बिल्लौर का पत्थर क्रय करके उन्हें पत्थरो पर पालिश करने वालो को दे दिया करता था, जो उसके घर मे रहा करते थे; वे उनसे चीज़ बना कर बेचते थे। इससे बडा लाभ होता था और इस प्रकार उसका खर्च चलता था। वे उसी प्रकार की बहुत सी अन्य वस्तुएँ रखते थे। उनका उल्लेख कहा तक किया जाय। युवावस्था में वह मदिरापान भी करता था किन्तु इसके विषय में केवल वही एक व्यक्ति जानता था जिससे वह मदिरा क्रय करता था। मध्याह्न के भोजन के उपरान्त वह मदिरापान करके जुहर[1] की नमाज के समय उठता था। एक दिन एक नाई रोहतक कस्बे से आया। उसने नाई को बुलवाया। नाई ने कहा कि, "यदि आप कहें तो मैं आपकी दाढी को ठीक कर दूं।" उसने कहा कि, "कर दो।" जब नाई उसके निकट पहुचा तो उसने मदिरा की गध सूँघी। उसने पूछा कि, "आप मदिरापान करते हैं ?" उत्तर मिला कि, "कभी-कभी पीता हू।" पलग के नीचे बोतल रखी हुई थी। मिया ने कहा कि, "यदि तेरी इच्छा है तो तू भी पी ले।" उसने भी मदिरापान किया। वहा से वह जलाल खा के पास पहुचा। जलाल खा ने उस नाई को अपने पास बुलवाया और मदिरा की दुर्गंध से अवगत होकर उससे पूछा कि, "क्या तू मदिरापान करता है ?" उसने कहा कि, "हा। मैं मिया बलीद के पास गया था उन्ही ने मुझे यह मदिरा पिलाई है।" जलाल खा ने पूछा कि, "क्या वह मदिरापान करता है ?" नाई ने कहा कि, "हा।" वहा एक व्यक्ति था जो मिया बलीद के समक्ष पहुचा। उसने मिया बलीद से कहा कि "आज जलाल खा को आपके विषय में ज्ञात हो गया है कि आप मदिरापान करते हैं।" मिया ने लज्जित होकर यह प्रतिज्ञा की कि "मैं अब मदिरापान न करूँगा।" फिर उसने यह सोचा कि "जो मदिरा बोतल म है इसे पी लूं अन्य बार फिर कभी न पिऊगा।" तदुपरान्त उसने सोचा कि 'इस समय मुझे यह चेतावनी मिली है। पता नही कुछ समय उपरान्त मेरे हृदय में रहे अथवा न रहे। इसी समय तोबा[2] करना चाहिये।" बोतल उठाकर उसने पत्थर पर पटक दी और यह सोचा कि क्योंकि "मैं लोगो के ज्ञान में मदिरापान न करता था अत इस समय अपनी तोबा के विषय में भी किसी को कोई सूचना न दूं।"

(१९५) वह बन्दगी शेख बुढ्‌न शत्तारी का चेला था। वह अपना कोई समय भी व्यर्थ नष्ट नही करता था। जहा कही भी वह जाता वहा भूमि में कोठरी बना लेता था और अधिकाश समय उसी में रहता था। यदि वह सेना के साथ यात्रा में होता था तो भी जहा यह एक दिन के लिए ठहरता था कोठरी बनाता था। एक दिन वह एक अभियान पर गया हुआ था। यह तुच्छ भी उसके साथ था। रातभर वह अस्त्रशस्त्र लगाये हुए पहरा देता रहा। उस समय बडा कडाके का जाडा पड रहा था। उसका जिरह बक्तर इतना ठडा हो गया था कि यदि उस पर कोई हाथ रख देता तो ऐसा ज्ञात होता कि मानो उसने बरफ पर हाथ रख दिया हो। वह उसी ज़िरह बक्तर को पहने हुए रात भर ईश्वर के ध्यान में लीन रहा। रात के अन्त में उसने अपना ज़िरह बक्तर उतारा। लोगो ने पूछा कि, "क्या करोगे ?" उसने उत्तर दिया कि, "इस समय मुझे स्नान की आवश्यकता है। मैं स्नान करूगा।' पानी से भरी

१ मध्याह्नोपरान्त की प्रथम नमाज जो लगभग २ बजे पढी जाती है।
२ घृणित अथवा निंद्य कर्म पुन: न करने की दृढ प्रतिज्ञा।

मशक रख रही थी उसे उसने मगवाया। जब मशक का मुह खोला गया तो उसमें से जल न निकला। सब बरफ हो गया था। उसने उसी प्रकार बरफ़ के पानी को अपने सिर पर डाल लिया और पुन ठडे अस्त्रशस्त्र धारण कर लिए किन्तु उसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन न हुआ। वह उसी प्रकार ईश्वर के ध्यान में लीन हो गया।

एक बार वह रुग्ण हो गया। मैं उस समय रापरी के किले में था। जब मैं वहा से आया तो उसके देखने के लिए गया। द्वार के समक्ष पर्दा पडा हुआ था और उस स्थान पर बडा ही अधेरा था। मैंने उसके पलग के समीप जाकर पूछा कि, "क्या हाल है?" उसने उत्तर दिया कि, "ईश्वर को धन्य है।" मैंने पुन पूछा कि, "रात किस प्रकार व्यतीत होती है?" उत्तर मिला कि, "यदि रात्रि न होती तो मैं मर जाता।" मैंने पूछा कि, "क्या बात है?" उसने उत्तर दिया कि, "दिन में लोग मुझे पूछने आते हैं और कष्ट देते हैं किन्तु रात्रि बडी शाति से व्यतीत होती है।" मुझे इस बात से बडा दुख हुआ। मैंने कहा कि ईश्वर प्रशसनीय है। सर्व साधारण का यह मत है कि रोगी के लिए रात्रि का समय बडा कठिन होता है और वास्तव में है भी ऐसा ही। मैंने उसकी आध्यात्मिक शक्ति की प्रशसा की। उसने कहा कि, "जो कोई आता है वह व्यर्थ की बातें करता है। मेरा रोग यही है अन्यथा मैं रात-दिन निश्चिन्त रहता हू। तू इतने दिन कहा था जो मैं तुझसे बात भी न कर सका? अब तू इस स्थान से कही मत जा।"

इसी रोग के कारण लाद खा के चिकित्सक उसके जीवन से निराश हो गये और वे उपस्थित न हुए। जुहर के समय उसने पूछा कि, "आज चिकित्सक लोग क्यो नही आये?" जो लोग उपस्थित थे उन्होंने कहा कि, "आज उन्हें काम है। इस कारण वे नही आये।" उसने कहा, "क्या सभी को काम (१९६) है? सभवत वे लोग मेरे जीवन से निराश हो गये हैं और इस कारण वे नही आये।" मिया राजन मिहोत्री उसका मित्र था, वह रोने लगा। उसने कहा कि, "क्यो रोते हो? वह दिन अभी बहुत आगे है। मैं आज नही मरूगा। मुझे दो वर्ष और इस स्थान पर रहना है। अभी-अभी मुहम्मद साहब पधारे थे और मीरान सैयिद बुढन खासादार साथ थे। उन्होंने कहा कि 'मैं तेरे लिए आया हू। चिकित्सक निराश होकर तुझे छोड गये हैं। यह उनकी भूल है। अभी तेरे जीवन में दो वर्ष शेष हैं, तू निश्चिन्त रह, मैं जाता हू। जुहर की नमाज के समय पुन आऊगा।" उसके मित्रगण इस सुखद समाचार से प्रसन्न हो गये। जुहर की नमाज के समय मुहम्मद साहब फिर पधारे। वह नित्य प्रति स्वस्थ होने लगा और दो वर्ष उपरान्त सुल्तान इबराहीम के युद्ध में मारा गया।

एक विचित्र कहानी

उसने मुझसे एक कहानी का इस प्रकार उल्लेख किया है। वह एक बार पटना की विलायत में लाद खा के साथ था। एक स्थान पर शिविर लगे थे। सैनिक लोग गज[1] फेंकने के लिए उस पर्वत में प्रविष्ट हो गये। मिया वजीद एक ओर था। वहा से ऊचाई पर एक स्थान दृष्टिगत हुआ, मानो पर्वत में कोई कोठरी तैयार की गई हो। वह उसके देखने के लिए रवाना हुआ और ऊपर पहुचा। उसने देखा कि एक खुला हुआ स्थान है जो अत्यन्त दृढ है। उसके ऊपर एक समतल पत्थर बिछा हुआ है। वह पत्थर की छत को देख रहा था कि उस पत्थर में जल की तरी दृष्टिगत हुई। उसने इस बात की खोज प्रारम्भ कर दी कि "यह जल कहा से आ रहा है?" उसने उस स्थान के स्रोत का पता लगाने के लिए अपने

१ सम्भवत भाला।

हाथ से साफ किया। इसी बीच में एक बूंद उसके हाथ पर टपकी। उसने ऊपर देखा कि एक-एक बूंद पत्थर की छत से टपक रही है। उसका एक मित्र भी वहा पहुच गया। उसने उससे कहा कि, "देख ऊपर से एक बूंद टपक रही है।" जब दूसरे व्यक्ति ने देखा तो दो बूंदें टपकने लगी। वह पुन बूंदो (१९७) के टपकने के विषय में सोचने लगा। उसने अपने समस्त मित्रों को बुलवाया। जितने आदमी बढते जाते थे उतनी ही बूंदें बढती जाती थी। यहा तक कि नहर के समान जल बहने लगा। शिविर के लोग यह सुनकर वहा पहुच गये। नहर के जल में वृद्धि होती गई। तदुपरान्त जिस प्रकार धीरे-धीरे सब लोग जाने लगे, जल भी कम होने लगा। यहा तक कि जल की केवल एक ही बूंद रह गई। मैंने यह कहानी उसी से सुनी है। एक दिन मैंने इस कहानी का उल्लेख शाह जलालुद्दीन शीराजी से किया। उसने कहा कि, "यह जादू का प्रभाव है।" मैंने पूछा कि, "क्या इस प्रकार का कही कोई और भी स्थान है?" उसने उत्तर दिया कि, "अनेको स्थानो पर इस प्रकार की बातें पाई जाती हैं। जिस स्थान पर आजकल मिश्र नगर आबाद है वह गाज़ी कोह था। सुल्तान सिकन्दर जुलकरनैन ने उसे बसाया था। वहा कई खडो के घर बने हुए हैं। किसी स्थान पर कुछ घरो पर ७, किसी स्थान पर ६ और कही ५ खड हैं। जब से वह स्थान आबाद हुआ, वहा कभी वर्षा नही हुई है। किले की दीवार बाहर की ओर वर्षा के दिनो मे भीग जाती थी किन्तु भीतर की ओर नही भीगती थी।

विषैली मकडी की कहानी

शेख ताहा, चन्देरी वाले मिया अहमद दानिशमन्द का भतीजा था। उसने बताया कि, "हम कुछ मित्रो को लेकर धनुष-बाण सहित शिकार हेतु गये। हम लोग धनुष-बाण लेकर एक कोने में बैठे थे। अन्य मित्रगण हिरनो को भगाने के लिए चले गये। हम लोग हिरनो के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे कि हमने पीछे से सर्प की फुनकार सुनी। जब हमने पीछे दृष्टि डाली तो हमें पता चला कि एक सर्प कुण्डल मारे हुए एक कोने में बैठा हुआ है। एक मकडी ने उसके ऊपर जाला तान दिया है और वह उस पर बैठी हुई है। जब वह सर्प के निकट जाती है तो वह फुनकार मार देता है और मकडी ऊपर को भाग जाती है। कुछ समय तक साप ने फुनकार न मारी और हम भी मृगो की प्रतीक्षा करते रहे। जब वे न आये तो हम साप को देखने उठ खडे हुए। जब हम सर्प के निकट पहुचे तो हमने देखा कि मकडी उसके ऊपर बैठी हुई है। हमने सोचा कि जब तक मकडी लटकी हुई थी उस समय तक वह सर्प को अपने निकट न आने देती थी। अब वह इस समय उसके ऊपर बैठी हुई है तो वह उसे अपने पास से क्यो नही पृथक करती? जो बाण हमारे हाथ मे था उससे हमने साप को छुआ। जिस प्रकार कच्चे धागे के गोले को यदि बाण से छुआ जाय तो वह छिन्न-भिन्न हो जाता है उसी प्रकार सर्प भी बाण द्वारा छूने के कारण फट गया। हम लोग डर गये और उस स्थान पर न रुके और पुन अपने स्थान पर चले आये तथा मृगो की प्रतीक्षा करने लगे। (१९८) मृग दौडते हुए हमारे पास तक आये हमने उन पर बाण चलाया। एक मृग भूमि पर गिर पडा, उसने हाथ-पाव बिल्कुल न हिलाये। हम यह सोच कर दौडे कि सभवत उसको घातक घाव लगा है अत उसके मरने के पूर्व पहुच कर हम उसे जिबह[1] कर डाले। जैसे ही हमने उसके सीगो का पकड कर खीचा उसका सिर शरीर से पृथक् हो गया और मेरे हाथ में आ गया। मेरे अन्य मित्र भी मेरे पास पहुच गये। मैंने उनसे सर्प, मकडी तथा बाण के विषय मे जिससे मैंने सर्प को छुआ था बताया। सब लोगो ने कहा कि

[1] अल्लाह का नाम लेकर इस प्रकार गला काटना कि सिर पूर्णत पृथक् न हो। मरने के उपरान्त किसी पशु अथवा पक्षी का सिर नहीं काटा जा सकता। मरने के पूर्व ही यह काय सम्पन्न किया जाता है।

यह मकडी के विप का प्रभाव है। जब हमने इस विषय में अधिक खोज की तो पता चला कि जिस प्रकार सर्प फट चुका था उसी प्रकार मृग भी फट गया।"

मैंने मीरान सैयिद बुद्धन से सुना है। उसने इस कहानी का इस प्रकार उल्लेख किया "एक बार जब मैं मुगलो से भाग कर पर्वत की ओर चला गया तो जगल में निवास करता रहा। एक दिन मैं भ्रमण कर रहा था कि मैंने एक बहुत बडी मकडी देखी। वह जगल में जा रही थी। जिधर से वह जाती थी वह सूखी घास, जो निकट होती थी, जलती जाती थी। मेरे साथ शेख खलील नामक मेरा एक सेवक था। मुझे मकडी के विपय में कोई ज्ञान नही था। उसने मुझसे पूछा कि, 'आप कुछ देखते है?' मैंने पूछा कि, 'क्या बात है?' उसने कहा कि, 'आपको जो यह धुआ तथा आग दृष्टिगत हो रही है उसके विपय में पता भी है कि यह क्या है?' मैंने कहा कि, 'मैं अग्नि देख रहा हू किन्तु कारण नही जानता।' उसने कहा कि 'आप इस विपय में सोचें।' इसी बीच में दूसरे स्थान से अग्नि दृष्टिगत हुई। वह मुझे उस अग्नि के पास ले गया और अग्नि दिखा कर मुझसे कहा कि 'यह अग्नि इस मकडी के कारण जल रही है।' मैं यह देख ही रहा था कि मेरी दृष्टि मकडी तथा सूखी घास पर पडी, वहा अग्नि जलने लगी। उस समय मैंने समझा कि यह अग्नि उसके कारण है। मैंने उससे पूछा कि, 'यदि यह मनुष्य के शरीर में पहुच जाय तो फिर उसकी क्या दशा होगी?' उसने कहा कि, 'ईश्वर ने इस विष की औपधि भी उत्पन्न की है।' मैंने पूछा कि, 'वह औपधि कहा है?' उसने कहा कि, 'एक प्रकार की घास होती है।' मैंने पूछा कि, 'कहा मिलती है?' उत्तर मिला कि, 'जिस जगल में यह मकडी होती है उसी जगल में घास भी होती है?' मैंने उससे कहा कि, 'मुझे दिखाओ।' उसने कुछ दूर जाकर उस घास को दिखा कर कहा कि,'यह घास इसकी औपधि है, और बताया कि 'आपने मकडी देख ली, अब इसे भी देखें।' उसने आग लगाकर वह घास जला दी। वह जल कर राख हो गई। उसने मुझसे कहा कि, 'कल आप आकर यहा फिर देखें।' मैंने दूसरे दिन वहा जाकर देखा कि घास एक हाथ लम्बी हो गई है। मुझे बडा आश्चर्य हुआ।"

काज़ी मुईनुद्दीन

(१९९) मैंने काज़ी मुईनुद्दीन से उसके सम्बन्ध में जो बात सुनी है वह इस प्रकार है वह बडा ही कामिल (सिद्ध पुरुष) था और ईश्वर के ध्यान में सर्वदा लीन रहता था। वह दक्षिण की विलायत का निवासी था। वह ख्वाजा कुतुबुद्दीन[1] के पवित्र रौजे के समीप मलिक कुबूल के कब्रिस्तान के एक कोने में निवास करता था। सेवक (लेखक) उसकी सेवा में बहुत जाया करता था। उसकी यह प्रथा थी कि सोने के समय की नमाज़ पढ कर वह मुराकबे[2] में बैठ जाता था। रात भर पाव की अगुलियो के सहारे वह अपना सिर जानू पर रख कर बैठा रहता था। उसके बैठने का नियम यह होता था कि पाँवो की अगुलियो को वह भूमि पर खडा कर देता था और एडियो को उठा देता था। कभी-कभी वह नितब को दानो पाव की एडियो पर रख कर इस प्रकार बैठ जाता था कि कोई अन्य व्यक्ति आधी घडी भी इस प्रकार न बैठ सकता था। वह प्रात काल तक इसी प्रकार बैठा रहता था। उसके चमत्कारो का उल्लेख करना सभव नही। उनमें से एक यह है कि एक दिन मैं ख्वाजा की सेवा में जा रहा था। भाई मिया शेख जमाल तथा भाई मिया शेख इबराहीम ने कहा कि, "तू काज़ी मुईनुद्दीन के पास अत्यधिक रहता है। आज हम लोग

१ ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी (मृत्यु १२३५ ई०)। इनका मजार देहली में है और अब भी इनके भक्त बहुत बड़ी संख्या में वहाँ एकत्र होते हैं।

२ ईश्वर के ध्यान में।

तेरे साथ चलना चाहते हैं।" मैंने उन्हें अपने साथ ले लिया। मार्ग में शेख जमाल ने कहा कि, 'मेरे हृदय में एक बात है। यदि वह बात उनके द्वारा प्रकट हो जाय तो मैं समझूँगा कि वे सिद्ध पुरुष हैं।" मैंने कहा कि, "ईश्वर के भक्तों के पास ईश्वर ही के लिए जाना चाहिये।" उसने कहा कि, "मेरा भी उद्देश्य यही है, किन्तु तू उनकी अत्यधिक प्रशंसा करता है और उनके साथ रहता है। हम भी उनके पास जा रहे हैं। चाहते हैं कि उनके चमत्कार के विषय में ज्ञान प्राप्त कर लें।" हमने पूछा कि, "तेरे हृदय में क्या है मुझे भी बता।" उसने कहा कि, "जब हम जाय तो सबसे पहले वे हमें ख्वाजा[1] की रोटी खिलायें, तदुपरान्त दूध तथा गरम चावल, घी एवं शक्कर सहित।" मैंने उससे कहा कि, "तुम यह बात समझो। हमें उनसे यह खेल नही करना है। हमारा उद्देश्य और ही है, जिसका सबन्ध इन बातो से नही है।" अन्त में मैं उनके समक्ष गया। सुबह का समय था। मैं उनसे मिला। मैं थोडी देर बैठा रहा कि रोटी मेरे समक्ष लाई गई। मैं सिर झुकाये हुए था। अन्य लोग खा रहे थे। जब लोग भोजन कर चुके तो एक (२००) व्यक्ति दूध तथा गरम चावल लाया। मैंने कहा कि, "अतिथियो को दो।" लकडी के प्याले में वह वस्तु उसके समक्ष रखी गई। वे खाते जाते थे और एक दूसरे की ओर देखते जाते थे। इसी बीच में उन्होंने अपने उस कम्बल के नीचे से जिस पर वे बैठे हुए थे एक पत्ते पर शकर तथा एक पत्ते पर घी रखकर प्रस्तुत किया और कहा कि, "यदि इन वस्तुओ की इच्छा है तो इन्हे खाओ।" भोजन के उपरान्त उन्होंने कहा कि, "तुम लोग सम्मानित व्यक्तियो की सतान में से हो। फकीरो के विषय में इस प्रकार का ख्याल नही करना चाहिये। यदि यह वस्तु न मिलती तो तुम अपने इस भाई की खिल्ली उडाते।" उसने कान पकड कर कहा कि, "बाद में मैं यह कार्य न करूगा।"

एक दिन दास ख्वाजा के दर्शनार्थ जा रहा था और कुछ तन्के दरिद्रियो को भेंट करने के लिए निकाल लिये थे। जब मैं निकट पहुचा तो मैंने देखा कि काजी मुईनुद्दीन आ रहे हैं। मैंने हाथ मिला कर पूछा कि, "आप कहा थे?" उन्होंने कहा कि, "मैं बन्दगी शेख हसन तथा शाह मुहम्मद मीर के पास जाता हू।" सेवक उस स्थान से चला गया और उनकी सेवा में पहुचा। फातेहा[2] पढ कर मैं वहा बैठ गया। कुछ समय उपरान्त उन्होंने कहा कि, "आज हम हज़रत ख्वाजा के अतिथि हैं। आज के दिन जिस किसी ने भी उनकी ओर दृष्टि की होगी उसे उन्होंने मुझे प्रदान करा दिया है।" मैंने कुछ तन्के उन्हें भेंट किये। दास कई वर्ष तक उनकी सेवा में रहा। उस बीच में मैंने उन्हें कभी सोते हुए नही देखा। वे सर्वदा मुराकेबे[3] में रहते थे।

वे अपने विषय में कहते थे कि, "जिस समय मैं सिपाही था उस समय मुझे दरवेशो की सेवा की इच्छा थी। एक दिन मैं मलिक वरीद दखिनी की सेवा में बैठा था कि एक व्यक्ति कही से आ गया। वह एक डण्डे में एक छोटा सा बक्स बाध कर लाया और उसे मलिक वरीद के समक्ष रख दिया। उसने पूछा कि, 'इसमें क्या है और यह डण्डे मे क्यो लटका हुआ है?' उसने कहा कि, 'यह विष है यदि इसमें हाथ लग जाय तो समस्त शरीर फट जायगा। इस कारण मैंने इसे बाध रखा है।' उसने उसके विषय में बताना प्रारम्भ कर दिया कि, 'यदि सरसो के दाने के बराबर भी बैल के सीग पर इसे मल दिया जाय तो उसका समस्त शरीर फट जायेगा। यदि कोई शत्रु कही सेना सहित हो तो उस स्थान पर जो कोई हौज अथवा नहर हो जहा से वह जल पीता हो, तो उस हौज में इस विष को लोहे की चिमटी से पकड कर

१ ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी।
२ परलोकगत आत्मा की शान्ति के लिये कुरान की पहली सूरत (अध्याय) का पाठ।
३ ईश्वर के ध्यान में।

डाल दिया जाय तो जो कोई पशु भी जल पीने आयेगा तो उसके दो पाव जल के भीतर ही होगे जल के बाहर कि वह वहीं गिरकर मर जायेगा। यदि कोई नहर ऊपर से बहती हुई आ रही हो प को एक लकडी में बाधकर लटका दिया जाय।' मैंने कहा कि, 'इसके खाने से कोई नही मरता।' ने लगे और कहने लगे कि, 'इसके विषय में इतना सुन कर भी आप यह कहते हैं कि इसके खाने नही मरता।' मैंने कहा कि, 'वास्तव में मारने वाला ईश्वर है। वह नही मारता।' उन्होंने "इसे भी ईश्वर ने उत्पन्न किया है, जिसकी हत्या वह कराना चाहता है उसके पास तक वह वस्तु ता है।' मैंने कहा कि, 'मैंने इसके विषय में सुन लिया। अब इसके विषय में देख भी लू।' उसने लोहे की चिमटी से पकड कर झुका दिया। विष बाहर गिर पडा, मैंने उसे उठाने के लिए हाथ लोग शोर मचाने लगे। मैंने उसे मुह में रख लिया और खा गया। जब तक मैं वहा बैठा रहा बात की चिन्ता न की। जब मैं घर पहुचा तो मैंने अपनी माता से पूछा कि, 'क्या कोई खाने उपलब्ध है?' उन्होंने शीघ्रातिशीघ्र कोई वस्तु प्याज़ में मिला कर तैयार की और मैंने थोडा में लेकर खा लिया और पलग पर सोने के लिए चला गया। ८ मास तक मुझे अपने विषय में कोई रही। तीन मास उपरान्त मैंने आख खोली किन्तु मैं आख से कुछ देख न सकता था। समस्त अधकार था। ८ मास उपरान्त कुछ प्रकाश उत्पन्न हुआ। मैंने एक चम्चे से कुछ पिया। एक वर्ष मेरी दशा ठीक हो गई, किन्तु मेरी मृत्यु न हुई। तदुपरान्त मैंने अपना घर-बार छोड दिया। एक लबर्गा में कुतुबुस्सादात मीरान सैयिद मुहम्मद गेसू दराज़[1] के उर्स[2] के दिन उपस्थित था। उर्स में कुछ सम्मानित व्यक्तियो का समूह एक कोने में बैठा हुआ था, वहा उन्होंने कुछ खाया और ा। मैं उनकी सेवा हेतु उठ खडा हुआ और आवदार खाने[3] में पहुचा। वहा जल न था। मैंने टका उठा लिया। उसमें पच्चीस घडे जल आता था। उसे लेकर मैं रौज़े के निकट की नदी के पास पहुचा और उसमे ५, ६ घडे जल डाले। इससे अधिक जल उठाना वडा कठिन था। क्योंकि मुझे गो की सेवा की बडी इच्छा थी अत मैंने साहस करके उसे कधे पर उठा लिया और उनके समक्ष ले क व्यक्ति ने मेरी जब यह दशा देखी तो उसने अपने सीने पर हाथ मारा और चिल्ला कर भूमि पडा। वह बडी देर तक मूर्च्छित रहा। उसने कहा कि, 'तेरे कष्ट को देख कर मेरा सीना घायल है। तूने इतना कष्ट भोगा। अब तेरी क्या दशा है?' इसी बीच में उस काजी ने कहा कि, 'हे उन सम्मानित व्यक्तियो के प्रति न्याय करना जो दूसरो के दु ख के कारण दुखी हो जाते हैं।"

चिन बिच्छू

मैंने मिया बाबू शिरवानी से जोकि बडा ही पवित्र जीवन व्यतीत करता था, सुना है। वह दिन ज़ा रखता था और रात्रि में जागा करता था। वह कहता था कि "हम लोग एक स्थान पर बैठे थे, ई व्यक्ति उपस्थित थे। वहा से एक व्यक्ति उठ खडा हुआ और अपने घर को जाने लगा। एक छेद बिच्छू निकला और छेद के द्वार पर बैठ गया। लोग उस व्यक्ति को बुलाने लगे। जब तक वे

[1] यद मुहम्मद गेसू दराज दौलताबाद के गुलबर्गा नामक स्थान के बहुत बड़े सन्त थे। वे शेख़ नसीरुद्दीन राग देहली निवासी के शिष्य थे। उनका जन्म देहली में ३० जुलाई १३२१ ई० को हुआ था। उन्होंने ग्रन्थों की रचना की, उनकी मृत्यु १४२२ ई० में हुई।
[2] र्यों की निधन तिथि को मनाया जाने वाला उत्सव।
[3] स्थान जहाँ जल रखा जाता था।

बुलाते रहे, बिच्छू बैठा रहा। जब वह न आया तो बिच्छू भीतर चला गया। इन लोगो ने फिर पुकारा, वह बिच्छू पुन बाहर निकल आया। उन लोगो ने कहा कि 'यह आश्चर्यजनक बात देखो। जब भी तेरा नाम लिया जाता है वह निकल आता है। क्योकि तू नही आता अत वह भीतर चला जाता है।' उन्होने उसे शपथ दी कि 'यहा आ।' वह बिच्छू भीतर चला गया था, वह पुन निकला। उनके शपथ दिलाने के कारण वह आया और छेद के समीप बैठ गया। अपने हाथ में घास का एक तिनका लेकर बिच्छू को उससे छूने लगा। बिच्छू उसी प्रकार बैठा रहा। अचानक वह तिनका टूट गया और इस युवक का हाथ बिच्छू पर पहुच गया। बिच्छू उसके डक मार कर छेद में चला गया। वह युवक चीख मार कर मृत्यु को प्राप्त हो गया।"

मिया बाबू

मिया बाबू बडा ही धर्मनिष्ठ तथा सदाचारी था। उसने सैनिक जीवन त्याग दिया था और पिलखना नामक स्थान के समीप शेख खोरन के जीवन-काल में, वहा एक ग्राम में रहता था। उसका नाम उसने इस्लामपुर रख दिया था। यह ग्राम काली नदी के तट पर था। जलाली कस्बे के शिकदार ने उसे एक दिन इस कारण बुलवाया कि उसके सेवको में से किसी ने एक व्यक्ति से युद्ध किया था और उसने शिकदार से उसकी शिकायत की थी। शिकदार ने कहा कि, "मिया बाबू को बुलाया जाय।' मिया ने शिकदार के आदमियो से बहुत कुछ कहा किन्तु उन लोगो ने कोई चिन्ता न की। उसने उठ कर वजू किया, नमाज पढी और सिज्दे में जाकर मृत्यु को प्राप्त हो गया। यह घटना इस्लाम शाह के राज्यकाल (२०३) में घटी थी और सेवक ने इसे स्वय अपनी आखो से देखा था।

एक ईमानदार वृद्ध की कहानी

कहा जाता है कि बन्दगी मीरान मैं यदि हमजा रसूलदार[1] हौजे खास अलाई के समीप जो सीरी के कोट के निकट है जा रहा था। उसे ऊचाई पर एक स्थान दृष्टिगत हुआ। उस ऊचाई पर एक प्राचीन कब्र थी जो कई स्थानो पर टूट गयी थी। उस कब्र में उसने देखा कि सोने की मुहरो की एक थैली है जो कि मिट्टी में मिल गई है और मुहरें मिट्टी में जम गई हैं। मीरान ने अपने हृदय में सोचा कि "यदि कोई दरिद्र इधर से निकले तो मैं उसे इन मुहरो को दिखा दू ताकि वह उन्हें ले जाय।" जो उस मार्ग से निकलता उसे वह देखने लगता। अचानक एक वृद्ध तथा शक्तिहीन लकडहारा लकडी का गट्ठर लादे हुए धूप में नगे पाव आया और उस ऊचाई के समीप छाये में बैठ गया। मीरान ने कहा कि "इस व्यक्ति मे अधिक और कोई दरिद्र न होगा।" उसने वृद्ध से कहा कि "यदि ईश्वर तुझे कुछ दे तो उसे लेगा अथवा नही ?" उसने कहा कि, "यदि हलाल[2] होगा तो स्वीकार कर लूगा।" मीरान ने कहा कि, "हलाल का भोजन बडा कठिन है।" उसने कहा कि, "सभवत तुम इन वस्तुओं के विषय में कह रहे हो जोकि कब्र के भीतर दृष्टिगत हो रही हैं।" मीरान ने कहा कि, "हा।" उसने उत्तर दिया कि, "मैं ७ वर्ष से इन्हें देख रहा हू। मेरा निवास-स्थान यही है, मेरे हृदय में कभी यह बात न आई और मुझे ईश्वर ने इस बात से बचाय रखा। हे मित्र ! धैर्य, साहस तथा सतोष बहुत बडी चीज़ हैं। जिनको यह प्राप्त हो जाय, उन्हें किसी अन्य वस्तु की चिन्ता नही होती।"

१ वह अधिकारी जो बाहर से आने वाले राजदूतों की देखभाल करता था।
२ जिसका स्वीकार करना इस्लाम के नियमों के विरुद्ध न हो।

कब्रो की कहानी

(२०४) मैंने मलिक आदिल कश्मीजी से सुना है कि सुल्तान बहलोल के राज्यकाल में गगा नदी में बाढ आ गई। नदी तट पर जो कब्रें थीं वे नष्ट हो गई और मुर्दों की हड्डिया जल में पहुच गई। बुखारा के कुछ सैयिदो ने यह निश्चय किया कि वे टूटी हुई कब्रों से हड्डिया निकाल कर अन्य स्थान पर पहुचा दें। नावो पर बैठ कर वे कब्रो से हड्डिया निकाल-निकाल कर अन्य स्थान पर रखने लगे। उन्होने एक कब्र में देखा कि ' एक व्यक्ति कफन पहने इस प्रकार लेटा हुआ है, मानो उसे आज ही कफन पहनाया गया हो।" उसके पायती राय बेल की झाडी उगी हुई थी और उसके पूरे कफन के ऊपर फूल पडे हुए थे, उसके दोनो नथुनो में २ फूल लगे हुए थे। ईश्वर की लीला देख कर वे अन्य स्थान को पहुच गये। वहा उन्होंने देखा कि एक कब्र एक स्थान से टूटी हुई है और उसमें इतने बिच्छू हैं कि वह व्यक्ति दृष्टिगत नही होता। यह देख कर उन्होंने बडी शिक्षा ग्रहण की और वहा फिर कभी न आये।

बुखारी सैयिद की कहानी

क़न्नौज में एक तब्बाख[1] ने अपने लिए एक कब्रिस्तान बनाया था। वहा उसने एक बडे ही उत्तम चबूतरे का निर्माण कराया और कुछ फूल तथा अनार के वृक्ष वहा लगवाये। एक बुखारी सैयिद जब वहा होकर गुजरता तो यही कहता था कि "यह चबूतरा उस तब्बाख के योग्य नही है। यह बडा ही उत्तम है।" वह कभी-कभी वहा बैठा करता था। जब उस सैयिद की मृत्यु हो गई तो उसे उसके कब्रिस्तान में ले जाकर दफन कर दिया गया। जब उस तब्बाख की मृत्यु हो गई तो उसे भी उसके कब्रिस्तान में लोग ले गये। जब उन्होंने कब्र खोदी तो उन्हें बुखारी सैयिद उसमें मिला। जिन लोगो को इस बात की सूचना थी वे कहने लगे कि "सैयिद को यह स्थान बडा पसन्द था।" उसे वही दफन रहने दिया गया और तब्बाख को उसके पायती दफन कर दिया गया।

मुर्दों की कहानिया

मैंने काज़ी फतहुल्लाह हाफिज से जोकि बडे ही पवित्र व्यक्ति थे सुना है। वे कुरान की शपथ लेकर कहा करते थे कि सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल में शम्सी हौज के ऊपर एक लाश दफन की गई। कब्र को बन्द करने के लिए तख्ते लाये जा रहे थे। एक तख्ता भूमि से निकाला गया। जब उन्होंने उसे उठाया तो उस कब्र में से एक व्यक्ति कम्बल पहने हुए निकला जो कुरान शरीफ को रेहल[2] पर रखे (२०५) हुए पढ रहा था। जब तख्ता उठाया गया तो उसने पूछा कि, "क्या कयामत आ गई है?" लोग कब्र बन्द करके भाग खडे हुए और उन्होंने लोगों से जाकर यह हाल बताया। कुछ लोग उस कब्र के पास पहुचे। काजी फतहुल्लाह कहते थे कि सर्व प्रथम जो व्यक्ति वहा पहुचा था उसने कुरान का पाठ सुना था। जब बहुत से लोग वहा पहुच गये तो फिर कुरान का पाठ सुनाई न दिया।

सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल में शम्सी हौज के ऊपर लोग एक मुर्दे को कब्र में दफन कर रहे थे। मखदूम मौलाना मुईनुद्दीन हाफिज़ मुअल्लिम उपस्थित थे। वे कहते थे कि एक व्यक्ति एक स्थान से पत्थर का तख्ता लाने गया और उसने भूमि से एक पत्थर के तख्ते को उठाया। उसके नीचे एक कब्र

१ बावरची।
२ पेचदार तख्ती जिस पर पढते समय पुस्तक रखते हैं।

थी। उस व्यक्ति ने तख्ते को हिलाया, कब्र के भीतर से एक हाथ निकला और उसने इस हाथ को दृढता-पूर्वक पकड लिया। वह व्यक्ति फरियाद करता था किन्तु वह न छोडता था। लोग सुनकर दौडे। मखदूम मौलाना मुईनुद्दीन उपस्थित हुए। उन्होंने देखा कि कब्र वाले ने इस प्रकार हाथ खीच लिया था कि इस व्यक्ति का हाथ बगल तक कब्र में पहुच गया था। मौलाना ने उससे तौबा कराई। तदुपरान्त हाथ छूटा।[1]

(२०६) कहा जाता है कि एक बार सुल्तान सिकन्दर सभल के क्षेत्र में था। खाने जहा लोदी के एक आदमी की मृत्यु हो गई। उसे अस्थायी रूप से दफन कर दिया गया। ६ मास उपरान्त उसके पुत्रो ने उसकी कब्र को खोदा। उन्होने देखा कि उसके शरीर पर कफन न था और वह ऐसा वस्त्र पहने हुए था जैसा योगी लोग पहनते हैं। उसके ललाट पर राख भी मली हुई थी और गले में मृग की सीग लटकी हुई थी। दर्शकगण ने शिक्षा ग्रहण की और कब्र को बन्द कर दिया।[2]

विचित्र मोर की पूंछ

(२०७) मैंने मलिक अधू कासी शिकारपुर कस्बे के निवासी से सुना है जो अपने एक भाई से सुनकर इस कहानी का उल्लेख किया करता था कि, "मैं सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल में व्यापारियो के साथ रहता था और ऊपर[3] के प्रदेश की ओर व्यापार हेतु जाता था। मैं मैहाबन कस्बे के समीप पडाव किए हुए था। वहा एक व्यक्ति मोर की पूँछ बेच रहा था। मैंने उसे इस आशय से क्रय कर लिया कि उससे किसी व्यक्ति से मोरछल बनवाऊगा। मैं किजिलबाश की विलायत में एक जगल में उतरा हुआ था। वहा डाकुओ ने कारवाँ को लूट लिया। हम एक स्थान को भाग खडे हुए। डाकुओ के चले जाने के उपरान्त हम लोग उस स्थान पर पहुचे जहा पडाव किये हुए थे। जो वस्तुएँ वे लोग छोड गये थे उन्हें एकत्र करने लगे। मेरे एक सेवक को मोर की वह पूंछ मिल गई और उसने उसे असबाब में रख लिया। हमने सोचा कि अब हम में व्यापारियो के साथ यात्रा करने की शक्ति नही रही है। हम लोग उनका साथ छोडकर दो तीन व्यक्तियो सहित एक ऐसी दिशा की ओर रवाना हो गये जहा बहुत कम लोग रहते थे। हम लोग एक विलायत की सीमा पर पहुचे। वहा हम एक व्यक्ति के घर के द्वार पर ठहरे हुए थे। हमारे असबाब में से मोर का एक पख गिर पडा था। घर के भीतर से एक बालक निकल कर उस पख को ले गया। कुछ समय उपरान्त घर का स्वामी उस पख को लिए हुए आया और उसने हमसे पूछा कि, 'यह पख तुम्हारा है?' मैंने कहा कि, 'हा, थोडे से पख हमारे पास हैं।' उसने कहा कि, 'आप कुछ पख मुझे प्रदान कर देंगे तो मैं बडा आभारी हूगा।' मैंने उसे कुछ पख दिलवा दिये। वह बडा प्रसन्न हुआ और उसने अत्यधिक कृतज्ञता प्रकट की। दूसरे दिन प्रात काल जब हम लोग चलने लगे तो वह व्यक्ति एक पत्र लाया और उसने वह पत्र देते हुए कहा कि, 'तुम लोग यहा नही ठहरे अन्यथा हम तुम्हारी सेवा करते। (२०८) यहा से दो मील पर एक स्थान है। वहां हमारे सबन्धियो में से एक व्यक्ति घोडों के गल्ले की देखभाल करता है। यह पत्र उसे पहुचा दो।' मैं पत्र लेकर चल खडा हुआ। जब मैं उस स्थान पर पहुचा तो मैंने उसे पत्र दिया। उसने पढ कर कहा कि, 'तुमने अमुक ख्वाजा को कौन सी वस्तु दी है

१ इसी पृष्ठ पर शेरशाह के राज्यकाल की भी एक कहानी का उल्लेख है।
२ कुछ शिक्षा सम्बन्धी वाक्य इस कहानी के उपरान्त हैं जिनका अनुवाद नहीं किया गया।
३ उत्तरी सीमान्त।

जिसके मूल्य में उसने एक उत्तम घोडे को तुम्हें प्रदान किया है ?' मैंने उत्तर दिया कि, 'उसने मुझसे एक पख मागा, मैंने उसे दे दिया।' गल्ले के रक्षक ने पूछा कि, 'वह कहा पर है ? मुझे दिखाओ।' जब मैंने उसे पख दिखाया तो उसने मेरे पाव छूकर कहा कि, 'यदि मुझे भी कुछ पख दे दो तो मैं तुम्हें एक घोडा पेशकश के रूप में दूगा।' मैंने उसे भी कुछ पख दे दिये। उसने दो उत्तम प्रकार के घोडे मुझे प्रदान किये। जब मुझे उन पखो का मूल्य ज्ञात हो गया तो मैं उन्हें नक़द धन लेकर बेचने लगा और शाहरुखी लेने लगा। जब मैं वहा से रवाना हुआ तो मुझे अत्यधिक धन प्राप्त हो चुका था। मैंने अन्य घोडे क्रय किये और अपनी विलायत में आ गया।"

तबक़ाते अकबरी

(लेखक—ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद)

(प्रकाशन—कलकत्ता १९११ ई०)

सुल्तान बहलोल लोदी

बहलोल का प्रारम्भिक जीवन

विश्वस्त सूत्रो से ज्ञात हुआ है कि मलिक बहलोल लोदी सुल्तान शाह लोदी का भतीजा था। सुल्तान शाह की उपाधि इस्लाम खा थी। वह खिज्र खा तथा सुल्तान मुबारक शाह के प्रसिद्ध अमीरो में से था और सरहिन्द में राज्य किया करता था। अपने भतीजे में योग्यता तथा गौरव के चिह्न देख कर उसने अपने पुत्र की भाति उसका पालन-पोषण किया और अतिम अवस्था में उसे अपना उत्तराधिकारी बनाया। इस्लाम खा का एक पुत्र कुतुब खा नामक था। उसने मलिक बहलोल की आज्ञाकारिता से मुह (२९५) मोड लिया और सुल्तान मुहम्मद की सेवा में पहुच गया। सुल्तान मुहम्मद ने हाजी शुदनी को जिसकी उपाधि हुसाम खा थी अत्यधिक सेना देकर मलिक बहलोल के विरुद्ध भेजा। खिज्राबाद तथा साधोरा[1] के परगने के ग्रामो में से गढा[2] नामक ग्राम में दोनो पक्षो में युद्ध हुआ। हुसाम खा पराजित हो कर देहली चला गया। मलिक बहलोल को अत्यधिक शक्ति तथा वैभव प्राप्त हो गया।

कहा जाता है कि मलिक बहलोल प्रारम्भ में अपने दो मित्रो सहित सामाना पहुचा। वहा एक दरवेश सैयिद इब्बत[3] नामक थे। मलिक बहलोल अपने दोनों मित्रो सहित उनकी सेवा में पहुचा और अत्यधिक शिष्टाचार प्रदर्शित करते हुए बैठ गया। उस मजजूब[4] ने कहा कि "तुम लोगों में से देहली की बादशाही २ हज़ार तन्को में कौन क्रय कर सकता है ?" मलिक बहलोल के पास १ हजार ६०० तन्के थैली में थे। उसने उन्हें निकाल कर उनके समक्ष रख दिया और कहा कि, "मेरे पास इससे अधिक नहीं है।" उन्होने उन तन्को को स्वीकार करते हुए बहलोल को देहली की बादशाही की बधाई दी। उसके मित्र उसकी खिल्ली उडाने लगे और उससे परिहास करने लगे। उसने उत्तर दिया कि, "दो बातो के अतिरिक्त कुछ सम्भव नही। एक यह कि यदि ऐसा हो गया तो एक प्रकार से मुफ्त सौदा हुआ और यदि ऐसा न हुआ तो दरवेशो की सेवा करना व्यर्थ नही है।"

छन्द

"भक्ति के मार्ग के पथिक, जब निष्ठा देखते हैं
काऊस तथा फरीदूँ का राज्य एक भिखारी को प्रदान कर देते हैं।"

१ फ़िरिश्ता के अनुसार, 'शाहपुरा'।
२ कुछ हस्तलिखित पोथियों के अनुसार 'करहा'।
३ फ़िरिश्ता के अनुसार 'सैदा'। यह नाम 'इब्बन' तथा पत्ता भी लिखा गया है।
४ मजजूब —वह सूफ़ी जो ईश्वर के ध्यान में इतना लीन रहता है कि उसे किसी बात की सुध बुध नहीं रहती।

कुछ इतिहासो में जो यह लिखा हुआ है कि मलिक बहलोल व्यापार किया करता था तो इसमें कोई वास्तविकता नही है। सम्भवत उसके पूर्वज व्यापार करते तथा हिन्दुस्तान मे आते जाते थे।

हुमायू खा की हत्या

सक्षेप में, मलिक बहलोल ने अपने चाचा मलिक फीरोज तथा अपने समस्त सबन्धियो सहित सरहिन्द की विलायत[1] पर अधिकार जमा लिया। उन्हें अत्यधिक शक्ति एव वैभव प्राप्त हो गया। उस दरवेश की बात से जो उसके हृदय में बाल्यावस्था से बैठी हुई थी और जसरथ खोखर के बहकान से उसने राज्य प्राप्त करने के स्वप्न देखना प्रारम्भ कर दिया। हुसाम खा पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त (२९६) मलिक बहलोल ने हाजी शुदनी की शिकायत से सबन्धित तथा अपनी निष्ठा और भक्ति से परिपूर्ण एक पत्र सुल्तान की सेवा में भेजा और उसमें लिखा कि "यदि आप (सुल्तान मुहम्मद) हाजी की हत्या कर दें और विज़ारत का पद हमीद खा को प्रदान कर दें तो दास आपका आज्ञाकारी तथा सेवक रहेगा।" सुल्तान मुहम्मद ने बिना सोचे समझे हुसाम खा की हत्या करा दी और हमीद खा को वज़ीर नियुक्त कर दिया।

लोदियो द्वारा अपनी शक्ति में वृद्धि करना तथा देहली पर चढाई

लोदियो ने उससे निष्ठापूर्वक व्यवहार किया और उसकी आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। उसने उनके मुहाल तथा जागीर की पुष्टि पुन की। मलिक बहलोल के सुल्तान मुहम्मद की ओर से मालवा के सुल्तान महमूद से युद्ध करने के कारण उसे खाने खाना की उपाधि से सम्मानित किया गया। शनै-शनै लोदियो की शक्ति बढने लगी और उन्होने लाहौर, दीपालपुर, सुनाम, हिसार फीरोज़ा तथा अन्य परगनो पर ज़बरदस्ती अधिकार जमा लिया। उनके अत्यधिक प्रभुत्व प्राप्त कर लेने के कारण तथा लाहौर और दीपालपुर को अधिकार में कर लेने के पश्चात् वे सुल्तान मुहम्मद की आज्ञा बिना सगठित हुए और विरोध की पताका बुलन्द कर दी। उन्होने देहली पर सुल्तान मुहम्मद के विरुद्ध चढाई की और बहुत समय तक सुल्तान को घेरे रहे। क्योकि वे देहली को अपने अधिकार में न कर सके अत सरहिन्द लौट गये। बहलोल ने अपने आप को सुल्तान घोषित कर दिया किन्तु खुत्बे तथा सिक्के का चलाना[2] देहली की विजय तक स्थगित कर दिया। इसी बीच मे सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु हो गई और अमीरो तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियो के प्रयत्न से उसके पुत्र सुल्तान अलाउद्दीन को सिंहासनारूढ किया गया। . .

स्वतन्त्र राज्य

इस समय समस्त हिन्दुस्तान बडी अव्यवस्थित दशा में था। लोदियो को पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त हो गया था। अहमद खा मेवाती ने महरौली (महरौली) से लादो सराय तक, जो शहर देहली के निकट है, के स्थान अपने अधिकार में कर लिये। लोदियो के पास सरहिन्द तथा लाहौर की विलायत से लेकर पानीपत तक का क्षेत्र था। दरिया खा लोदी सबल की विलायत से शहर देहली के निकट ख्वाजा खिज्र नामक (२९७) घाट तक के क्षेत्र का हाकिम था। ईसा खा तुर्क बच्चे ने कोल पर अधिकार जमा लिया था।

१ राज्य, प्रदेश।
२ खुत्बा तथा सिक्का स्वतन्त्र राज्य के चिह्न होते थे।

हसन खा अफगान का पुत्र कुतुब खा, राबरी (रापरी) का हाकिम था। राय प्रताप ने भोगाव बैताली[1] तथा कम्पिला नामक कस्बो को अधिकार में कर लिया था। ब्याना दाऊद खा औहदी के अधिकार में था। गुजरात, मालवा, दक्षिण, जौनपुर तथा बगाल प्रत्येक में एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित था। सुल्तान अलाउद्दीन के पास देहली नगर तथा कुछ ग्राम थे और इसी विलायत द्वारा वह बादशाही करता था।

हमीद खा का सुल्तान द्वारा बन्दी बनाया जाना

सुल्तान बहलोल सेना एकत्र करके पुन सरहिन्द से देहली पहुचा किन्तु देहली के किले को विजय न कर सका अत वह पुन सरहिन्द लौट गया। इसी बीच में सुल्तान अलाउद्दीन ने कुतुब खा ईसा खा तथा राय प्रताप से अपनी शक्ति को बढाने के विषय में परामर्श किया। उन्होने उत्तर दिया कि, "यदि सुल्तान हमीद खा को बन्दी बनाकर विज़ारत से पदच्युत कर दे तो हम लोग कुछ परगनो को अमीरो के अधिकार से लेकर खालसे[2] में सम्मिलित कर दें।" सुल्तान अलाउद्दीन ने हमीद खा को बन्दी बना लिया और देहली से प्रस्थान करके मारहरा[3] के निकट बुरहानाबाद पहुचा। कुतुब खा, ईसा खा तथा राय प्रताप उस स्थान पर उसकी सेवा में उपस्थित हुए और उन्होने निवेदन किया कि, "हम लोग ४० परगने इस शर्त पर खालसे में सम्मिलित करते है कि आप (सुल्तान) हमीद खा की हत्या कर दें।" क्योकि इससे पूर्व हमीद खा के पिता फतह खा ने राय प्रताप की विलायत को नष्ट-भ्रष्ट करके उसकी पत्नी पर अधिकार जमा लिया था अत उसने प्राचीन शत्रुता के कारण हमीद खा की हत्या हेतु सुल्तान को प्रेरित किया। सुल्तान अलाउद्दीन ने, जिसे शासन-व्यवस्था का कोई अनुभव न था, बिना सोचे-समझे हमीद खा की हत्या का आदेश दे दिया। उसी समय हमीद खा की पत्नी के भाई तथा उसके हितैषियो ने जिस युक्ति से भी (२९८) सभव हो सका उसे बन्दीगृह से मुक्त कराया और वह देहली पहुच गया। मलिक मुहम्मद जमाल जो हमीद खा का रक्षक[4] था उसके पीछे-पीछे पहुचा और उसने युद्ध प्रारम्भ कर दिया। मलिक मुहम्मद जमाल की बाण द्वारा हत्या कर दी गई। हमीद खा से बहुत बडी सख्या में लोग मिल गये और उपद्रव तथा अशाति बढ गई। हमीद खा ने सुल्तान के अन्त पुर में प्रविष्ट होकर सुल्तान की पत्नियो, पुत्रियो तथा पुत्रो को नगे सिर देहली के किले के बाहर कर दिया और राज्य का खजाना तथा सपत्ति अपने अधिकार में कर ली। सुल्तान अलाउद्दीन अपने दुर्भाग्य के कारण प्रतिकार को आज और कल पर छोड कर वर्षा ऋतु व्यतीत करने के लिए बदायूं में ठहर गया।

हमीद खा द्वारा देहली के राज्य पर अधिकार जमाना

हमीद खा अवसर पाकर यह सोचने लगा कि किसी अन्य को सुल्तान अलाउद्दीन के स्थान पर सिंहासनारूढ करे। जौनपुर के बादशाह सुल्तान महमूद शर्की के सुल्तान अलाउद्दीन का जामाता होने के कारण, उसने उसे बुलवाना उचित न समझा। मन्दू का बादशाह सुल्तान महमूद दूर था। लोदी निकट था। उसने मलिक बहलोल को जो सरहिन्द में था बुलवाया। मलिक बहलोल सेना लेकर देहली पहुचा और प्रतिज्ञा तथा वचनबद्ध करके हमीद खा ने कुजिया मलिक बहलोल को दे दी। वह

१ पटियाली।
२ खालसा —वह भूमि जिसका प्रबन्ध सीधे केन्द्रीय शासन की ओर से होता था।
३ इसे विभिन्न रूप से लिखा गया है- वारहरा, पारहरा।
४ बन्दीगृह का रक्षक।

(बहलोल लोदी) १७ रबी-उल-अव्वल ८५५ हि० (१९ अप्रैल १४५१ ई०) को सिंहासनारूढ हुआ।

बहलोल के पुत्र तथा अमीर

उस समय सुल्तान बहलोल के ९ पुत्र थे ख्वाजा बायज़ीद ज्येष्ठ पुत्र था, निजाम खा, जो सुल्तान सिकन्दर की उपाधि से बादशाह हुआ, बारबक शाह, मुबारक खा, आलम खा जो सुल्तान अला-उद्दीन की उपाधि से प्रसिद्ध हुआ, जमाल खा, मिया याकूब, फतह खा, मिया मूसा तथा जलाल खा। (२९९) उसके अमीरो तथा सबन्धियो में ३४ व्यक्ति थे। इस्लाम खा लोदी का पुत्र कुतुब खा, दरिया खा लोदी, दरिया खा लोदी का पुत्र तातार खा, मुबारक खा नोहानी[1], तातार खा यूसुफ खेल, उमर खा शिरवानी, हुसेन खा अफगान का पुत्र कुतुब खा, अहमद खा मेवाती, यूसुफ खा जलवानी, यूसुफ खा जलवानी का पुत्र अली खा, अली खा तुर्क बच्चा, शेख अबू सईद फर्मुली, अहमद खा शामी, खाने खाना नोहानी, शम्स खा, वज़ीर खा, अहमद खा का पुत्र खाने खानां शेख अहमद खा शिरवानी, निहग खा, लश्कर खा, शिहाब खा, मीर मुबारिज़ खा भत्ता, रुस्तम खा, मलिक गाज़ी का पुत्र जोना खा, खाने जहा वलकी का पुत्र मिया जमन[2], हुसेन खा दौर, एमादुलमुल्क, इकबाल खा, मिया फरीद, मिया मारूफ फर्मुली, राय प्रताप, राय कीलन तथा राय करन।

बहलोल का जीवन

सुल्तान देखने में बडा पवित्र जीवन व्यतीत करता था और पूर्ण रूप से शरा के अनुसार आचरण करता था। प्रत्येक दशा में शरा के अनुसार कार्य करता था और न्याय तथा इन्साफ करने में बडे उत्साह से कार्य करता था। वह अपना अधिकाश समय आलिमो तथा फकीरो के साथ व्यतीत करता था और फकीरो तथा दरिद्रियो पर कृपा करना आवश्यक समझता था।

बहलोल द्वारा राज्य पर अधिकार जमाने की योजनायें

सक्षेप में, जब सुल्तान बहलोल देहली पहुचा तो हमीद खा को पूर्ण शक्ति तथा प्रभुत्व प्राप्त हो गया था। समय की आवश्यकता पर ध्यान देते हुए वह उससे सौजन्यपूर्ण व्यवहार करता था और प्रत्येक दिन उसके अभिवादन हेतु जाया करता था। एक दिन वह हमीद खा के घर अतिथि के रूप में गया और उसने अफगानो को सिखा दिया कि, "तुम लोग हमीद खा की सभा में कुछ ऐसे कार्य करना जो बुद्धिमत्ता तथा समझ से शून्य हो ताकि वह तुम्हें मूर्ख समझने लगे और तुम्हारा आतक उसके हृदय से दूर हो जाय और वह तुमसे भयभीत न रहे।" जिस समय उसकी सभा में अफगान पहुचे तो वे विचित्र प्रकार के आचरण करने लगे। कुछ लोग अपने जूते अपने कमर में बाधे हुए थे और कुछ लोगो ने अपने जूते हमीद खा के सिर पर जो आला था उस पर रख दिया। हमीद खा ने पूछा, "यह क्या करते हो?" उन्होंने कहा कि, "चोरो के भय से उनकी रक्षा करते हैं।"

कुछ देर बाद अफगानो ने हमीद खा से कहा कि, "तुम्हारे कालीन में विचित्र प्रकार के रग हैं (३००) यदि इस कालीन की एक पमली हमें प्रदान कर दी जाय तो हम उसकी टोपिया तथा ताकिये[3]

१ लोहानी।
२ 'चमन' भी हो सकता है।
३ ताक़िया —एक प्रकार की टोपी।

बनवा कर अपने पुत्रो के लिए पेशकश के रूप में भेज दें ताकि ससार वालो को ज्ञात हो जाय कि हमें हमीद खा की सेवा में वडा सम्मान प्राप्त है।" हमीद खा ने हस कर उत्तर दिया कि, "इस कार्य के लिए तुम्हें बडे अच्छे-अच्छे वस्त्र प्रदान किये जायेंगे।" जब सुगन्धित वस्तुओ के थाल सभा में लाये गये तो कुछ अफगान डिब्बा चाटने लगे और कुछ फूलो को खाने लगे। कुछ लोग पान के बीडे को खोल कर केवल चूना ही खा गये। जब उनके मुह जलने लगे तो उन्होंने पान फेंक दिये। हमीद खा ने मलिक वहलोल से पूछा कि, "इन लोगो ने ऐसा क्यो किया ?" उसने उत्तर दिया कि, "ये लोग गवार तथा मूर्ख हैं आदमियो में वहुत कम रहे हैं। खाने और मरने के अतिरिक्त इन्हें कुछ नही आता।"

दूसरे दिन मलिक, वहलोल हमीद खा के घर मेहमान हुआ। इससे पूर्व यह नियम था कि जब मलिक वहलोल हमीद खा के घर जाता था तो बहुत थोडे से लोग भीतर प्रविष्ट होते थे और अधिकाश लोग बाहर खडे रहते थे। इस बार जब वह मेहमान हुआ तो मलिक वहलोल के सिखलाने से अफगान द्वारपालो को मारपीट कर जबरदस्ती प्रविष्ट हो गये और कहने लगे कि, "हम भी हमीद खा के नौकर हैं। हम लोग अभिवादन से क्यो वचित रहे।" जब शोरगुल होने लगा तो हमीद खा ने उसके विषय में पूछा। उन लोगो ने कहा कि, "अफगान लोग मलिक वहलोल को गाली दे रहे हैं और कहते हैं कि हम भी मलिक बहलोल के समान हमीद खा के नौकर हैं। वह भीतर प्रविष्ट हो गया। हम क्यो न जाय और अभिवादन क्यो न करें ?" हमीद खा ने कहा, "आने दो।"

सुल्तान वहलोल का बादशाह होना

अफगान एकत्र होकर प्रविष्ट हो गये और हमीद खा के पास जो सेवक खडे थे, उनमें से एक-एक के पास दो-दो अफगान खडे हो गये। इसी बीच में कुतुब खा लोदी ने बगल से जजीर निकाल कर हमीद खा के समक्ष रख दी और कहा कि, "यह उचित होगा कि तुझे कुछ समय तक एकान्त में रखा जाय। नमक का ख्याल रखते हुए तेरी हत्या नही कराई जाती।" हमीद खा को बन्दी बना लिया गया। मलिक (३०१) वहलोल का देहली पर बिना किसी विरोध के अधिकार हो गया। उसने अपने नाम का खुत्बा तथा सिक्का चलवा दिया और सुल्तान वहलोल की उपाधि धारण कर ली। उसने सुल्तान अलाउद्दीन को लिखा कि, "क्योकि मेरा पालन-पोषण आपके पिता ने किया है अत मैं आपके वकील[1] के रूप में शासन-प्रबन्ध को जोकि आपके हाथ से निकल चुका है व्यवस्थित दशा में कर दूँगा। आपका नाम खुत्बे से नही पृथक् करता।" सुल्तान ने उत्तर में लिखा कि, "क्योकि मेरा पिता आपको पुत्र कहा करता था अत मैं आपको अपने बडे भाई के स्थान पर समझता हू और राज्य आपके लिए छोडे देता हू। मैं केवल बदायूँ से सतुष्ट हू।" सुल्तान वहलोल ने सफलता प्राप्त करके अपना राज्य प्रारम्भ कर दिया और उसी वर्ष मुल्तान की विलायत तथा उसके आसपास के स्थानो की व्यवस्था हेतु चल दिया।

सुल्तान महमूद शर्की का आक्रमण तथा उसकी पराजय

सुल्तान अलाउद्दीन के अमीरो ने, जो लोदियो के राज्य से सतुष्ट न थे, सुल्तान महमूद शर्की को जौनपुर से बुलवाया। ८५६ हि० (१४५२ ई०) में सुल्तान महमूद ने बहुत बडी सेना सहित देहली पहुँच कर उसे घेर लिया। सुल्तान वहलोल का पुत्र ख्वाजा वायजीद अन्य अमीरो सहित किले में वन्द हो

1 प्रतिनिधि।

गया। सुल्तान बहलोल यह समाचार पाकर दीपालपुर से लौट आया। और नलीरा[1] ग्राम में जो देहली से १५ कोस है, पड़ाव कर दिया। उसके सैनिक सुल्तान महमूद की सेना के बैलों तथा ऊँटों को जो चरागाह जाते थे पकड़ लाय। सुल्तान महमूद ने फतह खा हरेवी को ३० हजार अश्वारोही तथा ३० हाथी देकर सुल्तान बहलोल पर आक्रमण हेतु नियुक्त किया। लोदियों ने अपनी सेना को ३ भागों में विभाजित करके युद्ध प्रारम्भ कर दिया। जो हाथी फतह खा हरेवी की सेना से अग्रसर होता था, उसे कुतुब खा लोदी, जो बड़ा प्रसिद्ध धनुर्धर था, एक बाण द्वारा बेकार कर देता था और युद्ध के योग्य न रहने देता था। कुतुब खा ने दरिया खा लोदी से, जो सुल्तान महमूद से मिल गया था और युद्ध की व्यवस्था कर रहा था, चिल्ला कर कहा कि, "तेरी मातायें तथा बहिनें किले में बन्द हैं। तुझे यह क्या हुआ है जो शत्रु की ओर से युद्ध कर रहा है और स्त्रियों की रक्षा नही करता?" दरिया खा ने कहा, "मैं जाता हू तू पीछा न कर।" (३०२) कुतुब खा ने शपथ ली और दरिया खा शर्की सेना से पृथक् हो गया। दरिया खा के पृथक् होते ही फतह खा हरेवी पराजित होकर बन्दी बना लिया गया। क्योंकि फतह खा ने राय करन के भाई पियौरा की हत्या कर दी थी अत राय करन ने फतह खा का सिर उसके शरीर से पृथक् कर दिया और सुल्तान बहलोल की सेवा में पहुच गया। सुल्तान महमूद में इस घटना के कारण युद्ध की शक्ति न रही और वह जौनपुर लौट गया।

सुल्तान बहलोल द्वारा मेवात पर आक्रमण

तत्पश्चात् सुल्तान बहलोल को स्थायित्व प्राप्त हो गया और उसकी शक्ति तथा अधिकार में वृद्धि होने लगी। उसने विलायतों[2] पर अधिकार जमाने के उद्देश्य से आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। सर्वप्रथम वह मेवात पहुचा। अहमद खा मेवाती ने उसका स्वागत करके आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। सुल्तान ने उसके अधिकार से ७ परगने लेकर शेष उसे प्रदान कर दिये। अहमद खा मेवाती ने अपने चाचा मुबारक खा को स्थायी रूप से सुल्तान की सेवा में रहने के लिए नियुक्त कर दिया।

देहली से इटावा तक के प्रदेश का बहलोल के अधीन होना

सुल्तान मेवात से बरन कस्बे में पहुचा। मबल के हाकिम दरिया खा लोदी ने भी आज्ञाकारिता प्रदर्शित की और ७ परगने भेंट किये। सुल्तान बहलोल वहा से कोल पहुचा और कोल को पूर्व की भाति ईसा खा के पास रहने दिया। जब वह बुरहानाबाद पहुचा तो सकेत का हाकिम मुबारक खा उसकी सेवार्थ उपस्थित हुआ। उसने उसकी जागीर के मुहाल में कोई परिवर्तन न किया। इसी प्रकार मौगाव के हाकिम राय प्रताप की विलायत उसी के अधिकार में छोड कर वह रापरी के किले की ओर बढा। रापरी के हाकिम हसन खा के पुत्र कुतुब खा ने किले को बन्द कर लिया। अल्प समय में रापरी का किला विजय हो गया। खाने जहा, कुतुब खा को वचन देकर सुल्तान के समक्ष लाया। उसकी जागीर के मुहाल को भी उसे प्रदान कर दिया गया। वहा से वह इटावा पहुचा। इटावा के हाकिम ने भी आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली।

१ फ़िरिश्ता के अनुसार 'बीर'। 'नरीला' भी लिखा गया है।
२ प्रदेशों, राज्यों।

सुल्तान महमूद शर्की का बहलोल पर आक्रमण तथा संधि

इस समय सुल्तान महमूद शर्की ने पुनः सुल्तान बहलोल पर आक्रमण हेतु प्रस्थान करके इटावा के निकट पड़ाव किया। प्रथम दिन दोनों ओर की सेनाओं में युद्ध हुआ। दूसरे दिन कुतुब खाँ तथा राय (२०३) प्रताप ने संधि करके यह निश्चय किया कि "जो कुछ भी देहली के बादशाह मुहम्मद शाह के अधिकार में था, वह सुल्तान बहलोल के अधीन रहे और जो कुछ जौनपुर के बादशाह सुल्तान इबराहीम के अधिकार में था वह सुल्तान महमूद के अधिकार में रहे। फतह खाँ हरेवी के युद्ध में ७ हाथी, जो सुल्तान महमूद के अधिकार से निकल कर सुल्तान बहलोल के अधिकार में चले गये थे, सुल्तान बहलोल लौटा दे और यह निश्चय हुआ कि वर्षा ऋतु के उपरान्त शम्साबाद का सुल्तान बहलोल जूना खाँ से, जो सुल्तान महमूद की ओर से उस ओर का हाकिम था, ले ले।"

बहलोल का शम्साबाद की विजय करना तथा महमूद शर्की का आक्रमण

तत्पश्चात् सुल्तान महमूद जौनपुर चला गया और सुल्तान बहलोल ने जूना खाँ को फरमान भेजा कि वह निश्चित अवधि में शम्साबाद से चला जाय। उसने आज्ञा का पालन न किया। सुल्तान बहलोल ने उस पर आक्रमण किया। जूना खाँ भाग गया। सुल्तान बहलोल ने शम्साबाद को राय करन को प्रदान कर दिया। सुल्तान महमूद यह सूचना पाकर सुल्तान बहलोल के विरुद्ध शम्साबाद पहुँचा। कुतुब खाँ तथा दरिया खाँ लोदी ने सुल्तान महमूद की सेना पर रात्रि में छापा मारा। अचानक कुतुब खाँ का घोड़ा भड़क गया और कुतुब खाँ घोड़े से गिर पड़ा और बन्दी बना लिया गया। सुल्तान महमूद ने उसे जौनपुर भेज दिया और वह ७ वर्ष तक बन्दी अवस्था में रहा। सुल्तान बहलोल ने शाहजादा जलाल, शाहजादा सिकन्दर तथा एमादुल्मुल्क को सुल्तान महमूद की सेना के विरुद्ध युद्ध करने की सहायतार्थ जो किले में था भेजा और स्वयं सुल्तान महमूद से युद्ध करने लगा। इसी बीच में सुल्तान महमूद रुग्ण हो गया और उसकी मृत्यु हो गई।

जौनपुर के बादशाह मुहम्मद शाह तथा सुल्तान बहलोल में संधि

उसकी माता बीबी राजी ने अमीरों की सहमति से शाहजादा भीखन खाँ को सिंहासनारूढ़ कर दिया और उसकी उपाधि मुहम्मद शाह निश्चित हुई। दोनों बादशाहों में संधि हो गई और दोनों ने (२०४) प्रतिज्ञा की कि सुल्तान महमूद की विलायत मुहम्मद शाह के अधिकार में रहे और सुल्तान बहलोल के अधिकार में जो कुछ है वह उसी के अधीन रहे। मुहम्मद शाह जौनपुर चला गया और सुल्तान बहलोल देहली लौट गया। जब वह देहली के निकट पहुँचा तो कुतुब खाँ की बहिन शम्स खातून ने यह सन्देश भेजा कि जिस समय तक कुतुब खाँ मुहम्मद शाह के बन्दीगृह में है उस समय तक सुल्तान बहलोल को आराम तथा नींद हराम है।

बहलोल का जौनपुर पर आक्रमण

सुल्तान प्रभावित होकर मार्ग[1] से लौट पड़ा और मुहम्मद शाह के विरुद्ध चल खड़ा हुआ। मुहम्मद शाह ने भी जौनपुर से प्रस्थान किया और जब वह शम्साबाद पहुँचा तो उसने शम्साबाद को राय करन से जो सुल्तान बहलोल की ओर से हाकिम था लेकर जूना खाँ को दे दिया। राय प्रताप जो इसके

१ रनबीर, देहली तथा मुल्तान के मध्य से।

पूर्व वहलोल से मिल गया था, मुहम्मद शाह के प्रभुत्व को देख कर उससे मिल गया। मुहम्मद शाह सरसुती पहुचा। सुल्तान ने रापरी नामक स्थान में जो सरसुती के समीप था पडाव किया। कुछ दिन तक युद्ध होता रहा।

जौनपुर के कोतवाल द्वारा हसन खा की हत्या

मुहम्मद शाह न जौनपुर के कोतवाल को सरसुती से आदेश भजा कि उसके (सुल्तान के) भाई हसन खा तथा इस्लाम खा लोदी के पुत्र कुतुब खा की हत्या कर दी जाय। कोतवाल ने निवेदन किया कि, "बीबी राजी दोनो की इस प्रकार रक्षा करती हैं कि मेरे लिए उनकी हत्या करना सभव नही।" जब मुहम्मद शाह को यह पत्र प्राप्त हुआ तो उसने अपनी माता को जौनपुर से इस बहाने से बुलवाया कि वह उसकी सधि उसके भाई हसन खा से करा दे और थोडी सी विलायत हसन खा को दे दे। बीबी राजी ने जौनपुर से प्रस्थान किया। जौनपुर के कोतवाल ने मुहम्मद शाह के आदेशानुसार शाहजादा हसन खा की हत्या कर दी। बीबी राजी ने हसन खा की मृत्यु की शोक सबन्धी प्रथाओ को कन्नौज मे सम्पन्न कराया और वही ठहर गई तथा मुहम्मद शाह के समक्ष न आई। मुहम्मद शाह ने अपनी माता को लिखा कि "क्योकि समस्त शाहजादो का परिणाम यही होगा अत आप सभी की मृत्यु की शोक सबन्धी प्रथाओ को सम्पन्न कर लें।"

सुल्तान बहलोल द्वारा मुहम्मद शाह की पराजय

मुहम्मद शाह बडा ही निष्ठुर तथा आतकमयी बादशाह था। अमीर लोग उससे भयभीत तथा शकित रहते थे। एक दिन मुहम्मद शाह के भाई शाहजादा हुसेन, सुल्तान शाह तथा जलाल खा अजोधनी ने मुहम्मद शाह की सेवा में निवेदन किया कि "सुल्तान बहलोल की सेना हमारे ऊपर रात्रि मे (३०५) छापा मारने वाली है।" वे ३० हजार अश्वारोहियो तथा ३० हाथियो को लेकर शत्रुओ का मार्ग रोकने के उद्देश्य से मुहम्मद शाह की सेना से पृथक् हुए और झरने के किनारे पहुच गये। सुल्तान बहलोल ने यह सूचना पाकर उनसे युद्ध करने के लिए एक सेना नियुक्त की। शाहजादा हुसेन खा चाहता था कि शाहजादा जलाल खा को अपने साथ ले ले। उसने किसी को उसके बुलाने के लिए भेजा। इसी बीच में सुल्तान शाह ने कहा कि "प्रतीक्षा करनी उचित नही। जलाल खा पीछे से आता रहेगा" और वे कन्नौज की ओर चल खडे हुए। सयोगवश सुल्तान बहलोल की सेना ने जो उनसे युद्ध करने के लिए नियुक्त हुई थी वहा पहुच कर पडाव डाल दिया। शाहजादा जलाल खा, हुसेन खा के बुलाने पर मुहम्मद शाह की सेना से पृथक् होकर निकला और झरने की ओर चल खडा हुआ। सुल्तान बहलोल की सेना को शाहजादा हुसेन खा की सेना समझ कर निकट पहुचा। सुल्तान बहलोल की सेना जलाल खा को बन्दी बनाकर सुल्तान के समक्ष ले गई। उसने उसे कुतुब खा के बदले में समझ कर बन्दी बना दिया। मुहम्मद शाह ने युद्ध न कर सकने के कारण कन्नौज की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान बहलोल ने गगा नदी तक उसका पीछा किया और उसका बचा-खुचा सामान लूट कर लौट गया।

जौनपुर मे हुसेन शाह शर्की का सिंहासनारूढ होना

जब शाहजादा हुसेन खा ८५० हि० (१४५१-२ ई०) में बीबी राजी के समक्ष पहुचा तो अपनी माता तथा शर्की राज्य के उच्च पदाधिकारियो की सहायता से सिंहासनारूढ हो गया। उसने सुल्तान हुसेन की उपाधि धारण कर ली। शर्की सुल्तानो के राज्य के वृत्तान्त के सम्बन्ध में इसका सविस्तार उल्लेख हो चुका है। उसने मलिक मुबारक गुग, मलिक अली गुजराती तथा अन्य अमीरो को मुहम्मद

शाह के विरुद्ध जो गगा तट पर राजगर (राजगढ) के घाट पर पडाव किये हुए थे, नियुक्त किया। जब सुल्तान हुसेन की सेना निकट पहुची, तो कुछ अमीर, जो मुहम्मद शाह के सहायक थे पृथक् होकर उससे मिल गये। मुहम्मद शाह कुछ सवारो सहित भाग कर एक उद्यान में जो समीप था चला गया और उसे वही घेर लिया गया।

(३०६) मुहम्मद शाह बडा ही कुशल धनुर्धर था। उसने धनुप में वाण लगाये। बीबी राजी ने उसके सिलाहदार से मिल कर उसके निषग के वाणो के लोहे की नोक को निकलवा दिया था। मुहम्मद शाह जो वाण भी हाथ में लेता, वह निषग से बिना नोक के निकलता। अन्त मे उसने तलवार से युद्ध प्रारम्भ कर दिया और कुछ लोगो की हत्या कर दी। अचानक मुबारक गुग का एक वाण मुहम्मद शाह की ग्रीवा पर लगा, वह उसी घाव के कारण घोडे से गिर कर मर गया।

सुल्तान हुसेन तथा सुल्तान वहलोल की सधि

तत्पश्चात् सुल्तान हुसेन ने सुल्तान वहलोल से सधि कर ली और दोनो ने प्रतिज्ञा की कि ४ वर्ष तक दोनो अपनी अपनी विलायत से सतुष्ट रहेंगे। राय प्रताप, जो इससे पूर्व मुहम्मद शाह से मिल गया था, कुतुव खा अफगान के प्रोत्साहन देने पर सुल्तान वहलोल से मिल गया। जिस समय सुल्तान हुसेन ने कनौज से प्रस्थान करके उस हौज के किनारे जिसे हरिहा कहते है पडाव किया तो उसने कुतुव खा लोदी को, जौनपुर से बुलवा कर घोडा, खिलअत तथा अन्य पुरस्कार देकर, वडे सम्मान से सुल्तान वहलोल के पास भेज दिया। सुल्तान वहलोल ने भी शाहजादा जलाल खा को आदर-सम्मान (३०७) तथा इनाम द्वारा प्रसन्न करके सुल्तान हुसेन की सेवा में विदा कर दिया।

सुल्तान वहलोल द्वारा शम्सावाद की विजय

कुछ समय उपरान्त सुल्तान वहलोल ने शम्सावाद पर चढाई की और शम्सावाद को जूना खा के अधिकार से लेकर राय करन को प्रदान कर दिया। उस स्थान पर राय प्रताप का पुत्र नर सिंह राय[1] सुल्तान बहलोल की सेवा में उपस्थित हुआ। इससे पूर्व राय प्रताप ने एक भाला, जो उस समय प्रभुत्व की पताका सदृश होता था, एव एक नक्कारा दरिया खा से जबरदस्ती छीन लिया था। दरिया खा ने उसके पुन नर सिंह की कुतुब खा से परामर्श करके हत्या कर दी। इसी बीच में हुसेन खा अफगान का पुन कुतुव खा, मुवारिज़ खा वेहता तथा राय प्रताप, सुल्तान हुसेन शर्की से मिल गये। सुल्तान बहलोल युद्ध की शक्ति न देख कर लौट गया।

सुल्तान हुसेन द्वारा वहलोल पर आक्रमण

कुछ दिन उपरान्त सुल्तान बहलोल ने पजाव की सुव्यवस्था एव मुल्तान के हाकिम के विद्रोह के दमन हेतु मुल्तान की ओर प्रस्थान किया। कुतुब खा लोदी तथा खाने जहा को अपना नायब नियुक्त करके देहली में छोड दिया। सुल्तान वहलोल अभी मार्ग ही में था कि उसे सूचना प्राप्त हुई कि सुल्तान हुसेन सुव्यवस्थित सेनायें तथा पर्वतरूपी हाथियो को लेकर देहली पर चढाई करने के उद्देश्य से आ रहा है। सुल्तान बहलोल शीघ्रातिशीघ्र देहली वापस हुआ और शत्रु से युद्ध करने के लिए वढा। चदवार में युद्ध हुआ तथा ७ दिन तक दोनो ओर की सेनायें युद्ध करती रही। इसी बीच में अहमद खा मेवाती तथा

१ यह शब्द विभिन्न रूप से लिखा गया है: बर सिंह, नर सिंह, हर सिंह।

कोल का हाकिम रुस्तम खा सुल्तान हुसेन से मिल गये। तातार खा लोदी, सुल्तान बहलोल से मिल गया। जब कुछ समय तक युद्ध होता रहा तो राज्य के उच्च पदाधिकारियों के प्रयास से यह निश्चय हुआ कि ३ वर्ष तक दोनो बादशाह अपनी-अपनी विलायत से सतुष्ट रहें और परस्पर युद्ध न करें।

सुल्तान बहलोल द्वारा राज्य के सुव्यवस्थित करने का प्रयत्न

(३०८) सधि के उपरान्त सुल्तान हुसेन ने इटावा को घेर लिया। सुल्तान बहलोल देहली पहुच कर ३ वर्ष तक वही ठहरा तथा राज्य और सेना को सुव्यवस्थित करता रहा। इसी बीच में सुल्तान बहलोल, अहमद खा मेवाती के विरुद्ध जो इससे पूर्व सुल्तान हुसेन का सहायक बन गया था पहुचा। जब वह मेवात पहुचा, तो अहमद खा को सुल्तान हुसेन का एक प्रतिष्ठित अमीर खाने जहा प्रोत्साहन देकर सेवा में लाया। उसी समय ब्याना के हाकिम यूसुफ खा जलवानी के पुत्र अहमद खा ने ब्याना मे सुल्तान हुसेन के नाम का खुत्वा पढवा दिया।

सुल्तान हुसेन द्वारा बहलोल पर आक्रमण तथा सधि

३ वर्ष व्यतीत हो जाने के उपरान्त सुल्तान हुसेन ने १ लाख अश्वारोही तथा १ हजार हाथी लेकर देहली पर आक्रमण किया। सुल्तान बहलोल देहली से निकला और उसने भतवारा[1] कस्बे के निकट युद्ध किया। खाने जहा ने मध्यस्थ बन कर दोनो पक्षों में सधि करा दी। सधि के उपरान्त सुल्तान हुसेन इटावा पहुचा और वही ठहर गया। सुल्तान बहलोल देहली पहुचा। कुछ समय उपरान्त सुल्तान हुसेन ने पुन सुल्तान बहलोल पर आक्रमण किया। सुल्तान बहलोल देहली से निकला। राय सिखर के निकट दोनों ओर की सेनाओ में युद्ध होता रहा। अत में सधि हो गई और सुल्तान हुसेन इटावा की ओर चल दिया। सुल्तान बहलोल देहली लौट गया।

इसी समय सुल्तान हुसेन की माता बीबी राजी की इटावा में मृत्यु हो गई। राय करन सिंह का पुत्र कल्याण मल, ग्वालियर का राजा तथा कुतुब खा लोदी, जो चदवार से ग्वालियर गया हुआ था, सुल्तान हुसेन के पास पहुचे। जब कुतुब खा ने सुल्तान हुसेन को सुल्तान बहलोल से शत्रुता प्रदर्शित करते हुए देखा तो उसने चाटुकारी करते हुए कहा कि, "बहलोल आपके सेवकों के समान है। वह आपके बराबर नही है। मैं जब तक देहली को आपके अधीन न कर लूंगा उस समय तक निश्चिन्त नही रह (३०९) सकता।" इस प्रकार युक्ति द्वारा वह सुल्तान हुसेन से विदा होकर सुल्तान बहलोल की सेवा में पहुचा और कहा कि, "मैं बडी युक्ति तथा बहाने से सुल्तान हुसेन के हाथ से मुक्त हो सका हू। वह आपके प्रति शत्रुता में दृढ है। आपको अपनी चिन्ता करनी चाहिए।"

सुल्तान हुसेन द्वारा देहली पर आक्रमण

इसी बीच में सुल्तान अलाउद्दीन की बदायू में मृत्यु हो गई। सुल्तान इटावा से शोक प्रकट करने के लिए बदायू पहुचा और शोक की प्रथाओ के समाप्त होने के उपरान्त उसने सुल्तान अलाउद्दीन के पुत्र से बदायू को लेकर अपने अधिकार में कर लिया और इस प्रकार कृतघ्नता प्रदर्शित की। वहा से वह सबल पहुचा और सबल के हाकिम तातार खा के पुत्र मुबारक खा को बन्दी बनाकर सारन भेज दिया। स्वय बहुत बडी सेना तथा १ हजार हाथी लेकर देहली पहुचा। जिलहिज्जा ८८३ हि० (फरवरी-माच

[1] यह शब्द विभिन्न रूप से लिखा गया है: मतोरा, नहवारा, भतवारा, थनवारा, तहवारा।

१४७९ ई०) में यमुना तट पर कुजा[1] नामक घाट पर पडाव किया। सुल्तान बहलोल, खाने जहा के पुत्र हुसेन खा को मेरठ की ओर से रवाना करके स्वय सरहिन्द से देहली पहुचा। दोनो सेनायें कुछ समय तक युद्ध करती रही। शर्की सुल्तान अपनी सख्या की अधिकता के कारण विजयी रहते थे। अन्त में कुतुब खा ने सुल्तान हुसेन के पास अपना आदमी भेज कर यह सदेश प्रेषित किया कि "मैं बीबी राजी का बडा आभारी हू। जब मैं जौनपुर में बन्दी था तो उन्होने मेरे प्रति नाना प्रकार के दयायुक्त व्यवहार किये थे। अब आपके लिए यही उचित है कि आप सधि करके लौट जायें। गगा के उस ओर की विलायत[2] आपके अधिकार में रहे और जो कुछ गगा के इस पार है उस पर सुल्तान बहलोल का अधिकार रहे।"

दोनो पक्षो ने यह बात स्वीकार करके विरोध का अन्त कर दिया। सुल्तान हुसेन ने सधि पर विश्वास करके अपनी सेना के शिविर इत्यादि छोड कर प्रस्थान किया। सुल्तान बहलोल ने अवसर पाकर उसका पीछा किया और सुल्तान हुसेन की सेना के शिविर को लूट कर कुछ खजाना तथा असबाब जो घोडो एव हाथियो पर लदा हुआ था अपने अधिकार में कर लिया। सुल्तान हुसेन की सेना के ४० प्रतिष्ठित अमीर उदाहरणार्थ कुतलुग खा वजीर[3], जो अपने समय का बहुत बडा विद्वान् था, बूधू नायबे अर्ज[4] तथा उसी प्रकार के लोग बन्दी बना लिये गये। कुतलुग खा को बन्दी बनाकर कुतुब खा लोदी को (३१०) सौंप दिया गया। सुल्तान बहलोल ने पीछा करके सुल्तान हुसेन के परगनो, उदाहरणार्थ कम्पिला, पतियाली[5], शम्साबाद, सकेत, कोल, मारहरा, तथा जलाली नामक कस्बो पर अधिकार जमा लिया। प्रत्येक परगने में उसने शिकदार[6] नियुक्त कर दिये। जब इस प्रकार पीछा करता हुआ सुल्तान बहलोल सीमा से बढ गया तो सुल्तान हुसेन ने पलट कर रापरी के अधीन आराम महजूर[7] ग्राम में मुकाबला किया। अन्त में इस शर्त पर सधि हो गई कि सुल्तान हुसेन तथा सुल्तान बहलोल अपनी-अपनी विलायत[8] तथा प्राचीन सीमा से सतुष्ट रहें। सधि के उपरान्त सुल्तान हुसेन रापरी पहुचा और सुल्तान बहलोल घोपामऊ[9] ग्राम को चला गया।

कुछ समय उपरान्त सुल्तान हुसेन ने पुन सेना एकत्र करके सुल्तान बहलोल पर आक्रमण किया और सोनहार ग्राम के समीप घोर युद्ध हुआ। सुल्तान हुसेन पुन पराजित हुआ। लोदियो को अत्यधिक धन-सपत्ति प्राप्त हुई। इससे सुल्तान बहलोल की शक्ति तथा वैभव में वृद्धि हो गई। सुल्तान हुसेन पुन रापरी पहुचा। सुल्तान बहलोल ने घोपामऊ ग्राम के निकट पडाव किया।

इसी बीच में खाने जहा की मृत्यु के, जो देहली में था, समाचार सुल्तान बहलोल को प्राप्त हुए। सुल्तान ने उसके पुत्र को खाने जहा की उपाधि देकर उसके पिता के स्थान पर नियुक्त कर दिया। वहा

१ *इस स्थान का नाम हस्तलिखित पोथियों में विभिन्न प्रकार से लिखा है कजा, घमा, कीचा, गनजीना,* कच्छा।

२ प्रदेश।

३ मुख्य मन्त्री।

४ आरिजे ममालिक का सहायक। सेना की भरती तथा निरीक्षण आरिजे ममालिक किया करता था।

५ पटियाली।

६ शिक का हाकिम। देखिये पृ० ४ नोट नं० ३०।

७ इस नाम को विभिन्न रूप से हस्तलिखित पोथियों में लिखा गया है आराम महजूर, आराम लहजू, आराम बख्श। फ़िरिश्ता के अनुसार 'राम पिकरा'।

८ राज्य।

९ हस्त लिखित पोथियों में यह नाम विभिन्न रूप से लिखा है धोवामऊ, धोयामऊ, हरपामऊ।

से उसने सुल्तान हुसेन के ऊपर रापरी में चढाई की। युद्ध में उसे विजय प्राप्त हुई। भागते समय यमुना नदी को पार करते हुए सुल्तान हुसेन के कुछ पुत्र तथा परिवार वाले नष्ट हो गये।

(३११) सुल्तान हुसेन ग्वालियर की ओर रवाना हुआ। हतकान्त[1] के समीप भदौरिया नामक समूह ने उसके शिविर पर छापा मारा और उसे लूट लिया। जब वह ग्वालियर पहुचा तो ग्वालियर के राजा राय कीरत सिंह[2] ने अधीनता स्वीकार कर ली और सेवको की भाति व्यवहार किया। उसने कई लाख तन्के नकद, कुछ खेमे, सरापर्दे[3], घोडे हाथी तथा ऊट पेशकश में भेंट किये और उसके हितैपियो की श्रेणी में सम्मिलित हो गया। उसने सुल्तान हुसेन के साथ एक सेना भी कर दी और वह स्वय कालपी तक उसके साथ गया।

इस बीच में सुल्तान बहलोल ने इटावा पर आक्रमण कर दिया। सुल्तान हुसेन का भाई इब्राहीम खा, हैवत खा उर्फ़ मलिक करकर इटावा के किले में बन्द हो गये और ३ दिन तक युद्ध करते रहे। अन्त में क्षमा-याचना करके उन्होने इटावा को सौंप दिया। सुल्तान बहलोल ने इटावा मुबारक खा नोहानी[4] के पुत्र इब्राहीम खा को दे दिया। इटावा की विलायत[5] के कुछ परगने राय दादू को देकर उसने सुल्तान हुसेन पर एक भारी सेना सहित चढाई की। जब वह कालपी के अधीन राकानू ग्राम में पहुचा तो सुल्तान हुसेन भी कालपी से उसका मुकाबला करने के लिए बढा। कुछ समय तक दोनों सेनाओ में युद्ध होता रहा। इसी बीच में बक्सर[6] की विलायत के हाकिम राय तिलोक चन्द ने सुल्तान बहलोल की सेवा में पहुच कर सुल्तान को उस स्थान से जहा नदी का घाट था पार उतार दिया। सुल्तान हुसेन युद्ध न कर सका और बेहता[7] की विलायत की ओर चला गया। बेहता के राजा ने उसका स्वागत किया और उससे सौजन्यपूर्ण व्यवहार किया। कई लाख तन्के, घोडे तथा हाथी पेशकश के रूप में भेंट किये और उसको जौनपुर तक पहुचाने के लिए सेना उसके साथ कर दी।

(३१२) तत्पश्चात् सुल्तान बहलोल ने जौनपुर पर आक्रमण किया। जब वह निकट पहुँचा तो सुल्तान हुसेन जौनपुर छोड कर बहराइच के मार्ग से कन्नौज की ओर चल दिया। सुल्तान बहलोल ने भी कन्नौज की ओर प्रस्थान किया। रहब नदी के निकट युद्ध हुआ। युद्ध में सुल्तान हुसेन की पराजय हुई जो अब स्वाभाविक हो गई थी। उसकी सपत्ति तथा सेना लोदियो के अधिकार में आ गई। उसकी सम्मानित पत्नी बीबी खूंज़ा, जो खिज्र खा के पौत्र सुल्तान अलाउद्दीन की पुत्री थी, बन्दी बना ली गई। सुल्तान बहलोल ने सम्मानपूर्वक उसकी रक्षा की। कुछ समय उपरान्त सुल्तान बहलोल ने पुन जौनपुर की विलायत पर आक्रमण किया। बीबी खूंज़ा किसी न किसी युक्ति से मुक्त होकर अपने पति के पास पहुँच गई।

१ अबुल फ़ज़ल के अनुसार भदावर का मुख्य कस्बा, आगरा के दक्षिण पूर्व में। वहाँ के निवासी भदौरिया कहलाते थे।
२ कीर्तिसिंह।
३ सरापर्दे — शिविर।
४ लोहानी।
५ प्रदेश।
६ गंगा के बायें तट पर, उनास (उनाव) से ३४ मील दक्षिण पूर्व (फ़िरिश्ता के अनुसार 'कठिहर')।
७ कुछ हस्तलिखित पोथियों के अनुसार ' भत्ता, यत्ता इत्यादि, बेहटा।

सुल्तान बहलोल द्वारा जौनपुर पर अधिकार

इस बार सुल्तान बहलोल ने जौनपुर पर अधिकार जमा लिया और उसे मुबारक खा लोहानी को प्रदान कर दिया। कुछ अन्य अमीरो को, उदाहरणार्थ कुतुब खा लोदी, खाने जहा, इत्यादि को मँझौली[1] कस्बे में छोड कर बदायूँ की ओर लौट गया। सुल्तान हुसेन ने अवसर पाकर सेना सहित जौनपुर पर चढाई की। सुल्तान बहलोल के अमीर जौनपुर को छोड कर कुतुब खा के पास मँझौली चल दिये। वे वहा भी न ठहर सके और सुल्तान हुसेन से निष्ठापूर्वक व्यवहार करके सहायता पहुचने तक अपने आपको उसका हितैषी प्रदर्शित करते रहे। सुल्तान बहलोल को अपनी सेना की, जो कुतुब खा लोदी के अधीन थी, दुर्दशा के विषय मे जब सूचना मिली, तो उसने अपने पुत्र बारबक शाह को उसकी सहायतार्थ भेजा और स्वय भी उसके पीछे जौनपुर की ओर रवाना हुआ। सुल्तान हुसेन मुकाबला न कर सका और बिहार चल दिया।

सुल्तान का धौलपुर तथा रणथम्भोर पर आक्रमण

जब सुल्तान बहलोल हल्दी नामक कस्बे में पहुचा, तो उसे कुतुब खा लोदी की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुए। कुछ दिनो तक वह शोक सबधी प्रथाओं को सम्पन्न करने के उपरान्त जौनपुर पहुचा और बारबक शाह को शर्की सुल्तानों के सिंहासन पर आरूढ करके वही छोड़ गया। उसने स्वय काल्पी की ओर प्रस्थान किया और काल्पी को शाहज़ादा ख्वाजा बायज़ीद के पुत्र आज़म हुमायूँ को सौंप कर (३१३) चदवार के मार्ग से धौलपुर पहुचा। धौलपुर के राय ने उसका स्वागत करके कई मन सोना भेंट किया और उसके राज्य के हितैषियो में सम्मिलित हो गया। जब सुल्तान बहलोल बारी परगने के निकट पहुचा तो बारी के हाकिम इकबाल खा ने उसकी बडी सेवा की और उसके सेवकों में सम्मिलित हो गया। उसने भी कई मन सोना भेंट किया। सुल्तान ने बारी उसी को प्रदान कर दिया। वहा से उसने रणथम्भोर के अधीन अलहनपुर पर चढाई की। अलहनपुर की विलायत को विध्वस करके वहा के उद्यानो तथा वृक्षो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और देहली वापस चला गया।

सुल्तान की मृत्यु

कुछ दिन उपरान्त वह हिसार फीरोजा पहुचा और कुछ मास वहा ठहर कर देहली लौट आया। कुछ समय उपरान्त उसने ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया। ग्वालियर के हाकिम राजा मान ने अधीनता प्रदर्शित की और ८० लाख तन्के भेंट किये। ग्वालियर उसी के पास रहने दिया गया। वहा से वह इटावा पहुचा। इटावा को राय दादू के पुत्र सकत सिंह से लेकर लौट आया। मार्ग में वह रुग्ण हो गया और सकेत परगने के अधीन तिलावली ग्राम में ८९४ हि० (१४८९ ई०) में उसकी मृत्यु हो गई। उसने ३८ वर्ष ८ मास तथा ८ दिन तक राज्य किया।

सुल्तान सिकन्दर बिन सुल्तान बहलोल लोदी

सिंहासनारोहण

(३१४) जिस समय सुल्तान बहलोल की मृत्यु हुई तो शाहज़ादा निज़ाम खा देहली में था। वह शीघ्रातिशीघ्र अपने पिता के जनाजे के पास जलाली पहुचा, और अपने पिता की लाश देहली भेज दी।

1 गोरखपुर जिले में गंडक नदी के तट पर। हस्तलिखित पोथियों में उसके रूप निम्नांकित हैं : महजौली, मजहौली, महमूती, इत्यादि।

खाने जहा, खाने खाना फर्मुली तथा अपने पिता के समस्त अमीरो की सहमति से शुक्रवार १७ शाबान ८९४ हि० (१६ जुलाई १४८९ ई०) को जलाली कस्बे के निकट एक टीले पर जो काली नदी के तट पर स्थित है और जिसे कूशके सुल्तान फीरोज[1] कहते हैं सिंहासनारूढ हुआ। उसकी उपाधि सुल्तान सिकन्दर हुई।

सुल्तान के पुत्र तथा अमीर

सुल्तान बहलोल के उस समय ६ पुत्र थे इबराहीम खा, जलाल खा, इस्माईल खा, हुसेन खा, महमूद खा तथा शेख आजम हुमायूँ। उसके प्रतिष्ठित अमीरो में ५३ व्यक्ति थे। खाने जहा बिन (पुत्र) खानजहा लोदी, अहमद खा पुत्र खाने जहा मुबारक खा लोहानी, महमूद खा लोदी ईसा खा बिन (पुत्र) तातार खा लोदी, खाने खाना शेखजादा मुहम्मद फर्मुली, खाने खाना लोहानी, आजम हुमायूँ शिरवानी, दरिया खा का पुत्र मुबारक खा लोहानी बिहार का नायब, आलम खा लोदी, जलाल खा, महमूद खा लोदी का पुत्र, कालपी का नायब, शेर खा लोदी, मुबारक खा लोदी मूसा खेल, मुबारक खा लोदी का पुत्र अहमद खा, एमाद पुत्र खाने खाना फर्मुली, उमर खा शिरवानी, भीखन खा पुत्र आलम खा लोदी, इटावा का हाकिम, (३१५) इबराहीम खा शिरवानी, मुहम्मद शाह लोदी, बाबर खा शिरवानी हुसेन फर्मुली, सारन का नायब, सुलेमान फर्मुली खाने खाना का दूसरा पुत्र, सईद खा लोदी मुबारक खा लोदी का पुत्र, इस्माईल खा लोहानी, तातार खा फर्मुली, उस्मान खा फर्मुली, शेखजादा मुहम्मद पुत्र एमाद फर्मुली, शेख जमाल उस्मान, शेख अहमद फर्मुली, आदम लोदी, हुसेन खा, आदम लोदी का भाई, कबीर खा लोदी, नसीर खा लोहानी, गाज़ी खा लोदी, तातार खा जथरा[2] का हाकिम, मौलाना जुम्मन कम्बोह हुज्जाबे खास[3], मज्दुद्दीन हुज्जाबे खास, शेख उमर हुज्जाबे खास, शेख इबराहीम हुज्जाबे खास, मुकबिल हुज्जाबे खास, ताहिर काबुली का पुत्र काज़ी अब्दुल वाहिद हुज्जाबे खास, खवास खा का पुत्र खवास खा भूवा, ख्वाजा नसरुल्ला, मुबारक खा, इकबाल खा बारी कस्बे का हाकिम, ख्वाजा असगर देहली के हाकिम किवाम का पुत्र, शेर खा मुबारक खा लोहानी का भाई, एमादुलमुल्क कम्बोह, दरिया खा लोहानी से सबन्धित जो मीर अदल[4] था।

रापरी तथा इटावा की सुव्यवस्था

कुछ समय उपरान्त सुल्तान सिकन्दर ने रापरी परगने की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान सिकन्दर का भाई आलम खा रापरी एव चदवार के किले में कुछ दिन तक बन्द रहा। अन्त में वह भाग कर ईसा खा बिन तातार खा लोदी के पास पटियाली चला गया। रापरी की विलायत खाने खाना लोहानी को प्रदान कर दी गई। सुल्तान ने इटावा पहुच कर ७ मास वहा व्यतीत किये। आलम खा को अपनी ओर मिला कर उसे आज़म हुमायूँ से पृथक् कर दिया और इटावा की विलायत[5] उसे प्रदान कर दी। उसने इस्माईल खा लोहानी को सधि हेतु जौनपुर के बादशाह बारबक शाह के पास भेजा। उसने स्वय

१ सुल्तान फ़ीरोज़ का महल।
२ यह शब्द विभिन्न रूप से लिखा गया है जथरा, मतवा, जहरा, झतरा। फ़िरिश्ता के अनुसार तिजारा।
३ खास हाजिब।
४ न्याय करने का कार्य मीर अदल के अधीन होता था।
५ प्रदेश।

पटियाली के हाकिम ईसा खा पर चढाई की। ईसा खा युद्ध के उपरान्त आहत हुआ। अत में उसने दीनता प्रकट करते हुए अधीनता स्वीकार कर ली और उन्ही घावो के कारण मर गया।

सुल्तान द्वारा बारबक शाह पर आक्रमण

राय गणश जो बारबक शाह का सहायक था आकर सुल्तान से मिल गया। पटियाली की अक्ता उसे प्रदान कर दी गई। सुल्तान ने बारबक शाह पर चढाई की। बारबक शाह (३१६) जौनपुर से कन्नौज पहुचा। दोनो ओर की सेनाओ में युद्ध हुआ। युद्ध में मुबारक खा बन्दी बना लिया गया। बारबक शाह पराजित होकर बदायूँ चला गया। सुल्तान ने उसका पीछा करके बदायूँ को घेर लिया। बारबक शाह ने दीनता प्रकट करते हुए आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। सुल्तान ने उसे सम्मानित करके प्रसन्न किया और अपने साथ जौनपुर ले जाकर पूर्व की भाति शर्की सुल्तानो के सिंहासन पर आरूढ कर दिया, किन्तु जौनपुर की विलायत के परगने अपने अमीरो में बाट दिये। प्रत्येक स्थान पर अपनी ओर से हाकिम नियुक्त कर दिये और उसकी सेवा में अपने विश्वासपात्रो को नियुक्त कर दिया।

कालपी से ब्याना तक की सुव्यवस्था

वहा से वह कोटला तथा कालपी पहुचा। कालपी को शाहज़ादा ख्वाजा बायज़ीद के पुत्र आजम हुमायूँ से लेकर मुहम्मद खा लोदी को प्रदान कर दिया। वहा से वह जयरा पहुचा। जयरा के हाकिम तातार खा ने आज्ञाकारिता तथा स्वामिभक्ति प्रदर्शित की। उसने जयरा उसको प्रदान कर दिया और तत्पश्चात् ग्वालियर के किले की ओर प्रस्थान किया। ख्वाजा मुहम्मद फर्मुली को विशेष खिलअत प्रदान करके ग्वालियर के राजा मान के पास भेजा। राजा मान ने भी आज्ञाकारिता स्वीकार की और अपने भतीजे को सुल्तान की सेवा में इस आशय से भेजा कि वह ब्याना तक सुल्तान के साथ साथ जाय। ब्याना के हाकिम सुल्तान शरफ ने, जो सुल्तान अहमद जलवानी का पुत्र था, आज्ञाकारिता प्रदर्शित की। सुल्तान ने उससे कहा कि "तू ब्याना छोड दे ताकि उसके बदले में तुझे जलेसर, चदवार, मारहरा तथा सकेत दे दिया जाय।" सुल्तान शरफ, उमर खा शिरवानी को अपने साथ लेकर ब्याना इस आशय से पहुचा कि किले की कुजियाँ उसे सौंप दे। ब्याना पहुचकर उसने विश्वासघात किया और किले को दृढ बना लिया। सुल्तान सिकन्दर आगरा पहुचा। हैबत खा जलवानी जो सुल्तान शरफ के अधीन था आगरा के किले में बन्द हो गया। सुल्तान अपने अमीरो में से कुछ लोगो को आगरा में नियुक्त करके स्वय ब्याना पहुचा और ब्याना को बुरी तरह घेर लिया। सुल्तान शरफ ने विवश होकर दीनता प्रकट की और क्षमा याचना की। ८९७ हि० (१४९१-९२ ई०) में उसे ब्याना पर विजय प्राप्त हो गई। ब्याना की विलायत[1] (३१७) खाने खाना फ़र्मुली को प्रदान कर दी गई। सुल्तान शरफ को निर्वासित कर दिया गया। वह ग्वालियर पहुचा। सुल्तान देहली लौट गया और २४ दिन तक देहली में ठहरा रहा।

जौनपुर में विद्रोह

इसी बीच में समाचार प्राप्त हुए कि जौनपुर की विलायत के ज़मीदारो, बजकूतियो[2] तथा अन्य लोगो ने लगभग १ लाख पदाती एव अश्वारोही एकत्र कर लिये है। मुबारक खा के भाई शेर खा की

१ प्रदेश।
२ बचगोटियों।

हत्या कर दी गई है। मुबारक खा झूसी पयाग[1] के घाट पर, जो अब इलाहाबाद कहलाता है और जिसका निर्माण खलीफाये इलाही अर्थात् अक्बर बादशाह द्वारा हुआ था, नदी पार कर रहा था किन्तु मल्लाहो द्वारा वन्दी बना लिया गया। पतना[2] के राजा राय भेद को जब इस घटना की सूचना मिल गई तो उसने मुबारक खा को वन्दी बना लिया। बारबक शाह उस समूह के प्रभुत्व को देख कर जौनपुर से दरियाबाद, मुहम्मद फर्मुली के पास जो काला पहाड के नाम से प्रसिद्ध था पहुच गया।

सुल्तान का जौनपुर की ओर प्रस्थान

सुल्तान सिकन्दर ने पुन ८९७ हि० (१४९१-९२ ई०) मे उस ओर प्रस्थान किया। गगा नदी पार करके जब वह दलमऊ पहुचा तो बारबक शाह समस्त अमीरो सहित उसकी सेवा मे उपस्थित हुआ और उसकी कृपाओ द्वारा सम्मानित हुआ। सुल्तान के आगमन के कारण राय भेद ने आतकित होकर मुबारक खा लोहानी को वन्दीगृह से मुक्त करके सुल्तान की सेवा में भेज दिया। सुल्तान वहा से कहतर[3] पहुचा। वहा जमीदारो की बहुत वडी सख्या ने एकत्र होकर सुल्तान से युद्ध किया। अंत मे पराजित होकर वे तलवार के घाट उतार दिये गये और छिन्न भिन्न हो गये। सुल्तान के सैनिको को अत्यधिक धन-सपत्ति प्राप्त हुई। सुल्तान जौनपुर पहुचा और बारबक शाह को पुन जौनपुर में छोड कर लौट आया।

जौनपुर की व्यवस्था

वह अवध के निकट एक मास तक भ्रमण करता तथा शिकार खेलता रहा। जब वह कहतर पहुचा तो उसे यह समाचार प्राप्त हुए कि बारबक शाह जमीदारो के प्रभुत्व के कारण जौनपुर में नही ठहर सकता। सुल्तान ने आदेश दिया कि मुहम्मद फर्मुली, आजम हुमायूं तथा खाने खाना लोहानी अवध के मार्ग से और मुबारक खा आगरा के मार्ग से जौनपुर की ओर प्रस्थान करें और बारबक शाह को वन्दी बनाकर सुल्तान की सेवा में भेज दें। वे आदेशानुसार जौनपुर पहुचे और बारबक शाह को पकडवा कर (३१८) बन्दी बना लिया और सुल्तान की सेवा में भेज दिया। जब बारबक शाह सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया गया तो उसे हैबत खा तथा उमर खा शिरवानी को सौंप दिया गया।

चुनार पर चढाई

सुल्तान ने स्वय जौनपुर के निकट से चुनार के किले पर चढाई की। सुल्तान हुसेन शर्की के कुछ अमीरो ने जो उस स्थान पर थे युद्ध किया और पराजित हुए। वे किले में प्रविष्ट हो गये। किले के दृढ होने के कारण सुल्तान ने किले को न घेरा और कन्तत[4] की ओर जो पटना के अधीन है पहुचा। वहा के राजा राय भेद ने उसका स्वागत किया और सुल्तान ने कन्तत को उसे प्रदान कर दिया तथा अरैल[5] की ओर प्रस्थान किया। इसी बीच में राय भेद शक्ति होकर अपनी सपत्ति तथा परिजन छोड कर पटना की ओर भाग गया। सुल्तान ने उसकी सपत्ति तथा परिजन उसके पास भेज दिये।

१ प्रयाग।
२ पटना।
३ कटिहर (रुहेल खड)।
४ यह नाम विभिन्न रूप से लिखा है : कन्तल, कस्तत, कन्तत : इलाहाबाद सरकार में गंगा के दक्षिण पश्चिम में।
५ अरैल :— इलाहाबाद के समीप।

जब सुल्तान अरैल पहुचा, तो उसने लूट-मार प्रारम्भ कर दी और बागो तथा उद्यानो को नष्ट करके कडा के मार्ग से दलमऊ पहुचा। मुबारक खा लोहानी के भाई शेर खा की पत्नी से स्वय विवाह कर लिया और शम्सावाद पहुचा। वहा ६ मास तक ठहर कर सबल पहुचा और सबल से पुन. शम्सावाद की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में मदमऊ नाकुल[1] ग्राम को, जो विद्रोहियो का गढ था, नष्ट कर दिया *और वहा के लोगो की हत्या कर दी। वहा के विद्रोही भाग कर वज़ीराबाद ग्राम में प्रविष्ट हो गये।* वज़ीराबाद के आदमियो की भी हत्या करके तथा उन्हें वन्दी बनाकर शम्साबाद पहुचा और वर्षा ऋतु वही व्यतीत की।

सुल्तान सिकन्दर का पटना की ओर प्रस्थान

९०० हि० (१४९४-५ ई०) में उसने राजा भेद को दण्ड देने के लिए पटना की विलायत[2] की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में विद्रोहियो के स्थान नष्ट कर दिये। उनकी हत्या करने लगा और उन्हें बन्दी बनाने लगा। जब वह खारान खाती[3] पहुचा तो उस स्थान पर राजा पतना[4] के पुत्र नर सिंह[5] से युद्ध हुआ। नर सिंह पराजित होकर खाती छोड कर पतना भाग गया। जब सुल्तान पटना पहुचा तो पटना का राजा सरकिज[6] नामक स्थान की ओर भाग गया किन्तु मार्ग में मृत्यु हो गई। सुल्तान ने सरकिज से पटना के अधीनस्थ सन्ध[7] नामक स्थान की ओर प्रस्थान किया। जब वह वहा पहुचा तो (३१९) अफीम, कोकनार[8], नमक तथा तेल का मूल्य बहुत बढ़ गया। सुल्तान वहा से जौनपुर पहुचा और जिन घोडो ने पटना की उस यात्रा में कष्ट भोगे थे वे नष्ट हो गये। जिसके पास पायगाह[9] में सौ घोडें थे उसमें से ९० नष्ट हो गये।

सुल्तान हुसेन का सुल्तान सिकन्दर पर आक्रमण

राय भेद के पुत्र राय लक्ष्मी चन्द तथा समस्त ज़मीदारो ने सुल्तान हुसेन को लिखा कि "सुल्तान सिकन्दर के घोडे नष्ट हो चुके है और अस्त्र-शस्त्र का विनाश हो गया है। यह बडा अच्छा अवसर है।" सुल्तान हुसेन ने सेना एकत्र करके १०० हाथी सहित बिहार से सुल्तान सिकन्दर पर आक्रमण किया। *सुल्तान (सिकन्दर) कन्तत घाट से गगा नदी पार करके चुनार पहुचा और वहा से बनारस आया।* उसने खाने खाना को राय भेद के पुत्र सालबाहन के पास इस आशय से भेजा कि वह उसको प्रोत्साहन देकर ले आये। उस समय सुल्तान हुसेन की सेना बनारस से १८ कोस पर थी। सुल्तान सिकन्दर ने शीघ्राति‌शीघ्र सुल्तान हुसेन पर आक्रमण किया। मार्ग में सालबाहन उसकी सेवा में पहुँचा। दोनो सेनाओ में घोर युद्ध होने लगा। सुल्तान हुसेन पराजित होकर पटना की विलायत की ओर चला गया। सुल्तान ने अपना शिविर छोड कर १ लाख अश्वारोहियो सहित सुल्तान हुसेन का पीछा किया।

१ यह नाम विभिन्न रूप से लिखा गया है : मदमूनाकल, मदेवनोंकल, देव करया बाकली।
२ राज्य।
३ घाटी।
४ पटना।
५ कुछ *हस्तलिखित पोथियों में 'वर सिह'।*
६ सरकहा, सरकंजा- कुछ अन्य हस्तलिखित पोथियों के अनुसार।
७ इस शब्द के अन्य रूप सहदवार, सहदेव, इत्यादि हैं।
८ पोस्ते का टोडा।
९ अश्वशाला।

सुल्तान सिकन्दर का बिहार की ओर प्रस्थान

मार्ग में उसे ज्ञात हुआ कि सुल्तान हुसैन बिहार चला गया है। ९ दिन उपरान्त सुल्तान लौट कर अपने शिविर में पहुँचा और बिहार की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान हुसेन मलिक कन्दू[1] को बिहार के किले में छोडकर स्वय लखनौती के अधीन कहल गाँव पहुँचा। सुल्तान सिकन्दर ने देववार[2] के पडाव से मलिक कन्दू के विरुद्ध सेना नियुक्त की। मलिक कन्दू भाग गया और बिहार सुल्तान सिकन्दर के गुमाश्तों[3] के अधीन हो गया।

सुल्तान, मुहब्बत खाँ को कुछ अमीरों सहित, बिहार म छोड कर दरवेशपुर पहुँचा। खाने खाना तथा खाने जहाँ को भारी सामान एव शिविर सौंप कर तिरहुट की ओर रवाना हुआ। तिरहुट के राय न उसका स्वागत करके उसकी अधीनता स्वीकार की। तिरहुट के राय का खराज[4] कई लाख तन्के निश्चित (३२०) हुआ। मुबारक खाँ लोहानी को खराज वसूल करने के लिए वहा छोडकर वह पुन दरवेश-पुर में अपनी सेना के शिविर में पहुँच गया।

वगाल के वादशाह से सधि

१६ शव्वाल ९०१ हि० (२८ जून १४९६ ई०) को खाने जहाँ की मृत्यु हो गई। सुल्तान ने उसके ज्येष्ठ पुत्र अहमद खा को आजम हुमायूँ की उपाधि प्रदान कर दी। तत्पश्चात् वह शेख शरफ मुनीरी[5] के मजार के दर्शन हेतु बिहार पहुचा। वहा वे दरिद्रियों तथा फकीरो को प्रसन्न करके पुन दरवेश-पुर लौट आया। वहा से उसने वगाल के वादशाह सुल्तान अलाउद्दीन पर चढाई की। जब वह बिहार के अधीन तुगलुकपुर नामक स्थान पर पहुँचा तो सुल्तान अलाउद्दीन ने अपने पुत्र दानियाल को उससे युद्ध करने के लिये भेजा। सुल्तान सिकन्दर ने अहमद खा लोदी तथा मुबारक खा लोहानी को अपनी ओर से मुकाबले के लिये भेजा। दोनो सेनायें वारा नामक ग्राम में एकत्र हुई और परस्पर सधि कर ली। यह निश्चय हुआ कि सुल्तान सिकन्दर, सुल्तान अलाउद्दीन की विलायत पर अधिकार न जमाये। इसी प्रकार सुल्तान अलाउद्दीन, सुल्तान सिकन्दर की विलायत को कोई हानि न पहुँचाये और उसके विरोधियो को शरण न प्रदान करे। सधि के उपरान्त महमूद खा तथा मुबारक खा लोहानी लौट गये। बिहार के अधीन पटना कस्बे में मुबारक खा की मृत्यु हो गई। सुल्तान सिकन्दर तुगलुकपुर से दरवेशपुर पहुँचा और वहा कई मास तक ठहरा रहा। उसने वह विलायत[6] आजम हुमायूँ को प्रदान कर दी और बिहार की विलायत को मुबारक खा लोहानी के पुत्र दरिया खा को प्रदान कर दिया।

अकाल

उस वर्ष में अनाज का अभाव हो गया। प्रजा की शाति के लिए उसने अपने समस्त राज्य म

१ फ़िरिश्ता के अनुसार 'खन्दू'।
२ कुछ हस्तलिखित पोथियों के अनुसार 'दिवमार'।
३ एजेंट।
४ कर।
५ शरफ़ुद्दीन यहया मनेरी, बिहार के प्रसिद्ध सूफ़ी। वे देहली के शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया के समकालीन तथा बड़े ही विद्वान् सूफ़ी थे। उनके पत्रों का सग्रह बड़ा प्रसिद्ध है। उनकी मृत्यु १३७६ ई० में हुई। पटना के समीप मनेर मे निवास करने के कारण वे मनेरी कहलाते हैं।
६ प्रात।

अनाज का कर[1] क्षमा कर दिया और तत्सम्बन्धी फरमान जारी कर दिये। उस तिथि से अनाज पर जो कर लिया जाता था उसका अन्त हो गया।

पटना पर आक्रमण

उस समय सुल्तान सारन कस्बे में पहुचा। सारन के निकट के कुछ परगने, जो जमीदारो के (३२१) अधीन थे, उनसे लेकर अपने आदमियो को जागीर के रूप में प्रदान कर दिये। वहा से वह महलीगर[2] के मार्ग से जौनपुर पहुँचा। छ मास तक वहाँ उसने पडाव किया। तत्पश्चात् उसने पटना[3] की ओर प्रस्थान किया। कहा जाता है कि सुल्तान ने पटना के राय साल्वाहन से उसकी पुत्री माँगी थी किन्तु उसने स्वीकार न किया। सुल्तान ने प्रतिकार हेतु ९०४ हि० (१४९८-९९ ई०) में पटना पर चढाई की। जब वह पटना पहुचा तो उसने उस प्रदेश का विनाश प्रारम्भ कर दिया और आबादी का कोई चिह्न न छोडा। जब वह बन्धूगर[4] के किले में,जो उस विलायत का अत्यन्त दृढ किला था और जहा उस स्थान का हाकिम रहता था,पहुचा तो वहा के वीरो ने अपनी वीरता का प्रदर्शन किया। किले के दृढ होने के कारण सुल्तान वहा से जौनपुर चला गया और कुछ दिन तक वहा ठहर कर राज्य के कार्य सम्पन्न करने लगा।

जौनपुर के कर का हिसाब किताब

इसी बीच में मुबारक खा मौजी खेल लोदी का हिसाब,जिसे जौनपुर में बारबक शाह को बन्दी बनाने के समय नियुक्त कर दिया गया था, पेश किया गया। मुबारक खा ने यद्यपि बहाना करके टालना चाहा और खानो से सिफारिश कराई किन्तु उससे कोई लाभ न हुआ। उससे कई वर्ष का हासिल[5] सुल्तान के बरबिस्त[6] के अनुसार वसूल करने का आदेश हुआ।

सुलेमान खा तथा हैबत खा में शत्रुता

सयोगवश उन्ही दिनो सुल्तान चौगान[7] खल रहा था। चौगान खेलते समय दरिया खा शिरवानी के पुत्र सुलेमान का चौगान[8] हैबत खा के चौगान से टकरा कर सुलेमान के सिर पर लगा और उसका सिर टूट गया। दोनो मे इसके कारण झगडा होने लगा और शत्रुता बढ गई। सुलेमान के भाई खिज्र ने अपने भाई का बदला लेने के लिये जान-बूझकर हैबत खा के सिर पर चौगान मारा। शोरगुल होने लगा। महमूद खा तथा खाने खाना, हैबत खा को तसल्ली देकर अपने स्थान पर ले गया। सुल्तान मैदान से निकल कर महल के भीतर चला गया। ४ दिन बाद उसने पुन चौगान खेलने के लिए प्रस्थान किया। मार्ग मे हैबत खा का एक सम्बन्धी शम्स खा नामक क्रोध में भरा खडा था। जैसे ही उसने सुलेमान के भाई खिज्र को देखा तो उसने तत्काल उसके सिर पर चौगान मारा। सुल्तान के आदेशानुसार शम्स खा को बहुत मारा गया और सुल्तान लौट कर अपने महल में चला गया।

१ जकाते गल्ला।
२ महलीगढ।
३ यह शब्द हस्तलिखित पोथियों में कई प्रकार से लिखा गया है पटना, पना, पथना।
४ बन्धूगढ।
५ जो कर उसे अदा करना था।
६ बन्दोबस्त।
७ एक प्रकार का पोलो।
८ बल्ला।

अमीरो का षड्यन्त्र

(३२२) तत्पश्चात्, उसे अमीरो के प्रति शका हो गई। कुछ अमीरो को, जिन्हें वह हितैषी तथा निष्ठावान् समझता था, उसने पहरा देने के लिए नियुक्त कर दिया। अमीर लोग सशस्त्र होकर रात्रि में पहरा देते थे। इसी बीच में कुछ लोग विश्वासघात की योजना बनाने लगे। २२ सरदारो ने सगठित होकर शाहजादा फतह खा बिन सुल्तान बहलोल को राज्य पर अधिकार जमाने के लिए उकसाया और शपथ लेकर विद्रोह में उसका साथ देने की प्रतिज्ञा की। शाहजादे ने यह रहस्य शेख ताहिर[1] तथा अपनी माता को बता दिया और षड्यन्त्रकारियो के नाम उसे बता दिए। शेख ताहिर तथा शाहजादे की माता ने उसे सत्परामर्श देते हुए यह निश्चय किया कि वह सूची को सुल्तान सिकन्दर के समक्ष प्रस्तुत कर दे और विद्रोह के उपालम्भ से अपने आप को मुक्त करा ले। शाहजादे ने ऐसा ही किया। सुल्तान ने उन लोगो के विश्वासघात के कारण वजीर की सहमति से विद्रोह को शात करने के लिए उस समूह के प्रत्येक व्यक्ति को इधर-उधर भेज दिया।

सुल्तान का सम्भल की ओर प्रस्थान

तत्पश्चात् उसने ९०५ हि० (१४९९-१५०० ई०) में संबल की ओर प्रस्थान किया और वहा पर ४ वर्ष ठहर कर राज्य के कार्य सम्पन्न कराता रहा और भोग-विलास में समय व्यतीत करता रहा। अपना अधिकाश समय वह चौगान खेलने तथा शिकार में व्यतीत करता था।

खवास खा का देहली प्राप्त करना

इसी बीच में देहली के हाकिम असग़र की कुकृतियो तथा दुष्टता की सूचना पाकर उसने माछवारा[2] के हाकिम खवास खा को आदेश भेजा कि "तू असगर को बन्दी बनाकर मेरी सेवा में भेज दे।' खवास खा ने देहली पर चढाई की किन्तु खवास खा के देहली पहुँचने के पूर्व असगर शनिवार सफर ९०६ हि० (अगस्त-सितम्बर १५०० ई०) की रात्रि में क़िले से निकल कर सुल्तान के पास सबल पहुच गया और उसे बन्दी बना लिया गया। खवास खाँ ने देहली पर अधिकार जमा कर राज्य प्रारम्भ कर दिया।

इस्लाम तथा हिन्दू—दोनो धर्मों की सत्यता

कहा जाता है कि कानीर[3] नामक ग्राम के लोधन[4] नामक जुन्नारदार[5] ने कुछ मुसलमानो के समक्ष यह बात स्वीकार की कि "इस्लाम सत्य है और मेरा धर्म भी सत्य है।" यह बात आलिमो के कान में (३२३) में पहुच गई। काजी प्यारा तथा शेख बुद्ध ने जो लखनौती[6] में थे एक दूसरे के विरुद्ध फतवे दिये। उस विलायत के हाकिम आजम हुमायूं ने उस जुन्नारदार को काजी प्यारा तथा शेख बुद्ध के साथ सुल्तान

१ बदायूनी के अनुसार 'शेख़ ताहिर' तथा फ़िरिश्ता के अनुसार 'शेख़ ताहिर काबुली'। 'तारीखे दाऊदी' के अनुसार 'शेख़ ताहा'।

२ हस्तलिखित पोथियों में 'माछीवारा'। माछीवारा सतलज नदी के तट पर है। यह वही स्थान है जहाँ बैरम खा तथा हुमायूँ ने ईरान से लौटकर अफ़ग़ानों को पराजित किया था।

३ इस शब्द के निम्नांकित रूप भी हैं: कानीद, कान्हीर, कान्हेर, काथर, कांथी, कायथन।

४ यह नाम विभिन्न रूप से लिखा गया है: लोदन, लोधन, नोधन, पोधन तथा बोधन।

५ ब्राह्मण।

६ इसे 'लखनऊ' होना चाहिए।

के पास सबल भेज दिया। क्योकि सुल्तान की इन्ही समस्याओ पर वाद-विवाद करने की ओर विशेष रुचि थी अत उसने प्रत्येक दिशा से प्रतिष्ठित आलिमो को बुलवाया। मिया कादन बिन शेख खूजू, मिया अब्दुल्लाह बिन अलहदाद तलुम्बी, सैयिद मुहम्मद बिन सईद खा देहली से, मुल्ला कुतुबुद्दीन, मुल्ला अलहदाद तथा सालेह सरहिन्द से, सैयिद अमान तथा मीरान सैयिद अखवन कन्नौज से आये। बहुत से आलिम जो सुल्तान के साथ सर्वदा रहत थे उदाहरणार्थ सैयिद सद्रुद्दीन कन्नौजी, मिया अब्दुर्रहमान सीकरी निवासी, तथा मिया अजीजुल्लाह सबली भी वाद-विवाद में उपस्थित हुए। आलिमो ने यह बात निश्चय की कि उसे बन्दी-गृह में डाल कर इस्लाम की शिक्षा दी जाय, यदि वह इस्लाम स्वीकार न करे तो उसकी हत्या कर दी जाय। लोधन ने इस्लाम स्वीकार न किया और उसकी हत्या कर दी गई। सुल्तान ने उपर्युक्त आलिमो को इनाम देकर उनके स्थानो पर उन्हें भेज दिया।

षड्यन्त्रकारियो का निर्वासित होना

कुछ दिन उपरान्त खवास खा देहली को अपने पुत्र इस्माईल खा को सौप कर सुल्तान के आदेशानुसार सबल पहुचा। उसे खिलअत द्वारा सम्मानित किया गया। उसी समय सईद खा शिरवानी लाहौर से आकर सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुआ। क्योकि वह षड्यन्त्रकारी था, अत उसे, तातार खा, मुहम्मद खा तथा समस्त षड्यन्त्रकारियो को अपनी विलायत[1] से निर्वासित कर दिया। वे लोग ग्वालियर के मार्ग से गुजरात चले गये। इसी बीच में राजा ग्वालियर ने जिसका नाम मान था निहाल नामक ख्वाजासरा को उत्तम पेशकश देकर सुल्तान की सेवा में भेजा। जब सुल्तान ने ख्वाजासरा से कुछ बाते पूछी तो उसने कठोर उत्तर दिये। सुल्तान ने दूत को वापस कर दिया और उस ओर चढाई करने तथा किले पर अधिकार जमाने की धमकी दी।

ब्याना तथा आगरा का शासन प्रबन्ध

(३२४) उसी समय ब्याना के हाकिम खाने खाना फर्मुली की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुये। उसने कुछ समय तक ब्याना को खाने खाना के पुत्रो, एमाद तथा सुलेमान के अधिकार में रखा। क्योकि ब्याना का किला दृढ़ता तथा राज्य की सीमा पर स्थित होने के कारण विद्रोह तथा उपद्रव का केन्द्र बन चुका था, अत एमाद तथा सुलेमान अपने सबन्धियो सहित ब्याना से सबल पहुँचे। सुल्तान ने ब्याना को एमाद तथा सुलेमान से लेकर खवास खा को प्रदान कर दिया। कुछ दिन उपरान्त सफदर खा को आगरा की जो ब्याना से सबन्धित था अमलदारी[2] हेतु नियुक्त किया गया। एमाद तथा सुलेमान का शम्साबाद, जलेसर, मगलौर, शाहाबाद तथा कुछ अन्य परगने जागीर मे प्रदान कर दिये गये।

धौलपुर पर चढ़ाई

मेवात के हाकिम आलम खा तथा रापरी के हाकिम खाने खाना लोहानी को आदेश हुआ कि वे खवास खा के साथ धौलपुर[3] के किले को विजय करके राय विनायक देव के अधिकार से ले लें। राय ने अपनी रक्षा हेतु घोर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। ख्वाजा बब्बन[4] भी जोकि बडा ही शूरवीर था वही मारा गया।

१ राज्य।
२ शासन प्रबन्ध।
३ आगरा से दक्षिण में ३४ मील पर तथा ग्वालियर से उत्तर-पश्चिम में ३७ मील पर।
४ यह नाम भी विभिन्न रूप से लिखा गया है बब्बन, हनन, बैन, मैन।

नित्यप्रति बहुत से लोगों की हत्या होती थी। जब सुल्तान सिकन्दर को यह समाचार प्राप्त हुय तो वह व्याकुल होकर उसी वर्ष की ६ रमजान की शुक्रवार को सबल से धौलपुर पहुचा। जब वह धौलपुर के समीप पहुचा तो राय विनायक देव अपने सबन्धियो को किले में छोडकर ग्वालियर चला गया। उसके सबन्धी सुल्तान सिकन्दर की सेना का मुक़ाबला न कर सके और आधी रात में किले से निकल कर भाग गय। प्रात काल सुल्तान ने किले में पहुचकर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये नमाज पढी और विजय से सबन्धित प्रथाओ को सम्पन्न कराया। सैनिको ने लूटमार तथा ध्वस प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने घरो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया, और धौलपुर के निकट ७ कोस तक जो वृक्ष लगे थे उनका समूलोच्छेदन कर दिया।

ग्वालियर पर आक्रमण

सुल्तान वहा एक मास तक ठहरा रहा। तत्पश्चात् उसने ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया। आदम लोदी को बहुत से अमीरो सहित वहा नियुक्त करके चम्बल नदी पार की। आसी नदी के तट पर जिसे मेंदकी[1] कहते हैं पडाव किया। वह वहा २ मास तक ठहरा रहा। जल की खराबी के कारण रोग व्यापक हो गया तथा महामारी फैल गई। ग्वालियर का राजा भी सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुआ (३२५) और उसने सधि की याचना की। उसने सईद खा, बाबू खा तथा राय गणेश को, जिन्होने सुल्तान के पास से भाग कर उसके पास शरण ली थी, अपने किले से निकाल दिया और अपने ज्येष्ठ पुत्र विक्रमाजीत (विक्रमादित्य) को सुल्तान की सेवा में भेजा। सुल्तान ने उसे घोडे तथा खिल्अत प्रदान किये और उसे वापस जाने की अनुमति देकर आगरा की ओर वापस चला गया। जब वह धौलपुर पहुचा तो उसने वह स्थान भी विनायक देव को प्रदान कर दिया और आगरा में पहुच कर वर्षा ऋतु वही व्यतीत की।

मुंदरायल पर आक्रमण

वर्षा ऋतु के व्यतीत हो जाने के उपरान्त रमजान ९१० हि० (फरवरी-मार्च १५०५ ई०) में उसने मुदरायल[2] के किले को विजय करने के लिए प्रस्थान किया। एक मास तक धौलपुर के निकट ठहरा रहा और सेनाओ को भेजकर आदेश दिया कि वे ग्वालियर तथा मुदरायल के समीप के स्थानो को विध्वस कर दें। तत्पश्चात् उसने स्वय मुदरायल के क़िले को घेर लिया। क़िले वालों ने सधि करके किला समर्पित कर दिया। सुल्तान ने मदिरो का खण्डन करवा कर उनके स्थान पर मस्जिदो का निर्माण कराया। किला मुजाहिद खा के गुमाश्ते[3] मिया मकन के अधीन कर दिया और स्वय समीप के स्थानो को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिये प्रस्थान किया। उसने बहुत बडी सख्या में प्रजा को वन्दी बना लिया और उद्यान तथा भवन नष्ट करा दिये। वहा से उसने आगरा की ओर प्रस्थान किया। जब वह धौलपुर पहुचा तो उसने किले का पुन निर्माण कराया और उसे राय विनायक देव से लेकर मालिक कमरुद्दीन को प्रदान कर दिया। उसने स्वय आगरा में ठहर कर अमीरो को उनकी जागीरो की ओर विदा कर दिया।

१ सम्भवत मदकी।

२ 'मदलायर' अथवा 'मदरायल' चम्बल के पश्चिमी तट पर दो मील पर एक गोल पहाडी के समीप और करौली के दक्षिण पूर्व में १२ मील पर।

३ एजेंट।

आगरा में भूकम्प

इसी समय रविवार ३ सफर ९११ हि० (६ जुलाई १५०५ ई०) को आगरा में बहुत बडा (३२६) भूकम्प आया और पर्वत तक कापने लगे। भव्य तथा दृढ भवन भी गिर पडे। जीवित लोग कयामत[1] समझने लगे और मुर्दे हश्र[2]। आदिकाल से लेकर इस समय तक हिन्दुस्तान में इस प्रकार का भूकम्प कभी न आया था और ऐसे भूकम्प के विषय में किसी को कोई स्मृति नही। कहा जाता है कि उसी दिन हिन्दुस्तान के अधिकाश नगरो में भूकम्प आया था।

सुल्तान का ग्वालियर की ओर प्रस्थान

वर्षा ऋतु के उपरान्त सुल्तान ने ९११ हि० (१५०५-६ ई०) में ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया और डेढ मास तक धौलपुर में ठहरा रहा। वहा से उसने चम्बल नदी के किनारे कसला घाट के निकट पडाव किया और कुछ मास तक वहा विश्राम किया। शाहजादा इबराहीम, जलाल खा तथा अन्य खानो को वहा नियुक्त करके उसने स्वय जेहाद[3] तथा ध्वस के विचार से प्रस्थान किया और अधिकाश लोगों, जो जगलो तथा पर्वतो में प्रविष्ट हो गये थे, की हत्या करा दी तथा बन्दी बना लिया। बजारा के आने जाने में कमी हो जाने के कारण सेना में भी अनाज की कमी हो गई। सुल्तान ने आज़म हुमायूँ अहमद खा तथा मुजाहिद खा को बजारो के लाने के लिए भेजा। यद्यपि ग्वालियर के राय ने मार्ग रोका किन्तु वह सफलता न प्राप्त कर सका।

सुल्तान सैर करता हुआ जब ग्वालियर के अधीन हशावर ग्राम में पहुँचा तो वहा से सेना की रक्षा हेतु तलीया[4] १० कोस आगे शत्रु की ओर रवाना हुआ। प्रत्येक दिन पहरा दिया जाता था और शत्रु की सेना से सचेत रहा जाता था।

ग्वालियर के राय की सेना सुल्तान की वापसी के समय छिपने के स्थान से बाहर निकली और घोर युद्ध हुआ। औध खा तथा खाने जहा के पुत्र अहमद खा इसी सेना में थे। उन लोगो के प्रयत्न तथा वीरता एव सुल्तान की सेना की सहायता से राजपूत पराजित हुए और बहुत बडी सख्या म लोगो की हत्या हो गई और वे बन्दी बना लिये गये। सुल्तान ने औध खा को मलिक औध की उपाधि प्रदान की और वर्षा ऋतु के प्रारम्भ हो जाने के कारण आगरा की ओर प्रस्थान किया। जब वह धौलपुर पहुचा तो प्रतिष्ठित अमीरो का एक बहुत बडा समूह वहा पर नियुक्त करके वह स्वय आगरा चला गया और वर्षा ऋतु वही व्यतीत की।

शासन-प्रबन्ध सम्बन्धी विभिन्न कार्य

(३२७) वर्षा ऋतु के उपरान्त ९१२ हि० (१५०६-७ ई०) में उसने उदित नगर[5] के किले की ओर चढाई की। जब वह धौलपुर पहुँचा तो उसने एमाद खा फर्मुली तथा मुजाहिद खा को कई हजार अश्वारोहियो तथा १०० हाथी देकर उदित नगर के किले की ओर भेजा और वह स्वय वही ठहरा रहा।

१ मुसलमानों, ईसाइयों आदि के विश्वासानुसार जिस दिन समस्त सृष्टि का अन्त हो जायगा (प्रलय)।
२ कयामत के उपरान्त प्राणियों के कर्मों का लेखा लेने का दिन।
३ इस्लाम के विस्तार हेतु धर्म-युद्ध।
४ सेना का वह अग्रिम भाग जो शत्रु का पता लगाने के लिये सेना के आगे आगे जाता है।
५ हस्तलिखित पोथियों में यह शब्द निम्न प्रकार से लिखा गया है: उननकर ऊसकी, उनतगर, अवनतगर।

नरवर पर चढाई

वर्षा के उपरान्त ९१३ हि० में (१५०७-८ ई०) उसने मालवा के अधीन नरवर के किले पर अधिकार जमाने का सकल्प किया। उसने कालपी के हाकिम जलाल खा लोदी को आदेश दिया कि "तू वहा पहुच कर किले को घेर ले। यदि किले वाले सधि की प्रार्थना करें तो तू उनकी प्रार्थना को रद्द न करे।" सुल्तान भी कुछ दिन उपरान्त नरवर पहुचा। दूसरे दिन वह किला देखने के लिए रवाना हुआ। जलाल खा अपनी सेना तैयार करके मार्ग मे इस आशय से खडा हो गया कि सुल्तान सेना पर दृष्टिपात कर सके और वह स्वय अभिवादन भी कर ले। उसने अपनी सेना को ३ भागो में विभाजित किया। एक पदातियो (३२९) की सेना, दूसरी अश्वारोहियो की, तीसरी हाथियो की। सुल्तान को उसकी सेना की अधिकता देखकर उसके प्रति ईर्ष्या हो गई और उसने निश्चय कर लिया कि वह शनै-शनै उसे नष्ट करके अपने मध्य से हटा दे। सुल्तान एक वर्ष तक किले को घेरे रहा। किला अत्यधिक दृढ तथा ८ कोस लम्बा था। सैनिक नित्यप्रति युद्ध के लिये जाते और मारे जाते थे। कुछ समय इसी प्रकार व्यतीत हो गया। सुल्तान ने आदेश दिया कि लोग रस्सियो के फदे, बडे बड चाकू, कुठार, तथा बलचे लेकर किले को नष्ट-भ्रष्ट करने तथा युद्ध हेतु तैयार हो जाय। सेना वालो ने आज्ञा का पालन किया और दो दिशाओ से युद्ध प्रारम्भ कर दिया और पौरुष एव वीरता का प्रदर्शन किया। सुल्तान महल की छत के ऊपर टहलता जाता था। उसने देखा कि किले के एक ओर दरार पड गई और तत्काल उसे भीतर के लोगो ने भर दिया। उसके सैनिक बहुत बडी सख्या में मारे गये। उस दिन किले पर विजय प्राप्त न हो सकी और वह सना को लौटा लाया।

जलाल खा का बन्दी बनाया जाना

इसी बीच में सुल्तान ने जलाल खा को बन्दी बनाने एव नष्ट करने के उद्देश्य से उसके योग्य सहायको को अपनी ओर मिला लिया और उसकी सेना छिन्न भिन्न कर दी। तत्पश्चात् दो फरमान निकाले गये, एक जलाल खा को बन्दी बनाने के विषय में इबराहीम खा लोहानी, सुलेमान फर्मुली तथा मलिक अलाउद्दीन जलवानी[1] के नाम और दूसरा मिया भुवा वज़ीर, सईद खा बिन ज़कू तथा मलिक आदम के नाम। उपर्युक्त खानो ने जलाल खा एव शेर खा को शाही आदेशानुसार बन्दी बना लिया और उदित नगर के किले मे ले जाकर उन्हें कैद कर दिया।

नरवर के किले की विजय

तत्पश्चात् नरवर किले के निवासी जल के अभाव तथा अनाज के मँहगे होने के कारण दुर्दशा को प्राप्त हो गये और उन्होने क्षमा-याचना कर ली। वे अपनी धन-सपत्ति सहित बाहर चले गये। सुल्तान ने मदिरो को वीरान करके मस्जिदो का निर्माण कराया। आलिमो तथा विद्यार्थियो को वज़ीफे तथा अदरार[1] प्रदान करके वहा बसा दिया। वह ६ मास तक किले के नीचे ठहरा रहा।

मालवा के शाहजादे के आगमन का प्रस्ताव

(३३०) इसी बीच में मालवा के वली सुल्तान नासिरुद्दीन के पुत्र शिहाबुद्दीन ने अपने पिता से रुष्ट होकर सुल्तान की सेवा में उपस्थित होना निश्चय किया। जब शिहाबुद्दीन मालवा के अधीन सीरी[2]

१ देखिये पृ० २२८ नोट नं० ३।
२ हस्तलिखित पोथियों में : सीरी, सिपरी, सेहरी, तथा तबसरी है।

नामक स्थान तक पहुँचा तो सुल्तान ने घोडे एव खिलअतें भेज कर उसे सदेश भेजा कि यदि तू चदेरी को जो मालवा के अधीन है समर्पित कर दे तो तेरी इस प्रकार सहायता की जायगी कि सुल्तान नासिरुद्दीन तुझे कुछ हानि न पहुचा सकेगा।" सयोगवश किन्ही कारणो से शाहजादा शिहाबुद्दीन माल्वा मे वाहर न जा सका। इसका उल्लेख मालवा के सुल्तानो के सबन्ध में किया जा चुका है।

नरवर के चारो ओर किले का निर्माण

सुल्तान सिकन्दर ने २६ शावान ९१४ हि० (२० दिसम्बर १५०८ ई०) को नरवर के किले से प्रस्थान किया और उसी वर्ष के ज़ीकाद मास में सिपरा नदी के तट पर पडाव किया। इस स्थान पर सुल्तान ने सोचा कि नरवर का किला अत्यधिक दृढ है। यदि वह किसी शत्रु को प्राप्त हो जायेगा तो उससे पुन न लिया जा सकेगा। इस कारण उसने दूसरा किला उसके चारो ओर बनवाया ताकि शत्रु उस पर अधिकार न जमा सके।

शाहजादा जलाल खा को कालपी प्रदान किया जाना

इस भय से निश्चिन्त होकर वह लाहायर[1] कस्बे में पहुँचा और वहा १ मास तक पडाव किया। इसी बीच में कुतुब खा लोदी की पत्नी नेमत खातून शाहजादा जलाल खा के साथ सुल्तान के लश्कर में उपस्थित हुई। सुल्तान उनसे भेंट करने गया और उन्हें प्रोत्साहन प्रदान किया। कुछ दिन उपरान्त उसने कालपी की सरकार को शाहजादा जलाल खा की जागीर मे दे दिया और १२० घोडे, १५ हाथी खिलअत तथा नकद धन प्रदान किया। उसे खातून के साथ कालपी भेज दिया।

आगरा की ओर सुल्तान का प्रस्थान

१० मुहर्रम ९१५ हि० (३० अप्रैल १५०९ ई०) को शाही पताकाओ ने लाहायर से प्रस्थान किया और हतकान्त[2] के निकट पहुच कर उस क्षेत्र के विद्रोहियो के विरुद्ध सेना नियुक्त की। उस मुहाल को मुशिरकों[3] तथा विद्रोहियो से पाक साफ कर दिया और विभिन्न स्थानो पर थाने निश्चित करके आगरा (३३१) की राजधानी में विश्राम किया।

अहमद खा का इस्लाम त्याग कर मुर्तिद होना

उसी समय यह समाचार प्राप्त हुये कि लखनौती के हाकिम अहमद खा जो मुबारक लोदी का पुत्र था काफिरो के साथ रहने के कारण मुर्तिद[4] हो गया है और उसने इस्लाम त्याग दिया है। अहमद खा के भाई मुहम्मद खा को आदेश हुआ कि वह उसे बन्दी बनाकर सुल्तान की सेवा में भेज दे और लखनौती[5] की सरकार उसके भाई सईद खा को प्रदान कर दी गई।

१ हस्तलिखित पोथियों म 'लाहायर' तथा 'लहावर' है। फ़िरिश्ता के अनुसार 'विहार लहावर'। ग्वालियर से सम्भवत ५० मील दूर पर दक्षिण पूर्व में है।

२ अबुल फ़ज़ल के अनुसार भदावर का मुख्य नगर जो कि आगरा के दक्षिण पूर्व में है। यहाँ के निवासी भदावरी कहलाते थे। (आईने अकबरी)।

३ जो एक ईश्वर के अतिरिक्त कई ईश्वरों पर श्रद्धा रखते हैं।

४ जो मुसलमान इस्लाम त्याग कर अन्य धर्म स्वीकार कर लेता है वह मुर्तिद कहलाता है।

५ अधिकाश हस्तलिखित पोथियों में 'लखनौती' है। एक हस्तलिखित पोथी के अनुसार लखनऊ' जोकि उचित है।

मुहम्मद खा का मालवा से सुल्तान की सेवा में पहुचना

उन्ही दिनो मालवा के सुल्तान नासिरुद्दीन का पौत्र मुहम्मद खा अपने दादा से भयभीत होकर शरण हेतु सुल्तान की सेवा में पहुचा। चदेरी की सरकार उसे जागीर के रूप में दे दी गई और शाहज़ादा जलाल खा को आदेश हुआ कि वह उसकी सहायता करता रहे ताकि माल्वा की सेना उसे कोई हानि न पहुचाये।

सुल्तान का नागौर की ओर प्रस्थान एव नागौर के हाकिम का अधीनता स्वीकार करना

इस समय सुल्तान ने शिकार तथा भ्रमण की इच्छा से धौलपुर की ओर प्रस्थान किया और आगरा से धौलपुर तक प्रत्येक पडाव पर महल तथा इमारत का निर्माण कराया। क्योकि उसका भाग्य उन्नति पर था अत शिकार ही के समय एक राज्य उसके हाथ में आ गया। सक्षेप में उसका विवरण इस प्रकार है। नागौर के हाकिम मुहम्मद खा के भाइयो में से अली खाँ तथा अबाबक्र ने मुहम्मद खा के विरुद्ध षड्यन्त्र रच कर यह योजना बनाई कि किसी युक्ति से उसकी हत्या करके उसके राज्य पर अधिकार जमा लिया जाय। उसे इस षड्यन्त्र की सूचना मिल गई। उसने उन पर आक्रमण किया और वे भाग कर सुल्तान के दरबार में पहुचे। मुहम्मद खा ने अपने भाइयो तथा सबन्धियो के विरोध और उनके बादशाह की सेवा में शरण लेने के कारण भविष्य पर ध्यान रखत हुए निष्ठायुक्त पत्रो सहित अत्यधिक पेशकश सुल्तान की सेवा में भेजे और सुल्तान के नाम का खुत्बा तथा सिक्का चलाना स्वीकार कर लिया। सुल्तान ने उसे घोडा तथा खिलअत भेजी और धौलपुर से लौट कर आगरा पहुचा। कुछ समय तक भोग विलास में समय व्यतीत करता रहा। उसके राज्य-काल में आगरा राजधानी बन गया था।

मियाँ सुलेमान का निर्वासित किया जाना

कुछ समय उपरान्त उसने पुन धौलपुर की ओर प्रस्थान किया। इस समय उसने खाने खाना फर्मुली के पुत्र सुलेमान को आदश दिया कि वह अपनी सना लेकर सुई-सबेर[1] की सीमा पर स्थित उदित (३३२)नगर के नौ मुस्लिम अधिकारी हुसन खा की जिसका इससे पूर्व नाम राय दुन्गर था सहायतार्थ प्रस्थान करे। उसने निवेदन किया कि, 'मैं आपकी सेवा से दूर नही होना चाहता।' इस बात से सुल्तान उससे रुष्ट हो गया और उसने आदश दिया कि "उसे हमारी सवा से पृथक् कर दिया जाय। रात भर में जो कुछ धन-सपत्ति वह लश्कर से ले जा सके उसे ले जाय। वह उसके अधीन रहेगी। जो वह न ले जा सके उसे नष्ट कर दिया जाय।" इन्द्री नामक परगना उसको मददे मआश[2] में द दिया गया और उसने इस कस्बे में पहुच कर निवास ग्रहण कर लिया।

चन्देरी का सुल्तान के अधीन होना

उसी समय चदेरी के हाकिम बहजत खा ने जिसके पूर्वज भी मालवा के बादशाहो के अधीन थे मालवा के सुल्तान महमूद के शक्तिहीन हो जाने एव उसके राज्य में विघ्न पड जाने के कारण, सुल्तान

१ हस्तलिखित पोथियों मे यह नाम विभिन्न रूप से लिखा है सरी, सुई सबेर, सुई मियूर, सुई मेवर। फ़िरिश्ता के अनुसार 'शिवपुर'।
२ सहायता के रूप में दी जाने वाली भूमि।

सिकन्दर की सेवा में पेशकश भेजी और उसके अधीन हो गया। सुल्तान ने एमादुलमुल्क वृद्ध को, जिसका नाम अहमद था, चदेरी की ओर इस आशय से नियुक्त किया कि वह बहजत खा की सहायता से चदेरी तथा उस क्षेत्र में सुल्तान के नाम का खुत्वा पढवा दे। तत्पश्चात् सुल्तान धौलपुर से लौट कर आगरा पहुँचा और वहजत खा की अधीनता से सम्बन्धित फरमान भिजवाने तथा चदेरी में सुल्तान सिकन्दर के नाम का खुत्वा पढे जाने एव नई विजया के प्राप्त होने के सुखद समाचार के प्रसारित होने के कारण उसकी प्रसिद्धि वहुत वढ गई।

जागीरो का प्रवन्ध

उसी समय सुल्तान ने राज्य के हित में कुछ अमीरो की जागीरो को परिवर्तित करने का निश्चय किया और इटावा की सरकार को आलम खा लोदी के पुत्र भीखन खा से लेकर उसके अनुज खिच्च खा को प्रदान कर दिया। इसी प्रकार ख्वाजा मुहम्मद एमाद फर्मुली की जागीर उसके भाई ख्वाजा मुहम्मद[1] को प्रदान की गई। इसी प्रकार अन्य अमीरो की जागीरें परिवर्तित की गईं।

चन्देरी पर पूर्ण अधिकार

तत्पश्चात् सुल्तान ने मुबारक खा लोदी के पुत्र सईद खा, उस्मान फर्मुली के पुत्र शेख जमाल, राय जगरसेन कछवाहा, खिज्र खा तथा ख्वाजा अहमद को चदेरी में नियुक्त किया। इन लोगो ने उस विलायत को अपने अधिकार में कर लिया तथा उस राज्य पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया। सुल्तान के आदेशानुसार मालवा के सुल्तान नासिरुद्दीन का पौत्र शाहज़ादा मुहम्मद खा शहर के भीतर वन्द कर लिया गया। उस प्रदेश का राज्य उसी के अधिकार में दे दिया गया किन्तु वही लोग शक्तिशाली (३३३) वन गये।[2] वहजत खा ने यह देख कर उस ओर ठहरना उचित न समझा और सुल्तान की सेवा में पहुच गया।

रणयम्भोर के किले पर अधिकार करने का प्रयत्न

उस समय सारन कस्बे के हाकिम हुसेन खा फर्मुली से सुल्तान रुष्ट हो गया और उसने कूटनीति मे हाजी सारग को उस ओर भेजा और हुसेन खा की सेना को अपनी ओर मिला कर, उसे वन्दी बनाने की चिता में रहने लगा। उसने (हुसेन खा ने) सूचना पाकर अपने कुछ सहायको सहित लखनौती की विलायत की ओर प्रस्थान किया और वगाले के वाली सुल्तान अलाउद्दीन के पास शरण ली। उस समय अली खा नागौरी ने, जो सुई सवेर प्रान्त में नियुक्त किया गया था, शाहज़ादा दौलत खा को जो रणथम्भोर के किले का हाकिम था और मालवा के सुल्तान महमूद के अधीन था मिला लिया और उससे मित्रता वढाकर उसे सुल्तान सिकन्दर की अधीनता स्वीकार करने के लिए अपने उत्तम व्यवहार द्वारा प्रेरित किया और यह निश्चय कराया कि रणयम्भोर का किला वह सुल्तान को उपहार स्वरूप दे दे। अली खा ने उस विषय में सुल्तान को प्रार्थना-पत्र भेजा। सुल्तान ने इस सुखद समाचार से प्रसन्न होकर उस ओर प्रस्थान किया और शीघ्रातिशीघ्र व्याना के समीप पहुँच गया। वह ४ मास तक वहा भ्रमण

१ 'अहमद' उचित होगा।

२ मूल ग्रन्थ के शब्द स्पष्ट नहीं किन्तु तात्पर्य यही है कि शाहज़ादा मुहम्मद खा को नाम मात्र को चन्देरी का हाकिम रक्खा गया।

करता, शिकार खेलता तथा आलिमो और मशायख[1] विशेषकर सैयिद नेमतुल्लाह तथा शेख अब्दुल्लाह हुसैनी के साथ जो अपने चमत्कार के लिए प्रसिद्ध थे समय व्यतीत करता रहा।

सक्षेप में शाहज़ादा दौलत खा तथा उसकी माता को, जो रणयम्भोर के किले के स्वामी थे, अलीखा ने अत्यधिक प्रोत्साहित करके यह निश्चय किया कि शाहज़ादा शीघ्रातिशीघ्र सुल्तान की सेवा में उपस्थित हो। सुल्तान के आदेशानुसार समस्त अमीर उसका स्वागत करके उसे पूर्ण सम्मान सहित सुल्तान की सेवा में ले गये। सुल्तान ने उसे अपने पुत्रो की भाति सम्मानित करके विशेष खिलअत, कुछ घोडे तथा हाथी प्रदान किये, और पूर्व निश्चित वादे के अनुसार रणथम्भोर का किला समर्पित करने के लिए कहा। सयोगवश (३३४) उसी अली खा ने शत्रुता प्रदर्शित करते हुए शाहज़ादा दौलत खा को इस बात पर तैयार किया कि वह रणयम्भोर का किला न दे और उसे अपने वचन को तोडने के लिए प्रोत्साहित किया। शाहज़ादा किले को समर्पित करने में टालमटोल करने लगा। सुल्तान ने अली खा की शत्रुता से परिचित होकर सुई सबेर की सरकार उसके भाई अबाबक्र को दे दी। उसने अपनी स्वाभाविक दया तथा सौजन्य के कारण अली खा के प्रति इससे अधिक कठोरता न प्रदर्शित की और रणयम्भोर के शाहज़ादे के प्रति भी किसी प्रकार का क्रोध प्रदर्शित न किया।

सुल्तान का धौलपुर की ओर प्रस्थान तथा वापसी

जब सुल्तान ब्याना तथा उस क्षेत्र की विलायत से निश्चिन्त हो गया तो उसने थनकिर[2] की ओर प्रस्थान किया और वहा से बारी[3] के कस्बे में पहुचा तथा उस परगने को मुबारक खा के पुत्रो से लेकर शेखज़ादा मकन को सौंप दिया और धौलपुर पहुच गया। धौलपुर से वह आगरा की राजधानी में पहुँचा और प्राचीन प्रथानुसार विभिन्न स्थानो पर फरमान भेज कर बहुत से अमीरो को सीमान्त से बुलवाया।

सुल्तान की मृत्यु

इस समय सुल्तान रुग्ण हो गया। यद्यपि वह अपनी निर्बलता को प्रदर्शित न करता था और उसी दशा में दीवान में बैठता और सवार होता था किन्तु शनै -शनै उसका रोग बढता गया यहा तक कि जल तथा भोजन भी उसके कण्ठ के नीचे न उतरता था और सास का मार्ग भी बन्द हो गया। रविवार ७ ज़ीकाद ९२३ हि० (२१ नवम्बर १५१७ ई०) को उसकी मृत्यु हो गई। उसने २८ वर्ष तथा ५ मास तक राज्य किया।

सुल्तान का चरित्र

सुल्तान के गुणो तथा उसकी विशेषताओ के विषय में कुछ इतिहासो में इतना अधिक लिखा (३३५) हुआ है कि उसमें से अधिकाश भाग को अतिशयोक्ति ही कहा जा सकता है। जो कुछ सत्य समझा गया है उसी का उल्लेख यहा किया जाता है। कहा जाता है कि सुल्तान सिकन्दर बाह्य सौन्दर्य तथा मस्तिष्क की निपुणता से सुशोभित था। उसके राज्यकाल में अत्यधिक अल्पमूल्यता थी और पूर्ण शाति थी। सुल्तान नित्यप्रति आम दरबार करता था और स्वय न्याय करता था। कभी-कभी

१ सूफ़ियों।
२ हस्तलिखित पोथियों मे ' थनकिर, थक्र, इत्यादि है। यह ब्याना के अधीन था।
३ आगरा सरकार में।

प्रात काल से सायकाल तक तथा सोने के समय तक राज्य के कार्य में व्यस्त रहता था और पाचो समय की नमाज एक ही स्थान पर पढता था। उसके राज्य काल में हिन्दुस्तान के जमीदारो का प्रभुत्व कम हो गया और सभी आज्ञाकारी बन गय। शक्तिशाली तथा शक्तिहीन एक समान हो गये और वह विभिन्न कार्यों में न्याय करता था और अपनी वासना के अनुसार कार्य न करता था। वह ईश्वर का अत्यधिक भय करता था और प्रजा के प्रति कृपा करता रहता था।

सुल्तान का कलन्दर को उत्तर

कहा जाता है कि एक दिन जब वह अपने भाई बारबक शाह से युद्ध कर रहा था तो युद्ध के समय एक कलन्दर[1] दृष्टिगत हुआ और उसका हाथ पकड कर उसने कहा "तेरी विजय हुई।" सुल्तान ने घृणा से अपना हाथ खीच लिया। दरवश ने कहा कि, "मैं सुखद समाचार कहता हूँ और तुझे विजय की सूचना दे रहा हू। किन्तु तू अपना हाथ किस कारण खीच रहा है?" उसने उत्तर दिया, "जब दो मुसलमान सेनाओ में युद्ध हो रहा हो तो एक के विषय में निर्णय न देना चाहिये अपितु वह कहना चाहिय कि जिससे इस्लाम का भला हो और जिससे प्रजा की उन्नति हो, उसे विजय हो और ईश्वर से यही शुभ कामना करनी चाहिए।"

फकीरो तथा सैनिको का प्रबन्ध

वह अपनी विलायत के समस्त फ़कीरो तथा सहायता के पात्रो को आदेश दिया करता था कि वे अपनी आवश्यकताओ के विषय में सविस्तार उल्लेख किया करें। प्रत्येक व्यक्ति को उसकी आवश्यकतानुसार ६ मास का धन प्रेषित किया करता था। जो कोई सेवा करने के लिए आता उससे वह उसके पूर्वजो के वश के विषय में पूछताछ करता और तदनुसार सेवा प्रदान करता था। उसके घोडो एव अस्त्र-शस्त्र का निरीक्षण किये बिना उसे जागीर प्रदान करके आदश दे देता था कि वह अपनी जागीर से अपना सामान ठीक कर ले।

मथुरा में हिन्दुओं के विरुद्ध नियम

वह इस्लाम का बडा कट्टर पक्षपाती था और इस विषय में बडी अति करता था। उसने काफिरो के समस्त मदिरो का खण्डन करा दिया और उनके चिह्न भी शेष न रहने दिये। मथुरा में जहा हिन्दू स्नान के लिए एकत्र होते थे वहा उसने सराय, बाजार, मस्जिदें तथा मदरसे निर्मित कराये और वहा (३३६) पर इस आशय स अधिकारी नियुक्त किये कि वह किसी को भी स्नान न करने दें। यदि कोई हिन्दू मथुरा नगर में अपनी दाढी अथवा सिर के बाल कटवाने की इच्छा करता तो कोई भी नाई उसके बाल न काटता था।

सालार मसऊद के नेजे का बन्द कराया जाना

उसने कुफ्र की प्रथायें जोकि खुल्लम-खुल्ला सपन्न होती थी पूर्ण रूप से बन्द करा दी। सालार

1 सालार मसऊद —सैयिद सालार मसऊद गाजी अथवा गाजी मिया जिनकी कब्र बहराइच में है। वे गज़नी के सुल्तान महमूद के भागिनेय थे। और कहा जाता है कि १०३३ ई० में बहराइच में हिन्दुओं के साथ युद्ध करते समय वे मारे गये। इनकी कब्र पर प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठ मास के प्रथम रविवार को एक बहुत बड़ा मेला लगता है।

मसऊद के नेजे का (जलूस), जो प्रत्येक वर्ष निकाला जाता था, रुकवा दिया और स्त्रियों को मजारों पर जाने से मना कर दिया।

थानेश्वर के स्नान के विरोध का प्रयत्न

उसने अपनी बाल्यावस्था में जब कि वह शाहजादा था यह सुना कि थानेश्वर में एक कुण्ड है, जहां हिन्दू एकत्र होकर स्नान करते हैं। उसने आलिमों से पूछा कि "इसके विषय में शरा' का क्या आदेश है?" उन्होंने उत्तर दिया कि "प्राचीन मंदिरों को नष्ट करने की अनुमति नही है। जब कि उस कुण्ड में प्राचीन काल से स्नान करने की प्रथा चली आ रही है, उसमें स्नान का निषेध आपके लिए उचित नहीं।" शाहजादे ने कटार निकाल ली और उस आलिम की हत्या का संकल्प करते हुए कहा कि, "तू काफिरों का पक्षपाती है।" उस बुजुर्ग ने उत्तर दिया कि, "जो कुछ शरा में लिखा है उसे मैं कहता हूँ और सत्य बात कहने में कोई भय नहीं।" शाहजादा संतुष्ट हो गया।

फ़क़ीरों को दान

संक्षेप में, उसने अपने पूरे राज्य की मस्जिदों में कुरान पढ़ने वाले, खतीब' तथा झाड़ू देने वाले नियुक्त किये और उनके लिए वृत्ति तथा अदरार' निश्चित किये। शीत ऋतु में वह फ़क़ीरों के लिए वस्त्र तथा शालें भेजा करता था। प्रत्येक शुक्रवार को वह फ़क़ीरों को जुमागी के नाम से धन भेजा करता था। हर रोज बिना पका तथा पका भोजन नगर में विभिन्न स्थानों पर बाटा जाता था। यौमियां', जुमागी' तथा वर्ष में दो बार के इनाम समस्त राज्य के फ़क़ीरों के लिए निश्चित थे। शुभ दिनों उदाहरणार्थ रमजान', आशूरा', विजयों, तथा सफलताओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के अवसरों पर फ़क़ीरों और दरवेशों को प्रसन्न करता था।

शिक्षा का प्रसार

उसके राज्यकाल में शिक्षा का प्रसार हुआ और अमीरों तथा सैनिकों के पुत्र भी शिक्षा ग्रहण किया करते थे। अन्य लोग भी अपने-अपने धन से शरा के अनुसार फ़क़ीरों तथा उन लोगों को जो सहायता के पात्र होते थे, धन दिया करते थे।

शेख समाउद्दीन से सुल्तान के सम्बन्ध

कहा जाता है कि जब सुल्तान बहलोल की मृत्यु हो गई और सुल्तान सिकन्दर को राज्य ग्रहण (३३७) करने के लिए बुलाया गया और उसने जाने का संकल्प किया तो जिस दिन वह देहली के बाहर

१ शरा '—इस्लाम धर्म के नियम।
२ खतीब —खुत्बा अथवा धार्मिक प्रवचन करने वाला। जुमे की सामूहिक नमाज़ तथा दोनों ईदों के दिन विशेष खुत्बा पढ़ा जाता है।
३ विद्वानों तथा धार्मिक व्यक्तियों को जीविका की सहायतार्थ दी जाने वाली भूमि।
४ दैनिक दान।
५ शुक्रवार को दिया जाने वाला दान।
६ हिजरी वर्ष का नवां मास जिसमें मुसलमान रोजा रखते हैं।
७ हिजरी वर्ष के प्रथम मास मुहर्रम की दसवीं तिथि।

जा रहा था उसी दिन शेख समाउद्दीन, जो उस समय के बहुत बडे बुजुर्ग थे, की सेवा में अपने लिये ईश्वर से प्रार्थना करने के उद्देश्य से पहुचा और कहा कि "मै मीजाने सर्फ[1] नामक पुस्तक आपसे पढना चाहता हू।" उसने पढना प्रारम्भ कर दिया। बुजुर्ग ने जब उसमें से यह पढा कि, "परमेश्वर तुझे दोनो लोक में भाग्यशाली करे" तो सुल्तान ने उससे तीन वार उस शुभ कामना को दोहराने के लिए आग्रह किया और तत्पश्चात् उसके हाथ को चूमकर यह शुभकामना अपने लिए एक सुखद फाल[2] समझ कर चला गया।

फकीरो की सहायता करने वालो को प्रोत्साहन

अमीरो तथा राज्य के उच्च अधिकारियो में से जो कोई भी दरिद्रियो तथा फकीरो को वृत्ति एव मददे मआश[3] प्रदान करता था तो सुल्तान उसे सम्मानित करता था और कहता था कि, "तूने एक अच्छे कार्य को प्रारम्भ किया है, इससे किसी प्रकार की हानि न होगी।"

अमीरो के विषय में सूचना

वह प्रजा तथा सैनिको की देखभाल इस सीमा तक रखता था कि लोगो के घरो की साधारण से साधारण बात भी उसे ज्ञात रहती थी। कभी-कभी उसे लोगों के एकान्त जीवन के विषय में भी ज्ञान प्राप्त हो जाता था। इस कारण लोग यह समझते थे कि सुलतान के अधिकार में कोई जिन्नात[4] है जो परोक्ष की बातें उसे बताता रहता है।

फरमान भेजने की प्रथा

कहा जाता है कि जब वह अपनी सेना को कही भेजता था तो सेना के पास प्रतिदिन दो फरमान पहुचा करते थे। एक प्रात काल इस विषय में कि 'प्रस्थान करके अमुक मजिल पर पडाव करो' और एक मध्याह्नोत्तर मे इस विषय का प्राप्त होता था कि 'इस प्रकार अथवा उस प्रकार कार्य करो।' इस अधिनियम के विरुद्ध कभी आचरण न होता था। मार्ग में डाक चौकी के घोडे सर्वदा तैयार रहते थे।

सीमा के अमीरो के पास जब फरमान पहुचते थे तो अमीर लोग २, ३ कोस तक आगे बढकर (३३८) उसका स्वागत करते थे। जो कोई फरमान ले जाता था उसके लिये एक चबूतरा तैयार किया जाता था। फरमान ले जाने वाला चबूतरे पर खडा होता था। फरमान पाने वाला चबूतरे के नीचे दोनो हाथो से फरमान लेकर सिर पर रखता था। यदि फरमान के उसी स्थान पर पढने के विषय में आदेश होता था तो लाने वाला यह आदेश पहुचा देता था और फरमान उसी स्थान पर पढा जाता था। यदि फरमान को मस्जिद में मिम्बर पर पढने का आदेश होता तो तदनुसार उसका पालन किया जाता था। यदि फरमान विशेष रूप से उसी व्यक्ति के विषय में होता था तो गुप्त रूप से उसके समक्ष पढा जाता था।

रोजनामचे

प्रतिदिन के भाव, परगनो तथा विलायतो की घटनाओ के रोजनामचे उसके समक्ष प्रस्तुत किये जाते थे। यदि बाल बराबर भी कोई अनुचित बात देखता तो तुरन्त उसका प्रबन्ध प्रारम्भ कर

१ अरबी व्याकरण की एक शाखा।
२ किसी घटना द्वारा भविष्य के विषय मे ज्ञान।
३ मददे मआश :—सहायतार्थ दी जाने वाली भूमि।
४ जिन्नात :—मुसलमानों के विश्वास के अनुसार एक तैजस योनि।

देता। वह सर्वदा झगडो का अत कराने तथा राज्य के कार्यों को सपन्न कराने और प्रजा की सुख-शाति के प्रयत्न के विषय में सलग्न रहा करता था।

सुल्तान द्वारा मणि के विषय में निर्णय

उसकी सूझबूझ तथा बुद्धिमत्ता के विषय मे विचित्र बातें कही जाती हैं। जो बातें सत्य प्रतीत होती हैं और जिनमें अतिशयोक्ति कम दृष्टिगत होती है उनका उल्लेख किया जाता है। एक समय ग्वालियर के दो भाई दरिद्रता के कारण व्याकुल होकर उस सेना के साथ जो किसी विलायत पर आक्रमण करने के लिए नियुक्त की गई थी हो लिए। लूट के समय उन्हें थोडा सा सोना, कुछ रगीन वस्त्र और दो बहुमूल्य मणि प्राप्त हो गये। उनम से एक भाई ने कहा कि "हमारा उद्देश्य पूरा हो गया। अब हम क्यो कष्ट भोगें ? घर चलें और निश्चित होकर जीवन व्यतीत करें।" दूसरे ने कहा कि "हे भाई! पहली बार हमें ऐसा धन लूट में प्राप्त हुआ है, सभवत दूसरी बार कोई वस्तु इससे भी श्रेष्ठ प्राप्त हो जाये।" पहले ने कहा, 'मैं तो किसी अन्य स्थान को न जाऊँगा।" तदनुसार लूट का धन बाट लिया गया। बडे भाई ने अपना भाग भी इस आशय से उसे दे दिया कि वह उस धन को उसकी पत्नी को दे दे। उस व्यक्ति ने अपने घर पहुच कर मणि के अतिरिक्त समस्त लूट का धन भाई की पत्नी को द दिया। २ वर्ष उपरान्त जब उसका भाई आया और उसने पूछताछ की तो मणि न मिला। भाई ने पूछा कि, "मणि क्या हो गया ?" उसने कहा कि, "मैंने तेरी पत्नी को दे दिया।" भाई ने कहा कि, "वह कहती है कि मुझे (३३९) नही मिला।" उसने उत्तर दिया कि "झूठ बोलती है। उसे थोडी बहुत डाट फटकार करो।" उसने अपनी पत्नी को डराया धमकाया। पत्नी ने कहा कि, "आज रात्रि में मुझे अवकाश दो। प्रात काल उसे उपस्थित करूगी।" प्रात काल वह मिया भूवा के पास, जो सुल्तान सिकन्दर का एक बडा अमीर तथा मीर अदल[1] था, पहुँची और उससे समस्त घटना का उल्लेख किया। मिया भूवा ने उसके पति तथा उसके भाई को उपस्थित कराया और उनसे इस विषय में पूछा। उसके पति के भाई ने कहा कि "मैंने मणि भी इसे दे दिया था।" भूवा ने कहा कि "तेरे पास कोई साक्षी भी है?" उसने कहा, "हा"। मिया ने पूछा, "कौन है ?" उसने कहा, "दो ब्राह्मण हैं।" मिया ने कहा, "उन्हें उपस्थित कर।" वह जुआघर में पहुँचा और दो जुआडियो को कुछ देकर सिखा दिया कि वे इस प्रकार गवाही द। उन लोगो को उत्तम वस्त्र पहना कर दीवान में उपस्थित किया। जब उन्होने गवाही दे दी तो मिया भूवा ने उस स्त्री के पति से कहा कि "जा और जिस प्रकार कठोरतापूर्वक हो सके पत्नी से मणि ले ले।" पत्नी वहा से निकल कर सुल्तान के दीवान[2] में पहुची और न्याय की याचना की। सुल्तान ने उसे बुलवा कर पूछताछ की। स्त्री न जो बात थी वह बता दी। सुल्तान ने कहा कि, "तू मिया भूवा के पास क्यो न गई ?" उसने कहा कि, "मैं गई थी किन्तु जिस प्रकार पूछताछ होनी चाहिये थी उसने नही कराई।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "सबको उपस्थित किया जाय।" उसने सबको अलग-अलग बुलवाया। थोडा सा मोम स्त्री के पति तथा उसके भाई को दिया और कहा कि 'तुम लोग जैसा कि मणि था वैसा ही मोम द्वारा बनाओ।" उन दोनो ने एक ही प्रकार का मणि बनाया। तत्पश्चात् उसने साक्षियो को अलग-अलग बुलवा कर उन लोगो को मोम दिया। उन लोगो ने विभिन आकार के मणि बनाये। उसने सबको रख लिया। स्त्री को बुलवा कर कहा कि "तू भी बना।" स्त्री ने कहा, "मैंने कोई वस्तु देखी ही नही; किस प्रकार बनाऊ ?" यद्यपि सुल्तान ने

१ मीर अदल —न्यायाधीश।
२ दरबार।

इस विषय पर बहुत जोर दिया किन्तु स्त्री ने स्वीकार न किया। तत्पश्चात् उसने मिया भूवा को सबोधित करते हुए साक्षियो से कहा कि, "यदि तुम लोग सच-सच बता दोगे तो तुम्हें क्षमा कर दिया जायेगा, यदि झूठ बोलोगे तो तुम्हारी हत्या कर दी जायेगी।" उन लोगो ने जो बात सत्य थी वह कह दी। पति के भाई को भी बुलवा कर उसे कठोर दण्ड देने की धमकी दी। उसने भी ठीक-ठीक घटना का उल्लेख कर दिया। उस स्त्री को उस अपराध से मुक्ति प्राप्त हो गई। इससे उस बादशाह की पूर्ण योग्यता तथा बुद्धिमत्ता का पता चलता है।

शेख जमाली[1]

(३४०) वह फारसी में बडी सुन्दर शैली में कविता करता था और उसका तखल्लुस गुलरुखी था। शेख जमाल कम्बोह उसका मुसाहिब तथा मित्र था। सुल्तान उससे अत्यधिक वार्तालाप किया करता था। यह छन्द उसी के हैं

छन्द

"हमारे शरीर पर तेरी डाली की धूल से वस्त्र बन गया है,
वह भी आसुओ से दामन तक सैकडो स्थान से फटा है।
मेरे शरीर के दोनो ओर उसके बाण ही बाण लगे है,
अब मै उसके धनुष रूपी कटाक्ष तक उडकर पहुचूंगा।"

मिया भूवा की बुद्धिमत्ता

कहा जाता है कि एक बार सुल्तान सिकन्दर नमाज पढकर कुछ विर्द[2] पढ रहा था। वहा एक ख्वाजासरा उपस्थित हुआ। सुल्तान ने सकेत किया कि "उसे बुला ला।" ख्वाजासरा उसे न समझा और बाहर जाकर उसने मिया भूवा से कहा कि "सुल्तान वजीफा पढ रहा था। मुझसे सकेत किया कि बुला ला। मै उससे सकोचवश यह न पूछ सका कि किसे बुला लाऊ। अब सुल्तान की सेवा में पुन उपस्थित होने का मुझमें साहस नही और न मै किसी को बुलाकर ले जा सकता हूँ।" मिया भूवा ने पूछा कि "सुल्तान का मुख किस ओर था और वह किस वस्तु को देख रहा था?" ख्वाजासरा ने कहा कि, "वह उस नये भवन, जिसका निर्माण हो रहा है, की ओर देख रहा था।" मिया भूवा ने कहा कि "थवई तथा बढई को बुलवा कर ले जा।' जब ख्वाजासरा थवई तथा बढई को बुलवा कर ले गया तो सुल्तान ने वास्तविक बात को समझ कर उससे पूछा कि, "तुझे कैसे ज्ञात हुआ कि मैने इन लोगो को बुलवाया है?" उसने कहा कि 'मिया भूवा ने बताया है।" सुल्तान को मिया भूवा की बुद्धि तथा सूझ-बूझ के विषय में और भी श्रद्धा हो गई।

जरीब के सम्बन्ध में प्रस्ताव

कहा जाता है कि एक बार सुल्तान सिकन्दर ने मिया भूवा से, जो उसका वजीर[3] तथा मीर अदल

१ जमाली —उसका नाम जलाल खा था। सर्वप्रथम वह जलाली तखल्लुस करता था। अन्त मे वह अपने पीर समाउद्दीन के कहने पर जमाली तखल्लुस करने लगा। उसने हिन्दुस्तान के बाहर के अनेक इस्लामी देशों की यात्रा की थी। उसकी रचनाओं में 'मिरअतुल आरेफीन दीवान' तथा मसनवी 'मेहर माह' बड़ी प्रसिद्ध हैं।
२ कुरान के कुछ अश जो विशेष रूप से सफलता एव सौभाग्य के लिये प्रसिद्ध हैं।
३ प्रधान मंत्री।

\

था, कहा कि 'मेरे राज्य में प्रजा को मल्वा'[1] के कारण बडा कष्ट होता है और वह नष्ट हो रही है। मुझे इसकी बडी चिन्ता रहती है और इसका कोई उपाय समझ में नही आता। यदि तेरी समझ में कोई बात (३४१)आये तो बडा अच्छा है।" मिया भूवा ने निवेदन किया कि "मल्वा का अत कराना बड़ा सरल है जरीब का एक सिरा सुल्तान अपने हाथ में लें और दूसरा सिरा मुझे दे दें। मलवा कदापि न हो सकेगा। जिस किसी को भी किसी सेवा हेतु नियुक्त किया जाये तो जब तक वह लोभ को न त्यागेगा, मल्वा का अत न हो पायेगा।"

सुल्तान इबराहीम बिन सुल्तान सिकन्दर बिन सुल्तान बहलोल लोदी

राज्य का विभाजन

जब सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु हो गई तो अमीरो तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियो की सहमति से राज्य का महान् पद सुल्तान इबराहीम को, जो अपनी योग्यता, बुद्धिमत्ता, वीरता तथा चरित्र की उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध था, प्राप्त हो गया। क्योकि पड्यन्त्रकारी सैनिक विशेष रूप से अपने हित मे इस बात का प्रयत्न किया करते है कि राज्य में शाति तथा एक व्यक्ति का प्रभुत्व न रहने पाये, अपितु उनकी सेवाओ की उन्नति होती रहे तथा सेना एव परिजनो का कार्य चलता रहे, अत उन लोगो ने यह निश्चय किया कि सुल्तान इबराहीम देहली के राजसिहासन पर आरूढ रहे और जौनपुर की सीमा तक के प्रदेश उसके अधीन रहें। जौनपुर के सिहासन पर शाहज़ादा जलाल खा आरूढ होकर राज्य करे और उस ओर के प्रदेश उसके अधीन रहें। किन्तु उन्हें यह ज्ञात न था कि दो व्यक्ति मिल कर राज्य नही कर सकते जिस प्रकार एक खोल में दो तलवारें नही रह सकती।

शाहज़ादा जलाल को देहली बुलवाने का प्रयत्न

सक्षेप में, शाहज़ादा जलाल खा अन्य अमीरो तथा जौनपुर के अधिकारियो सहित उस ओर चल दिया और वहा के राज्य को दृढतापूर्वक अपने अधिकार में करके उसने फतह खा बिन (पुत्र) (३४२)आज़म हुमायूँ शिरवानी को अपना वकील तथा पेशवा[2] नियुक्त किया। उसी समय खाने जहाँ लोहानी रापरी से सुल्तान इबराहीम की सेवा में पहुचा और उसने वज़ीरो तथा वकीलो की निन्दा करनी तथा उन्हें बुरा-भला कहना प्रारम्भ कर दिया और कहा कि, "दो व्यक्तियो का मिल कर राज्य चलाना बहुत बडी भूल है और यह बात बुद्धि के अनुकूल नही।" अत में राज्य के उच्चाधिकारियो ने इस भूल के सुधार का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। उन्होने यह उचित समझा कि क्योकि अभी शाहज़ादा जलाल खा को अधिक प्रभुत्व नही प्राप्त हुआ है अत उसे देहली बुलवाया जाय। शाहज़ादे को बुलवाने के लिए हैबत खा गुर्गअन्दाज़ को भेजा गया और कृपायुक्त एक फरमान इस आशय का भेजा गया कि इस समय यह उचित होगा कि वह जरीदा[3] शीघ्रातिशीघ्र पहुच जाय। जब हैबत खा शाहज़ादे की सेवा में पहुचा तो उसने यद्यपि धूर्तता चापलूसी तथा चाटुकारी का प्रदर्शन किया किन्तु शाहज़ादा

१ इस शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं। सम्भवत भूमि के नापने वालों की बेईमानी से तात्पर्य है जिसका उपाय मिया भूवा ने यह बताया कि 'यदि बादशाह स्वय तथा मैं नापने का कार्य करें तो बेई मानी न होगी'।

२ प्रतिनिधि तथा प्रधान मत्री।

३ देखिये पृ० ३७ नोट नं० २।

उन लोगों के विश्वासघात तथा उनकी चाल से परिचित हो गया था। अतः उसने वापस जाना स्वीकार न किया और नम्रतापूर्वक उत्तर देकर टालमटोल करने लगा। हैबत खा ने यह बात सुल्तान की सेवा में पहुंचा दी। सुल्तान ने शेख सईद फर्मुली के पुत्र शेखज़ादा मुहम्मद, मलिक अलाउद्दीन जलवानी के पुत्र मलिक इस्माईल तथा क़ाज़ी मज्दुद्दीन हुज्जाब[1] को शाहज़ादे को बुलवाने के लिए भेजा किन्तु उनके जादू का भी उस पर कोई प्रभाव न पड़ा और शाहज़ादा वापस होने के लिए तैयार न हुआ।

सुल्तान द्वारा उस ओर के अमीरों को मिलाने का प्रयत्न

तत्पश्चात् सुल्तान ने बुद्धिमानों तथा अपने समय के फैलसूफों[2] के परामर्श से उस क्षेत्र के हाकिमों को फरमान भेजे और प्रत्येक को उसकी श्रेणी के अनुसार कृपा, प्रोत्साहन तथा उन्नति प्रदान करने के आदेश प्रेषित किये गये। जो कुछ उन लोगों को लिखा गया वह संक्षिप्त रूप में इस प्रकार था, कि वे लोग शाहज़ादा जलाल खा की आज्ञाकारिता को त्याग दें और न तो उसकी नौकरी करें और न उसकी सेवा में उपस्थित हों। बहुत से बड़ी-बड़ी सेनाओं के अधिकारी अमीरों, जो उस ओर थे तथा ३०, ४० हज़ार नौकर रखते थे, उदाहरणार्थ बिहार की विलायत के हाकिम दरिया खा लोहानी, गाज़ीपुर के हाकिम नसीर खा, अवध तथा लखनऊ के हाकिम शेखज़ादा मुहम्मद फ़र्मुली इत्यादि, के पास उसने अपना एक-एक (३४३) विश्वासपात्र भेजा और विशेष खिलअत, घोड़े तथा अन्य वस्तुएँ प्रेषित कीं। जब यह फरमान उन लोगों को प्राप्त हुआ तो वे शाहज़ादे की आज्ञाकारिता छोड़कर विरोधी बन गये।

सुल्तान का दरबार तथा दान-पुण्य

उस समय सुल्तान ने एक जड़ाऊ सिंहासन उत्तम रत्नों द्वारा सुसज्जित दीवानखाने में रखवाया। शुक्रवार १५ ज़िलहिज्जा ९२३ हि० (२९ दिसम्बर १५१७ ई०) को वह उस सिंहासन पर आरूढ़ हुआ और उसने एक बहुत बड़ा दरबार किया जिसमें सर्वसाधारण को उपस्थित होने की अनुमति दी गई तथा दरबार के सेवकों, उच्च पदाधिकारियों तथा समस्त सैनिकों को उनकी श्रेणी के अनुसार खिलअत, तलवार, कटार, घोड़े, हाथी, उच्च पद, उपाधि तथा जागीरें प्रदान की और उन्हें पुनः अपने प्रति निष्ठावान् होने के लिए प्रेरित किया। कृपा तथा दया द्वारा समस्त विशेष तथा साधारण व्यक्तियों को प्रसन्न किया। फकीरों तथा दरिद्रियों के लिये दान के द्वार खोल दिये। मददे मआश[3], वज़ीफे, अदरार[4] तथा ऐमा[5] में वृद्धि कर दी। एकान्तवासियों को फुतूहात[6] तथा उपहार भेजे। राज्य तथा शासन के कार्यों को अत्यधिक शोभा प्रदान की और उसकी शासन-व्यवस्था दृढ़ हो गई।

जलालुद्दीन का कालपी में बादशाह होना

जब शाहज़ादा जलाल खा ने यह सब बातें देखीं और उस प्रदेश के अमीरों के विरोध का उसे विश्वास हो गया तो वह भाग कर कालपी पहुंचा और समझ गया कि अब सुल्तान इबराहीम से कोई

१ हाजिब।
२ दार्शनिकों, योग्य व्यक्तियों।
३ किसी विद्वान् अथवा किसी को किसी सेवा इत्यादि के कारण दी जाने वाली भूमि।
४ वृत्ति।
५ वृत्ति अथवा सहायता।
६ उपहार जो बिना इच्छा अथवा आशा के प्राप्त हों।

आशा न रखनी चाहियें और खुल्लमखुल्ला शत्रुता प्रकट करनी चाहिये। जो लोग उसके सहायक थे (३४४)उनके परामर्श से उसने जौनपुर की विलायत को त्याग कर कालपी को अपने अधिकार में कर लिया और अपने नाम का खुत्बा तथा सिक्का[1] चलवा दिया और जलालुद्दीन की उपाधि धारण कर ली। उसने लोगो को नौकर रखना, सैनिकों की भरती, सेना तथा तोपखाने की व्यवस्था और आस-पास के परगनो के जमीदारो तथा राजाओ को प्रोत्साहन देना प्रारम्भ कर दिया। उसकी शक्ति तथा वैभव में वृद्धि हो गई।

जलालुद्दीन का आज़म हुमायूँ को मिलाना

उसने आजम हुमायूँ शिरवानी के पास,जो एक भारी सेना लिए हुए कालिंजर के किले को घेरे हुए था, कुछ आदमी भेजे और यह सदेश प्रेषित करवाया कि "आप मेरे पिता तथा चाचा के स्थान पर है। आप स्वय जानते है कि मैंने कोई अपराध नही किया है और सुल्तान इबराहीम द्वारा विश्वासघात प्रारम्भ हुआ है। उसने जो थोडा सा राज्य तथा धन मेरे हक को देखते हुये प्रदान किया था अब वह उस ओर से भी उपेक्षा करने लगा है और सहायता के बन्धन तोड कर उसने कृपा तथा दया को समाप्त कर दिया है। आपको चाहिये कि आप न्याय के मार्ग से विचलित न हो और पीडित की सहायता करें।" वास्तव में आज़म हुमायूँ, सुल्तान से रुष्ट था। सुल्तान जलालुद्दीन की दरिद्रता, दुर्दशा तथा दीनता का उस पर बडा प्रभाव हुआ अत शाहज़ादे से युद्ध करना उसे उचित ज्ञात न हुआ और वह कालिंजर के किले को छोडकर सुल्तान जलालुद्दीन की सेवा में पहुँच गया।

जलालुद्दीन द्वारा अवध पर आक्रमण

उन लोगो ने यह निश्चय किया और इस बात की प्रतिज्ञा की कि वे जौनपुर की विलायत तथा उस क्षेत्र को अधिकार में कर लें तत्पश्चात् किसी अन्य ओर ध्यान दें। यह निश्चय करके उन लोगो ने मुबारक खा लोदी के पुत्र सईद खा पर, जो अवध का हाकिम था, शीघ्रातिशीघ्र पहुच कर, आक्रमण किया। वह मुकाबला न कर सका और लखनऊ पहुच गया। उसने इस घटना की सूचना सुल्तान इबराहीम को दे दी।

सुल्तान इबराहीम द्वारा अवध पर चढाई

सुल्तान इबराहीम ने सकल्प किया कि एक चुनी हुई सेना लेकर इस विद्रोह को शात करे। उस समय उसने अपने हितैषियो के परामर्श से अपने कुछ भाइयो, जो बन्दी थे, उदाहरणार्थ शाहजादा इस्माईल खा, हुसेन खा, महमूद खा तथा शाहजादा शेख दौलत खा, के विषय में आदेश दिया कि हासी के किले (३४५) में ले जाकर उनकी भली भाति रक्षा की जाय। प्रत्येक की रक्षा हेतु उसने अपने दो विश्वास-पात्र भी नियुक्त किये और उनके भोजन, वस्त्र तथा अन्य आवश्यक्ताओ की व्यवस्था कर दी गई। वृहस्पतिवार २४ ज़िलहिज्जा ९२३ हि० (७ जनवरी १५१८ ई०) को शाही पताकाओ ने पूर्व की ओर प्रस्थान किया और निरन्तर यात्रा करती हुई वे भोगाव कस्बे मे पहुच गई। वहा से उन्होंने कन्नौज पहुचने का सकल्प किया। मार्ग में समाचार प्राप्त हुये कि आजम हुमायूँ अपने सुपुत्र फतह खा सहित शाहज़ादा जलाल खा से पृथक् होकर सुल्तान की सेवा में उपस्थित हो रहा है। इस समाचार द्वारा सुल्तान के हृदय

१ राज्य के विशेष चिह्न।

को अत्यधिक शक्ति प्राप्त हो गई। जब आजम हुमायूं निकट पहुचा तो सुल्तान इबराहीम ने अधिकांश अमीरो को उसके स्वागतार्थ भेजा और उसे शाही कृपाओं द्वारा सम्मानित किया।

सुल्तान इबराहीम द्वारा जलाल खा के विरुद्ध सेना भेजना

उस समय कोल परगने के अधीन जरतौली के जमींदार मानचन्द ने सिकन्दर मुग के पुत्र उमर से युद्ध करके उसकी हत्या कर दी। जरतौली एक प्रसिद्ध मवास[1] है। सरल के हाकिम मलिक कासिम ने उस पर चढाई करके उसे पराजित कर दिया और उसकी हत्या कर दी। वहां से वह कन्नौज, जहा सुल्तान पडाव किये हुये था, पहुचा। जौनपुर के अधिकांश अमीर तथा जागीरदार उदाहरणार्थ सईद खा, शेखजादा मुहम्मद फर्मुली इत्यादि, सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुए और उसके हितैषियो में सम्मिलित हो गये। उस समय आजम हुमायूं शिरवानी, आजम हुमायूं लोदी, नसीर खा लोहानी इत्यादि को अत्यधिक सेना तथा अजगर रूपी हाथी देकर शाहज़ादा जलाल खा के विरुद्ध भेजा गया। उस समय शाहज़ादा जलाल खा कालपी में था। इन अमीरो के उस स्थान पर पहुचने के पूर्व उसने नेमत खातून, कुतुब खा लोदी के सहायका, एमादुलमुल्क, मलिक बदुद्दीन तथा अपने परिवार को कुछ सेना सहित कालपी में छोडकर ३० हजार अश्वारोहियों तथा कुछ हाथियो को लेकर राजधानी आगरा की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान इबराहीम की सेना ने कालपी पहुच कर उसे घेर लिया। कुछ दिनों तक तीर तथा बन्दूक (३४६) की लडाई होती रही। अत में किले वाले परेशान हो गये। उस सेना ने कालपी के किले को विजय कर लिया और शहर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। सेना को अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त हो गई।

जलाल खा का आगरा पहुचना तथा मलिक आदम के प्रयत्न से बादशाही के लोभ को त्यागना

सुल्तान ने आगरा की रक्षा हेतु मलिक आदम को एक सेना देकर शीघ्रातिशीघ्र भेजा। शाहज़ादा जलाल खा आगरा के समीप पहुच गया और कालपी के प्रतिकार हेतु उसने आगरा को नष्ट करने का सकल्प कर लिया। इसी बीच में मलिक आदम आगरा पहुँच गया और उसने जलाल खा को बहला-फुसला कर आगरा को नष्ट न करने दिया, यहां तक कि उसके पीछे अलाउद्दीन जल्वानी का पुत्र मलिक इस्माईल कबीर खा लोदी, बहादुर खा लोहानी तथा कुछ अन्य अमीर बहुत बडी सेना लेकर पहुच गये। मलिक आदम को बडी शक्ति प्राप्त हो गई। तत्पश्चात् उसने जलाल खा को सदेश भेजा कि "तू मिथ्या-पूर्ण लोभ को त्याग दे और चत्र, आफ्तावगीर[2], नौबत[3], नक्कारा[4] तथा अन्य बादशाही चिह्नों को त्याग दे और अमीरो के समान व्यवहार कर ताकि सुल्तान से तेरे विषय में क्षमा-याचना की प्रार्थना की जाय। कालपी की सरकार पूर्व की भाति तेरी जागीर में रहेगी।' जलाल खा इससे सतुष्ट हो गया और बादशाही के चिह्नो को उसने त्याग दिया।

१ मवास :—वह स्थान जहा विद्रोही शरण हेतु छिप जाते थे।
२ एक प्रकार का शामियाना अथवा छत्र।
३ विभिन बाजे जो विशेष रूप से बादशाहों अथवा बड़े-बड़े अमीरों के द्वार पर, जिन्हें बादशाह अनुमति देता था, बज सकते थे।
४ नगाड़ा।

जलाल खा का ग्वालियर की ओर प्रस्थान

मलिक आदम ने उसका छत्र, आफताबगीर तथा नक्कारा लेकर सुल्तान की सेवा में, जो कन्नौज से इटावा[1] पहुच गया था, भेज दिया। सुल्तान ने यह सधि स्वीकार न की और जलाल खा से युद्ध करने के लिए रवाना हुआ। शाहजादा यह समाचार पाकर ग्वालियर के राजा के पास शरण हेतु भाग गया।

नई नियुक्तियाँ

सुल्तान आगरा में ठहरा और उसने शासन-प्रबन्ध को, जिसमें सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु के उपरान्त विघ्न पड गया था, दृढता प्रदान की। विरोधी अमीरो ने क्षमा-याचना करके निष्ठा प्रदर्शित (३४७) की। तत्पश्चात् उसने हैवत खा गुर्गअन्दाज, करीमदाद तोग तथा दौलत खा इन्द्र को देहली की रक्षा हेतु भेजा। शेखजादा मन्झू को चदेरी के किले की रक्षा हेतु तथा मालवा के सुल्तान नासिरुद्दीन के पौत्र शाहजादा मुहम्मद खा को पेशवा नियुक्त किया।

मिया भूवा का बन्दी बनाया जाना

कुछ समय उपरान्त सुल्तान मिया भूवा से, जो समस्त अमीरो मे श्रेष्ठ तथा सुल्तान सिकन्दर का वजीर था, रुष्ट हो गया। मिया भूवा पिछली सेवाओ के भरोसे पर सुल्तान की इच्छाओ की उपेक्षा करने लगा था। अन्ततोगत्वा उसे बन्दी बना लिया गया और मलिक आदम को सौप दिया गया। सुल्तान ने उसके पुत्र को सम्मानित करके उसके पिता के स्थान पर नियुक्त कर दिया। मिया भूवा की उसी बन्दीगृह में मृत्यु हो गई।

ग्वालियर की विजय का प्रयत्न

उसी समय सुल्तान ने यह सोचा कि "सुल्तान सिकन्दर ने ग्वालियर को विजय करने तथा उस क्षेत्र के किलो को नष्ट करने के लिए कई बार चढाई की किन्तु उसे सफलता प्राप्त न हुई। यदि भाग्य मेरा साथ दे तो ग्वालियर के किले तथा तत्सबन्धी सब विलायत पर विजय प्राप्त कर ली जाय।" तदनुसार उसने कडा की विलायत के हाकिम आजम हुमायूँ शिरवानी को ३० हजार अश्वारोही तथा तीन सौ हाथी देकर ग्वालियर की विजय के लिए भेजा। जब आजम हुमायूँ ग्वालियर के निकट पहुचा तो, शाहजादा जलाल खा वहा से भाग कर मालवा की ओर सुल्तान महमूद के पास चला गया। उसी अवसर पर आलम खा लोदी के पुत्र भीखन खा जलाल खा लोदी, सुलेमान फर्मुली, बहादुर खा लोहानी, बहादुर खा शिरवानी, मलिक फीरोज अगवान के पुत्र इस्माईल, खिज्र खा लोहानी, भीखन खा लोदी के भाई खिज्र खा तथा खाने जहा को बहुत बडी सेना तथा कुछ हाथी देकर आजम हुमायूँ की सहायतार्थ तथा ग्वालियर के किले के अवरोध एव उसके आसपास के किलो को विजय करने के लिए नियुक्त किया। सयोगवश (३४८) उन्ही दिनो ग्वालियर के राजा मान की, जो वीरता एव दान-पुण्य में अद्वितीय था, और जो देहली के सुल्तानों का वर्षो से मुकाबला कर रहा था, मृत्यु हो गई। उसका पुत्र राय विक्रमाजीत (विक्रमादित्य) अपने पिता के स्थान पर गद्दी पर बैठा और किले को दृढ बनाने के लिए अत्यधिक प्रयत्न करने लगा। सुल्तान इबराहीम के अमीरो ने सुल्तान के आदेशानुसार एक शाही दौलतखाने का निर्माण कराया। वे नित्यप्रति वहा एकत्र होते थे और नाना प्रकार की व्यवस्था करते एव किले के अवरोध

१ मूल ग्रन्थ में 'अमावा' है।

को सफल बनाने का प्रयत्न किया करते थे। सयोगवश राजा मान ने किले के नीचे एक अत्यधिक दृढ तथा भव्य भवन का उस दृढ किले के चारो ओर निर्माण कराया था जिसका नाम बादलगढ रक्खा गया। कुछ समय उपरान्त शाही सेना ने सुरग लगाकर उसमें बारूद भर दी और बारूद में आग लगा दी। किले की दीवार के टूट जाने पर वे उसमें प्रविष्ट हो गये और उसे विजय कर लिया। वहा उन्हें पीतल का एक बैल[1] मिला जिसकी हिन्दू वर्षों से पूजा कर रहे थे। शाही आदेशानुसार वह पीतल का बैल देहली लाया गया और बगदाद द्वार पर डाल दिया गया। अकबर के राज्यकाल तक वह बैल देहली के द्वार पर रहा। इस इतिहास के लेखक ने उसे देखा है।

शाहज़ादा जलाल खा का बन्दी बनाया जाना

सक्षेप में, उन्ही दिनों सुल्तान इबराहीम का सिकन्दर के प्राचीन अमीरो के प्रति विश्वास समाप्त हो गया। उसने अधिकाश बडे बडे खानों को बन्दी बना लिया। शाहज़ादा जलाल खा, जो मालवा के सुल्तान महमूद के पास चला गया था, उसके व्यवहार से सतुष्ट न होकर गढकनगा की विलायत को भाग गया और वहा गाड लोगो के समूह ने उसे बन्दी बना लिया। उन्होने उसे बन्दी बनाकर सुल्तान की सेवा में भेज दिया। सुल्तान ने उसे बन्दी बनाकर हासी के बन्दीगृह में भेज दिया। मार्ग में उसकी मृत्यु हो गई।

कडा में विद्रोह

(३४९) कुछ समय उपरान्त सुल्तान के आदेशानुसार आज़म हुमायूँ शिरवानी तथा उसका पुत्र फतह खा, जो ग्वालियर के किले को घेरे हुए थे और लगभग विजय प्राप्त करने वाले ही थ, आगरा उपस्थित हुए। सुल्तान ने उन्हें बन्दी बना लिया। इसी कारण आज़म हुमायू के पुत्र इस्लाम खा ने कडा में विद्रोह कर दिया और अपने पिता की सेना तथा धन सपत्ति पर अधिकार जमा लिया। अहमद खा को, जो उस स्थान की शिकदारी[2] के लिए नियुक्त हुआ था, उसने कोई अधिकार न दिया और सेना एकत्र करने लगा। अहमद खा ने उससे युद्ध किया किन्तु वह पराजित हुआ।

लखनऊ की ओर सुल्तान द्वारा सेना भेजना

सुल्तान इबराहीम यह समाचार पाकर उसके विरुद्ध सेना भेजना चाहता था कि अचानक आज़म हुमायूँ तथा सईद खा लोदी, जोकि प्रतिष्ठित अमीर थे, सुल्तान की सेना से भाग कर अपनी जागीर लखनऊ की विलायत में चले गये। इस्लाम खा को पत्र भेजकर वे विद्रोह का प्रयत्न करने लगे। सुल्तान इबराहीम ने अहमद खा, आज़म हुमायूँ लोदी के भाई, हुसेन फर्मुली के पुत्रो अली खा, खाने खाना फर्मुली, मजलिसे आली भिखारी फर्मुली, अहमद खा के पुत्र दिलावर खा, सारग खा, गाजी खा तलीनी[3] के पुत्र कुतुब खा, भीखन खा लोहानी, आदम काकर के पुत्र सिकन्दर इत्यादि को बहुत बडी सेना देकर उन लोगो के विरुद्ध भेजा। जब वे कन्नौज के निकट बागरमऊ के कस्बे के समीप पहुचे तो आज़म हुमायूँ लोदी का खासाखेल[4] इकबाल खा ५ हज़ार अश्वारोहियो तथा कुछ हाथियो को लेकर एक गुप्त स्थान

१ सभवत गाय।
२ देखिये पृ० ४ नोट नं० ३।
३ जलवानी।
४ आज़म हुमायू लोदी की कौम का इकबाल खा।

से निकला और उसने उनकी सेना पर छापा मार कर बहुत से लोगों की हत्या कर दी तथा उन्हें घायल करके उनकी सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया।

विद्रोह का दमन

जब यह सूचना सुल्तान को प्राप्त हुई तो उसने उन अमीरों की बड़ी कटु आलोचना की और आदेश भेजा कि जब तक वे लोग उस विलायत को विद्रोहियों के हाथ से निकाल न लेंगे उस समय तक वे लोग दण्डनीय रहेंगे। सावधानी की दृष्टि से उसने अमीरों तथा खानों को बहुत बड़ी सेना देकर उनकी (३५०) सहायतार्थ भेजा। विद्रोहियों की ओर भी लगभग ४० हजार सशस्त्र अश्वारोही तथा ५०० हाथी एकत्र हो गये थे। जब दोनों ओर की सेनायें आमने सामने हुईं और युद्ध होने वाला ही था कि शेख राजू बुखारी, जिसके प्रति उस युग के सभी लोगों को श्रद्धा थी, मध्यस्थ हो गया और दोनों पक्षों को रोक कर विद्रोहियों को परामर्श तथा शिक्षा प्रदान की। उन लोगों ने बहुत सी शिकायतें उपस्थित करके निवेदन किया कि "यदि सुल्तान आज़म हुमायूँ सरवानी[1] को मुक्त कर दें तो हम लोग सुल्तान की विलायत से हाथ खींच कर उसका विरोध त्याग देंगे और किसी अन्य बादशाह के राज्य में चले जायेंगे।" जब सुल्तान को यह समाचार मिले तो उसे यह बात अच्छी न लगी। उसने बिहार के हाकिम दरिया खां लोहानी, नसीर खां लोहानी तथा शेखज़ादा मुहम्मद फर्मुली को आदेश भेजा कि वे लोग भी उस ओर के विद्रोहियों पर आक्रमण करके उस उपद्रव को शांत कर दें।

जब सेना उस ओर से पहुंची तो विद्रोहियों ने अपने अभिमान के कारण, शाही सेना के प्रभुत्व की ओर ध्यान न देते हुए, युद्ध प्रारम्भ कर दिया। दोनों ओर की सेनायें आपस में भिड़ गईं और ऐसा हत्याकाण्ड होने लगा जिसे देखकर समय की आंखों में भी अंधकार छा गया। अन्त में, क्योंकि विद्रोह तथा नमकहरामी तो दुष्टों का कार्य है और जिससे कदापि किसी को कोई लाभ नहीं होता, अतः इस्लाम खां विद्रोही की हत्या हो गई। सईद खां लोदी, दरिया खां लोहानी के सैनिकों द्वारा बन्दी बना लिया गया और वह उपद्रव शांत हो गया। उनकी समस्त धन-सम्पत्ति सुल्तान इब्राहीम के अधिकार में आ गई।

अमीरों की सुल्तान के प्रति घृणा

(३५१) सुल्तान को इस सफलता के समाचार प्राप्त हुये किन्तु अमीरों के प्रति उसका रोष, ईर्ष्या तथा विरोध सीमा से बढ़ चुका था अतः उसने बहुत से अमीरों तथा मलिकों, उदाहरणार्थ मियां भूवा तथा आज़म हुमायूँ सरवानी को जो अमीरुलउमरा था बन्दी बना लिया और बन्दीगृह ही में उनकी मृत्यु हो गई। बिहार का हाकिम दरिया खां लोहानी, खाने जहां लोदी, मियां हुसेन फर्मुली इत्यादि *उस भय तथा आतंक के कारण जो उन पर आरूढ़ था सुल्तान के विरोधी बन गये और विद्रोह की पताका* बलन्द कर दी। संयोगवश उन्हीं दिनों चंदेरी में सुल्तान के संकेत पर मियां हुसेन फर्मुली की उस स्थान के कमीने शेखज़ादों द्वारा हत्या हो गई। इस कारण सुल्तान के अमीर उससे और भी घृणा करने लगे।

बहादुर खां का बिहार में विद्रोह

कुछ समय उपरान्त दरिया खां लोहानी की मृत्यु हो गई। उसका पुत्र बहादुर खां, सुल्तान का विरोध करके अपने पिता के स्थान पर आरूढ़ हो गया। जो अमीर सुल्तान के विरोधी हो गये थे वे

१ 'शिरवानी' तथा 'सरवानी' दोनों शब्दों का प्रयोग किया गया है।

उसके सहायक बन गये। बिहार के क्षेत्र में उन लोगों ने लगभग एक लाख सवार एकत्र कर लिये और सबल की विलायत तक अपने अधिकार में कर ली। उसने अपनी उपाधि सुल्तान मुहम्मद निश्चित कर ली और अपने नाम का खुत्वा तथा सिक्का चलवा दिया। उसी समय गाजीपुर का हाकिम नसीर खा लोहानी सुल्तान की सेना से पराजित होकर उसके पास पहुचा। कुछ मास तक बिहार की विलायत तथा उसके आसपास में बहादुर खा का खुत्वा पढा जाने लगा। इस बीच में वह सुल्तान की सेनाओ से युद्ध करके उसका मुकाबला करता रहा।

इवराहीम लोदी की पराजय तथा हत्या

सयोगवश दौलत खा लोदी का पुत्र लाहौर से सुल्तान की सेवा में पहुँचा किन्तु सुल्तान के प्रति शकित होकर भाग खडा हुआ तथा अपने पिता के पास चला गया। दौलत खा किसी प्रकार सुल्तान के क्रोध तथा आतक से अपने आपको मुक्त न होते देख कर कावुल चला गया और उसने बाबर बादशाह के पास शरण ली और बादशाह को हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के लिये लाया। मार्ग में दौलत (३५२) खा की मृत्यु हो गई। बिहार में सुल्तान मुहम्मद की भी मृत्यु हो गई। यद्यपि हिन्दुस्तान की विजय के साधन तथा उपाय पूर्णत नष्ट हो चुके थे किन्तु बादशाह ने ईश्वर पर आश्रित होकर पानीपत के निकट सुल्तान इवराहीम से युद्ध किया। सुल्तान इवराहीम की सेना पराजित हुई। सुल्तान अपने अमीरो सहित युद्ध मे मारा गया। हिन्दुस्तान का राज्य लोदी अफगानो के वश से निकल कर इस भाग्यशाली वश (मुगलो) को प्राप्त हो गया। इवराहीम लोदी ने सात वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

तारीखे दाऊदी

(लेखक—अब्दुल्लाह)

(प्रकाशन—अलीगढ १९५४ ई०)

सुल्तान बहलोल

सुल्तान बहलोल की बाल्यावस्था

(३) इतिहासकारो ने लिखा है कि सुल्तान बहलोल की बाल्यावस्था ही में उसके पिता की मृत्यु हो गई। बहलोल का नाम बल्लू खा था। उसका पालन-पोषण उसके चाचा सुल्तान शाह लोदी के घर में हुआ। इस सुल्तान शाह को खिज्र खा ने बहुत बडा अमीर बना कर इस्लाम खा की उपाधि दे दी थी और सरहिन्द का राज्य उसके अधिकार में दे दिया था। एक दिन इस्लाम खा नमाज पढ रहा था। बल्लू ने बालको के समान धृष्टतापूर्वक इस्लाम खा की जा नमाज[1] पर पाव रख दिया। घर के लोगो ने उसे जबरदस्ती रोकते हुये कहा, "हे बालक! खेलने का स्थान दूसरा है। खान के मुसल्ले[2] पर धृष्टतापूर्वक पाव मत रख।" इस्लाम खा ने कहा, "बालक है। यदि मेरे सिर पर भी पाव रक्खे तो उचित है।" घर वालो को इस बात पर आश्चर्य हुआ। इस्लाम खा ने कहा, "तुम्हें इस पर आश्चर्य न होना चाहिये। मैं इस भतीजे में ऐसे गुण देखता हू जिनसे पता चलता है कि वह किसी दिन उच्च श्रेणी को प्राप्त होगा और हमारे वश को उसके द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त होगी।"

मजजूब से भेंट

जब बल्लू बडा हुआ तो घोडो का व्यापार करने लगा। सर्वदा विलायत[3] से घोडे लाकर हिन्दुस्तान में बेचा करता था और इस प्रकार अपना समय व्यतीत किया करता था। एक दिन बल्लू खा व्यापारियो के एक समूह सहित घोडो के क्रय हेतु विलायत को रवाना हुआ और सामाना पहुचा। वहा इब्बन नामक एक पहुचा हुआ मजजूब[4] जीवित था। बल्लू खा क्योकि कारवान वालो का नेता था अत वह अपने दो विश्वासपात्र मित्रो अर्थात् कुतुब खा तथा फीरोज खा सहित उसकी सेवा में जाकर आदरपूर्वक बैठ गया। उनके बैठते ही उस पहुँचे हुये मजजूब ने पूछा, "क्या तुम लोगो में कोई देहली की बादशाही २००० तन्के में क्रय कर सकता है?" कुतुब खा तथा फीरोज खा दोनो चुप रहे। बल्लू खा ने (४) १६०० तन्के उसके समक्ष रख कर कहा, "मेरे पास इससे अधिक नही।" उस बुजुर्ग ने स्वीकार

१ वह चटाई अथवा कपडा जिसे बिछाकर नमाज पढी जाती है।

२ जा नमाज, वह चटाई अथवा कपडा जिस पर नमाज पढी जाती है।

३ विलायत—राज्य।

४ वह सत जो ईश्वर के प्रेम में इतना लीन हो कि उसे ससार में किसी भी वस्तु की चिन्ता न हो। वह पागलों के समान जीवन व्यतीत करता है।

र लिया और कहा, "तुझे देहली का राज्य शुभ हो। ये दोनो व्यक्ति जो तेरे साथ हैं वे तेरी सेवा करेंगे।" वहा से बल्लू खा अपने दोनो मित्रा सहित चल खडा हुआ। उसके साथी उसकी खिल्ली उडाने लगे। बल्लू खा ने कहा, "मैंने जो कार्य किया उसके दो ही परिणाम हैं। यदि जैसा कि इस बुजुर्ग ने कहा सच निकला तो मुफ्त में सौदा हो गया और यदि ऐसा न हुआ तो सैयिद दरवेश की सेवा व्यर्थ न जायगी।" यह कह कर वह चल खडा हुआ।

परगने को अधिकार में करना

कहा जाता है कि इस बार बल्लू खा विलायत से उत्तम घोडे लाया और घोडो को मोटा करके अपने चाचा के साथ देहली में खिज्र खा के पौत्र सुल्तान मुहम्मद की सेवा में, जो सिहासनारूढ हो चुका था, ले गया। समस्त घोडो को शाही सरकार में एक साथ बच डाला। शाही पदाधिकारियो ने व्यापारियो की वरात[1] का कागज दे दिया कारण कि वह समस्त परगना विद्रोह करके आज्ञा के क्षेत्र से निकल चुका था। जब इन व्यापारियो में से एक व्यक्ति परगने में धन वसूल करने गया तो उसने वहा अन्य ही दशा पाई। लौट कर उसने अपने मित्रो को अवगत कराया। बल्लू खा ने समस्त व्यापारियो के साथ (५) इस्लाम खा से निवेदन किया कि, "मैं व्यापारियो के साथ परगने में जा रहा हू। जो कुछ मुझसे हो सकेगा मैं करूगा।" इस्लाम खा ने सुल्तान को इस बात की सूचना भेज दी। सुलतान ने आदेश दिया, "यदि तेरा भतीजा विद्रोहियो को दड देकर आज्ञाकारी बना ले तो मैं वह परगना उसे प्रदान कर दूंगा। जो बन्दी तथा लूट की धन-सम्पत्ति प्राप्त हो उसे मैं उन लोगो को प्रदान कर दूंगा।"

लाहौर के समीप के परगनो का बहलोल के अधिकार में आना

बल्लू खा ने व्यापारियो के समूह सहित उस परगने में पहुच कर अल्प समय में ही विद्रोहियो को दड देकर आज्ञाकारी बना लिया। दास, मवेशी तथा अपनी बरात का धन लेकर देहली पहुच गया। सुल्तान बल्लू की वीरता देख कर उसको आश्रय प्रदान करने लगा और समस्त लूट की धन-सम्पत्ति उसे प्रदान कर दी और व्यापारियो के क्षेत्र से निकाल कर सेवको तथा अमीरो के क्षेत्र में सम्मिलित कर लिया। कुछ अन्य परगने उसकी जागीर में दे दिये और उसकी उपाधि मलिक बहलोल कर दी। तदुपरान्त मलिक बहलोल के कार्य को उन्नति प्राप्त होने लगी। वह प्रत्येक वर्ष सेना तैयार करके सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत करता था और इन नौकरो के समूह के वेतन हेतु अन्य परगने प्राप्त कर लिया करता था, यहा तक कि लाहौर के समीप के अधिकाश परगने मलिक बहलोल के अधिकार में आ गये।

बहलोल की कुतुब खा तथा हुसाम खा पर विजय

उस दरवेश की बात के कारण वह राज्य प्राप्त करने की आकाक्षा किया करता था। सुल्तान मुहम्मद के राज्यकाल में ही इस्लाम खा की मृत्यु हो गई और इस्लाम खा ने बहलोल की योग्यता को देखकर अपने पुत्रा के होते हुये उसे अपना उत्तराधिकारी बना दिया। इसी कारण मुहम्मद इस्लाम खा के ज्येष्ठ पुत्र कुतुब खा तथा बहलोल में शत्रुता हो गई। कुतुब खा बहलोल से विद्रोह करके हुसाम खा की शरण में, जो सुल्तान का वजीर था, पहुच गया और हुसाम खा के पास बदायूं चला गया। हुसाम खा

[1] एक प्रकार की हुण्डी जिसके द्वारा राजधानी में बिके हुये सामान का मूल्य प्रान्तों अथवा राज्य के अधीन अन्य भागों में वसूल किया जा सकता था।

(६) से मिलकर उसने अत्यधिक सेना एकत्र की और वहलोल पर चढाई की। दोनो दलो का गढ नामक स्थान पर जो खिज्रावाद तथा साढोरा परगने में है युद्ध हुआ। हुसाम खा पराजित होकर बदायूँ चला गया और वहलोल ने विजय प्राप्त करके इस्लाम खा के स्थान पर सरहिन्द म अधिकार जमा लिया। वह अधिकाश सरहिन्द तथा लुधियाना मे निवास करता था। सुल्तान मुहम्मद ने इस विजय का हाल सुनकर, जो मलिक बहलोल ने हुसाम खा तथा कुतुब खा पर प्राप्त की, मलिक बहलोल को फतह खा की उपाधि प्रदान कर दी। उस क्षेत्र में उसके द्वारा बहुत बडे-बडे कार्य सम्पन्न हुये।

हमीद खा का वजीर नियुक्त होना

कुछ समय उपरान्त माडू के बादशाह सुल्तान मुहम्मद ने देहली को घेर लिया। फतह खा ने वडी वीरता का प्रदर्शन किया। अन्त में उसके कारण विजय प्राप्त हो गई। सुल्तान मुहम्मद ने बहलोल को पुत्र तथा खाने खाना की उपाधि देकर सरहिन्द प्रान्त की ओर भेज दिया। इसी बीच में सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु हो गई और उसके स्थान पर उसका अभागा पुत्र अलाउद्दीन सिंहासनारूढ हुआ। ससार का कारोबार अव्यवस्थित हो गया और नित्य प्रति उसकी व्यवस्था क्षीण होने लगी। मलिक बहलोल ने सुल्तान अलाउद्दीन की सेवा में बदायूँ मे पत्र भेजा कि आप हुसाम खा की हत्या करा दें और हमीद खा को वजीर नियुक्त कर दें। सेवक आज्ञाकारी रहेगा।" सुल्तान ने बिना सोचे-समझ हुसाम खा की जिसके कारण उसके राज्य को उन्नति प्राप्त थी हत्या करा दी और हमीद खा को वजीर नियुक्त कर दिया। लोदियो ने उसके प्रति निष्ठा प्रदर्शित करते हुये सेवा करनी प्रारम्भ कर दी। उनके महाल तथा जागीर को उन्ही के पास रहने दिया गया। हुसाम खा की हत्या के कुछ समय उपरान्त ही लोदी लोग शनै-शनै प्रभुत्वशाली बनने लग और लाहौर, दीपालपुर[1], सुनाम, हिसार, फीरोजावाद तथा अन्य परगनो पर बलपूर्वक अधिकार जमा लिया।

स्वतन्त्र राज्य

(७) उस समय समस्त हिन्दुस्तान की दशा अव्यवस्थित हो गई थी। प्रत्येक नगर में एक हाकिम पैदा हो गया था। अहमद खा मेवाती ने महरौली से लेकर लादो सराय, जो देहली के समीप है, तक के स्थान अपने अधिकार में कर लिय। लोदियो ने लाहौर मे लेकर पानीपत तक के स्थान अपने अधिकार में कर लिये। देहली नगर तथा समीप के कुछ स्थान अलाउद्दीन शाह के अधिकार में थे और वह उस विलायत पर राज्य करता था। ससार वाले यह लोकोक्ति कहते थे

"बादशाहिये आलम अज देहली ता पालम'[2]

हमीद खा के निमन्त्रण पर वहलोल का देहली पहुचना

इसी बीच में अलाउद्दीन के कुछ विश्वासपात्रों ने बहलोल के सकेत पर सुल्तान से निवेदन किया कि, "यदि आप हमीद खा की हत्या करा दें तो हम चालीस परगने खाल्से[3] में सम्मिलित कर देंगे।'

१ दीपालपुर तथा दीवालपुर भी प्रयुक्त हुआ है।
२ ससार के बादशाह का राज्य देहली से पालम तक'।
३ राज्य की भूमि के वे भाग जिनका कर बिना किसी मध्यस्थ के शाही खजाने में दाखिल किया जाता था।

अलाउद्दीन ने जिसे राज्य के कार्य से कोई लगाओ न था हमीद खा के वध का आदेश दे दिया। हमीद खा ने बडी कठिनाई से अपने आप को विनाश के भवर से निकाला और देहली पहुच गया। वह इस बात की चिन्ता करने लगा कि किसी अन्य को अलाउद्दीन के स्थान पर सिंहासनारूढ कर दे। उसने दो व्यक्तियों को बादशाही के लिये बुलवाया। एक कयाम खा को और दूसरे मलिक बहलोल को। जब दोनो व्यक्तियो के पास पत्र पहुचे तो वे देहली की ओर चल दिये। बहलोल उस समय सरहिन्द में था। वह शीघ्रातिशीघ्र अत्यधिक सेना लेकर देहली पहुच गया। कयाम खा, बहलोल के पहले ही पहुच जाने के समाचार पाकर मार्ग से लौट गया।

मलिक बहलोल हमीद खा की सेवा में उपस्थित हुआ। हमीद खा ने भय के कारण प्रथम भेंट ही में बहलोल से कहा, "देहली की बादशाही तुम्हारे लिये शुभ हो। विजारत का पद मेरे पास रहने दो।" मलिक बहलोल ने हमीद से कहा, "मै एक सैनिक हू। राज्य का कार्य भली भाति सम्पन्न नही कर सकता। आप बादशाह हो जाय और मै सेनापति रहू। जो आप आदेश देंगे, मै उसका पालन करूगा।" हमीद खा ने कहा, "इस कार्य में मैंने अपने लिये हाथ नही डाला है। अपितु इस्लाम के लाभार्थ यह कार्य किया है। मुझे विश्वास हो गया था कि इस्लाम उसकी बादशाही मे दुर्दशा को प्राप्त हो गया है। मुझे भय हुआ कि कही इसमें कोई खराबी न हो, कारण कि कहा गया है, 'राज्य प्रभुत्वशाली को प्राप्त होता है' और तुझसे अधिक कोई अन्य व्यक्ति प्रभुत्वशाली नही है। इसी कारण मैंने तुझे सूचना दे दी।" सक्षेप (८) में, प्रतिज्ञा तथा वचन लेकर हमीद खा ने किले की कुजी मलिक बहलोल के समक्ष रख दी। बहलोल ने कहा, "आप जिस सेवा का आदेश देते हैं मै उसे स्वीकार करता हू। मैंने शहर तथा द्वारो की रक्षा अपने लिये अनिवार्य कर ली है कारण कि मलिकों तथा बादशाहो के लिये प्रजा की रक्षा अनिवार्य है और यह उसका बहुत बडा कर्तव्य है।"

बहलोल द्वारा राज्य प्राप्त करने का प्रयत्न

यद्यपि बहलोल बाह्य रूप से हमीद खा का आदर-सत्कार करता था किन्तु हृदय से वह अपने कार्यों की व्यवस्था किया करता था। उसने समस्त बादशाही कारखानों[1] को अपने अधिकार में कर लिया। उस समय हमीद खा को अत्यधिक शक्ति प्राप्त थी। इसी कारण समय की आवश्यकतानुसार सुल्तान बहलोल हमीद खा से नम्रतापूर्वक व्यवहार करता रहता था और रोजाना वह उसके अभिवादन हेतु जाया करता था। एक दिन हमीद खा के घर बहलोल की दावत हुई। उसने अफगानो को समझा दिया कि "तुम लोग हमीद खा की गोष्ठी में ऐसे कार्य करना जिससे वह तुम्हें मूर्ख समझने लगे और उसके हृदय से तुम्हारे भय का अन्त हो जाय।" जब अफगान लोग बहलोल के साथ भोजन हेतु पहुचे तो विचित्र प्रकार के कार्य करने लगे। कुछ लोगो ने अपने जूते अपनी कमर में बाध लिये और कुछ लोगो ने अपने जूते हमीद खा के सिर के ऊपर के आले में रख दिये। हमीद खा ने कहा, "तुम लोग यह क्या कर रहे हो?" अफगानों ने कहा, "चोरो से रक्षा कर रहे हैं।" हमीद खा ने कहा, "निश्चिन्त रहो, यहा से कोई न ले जायगा।" कुछ क्षण उपरान्त अफगानो ने हमीद खा से कहा, "हे खान! आपके कालीन बड़े रग

[1] शाही आवश्यकताओं तथा शिकार आदि के प्रबन्ध के लिये बहुत से कारखानों की स्थापना की जाती थी। शिकारी कुत्ते, बाज, चीते आदि का प्रबन्ध भी इन्ही कारखानों द्वारा होता था। शाही आवश्यकता की वस्तुएँ भी कारखानों में तैयार होती थीं। प्रत्येक कारखाना एक मलिक अथवा खान के अधीन होता था।

विरगे है। यदि इनमें से एक कालीन हमें प्रदान हो जाय तो उसकी टोपिया बनवा कर अपने पुत्रो के पास उपहार स्वरूप भेज दें ताकि ससार वाले समझें कि हमें हमीद खा की सेवा के कारण अत्यधिक सम्मान प्राप्त हो गया है।" हमीद खा ने कहा, "तुम्हारी सेवा के बदले में मैं सुन्दर प्रकार के वस्त्र प्रदान करूगा।" भोजन के उपरात सुगन्धियाँ तथा पान के बीडो के थाल लाये गये। कुछ लोगो ने सुगन्धियो को चखा और कुछ लोग फूलो को खा गये। कुछ लोग पान के बीडे खोल कर केवल चूना ही खा गये। जब उनके (९) मुह जलने लगे तो बीडे फेंक दिये। हमीद खा ने बहलोल से पूछा, "यह लोग ऐसा क्यो कर रहे हैं?" उसने उत्तर दिया, "ये लोग गवार तथा मूर्ख हैं। आदमियो में कम रहे हैं। खाने तथा मरने के अतिरिक्त कोई अन्य कला नही जानते।"

दूसरे दिन फिर बहलोल पुन हमीद खा के घर पहुचा। उसका नियम यह था कि जब वह हमीद खा के घर जाता तो थोडे से लोग उसके साथ जाते थे। अधिकाश अफगान बाहर रहते थे। इस बार अफगान लोग बहलोल के नेतृत्व मे दरबानो को पीट कर जबरदस्ती भीतर प्रविष्ट हो गये और कहने लगे, "हम भी हमीद खा के सेवक हैं। हम उसके अभिवादन से क्यो वचित रहें?" जब शोर होने लगा तो हमीद खा ने पूछा, "यह कैसा शोर है?" लोगो ने बताया, "अफगान लोग बहलोल को गाली देते हुये घुसे आ रहे हैं।" जब वे हमीद खा के समीप पहुचे तो उन्होने कहा, 'हम भी बहलोल के समान आपके सेवक हैं। वह भीतर आये तो हम क्यो न आयें और अभिवादन से किस कारण वचित रहें?" हमीद खा ने कहा, "इन्हें छोड दो और मत रोको।"

अफगान लोग भीड करके भीतर प्रविष्ट हो गये और प्रत्येक सेवक के बराबर, जो हमीद खा के चारो ओर खडे थे, दो दो अफगान खडे हो गये। इसी बीच में बहलोल के चचेरे भाई कुतुब खा लोदी ने आस्तीन से जजीर निकाल कर हमीद खा के समक्ष रख दी और कहा, "अब यह उचित होगा कि तू शीघ्र एकान्त में चला जा। तेरे नमक के विचार से हम तेरी हत्या नही करते।" हमीद खा ने कहा, "हमने तुम्हारे साथ कौन सी बुराई की थी जो तुमने हमारे विरुद्ध यह षड्यत्र रचा?" कुतुब खा ने कहा, "हम तेरे प्राण को कोई हानि न पहुचायेंगे किन्तु नवाब साहब ! क्योकि तुमने स्वय हरामखोरी की है (१०) अत हमें तुम पर विश्वास नही रहा।" यह कह कर उसने हमीद खा के पाव में जजीर डाल दी और कोट के बाहर उस महल में, जिसका निर्माण उसके लिये हुआ था, उसे बन्दी बना दिया।

सुल्तान बहलोल ने सुल्तान अलाउद्दीन के पास बदायूँ पत्र भेजा कि, 'मेरा पालन-पोषण आपके द्वारा हुआ है। इसी कारण मैं आपका वकील[1] बन कर राज्य के कार्य जो आपके हाथ से निकल चुके थे, सुव्यवस्थित कर रहा हू। आपके नाम को खुत्बे तथा सिक्के से नही पृथक् करता।" अलाउद्दीन ने जिसके भाग्य में राज्य न था, उत्तर में लिखा कि, "मेरा पिता आपको पुत्र कहा करता था और मैं आपको बडा भाई समझता था। राज्य के कार्य आप पर छोडता हू और मैं बदायूँ के एक परगने से सतुष्ट हू।" सुल्तान बहलोल सिंहासनारूढ हो गया।

सुल्तान बहलोल लोदी का सिंहासनारोहण

सुल्तान बहलोल का चरित्र

बहलोल १७ रबी-उल-अव्वल ८५० हि०[2] (१२ जून १४४६ ई०) को देहली मे सिंहासनारूढ

१ प्रतिनिधि।
२ १४ रबी-उल अव्वल ८५५ हि० (१६ अप्रैल १४५१ ई०) होना चाहिये।

हुआ और अपनी उपाधि सुल्तान बहलोल शाह गाजी रक्खी। वह धर्म को उन्नति देने वाला, वीर तथा दानी था। उसे सहनशीलता तथा दया स्वाभाविक रूप से प्राप्त थी। वह शरा[1] का पूर्ण रूप से पालन करता था और कोई भी कार्य शरा के विरुद्ध कदापि न करता था। वह अपना अधिकाश समय आलिमो तथा फ़कीरो के साथ व्यतीत करता था और दरिद्रियो के प्रति दयापूर्ण व्यवहार करता था। भिखारी को कभी न लौटाता और पाचो समय की नमाज़ जमाअत के साथ पढता था। न्याय करने का अत्यधिक प्रयत्न करता और अपनी प्रजा के प्रार्थना-पत्र स्वय सुनता और उन्हें अमीरो तथा वज़ीरो पर न छोड (११) देता था। सुल्तान बहलोल न्यायकारी, बुद्धिमान्, कार्यकुशल, किसी को हानि न पहुचाने वाला, कृपालु, दयालु तथा प्रजा का पोषक था। धन-सम्पत्ति तथा नये परगने जो कुछ उसे प्राप्त होते वह उन्हे सेना में बाट देता था। कोई वस्तु भी अपने पास न रखता और खज़ाना एकत्र न करता था। वह बनावट से शून्य तथा बडे सरल स्वभाव का बादशाह था। भोजन करते समय द्वारपालो को दरबार से हटवा देता था। जो कोई आता वह भोजन करता।

अमीरो के प्रति व्यवहार

गोष्ठियों में वह सिहासन पर आसीन न होता था। अमीरों को भी खडा न रहने देता था और दरबारे आम में भी सिंहासन पर आरूढ न होता था। कालीन पर आसीन होता। वह अमीरों को फरमानो में "मसनदे आली" शब्द से सम्बोधित करता था। यदि कभी कोई अमीर उससे रुष्ट हो जाता तो सुल्तान स्वय उसके पास जाता और कमर से तलवार खोल कर उसके समक्ष रख देता और क्षमा-याचना करते हुये कहता, "यदि आप हमे इस कार्य के योग्य नही समझते तो किसी अन्य को इस कार्य के लिये चुन लें और हमें कोई अन्य कार्य प्रदान कर दे।"

साधारण प्रथाओ का आविष्कार

वह समस्त अमीरो तथा सैनिको से भाइयो के समान व्यवहार करता था। यदि कोई रुग्ण हो जाता तो वह उसके विषय में पूछ-ताछ करने जाता था। उसके राज्यकाल के पूर्व देहली में यह प्रथा थी कि "तीजे"[2] के दिन शर्बत, पान, गिलौरी, मिश्री तथा शकर का वितरण होता था। सुल्तान बहलोल ने इस प्रथा का अन्त करा दिया और केवल फूल तथा गुलाब बाँटे जाते थे। उसका कथन था कि "हम इस प्रथा को न चला सकेंगे कारण कि यदि कोई अफगान भिखारी मर जायगा तो उसकी कौम के एक लाख अफगान एकत्र हो जायेंगे। उस अभागे का उत्तराधिकारी इन वस्तुओं की किस प्रकार व्यवस्था कर सकेगा? केवल सुगन्धिया ही पर्याप्त होनी चाहिये।"

सुल्तान की वीरता

वह इतना अधिक वीर था कि युद्ध के समय जब उसकी दृष्टि शत्रु पर पडती तो वह घोडे से उतर कर दुगाना[3] पढता और इस्लाम तथा मुसलमानो की कुशलता की ईश्वर से प्रार्थना करता था और अपनी विवशता को स्वीकार करता था। जिस दिन से उसे राज्य प्राप्त हुआ कोई भी शत्रु उस पर विजय न पा

[1] इस्लामी नियम।
[2] मृत्यु के तीन दिन के भीतर सम्पन्न की जाने वाली प्रथायें।
[3] दो रकात नमाज़। नमाज़ में खडे होने, झुकने तथा सिज्दे में जाने और पुन खड़े होने की पूरी क्रिया को एक रकात कहते हैं।

सका। किसी भी युद्ध में वह पराजित न हुआ। या तो उसे जीत लेता, या आहत होकर रण-क्षेत्र में गिर पडता या फिर पहले से ही युद्ध न करता।

मुल्ला कादन से वार्ता

(१२) कहा जाता है कि जिस दिन वह सिंहासनारूढ हुआ तो उस सप्ताह में नमाज हेतु जामा मस्जिद में उपस्थित हुआ। मुल्ला कादन जोकि उस नगर का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था, खुत्वा पढ़ने के लिये मिम्बर पर पहुचा। खुत्वा समाप्त करके जब वह नीचे उतरा तो उसने कहा, "ईश्वर को धन्य है, विचित्र कौम उत्पन्न हो गई है। समझ में नही आता कि क्या दज्जाल[1] इनका पूर्वगामी होगा। उनकी भाषा ऐसी है कि वे मा को मोर, भाई को रोर, ग्राम को शोर, सेना को तोर तथा[2] को नोर कहते हैं।" जब वह यह बात कह रहा था तो सुल्तान बहलोल ने मुह पर रूमाल रख कर हसते हुये कहा "मुल्ला कादन बस करो। हम भी ईश्वर के दास हैं।"

सुल्तान के पुत्र

जिस समय सुल्तान सिंहासनारूढ हुआ तो उसके ९ पुत्र थे। उसका ज्येष्ठ पुत्र ख्वाजा बायजीद था, दूसरा निजाम खा जिसकी उपाधि सुल्तान सिकन्दर हुई, तीसरा मुबारक खा जिसकी उपाधि बारबक शाह हुई, चौथा आलम खा जो सुल्तान अलाउद्दीन के नाम से प्रसिद्ध हुआ, पाचवा जमाल खा, छठा मिया याकूब खा, सातवा फतह खा, आठवा मिया मूसा खा, नवा जलाल खा। प्रतिष्ठित अमीरो में, जो सुल्तान के सम्बन्धी थे और जो सेनापति की श्रेणी तक पहुचे, चार व्यक्ति थे : (१) कुतुब खा सुल्तान बहलोल का चचेरा भाई जो प्रारम्भ में सुल्तान का शत्रु था। कुतुब खा वीरता एव पौरुष में अद्वितीय था, (२) खाने जहा लोदी, (३) दरिया खा लोदी, (४) तातार खा लोदी। ये चारो व्यक्ति सुल्तान के सम्बन्धी थ। इनके अतिरिक्त २४ अन्य व्यक्ति थे जो प्रतिष्ठित अमीर थे।

सुल्तान के सिंहासनारोहण के बाद की घटनायें

सुल्तान महमूद शर्की का आक्रमण

(१३) अलाउद्दीन के कुछ अमीरो ने जो अफगानो के राज्य से सतुष्ट न थे गुप्त रूप से सुल्तान महमूद शर्की को जौनपुर से बुलवाया। कुछ इतिहासकारो का मत है कि सुल्तान महमूद शर्की के जौनपुर पर आक्रमण का कारण यह था कि बदायूँ के अलाउद्दीन शाह की पुत्री ने, जो सुल्तान महमूद की पत्नी थी, अपने पति से कहा, "देहली मेरे पिता के राज्य मे है। बहलोल कौन होता है जो देहली का बादशाह हो गया है? यदि तू सवार न होगा तो मै निपग बाधती हू और बहलोल पर आक्रमण करती हू।" सुल्तान बहलोल ने यह समाचार पाकर अत्यधिक विनय तथा नम्रता प्रदर्शित की किन्तु सुल्तान महमूद ने कोई बात स्वीकार न की और सुल्तान बहलोल की बात पर ध्यान न दिया।

८५६ हि० (१४५२ ई०) मे सुल्तान महमूद एक बहुत बडी सेना लेकर, जिसमे १,७०,००० अश्वारोही तथा पदाती और १४०० युद्ध के हाथी थे, देहली पहुचा और देहली को घेर लिया। उन दिनों सुल्तान सरहिन्द में था। सुल्तान का ज्येष्ठ पुत्र ख्वाजा बायजीद तथा इस्लाम खा की पत्नी बीबी मत्तू,

१ दज्जाल :—हदीस के अनुसार वे लोग जो झूठे धर्म चलाने का प्रयत्न करेंगे।
२ मूल पुस्तक में यहाँ कुछ नहीं लिखा है, सम्भवत शिश्न होगा।

समस्त परिवार, अफगानो तथा अन्य अमीरो सहित देहली के किले में बन्द हो गय। क्योकि किले में पुरुषों की सख्या बडी कम थी अत बीबी मत्तू कुछ स्त्रियों को पुरुषों के वस्त्र पहना कर किले के ऊपर भेज देती थी और किले की रक्षा किया करती थीं। जितने अफगान किले में रह गये थे वे बाणों की वर्षा किया करते थे। एक दिन शाह सिकन्दर शिरवानी, जो खाने जहा लोदी का जामाता था, किले के एक कगूरे[1] पर बैठा था। यह सिकन्दर बडा ही कुशल धनुर्धर था। अपने बाणो के लोहे की नोक पर वह सोने का मुलम्मा करवा देता था और नोक पर लिखवा देता था, "सिकन्दर शाह है।" उसके बाण ११ मुट्ठी लम्बे होते थे और ८०० पग तक जाते थे। एक दिन सुल्तान महमूद का सक्का[2] कगूरे के नीचे के कुए का जल उसके लिये ले जा रहा था और किले से तीन बाण के मार की दूरी पर गुज़र रहा था। सिकन्दर ने उस पर बाण चलाया। वह बाण दोनो पखालो तथा बैल को पार करता हुआ भूमि में प्रविष्ट हो गया। बाण की नोक को वह भूमि से निकाल कर सुल्तान के समक्ष ले गया और उसे समस्त हाल बताया। तदुपरान्त कोई भी किले के निकट न जाता था।

(१४) जब अवरोध की अवधि बहुत बढ गई और सुल्तान बहलोल के आने में विलम्ब हुआ तो किले वालो ने सन्धि करना निश्चय करके यह बात स्वीकार की कि वे किला तथा नगर खाली करके सुल्तान महमूद के आदमियो को सौंप देंगे और बाहर चले जायेंगे। शम्सुद्दीन नामक एक सम्मानित व्यक्ति किले के भीतर से कुजिया लेकर दरिया खा अथवा मुबारक खा के पास जो महमूद का एक उत्कृष्ट अमीर था, पहुचा और उससे कहा, "मैं एकान्त में तुमसे कुछ वार्ता करना चाहता हू।" दरिया खा ने अपने आस पास के आदमियो को हटा कर पूछा, "क्या कहना चाहते हो?" सैयिद ने पूछा, 'तुममें तथा सुल्तान महमूद में क्या कोई रिश्तेदारी है?" दरिया खा ने कहा, "कोई नही। मैं उसका सेवक हू।" उसने पुन पूछा, "सुल्तान बहलोल से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?" उसने उत्तर दिया, "हम एक दूसरे के भाई हैं। वह भी लोदी है हम भी लोदी हैं।" सैयिद ने पूछा, "उसकी माता तथा बहिन तेरी कौन हैं?" उसने उत्तर दिया, "उसकी माता मेरी माता तथा उसकी बहिन मेरी बहिन है।" सैयिद शम्सुद्दीन ने कुजिया निकाल कर उसके समक्ष रख दी और कहा, "अपनी माता तथा बहिन को चाहे पर्दे में रख और चाहे अपमानित कर।" दरिया खा ने कहा, 'मैं क्या करू? यदि सुल्तान बहलोल होता तो कुछ बात करता।" सैयिद ने कहा, "मेरा विचार है कि सुल्तान बहलोल किले की ओर अग्रसर होने मे सकोच कर रहा है।" दरिया खा ने कहा, "यदि यही बात है जो तूने कही तो कुजिया ले जा। मुझसे जो कुछ हो सकेगा मैं करूँगा।"

दरिया खा उसे विदा करके सुल्तान महमूद के पास पहुचा और कुजियो के लाने का हाल उसे बता कर कहा कि, "मेरे पास कुजिया आई थी, मैंने नही ली। इसका कारण यह है कि सुना जाता है कि सुल्तान बहलोल अत्यधिक सेना लेकर पहुच गया है। यदि हम उसे विजय कर लेते हैं तो समस्त राज्य हमारे अधिकार में आ जायगा।" सुल्तान ने पूछा, "फिर क्या करना चाहिये?" दरिया खा ने कहा, "मुझे तथा फ़तह खा को आदेश हो कि हम उससे युद्ध करने जाय और उसे नष्ट कर डालें। बाद-(१५) शाह अपने स्थान ही पर रहे।" सुल्तान ने इन दोनो अमीरो को ३०,००० अश्वारोहियो तथा ३० हाथियों सहित सुल्तान बहलोल से युद्ध करने के लिये भेजा।

१ किले की दीवार में थोड़ी थोडी दूर पर बने हुये ऊँचे स्थान जहाँ खड़े होकर सिपाही लड़ते हैं, शिखर।

२ पानी ले जाने वाला।

सुल्तान दीपालपुर के मार्ग से सेना एकत्र करके नरीला नामक स्थान पर जो देहली से १४ कोस पर है पहुच गया था। सुल्तान बहलोल की सेना सुल्तान महमूद के बैल तथा ऊट, जो चरागाह में थे, दो बार पकड ले गई थीं। महमूद शाह की सेना ने थोडी सी दूरी पर पडाव किया। दूसरे दिन दोनों सेनाओ में युद्ध निश्चय हुआ। सुल्तान बहलोल की सेना कुछ लोगो के मतानुसार १४००० और कुछ सूत्रों के अनुसार ७००० से अधिक न थी। सुल्तान बहलोल विजय प्रदान करने वाले ईश्वर पर आश्रित होकर रणक्षेत्र में प्रविष्ट हो गया। लोदियो ने एसा घोर युद्ध किया कि सुल्तान महमूद की सेना वालो ने आश्चर्य से दातो के नीचे अगुली दवा ली। इसी बीच में सुल्तान बहलोल के चचेरे भाई का, जो धनुर्विद्या में अद्वितीय था, एक बाण महमूद शाह के हाथी के, जो एक ही आक्रमण में सेना को छिन्न-भिन्न कर देता था, मस्तक पर लगा और उसके घाव से वह बेकार हो गया। इसी बीच में कुतुब खा ने दरिया खा से चिल्ला कर कहा, "तेरी मातायें तथा बहिनें किले मे बन्द हैं। तेरे लिये क्या यह उचित है कि तू शत्रु की ओर से प्रयत्न करे और अपने वश की मर्यादा पर ध्यान न दे?" दरिया खा ने कहा, "मै जाता हू। तू पीछा मत कर।" कुतुब खा ने शपथ ली।

दरिया खा (सुल्तान महमूद) की सेना से निकल गया और दरिया खा के निकलते ही सुल्तान महमूद की सेना पराजित हो गई। फतह खा हरेवी, जो सेना का सरदार था, बन्दी बना लिया गया और उसकी हत्या करा दी गई और नरीला में दफ्न कर दिया गया। सुल्तान महमूद की सेना पराजित होकर शाही शिविर में पहुच गई। किले के भीतर वाले सुल्तान महमूद की सेना की व्याकुलता देख कर बीबी मत्तू के पास पहुचे और उससे सब हाल बताया। बीबी ने पूछा, "कुछ पता चलता है कि वे पराजित (१६) होकर आ रही हैं अथवा विजय पा कर?" लोगा ने अपनी अज्ञानता प्रदर्शित की। बीबी मत्तू ने कहा, 'देखो कि जो लोग आये हैं, वे बादशाह के दरबार में जाते हैं अथवा अपने खेमों में।" जब लोगों ने सावधानी से देखा तो पता चला कि सेना वाले अपने अपने खेमो में खेद प्रकट करते हुये अपना असबाब एकत्र कर रहे हैं। जब बीबी मत्तू को यह ज्ञात हुआ तो उसने कहा कि, "शीघ्र जाकर खुशी के नक्कारे बजा दो।" जब खुशी के बाजों की आवाज सुल्तान महमूद ने सुनी तो उसने अपने आदमियो से पूछा कि, "नक्कारे क्यों बजाये जा रहे हैं?" लोगों ने बताया कि किले के भीतर वालो द्वारा ज्ञात हुआ है कि हमारी सेना पराजित हो गई। सुल्तान ने आदेश दिया कि "ठीक ठीक पता लगा कर आओ।" इसी बीच में दरिया खा लोदी ने पहुच कर फतह खा की हत्या तथा सेना की पराजय के समाचार पहुचाये। सुल्तान समझ गया कि उसके साथ विश्वासघात हुआ है और वह जौनपुर की ओर चला गया।

राज्य-विस्तार हेतु बहलोल का प्रस्थान

इस विजय के उपरान्त सुल्तान बहलोल के कार्यों को स्थायित्व प्राप्त हो गया। उसने बिलायतों[1] की विजय हेतु प्रस्थान किया। सर्वप्रथम वह मेवात पहुचा और अहमद खा मेवाती से सात परगने लेकर शेष परगने उसने उसी के पास रहने दिये। अहमद खा ने अपने चाचा को सर्वदा सुल्तान की सेवा में रहने के लिये नियुक्त कर दिया। सुल्तान बहलोल ने राज्य के अधीनस्थ समस्त भागो पर उपर्युक्त प्रथानुसार अपना अधिकार स्थापित कर लिया और कुछ महालों से कई मन सोना लेकर शम्साबाद की ओर रवाना हुआ। वहा का हाकिम महमूद, सुल्तान बहलोल के पहुचने के कारण चल दिया।

१ अन्य प्रदेशों।

सुल्तान महमूद का शम्साबाद पर आक्रमण

यह समाचार पाकर सुल्तान महमूद जौनपुर से बहुत बडी सेना लेकर शम्साबाद की ओर रवाना हुआ। जब वह शम्साबाद के निकट पहुंचा तो सुल्तान के चचेरे भाइयो, कुतुब खा तथा दरिया खा ने महमूद शाह की सेना पर रात्रि में छापा मारा। अचानक कुतुब खा के घोडे ने ठोकर खाई और वह घोडे से गिर पडा और सुल्तान महमूद की सेना द्वारा बन्दी बना लिया गया। सुल्तान ने उसे जौनपुर भेज दिया। (१७) वह सात वर्ष तक बन्दी रहा। इसी बीच में सुल्तान महमूद रुग्ण हो गया और उसकी मृत्यु हो गई। उसकी माता बीबी राजी ने अमीरो की सहमति से शाहज़ादा भीखन खा को शर्की सुल्तानो के सिंहासन पर आरूढ कर दिया और उसकी उपाधि मुहम्मद शाह रख दी। सुल्तान बहलोल तथा इस बादशाह में सन्धि हो गई और प्रत्येक अपनी अपनी राजधानी को लौट गया।

मुहम्मद शाह तथा बहलोल का युद्ध

जब सुल्तान बहलोल देहली के समीप पहुंचा तो कुतुब खा की बहिन शम्स खातून ने सुल्तान बहलोल के पास सन्देश भेजा कि "जब तक कुतुब खा जौनपुर के बादशाह के बन्दीगृह में है उस समय तक सुल्तान को नींद तथा आराम हराम है।" सुल्तान बहलोल प्रभावित होकर दनकौर से लौट गया और उसने मुहम्मद शाह पर चढाई की। वहा से भी उसकी सेना ने प्रस्थान किया और रापरी तथा चन्दवार के परगनो में दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ। मुहम्मद शाह ने जौनपुर के कोतवाल को लिखा कि सुल्तान शाह के दोनों पुत्रों की, जो बन्दी हैं, हत्या करा दी जाय। कोतवाल ने उत्तर लिखा कि, "बीबी राजी उनकी इस प्रकार रक्षा कर रही हैं कि मैं उनकी हत्या नहीं करा सकता।" मुहम्मद शाह ने अपनी माता को जौनपुर से बुलवाया। वह मार्ग में ही थी कि (कोतवाल ने) कुतुब खा के भाई हसन खा की हत्या करा दी। बीबी राजी कन्नौज में उसकी मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिये रुक गई। मुहम्मद शाह ने अपनी माता को लिखा कि, "क्योंकि समस्त शाहज़ादों की यही दशा होगी अत आप सभी के लिये एक साथ शोक प्रकट कर लें।'

सुल्तान हुसेन शर्की का सिंहासनारोहण

(१८) संयोग से मुहम्मद शाह का पुत्र शाहजादा जलाल खा सुल्तान बहलोल की सेना द्वारा बन्दी बना लिया गया और उसे कुतुब खा के बदले में बन्दी रक्खा गया। मुहम्मद शाह बडा ही अत्याचारी, निष्ठुर तथा कठोर था। लोग उससे घृणा करते थे। लोगों ने बीबी राजी के प्रयत्न से शाहज़ादा हुसेन खा को सिंहासनारूढ कर दिया और उसकी उपाधि सुल्तान हुसेन खा शर्की रक्खी गई। मुहम्मद शाह कुछ अश्वारोहियों सहित भाग कर एक उद्यान में, जो उस क्षेत्र में था, चला गया। उसे वहा घेर लिया गया। क्योंकि मुहम्मद शाह बडा ही कुशल धनुर्धर था अत उसके कुछ शत्रुओं ने उसके सिलाहदार[1] से मिलकर उसके निषंग के वाणो से नोकें निकलवा ली। जब उसने निषंग से बाण निकाले तो उन्हें बिना नोक के पाया और तलवार निकाल ली तथा कुछ लोगों की हत्या कर दी। अचानक एक बाण मुहम्मद शाह की ग्रीवा पर लगा और उसी घाव से उसकी मृत्यु हो गई।

सुल्तान हुसेन ने सुल्तान बहलोल से प्रतिज्ञा की कि चार वर्ष तक वे लोग अपनी अपनी

१ ये भी सुल्तान के अंगरक्षक होते थे और जब सुल्तान दरबार करता अथवा कहीं बाहर जाता तो वे उसके साथ साथ रहते थे। उनका सरदार सरसिलाहदार कहलाता था।

विलायत[1] में सतुष्ट रहेंगे। सुल्तान हुसेन ने उसी पडाव पर कुतुब खा को जौनपुर से बुलवा कर घोडा तथा खिलअत प्रदान करके सम्मानपूर्वक सुल्तान बहलोल के पास भेज दिया। सुल्तान बहलोल ने शाहजादा जलाल खा को खिलअत प्रदान करके आदरपूर्वक सुल्तान हुसेन की सेवा में भेज दिया।

सुल्तान हुसेन तथा बहलोल के युद्ध

कुछ समय उपरान्त सुल्तान बहलोल का (सुल्तान हुसेन) से शम्साबाद के परगने में कई बार युद्ध हुआ। कई बार सुल्तान हुसेन ने देहली को घेर लिया और सुल्तान बहलोल ने किसी न किसी युक्ति से उसे पराजित कर दिया। कहा जाता है कि एक बार सुल्तान हुसेन शर्की ने बहुत बडी सेना तथा १००० युद्ध मे आजमाये हुये हाथियों को लेकर देहली पर चढाई की और जिलहिज्जा मास में देहली पहुच कर (१९) उसे घर लिया। दोनो सेनाओं मे बहुत समय तक युद्ध होता रहा। सुल्तान बहलोल सुल्तान हुसेन शर्की की सेना की अधिकता देखकर ख्वाजा कुतुबुद्दीन के मकबरे में पहुच कर रात भर नगे सिर खडे होकर प्रार्थना करता रहा। प्रात काल की नमाज के समय परोक्ष से एक व्यक्ति प्रकट हुआ और बहलोल के हाथ में एक डडा देकर उसने कहा, "इन थोडी सी भेडो को, जो आयी हैं, इससे भगा दे।"

सुल्तान बहलोल ने इस सुखद भविष्यवाणी को सुनकर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और सुल्तान हुसेन के मुकाबले के लिये सेना को नियुक्त करके युद्ध में व्यस्त हो गया। सुल्तान बहलोल के चचेरे भाई कुतुब खा ने जौनपुर की सेना के प्रति धूर्तता से कार्य लेते हुये गुप्त रूप से सुल्तान हुसेन के पास यह सन्देश भेजा कि "मै बीबी राजी का आभारी हू। जब मै जौनपुर मे बन्दी था तो उस पवित्र स्त्री ने मेरे प्रति अत्यधिक कृपा प्रदर्शित की थी। इस समय तुम्हारे लिये यही उचित है कि तुम सन्धि करके चले जाओ। गगा के उस ओर की विलायत तुम्हारे अधिकार मे रहे और इस ओर की सुल्तान बहलोल के अधिकार में।"

सुल्तान हुसेन दूसरे दिन सधि करके, सधि के विश्वास पर घोडों इत्यादि को छोडकर रवाना हो गया। सुल्तान बहलोल ने अवसर पाकर उसका पीछा किया। जो खजाना घोडों तथा हाथियो पर लदा हुआ था, बहलोल के अधिकार में आ गया। सुल्तान हुसेन के चालीस प्रतिष्ठित अमीर, उदाहरणार्थ कुलीज खा वजीर जोकि अपने समय का बहुत बडा आलिम था, बन्दी बना लिये गये। सुल्तान बहलोल ने सुल्तान हुसेन का पीछा किया और उसके अधिकाश परगनो को अपने अधिकार में कर लिया। सुल्तान हुसेन ने रापरी नामक स्थान के समीप से वापस होकर युद्ध किया। अन्त में इस शर्त पर सधि हो गई कि दोनो बादशाह अपनी अपनी विलायत मे सन्तुष्ट रहें। प्रत्येक अपने अपने स्थान को चला गया।

इसके उपरान्त सुल्तान हुसेन ने बहलोल पर पुन चढाई की और इस बार पुन पराजित हुआ। (२०) सुल्तान बहलोल को अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हो गई। इससे अफगानो की शक्ति में वृद्धि हो गई। सुल्तान बहलोल ने उस स्थान से इटावा की ओर प्रस्थान किया। इटावा भी अल्प समय में विजय कर लिया और उसे मुबारक खा नोहानी के पुत्र को प्रदान कर दिया। उसने स्वय एक भारी सेना लेकर कालपी की ओर जहा सुल्तान हुसेन था प्रस्थान किया। कुछ मास तक दोनों सेनाओ में युद्ध होता रहा। इसी बीच में उस स्थान के हाकिम राय त्रिलोक चन्द्र ने वहा पहुच कर उसे उस स्थान से जहा नदी का जल कम था, नदी पार करा दी। सुल्तान शर्की मुकाबला न कर सका और पटना की ओर भाग गया।

१ राज्य।

पटना के राजा ने उससे सौजन्यपूर्ण व्यवहार किया। कई लाख तन्के, कई घोडे तथा हाथी उसकी सेवा में उपस्थित किये और सेना को उसके साथ करके उसे जौनपुर पहुचवा दिया।

सुल्तान बहलोल इस घटना के उपरान्त जौनपुर पहुचा। सुल्तान हुसेन उस स्थान से भी भाग कर बिहार की ओर चला गया। सुल्तान बहलोल ने सफलता प्राप्त करके अपने पुत्र बारवक शाह को जौनपुर में शर्क़ी सुल्तानो के सिंहासन पर आरूढ कर दिया और वहा असख्य सेना नियुक्त करके कालपी की विलायत की ओर चला गया। उसने कालपी शाहज़ादा ख्वाजा बायज़ीद के पुत्र आज़म हुमायूँ को, जो उसका पौत्र था, प्रदान कर दी और धौलपुर की ओर रवाना हुआ। जब वह ग्वालियर पहुचा तो राजा मान ने अधीनता प्रदर्शित करते हुये, ८० लाख तन्के उसे भेंट किये। सुल्तान बहलोल ग्वालियर को राजा मान को सौंप कर देहली लौट गया।

बहलोल की मृत्यु

मार्ग में वह रुग्ण हो गया। अपना अन्तिम समय निकट समझ कर उसने अपने एक विश्वासपात्र को बुलवा कर उससे कहा कि "मेरी वसीयत निज़ाम खा को," जो सुल्तान सिकन्दर के नाम से बादशाह हुआ, "पहुचा देना १ सूर कौम के किसी व्यक्ति को अमीर अथवा खान नियुक्त न करना कारण कि उन्हें बादशाही की महत्वाकाक्षा है, २ न्याज़ी (अफगानों) को सेवा न प्रदान करना कारण कि वे लोग किसी बात की ओर ध्यान नही देते और नमक का भी ख्याल नही रखते।" तदुपरान्त जलाली कस्बे में जो सकेत कस्बे के अधीन है, ८९४ हि० (१४८८–८९ ई०) में उसकी मृत्यु हो गई। जूद नामक (२१) उद्यान में, जो देहली के समीप है और जहा एक भव्य मक़बरा है, दफ्न किया गया।

कुछ विचित्र घटनायें

दो मुर्दों की कहानी

अब मैं उन विचित्र घटनाओ का उल्लेख करता हूँ जो सुल्तान बहलोल के राज्यकाल में घटी। कहा जाता है कि सुल्तान बहलोल के राज्यकाल में कन्नौज में गगा नदी में अत्यधिक बाढ आ गई। नदी तट पर जो भवन तथा मज़ार थे वे ध्वस्त हो गये। मुर्दों की हड्डिया जल में पहुच गईं। वहा के कुछ बुखारी[1] सैयिदो ने यह निश्चय किया कि अपने पूर्वजो की हड्डिया निकालकर दूसरे स्थान पर दफ्न कर दें। नाव पर बैठकर वे कब्रो से हड्डिया निकालने लगे। उन्होने एक कब्र में देखा कि एक व्यक्ति सफेद कफन पहिने हुए इस प्रकार लेटा है कि मानो उसे कफन आज ही पहिनाया गया हो। उसके पाव की ओर रायबेल का पौधा उगा हुआ था और उसमें फूल खिले हुए थे। उसके पूरे कफ्न पर फूल पडे थे और उसके नाक के दोनों नथनो में भी दो फूल थे। उन फूलो की सुगन्धि जब उनकी नाक में पहुँची तो उनको ऐसा आभास हुआ कि वे लौकिक फूल न थे। उन लोगो ने अन्य एक कब्र भी देखी जो पूरी की पूरी साप (२२) बिच्छुओं से भरी हुई थी। कब्र वाला दृष्टिगत न होता था। उस नगर के हाकिमो ने दोनों बातो के विषय में लिखकर सुल्तान बहलोल को भेज दिया।

एक व्यभिचारिणी की कहानी

सुल्तान बहलोल के राज्यकाल में सामाना में एक सिपाही निवास करता था जो वही यात्रा

१ जिनके पूर्वज बुख़ारा के निवासी थे।

को जा रहा था। प्रस्थान करते समय उसने अपने एक पडोसी से जिसका घर उसके घर से मिला हुआ या अपनी पत्नी की सिफारिश करते हुए कहा कि, "पडोसी का हक बहुत अधिक होता है।" यह कहकर वह चल दिया। पडोसी कभी कभी उसके घर के द्वार पर जाता था और वहा हर बार एक दुराचारी युवक को पाता था। जब वह पडोसी को देखता तो अन्य स्थान को चला जाता था। पडोसी ने सोचा कि "मैं हर बार इस युवक को घर के द्वार पर देखता हू। यदि यह उसका सम्बन्धी होता तो फिर मुझसे सिफारिश क्यो की जाती? यदि यह अपरिचित है तो क्यों आता है?" उसके घर तथा पडोसी के घर के मध्य में जो दीवार थी उसमें उसने एक छेद कर दिया और उस छेद से पडोसी के घर में देखा करता था। *उसने देखा कि वह युवक उसके घर आता जाता है। उस व्यभिचारिणी के एक दूध-पीता बालक था।* जब माता उससे पृथक् हो जाती तो वह रोने लगता। वह अभागिनी हर बार उस युवक के पास से उठकर उस बालक को सुला देती थी। तदुपरान्त उस दुष्ट के पास पहुच जाती थी। कुछ देर उपरान्त बच्चा न रोया। यह स्त्री उठकर बच्चे के पास पहुची और उसके गले को चाकू से काट कर उस दुराचारी के पास चली गई। कुछ समय उपरान्त उसने पूछा कि, "हर बार बालक जाग जाता था, बडी देर हो गई वह नही जागा।" स्त्री ने कहा, 'मैंने उसे चिरनिद्रा में सुला दिया है।" युवक उठकर बालक के पास पहुचा। उसने देखा कि बालक का गला कटा हुआ है। युवक अत्यधिक भयभीत हुआ और उसने कहा, हे ईश्वर का भय न करने वाली स्त्री! तूने यह बडा बुरा कार्य किया। अब तेरे ऊपर विश्वास न करना (२३) चाहिये कारण कि तूने अपने पुत्र का गला काट डाला।" व्यभिचारिणी ने कहा कि, "मैने तेरे लिये अपने पुत्र की बलि दे दी। अब तेरा भी मेरे ऊपर से विश्वास उठ गया। मेरा पुत्र भी चला गया और तू भी मुझसे शकित हो गया। जो कुछ मेरे भाग्य में था वह हुआ किन्तु अब तू मुझे अपमानित मत कर। मैं यह भली-भाति समझ गई हू कि अब तू पुन न आयेगा। अब तू इतनी सहायता कर कि इस लाश को घर में दफन कर दे कारण कि मुझसे यह कार्य सम्पन्न नही हो सकता।" वह घर में जाकर कुदाल लाई और लाकर उसने उस पुरुष को दे दी और कहा कि, 'इस स्थान पर कब्र खोदो।" उसने गहरी कब्र खोदी और उस अभागिनी से कहा कि "लाश ले आ" और कुदाल बाहर रख दी। उस धूर्त स्त्री ने लाश उसके हाथ में दे दी। वह व्यक्ति सिर को झुकाकर उसे भूमि में रखने लगा। स्त्री ने दोनो हाथो से कुदाल पकडकर उस व्यक्ति के सिर पर इतने जोर से मारी कि उसके सिर का भेजा कान के मार्ग से बह गया और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। स्त्री ने दोनों को कब्र में छोडकर कब्र बन्द कर दी। पडोसी यह पूरी घटना अपनी आखो से देखकर काप उठा और उसने सोचा कि "यदि मैं इस बात की चर्चा करता हूँ तो सम्भवत यह मुझे कोई हानि पहुचायेगी। जब तक इसका पति न आये मै इस बात को प्रकट न करू।" जब दिन निकला तो स्त्री ने रोना प्रारम्भ कर दिया और कहा कि "रात्रि में मेरे पुत्र को भेडिया उठा ले गया।" जब उसका पति यात्रा से लौटा तो उसके मित्र तथा अन्य सम्बन्धी सवेदना प्रकट करने के लिये एकत्र हुए। वह पडोसी भी जाकर बैठ गया। जब सब लोग लौट गये तो पडोसी ने कहा, "मैं तुझे तेरे पुत्र की मृत्यु की घटना का हाल अपनी आखो से देखा बताना चाहता हूँ। तुझसे जो कुछ हो सके कर अन्यथा इसमें तेरे प्राण का भय है।" वह उस पुरुष का हाथ पकडकर अपने घर ले गया और उसके घर में जो छेद था उसे दिखाकर उस बालक तथा युवक के दफन करने का वृतात दिया और कहा कि "यदि किसी युक्ति से अपने घर में जाकर तू उस स्थान को देख सकता हो तो देख ले। जो सत्य बात है उसका पता चल जायेगा।" यह व्यक्ति अपने घर जाकर भूमि की ओर देखने लगा। स्त्री ने पूछा कि, "क्या तू देखता है? क्या तेरी कोई वस्तु खो गई है?" उसने कहा "हा, मैंने यहा पर एक चीज गाड दी थी किन्तु मैं उस स्थान को भूल गया हूँ। यदि कुदाल होती तो मैं उसे खोदता।" स्त्री ने कहा कि "कुदाल कोठरी

(२४) मे है जाकर देख ले।" वह व्यक्ति कोठरी में गया। स्त्री ने द्वार को बन्द करके ताला लगा दिया और घर में आग लगा दी तथा धूर्ततापूर्वक विलाप करना प्रारम्भ कर दिया ताकि उस व्यक्ति के चिल्लाने की आवाज़ किसी के कान में न पहुँच सके। आग बहुत बढ गई और उस स्त्री का पति जल गया। पडोसी ने समस्त हाल सामाना के हाकिम के पास जाकर कह दिया। हाकिम के आदमियो ने आकर सर्वप्रथम उस जले हुए घर को देखा जहा उसका पति जला हुआ पडा था। तदुपरान्त उन लोगो ने युवक तथा बालक को देखा। स्त्री को वन्दी बना लिया। सामाना के हाकिम ने सुल्तान को इस घटना की सूचना दे दी। सुल्तान बहलोल के आदेशानुसार उसके टुकडे टुकडे कर दिये गये। इस इतिहास का लेखक दास उबैदुल्ला निवेदन करता है कि यह कहानी एक रात्रि में अकबर बादशाह के पुत्र जहागीर बादशाह ने अपने एक विश्वासपात्र को सवारी के समय बताई। सेवक भी साथ था। उसने सावधानी से इसे सुना और इसका उल्लेख सुल्तान बहलोल के इतिहास मे पाया।

एक प्रेमी की कहानी

कहा जाता है कि सुल्तान बहलोल ने सिंहासनारूढ होने के उपरान्त कन्नौज की विलायत पर अधिकार जमाने के लिये प्रस्थान किया। नीमखार परगने का एक ग्राम, जहा समस्त विद्रोही एकत्र हो गये थे, सुल्तान के आदेशानुसार नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया और उस ग्राम के सभी निवासी वन्दी बना लिये गये। उस ग्राम के एक चरवाहे का एक बनिये की पुत्री से प्रेम था। उस चरवाहे ने सुना कि उस ग्राम के सभी लोग वन्दी बना लिये गये। वह अपनी प्रियतमा के वियोग में पागल होकर योगियो का वस्त्र धारण करके उसके विषय में पता लगाने के लिये चल खडा हुआ और सेना के पीछे पीछे सहरिन्द[1] पहुच गया। अचानक उसकी दृष्टि एक अफगान के घर में पडी। उसने देखा कि उसकी प्रियतमा अफग़ान स्त्री के समक्ष बैठी हुई चावल साफ कर रही है। चरवाहे ने योगियो के समान पुकारा। अफगान ने कहा कि, "जाकर इस भिखारी को भिक्षा दे दे।" उसकी प्रियतमा वहा से उठकर थोडे से चावल लेकर उसके (२५) पास पहुची। चरवाहे ने कहा, "हे स्त्री! मै तेरे लिये आया हू। या तो मैं तुझे ले जाऊँगा अथवा प्राण त्याग दूंगा।" स्त्री ने कोई उत्तर न दिया और वापस चली गई। यह व्यक्ति उसी प्रकार खडा रहा। लोगो ने कहा, "योगी अभी तक खडा है।" बक़्काल की पुत्री ने कहा, "वह योगी नही, हरामखोर है, मुझे भगाने आया है।" अफगान कोठे पर था। यह सुनते ही वह कोठे से नीचे उतरा और उस अभागे को इतना पीटा कि उसे मुर्दा समझ कर गली में फेंक दिया। चार दिन उपरान्त उसने आखें खोली। जो लोग उस मार्ग पर यात्रा कर रहे थे उन्होंने कृपा करते हुए उसे कुछ जल पिलाया। कुछ समय उपरान्त उसमें चलने की शक्ति आ गई। अफगान की अश्वशाला निकट थी। वह गिरता पडता वहा पहुचा और मीर आखुर[2] से मिलकर घोडो का दाना मिलाने लगा। उसे थोडा सा दाना दे दिया जाता था। वह उसी से अपना जीवन निर्वाह करता था और कोने में बैठा हुआ रात भर जागा करता तथा अफगान के घोडो का पहरा दिया करता था। जब अफगान के सेवको ने उसे उचित सेवा सम्पन्न करते हुए देखा तो वे मिलकर अफगान के पास पहुचे और उन्होंने कहा कि "यह बडा अच्छा सेवक है, रात भर जागता रहता है और पहरा देता रहता है।" अफगान ने कहा कि "इसे कोई वेतन दे दो।" उस व्यक्ति ने अल्प समय में अफ़गान की अत्यधिक सेवा की किन्तु जब कभी भी वह अपनी प्रियतमा को देख पाता था तो वही

१ 'सरहिन्द' भी प्रयुक्त हुआ है।
२ वह अधिकारी जो घोड़ों की देख-रेख करता हो।

वाक्य कहता था कि, "या तो मैं तुझे ले जाऊँगा या अपने प्राण त्याग दूँगा।" वह स्त्री अफगान से कहा करती थी कि, "यह दगाबाज मुझे भगाने आया है।" अफगान उस (युवक) की सेवा पर दृष्टि करते हुए कहा करता था कि, "जब तक तू न भागेगी कोई न भगायेगा।" बहुत समय इसी प्रकार व्यतीत हो गया। इस घटना के दो वर्ष उपरान्त सुल्तान बहलोल ने पुन पूर्व की ओर आक्रमण किया। यह अफगान सेना के साथ गया और वहा से उसने एक पत्र उस व्यक्ति को इस आशय का लिखा कि "अमुक कनीज को साथ लेकर सेना में चले आओ।" जब वह सेना के समीप पहुच गया तो उसने अपने साथियो से कहा कि "कल हम (२६) पहुच जायेंगे। जब आधी रात रह जायेगी तो यहा से प्रस्थान करेंगे।" आधी रात व्यतीत हो जाने के उपरान्त उसने अपने साथियो को जगाया और सब लोग जाने की तैयारी करने लगे। जब थोडी सी रात रह गई तो उसने सब लोगो को आगे जाने का आदेश दे दिया, और स्वय अपनी प्रियतमा को घोडे के पीछे सवार करके खान के पास पहुचने के बहाने से चल खडा हुआ किन्तु दूसर मार्ग से अपने घर की ओर चल दिया। जब लोग अफगान के डेरे में पहुचे तो उसने पूछा, "वह हरामखोर कहा रह गया?" लोगो ने बताया कि "वह आ रहा है।" कुछ क्षण उपरान्त अफगान ने कहा कि, "वह कहा रह गया?" लोगो ने बताया कि, 'वह अभी ही पहुच जायगा।" अफगान ने कुछ क्षण उपरान्त फिर कहा कि, 'अभी तक वह कहा रह गया? अवश्य ही वह पाजी उसे भगा ले गया।" वह अफगान भी उसके पीछे चल खडा हुआ। मध्याह्नोपरान्त वह उस व्यक्ति तथा स्त्री के पास पहुचा गया और उसने उस व्यक्ति को कई कोडे लगाये और उसे घोडे से नीचे उतार कर उसके हाथो को बाधा। मध्याह्न के कारण घोडे से उतरकर वृक्ष के नीचे बैठ गया और उस व्यक्ति को वृक्ष में उल्टा लटका दिया। स्त्री ने अफगान से कहा कि, "मैं तुझसे कितना कहती थी लेकिन तुझे विश्वास नही होता था।" अफगान ने कहा कि, "अब देख मैं क्या करता हूँ।" अफगान के पास थोडी सी मिश्री थी। उसे पानी में मिलाकर उसने शरबत बनाया और थोडा सा पीकर शेष प्याले मे छोड दिया। फिर स्त्री की जानू पर सिर रख कर सो गया। इस युवक ने जोकि वृक्ष से लटका हुआ था देखा कि वृक्ष के ऊपर से एक काला नाग उतरा और उसके पाव तथा पीठ से होता हुआ भूमि पर पहुचा और उस कटोरे में अपना विष मिलाकर पुन जिस मार्ग से आया था वृक्ष पर चढ गया। जब अफगान जागा तो वह शरबत पीकर पुन सो गया। कुछ देर उपरान्त वह फिर जागा और उसने स्त्री से कहा कि, "मुझे अत्यधिक गर्मी लग रही है मेरे शरीर में आग धधक रही है।" स्त्री ने कहा कि, "तुम घोडे पर भागकर आये हो। यह गर्मी इसी कारण होगी।" शेष शरबत जिसमें विष था वह भी पी गया। आधी घडी उपरान्त अफगान ने स्त्री से कहा कि, "मेरी आखो के सामने अधेरा छा रहा है। मरा सीना (२७) तथा गला जल रहा है, मै अपनी दशा अच्छी नही देखता।" यह कहकर उसने तलवार निकाल ली और उस व्यक्ति की ओर बढा और उसकी ओर तलवार फेंकी। सयोग से तलवार उस युवक की बाह पर लगी और जिस रस्सी से वह बधा था वह कट गई। अफगान वही गिर कर मर गया। स्त्री ने उठकर उस व्यक्ति से कहा कि, " जो कुछ देता है वह ईश्वर देता है। उठ और घर चल।"

चरवाहा अपने उद्देश्य की पूर्ति के उपरान्त, जब कि वह निराश हो चुका था, स्वदेश को लौट गया और शेष जीवन एकान्त में व्यतीत करने लगा।

सुल्तान सिकन्दर की शाहजादगी के समय की घटनाएं

शेख हसन

इतिहासकारो का कथन है कि जब सुल्तान सिकन्दर शाहजादा था तो उसे निजाम खा कहते थे। ईश्वर ने उसे अत्यधिक रूपवान् बनाया था। इतना अधिक रूपवान् कोई अन्य व्यक्ति न था।

जो सुहृद उसके मुख की ओर देख लेता वह उस पर आसक्त हो जाता था। शेख अबुल अला के पौत्र शेख हसन, जिनकी कब्र रापरी मे है, सुल्तान सिकन्दर पर आसक्त हो गये। शेख हसन अपने समय के बहुत बडे पहुचे हुए व्यक्ति थे। एक दिन शाहज़ादा निज़ाम खा शीत ऋतु में एकान्त में अपने कमरे में बैठा (२८) हुआ था। शेख हसन को शाहज़ादे के दर्शन की इच्छा हुई। शेख ने अपने हृदय की स्वच्छता के कारण, जोकि ईश्वर के भक्तों को प्राप्त होती है, निज़ाम खा के पास अपने आपको जहा कि वायु भी नही पहुच सकती थी पहुचा दिया। सुल्तान सिकन्दर को यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ। उसने कहा कि "शेख हसन! इतने द्वारपालो के होते हुए बिना आदेश किस प्रकार आ गये?" शेख हसन ने कहा, "तू भली-भाति जानता है कि मै किस प्रकार आया और किस कारण आया।" सुल्तान ने कहा कि, "तुम अपने आपको मेरे ऊपर आसक्त कहते हो?" शेख ने कहा कि, 'मुझे इस कार्य में कोई अधिकार नही।" सुल्तान ने कहा कि, "आगे आओ।" शेख आगे पहुचे। जलती हुई अगीठी सुल्तान के समक्ष रखी हुई थी। शेख की ग्रीवा में हाथ डालकर उसने शेख के सिर को धधकती हुई अगीठी पर रख दिया और ज़ोर से गर्दन पकडे रहा। शेख हसन अपने सिर तथा मुख को आग के ऊपर रखे रहे और सिर बिल्कुल न हिलाया। कुछ समय इस प्रकार व्यतीत हो गया। इसी बीच में मुबारक खा लोहानी पहुच गया। यह विचित्र घटना देखकर उसने सुल्तान से पूछा कि, "यह कौन व्यक्ति है?" सुल्तान ने कहा, "शेख हसन है।" मुबारक खा ने कहा, "हे ईश्वर का भय न करने वाले! तू क्या करता है? शेख हसन को इस अग्नि से कोई भी हानि न पहुचेगी। तुझे अपनी हानि का भय होना चाहिये।" सुल्तान ने कहा, "यह अपने आपको मेरे ऊपर आसक्त बताता है।" मुबारक खा ने कहा कि, "तुझे ईश्वर का कृतज्ञ होना चाहिये कि एक बुज़ुर्ग तुझे प्रिय समझता है। यदि तुझे लोक तथा परलोक के कल्याण की इच्छा है तो इनकी सेवा कर।" उसने निज़ाम खा के हाथ को शेख की ग्रीवा से हटा दिया। घातक अग्नि का शेख के मुख तथा बालो पर कोई प्रभाव न पडा था। इस पर भी सुल्तान ने आदेश दिया कि "इसके पाव तथा गले एव हाथ में ज़जीर डालकर कोठरी में बन्द कर दिया जाय और द्वार पर ताला लगा दिया जाय।" उसके आदेशो का पालन किया गया। दूसरे दिन अथवा उसी दिन सुल्तान सिकन्दर को यह समाचार प्राप्त हुआ कि शेख हसन बाज़ार में नृत्य कर रहे है। सुल्तान ने आदेश दिया कि उसे बन्दी बनाकर लाया जाय। जिस समय वह सुल्तान के समक्ष उपस्थित किया गया, सुल्तान ने पूछा कि "तुम अपने आपको मेरे ऊपर आसक्त कहते हो। मेरे बन्दीगृह से क्यो बाहर गये?" शेख ने कहा, "मै स्वय नही गया। मेरे पूर्वज शेख अबुल अला (२९) मेरा हाथ पकडकर ले गये।" सुल्तान ने आदेश दिया कि उस कोठरी को जिसमें शेख बन्द थे, देखा जाय। जब ताला खोला गया तो कोठरी में ज़जीर लगी हुई थी और शेख हसन बाज़ार में थे। इस घटना के उपरान्त सुल्तान सिकन्दर ने शेख के प्रति कोई धृष्टता प्रदर्शित न की।

धर्मान्धता

कहा जाता है कि एक बार कुरुक्षेत्र में हिन्दुओ की एक अपार भीड एकत्र हुई। सुल्तान थानेश्वर पहुचकर कुरुक्षेत्र के हिन्दुओ के कत्लेआम का आदेश देना चाहता था। सुल्तान के मुसाहिबो मे से एक ने कहा कि, "सर्वप्रथम आलिमो से पूछ लेना चाहिये।" सुल्तान ने समस्त आलिमो को उपस्थित किया और मलिकुलउल्मा से इस विषय में पूछा। मलिकुलउल्मा का नाम मिया अब्दुल्लाह अजोधनी था। मिया मलिकुलउल्मा ने सुल्तान से पूछा कि "वहा क्या है?" सुल्तान ने कहा कि, 'वहा एक हौज है जहा प्रत्येक स्थान के काफिर एकत्र होकर स्नान करते है।" मलिकुलउल्मा ने पूछा कि, "यह प्रथा कब से चल रही है?" शाहज़ादे ने कहा कि, "यह प्राचीन प्रथा है।" मिया अब्दुल्लाह ने पूछा कि, "तुम्हारे

पूर्वजों ने, जो मुसलमान बादशाह थे, इस विषय में क्या किया ?" शाहज़ादे ने कहा कि, "यही प्रथा चलती आ रही है और किसी ने इस विषय में कुछ नहीं किया।" मियां अब्दुल्लाह ने कहा कि, "प्राचीन मन्दिर को नष्ट कराना उचित नहीं और जिस हौज़ में प्राचीन काल से स्नान करने की प्रथा चली आ रही है उसे रोकना हमारे लिये उचित नहीं।" यह बात सुनकर शाहज़ादे ने कटार निकाल ली और कहा कि, "तू काफ़िरों का पक्षपात कर रहा है। सर्वप्रथम मैं तेरी हत्या करूँगा। तदुपरान्त मैं कुरुक्षेत्र पर आक्रमण करूँगा।" मियां अब्दुल्लाह ने कहा कि "मरना सभी को है। ईश्वर के आदेश बिना कोई नहीं मरता। जब कोई किसी अत्याचारी के पास आता है तो सर्वप्रथम अपनी मृत्यु निश्चित कर लेता है। जो कुछ होना है वह होगा। मैंने शरा का आदेश बता दिया, यदि आप को शरा की चिन्ता नहीं है तो पूछने की आव-(३०) श्यक्ता न थी।" सुल्तान का क्रोध कम हो गया। उसने कहा कि, "यदि तू आज्ञा दे देता तो इससे कई हज़ार मुसलमानों का भला हो जाता।" मियां अब्दुल्लाह ने कहा, 'जो कुछ कहना था वह मैंने कह दिया। अब आप जानें।" शाहज़ादा गोष्ठी से उठ गया। सभी आलिम शाहज़ादे के साथ चल दिये। मियां अब्दुल्लाह अपने स्थान पर ठहरे रहे। शाहज़ादे ने उनसे कहा, 'मियां अब्दुल्लाह ! कभी कभी मिलते रहना।" यह कहकर वह चल दिया।

तातार खां से युद्ध

कहा जाता है कि सुल्तान बहलोल के राज्यकाल में तातार खां तथा सैफ खां ने, जो बहुत बड़े अमीर थे, विद्रोह करके अत्यधिक प्रदेश तथा जागीर अपने अधिकार में कर ली थी। शाहज़ादा मियां निज़ाम खां उन दिनों पानीपत में था। उसने पानीपत के समीप के परगने के अमीरों के कुछ ग्राम सुल्तान बहलोल के आदेश बिना अपनी जागीर में कर लिये। अमीरों ने सुल्तान बहलोल को यह समाचार पहुंचाया। सुल्तान बहलोल ने ख्वाजा शेख सईद फर्मुली को जो शाहज़ादे की सरकार का दीवान था लिखा कि, "यह कार्य शाहज़ादा तुम्हारे परामर्श से करता है। यदि तुममें पौरुष हो तो तातार खां की विलायत से ले लो। हमारी विलायत को क्यों नष्ट करते हो ? यह कौन-सा पौरुष है ?" शेख सईद वही फ़रमान हाथ में लेकर शाहज़ादे के पास पहुंचा और उसने कहा कि, "तुम्हें बादशाही मुबारक हो।" शाहज़ादे ने पूछा, "किस प्रकार ?" शेख सईद ने कहा, "इस लिये कि सुल्तान बहलोल ने अपनी ओर से तुम्हें बादशाही सौंपी है।" शाहज़ादे ने पूछा कि, 'तू यह किस प्रकार कहता है ?" उसने उत्तर दिया कि, "यह फ़रमान लिखकर भेजा है।' उसने कहा कि, "मैं देखूँ।" जब उसने फ़रमान देख लिया तो जो कुछ उसमें लिखा था उसके विषय में उसे ज्ञान प्राप्त हुआ। उसने देखा कि उसमें लिखा है कि 'यदि शक्ति तथा साहस हो तो तातार खां मलिक की विलायत से ले लो।" शाहज़ादे ने कहा, "ख्वाजा ! बड़ी ही विचित्र बादशाही है जो तुम (३१) दे रहे हो।" ख्वाजा ने कहा कि, "बादशाही मुफ्त नहीं मिलती। तुम्हें जिस कार्य का आदेश हुआ है यदि वह तुम सम्पन्न कर लेते हो तो तुम अवश्य ही बादशाह हो जाओगे। जिस कार्य को बादशाह को स्वयं करना चाहिये था वह उसने तुम्हें सौंप दिया है। यह बादशाही का संकेत है।" शाहज़ादे ने कहा, "तो फिर क्या करना चाहिये ?" उसने उत्तर दिया कि, "उठो और अपने भाग्य की परीक्षा करो।"

"राज्य किसी को तर्क में नहीं मिलता,
जब तक वह दुधारी तलवार नहीं चलाता।"

जिन दिनों शाहज़ादा निज़ाम खां पानीपत में था उसके पास १५०० सवार तथा १५०० सेवक थे, उदाहरणार्थ ख्वाजा सईद फर्मुली अपने सम्बन्धियों सहित, मियां हुसेन अपने पांचों भाइयों सहित, दरिया खां, शेर खां लोहानी, उमर खां सिरवानी इत्यादि।

एक दिन शाहज़ादे ने पानीपत मे इस समस्त सेना को एकत्र करके परामर्श करना प्रारम्भ किया और कहा कि, "बादशाह का सकेत इस प्रकार है। क्या करना चाहिये ?" समस्त अमीरो तथा शाहज़ादे ने निश्चय किया कि, "इन डेढ हज़ार सवारो मे से कुछ लोगो को सरहिंद के समीप के परगनो में नियुक्त किया जाय ताकि वे उन परगनो में पहुच कर अपना अधिकार स्थापित करें।" इस कारण युद्ध प्रारम्भ हो गया। उस ओर से तातार खा बहुत बडी सेना लेकर रवाना हुआ। पानीपत मे शाहज़ादा निज़ाम खा कुछ लोगो को लेकर चला। अम्बाला के परगनों के उस मैदान में युद्ध हुआ जहा इस घटना के उपरान्त मिया सलीम शाह तथा हैबत खा न्याजी मे, जिसकी उपाधि आजम हुमायूँ थी, युद्ध हुआ था।

शाहज़ादा निज़ाम खा जितने आदमी उसके साथ थे उन्हें साथ लेकर रणक्षेत्र की ओर चल खडा हुआ। उस युद्ध मे शाहज़ादे के चारो ओर बडे ही वीर युवक थे जो सशस्त्र चल खडे हुए। ख्वाजा (३२) दाख सईद घोडे पर सवार होकर शाहज़ादे के सामने जा रहा था। इसी बीच में ख्वाजा ने २-३ बार शाहज़ादे की ओर दृष्टिपात किया। शाहज़ादे ने सकेत किया कि, "क्या देखता है ?" ख्वाजा ने निकट पहुचकर निवेदन किया कि, "देखता हू कि तुम्हारे चारो ओर शूरवीर एकत्र हैं। यदि तुम नेतृत्व पर दृढ रहो तो विजय की आशा है। यदि कोई और बात हो तो तुम्हारी इच्छा है। इन लोगो को एकत्र कर लो, अपने दासो के परिश्रम तथा सेवा की लीला देखो कि यह लोग क्या करते है। यद्यपि उस ओर तातार खा के पास १५,००० अश्वारोही हैं किन्तु इन लोगो के समान १० अश्वारोही भी न होगे। यदि ईश्वर सफलता प्रदान करे और ये लोग कार्य सम्पन्न कर लें तो बडा अच्छा है अन्यथा तुम हवा के घोडे पर सवार हो, तुम्हारे पास कोई भी नही पहुच सकेगा।" शाहज़ादा इन वाक्यो को सुनकर हसा और उसने ख्वाजा से कहा, "मैं तुम्हारे घोडे के पाव भूमि पर देखता हू और अपने घोडे को सीने तक भूमि में डूबा पाता हू। वह कहा जा सकता है ?" ख्वाजा तत्काल घोडे से उतर पडा। शाहज़ादे का दाया हाथ पकड कर कहा, "विजय के चिह्न यही हैं। सरदार का साहस ऐसा ही होना चाहिये।"

जब दोनो सेनाओं में युद्ध हुआ तो सर्वप्रथम जो व्यक्ति घोडा लेकर रणक्षेत्र मे आया वह दरिया खा था। उसके साथ ३० व्यक्ति थे। वह दोनो पक्तियों के मध्य में खडा हो गया और इन तीसो सवारो को सगठित करते हुए कहा कि "जिस स्थान पर एक तलवार पडे वही तीस तलवारें पडें।" उस ओर से ५००सवारो ने आक्रमण किया। लोहे से चिनगारिया निकलने लगी। दोनो सेनायें यह लीला देखने लगी। दरिया खा ने इन ५०० अश्वारोहियो को पराजित कर दिया। वे पराजित होकर अपनी सेना में चले गये। दरिया खा लौटकर अपने स्थान पर पहुँचा और खडा हो गया। कहा जाता है कि तीन बार ५०० अश्वारोहियो ने दरिया खा पर आक्रमण किया और दरिया खा ने तीनो बार उन लोगो को पराजित किया और पुन अपने स्थान पर पहुँच कर खडा हो गया। तदुपरान्त फिर उस सेना से कोई न निकला। दरिया खा ने अपने साथियो से कहा, "तुम्हारे साहस तथा तुम्हारे स्वामी के सौभाग्य से यह कार्य सम्पन्न हुआ। (३३)तुम लोग यही रहो मैं अकेला आक्रमण करूगा।" दरिया खा तीन बार सेना में अकेला घुसा और पुन सुरक्षित वापस आकर अपने स्थान पर खडा हो गया। तदुपरान्त मिया हुसेन १७ अश्वारोहियो सहित सुल्तान सिकन्दर की सेना से निकला। तातार खा की ओर से डेढ हज़ार सवारो ने मिया हुसैन पर आक्रमण किया। तीन बार जिस प्रकार दरिया खा ने विजय प्राप्त की थी, मिया हुसन ने भी विजय प्राप्त की। मिया हुसेन स्वय तीन बार अकेले सेना में घुसा और वहा से लौट कर अपने स्थान पर खडा हो गया। तदुपरान्त उमर खा शिरवानी ५०० अश्वारोहियो सहित शाहज़ादे से विदा हुआ। जब वह मिया हुसेन

के समीप पहुचा तो मिया हुसेन ने सलाम अलेक कहा। उमर खा ने उत्तर देने के उपरान्त मिया हुसेन से कहा कि, "हमने कोई कार्य नही किया। इस समय हम इस कारण आये हैं कि तुम्हारे परामर्श अनुसार कार्य करें। तुम जो कुछ कर सकते थे तुमने कर दिया, अब मेरी बारी है।" इसी बीच मे उमर खा का पुत्र इबराहीम खा घोडे को भगाकर अपने पिता के पास पहुचा और कहा कि, "आपको शाहजादे के नमक की शपथ है, घोडे को आगे मत बढाइये।" उमर खा ने कहा कि, "इसका क्या कारण है?" इबराहीम ने कहा, "जिस प्रकार आपने मुबारक खा के पुत्र दरिया खा तथा ख्वाजा के पुत्र मिया हुसेन का तमाशा देखा उसी प्रकार अपने पुत्र की लीला देखिये।" उमर खा ने कहा, "हम भी इसी लिये खडे हैं।" इबराहीम खा ने कहा, "भीड मे कुछ पता न चलेगा। अकेले देखना चाहिये।" यह कहकर वह १५ हजार की सेना मे तीन बार घुसा और दूर से २-३ शत्रुओं को बर्छे से गिरा दिया। घोडे बिना सवार के हो गये। उमर खा यह देखकर मुसलमानों के समान नारा लगाकर तातार खा की विशेष सेना मे पहुच गया। तातार खा मारा गया। उसके भाई हुसेन खा को जीवित बन्दी बना लिया गया। तातार खा की समस्त सेना पराजित हो गई। जिस समय सुल्तान शाहजादा था उसी समय इतनी महान् विजय प्राप्त हो जाने के कारण उसका आतक सभी अमीरो के हृदय पर आरूढ हो गया। तदुपरान्त सुल्तान बहलोल भी भली (३४) भाति समझ गया कि समस्त पुत्रो में निजाम खा ही सबसे अधिक योग्य है और उसने उसे अपना उत्तराधिकारी बनाया।

सुल्तान सिकन्दर का बादशाह होना

जब शाहजादा निजाम खा को सुल्तान बहलोल की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुए तो उसने जमाल खा अमीर आखुर को, जोकि शाहजादे का विश्वासपात्र था, देहली में छोडकर प्रस्थान करने का सकल्प किया। जिस दिन वह देहली के बाहर निकला तो सर्वप्रथम (शेख) समाउद्दीन की सेवा में, जो उस काल के बहुत बडे सम्मानित व्यक्ति थे, फातेहा[1] की प्रार्थना के लिये पहुचा और कहा कि, "हे शेख! मै चाहता हू कि सर्फ[2] की मीजान नामक पुस्तक आपसे पढूँ" और पाठ पढना प्रारम्भ किया। गुरु ने कहा कि "हे भाग्यशाली! ईश्वर तुझे लोक तथा परलोक मे भाग्यशाली बनाये।" सुल्तान ने निवेदन किया कि, "आप फिर यह वाक्य कहें।" गुरु ने यह वाक्य पुन कहा। उसने तीन बार यही वाक्य कहलाया और तदुपरान्त उनके हाथ चूमकर अपनी यात्रा के विषय में निवेदन किया और उपर्युक्त प्रार्थना से अपने लिये फाल निकाला।

सुल्तान सिकन्दर बिन सुल्तान बहलोल लोदी का सिंहासनारोहण

शाहजादा निजाम खा प्रतिष्ठित अमीरो के पथ-प्रदर्शन से शीघ्रातिशीघ्र जलाली पहुँचा, उसने अपने पिता की लाश देहली भेज दी। १७ शाबान ८९४ हि० (१६ जुलाई १४८९ ई०) को शुक्रवार के दिन जलाली कस्बे के समीप एक ऊचाई पर आवेसियाह, जिसे इस ओर के निवासी काली (नदी) कहते हैं, के तट पर उस महल में जो सुल्तान फीरोज का महल कहलाता है, खाने जहा, खाने खाना (३५) फर्मुली तथा समस्त प्रतिष्ठित अमीरो की सहमति से १८ वर्ष की अवस्था में सिंहासनारूढ हुआ और उसकी उपाधि सिकन्दर गाजी हुई।

१ परलोकगत आत्मा की शान्ति के लिये कुरान के वाक्यों का पाठ।
२ अरबी व्याकरण।

सुल्तान का चरित्र

सुल्तान सिकन्दर बडा प्रतापी, सहनशील, दानी तथा आदर सम्मान एव गौरव वाला बादशाह था। वेशभूषा, बादशाही शान व शौकत एव घोडे इत्यादि से सम्बन्धित बनावट के कार्यों में बडा सरल व्यवहार करता था। उसके सरापर्दे[1] के निकट कोई भी पाप, कुकर्म, एव दुराचार से सम्बन्धित वस्तु न जा सकती थी। वह आलिमो तथा पवित्र व्यक्तियो के साथ उठता बैठता था। बहिरग तथा अन्तरग में पूरी तरह योग्यता से परिपूर्ण था। वासनाओ का वह सर्वदा दमन करता और ईश्वर का अत्यधिक भय करता था। प्रजा पर दया करता था। न्याय तथा वीरता में अद्वितीय था। शक्तिशाली तथा शक्तिहीन को न्याय से सम्बन्धित कार्यों में समान दृष्टि से देखता था और सर्वदा झगडो को समाप्त कराने, समस्याओं के समाधान और प्रजा के उपकार में लगा रहता था। वह हर रोज़ दरबारे आम करता था और स्वय दीन-दुखियो की सहायता किया करता था।

दिन-रात का कार्यक्रम

मध्याह्नोत्तर की नमाज़ से लेकर एशा[2] की नमाज़ तक आलिमों के साथ रहता, कुरान का पाठ किया करता और जमाअत[3] के साथ नमाज़ पढता था। सोने के समय की नमाज़ पढकर वह अन्त पुर में प्रविष्ट होता। कुछ दर तक अन्त पुर में रहकर एकान्त में जाकर बैठ जाता और पूरी रात वहा जागता रहता। दिन के भोजन के उपरान्त वह सोया करता था। रात्रि के समय वह जिस स्थान पर बैठता वहा अधिकतर दरिद्रियों की आवश्यकताओ को पूरा कराने तथा न्याय की व्यवस्था में लगा रहता। रात्रि का थोड़ा सा भाग वह राज्य-व्यवस्था के सचालन, सीमातो के अमीरो को फरमान तथा समकालीन बादशाहो को पत्र लिखने में व्यतीत करता था।

रात्रि का भोजन तथा आलिम

चुने हुये १७ आलिम तथा विद्वान् उसकी विशेष गोष्ठी में उपस्थित रहते थे। जब रात के समाप्त होने में छ घडी शेष रह जाती तो वह भोजन मगवाता था। ये १७ आलिम हाथ धोकर सुल्तान के समक्ष बैठ जाते थे। सुल्तान पलग पर आसीन रहता था। पलग के बराबर एक बडी कुर्सी लाकर रख दी जाती थी। भोजन के थाल कुर्सी के ऊपर रक्खे जाते थे। सुल्तान स्वय भोजन करता था। इन १७ (३६) व्यक्तियों के समक्ष भी भोजन रख दिया जाता था किन्तु उन्हें भोजन करने की अनुमति न होती थी। जब बादशाह भोजन कर चुकता था तो ये लोग थालो को अपने घर ले जाकर भोजन करते थे।

भोग-विलास

कुछ जानकार लोगो का मत है कि सभवत उस समय सुल्तान अपने स्वास्थ्य की रक्षा तथा उपचार की दृष्टि से बडे शिष्ट तथा सभ्य ढग से भोग-विलास कुछ इस प्रकार करता था कि किसी को इसकी सूचना न होती थी।

१ शिविर। यहाँ महल से भी तात्पर्य है।
२ रात्रि की अन्तिम अनिवार्य नमाज़।
३ बहुत से लोगों का समूह।

मस्जिदो का निर्माण तथा दान

उसने अपने राज्य के समस्त प्रदेशो मे मस्जिदो का निर्माण कराया और वहा कुरान पढने वाले, खतीब[1] तथा झाड़ू देने वाले नियुक्त किये और उनके लिये वृत्ति निश्चित कर दी। प्रत्येक वर्ष शीत ऋतु में वह फकीरो के लिये वस्त्र तथा शाल भेजा करता था और प्रत्येक शुक्रवार को फकीरो को धन प्रदान करता था। वह रोज़ाना कच्चा तथा पक्का भोजन नगर में कुछ स्थानो पर बटवाया करता था। रमज़ान तथा आशूरे[2] के पवित्र दिनो में फकीरो एव दरवेशो को प्रसन्न करता और बादशाहों की श्रेणी के अनुकूल इनाम तथा उपकार द्वारा उन्हें प्रसन्न करता था।

वह साल मे दो बार अपनी विलायत (राज्य) के फकीरो तथा सहायता के पात्र व्यक्तियो की दशा का सविस्तार लिखित विवरण मगवाता था और प्रत्येक व्यक्ति को *उसकी श्रेणी के अनुसार* अर्ध वार्षिक धन अपने समक्ष दिलवाता था। उसके राज्यकाल मे प्रतिष्ठित लोग, सूफी तथा आलिम अरब, ईरान एव हिन्दुस्तान के अन्य भागो से उसकी कृपा तथा स्नेह के आकर्षण से देहली तथा आगरा में आ-आ कर निवास ग्रहण कर लेते थे। वह अपना अधिकाश समय आगरा में व्यतीत करता था।

कृषि, व्यापार तथा सेवायें

सिकन्दर के राज्यकाल में कृषि को अत्यधिक उन्नति प्राप्त थी। व्यापारी, व्यवसायी, प्रजा तथा समस्त लोग बडे आराम, सतोष एव सुख सम्पन्नता का जीवन व्यतीत करते थे। जो कोई सेवा की इच्छा से आता उसके वश तथा बुज़ुर्गों के विषय में पूछ-ताछ करने के उपरान्त उसके बुज़ुर्गों की श्रेणी के अनुकूल उसे वेतन प्रदान किया जाता था। जो कोई बिना घोडे तथा अस्त्र-शस्त्र के दृष्टिगत होता तो (३७) उसे जागीर प्रदान कर दी जाती और आदेश दे दिया जाता कि इस जागीर से वह अपने सामान की व्यवस्था कर ले। उसके राज्यकाल में सैनिको को अत्यधिक सम्मान प्राप्त था। राज्य के चारो ओर के मार्गों पर इतनी अधिक शान्ति थी कि चोरी तथा डकैती का उसके अधीन समस्त राज्य में कोई चिह्न भी न पाया जाता था।

काफिरो के प्रति व्यवहार

जो काफिर इस्लाम स्वीकार कर लेते थे उन्हें वह अपनी विलायत में स्थान दिया करता था और जो कोई विद्रोह करता उसे अपने राज्य का शत्रु समझ कर उसकी हत्या का आदेश दे दिया करता था अथवा उसे अपनी विलायत (राज्य) से निर्वासित कर देता था। किसी ग्राम में भी मिट्टी का किला, जिसे "मट कोट" कहते थे, तथा खाईं और जगल न रहने दिया था। वह इस्लाम का इतना बडा पक्षपाती था कि उसने काफिरो के समस्त मन्दिरो का खडन करवा दिया था और उनका नाम निशान भी न रहने दिया। मथुरा में, जो कि कुफ्र की खान है, उसने काफिरो के कार्य का कोई चिह्न न रहने दिया। मथुरा में जहा हिन्दुओ के मन्दिर थे वहा उसने कारवासराय तथा मदरसो के निर्माण का आदेश दे दिया। हिन्दुओं के पूजा के पत्थरा (मूर्तियों) को कसाइयो को प्रदान करा दिया ताकि वे उनसे मास तौला करें। मथुरा में हिन्दुओ के लिये दाढी तथा सिर मुडवाने एव नदी मे स्नान करने का आदेश न था। सक्षेप में उसने कुफ्र की समस्त प्रथाओ का अन्त करा दिया। यदि कोई हिन्दू सिर अथवा दाढी मुडवाने की इच्छा

१ जुमे तथा ईदों का खुत्बा (धार्मिक प्रवचन) पढने वाले।
२ मुहर्रम मास की १०वीं तिथि।

करता तो कोई नाई उसकी ओर हाथ न बढाता। प्रत्येक शहर में इस्लाम के नियमो का ऐसा पालन होता था जैसा कि होना चाहिये। प्रत्येक मुहल्ले मे जमाअत की नमाज हुआ करती थी। प्रत्येक घर में चाहे वह अमीर का घर हो अथवा किसी साधारण व्यक्ति का, इल्म[1] की चर्चा होती रहती थी।

धनी लोगो द्वारा दान-पुण्य

सिकन्दर के राज्यकाल मे अधिकाश लोग किसी न किसी कार्य मे लगे रहते थे। समस्त धनी लोग दान के सम्बन्ध में, एक दूसरे से ईर्ष्या किया करते थे और अधिकाश व्यय दान-पुण्य हेतु ही करते थे। सुल्तान सिकन्दर ने आदेश दे दिया था कि वर्ष में दो बार बादशाही खज़ाना प्रत्येक नगर में सहायता के पात्रो के लिये ल जाया जाय। ईश्वर का ज्ञान रखने वाले बहुत से व्यक्ति इस कार्य हेतु नियुक्त थे। वे वहा पहुच कर सहायता के पात्रो को धन बाटा करते थ।

मआश व ऐमा का प्रवन्ध

(३८) मआश व ऐमा[2] के लिए उसने आदेश दे दिया था कि "जागीर वाले अमीरो को, जो प्रत्येक परगने में वेतन पाते है, इस आशय का फरमान लिखा जाय कि 'अमुक महाल में इमलाक तथा वज़ायफ[3] को छोडकर जागीर का आदेश हुआ।" केवल एक आदेश से सुल्तान सिकन्दर ने ममालिके महरूसा[4] की समस्त ऐमा को मुक्त कर दिया और किसी को भी नये फरमान की आवश्यकता न थी। किसी अमीर के घर में स्वय उसकी ओर से वन्दोवस्त न होता था (अपितु) प्रत्येक व्यक्ति अपने आमिल[5] के द्वारा करता था और वह दीवाने विजारत में आकर हिसाब समझ लेता था। परगनो में कोई भी किसी वस्तु को मूल्य अदा किये बिना न लेता था।

फरमान प्राप्त करने की प्रथा

जिस अमीर के नाम फरमान जारी होता वह दो तीन कोस आगे जाकर उसका स्वागत करता था और वहा एक चबूतरा बनवाता था। जो फरमान लाता था वह उस पर खडा होता था। अमीर चबूतरे के नीचे खडे होकर सम्मान-पूर्वक अपने दोनो हाथो से फरमान लेता था और उसे अपने सिर तथा आख पर रखता था। यदि सुल्तान का आदेश होता तो वह उसे वही पढता अन्यथा घर ले आता। यदि फरमान के गुप्त रूप से पढने का आदेश होता तो वह ऐसा ही करता।

शासन प्रबन्ध सम्बन्धी अन्य आदेश

सालार मसऊद[6] के नेजे[7], जो हर साल निकाला जाता था, का उसने अपने समस्त राज्य से

१ ज्ञान विज्ञान।
२ आलिमों अथवा सहायता के पात्रों को भूमि।
३ वृत्ति। आलिमों इत्यादि को सहायतार्थ दी जाने वाली भूमि।
४ राज्य के वे भाग जो सुल्तान के अधीन थे।
५ कर वसूल करने वाले।
६ सैयिद सालार मसऊद गाज़ी अथवा गाज़ी मिया, सालार साहू के पुत्र तथा सुल्तान महमूद ग़ज़नवी के भागिनेय जिनका निधन बहराइच में १०३३ ई० में हुआ। बहराइच में इनका उर्स बड़ी धूम से होता है और प्रत्येक स्थान से उनका झंडा बहराइच ले जाया जाता है।
७ भाला अथवा झडा।

अन्त करा दिया और इस नेजे की प्रथा पूर्णत बन्द करा दी। स्त्रियो का मजारो पर जाना निषिद्ध करा दिया। उसके राज्यकाल में अनाज, कपडा तथा समस्त वस्तुयें इतनी सस्ती थी कि जिस किसी की थोडी बहुत रोजी हो जाती वह निश्चिन्त होकर शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करता था। ईद, आशूरे तथा मुहम्मद साहब के निधन की तिथि पर उसके आदेशानुसार समस्त वन्दियो के नाम लिख कर उनकी सूची उसकी सेवा में प्रस्तुत की जाती। जो कोई माल से सम्बन्धित किसी अभियोग में बन्दी होता उसके नाम के सामने वह अपने हाथ से मुक्त किये जाने का आदेश लिख देता था। यदि कोई पीडित उसकी सवारी के समय फरियाद करता तो वह देखते ही कहता कि "पीडित कौन है ?" उसके वकील उसका हाथ पकडकर उसे प्रोत्साहन देते थे और जिसे वह एक बार जागीर प्रदान कर देता था तो जब तक वह कोई अपहरण न करता उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन न होता। यदि कोई किसी प्रकार का अपराध करता तो फिर वह उसे कोई वस्तु न प्रदान करता था किन्तु उसके आदर-सम्मान में कोई कमी न करता था।

सगीत

यदि कोई अद्वितीय गायक अथवा वादक आ जाता तो वह स्वय सामने न सुनता अपितु मीरान (३९) सैयिद रूहुल्लाह तथा सैयिद इब्ने रसूल सुल्तान के आदेशानुसार खास सरापर्दे के समीप सुनते थे। इस कारण जिन जिन स्थानो से लोग (गाने बजाने वाले) आते, वे उन्ही के समक्ष गाना गाते और सुल्तान भी सुनता। दस लोग प्रत्येक रात्रि में बारी बारी रात्रि के एक पहर के उपरान्त शाही दरबार मे उपस्थित होकर सरनाई जिसे शहनाई भी कहते थे बजाते थ। उसका आदेश था कि चार रागो को बजाये बिना कुछ न बजायें। सर्वप्रथम माल्कोस, फिर कल्याण, फिर काडा (कागडा) तदुपरान्त हुसैनी बजा कर समाप्त करते थे। यदि इनके अतिरिक्त व कुछ बजाते तो उन्हे दड दिया जाता।

प्रत्येक कार्य हेतु निश्चित समय

उसने प्रत्येक कार्य के लिये समय निश्चित कर दिया था। जो क्रम उसने बना लिया था, उसमें कोई परिवर्तन न होता था। वह कोई ऐसी बात न कहता और न करता कि कोई उसकी निन्दा कर सकता। केवल दाढी मुडवाता था। वह जिसके लिये एक बार (जो कुछ प्रदान करने का) आदश दे देता उसमें उसके जीवन पर्यन्त कोई कमी न करता। इनाम मे किसी को चाहे भोजन हो अथवा वस्त्र जो कुछ एक बार प्रदान कर दिया जाता उसमें उसके राज्य के अन्त तक कोई परिवर्तन न होता। कहा जाता है कि शेख अब्दुल गनी नामक एक प्रतिष्ठित व्यक्ति ग्रीष्म ऋतु में जौनपुर से मुल्तान से भेंट करने आये। नाना प्रकार के भोजन उनके लिये निश्चित किये गये। ग्रीष्म ऋतु के कारण उनके लिये शरबत के छ कूजे[1] भी भेजे गये। इसके उपरान्त जब शेख शीत ऋतु में भी आते तो उनके छ कूजे शर्बत में कमी न की जाती। अपने राज्यकाल के प्रतिष्ठित तथा सम्मानित व्यक्तियो के प्रति जिस प्रकार वह प्रारम्भ से आदर सम्मान करता वैसा ही आदर सम्मान, चाहे वह वर्षों बाद आता और चाहे रोज सेवा करता, वह प्रदर्शित किया करता। उसमे किसी प्रकार की कमी अथवा वृद्धि न होती थी। सुल्तान वार्तालाप भी नियमानुसार करता था। जिस अमीर के लिये जिस स्थान पर खडे होने का आदेश होता वह सर्वदा उसी स्थान पर खडा होता था। उसकी स्मरण-शक्ति इतनी अच्छी थी कि रोजाना विलायत के परगना

[1] गिलास।

के भाव के रोजनामचे उसकी सेवा में प्रस्तुत किये जाते। यदि बाल बराबर भी अन्तर पाता तो वह तुरन्त उसकी रोक-टोक का प्रयत्न प्रारम्भ कर देता।

आगरा

वह अधिकाश आगरा में निवास किया करता था। कुछ लोगो का मत है कि आगरा नगर उसके राज्यकाल में बसाया गया। सुल्तान सिकन्दर के पूर्व वह प्राचीन ग्रामो मे से एक ग्राम था। अधिकाश हिन्दुस्तानियो का मत है कि आगरा राजा किशन के समय मे जो मथुरा में राज्य करते थे एक कोट (४०) था। राजा जिससे रुष्ट हो जाता उसे आगरा के किले में बन्दी बना देता था। बहुत समय तक यही होता रहा। जिस वर्ष सुल्तान महमूद गजनवी की सेना ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया तो आगरा इस प्रकार नष्ट-भ्रष्ट हो गया कि वह हिन्दुस्तान का एक तुच्छ ग्राम बन कर रह गया। सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल मे पुन आगरा को उन्नति प्राप्त होने लगी और अकबर बादशाह के राज्यकाल से आगरा देहली के सुल्तानो की राजधानी हो गया और हिन्दुस्तान का एक भव्य नगर बन गया।

राज्य में समृद्धि

ईश्वर ने सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल में ससार वालो को ऐसी समृद्धि प्रदान की थी जो अन्य राज्यकालो मे खजानो के बाहुल्य के बावजूद भी न पाई जाती थी। उसके राज्यकाल मे पवित्रता, धर्मनिष्ठता, ईमानदारी तथा सदाचरण को इतनी उन्नति प्राप्त हो गई थी कि समस्त साधारण तथा विशेष व्यक्तियो मे शिष्टता, नेकी, सदाचार तथा धर्मनिष्ठता उत्पन्न हो गई थी। सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल के प्रारम्भ मे सर्फ, नहो[1] तथा फ़िकह[2] के अतिरिक्त किसी अन्य बात का प्रचार न था। लोगों में सदाचरण तथा सत्यता की प्रधानता थी। ज्ञान को इतनी उन्नति प्राप्त थी कि समस्त अमीरो के पुत्र तथा सैनिक ज्ञानोपार्जन करते थे। सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल में वैद्यक के ग्रन्थो में स, चिकित्सा सम्बन्धी एक ग्रन्थ का मिया भूवा की देख-रेख में अनुवाद हुआ और उसका नाम 'तिब्बे सिकन्दरी' रक्खा गया। हिन्दुस्तान के हकीम उसी ग्रन्थ के आधार पर चिकित्सा करने लगे। कहा जाता है कि यह उसका एक बहुत बडा कारनामा था जो ससार में प्रकट हुआ।

सुल्तान के पुत्र

कहा जाता है कि सुल्तान सिकन्दर के छ पुत्र थे। उसके ज्येष्ठ पुत्र का नाम इबराहीम खा था जो सुल्तान सिकन्दर के उपरान्त सुल्तान इब्राहीम के नाम से प्रसिद्ध हुआ और देहली का बादशाह बना। दूसरा जलाल खा था जो जौनपुर का बादशाह हुआ और उसकी उपाधि सुल्तान जलालुद्दीन (४१) हुई। तीसरा इस्माईल खा, चौथा हुसेन खा, पाचवा महमूद खा, छठा आज़म हुमायूं।

प्रसिद्ध अमीरो के विषय मे, जिनमें से प्रत्येक को बडा गौरव प्राप्त हुआ और जो वीरता एव पौरुष में अद्वितीय था, कहा तक लिखा जाय। उसके राज्यकाल में अफगान कौम के असख्य अमीर उसके पास एकत्र हो गये थे। वह खानों, अफगानो तथा अपने कबीले को अत्यधिक आश्रय प्रदान किया करता था। उसके अमीरों में से जो कोई दरिद्रियों की जीविका हेतु वृत्ति प्रदान करता उसे सुल्तान अत्य-

१ अरबी व्याकरण।
२ इस्लामी धर्म-शास्त्रों के अनुसार इस्लामी नियम।

धिक सम्मानित करता और उससे कहा करता कि, "तूने ऐसी वस्तु की नीव रक्खी है जिसमें कोई कमी न होगी। उसके भतीजों में से प्रत्येक वीरता एव दान करने मे अद्वितीय था। सुल्तान सिकन्दर के समस्त अमीर तथा सैनिक अत्यन्त सुखी रहते थे। उसके अमीरो मे से जिसे भी जो विलायत प्राप्त थी, वह उसके लिये पर्याप्त थी। सुल्तान सिकन्दर सर्व-साधारण की समृद्धि तथा सुख-सम्पन्नता के लिये अत्यधिक प्रयत्न किया करता था। सेना तथा अमीरो के उपकार के लिये उसने युद्ध करना बन्द कर दिया था और अपने समकालीन अमीरो एव मलिको में झगडे का अन्त करके फसाद के द्वार बन्द करा दिये थे। वह उतनी ही अक्ता से जो उसे अपने पिता से तर्के में प्राप्त हुई थी सतुष्ट था और अपना समय शान्ति तथा प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करता था। सुल्तान सिकन्दर के कुछ अमीरो का विवरण उचित स्थान पर दिया जायगा।

सिंहासनारोहण के प्रथम वर्ष का वृत्तांत

गडी हुई धन-सम्पत्ति पाने वालो के लिये नियम

(४२) सम्भल में एक व्यक्ति भूमि खोद रहा था। वहा एक मटका मिला। उसमें पाच हजार सोने की मोहरें थी। सम्भल के हाकिम मिया कासिम ने उससे समस्त धन लेकर इस विषय में सुल्तान को सूचना दी। सुल्तान सिकन्दर वडा ही साहसी तथा सदाचारी बादशाह था। अतएव उसने आदेश दिया कि जिस किसी ने यह धन प्राप्त किया हो उसी को वह दे दिया जाय। मिया कासिम ने पुन निवेदन किया कि, "बादशाह सलामत! जिस व्यक्ति ने यह धन पाया है वह उसके योग्य नही।" सुल्तान सिकन्दर ने मिया कासिम को पुन इस विषय मे फरमान लिखा कि, "हे मूर्ख! जिसने दिया है यदि वह योग्य न समझता तो न देता, सभी ईश्वर के दास है। वह भली-भाति जानता है कि कौन योग्य है और कौन अयोग्य। समस्त धन उसे प्रदान कर दे।"

इसी प्रकार अजोधन में बन्दगी शेख मुहम्मद की भूमि में एक किसान हल चला रहा था। वहा एक बहुत वडा सा पत्थर दृष्टिगत हुआ। किसान हल चलाना छोडकर शेख के पास पहुंचा और उसने इस विषय में निवेदन किया। उन्होने बहुत से लोगो को घटना का पता लगाने के लिये भेजा। जब उन लोगो ने भूमि खोदी तो एक पत्थर प्रकट हुआ। जब वह पत्थर हटाया गया तो उस पत्थर के नीचे एक कुआ मिला। लोगो ने पुन उस पत्थर को उसी स्थान पर लगाकर शेख को सूचना दे दी। वह स्वय सवार होकर वहा पहुचा और उसने उस पत्थर को हटवाया। जब लोग कुए में प्रविष्ट हुए तो उन्होने देखा कि वह स्थान खज़ाने से परिपूर्ण है। शेख समस्त खज़ाने को उस स्थान से हटाकर अपने घर ले गया। बहुत से सोने के थाल तथा बरतन थे जिनपर सुल्तान जुलकरनैन[1] का नाम लिखा था। सभी लोग इस बात से सहमत थे कि यह जुलकरनैन का खज़ाना है। दुपालपुर (दीपालपुर) की हुकूमत अली खा नामक एक अमीर के अधीन थी और लाहौर उससे सम्बन्धित था। उसने बन्दगी शेख को लिख भेजा कि "यह विलायत मुझसे सम्बन्धित है, परोक्ष से जो धन मिला है वह भी मुझसे सम्बन्धित है।" शेख ने उत्तर लिखा (४३) कि, "यदि ईश्वर तुझे देता तो मुझे कुछ नही कहना था। क्योकि ईश्वर ने मुझे प्रदान किया है अत तुम्हें कुछ नही मिल सकता।" अली खा ने सुल्तान की सेवा में यह बात प्रस्तुत की कि, 'शेख मुहम्मद की भूमि में खज़ाना प्राप्त हुआ है।" सुल्तान सिकन्दर ने कहा कि, "तुझे क्या, दरवेशो को क्यो कष्ट देता है?"

१ सिकन्दर जुलकरनैन। मध्यकालीन अरबी फ़ारसी इतिहास एवं साहित्य में सिकन्दर महान्, सिकन्दर जुलकरनैन कहा जाता था।

ख मुहम्मद ने भी अपने कुछ आदमी सोने के कुछ बरतनो सहित जिनपर जुलकरनैन का नाम खुदा था सुल्तान की सेवा में भेजकर निवेदन किया कि, "इस प्रकार के बरतन इतनी सख्या में प्राप्त हुए हैं। जहा कही भी आदेश हो भेज दिये जाय।" सुल्तान सिकन्दर ने लिखा कि, "सभी अपने पास रक्खो। हमें भी ईश्वर को हिसाब देना है और तुम्हें भी। राज्य ईश्वर का है वह जिसे चाहता है देता है।"

जागीर के सम्बन्ध मे नियम

यदि सुल्तान सिकन्दर किसी को जागीर प्रदान करता तो वह राज्य के उच्च पदाधिकारियो को आदेश दे देता था कि उस व्यक्ति को एक लाख तन्के की जागीर दे दो, तदुपरान्त वेतन (निश्चित करो)। यदि कोई कहता, "उस स्थान का हासिल[1] १० लाख है" तो सुल्तान सिकन्दर उत्तर देता "वह जागीर मेरे आदेशानुसार मिली है अथवा स्वय अधिकार में कर ली है?" उत्तर मिलता, "आपके आदेशानुसार मिली है।" सुल्तान कहता, "जो कुछ उसे प्राप्त हुआ है, उसी के अधिकार में रहने दिया जाय।"

मलिक बद्रुद्दीन भीलम को सात लाख तन्के की जागीर प्रदान करने का आदेश हुआ। उसे एक परगना प्रदान किया गया।[2] प्रथम वर्ष में उस परगने में ९ लाख पैदा हुये। मलिक ने बढे हुये हासिल के विषय में निवेदन किया कि, "दास को ७ लाख तन्के की जागीर प्रदान हुई थी और उससे ९ लाख प्राप्त हुये हैं। जहा आदेश हो वहा उसे दे दूँ।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "उसे अपने पास रख।" दूसरे वर्ष में १५ लाख पैदा हुये। मलिक भीलम ने सुल्तान से इसके विषय में निवेदन किया। सुल्तान सिकन्दर ने आदेश दिया कि, "उसे अपने पास रक्खो।" तीसरे वर्ष १५ लाख पैदा हुये। मलिक भीलम ने सुल्तान से पुन इस विषय में निवेदन किया। सुल्तान सिकन्दर ने कहा, "यह सब धन तेरी जागीर से पैदा हुआ है अत सब धन तेरा है। बार बार मुझसे क्या कहता है?" उसके राज्यकाल के अमीर कितने अधिक सदाचारी थे और वह बादशाह कितना अधिक साहसी तथा दूसरो का शुभचिन्तक था।

न्याय

सुल्तान सिकन्दर इतना अधिक न्यायकारी था कि कोई भी अपने किसी दास की ओर कडी दृष्टि से न देख सकता था। दरिया खा नोहानी के वकील को आदेश था कि वह न्यायालय के चबूतरे पर दिन (४४) भर तथा एक घडी रात तक उपस्थित रहे। शरा[3] का काजी १२ आलिमो सहित बादशाह के विशेप दौलतखाने[4] में उपस्थित रहता था। जिन बातो की न्यायालय में जाच पडताल हो जाती, वे १२ आलिमो के समक्ष प्रस्तुत की जाती। वे लोग फतवा[5] लिखकर दे देते। उनके फतवे के अनुसार सुल्तान से तत्काल निवेदन किया जाता। कुछ गुलाम बच्चे केवल इसी कार्य के लिये नियुक्त थे। प्रात काल से सायंकाल तक तथा सभा (न्यायालय) के अन्त तक जो कुछ होता, वे एक-एक बात सुल्तान तक पहुचाते थे।

एक दिन अरवल कस्बे के एक सैयिद का अभियोग प्रस्तुत किया गया। अरवल पटना से २३ कोस

१ आय।
२ यह वाक्य मूल ग्रन्थ में स्पष्ट नहीं है।
३ इस्लामी नियम।
४ राज प्रासाद।
५ किसी कर्म के उचित अथवा अनुचित होने के सम्बन्ध में मुफ्ती द्वारा इस्लामी शास्त्रों के अनुसार दी गयी व्यवस्था।

पर आगरा की दिशा में है। उसका दावा था कि, "मियां मलीह जागीरदार उस परगने में ज़मीने महदूदा[1] पर जो मुझे प्राप्त हो गई थी अधिकार प्राप्त करने नहीं देता।" सुल्तान ने मियां भूवा को आदेश दिया कि, "इस मामले की जांच करके जो सच बात हो उसके विषय में निवेदन करो।" दो मास तक इस समस्या पर बातचीत होती रही। इस अवधि के उपरान्त सुल्तान ने कहा, "क्या मुसीबत है! अभियोग की जांच-पड़ताल ही नहीं हो पाती। जब तक इस अभियोग की जांच-पड़ताल न हो जाय आज कोई भी न्यायालय से न जाय।" मियां मलीह, दीवान तथा १२ आलिम दिन भर और तीन पहर रात तक वाद विवाद करते रहे। हर बार उनके व्याख्यान सुल्तान की सेवा में उपस्थित किये जाते। यहां तक कि अभियोग का निर्णय हो गया और सत्य को केन्द्रीय स्थान प्राप्त हो गया और यह पता चला कि सैयिद पर अत्याचार हुआ था। सुल्तान सिकन्दर ने कहा कि, "मियां मलीह से पूछा जाय कि मैंने आदेश दिया था कि कोई भी किसी शक्तिहीन पर अत्याचार न करे और यह भी आदेश दिया था कि जागीर-दारों के फरमान में मिल्क तथा वज़ायफ को निकाल कर जागीर लिखी जाय। तूने क्यों आज्ञा का उल्लंघन किया?" मियां मलीह ने लज्जित होकर सिर नीचा करके कहा, "मैंने भूल की।" सुल्तान ने पुनः आदेश दिया कि, "तू तीन बार इस बात को स्वीकार कर, मलीह अपराधी तथा अत्याचारी और सैयिद पीड़ित।" जब मियां मलीह ने तीन बार ये वाक्य कहे तो सुल्तान ने कहा "तुझे यही दंड मिलना चाहिये था कि तू न्यायालय में अपमानित हो।" तदुपरान्त उसने उसकी जागीर के परिवर्तन का आदेश दे दिया और मियां मलीह जब तक जीवित रहा उसे जागीर न मिल सकी।

बारबक शाह से युद्ध

सुल्तान सिकन्दर ने उसी वर्ष जब कि उसका सिंहासनारोहण हुआ ब्याना की विजय का संकल्प किया (४५) और अल्प समय में अज़मुल मुलूकी[2] पर आचरण करके ब्याना विजय कर लिया और शीघ्रातिशीघ्र लौट कर देहली पहुंचा। तीन दिन उपरान्त सुल्तान चौगान खेलने के लिये खड़ा हुआ था कि जौनपुर से समाचार प्राप्त हुये कि बारबक शाह ने अत्यधिक सेना लेकर आक्रमण कर दिया है। सुल्तान सिकन्दर ने इस्माईल खां नोहानी को जौनपुर के बादशाह बारबक शाह के विरुद्ध भेजा और स्वयं उसके पीछे-पीछे कम्पिला तथा पटियाली की ओर रवाना हुआ। उस स्थान के हाकिम ईसा खां ने उससे युद्ध किया। युद्ध में ईसा खां घायल होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया। सुल्तान सिकन्दर ने उस स्थान से बारबक शाह पर आक्रमण किया और जौनपुर से बारबक शाह भी सेना तैयार करके युद्ध करने के लिये निकला। कन्नौज के समीप दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ। जिस समय युद्ध हो रहा था तो एक ज्ञानी कलन्दर प्रकट हुआ और सुल्तान सिकन्दर का हाथ पकड़ कर उसने कहा, "तेरी विजय है।" सुल्तान ने रुष्ट होकर अपना हाथ खींच लिया। दरवेश ने कहा, "मैं तुझे नेक फाल[3] बताता हूं और तेरी विजय के विषय में भविष्यवाणी करता हूं। तू किस कारण हाथ खींचता है?" सुल्तान ने कहा, "जब इस्लाम के दो समूहों के मध्य में युद्ध हो रहा हो तो एक की ओर से निर्णय न करना चाहिये अपितु यह कहना चाहिये कि जिस

१ सम्भवतः वह सीमित भूमि जो किसी को पुरस्कार स्वरूप अथवा दान में दी जाती थी।
२ बादशाही का दृढ़ संकल्प। देखिये ज़ियाउद्दीन बरनी, 'फ़तवाये जहांदारी', इंडिया आफ़िस मैनुस्क्रिप्ट नं० २५६३ पृ० ३३३, अ ३३ ब) 'तुग़लुककालीन भारत', भाग २, पृ० २८३—२८४।
३ शुभ भविष्यवाणी।

बात में इस्लाम का हित तथा ईश्वर के प्राणियों का कल्याण हो वही सम्पन्न हो। उसी की ईश्वर से शुभ कामना करनी चाहिये।"

संक्षेप में, युद्ध के उपरान्त बारबक शाह की सेना पराजित हो गई और वह वहा से बदायूं चला गया। सुल्तान सिकन्दर ने उसका पीछा करके उसे घेर लिया और अपने छोटे भाई पर नाना प्रकार से कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुये प्रसन्न करके अपनी ओर मिला लिया और जौनपुर पहुच कर दूसरी बार पूर्व की भाति बारबक शाह को शर्की सुल्तानो के सिंहासन पर आरूढ कर दिया। बारबक शाह ने दीनता प्रकट करते हुये सुल्तान की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। सुल्तान ने जौनपुर को अमीरों को बाट कर प्रत्येक स्थान पर हाकिम नियुक्त कर दिये और बारबक शाह की सेवा में अपने विश्वासपात्रो को नियुक्त कर दिया।

सुल्तान का कालपी की ओर प्रस्थान

वहा से वह कालपी पहुचा और कालपी अपने भतीजे आजम हुमायूं से लेकर महमूद खा लोदी को सौंप दी और वहा से उसने ब्याना के आस-पास के स्थानों को विजय करने के लिये प्रस्थान किया (४६) और समस्त विलायत को अपने अधिकार में कर लिया। अल्प समय में वह वापिस होकर देहली पहुचा।

जौनपुर पर पुन आक्रमण

तीन दिन उपरान्त वह पुन चौगान[1] खेलने के लिये निकला और चौगान हाथ में लिये हुये खेलने की तैयारी कर ही रहा था कि इसी बीच में समाचार प्राप्त हुये कि जौनपुर की विलायत के ज़मींदारो ने, जिनका नेता जोका[2] नामक एक हिन्दू था, लगभग एक लाख अश्वारोही तथा पदाती एकत्र करके मुबारक खा नोहानी से युद्ध किया। मुबारक खा पराजित हो गया और उसके भाई की हत्या हो गई। मुबारक खा इलाहाबाद के घाट पर, जिसे उस समय प्रयाग कहते थे, मुल्ला खा द्वारा बन्दी बना लिया गया। बारबक शाह उस समूह के प्रभुत्व को देखकर मिया मुहम्मद फर्मुली के पास चला गया।[3] सुल्तान इस दुर्घटना के समाचार पाकर अपने हाथ से चौगान को भूमि पर पटक कर रणक्षेत्र से खाने जहा लोदी के घर पहुचा और सब हाल बता कर उससे पूछा कि, "क्या करना चाहिये ?" खाने जहाँ ने निवेदन किया कि, "भोजन उपस्थित है। फाल[4] के लिये इसमें थोडा सा लेकर जौनपुर की ओर सवार हो जाय।" सुल्तान ने कहा कि, "भोजन भी आगे के पडाव ही पर करूंगा।"

सुल्तान सिकन्दर, खाने जहा के निवास स्थान से निकल कर दौलतखानये शाही[5] को न गया, अपितु शहर से निकल कर लाल सायबान[6] लगवाकर उतर पडा और देहली से इस प्रकार शीघ्रातिशीघ्र निकला कि दस दिन में जोका के विरुद्ध पहुच गया। जब वह कोई[7] नदी के तट पर उतरा तो वहा एक

१ पोलो।
२ चौका।
३ यह वाक्य मूल में स्पष्ट नहीं।
४ भविष्य में सफलता।
५ राज प्रासाद।
६ शामियाना।
७ सम्भवत गोमती।

समाचार वाहक ने शत्रु के समाचार पहुचाये। सुल्तान ने पूछा कि, "जौका इस स्थान से कितने कोस पर है?" उसने उत्तर दिया, "निकट पहुच गया है।" सुल्तान ने कहा, "यह किला तथा भूमि जिस पर तुमने अधिकार जमा लिया है, तुम्ही को वापस कर दूगा। मैं जौका हरामखोर को दड देने के उद्देश्य से आया हू।" (उसने सुल्तान शर्की को कहलाया) "यदि आप उसे दड दें तो बडा अच्छा है अन्यथा उसे अपने पास से निकाल दें ताकि मैं उसे उचित दड दे सकूँ। क्योकि वह काफिर है अत मुझे विश्वास है कि आप काफिर का साथ न देंगे।"

(४७) सुल्तान हुसेन शर्की ने सूचना प्राप्त करने के उपरान्त मीर सैयिद खा को जो एक प्रतिष्ठित अमीर था दूत बना कर सुल्तान सिकन्दर की सेवा में भेजा और अनुचित उत्तर प्रेषित किया। उसने उत्तर भेजा कि, "जौका मेरा सेवक है और तेरा पिता एक सैनिक था। मैं उससे युद्ध करता था। तू मूर्ख बालक है। यदि तू व्यर्थ की बाते करेगा तो तुझे तलवार के स्थान पर जूते से पीटूँगा।" सुल्तान सिकन्दर ने इन वाक्यो को सुनकर कहा, "सर्वप्रथम मैंने उसे अपनी जिह्वा से चाचा[1] कहा है। मैं उसके सम्मान की रक्षा करूगा। मेरा उद्देश्य काफिरो का दड देना है। यदि वह काफिरो की सहायता करेगा तो मुझे दड देना पडेगा। मैंने स्वय कोई व्यर्थ कार्य नही किया है। ये लोग मुसलमान होकर जूते का नाम लेते हैं। ईश्वर ने चाहा तो जूता उसी मुह पर लगेगा।" सुल्तान सिकन्दर ने मीरान सैयिद खा से कहा, 'तुम रसूलल्लाह[2] की सतान से सम्बन्धित हो। तुम उसे क्यो नही समझाते, कारण कि बाद में उसे पश्चाताप करना पडगा।' मीरान ने उत्तर दिया, "मैं उसका सेवक हू। जिस बात को वह उचित समझे मुझे उसकी आज्ञा का पालन करना पडेगा।" सुल्तान सिकन्दर ने कहा, "भाग्य तथा बुद्धि एक दूसरे के अधीन होते हैं। जिसका भाग्य पलट जाता है उसकी बुद्धि भी भ्रष्ट हो जाती है। तुम विवश हो। कल यदि ईश्वर ने चाहा, और वह भागा और तुम बन्दी बनाये गये तो तुम्हें याद दिलाऊगा। यदि अब भी समझ जाओ तो अच्छा है।" यह कहकर उसने मीर सैयिद खा को विदा कर दिया और स्वय अपने अमीरो से परामर्श किया। समस्त अमीरो ने युद्ध करना निश्चय किया और ईश्वर से प्रार्थना करके मीर के साथ-साथ वे भी अपने स्थान को चले गये। उस समय जब समस्त बडे-बड अमीर उपस्थित थे तो सुल्तान सिकन्दर ने कहा कि, "आप लोगो ने सुल्तान बहलोल के कार्यों के सम्बन्ध में जो बिरादरी तथा नमक का हक था उसे पूरा किया, किन्तु मेरा यह पहला कार्य है। मुझे विश्वास है कि आप लोग प्रयत्न करने में किसी प्रकार की कमी न करेंगे।"

जब दूसरे दिन सेना की पक्तिया रणक्षेत्र में जमी तो समस्त लोदी तथा शाहूखेल शाही सेना के (४८) हिरावल[3] बने। बाईं ओर फर्मुली तथा दाईं ओर नोहानी एव सेना के पीछे शिरवानी थे। उमर खा शिरवानी जो अपने समय का बहुत बडा योद्धा था सेना का मुकदमा[4] बन कर शत्रु की सेना का निरीक्षण करने के लिये हाथी पर सवार हुआ और प्रत्येक को प्रोत्साहन प्रदान करता जाता था। अचानक उसकी दृष्टि जोंद के किले पर पडी। उसने कहा, "क्या यह वही किला है जिस पर उसे अभिमान हो गया है? अब भी हम सहनशीलता प्रदर्शित करते हैं। यदि वह न समझे तो उसकी भूल है।" इसी बीच में सुल्तान हुसेन ने अपनी सेना किले से निकाल कर (सुल्तान सिकन्दर की सेना के) हिरावल से युद्ध प्रारम्भ कर दिया। युद्ध प्रारम्भ होते ही साधारण सी लडाई के उपरान्त सुल्तान हुसेन पलायन

१ ऊदर (चाचा) होना चाहिये किन्तु मूल पुस्तक में 'ब्रादर (भाई)' है।
२ मुहम्मद साहब।
३ सेना का अग्रिम दल।
४ सेना का अग्रिम भाग।

कर गया। मीर सैयिद खा को जो दूत बन कर आया था अन्य लोगो के साथ अपमानित करके तथा बन्दी बना कर सुल्तान सिकन्दर के समक्ष प्रस्तुत किया गया। जिस समय सुल्तान की दृष्टि मीर सैयिद खा पर पडी तो उसने देखा कि लोग उसे नगे सिर उसकी ग्रीवा में पगडी बाधे हुये पैदल ला रहे है। सुल्तान ने मीर की ओर देखकर कहा, "इसे पगडी दे दो और घोडे पर सवार करके मेरे समक्ष लाओ।" सैयिद खा को जिस प्रकार आदेश हुआ था सुल्तान के समक्ष उपस्थित किया गया। सुल्तान ने मीर सैयिद तथा अन्य अमीरो से कहा, "तुम्हें धन्य हो। तुमने अत्यधिक स्वामिभक्ति प्रदर्शित की। जब वह अभागा है तो तुम क्या करते? तुम लोग निश्चिन्त रहो।" सुल्तान हुसेन के जो अमीर बन्दी बना लिये गय थे, उनमें से प्रत्येक के लिये दो खड का सरापर्दा[1], एक सायबान, एक चार चोबी सुतून, दो घोड, दस पर्दादार, पलग तथा सोने के समय के वस्त्र प्रदान किये। जब डेरे सज गय तो सुल्तान ने कहा कि "उन्हें डेरे में उतारा जाय।"

शेष वृत्तात

सुल्तान शर्की जाद से पराजित होकर भाग खडा हुआ और सुल्तान सिकन्दर को उसी रण-क्षेत्र में विजय प्राप्त हो गई। उस अवसर पर मुबारक खा नोहानी ने सुल्तान से निवेदन किया कि (४९) "दास के आदमी देखकर आ रहे हैं कि वह अमुक ओर जा रहा है।" सुल्तान ने कहा, "शाही आदमी भी गय हैं। जब तक प्रमाणित समाचार न प्राप्त हो जाय, प्रतीक्षा करो।" मुबारक खा ने पुन निवेदन किया, 'वह अच्छी दशा में नही है।" सुल्तान ने कहा, "वह तुम्हारे सामने से नही भागा है। दैवी कोप के कारण भागा है। यह वही मुल्तान है जो कच्छ पहुच गया था और तुम्हें पराजित कर दिया था। जिस ईश्वर ने उसे ऊपर से भूमि पर गिरा दिया और हमें उन्नति प्रदान कर दी है, वही हमे विजय प्रदान करेगा। उसके कार्यों पर दृष्टि रक्खो और अभिमान के वाक्य मत कहो। धैर्य धारण करो।" क्योंकि सुल्तान हुसेन को अपने कार्यों पर अभिमान था वह इस दुर्दशा को प्राप्त हो गया। सुल्तान सिकन्दर ने यह वाक्य अपनी युवावस्था के प्रारम्भ में जब कि उसकी अवस्था १८-१९ वर्ष की थी, कहे थे। ईश्वर ने सुल्तान सिकन्दर को इतना धैर्य तथा सहनशीलता प्रदान की थी।

बारबक शाह का बन्दी बनाया जाना

सुल्तान हुसेन भाग कर बिहार पहुचा और सुल्तान वहा से जौनपुर गया। बारबक शाह ने उसके (सुल्तान सिकन्दर के) प्रस्थान के समय दल्मऊ में उससे भेंट की। सुल्तान सिकन्दर दुबारा अपने भाई को जौनपुर छोडकर लौट गया। अवध के समीप लगभग एक मास तक वह सैर तथा शिकार में व्यस्त रहा। इसी बीच में यह समाचार पुन प्राप्त हुये कि बारबक शाह जौनपुर के जमीदारो के प्रभुत्व के कारण वहा नही ठहर सकता। सुल्तान सिकन्दर ने आदेश दिया कि मुहम्मद फर्मुली, आजम हुमायूँ तथा खाने खाना नोहानी अवध के मार्ग से एव मुबारक खा आगरा के मार्ग से जौनपुर पहुच कर बारबक शाह को बन्दी बना लें और उसे भेज दें। जब बारबक शाह को बन्दी बनाकर सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया गया तो वह हैबत खा शिरवानी तथा उमर खा शिरवानी को सौंप कर स्वय चुनार के किले की ओर उस दिशा के निवासियो को दड देने के लिये रवाना हुआ।

(५०) जब सुल्तान की सेना वहा पहुँची तो वहा का राजा थोडा सा युद्ध करके भाग खडा हुआ।

१ खेमा।

मार्ग में राजा भेद, जो भाग गया था, नरक पहुच गया। सुल्तान उस स्थान से आगे जाना चाहता था किन्तु अफीम तथा कोक्नार का मूल्य बहुत अधिक बढ गया और जो घोडे इस पर्वतीय यात्रा में साथ थे उनमें से अधिकाश नष्ट हो गये। जिनकी अश्वशाला में १०० घोडे थे, उनमें से ९० नष्ट हो गये। सुल्तान सिकन्दर सेना को व्यवस्थित करने के लिये कई मास तक जौनपुर में ठहरा रहा।

एक छन्द की व्याख्या

इन्ही दिनो में से एक दिन सुल्तान के एक विश्वासपात्र ने सुल्तान के समक्ष यह छन्द पढा

छन्द

"अनुशासन आवश्यक है, यदि पुत्र उद्दड है,
दीवाने कुत्ते की औषधि कुलूख (ढेला) है।"

सुल्तान सिकन्दर न कहा, "प्रथम पक्ति मे अनुशासन तथा उद्दड पुत्र का उल्लेख किया गया है और दूसरी पक्ति में दीवाने कुत्ते तथा कुलूख (ढेले) का उल्लेख हुआ है किन्तु औषधि का कुलूख (ढेले) से क्या सम्बन्ध?" सबने अपनी अपनी बात कही किन्तु सुल्तान किसी की बात से सतुष्ट न हुआ सुल्तान कहता था कि "ढेले से कुत्ते को अनुशासन में रक्खा जा सकता है किन्तु उसका उपचार नही हो सकता। औषधि रोग के उपचार हेतु होती है।" इसी बीच मे ख्वाजा, जोकि सुल्तान का एक निकटतम मुसाहिब था, आ गया। सुल्तान ने कहा "अच्छा हुआ ख्वाजा भी आ गया।" सुल्तान सिकन्दर ने जो बात हो रही थी, उसका उल्लेख किया। ख्वाजा ने कहा, "अन्य मित्र लोग क्या कह रहे है?" सुल्तान ने कहा "वे जो कुछ कह रहे है मै उससे सतुष्ट नही।" ख्वाजा ने कहा "कुलूख जिसके 'काफ' को 'ज़ेर' से पढा जाता है एक ऐसा कीडा होता है जो दीवाने कुत्ते की औषधि होता है। वह वर्षा ऋतु में हरे पत्तो पर होता है। उसका रग काला होता है और उसके ऊपर सफेद तथा लाल विन्दी होती है। हिन्दी भाषा में उस कीडे को बिन्दी कहते है और वह कीडा पागल कुत्ते तथा उस व्यक्ति की जिसे कुत्ता काट खाता है औषधि होता है। गेरू तथा भगरे के शीरे में गोलिया बना कर रख ली जाती है और जिसे कुत्ता काट लेता है उसे वह खिलाई जाती है।" उपस्थितगण ने पूछा, "अनुशासन का कीडा किसे कहते है जो औषधि (५१) बने?" ख्वाजा ने कहा, "पागलपन का अन्त हो जाने के उपरान्त अनुशासन प्राप्त हो जाता है। यह उदाहरण पुत्र के लिये दिया गया है कि पुत्र को नरमी तथा युक्ति से अनुशासन प्रदान किया जाय, कठोरता एव निष्ठुरता से नही। यदि ऐसा न होगा तो पागल कुत्ते को कष्ट पहुचाने से वह और भी पागल हो जाता है।"

एक विद्यार्थी की कहानी

सुल्तान ने जौनपुर मे एक विचित्र कहानी सुनी। यह घटना उन्ही दिनो की है जब सुल्तान वहा पडाव किये हुये था। कहा जाता है कि जौनपुर में एक विद्यार्थी था जिसके कार्य अत्यन्त अव्यवस्थित दशा को प्राप्त हो गये थे। तीन रात तथा तीन दिन तक भोजन की सुगन्धि उसकी नाक तक न पहुची थी। उसके परिवार ने भूख से व्याकुल होकर कहा, "जा और कही अपने भाग्य को आजमा। सम्भव है कि परोक्ष से तेरे लिये कोई द्वार खुल जाय।" जब विद्यार्थी में चलने की शक्ति न रही तो वह चार दिन उपरान्त शहर मे निकल कर जगल की ओर चल खडा हुआ। कुछ दूर चलने के उपरान्त वह एक चने के खेत मे पहुचा। उसने सोचा कि "यद्यपि किसी अन्य व्यक्ति की सम्पत्ति में हस्तक्षेप करना मना है किन्तु चार दिन हुये कि मुझे भोजन की सुगन्धि तक नही प्राप्त हुई है, अत मेरे लिये उचित है। यदि मै

स्वयं न खाऊं तो अपने परिवार के लिये ले जाऊँ।" कृषि में घुस कर उसने उस पर हाथ साफ करना प्रारम्भ कर दिया।

एक दरवेश खेत के समीप हौज पर बैठा था, उसने विद्यार्थी से चिल्ला कर कहा, "हे ईश्वर का भय न करने वाले! दूसरे के हक को क्यों नष्ट करता है?" विद्यार्थी ने उसे उत्तर दिया, "तूने सैकड़ो पूरी के टुकड़े खाये होंगे। तुझे क्या मालूम कि मैं किस दशा में यहां आया हूं।" उसने कहा 'मेरे पास आकर जो कुछ तेरा हाल हो उसे बता।" विद्यार्थी उस दरवेश के पास पहुंचा। उसने देखा कि एक व्यक्ति सिर से पांव तक नंगा लंगोट बांधे एक रिक्त अम्बान[1] अपने सामने रक्खे बैठा है। उसने विद्यार्थी से पूछा, "क्या तू भोजन करना चाहता है?" उसने उत्तर दिया, "मैं उसी के लिये आया हूं।' दरवेश ने अम्बान में हाथ डालकर एक सिकन्दरी तन्का निकाला और उसे देकर कहा, "बाज़ार जाकर मांस, घी तथा जिस वस्तु की आवश्यकता हो ले आ।" विद्यार्थी ने कहा, "यदि आप कहें तो पक्का ले आऊं।" (५२) दरवेश ने कहा, "कच्चा ले आ। यहीं पका लेंगे।" विद्यार्थी ने नगर जाकर जो कुछ दरवेश ने कहा था वह सब क्रय किया। दरवेश ने चाकू तथा तख्ता अम्बान से निकाल कर उसे दिया कि "मांस का कीमा बना डाल।" तदुपरान्त अम्बान से एक थाल, दस्तरख्वान तथा लोहे के यंत्र निकाल कर उसे दिये कि "देगदान को ठीक करो।"[2] दरवेश को जिस वस्तु की आवश्यकता होती वह उसी अम्बान से निकाल लेता, यहां तक कि ईंधन भी उसने अम्बान से निकाला। जब भोजन पक गया तो उसने विद्यार्थी के साथ भोजन किया। तदुपरान्त उठकर खाली अम्बान कंधे पर डालकर चल खड़ा हुआ। इस विद्यार्थी ने शेष सामान जो बच गया था, एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया और सोचा कि "इस व्यक्ति को इसकी चिन्ता नहीं और मेरे लिये यह पर्याप्त है अतः इसे घर उठा ले जाऊं।" उस दरवेश ने जब पीछे देखा तो पता चला कि, "विद्यार्थी अपने कार्य में लगा है।" दरवेश ने उसे डांट कर कहा, "यह कार्य मत कर और इस विषय में मत सोच। उठकर मेरे पास चला आ।" विद्यार्थी ने जो कुछ उठाया था, उसे उसी स्थान पर छोड़कर, एक दिन उसके साथ यात्रा की। दूसरे दिन उन्होंने उसी प्रकार पुनः भोजन किया। विद्यार्थी ने सोचा, "हम दो दिन से नाना प्रकार के भोजन कर रहे हैं, मेरे घर वालों को पता नहीं क्या दशा होगी।" दरवेश ने अपने अन्तःकरण के प्रकाश से इस बात का पता लगा कर उससे पूछा, "घर जाना चाहता है?" विद्यार्थी ने कहा, "जो कुछ मेरे हृदय में था, वह तो आपने बता दिया।" दरवेश ने अम्बान से दस सिकन्दरी तन्के निकाल कर उसे दे दिये और कहा, "चला जा।" जब विद्यार्थी कुछ दूर निकल गया तो दरवेश ने उसे पुनः पुकार कर कहा, "मेरे पास आ तो मैं तुझे एक वस्तु दे दूं। वह आजीवन तेरे काम आयेगी।" (तदुपरान्त) उसने उससे कहा "वजू[3] करके दो रकात[4] नमाज़ पढ़।" जब विद्यार्थी नमाज़ पढ़ चुका तो दरवेश ने कहा, "आँखें बन्द कर।" जब उसने आँखें बन्द कीं तो दरवेश ने कहा, "आँखें खोल।" जब उसने आँखें खोलीं तो उसने देखा कि एक पवित्र व्यक्ति जिसका मुख चमक रहा है उसके दाईं ओर बैठा है और एक अरबी घोड़ा सुनहरी ज़ीन सहित उसके पीछे खड़ा है।

१ कमाया हुआ चमड़ा।

२ 'पकाने के लिये देग को ठीक करो'।

३ नमाज़ तथा अन्य पवित्र कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व क्रम से मुँह-हाथ धोना।

४ नमाज़ के लिये खड़े होना, झुकना, तथा दो बार भूमि पर सिर रख कर खड़े होना, यह सब कार्य एक रकात में होते हैं।

दरवेश ने इस विद्यार्थी तथा उस परोक्ष के व्यक्ति के हाथ पकड़कर बैअत[1] कराई और सिफारिश (५३) की कि, "जिस प्रकार आप मेरी सहायता करते हैं उसी प्रकार इसकी भी सहायता करें।" इस वचन के उपरान्त परोक्ष का व्यक्ति दरवेश से विदा होकर रिकाब में पाव रख कर अदृश्य हो गया। दरवेश ने विद्यार्थी से कहा, "तुझ जो आवश्यकता हो, उसकी प्रार्थना कर लेना और जो कुछ परोक्ष से प्राप्त हो उसे उचित स्थान पर व्यय करना। अन्य स्थान पर व्यय न करना।" विद्यार्थी घर पहुच कर दरिद्रता से मुक्त हो गया और सुख-सम्पन्नता के द्वार उसके लिये खुल गये।[2] यह घटना जौनपुर में प्रसिद्ध हो गई और सुल्तान सिकन्दर को उसका पता चला। विद्यार्थी को उसने अपने समक्ष बुलवाया और इस बात की जाच की। उसे इस पर आश्चर्य हुआ।

जौनपुर का शेष वृत्तात

सुल्तान सिकन्दर जितने समय तक जौनपुर में पडाव किये हुये था, उसकी सेना की बडी दुर्दशा हो गई थी। उस स्थान के समस्त जमीदारो ने सुल्तान हुसेन को लिखा कि सुल्तान सिकन्दर की सेना में घोडे नही रहे है और सेना की सामग्री पूर्णत नष्ट हो गई है अत अवसर का महत्व समझना चाहिये। सुल्तान हुसेन ने अत्यधिक सेना तथा १०० हाथी लेकर सुल्तान सिकन्दर पर आक्रमण किया। सुल्तान सिकन्दर न सेना को अव्यवस्थित देखकर खाने खाना को सालवाहन के पास इस आशय से भेजा कि वह उसे प्रोत्साहन देकर ले आये। उस समय शत्रु की सेना १८ कोस की दूरी पर थी। सुल्तान सिकन्दर इस दशा के बावजूद सुल्तान हुसेन से युद्ध करने के लिये अग्रसर हुआ। इसी बीच में सालबाहन भी अपनी सेना लेकर सुल्तान सिकन्दर की सेवा में पहुंच गया। जब दोनो सेनाओ का युद्ध हुआ तो सुल्तान हुसेन पराजित हो गया। सुल्तान सिकन्दर ने बिहार तक उसका पीछा किया। उसे (सुल्तान हुसेन को) वहा पता चला कि लखनौती के अधीन बगहल गाव तथा बिहार सुल्तान सिकन्दर के गुमाश्ता[3] के अधीन हो गये। सुल्तान सिकन्दर बिहार तथा तिरहुट की विलायत को सुव्यवस्थित करने म लग गया। तदुपरान्त वह शेख शरफुद्दीन यहया मुनेरी[4] (के मजार) के दर्शन हेतु पहुचा और उस स्थान के फकीरो (५४) तथा दरिद्रियों को प्रसन्न करके पटना चला गया। इसी बीच में खाने जहा की जो उसका प्रतिष्ठित अमीर था मृत्यु हो गई। उसके ज्येष्ठ पुत्र अहमद खा को आजम हुमायूं की उपाधि प्राप्त हुई।

बगाल की ओर आक्रमण

सुल्तान ने सेना को तैयार होने का आदेश दिया और बगाले के बादशाह पर आक्रमण किया। बगाले के बादशाह सुल्तान अलाउद्दीन ने अपने लघु पुत्र को सेनायें देकर सुल्तान सिकन्दर से युद्ध करने के लिये भेजा। सुल्तान सिकन्दर ने भी इस ओर से विजयी सेनायें उससे युद्ध करने के लिये भेजीं। जब दोनो पक्षों की सेनाओ में युद्ध होने लगा तो इस शर्त पर सन्धि हो गई कि कोई भी दूसरे के राज्य पर आक्रमण न करे। सुल्तान अलाउद्दीन सुल्तान सिकन्दर के विरोधियो को शरण न प्रदान करे। सुल्तान

१ चेला बनाना, प्रतिज्ञा करना।
२ सुख-सम्पन्नता से जीवन व्यतीत करने लगा।
३ एजेंटों।
४ शरफुद्दीन अहमद यहया मुनेरी बिहार के प्रसिद्ध सूफी थे। वे पटना के निकट मुनेर नामक स्थान में निवास करते थे। उनकी मृत्यु १३७६ ई० में हुई।

सिकन्दर वहा से वापिस होकर दरवेशपुर पहुचा। कुछ महीनो तक वहा ठहर कर उस विलायत को उसने आज़म हुमायूँ को सौंप दिया।

अनाज की जकात का अन्त

इसी बीच में अनाज महगा हो गया। प्रजा के सुख के लिये उसने लोगो को अनाज की जकात[1] पूर्णत क्षमा कर दी और अनाज की जकात के निषेध के फरमान जारी कराये। तदुपरान्त अनाज की जकात का निषेध हो गया। यह प्रथा समकालीन बादशाह जहागीर के समय में बन्द हो गई।

राजा भट्टा पर आक्रमण

वहा से सुल्तान सिकन्दर ने एक बहुत बडी सेना राजा भट्टा[2] पर चढाई करने के लिये भेजी और स्वय भी पीछे-पीछे रवाना हुआ। इसके पूर्व सुल्तान सिकन्दर ने राजा भट्टा से उसकी पुत्री मागी थी और उसने यह बात स्वीकार न की थी। सुल्तान प्राचीन बदले की दृष्टि से उसके राज्य में प्रविष्ट हो गया और वहा किसी भी आबादी का चिह्न न छोडा। बाधू के किले में जो उस विलायत का सबसे अधिक दृढ किला है योग्य जवानों ने वीरता का प्रदर्शन किया। सुल्तान सिकन्दर ने उस समस्त राज्य को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और पुन जौनपुर लौट आया। जौनपुर में भी कोई विरोधी न रहा। वहा से उसने सम्भल की ओर प्रस्थान किया और चार वर्ष तक सम्भल के क्षेत्र में ठहरा रहा। इस अवधि में सुल्तान जश्नो के आयोजन तथा भोग-विलास में ग्रस्त रहा।

मोती की खोज

एक दिन उसने सम्भल में आगरा तथा देहली के जौहरियो को बुलवाया। उन लोगों के उपस्थित होने के उपरान्त सुल्तान ने राज प्रासाद से एक मोती लाकर जौहरियों को दिया और कहा "इसी प्रकार का दूसरा मोती ला दो।" समस्त जौहरियो ने मोती देख कर कहा, "शाहे आलम सलामत ! इस प्रकार (५५) के मोती का हिन्दुस्तान में मिलना असम्भव है। सम्भवत यह फिरग अथवा हुरमुज में जो मोतियो की खान हैं मिल सकेगा।" सुल्तान ने आदेश दिया कि "जब तक ये दूसरा मोती न लायें दरबार से न जायें।" सुल्तान के दरबार में योग्य जौहरियो का एक बहुत बडा समूह एकत्र हो गया।

मियाँ ताहा की योग्यता

इसी बीच में मिया ताहा, जो सुल्तान का एक विश्वासपात्र था तथा समस्त गुणो से सुशोभित था, सुल्तान के अभिवादन हेतु जा रहा था। उसने जौहरियो से पूछा, "तुम्हें किस कारण रोका गया है?" उन्होने कहा, "हमें एक ऐसी चीज़ के लाने का आदेश हुआ है जो हमारी शक्ति से बाहर है।" उन लोगो ने मोती दिखाकर कहा, "इस प्रकार का दूसरा मोती मागा गया है।" मिया ताहा ने सुल्तान के समक्ष जाकर निवेदन किया कि, "जौहरियो को क्या आदेश हुआ है?" सुल्तान ने कहा, "मैंने उन्हें एक मोती दिखाकर उसी के समान दूसरा मोती लाने का आदेश दिया है।" मिया ताहा ने निवेदन किया कि "उस मोती को दास को दिखाने का आदेश दिया जाय।" सुल्तान ने मोती मिया ताहा को दे दिया। मिया

१ कर।
२ अन्य स्थानों पर 'भट्टी' है।

ताहा ने निवेदन किया कि "यदि दास को आदेश हो तो वह इस प्रकार का मोती कही से ढूंढ लाये।" सुल्तान ने कहा, "इससे अच्छा और क्या है।" मिया ताहा उस मोती को अपने घर ले गया। दो दिन उपरान्त वह सुल्तान के अभिवादन हेतु पहुचा और अपने साथ दो मोती ले गया जो एक ही चमक तथा एक ही प्रकार के थे और एक दूसरे को पहचाना नही जा सकता था। उसने उन्हें सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया और पूछा, "पुराना मोती कौन है ?" यद्यपि सुल्तान सिकन्दर ने अत्यधिक ध्यान देकर निरीक्षण किया किन्तु वह पहचान न सका। उसने मिया ताहा से कहा, "देखने में कोई अन्तर नही। आप स्वय बता दें।" मिया ताहा ने कहा, "यह मोती पुराना है और इसे दास लाया है।" सुल्तान ने मोती की जौहरियो के पास भेजकर उसका मूल्याकन कराया। जौहरियो ने ३०,००० सिकन्दरी तन्के मूल्य निश्चित किया। सुल्तान ने कहा, "यह धन मिया ताहा के आदमियो को दे दो।" मियां ताहा ने कहा, "बादशाह के सौभाग्य से मेरे पास इस प्रकार के बहुत से मोती हैं। मैं इसका मूल्य न लूंगा।" सुल्तान ने कहा, "जब तक तुम मूल्य न लोगे मैं मोती न लूंगा।" मिया ताहा ने निवेदन किया कि, "दास ने इस मोती को स्वय बनाया है, इसका मूल्य किस प्रकार से ले?" सुल्तान ने आश्चर्य प्रकट करते हुये कहा, "यह कैसे पता (५६) चले कि इसे तुमने बनाया है ?" मिया ताहा ने कहा, "यदि आप एकान्त मे चलें तो मैं निवेदन करू।" सुल्तान के आदेशानुसार समस्त अमीर चले गय। मिया ताहा ने मोती की एक-एक परत को, जिसे उसने अबरक से तैयार किया था, पृथक् कर दिया। सुल्तान ने यह आश्चर्यजनक बात देखकर मिया ताहा को नाना प्रकार की शाही कृपाओ द्वारा सम्मानित किया।

कहा जाता है कि ससार की कोई कला ऐसी न थी जिसका ज्ञान मिया ताहा को न हो। सुल्तान सिकन्दर मिया ताहा के विषय में कहा करता था, "हजार कलाकारो का कला-ज्ञान एक मिया ताहा में है।" उसने कागज के एक तख्ते से हाथी के दात बनाये थे और बादशाह के लिये हाथी दांत का ताज बनाया था। उसे जितना भी मला जाता वह न टूटता था। उसने नीलोफर[1] के फूल के समान करण फूल जिसे हिन्दुस्तान की स्त्रिया पहनती हैं बनाया था। उसके भीतर भौंरा रक्खा था। जब कोई स्त्री उसे पहनती तो उस समय तक जब तक वह सिर न हिलाती वह कली के रूप में रहता। जब वह सिर हिलाती तो वह नीलोफर फूल बन जाता और उसके बीच से भौंरा निकल कर उसकी आखो के सामने उडने लगता। जब वह सिर को हिलाना बन्द कर देती तो भौंरा पुन उसी नीलोफर में प्रविष्ट होकर कली बन जाता। उसके (मिया ताहा के) गुणो का कहा तक उल्लेख किया जाय। उसे कीमिया[2] तथा सीमिया[3] का भी ज्ञान था। सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल में मिया ताहा अद्वितीय था। उसके विषय में यह छन्द पढा जा सकता है

छन्द

"ससार में वह कौन सी कला है जिसका तुझ ज्ञान नही,
जिसकी 'सादी'[4] तेरे लिये ईश्वर से प्रार्थना करे?"

१ नील कमल, कुई।
२ सोना चादी बनाने का ज्ञान।
३ काल्पनिक वस्तुओं के बनाने का ज्ञान।
४ शेख सादी शीराजी का जन्म शीराज में ११७५ ई० के लगभग तथा मृत्यु १२९२ ई० में हुई। उनकी रचनाओं मे 'गुलिस्ता' तथा 'बोस्ता' बड़ी प्रसिद्ध हैं।

उन्ही दिनों में सुल्तान ने आलिमो से पूछा, "जानवर एक दूसरे की भाषा जानते है अथवा नही ?" आलिमो ने निवेदन किया, "तफसीर[1] के अनुसार एक दूसरे की भाषा जानते हैं।" सुल्तान ने ख्वाजा से जो उसका मुसाहिब तथा विश्वासपात्र था पूछा, "जो कुछ आलिम लोग कहते हैं, उस पर धर्म के अनुसार (५७) मुझे विश्वास है किन्तु जो बात बुद्धि के अनुसार हो वह मुझे बताओ।" ख्वाजा ने कहा, "जो मनकूल[2] है उसमें बुद्धि का कोई हस्तक्षेप नही हो सकता।" सुल्तान ने कहा, "मैं स्वय कहता हू कि मेरा विश्वास यही है किन्तु जो कुछ तुम्हारी समझ में आये वह कहो।" ख्वाजा ने कहा, "चिडीमार जाल बिछाता है और घास की पत्ती मुह मे रख कर आवाज लगाता है। अन्य पक्षी आकर फस जाते हैं। वे इतना नही समझते कि यह हमारे समूह की आवाज नही। दूसरा कारण यह है कि गौरैये की आख सीकर उसे जाल पर बैठा दिया जाता है और उसे हिलाया जाता है। वह उस कैद मे चिल्लाती है। अन्य गौरैये उसके सिर पर चक्कर लगाती हैं और कष्ट के जाल में फस जाती हैं। वे इतना नही समझती कि वह व्याकुल तथा विवश है और उस स्थान पर भय है हम न जाय। कुछ पक्षी अर्थात् कौए शोर से और कुछ पक्षी जो पर्वत तथा वृक्षों पर रहते हैं आवाज से एकत्र हो जाते हैं और छिन्न-भिन्न भी हो जाते हैं।"

मियाँ महमूद

उन्ही दिनों में सुल्तान ने ख्वाजा के पुत्र को जिसका नाम मिया महमूद था एक ऐसा घोडा प्रदान किया जिसके समान हिन्दुस्तान में कोई घोडा न था। सुल्तान ने कहा 'मिया महमूद खा! मैं तुझे यह घोडा इस शर्त पर प्रदान करता हू कि तू इसे किसी अन्य व्यक्ति को न दे।" मिया महमूद ने यह निश्चय कर लिया था कि वह भिखारी को किसी दशा में भी न लौटायेगा। वह दान-पुण्य तथा वीरता में अद्वितीय था। एक दिन एक बाद फरोश[3] ने आकर उससे वही घोडा मागा। मिया महमूद ने कहा, "बादशाह ने यह घोडा मुझे इस शर्त पर प्रदान किया है और आदेश दिया है कि "मैं इसे किसी को भी न दूँ। इस घोडे के बदले में मुझ से चार घोडे ले लो।" बाद फरोश ने कहा "यदि देना हो तो यह घोडा दो अन्यथा मैं दूसरा घोडा न लूँगा।" मिया महमूद ने कहा, "बादशाह ने मना किया है।" बाद फरोश ने कहा, 'तू भिखारी की इच्छा की चिन्ता नही करता अपितु बादशाह के आदेश पर ध्यान देता है। मै निराश होकर जाता हू। यह घोडा एक दिन अन्त में मर जायगा। तुझे फिर पश्चात्ताप करना पडेगा।" यह कह कर वह चल दिया। मिया महमूद ने कहा, "मत जा, घोडा ले ले। जो कुछ होगा देखा जायगा। भिखारी को मैं नही लौटा सकता।"

दूसरे दिन सुल्तान सिकन्दर जगल की सैर को रवाना हुआ। मिया महमूद सुल्तान की सवारी के साथ उपस्थित था। बाद फरोश भी उसी घोडे पर सवार हुआ और दूर से दिखाई पडा। सुल्तान ने घोडे को पहचान कर आदेश दिया कि सवार को उपस्थित किया जाय। जब बाद फरोश सुल्तान के (५८) पास लाया गया तो उसने यह कवित्त पढ कर महमूद के लिये शुभ कामना की

दोहरा

'दान सरक महमूद ने जो का बिरज रहा सुल्तान।'

१ कुरान की टीका।
२ धर्म ग्रन्थों में लिखी हुई अथवा धार्मिक व्यक्तियों विशेष रूप से मुहम्मद साहब तथा उनके साथियों की वाणी तथा कुरान एवं कुरान की टीका में लिखी हुई बातें।
३ भाट।

सुल्तान ने वाद फरोश तथा मिया महमूद की ओर दृष्टि डाली और कुछ न कहा। जब वह राजधानी मे आया तो उसने (मिया महमूद से) पूछा, "क्या मैंने वह घोडा वाद फरोश के लिये दिया था ? मेरी बात को तूने साधारण समझा।" उसने उसकी जागीर ले ली। ख्वाजा ने भी पुत्र की ओर से हाथ खीच लिया और उसे कुछ भी न दिया। सुल्तान ने भी उसकी जागीर ले ली थी। मिया महमूद ६० मित्रो[1] सहित पैदल चल पडा और उसने किसी का भी घोडा न लिया और कहा, "यदि ईश्वर मुझे देगा तो सब कुछ दे देगा।" उसने अस्त्र-शस्त्र के लिए एक लोहे की टोपी ले ली। मेवात में आदिल खा मेवाती ने उन्हें अपने साथ रखना चाहा। मिया महमूद ने कहा, "घर से निकलकर घर के प्रागण में बैठना तथा रहना बुद्धिमाना का कार्य नही।" वह वहा से नागौर चला गया। वहा के हाकिम के साथ उसकी भली भाँति निभने लगी और उसने महान् कार्य सम्पन्न किये।

जब सुल्तान सिकन्दर को इस बात का पता चला तो उसने ख्वाजा से कहा, "जो मेरे काम आता था, उसे तूने अपने पास से पृथक् कर दिया और जो पुत्र तेरे काम आते हैं उन्हें तू अपने पास रक्खे हुय है। उसी के कारण तेरे अन्य पुत्रो को मै कुछ दिया करता था।" ख्वाजा ने शीघ्रातिशीघ्र अपने पुत्र को बुलवाया। मिया महमूद ६० व्यक्तियो सहित पैदल गया था। ४०० अश्वारोहियो सहित पुन सेवा में उपस्थित हुआ। सुल्तान ने उसे नाना प्रकार से सम्मानित करके प्रसन्न किया।

सुलेमान तथा हैवत खा शिरवानी में झगडा

सुल्तान सिकन्दर उन दिनों सम्भल के क्षेत्र में निवास किया करता था और अधिकाश समय चौगान खेला करता था। सयोग से एक दिन सुल्तान चौगान खेलने गया। दरिया खा शिरवानी के पुत्र सुलेमान का चौगान, हैवत खा शिरवानी के चौगान से टकरा गया और उसका सिर फूट गया। दोनो इस बात पर झगडा करने लगे। सुलेमान के भाई खिज्र ने अपने छोटे भाई का बदला लेने के लिये जान-बूझ कर हैवत खा के सिर पर चौगान मारा। शोर गुल होने लगा। खाने खाना तथा कुछ अन्य अमीर (५९) हैवत खा को समझा-बुझा कर अपने निवास-स्थान को ले गये। सुल्तान मैदान से निकल कर महल के भीतर चला गया।

अमीरों का षड्यन्त्र

चार दिन उपरान्त सुल्तान पुन चौगान खेलने निकला। मार्ग में शम्स खा नामक हैवत खा का एक सम्बन्धी क्रोध में भरा खडा था। जब उसने सुलेमान के भाई खिज्र को देखा तो उसके सिर पर चौगान मारा। सुल्तान ने शम्स नामक इस अफगान को बहुत पिटवाया। सुल्तान लौट कर अपने महल को चला गया। तदुपरान्त सुल्तान को अफगान अमीरो के प्रति शका हो गई। कुछ हितैषी अमीर सेना सहित प्रत्येक रात्रि में सुल्तान की रक्षा किया करते थे। २२ प्रसिद्ध अमीरो ने यह षड्यन्त्र रचा कि वे शाहज़ादा फतह इब्न सुल्तान बहलोल को सिंहासनारूढ कर दें। उन्होंने इस सम्बन्ध में शपथ ली और वचनवद्ध हुये। शाहज़ादे ने यह बात शेख ताहिर तथा अपनी माता को बताई और षड्यन्त्रकारियो की सूची उन्हें दे दी। शेख ताहिर तथा फतह खा की माता ने शाहज़ादे को उपदेश देते हुए उसे इस कार्य से रोका और यह निश्चय किया कि शाहजादा षड्यन्त्रकारियो की सूची सुल्तान के पास ले जाकर अपने आप का विद्रोह के अपराध से मुक्त करा ले। शाहज़ादे ने ऐसा ही किया। सुल्तान सिकन्दर ने उस

[1] सैनिकों।

समूह के षड्यन्त्र की सूचना पाकर वज़ीरों की सहमति से उन्हें इधर-उधर की विलायतों में भेज दिया।

'अकबरशाही' में लिखा है कि कटिहर नामक स्थान पर एक जुन्नारदार (ब्राह्मण) लोधन निवास करता था। एक दिन उसने मुसलमानों के समक्ष इस बात को स्वीकार किया कि "इस्लाम सत्य है और मेरा धर्म भी ठीक है।" उसकी यह बात प्रसिद्ध हो गई और आलिमों के कानों तक पहुंच गई। काज़ी पावा तथा शेख बुद्ध ने जो लखनौती (लखनऊ) में थे एक दूसरे के विरुद्ध फतवे दिये। उस क्षेत्र के हाकिम आजम हुमायूं ने जुन्नारदार को काज़ी तथा शेख बुद्ध सहित सुल्तान की सेवा में सम्भल भेज दिया। सुल्तान सिकन्दर को धार्मिक समस्याओं के ज्ञान के विषय में बड़ी रुचि थी। उसने चारों ओर से आलिमों को बुलवाया। मुल्ला अब्दुल्लाह बिन मुल्ला अलहदाद तलवेंनी, सैयिद मुहम्मद तथा मियां कादन को दिल्ली से बुलवाया। राज्य के समस्त आलिम सम्भल में इस वाद-विवाद में सम्मिलित हुए। वाद-(६०) विवाद के उपरान्त आलिमों ने यह निश्चय किया कि "उसे बन्दी बनाकर इस्लाम स्वीकार करने के लिए कहा जाय। यदि वह मना करे तो उसकी हत्या कर दी जाय।" जुन्नारदार ने इस्लाम स्वीकार न किया और आलिमों के आदेशानुसार उसकी हत्या हो गई। सुल्तान ने समस्त आलिमों को शाही इनाम द्वारा प्रसन्न करके विदा कर दिया।

धौलपुर पर आक्रमण

उसी वर्ष सुल्तान ने खवास खां को धौलपुर के किले की विजय हेतु रवाना किया। वहां के राजा ने युद्ध किया। नित्यप्रति युद्ध होता रहता था। सुल्तान ने धौलपुर के राय की दृढ़ता के समाचार पाकर अपनी विजयी सेनाओं को लेकर प्रस्थान किया। जब सुल्तान की सेना धौलपुर के समीप पहुंची तो राय स्कीक काफिर ने यह निश्चय किया कि वह युद्ध किये बिना भाग जाय। वह अपने कुछ सम्बन्धियों को किले में छोड़कर ग्वालियर की ओर चला गया। कुछ हिन्दू, जो वहाँ रह गये थे, युद्ध न कर सके और आधी रात में किले से निकल कर भाग खड़े हुये। सुल्तान सिकन्दर ने प्रातःकाल किले में प्रविष्ट होकर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और विजय सम्बन्धी प्रथाओं को पूर्ण किया। सुल्तान के सैनिकों ने लूट मार प्रारम्भ कर दी। धौलपुर के उद्यानों को जो सात कोस तक अपनी छाया डाले हुये थे जड़ से कटवा डाला। सुल्तान सिकन्दर ने एक मास तक वहाँ पड़ाव किया और मन्दिरों के स्थान पर मस्जिदों का निर्माण कराया और आगरा की ओर चल खड़ा हुआ। जब वह राजधानी—आगरा—में पहुंचा तो समस्त अमीरों को उनकी जागीरों को विदा कर दिया।

आगरा में भूकम्प

इसी बीच में रविवार ३ सफर ९११ हि० (६ जूलाई १५०५ ई०) को आगरा में एक बहुत बड़ा भूकम्प आया। पर्वत हिलने लगे और बड़े-बड़े दृढ़ भव्य भवन भी गिर पड़े। जीवित लोग कयामत समझने लगे और मुर्दे हश्र[1]। आदम[2] के काल से सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल तक कभी इस प्रकार का

१ समस्त संसार के नष्ट हो जाने के उपरान्त जब समस्त प्राणियों को जिन्दा करके उनसे उनके सांसारिक कार्यों के विषय में प्रश्नोत्तर होंगे।
२ यहूदी, ईसाई तथा इस्लाम आदि धर्मों के अनुसार ईश्वर सृष्ट प्रथम मनुष्य।

(६१) भूकम्प न आया था और किसी को इस बात की स्मृति नहीं कि इस प्रकार का भूकम्प हिन्दुस्तान में पुन कभी आया।

ग्वालियर तथा आसपास के किलो पर आक्रमण

सुल्तान ने वर्षा ऋतु आगरा में व्यतीत की। तदुपरान्त वह सेना तैयार करके ग्वालियर तथा उसके आसपास के किलो की विजय हेतु रवाना हुआ और अल्प समय में ग्वालियर के अधिकाश स्थान अपने अधिकार मे कर लिये। मन्दिरों के स्थान पर उसने मस्जिदो का निर्माण कराया और आगरा की ओर लौट गया। मार्ग के सकरे तथा ऊबड-खाबड होने के कारण आवश्यकतानुसार लोगो को पार कराने के लिये वहा पडाव किया। बहुत बडी सख्या में लोग जल के अभाव तथा पशुओं की अधिकता के कारण मर गये। कहा जाता है कि उस समय जल के एक कूज़े[1] का मूल्य १५ तन्के तक पहुच गया था। कुछ लोग प्यास के कारण इतना जल पी जाते कि मृत्यु को प्राप्त हो जाते। जल के अभाव के कारण जो लोग मृत्यु को प्राप्त हो गये, उनकी जब गणना हुई तो ८०० व्यक्ति निकले।

नरवर के किले पर आक्रमण

सुल्तान सिकन्दर दो वर्ष उपरान्त ९१३ हि० (१५०७–८ ई०) में नरवर के किले की विजय हेतु रवाना हुआ। उसने काल्पी के हाकिम जलाल खा को फरमान लिखा कि "सेना तैयार करके शीघ्रातिशीघ्र नरवर को घेर लिया जाय।"

फरमान भेजने की प्रथा

सुल्तान सिकन्दर की यह प्रथा थी कि जब कभी वह सेना किसी दूरस्थ स्थान को भेजता तो वह रोजाना उस सेना के पास दो फरमान भेजा करता था। एक प्रात काल इस आशय का कि इस स्थान से कूच करो और अमुक स्थान पर पडाव करो, और वह उस स्थान का पता लिखा करता था। दूसरा फरमान दिन के अन्त में इस आशय का प्राप्त होता कि ऐसा करो, वैसा करो। यदि सेना ५०० कोस की दूरी पर भी पहुच जाती तो भी इस अधिनियम का उल्लघन न होता था। डाक चौकी के घोड़े प्रत्येक सराय मे सर्वदा तैयार रहते थे।

सुल्तान सिकन्दर का नरवर की ओर प्रस्थान

(६२) जलाल खा लोदी ने सुल्तान के आदेशानुसार नरवर को घेर लिया। सुल्तान सिकन्दर जलाल खा के पीछे शीघ्रातिशीघ्र नरवर पहुचा। दूसरे दिन सुल्तान सिकन्दर किले की दृढता एव सेना के घेरा डालने का निरीक्षण करने के लिये सवार हुआ। जलाल खा ने अपनी सेना को तीन भागो में विभाजित करके सुल्तान के मार्ग में खडा कर दिया ताकि वह अपनी सेना सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत करके अभिवादन करे। एक सेना पदातियों की, एक सेना अश्वारोहियो की और एक सेना हाथियो की थी। सुल्तान सिकन्दर को उसकी सेना की अधिकता देख कर बडी ईर्ष्या हुई और उसने यह सकल्प कर लिया कि जलाल खा को शनै-शनै वह नष्ट कर दे तथा उसे बीच से हटा दे। वह एक वर्ष तक किले को घेरे रहा। उस किले की लम्बाई ८ कोस थी। नित्य प्रति दोनो ओर से आदमी मारे जाते थे। उपर्युक्त अवधि के

1 गिलास।

उपरान्त किले वालो ने जल के अभाव तथा अनाज के महगे होने के कारण क्षमा याचना कर ली और अपनी धन-सम्पत्ति सहित बाहर चले गये। सुल्तान ने मन्दिरो को नष्ट करके उनके स्थान पर मस्जिदो का निर्माण कराया। उसने नरवर के आलिमो तथा पवित्र व्यक्तियो के लिये वृत्तिया एव अदरार निश्चित कर दिये और उन्हें उस स्थान पर बसा दिया और छ मास तक क़िले के नीचे ठहरा रहा।

इसी बीच मे सुल्तान के हृदय में यह आया कि "नरवर का किला अत्यन्त दृढ है। यदि वह किसी विरोधी को प्राप्त हो जायगा तो उससे पुन छीना न जा सकेगा।" इस कारण उसने नरवर के किले को नष्ट कर दिया ताकि वह शत्रु को न प्राप्त हो सके। इस ओर से निश्चिन्त होकर वह राजधानी आगरा की ओर रवाना हुआ। मार्ग में सुल्तान बहलोल के चाचा के पुत्र कुतुब खा की पत्नी नेमत खातून शाहज़ादा जलाल खा के साथ सुल्तान की सेना में उपस्थित हुई। सुल्तान सिकन्दर उनसे भेंट करने गया और उन्हें प्रोत्साहन प्रदान किया। कुछ दिन उपरान्त उसने कालपी की सरकार शाहज़ादे को जागीर के रूप में प्रदान कर दी। विदा होते समय १२० घोडे, १५ हाथी, खिलअत तथा नकद धन प्रदान करके शाहज़ादे तथा खातून को कालपी की ओर भेज दिया और वहा से आगरा की ओर चल दिया।

सिकन्दर के राज्य की सुख-सम्पन्नता

(६३) उसके राज्यकाल मे चीज़ो का मूल्य अत्यधिक सस्ता था एव सुख-शान्ति थी। प्रात-काल से सायकाल तक वह राज्य के कार्यों में व्यस्त रहता था। उसके राज्यकाल में हिन्दुस्तान के जमीदारो का अत्याचार कम हो गया था और सभी उसके आज्ञाकारी बन गये थे।

बाबर का देहली पहुचना

एक इतिहास में यह लिखा हुआ देखा गया है कि उन्ही दिनो में बाबर बादशाह जिसका नाम बाबर कलन्दर था क़लन्दरो के वस्त्र में देहली पहुचा और सुल्तान के दरबार में उपस्थित हुआ। सुल्तान के कुछ विश्वासपात्रो ने उसे सूचना दी कि एक ज्ञानी कलन्दर दरबार में खडा हुआ सुल्तान के दर्शन की प्रतीक्षा कर रहा है। सुल्तान ने अपने कुछ विश्वासपात्रो को उसे भीतर लाने का आदेश दिया। जब बाबर क़लन्दर प्रविष्ट हुआ तो उसने सुल्तान से हाथ मिलाया। हाथ पकडते समय सुल्तान को उसके सौभाग्य के बोझ का अनुभव हुआ। उसने सोचा कि अभी उसके राज्य का दबदबा उन्नति करने वाला है। सुल्तान सिकन्दर ने पूछा, "दरवेशो का क्या मशरब[1] है?" बाबर कलन्दर ने कहा, "कलन्दरी।" सुल्तान ने तत्काल यह छन्द पढा

छन्द

"इस स्थान पर सहस्रो बाल से अधिक बारीक रहस्य हैं,
जो कोई सिर मुडवाले वही कलन्दरी का ज्ञाता नही हो जायगा।"

बाबर कलन्दर ने सुल्तान की ओर दृष्टिपात करते हुये यह छन्द पढा

छन्द

"प्रत्येक व्यक्ति जो टेढी टोपी पहन लेता है और अकड़कर बैठ जाता है,
ताज धारण करना तथा बादशाही के नियम (नहीं) जानता।"

१ नियम, रहन-सहन का ढग।

सुल्तान सिकन्दर को उसका एक ही गजल के छन्द पढना बडा अच्छा लगा। कुछ समय तक वे (६४) साथ रहे। सुल्तान दरबार से उठ खडा हुआ और उसने अपने विश्वासपात्रो से कहा कि "दरवेशा की दावत के लिये जो आवश्यकताये हो उन्हें बिना माँगे पूरा किया जाय।" कलन्दर लोग स्वदेश को लौट गये। कुछ दिन उपरान्त सुल्तान को कलन्दरो के देखने की इच्छा हुई। उसने 'आम खास" में उपस्थित होकर कलन्दरो को बुलवाया। कुछ कलन्दरो को उपस्थित किया गया। सुल्तान ने कहा "कलन्दरो के नेता को उपस्थित करो।" उन लोगो ने कहा, "वह कलन्दर हम लोगो का साथ छोड कर उसी दिन चला गया।" सुल्तान सिकन्दर समझ गया कि "वह कलन्दर बाबर होगा।" कलन्दरो ने कहा, "हा हम लोग उसे बाबर कहते थे।" सुल्तान हाथ मलकर कहने लगा "हुमा[1] पक्षी प्राप्त हो गया था किन्तु हाथ से निकल गया।" कहा जाता है कि बाबर बादशाह ने विलायत से कुछ छन्द लिख कर सुल्तान सिकन्दर को भेजे और इस स्थान से सुल्तान सिकन्दर ने उत्तर प्रेषित किये, जिनका उल्लेख इस सक्षिप्त इतिहास में सम्भव नही।

सुल्तान सिकन्दर का प्रजा के विषय में ज्ञान

मियाँ भीखन के विषय में ज्ञान

यह कार्य इस सीमा को पहुच गया था कि लोगो के घर की बात भी सुल्तान तक पहुच जाती थी। यदि कोई अपने घर में कोई बात कहता तो वह बात सुल्तान तक पहुच जाती। यह कहानी प्रसिद्ध है कि एक रात्रि में भीखन खा[2] लोदी वर्षा ऋतु में घर के कोठे पर सोया हुआ था। आधी रात अथवा रात के अन्त में वर्षा आ गई। उस समय सेविकाओ में से कोई दाया उपस्थित न थी। भीखन खा तथा उसकी पत्नी पलग उठाकर घर के भीतर ले गये। दूसरे दिन खान अभिवादन हेतु गया। सुल्तान ने उसे देखते ही मिया भूवा अथवा अन्य विश्वासपात्र से कहा, "इस प्रकार के बडे-बडे अमीर रात्रि में अपने निकट कोई सेवक नही रखते और स्वय रात में पलग बाहर से भीतर ले जाते है।" सुल्तान सिकन्दर को लोगो के घरो का अधिकाश हाल ज्ञात रहता था। लोगो का विचार था कि कोई जिन[3] सुल्तान का परिचित है जो उसे परोक्ष से समाचार पहुचाता है और कुछ लोग इसे सुल्तान का चमत्कार बताते थे।

हाजी अब्दुल वह्हाब

कुछ घटनायें जो सुल्तान सिकन्दर द्वारा घटी उन्हें उसका चमत्कार बताया जा सकता है। उनमें (६५) से एक यह है कि जिस दिन हाजी अब्दुल वह्हाब जहाज से उतरा, सुल्तान सिकन्दर ने उसी दिन मिया शेख लादन को आगरा में बता दिया कि आज हाजी अब्दुल वह्हाब जहाज से उतरा है। शेख लादन ने उस दिन की तिथि लिखकर रख ली। जिस दिन हाजी अब्दुल वह्हाब आगरा पहुचा और शेख लादन ने पता लगाया तो ज्ञात हुआ कि सुल्तान ने ठीक कहा था।

आज़म हुमायूँ के समाचार प्राप्त होना

सुल्तान ने आजम हुमायूँ शिरवानी को बहुत बडी सेना देकर ठट्ठा[4] की विजय हेतु नियुक्त किया,

१ एक कल्पित पक्षी। कहा जाता है कि यह जिसके सिर से गुजर जाय वह बादशाह हो जाता है।
२ 'भीकन' तथा 'भीखन' दोनों शब्दों का प्रयोग हुआ है।
३ मुसलमानों के विश्वास के अनुसार एक तैजस योनि।
४ पटना होना चाहिये।

१७ दिन तक उस सेना के कुछ समाचार न प्राप्त हुये। सुल्तान सिकन्दर ने आज़म हुमायूँ के पुत्र से, जिसका नाम फतह खा था, पूछा, "तुम्हें आजम हुमायूँ के कुछ समाचार प्राप्त हुये हैं?" फतह खा ने कहा, "१७ दिन से कोई समाचार प्राप्त नही हुये।" सुल्तान ने कहा, "मुझे ज्ञात हुआ है कि वह आज पराग (प्रयाग) से लौट आया है। कुछ दिन में अपनी विलायत में पहुच जायगा।" सुल्तान ने एक लाख तन्के फतह खा के घर भेज कर कहलाया कि "मैंने मनौती की थी कि जब आज़म हुमायूँ की कुशलता के समाचार मुझे प्राप्त होगे तो मैं एक लाख तन्के फकीरो को न्योछावर करूगा। तू एक लाख तन्के फकीरो को दे दे।" एक लाख तन्के शाही दरबार के फकीरो को बाटे गये। कुछ दिन उपरान्त जिस प्रकार सुल्तान ने कहा था, उसी के अनुसार उसका पत्र प्राप्त हुआ।

सुल्तान सिकन्दर द्वारा एक व्यक्ति को जिन्दा करना

कहा जाता है कि चन्देरी के समीप एक व्यक्ति अपनी स्त्री के साथ पैदल जा रहा था। दोनो पैदल आगरा की ओर चल खडे हुए। एक दिन यात्रा के उपरान्त स्त्री के पाव में छाले पड गये। वह स्त्री बडी कठिनाई से यात्रा कर सकती थी। अचानक दो अश्वारोही उधर पहुच गय। उन्होने उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए उस रूपवती के पति से कहा कि, "इस कोमल स्त्री को पैदल क्यो ले जा रहा है और किस कारण कष्ट दे रहा है?" उसने उत्तर दिया, "मैं क्या करू? मैं किसी सवारी का प्रबन्ध नही कर सकता।" उन दोनो अश्वारोहियो ने कहा, कि "हम लोग एक बात कहते हैं। यदि तेरी इच्छा हो तो उसके अनुसार आचरण कर।" उस व्यक्ति ने पूछा, "क्या बात है?" उन लोगो ने कहा कि, "हमारा घोडा कोतल है। यदि तू चाहे तो उसे सवार करके उसकी लगाम पकडकर चल सकता है।" उस व्यक्ति (६६) ने कहा कि "मुझे विश्वास नही होता।" उन लोगो ने शपथ लेकर प्रतिज्ञा की कि, "हम ईश्वर को साक्षी करते हैं कि कोई भय नही है। तू घोडे की लगाम पकडकर यात्रा कर।" अत्यधिक आग्रह के उपरान्त वह व्यक्ति चल खडा हुआ। स्त्री को सवार करके लगाम उसने अपने हाथ में ले ली। थोडी सी यात्रा के उपरान्त वे एक घने जगल में पहुँच गये। दोनो अश्वारोहियो ने अपनी प्रतिज्ञा को भुला दिया और रूपवती पर आसक्त होकर उसके पति की हत्या कर दी। स्त्री को एक अश्वारोही ने अपने पीछे अपने घोडे पर बैठा लिया। वह स्त्री बार बार पीछे देखती जाती थी। इन अश्वारोहियो ने पूछा कि, "क्या तेरे साथियों में से कोई रह गया है जो हर बार पीछे देखती है?" स्त्री ने कहा, "कोई अन्य नही है किन्तु जिसको तुम लोगो ने मध्यस्थ बनाया था और जिसके विश्वास पर मेरे पति ने मुझे तुम्हारे सिपुर्द किया था उसे देख रही हू।" वे दोनो अश्वारोही हंसने लगे और उन्होने कहा कि, 'यह विचार त्याग दे।" वे यह वार्ता कर ही रहे थे कि दो अश्वारोही बुरका पहिने भाले अपने हाथो में लिये हुए प्रकट हुये और उन दोनों अश्वारोहियो के निकट पहुँचकर इन्होने उन दोनो को भूमि पर गिरा दिया और उस स्त्री से पूछा कि, "तेरा पति कहा पडा है? हमें दिखा।" वह स्त्री दोनो अश्वारोहियों को अपने पति के पास लाई। इन्होने देखा कि उसका सिर पृथक् पडा हुआ है। दोनो सवारो ने घोडे से उतरकर उसके शरीर को उसकी ग्रीवा से मिलाकर उस पर एक चादर डाल दी और स्त्री से कहा, "जिस समय हम लोग अदृश्य हो जायँ उस समय अपने पति के ऊपर से चादर हटाना, यह तीनों घोडे हम तुझे प्रदान करते हैं।" जब वे रवाना हो गये तो अभी स्त्री को दृष्टिगत हो ही रहे थे कि मुर्दे ने सास लेना प्रारम्भ कर दिया और चादर हिलने लगी। इस विचित्र घटना को देखकर उसमें शक्ति न रही और उसने अपने पति के ऊपर से चादर हटाई। उसने देखा कि उसका सिर मिला हुआ है और वह सो रहा है। स्त्री ने पति को जगाया। पति ने पूछा कि, 'यहा क्यो बैठी है और हमारे साथी कहा है?" स्त्री ने उससे समस्त घटना का उल्लेख

किया और कहा कि, "दो अश्वारोही परोक्ष से प्रकट हुए और उन्होने तुझे पुन जीवित कर दिया और वे जा रहे हैं।" वह व्यक्ति एक घोडे पर सवार होकर उन परोक्ष के सवारो के पीछे रवाना हुआ और उनके (६७) पास पहुच कर कहा, "ईश्वर के लिये अपने घोडो की लगाम रोक लो और क्षण भर के लिये खडे हो जाओ तथा अपना मुख मुझे दिखाओ।" इन लोगो ने कहा, कि "तू हमसे क्या चाहता है? जो ईश्वर का आदेश था, वह हुआ। तू अपना कार्य कर।" वह शपथ देकर कहने लगा, "एक बार अपना मुख मुझे दिखाओ।" इन दोनों अश्वारोहियो ने अपने मुख से बुरका हटा दिया। उसने देखा कि एक युवक है और दूसरा वृद्ध। दोनों को अभिवादन करके वह स्त्री के पास चला गया। दोनो ही आश्चर्य करते हुए चल खडे हुए। कुछ यात्रा के उपरान्त वह आगरा पहुचे। उस व्यक्ति की ग्रीवा में कत्ल किये जाने के चिह्न वर्तमान थे। जो कोई उससे इसके विषय मे पूछता वह किसी न किसी प्रकार कोई उत्तर दे देता था।

सयोग से एक दिन सुल्तान सिकन्दर आगरा मे किसी स्थान को सवार होकर जा रहा था। नगर के लोग गलियो में दर्शनार्थ खडे हो गये। वह व्यक्ति भी जिसका गला कटा था, खडा हो गया। सवारी के सम्बन्ध में सुल्तान का ऐसा आदेश था कि मलिक आदम काकर निपग तथा धनुष लेकर सुल्तान के समक्ष चला करे और पक्षियो के लिये करवास फेंकता जाया करे। जब उस व्यक्ति ने जिसका गला कटा था मलिक आदम को देखा तो उसे बडा आश्चर्य हुआ और उसके पास जो लोग थे उससे उसने कहा, "मैं एक बडी विचित्र बात देख रहा हू किन्तु मै इसके विषय में कुछ कह नही सकता।" उसकी इस बात से बहुत से लोगा की भीड लग गई। वे उससे कहने लगे कि, 'क्या बात है जिसे तू नही कह सकता?" इसी बीच मे सुल्तान सिकन्दर की सवारी पहुच गई। जब उसने सुल्तान को देखा तो कहा कि, "यह उससे भी अधिक विचित्र बात है।" उसके एक मित्र तथा अन्य लोगो ने उससे इस विषय का वृत्तात देने के लिये आग्रह किया। जिस व्यक्ति का गला कटा था उसने कहा कि, "तुम लोग मरी ग्रीवा पर जो यह चिह्न देखते हो तो इसका कारण यह है कि मेरा गला काट डाला गया था।" अपनी हत्या तथा पुन जीवन पाने का हाल उसने बताया और कहा कि, "यह दोनो सवार बुरका पहिने हुए प्रकट हुए और इन्होने मुझे जीवित किया। आज मैंने दोनो को पहिचान लिया।" लोगो ने पूछा कि "वे कौन हैं?" उसने कहा कि, "मैं नही जानता कि तुम्हें विश्वास होगा अथवा नही। जो वृद्ध था वह मलिक आदम था और जो युवक था वह सुल्तान सिकन्दर था।"

चोरी

आगरा में एक रात्रि में शाही अश्वशाला से एक घोडा चोरी गया। रात की घटनाओ का विवरण सुल्तान के समक्ष दिन में प्रस्तुत किया गया। सुल्तान ने पूछा कि, "घोडा किससे सम्बन्धित था?" (६८) निवेदन किया गया कि, "नान्हू कासी से सम्बन्धित था।" सुल्तान ने आदेश दिया कि "जलाल मीर आखुर को कोतवाल सहित[1] मुहम्मद जैतून आगरा के शिकदार को सौंप दिया जाय ताकि जिस मूल्य पर घोडा क्रय किया गया था उनसे वसूल करा ले।" तीन दिन उपरान्त घोडे को चोर सहित धौलपुर के निकट एक घाट पर बन्दी बनाकर सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया गया। सुल्तान ने कहा, "मुहम्मद

१ मूल पुस्तक में "जलाल नाम मीर आखुर या कोतवाल रा हवालये मुहम्मद जैतून शिकदार आगरा नुमायन्द" है, किन्तु 'या' के स्थान पर 'बा' पढने से अनुवाद में जो अर्थ दिया गया है निकल आता है अन्यथा 'या' से अर्थ बड़ा अनिश्चित हो जाता है।

जैतून से पूछा जाय कि जलाल से धन वसूल किया है अथवा नही ?" मुहम्मद जैतून ने उससे धन न लिया था। वह बडे असमजस में पड गया कि "मै क्या कहूँ ? यदि कहता हूँ कि धन लिया है तो झूठ होगा। बादशाहो के समक्ष झूठ न बोलना चाहिये और यदि कहता हूँ कि नही लिया तो यह आज्ञा का उल्लघन होगा।" बहुत सोच-विचार करके उसने कहा कि "जलाल ने दास की तसल्ली उसी दिन कर दी थी।" सुल्तान ने कहा, "यदि जलाल ने धन की तसल्ली कर दी हो तो घोडा जलाल को दे दिया जाय।" जलाल ने उस घोडे को १०,००० तन्के में बेच कर मुहम्मद जैतून को घोडे का मूल्य ४००० दे दिया और ६००० अपने अधिकार में कर लिये।

चोर को तीन दिन तक शाही दरबार के समक्ष रक्खा गया। तीन दिन उपरान्त दरबारे आम के समय जब कि बादशाह न आया था खाने खाना लोहानी ने कहा, "चोर की क्यों रक्षा कर रहे हो ? यहा से ले जाकर उसकी हत्या कर दो।" चोर के रक्षक चोर को ले जाने वाले थे कि इसी बीच में सुल्तान सिकन्दर "आम खास" में आकर राजसिंहासन पर आसीन हो गया। पहुचते ही खाने खाना को अपने पास बुलवा कर उसने कहा कि, "चोर की हत्या के दो स्थान होते हैं। सर्वप्रथम उस स्थान पर जहा उसने चोरी की हो। यदि उस समय कोई जाग उठे और उसकी हत्या कर दे तो एक स्थान तो वह होता है। दूसरा वह स्थान होता है जहा उसे सामान सहित पकडा जाय। इस समय जब कि वह दरबार मे है जो कि दारुल अमान[1] है और अपनी सम्पत्ति हमने उससे ले ली है, तो तुम कहते हो कि उसकी हत्या कर दी जाय। आश्चर्य होता है कि तुम कैसे मुसलमान हो।" खाने खाना ने भूमि का चुम्बन करके कहा, "आपको दैवी ज्ञान प्राप्त है, जो आपने अन्त करण के प्रकाश से इस बात का पता चला लिया अन्यथा दास ने केवल एक बात रक्षक से कही थी।"

सुल्तान ने आदेश दिया कि, "चोर को मुहम्मद जैतून को सौप दिया जाय ताकि वह उसे वन्दीगृह मे रखे।" प्रथानुसार हर वर्ष जब चोरो की सूची सुल्तान के हाथ में दी जाती तो वह हर बार लिख देता कि उसकी रक्षा की जाय। ७ वर्ष तक चोर वन्दीगृह में रहा। ७ वर्ष उपरान्त सुल्तान ने आदेश दिया कि "उससे पूछा जाय कि यदि वह इस्लाम स्वीकार कर ले तो उसे मुक्त कर दिया जाय।" चोर ने कहा, "यदि दास को ७ दिन उपरान्त इस्लाम स्वीकार करने का आदेश होता तो भी वह इस्लाम स्वीकार (६९) कर लेता। अब ७ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। दास स्वेच्छा से मुसलमान होता है।" सुल्तान ने आदेश दिया कि "उसे वन्दीगृह से निकाल कर मुसलमान किया जाय और शरा के आदेश सिखाये जायँ और उसे खिलअत देकर १५ तन्के दे दिये जायँ और कह दिया जाय कि यदि वह कही जाना चाहता है तो यह उसका मार्ग-व्यय है और यदि वह यही रहना चाहता है तो उसका मासिक वेतन यही होगा।" चोर ने कहा, कि "अब मैं कहा जाऊँ ? इन सात वर्षो म दास के हृदय में चोरी की कोई इच्छा नही रही। अब मैं इस दरबार को छोडकर कहा जाऊ ? क्योकि सुल्तान इस प्रकार चोरो की रोक टोक कर रहे हैं अत दास लिख कर देता है कि सुल्तान के राज्यकाल मे कदापि कोई चोरी न करेगा। कारण कि चोरी करना जान की बाजी लगाना है। चोर अपने प्राणा पर खेल जाता है। जो कुछ पैदा करता है एक दिन मे व्यय कर देता है। क्योंकि चोरी के समय वह प्राणो की आशा त्याग कर जाता है अत या तो वह प्राणो की इस कार्य हेतु बलि दे देता है या सफलता प्राप्त कर लेता है। जो सेवा दास से हो सकेगी वह उसे सम्पन्न करेगा।" सुल्तान ने पूछा, "क्या सेवा करेगा ?" उसने निवेदन किया कि, "दास को कुछ पदाती प्रदान कर दिये

1 जहाँ किसी को कष्ट न पहुँचाया जा सके।

जायें। दास किले के द्वार पर बैठा रहा करेगा। यदि समस्त सेना में चोरी हो जायगी तो दास उसके लिये उत्तरदायी रहेगा।" सुल्तान ने आदेश दिया कि "ऐसा ही किया जाय।"

एक रात्रि में आगरा के चारसू नामक बाजार में चोरी हो गई। बजाजो की दूकान तोड कर कपडा निकाल लिया गया। जब इस दुर्घटना के समाचार सुल्तान को प्राप्त हुये तो उसने आदेश दिया कि "उस नव मुस्लिम से पूछा जाय कि वह तो यह कहता था कि चोरी हो जायगी तो वह उसका उत्तरदायी होगा। अब वह उसका उत्तर दे।" उसने निवेदन किया कि, "मुझे चार दिन का अवकाश दिया जाय।" तीन दिन उपरान्त उसने जाकर निवेदन किया, "यह चोरी सेना वालो ने की है। बाहर का चोर नही है। आदेश दिया जाय कि जहा जहा सेना में माविया[1] है, वे दास को सौंप दिये जाय ताकि दास चोर को प्रस्तुत कर सके।" सुल्तान ने आदेश दिया कि "एसा ही किया जाय।" उन दिनो में कोई ऐसा अमीर न था जो मावियो को नौकर न रखता हो। लगभग ४००,५०० मावी जिन्हें उस राज्यकाल में खिदमतिया कहा जाता था, एकत्र किये गये। उसने चोर को उन्ही लोगो में ढूंढ लिया। वह उसे बन्दी बना कर सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत करना चाहता था कि वे लोग पाव पर गिर पडे। उन लोगो ने बजाजो को सतुष्ट कर दिया। उसने (नव मुस्लिम ने) चोर को प्रकट न किया और उन लोगों से जमानत ले ली कि 'यदि तुम लोग अब चोरी करोगे तो चोर को सुल्तान के समक्ष उपस्थित कर दिया जायगा।" दीर्घ काल तक चोरी का कोई नाम-निशान न रहा।

सुल्तान का निर्णय

(७०) कहा जाता है कि कोरुआ कौम के दो भाई, जो ग्वालियर के निवासी थे, आगरा में धन की कमी के कारण परेशान होकर सुल्तान सिकन्दर की सेना के साथ, जो रायसेन के किले पर आक्रमण करने के लिये नियुक्त हुई थी, चल दिये। उन्हें एक ग्राम में कुछ मुजफ्फरी, कुछ नगीने और दो बहुमूल्य लाल मिले। दोनो भाइयो मे से एक ने कहा, "हमारा उद्देश्य पूरा हो गया। अब हम क्यो अपमानित हो? घर पहुचकर निश्चिन्त होकर जीवन व्यतीत करें।" दूसरे ने कहा, "हे भाई, हमें प्रथम बार इतना धन प्राप्त हुआ है। सम्भवत दूसरी बार इससे अधिक धन प्राप्त हो जाय।" उसने कहा, 'मै स्वय किसी अन्य स्थान को न जाऊगा।" दोनो भाइयो ने धन को आपस में बाट लिया। बड भाई ने अपना हिस्सा छोटे भाई को देते हुए कहा कि, "यह मेरी पत्नी को पहुचा देना।" छोटे भाई ने घर पहुचकर समस्त धन लाल के अतिरिक्त उसकी पत्नी को दे दिया। दो वर्ष उपरान्त उसका भाई पुन आया और उसने लाल के विषय में प्रश्न किया। उसे वह न मिला। उसने भाई से पूछा कि 'लाल क्या हुआ?" भाई ने उत्तर दिया कि, "मैंने तेरी स्त्री को दे दिया था।" उसने कहा कि, "वह कहती है कि मुझ नही मिला।" भाई ने कहा कि, "वह झूठ बोलती है उसे कुछ दड दो।" उस व्यक्ति ने अपने भाई के कहने से उस बेचारी को दड दिया। उसने कहा कि, "आज की रात्रि में मुझ क्षमा करो, कल प्रात काल मैं उसे उपस्थित कर दूंगी।" प्रात काल स्त्री मिया भूवा के पास पहुची। अदालत[2] तथा वकालत[3] की सेवायें मिया भूवा से सम्बन्धित थी। पत्नी ने अपना हाल उसे बताया। मिया भूवा ने उसके पति तथा उसके भाई को उपस्थित करके पूछा। उसके भाई ने कहा कि,"मैंने अपने भाई की पत्नी को लाल दे दिया था।" मिया भूवा ने

१ इसे 'मादियान' तथा 'मावियान' दोनों लिखा गया है। सम्भवत मेवों अथवा मेवीतियों से तात्पर्य है।
२ न्याय-विभाग।
३ प्रधान मंत्री का कार्य।

पूछा कि, "तेरे पास साक्षी हैं ?" उसने कहा, "हा।" मिया भूवा ने कहा कि, "वे किस कौम के है ?" उत्तर मिला कि, "दोनों ब्राह्मण हैं।" मिया भूवा ने कहा कि, "शीघ्र साक्षियो को उपस्थित कर।" वह व्यक्ति जुआधर पहुचा। दो जुआरियो को तीन तन्के दिये और सिखा दिया कि इस प्रकार गवाही दें। उन्हें उत्तम वस्त्र पहिनाकर उनके माथे तथा सीने पर चदन मला और पान खिलाकर दारुल अदालत में उपस्थित किया। दोनो ब्राह्मणो ने झूठी गवाही दे दी। मिया भूवा ने साक्षियो को देखते ही कहा कि "इसके साक्षी विश्वस्त हैं। जिस प्रकार हो सके, दड देकर लाल अपनी पत्नी से ले ले।" स्त्री वहाँ से निकल (७१) कर राजधानी में पहुची और उसने फरियाद की। सुल्तान सिकन्दर ने उस स्त्री को अपने समक्ष बुलवाकर पूछताछ की। स्त्री ने सच सच बात बता दी। सुल्तान ने पूछा कि, "मिया भूवा के पास क्यो नही गई ?" स्त्री ने कहा, "हे न्यायकारी बादशाह ! मैं गई थी। उसने, जैसा चाहिये, ध्यान न दिया।" सुल्तान ने कहा कि, "इन सब आदमियो को मेरे समक्ष उपस्थित कर।" इसी बीच में मिया भूवा भी पहुच गया। सुल्तान सिकन्दर ने मिया भूवा पर क्रोधित होते हुए कहा, "तुमने इस अभागिन का निर्णय किस प्रकार किया ?" मिया भूवा ने निवेदन किया कि, "साक्षियों के आधार पर निर्णय किया।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "साक्षियो को मेरे समक्ष उपस्थित किया जाय।" उसने दोनो ब्राह्मणो को २–२ तन्के दिये और पूर्व की भाति सजाकर लाया। जैसे ही सुल्तान ने उन्हें देखा उसने कहा कि, "दोनो जुआरी हैं, ३, ४ तन्के देकर लाया होगा।" मिया भूवा ने निवेदन किया कि, "वाह्य रूप से दोना सदाचारी ज्ञात होते हैं।" सुल्तान ने कहा कि, "यह भी गुप्त नही रहेगा।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "दोनो लोगो को एक दूसरे से पृथक् किया जाय। जिस किसी को मैं बुलाऊ, उसको उपस्थित किया जाय।" सर्वप्रथम उसने स्त्री के पति को बुलवाकर पूछा कि, "वह लाल कितना बडा था ?" और उसके हाथ में थोडा सा मोम देकर कहा कि "इससे लाल की आकृति बना।" उस व्यक्ति ने जैसा लाल था वैसा ही बना दिया। सुल्तान ने लाल को सिहासन के ऊपर जो फर्श बिछा था, उसके नीचे रख लिया। तदुपरान्त उसने उसके भाई को बुलवाया और मोम देकर उससे लाल की आकृति बनाने के लिये कहा। दोनो भाइयो ने एक ही प्रकार के लाल बनाये। तदुपरान्त उसने दोनो साक्षियो को अलग अलग बुलाकर पूछा कि, "तुम लोगो ने लाल अपनी आँखो से देखा था ?" उन लोगो ने कहा, "हा हमने देखा था। हम बादशाह के समक्ष गवाही देते हैं।" सुल्तान ने थोडा सा मोम दोनो साक्षियो को देकर कहा कि, "तुम दोनों इस मोम से लाल बनाओ।" दोनों गवाहो ने विभिन्न प्रकार के लाल बनाये। तदुपरान्त उसने स्त्री को बुलाकर कहा कि, "तू भी लाल की आकृति बना कि वह कैसा था।" स्त्री ने कहा कि, "जिस वस्तु को मैंने अपनी आँखो से देखा ही नही है उसकी आकृति मैं किस प्रकार बना सकती हू ?" यद्यपि सुल्तान ने अत्यधिक आग्रह किया किन्तु उसने स्वीकार न किया। तदुपरान्त सुल्तान ने मिया भूवा पर क्रोध करते हुए चारो व्यक्तियो को बुलवाकर (७२) पूछा कि, "तुम लोगो ने लाल अपनी आखो से देखा था ?" भाइयो में से एक ने कहा कि, "क्यो नही देखा था, मैंने भेजा था।" दूसरे ने कहा, "मैं लाया था।" तत्पश्चात् उसने साक्षियो से पूछा कि, "तुमने देखा था ?" उन लोगो ने कहा कि, "हा देखा था। हम लोग गवाही देते हैं।" इसके पश्चात् उसने स्त्री से पूछा कि "तुमने देखा था ?" उसने फिर वही उत्तर दिया कि, "मैंने कदापि नही देखा था।" सुल्तान सिकन्दर ने मोम की समस्त आकृतियो को निकलवाकर मिया भूवा के समक्ष रख दिया और कहा कि, "तुम इसी प्रकार न्याय करते हो ? इस निरपराध स्त्री को अकारण चोर बना दिया। यदि चोर है तो इस व्यक्ति का भाई।" उसने साक्षियों से कहा कि, "यदि तुम सच सच बता दोगे तो तुम्हारी हत्या न कराई जायगी। यदि झूठ पर दृढ रहोगे तो तत्काल हत्या करा दी जायेगी। मुझे ठीक बात का पता चल गया है।" साक्षियो ने जो सच बात थी वह कह दी कि, "२, ३ तन्के हमको देकर जुआघर से लाया है।" भाई

के विषय में सुल्तान ने आदेश दिया कि उसे कठोर दड दिया जाय। उसने भी लाल उपस्थित कर दिया। वह स्त्री सुल्तान की योग्यता के कारण उस अपराध से मुक्त हो गई। सुल्तान ने साक्षियो से पूछा कि, "तुमने ऐसी धृष्टता क्यो की ? क्या तुमने यह बात नही सुनी है कि बादशाहों के समक्ष झूठ नही बोलना चाहिये ?" साक्षियो ने कहा कि, "हम जुआरी हैं, हम भूखे प्यासे थे। प्रथम बार वह हमको २, ३ तन्के देकर लाया। इस बार ४ तन्के देकर लाया है और यह वस्त्र अपने घर से पहिनाय हैं। इस दरिद्रता की अवस्था मे हमारे लिये यह धन ही बहुत अधिक था। बाजार में रोटी के लिये हम मारे-मारे फिरते हैं, इस बात के कहने में क्या भय है।" सुल्तान सिकन्दर ने कहा कि, "क्योकि मैंने वचन दे दिया है कि तुम्हारी हत्या न कराई जायेगी अत तुम्हारी हत्या न कराऊगा।" किन्तु साक्षियो ने अपने होठ तथा मुह भूमि पर इस प्रकार मले कि वे सूज गये। उन्होने यह सुल्तान के आदेशानुसार किया था। न्यायालय के सभी लोगो को सुल्तान की योग्यता पर बडा आश्चर्य हुआ।

कहा जाता है कि दो गुडो ने एक सर्राफ के पास एक गठरी धरोहर के रूप मे रख दी और कह दिया कि "जब तक हम एक साथ न आयें इस गठरी को हममें से किसी एक को न दिया जाय।" कुछ दिन (७३) उपरान्त उनमें से एक ने आकर गठरी मागी। सर्राफ ने कहा, "तुम्हारी गठरी धरोहर है। तुम दोनो साथ आकर गठरी ले जाओ।" उसने कहा, "मेरा दूसरा मित्र भी आया है और वहा खडा है। देखो।" उसने दूर से सकेत किया कि "दे दो।" सर्राफ ने गठरी लाकर अपने स्थान से उसे दिखाई कि "इसे मैं देता हू।" उसने उसी प्रकार दूर से सकेत किया कि 'दे दे।" सर्राफ ने उसे गठरी दे दी। दो दिन उपरान्त दूसरे आदमी ने आकर कहा कि, "मेरा मित्र भाग गया है। यदि वह आये तो उसे गठरी कदापि न देना।" सर्राफ ने कहा, "कल वह मुझसे गठरी ले गया।" उसने कहा, 'मै कल से कदापि घर से नही निकला हू। कोई अन्य ले गया होगा।" सर्राफ तथा उस व्यक्ति में बात यहा तक बढ गई कि सुल्तान को उसकी सूचना हो गई। सुल्तान सिकन्दर ने उस सर्राफ तथा गुडे को अपने पास बुलवाया और पूछा, "तुममें क्या शर्त हुई थी ?" जवान ने कहा, "हमने सर्राफ से यह शर्त की थी कि जब तक हम दोनो एक स्थान पर एकत्र न हों गठरी मत देना। इस समय सर्राफ कहता है कि 'तूने दूर से सकेत किया था कि दे दे। मैंने तेरे कहने पर गठरी दे दी।' यदि दास कल घर से निकला हो तो हत्या का पात्र है।" सर्राफ ने भी सच सच बात सुल्तान से कही। सुल्तान समझ गया कि सर्राफ सच कहता है और यह (जवान) झूठा है। सुल्तान ने कहा, "तेरी गठरी धरोहर के रूप में है। अपने मित्र को ले आ और दोनो मिलकर जैसी कि शर्त है, गठरी ले जाओ।" क्योंकि वादी धूर्त था, अत वह फिर न आया और सर्राफ पर जो दोषारोपण हुआ था, उससे उसे मुक्ति हो गई।

कविता में सुल्तान की रुचि

सुल्तान सिकन्दर बडा बुद्धिमान् तथा सदाचारी बादशाह था। वह फारसी कविता बडी ही उत्तम करता था और 'गुल रुख' अपना तखल्लुस करता था। शेख जमाल कम्बोह का, जो सुल्तान का सहचर था, यह छन्द सुल्तान को बहुत पसन्द था अत स्मृति के रूप में उसे लिखा जाता है·

छन्द

"हमारे शरीर पर तेरी गली की धूल का वस्त्र है,
वह भी दामन तक आमू से टुकडे टुकडे है।"

सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल की कुछ अन्य घटनायें

एक विद्यार्थी के प्रेम की कहानी

(७४) कहा जाता है कि एक विद्यार्थी कही जा रहा था। जब वह भौगाव मे एक कुए पर जल पीने के लिए पहुचा तो वहा उसे एक रूपवती दृष्टिगत हुई और वह उस पर आसक्त हो गया। उसने पीने के लिये जल मागा। अन्य स्त्रिया जब उसे जल पिलाने आती तो वह जल न पीता और यही कहता कि, "यदि वह जल पिलायेगी तो पीऊगा।" उसकी सहेलिया ने कहा कि, "यह यात्री है। इसकी इच्छा पर ध्यान देना चाहिये।" वह रूपवती डोल लेकर विद्यार्थी के पास पहुची। विद्यार्थी ने अपने दोनो हाथ अपने मुह के समक्ष लगा दिये। वह स्त्री जल डालती जाती थी और विद्यार्थी उसकी ओर देखता जाता था। यहा तक कि समस्त जल वह गया और उसके मुख में जल की एक बूंद भी न गई। उस रूपवती ने उसकी ओर से उपेक्षा करते हुए भूमि पर डोल फेंक दिया और अपना घडा भरने के विषय मे सोचने लगी। विद्यार्थी उसी प्रकार पानी-पानी चिल्लाता रहा। अन्य स्त्रिया जब जल लाती थी तो वह न पीता था और यही उत्तर देता था कि, "यदि वह पिलायेगी तो मै पीऊगा अन्यथा मर जाऊगा।" उस स्त्री की सहेलियो ने कहा कि, "यात्री प्यास के कारण मरा जा रहा है, वह तेरे हाथ से जल चाहता है, उस पर कृपा कर।" रूपवती ने कहा कि, "यदि मैं कहू कि वह कुए मे गिर पडे तो क्या वह कुए में गिर जायगा?" जैसे ही ये वाक्य विद्यार्थी के कान में पहुँचे वह तत्काल एक कु में कूद गया। सभी स्त्रियाँ चिल्लाने लगी और उस प्रेमिका से कहा कि, "तूने यह क्या किया? अपने सिर पर यह खून ले लिया।" वह रूपवती भी लज्जा के कारण कुए में कूद पडी। अत्यधिक शोर होने लगा। उस स्थान के शिकदार ने अत्यधिक आदमियो सहित उपस्थित होकर कुए में जाल डाला। दोनो एक दूसरे को आलिगन किये हुए मिले। स्त्री के सम्बन्धियो ने कहा कि, "हम उसे पृथक् करके जलायेंगे।" शिकदार ने कहा कि, "इस स्त्री ने मुसलमान के लिये प्राण त्यागे है और दोनो साथ निकले है, उसे जलाना नही चाहिये।" अन्त में यह निश्चय हुआ कि दोनो को एक दूसरे के समीप दफन कर दिया जाय। ऐसा ही किया गया। रात्रि मे उस स्त्री के सम्बन्धियो ने उस स्त्री की कब्र को खोदा। वे उसे निकाल कर जलाना चाहते थे किन्तु उन्होने देखा कि, "स्त्री क़ब्र में नही है। इस कब्र मे विद्यार्थी की कब्र में एक खिडकी लगी है।" जब उस खिडकी में से देखा गया तो पता चला कि एक मोमबत्ती जल रही है और दोनो पलग पर बैठे है। तत्काल कब्र को बन्द कर दिया गया।

एक दरवेश के प्रेम की कहानी

(७५) जौनपुर में एक व्यक्ति का विवाह हुआ। वह अपनी दुलहिन को जफराबाद अपने घर लिये जा रहा था। वे नगर के समीप एक वृक्ष के नीचे ठहरे और सभी लोग भोजन करने लगे। डोले को एक कोने में उतार दिया गया। उस दुलहिन ने डोले से परदा उठाया। उसकी दाई उसके समक्ष बैठी थी। सयोग से उस वृक्ष के नीचे एक फकीर बैठा था। उसकी दृष्टि उस स्त्री पर पडी और वह उस पर आसक्त हो गया। जब कभी वह स्त्री उस फ़कीर की ओर देखती उसे अपनी ओर दृष्टि डालते हुए पाती। उस दरवेश से उस स्त्री को भी प्रेम हो गया। उसने अपनी दाई से पूछा कि, "अब इस स्थान पर कब आना होगा?" उसने कहा, "चार दिन उपरान्त।" स्त्री ने कहा, "जब मैं यहा पहुचूं तो मुझे सूचना दे देना ताकि मैं फिर यहा कुछ देर बैठूं।" यह कह कर वह चल दी। चार दिन उपरान्त यह दरवेश दिन भर उस स्त्री के आने की प्रतीक्षा करता रहा। सूर्य अस्त के समय स्त्री के आगमन के विषय में निराश होकर खेद प्रकट करते हुए उसने कई बार, "आह आह" कहा और मृत्यु को प्राप्त हो गया। जब वह वृक्ष

के नीचे पहुची तो उसकी दाई ने उसे याद दिलाया। डोले को उतार दिया गया। जिस स्थान पर वह बैठी थी वही बैठकर दायें-बायें दृष्टि डालने लगी। जब उस दरवेश को उसने नही देखा तो उसने कहा कि "मैंने मनौती की थी कि जब मैं यहा वापस आऊँगी तो उस फकीर को कुछ दूँगी। वह दिखाई नही पडता, पता नही कहा चला गया।" दाई ने लोगों से उसके विषय में पूछा। लोगो ने उसे बताया कि, वह 'आह आह, वह नही आई', कहकर मृत्यु को प्राप्त हो गया।" दाई ने स्त्री को इस बात की सूचना दी। स्त्री पर एक दूसरी ही दशा छा गई। उसने अपनी दाई से कहा, "मैं उसके लिये कुछ लाई थी। अब मैं उसके दर्शन करके उसकी कब्र पर उसे रख देती हू।" दाई ने कब्र के चारो ओर चादर का पर्दा करा दिया। वह स्त्री चादर के भीतर प्रविष्ट हो गई और अपना सिर कब्र के ऊपर रख दिया। जब बहुत समय हो गया तो दाई ने उससे उठने के लिये कहने के विषय में सोचा। चादर से ऊपर झाक कर देखा, किन्तु कोई भी भीतर न मिला। दाई ने यह विचित्र घटना देखकर उसके साथियो को सूचना की। सभी लोगों (७६) को बडा आश्चर्य हुआ। दाई ने इस घटना का आद्योपान्त विवरण सब लोगो को दिया। सब सुहृद लोग यह समझ गये कि "यह प्रम का रहस्य है।" उन्होंने वह कब्र खोदी तो देखा कि "दुलहिन के सुनहरे काम के वस्त्र तथा फूल दरवेश पहिने हुए है और उस दरवेश के हाथ और पाव में मेहदी लगी हुई है तथा उस दुलहिन का पता नही।" लोग इस विचित्र घटना को देखकर बडे आश्चर्य मे पड गये।

जोधपुर का जादूगर

कहा जाता है कि एक बार जोधपुर से सुल्तान सिकन्दर के लिये अनार आये। सुल्तान सिकन्दर ने कहा कि, "फारस की विलायत के अनार मिठास और स्वाद में इससे कम ही होंगे। समस्त हिन्दुस्तान में इस प्रकार के अनार कही नही मिलते। विशेष रूप से जोधपुर में मिलने का क्या कारण है? अन्य पर्वतीय प्रदेशों में भी उचित भूमि अधिक सख्या में है।" वहा के राजा ने अपने वकील द्वारा सुल्तान की सेवा में निवेदन कराया कि, "मैंने अनुभवी वृद्धो से सुना है कि पिछले समय में एक बार एक जादूगर जोधपुर आया और उसने बडा विचित्र जादू दिखाया। उसने कहा कि, 'मैं एक दिन में एक उद्यान लगवा सकता हू जिसमे फल भी निकल आयेंगे और पक जायेंगे तथा लोग उन्हें खा सकेंगे।' राजा ने उसे प्रसन्न करके एक भूमि पर जोकि उद्यान के योग्य थी, हल चलवाया और उसे बराबर करवाया। जादूगर ने कहा कि, 'इस भूमि के चारो ओर पर्दे तथा कनातें लगा दी जाय।' तदनुसार पर्दे लगवा दिये गये। उसने राजा से कहा कि, 'आप सरापर्दे के बाहर बैठें।' जादूगर सरापर्दे के भीतर चला गया और राजा से पूछने लगा कि, 'किन किन मेवो के वृक्ष लगायें?' राजा जिस वृक्ष का नाम लेता, वह उसे लगा देता। यहा तक कि उद्यान पूरा हो गया और मेवे पक गये। उस समय बाग से सरापर्दा हटाया गया। लोगों ने देखा कि बडा ही हरा-भरा उद्यान है और मेवे लगे हैं तथा फूल खिले हैं। राजा ने सोचा कि यह जादू का बाग है। वह जब चाहेगा इसे नष्ट कर देगा। उसने अपने एक विश्वासपात्र को आदेश दिया कि वह जादूगर के पीछे से पहुचकर उसकी ग्रीवा पर इस प्रकार तलवार चलाये कि एक चोट से उसका सिर शरीर से पृथक् हो जाय ताकि यह उद्यान अपने स्थान पर रहे। उसके आदेश का पालन किया गया। वह उद्यान अभी तक शेष है और यह अनार उसी में से हैं।

(७७) "इस जादूगर का पुत्र जो अपने पिता के ही समान अपनी कला में दक्ष था, अपने पिता की हत्या का बदला लेने के लिये जोधपुर की ओर चल खडा हुआ। जब वह जोधपुर पहुचा तो राजा को सूचना दी गई कि एक अन्य जादूगर आया है जो कहता है कि, 'यदि राजा का आदेश हो तो मैं एक दिन में बिना फसल का खरबूजा उगा दूँ जो पक जाय और लोग खा सकें।' राजा ने कहा, 'अच्छा।' इस

जादूगर ने भी अपने पिता के समान भूमि ठीक कराई और कनातें लगवाई तथा खरबूज़े तैयार किये। राजा तथा उसके सम्बन्धियो को दरबार में बैठाकर सबके समक्ष एक-एक खरबूज़ा रख दिया और कहा कि 'जब मैं कहूं तो सब लोग एक साथ खरबूज़े पर चाकू चलायें। कोई भी पीछे न रहे।' जैसे ही उन लोगो ने खरबूज़े पर चाकू चलाया उनके सिर कट गये।"

एक अन्य जादूगर की कहानी

इसी बीच में सुल्तान के विश्वासपात्रो में से एक ने कहा कि, "जादू द्वारा अधिकाश इसी प्रकार की बातें सम्पन्न होती हैं। दास ने अपने एक मित्र से स्वय सुना है। वह भरतपुर में सामान क्रय करने के लिये गया था। वह कहता था कि, 'भरतपुर में एक जादूगर ने अपना जादू दिखाना प्रारम्भ कर दिया। वह जितना भी प्रयत्न करता उसके जादू को सफलता न मिलती। उसने लोगो को चारो ओर देखा। ऊपर उसे एक व्यक्ति दृष्टिगत हुआ। वह समझ गया कि उसी ने उसके जादू को बाध दिया है। इस जादूगर ने एक तरबूज़ के दो टकडे किये। जैसे ही तरबूज़ के दो टुकडे हुए उस व्यक्ति का सिर, जिसने जादू को रोकने का प्रयत्न किया था, भूमि पर गिर पडा। भरतपुर के हाकिम ने इस विषय में सुनकर सोचा कि यदि यह जादूगर शत्रुओ के बहकाने से इस प्रकार के कार्य हमारे प्रतिष्ठित लोगो से कराना प्रारम्भ कर देगा तो यह अच्छा न होगा। उसने कहा कि उसे बन्दी बनाकर उसकी हत्या कर दी जाय। जब लोगो ने उसे बन्दी बनाया तो जादूगर ने कहा कि, 'मैं मुसलमान हूँ और स्नान करना चाहता हूँ। मेरे स्नान हेतु मुझे थोडा-सा जल प्रदान कर दिया जाय।' उस स्थान के हाकिम ने स्नान के लिये जल भेजा और आदेश दिया कि इस जादूगर के पास से दूर न हटें और इसकी रक्षा की जाय। जो बरतन उसका सिर काटने के लिये लाया गया था उसी में वह जादूगर बैठ गया और उसी थाल में बैठे-बैठे डुबकी लगाकर अदृश्य हो गया।"

एक व्यक्ति खरगोश का शिकार करके उसे ज़िबह कर रहा था और हाथ में चादी की अँगूठी पहने हुये था। जब खरगोश का रक्त अँगूठी पर लगा तो वह सोने की हो गई और उस अँगूठी को सुल्तान को दिखाया गया।

(७८) शरफुलमुल्क नामक एक व्यक्ति जिसे सुल्तान पहचानता था जगल में गया हुआ था। मिसवाक (दातौन) के लिये आक की जड उसे दिखाई पडी। उसने उसे वहा से खोद कर उसकी दातौन की। दातौन के उपरान्त जैसे ही उसने दर्पण देखा उसकी समस्त दाढी, जो सफेद थी, काली हो गई। सुल्तान तथा समस्त लोगो को बडा आश्चर्य हुआ।

सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल में शम्सी हौज़ पर एक मुर्दे को दफन किया गया। उसकी कब्र को ढँकने के लिये भूमि से एक तख्ता हटाया गया। लोगो ने उस पत्थर के नीचे देखा कि एक व्यक्ति कमली पहिने हुए रेहल के ऊपर कुरान शरीफ रखे हुए है और उसका पाठ कर रहा है। जब तख्ता हटाया गया तो उसने ऊपर दृष्टि करके पूछा कि, "क्या कयामत आ गई?" बहुत से लोगो ने इस विचित्र घटना को देखा था। कहा जाता है कि जो लोग उधर कान लगाये हुए थे वे कुरान के पाठ की आवाज सुनते रहे।

सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल की अन्य कहानी

हुसेन खा शिरवानी कहा करता था कि, "मैं लखनौती की विलायत से आ रहा था। मार्ग में एक रूपवती शृगार किये हुए बैठी विलाप कर रही थी। मैंने पूछा, 'तेरे विलाप का क्या कारण है?' उसने

बताया कि, 'मैं अपने पति के घर से झगडा करके आई हूँ और मेरे पिता का घर मार्ग में अमुक ग्राम में है और मैं पैदल नही चल सकती। कोई ऐसा नही जो मुझे मेरे पिता के घर पहुचा दे?' मैने कहा, 'आ, मेरे पीछे सवार हो जा।' स्त्री मेरा हाथ पकड कर सवार हो गई। थोडी सी यात्रा के उपरान्त उसने मुझसे पूछा, 'आप पान खाते है?' मैने पूछा 'कहा है?' स्त्री ने कहा, 'मेरे पास है।' उसने पान का बीडा अपनी बगल से निकाल कर मुझको दे दिया। मैने शकित होकर उसे न खाया और बीडा अपनी बगल में छिपा लिया। बगल में रखते ही मैं अचेत हो गया। वह जादूगरनी घोड की लगाम अपने हाथ में लेकर जिस स्थान पर उसने समस्त डाकुओं को बैठा दिया था ले गई। उन लोगो ने मुझको घोडे से उतार कर मेरी कमर से निषग तथा तलवार खीच ली। कमर खुलते ही पान का बीडा कमर (७९) से भूमि पर गिर पडा और मैं सावधान हो गया। अपनी दुर्दशा देख कर दूसरी तलवार जो घोडे पर बँधी थी, मैंने निकाल ली और डाकुओं पर आक्रमण किया। वे भाग खडे हुए। मैंने घोडे पर सवार होकर उस स्त्री को घोडे की दुम से बाँध लिया। उस दिन उसने पूरी यात्रा इसी प्रकार की। क्योकि स्त्री रूपवती थी, अत मैंने उसे अपने अन्त पुर में रख लिया।"

सुल्तान सिकन्दर का राज्यकाल बडा ही विचित्र था। उस काल के लोग बडे भाग्यशाली थे जिन्हें सुल्तान सिकन्दर सरीखा बादशाह प्राप्त था।

सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु

सुल्तान के रुग्ण होने का कारण यह बताया जाता है कि एक दिन हाजी अब्दुल वहहाब ने सुल्तान सिकन्दर से कहा, "आप मुसलमानों के बादशाह होकर दाढी नही रखते। इस्लाम के सम्मान की दृष्टि से यह बात उचित नही, विशेष रूप से इस्लाम के बादशाह को यह न करना चाहिये।" सुल्तान सिकन्दर ने कहा, "मेरी इच्छा है कि दाढी रक्खूं। यदि ईश्वर ने चाहा तो रक्खूँगा।" हाजी अब्दुल वहहाब ने कहा "किसी अच्छे कार्य के लिये इस्तेखारे[1] की आवश्यकता नही।" सुल्तान न कहा, "मेरी दाढी बडी छोटी है। यदि मैं दाढी रक्खूँगा तो बुरी लगेगी। लोग मुझ पर हसेंगे। उन लोगो को लाभ न होगा। मैं चाहता हूँ कि मुसलमान पापी न बनें।" हाजी अब्दुल वहहाब ने कहा, "मैं आपके मुख पर हाथ फेरता हू। यदि ईश्वर (८०) ने चाहा तो अच्छी दाढी निकल आयेगी और सभी दाढिया इस दाढी को अभिवादन करने आयेंगी। किसी को परिहास का साहस न होगा।" सुल्तान सिकन्दर ने सिर झुका लिया और कोई उत्तर न दिया। हाजी ने कहा, "बादशाहे आलम मैं बात कहता हू, आप उत्तर क्यो नही देते?" सुल्तान सिकन्दर ने कहा, "जब मेरे पीर[2] कहेंगे तो रख लूगा।" हाजी ने पूछा, "आप का पीर कौन है?" सुल्तान ने कहा, "जलेसर के एक गाव सहयू के जगल में रहते है और कभी-कभी मुझसे भेंट करने के लियें आते हैं।" हाजी अब्दुल वहहाब ने पूछा, "क्या वे दाढी रखते है?" सुल्तान ने उत्तर दिया "मेरे पीर दाढी नही रखते।" हाजी ने कहा, "जब मैं उनसे भेंट करूगा तो उस समय उनसे भी प्रार्थना करूगा। आप इस कार्य में जल्दी करें।" सुल्तान सिकन्दर ने कोई उत्तर न दिया। हाजी की ओर से मुख फेर कर मौन हो गया। हाजी अब्दुल वहहाब दरबार से "अस्सलामो अलैक" कह कर बाहर चले गये। सुल्तान सिकन्दर ने हाजी के चले जाने के उपरान्त कहा, "शेख समझते है कि यदि लोग उनकी सेवा में आते है और उनके चरणो का

१ दैवी अनुकम्पा हेतु ईश्वर से प्रार्थना। किसी कार्य को प्रारम्भ करने के पूर्व उसकी सफलता के विषय में ईश्वर की इच्छा ज्ञात करने की विधि।
२ धर्म गुरु।

चुम्बन करते हैं तो यह उनकी योग्यता के कारण है। वह इतनी बात नही समझते कि यदि मैं एक दास को अपना विश्वासपात्र बना लूँ तो समस्त अमीर उसका डोला उठाने लगेंगे।" सैयिद अहमद का पुत्र शेख अब्दुल जलील उस समय जब कि यह वार्ता हो रही थी उपस्थित था। उसने उपर्युक्त वाक्य हाजी अब्दुल वहहाब को पहुचा कर कहा कि, "आप के पीठ पीछे बादशाह इस प्रकार कह रहा था।" हाजी अब्दुल वहहाब ने शेख अब्दुल जलील के कंधो पर हाथ रख कर कहा, "आप मुहम्मद साहब की सतान से हैं। क्योकि उसने आपको एक दास से सम्बन्धित किया है अत उसकी बडी ग्रीवा पकडी जायगी। आप सतुष्ट रहें।" हाजी आगरा से सुल्तान की आज्ञा बिना देहली चले गय। हाजी के चले जाने के थोडे दिन उपरान्त उसकी ग्रीवा में रोग उत्पन्न हो गया और नित्य प्रति बढने लगा। सुल्तान ने अपनी दशा को बिगडते देखकर शेख लादन नामक एक आलिम से जो उसका इमाम था पूछा, "नमाज रोजा छोडने तथा दाढी मुडवाने, मदिरापान करने तथा नाक और कान कटवाने का जो कफ्फ़ारा[1] होता हो उसे लिखकर भेज दिया जाय।" शेख लादन ने विस्तार से उत्तर लिख कर सुल्तान के पास भेज दिया। सुल्तान सिकन्दर ने वाकेया नवीसों[2] को आदेश दिया, "मेरे राज्यकाल में इस प्रकार के जितने अपराध हुये हों उन्हें शेख लादन को बता कर जो कुछ कफ्फ़ारे का धन वे बतायें उसकी सूचना दो।" शेख लादन (८१) ने निश्चित करके सुल्तान से उस विषय में निवेदन किया। सुल्तान ने खज़ानची को आदेश दिया कि, "जो धन बैतुल माल[3] से पृथक् है उस धन में से आलिमो को दे दिया जाय। समस्त आलिमो ने आश्चर्य से खज़ानादार[4] से पूछा, "बैतुल माल के अतिरिक्त खज़ाना किस प्रकार प्राप्त हुआ?" खज़ानची ने कहा, "राज्य के विभिन्न स्थानों के बादशाह सुल्तान के पास उपहार भेजते थे। कुछ अमीर जो अपने प्रार्थना-पत्रों के साथ उपहार भेजते थे वह हर वर्ष एकत्र होता रहता था। उसके विषय में जब सुल्तान से कहा जाता तो वह आदेश देता कि, 'उसे पृथक् रक्खो। जहाँ मैं आदेश दूँ वहा व्यय करना।' आज उस खजाने के व्यय का आदेश हुआ है।" समस्त आलिमों ने उसकी दूरदर्शिता की प्रशसा की।

सुल्तान सिकन्दर दिन पर दिन रुग्ण होता गया किन्तु वह उस अवस्था में भी राज्य के कार्य सम्पन्न करता रहता था। शनै-शनै यह दशा हो गई कि एक ग्रास अथवा जल भी उसके कठ में न जाता था और साम का मार्ग रुक गया। इसी दशा में रविवार ७ जीकाद ९२३ हि० (२१ नवम्बर १५१७ ई०) को उसकी मृत्यु हो गई।

उसने २८ वर्ष तथा ५ मास तक राज्य किया।

सुल्तान सिकन्दर के कुछ अमीर

सुल्तान सिकन्दर के अधिकाश अमीर ऐसे थे जिनके विषय में पृथक् लिखा जाना चाहिए।

सैयिद खा पुत्र मुबारक खा

सैयिद खा यूसुफ खेल लोदी बहुत बडा दानी था। जब कभी भी उसके समक्ष दस्तरख्वान बिछाया जाता तो वह नाना प्रकार के भोजनों से भरा हुआ बहुत बडा थाल तैयार कराता और उस पर अत्यधिक रोटिया, हर प्रकार के अचार और उसके ऊपर पान का बीडा और उस बीडे पर एक सोने की मुहर रखवा

१ प्रायश्चित्त।
२ राज्य की समस्त दैनिक घटनाओं को लिखने वाले।
३ इस्लामी राज्य का सार्वजनिक कोष।
४ कोषाध्यक्ष।

कर सर्वप्रथम फकीरो को भिजवाता, तदुपरान्त स्वय भोजन प्रारम्भ करता। जिस किसी से भी वार्तालाप करता तो यदि वह सेवक होता तो वह उसे अमीर कर देता और यदि वह कोई अपरिचित होता तो (८२) उसे वह एक लाख तन्के इनाम प्रदान करता।

एक दिन खान ने निवेदन किया कि शेख मुहम्मद फर्मुली का वकील कालचक्र की दुर्घटनाओ से पीडित होकर अपनी पुत्री का विवाह नही कर सकता। सैयिद खा ने उसे अपने समक्ष बुलवाया और गुलाम बच्चे से जो उसकी सेवा में रहता था कहा कि, "दोनो मुट्ठियों में अशर्फिया भर कर उसके दामन में डाल दे।" उसे दीवान के अधिकारियो के पास उसका हिसाब करने के लिये उपस्थित किया गया। जब हिसाब लगाया गया तो पता चला कि ७०,००० तन्के हुये। यह बात सैयिद खा से कही गई। सैयिद ने उसी गुलाम बच्चे को आदेश दिया कि, 'अन्य अशर्फिया ले जाकर दे दो ताकि एक लाख तन्के पूरे हो जाय।"

एक दिन शिकार में एक व्यक्ति ग्रामीणों के समान खान के समक्ष दही लाया। सैयिद खा ने आदेश दिया कि उस बरतन को जिसमें वह दही लाया है अशर्फियो से भर कर उसे दे दिया जाय।

एक दिन चन्देरी निवासी एक स्त्री थाल में नीम की पत्तिया जोकि बडी ही हरी-भरी थी सैयिद खा के पास लाई। उसने उस स्त्री से पूछा कि, "नीम की पत्ती लाने का क्या कारण है ?" उसने कहा, "मैंने इसका साग इस प्रकार तैयार किया है कि इसकी दशा मे कोई परिवर्तन नही हुआ है और साग का स्वाद विद्यमान है।" सैयिद खा ने अपने एक मुसाहिब को उसे चखने के लिये कहा। उसने देखा कि साग बडा स्वादिष्ट बना है और उसमें नीम का कोई प्रभाव नही। उसके थाल को भी सोने की मुहर से भरवा दिया गया।

एक दिन सैयिद खा के समक्ष घोडे प्रस्तुत किये जा रहे थे। सद्र खा शुरखेनी, जोकि बडा ही उत्कृष्ट अमीर तथा मुसाहिब था, बैठा था। सर्वप्रथम जो घोडा खान के सम्मुख प्रस्तुत किया गया उसके विषय में उसने सद्र खा से पूछा कि, "यह कैसा घोडा है।" सद्र खा ने घोडे की अत्यधिक प्रशसा की। सैयिद खा ने कहा, "यह घोडा सद्र खा के आदमियो को दे दिया जाय।" जब दूसरा घोडा प्रस्तुत किया गया तो सद्र खा ने उसकी भी प्रशसा की। सैयिद खा ने कहा 'यह घोडा भी सद्र खा के आदमियो को दे दिया जाय।" इसी प्रकार ८ घोडे सद्र खा को दे दिये गये। जब नवा घोडा आया तो उसने सद्र खा से पुन पूछा कि, "यह कैसा है ?" सद्र खा मौन हो गया। सैयिद खा ने पूछा, "सद्र खा, क्यो मौन हो गया ?" सद्र खा ने उत्तर दिया, "दान सीमा से अधिक हो गया।" सैयिद खा ने (८३) मुस्करा कर तवेले[1] के मुशरिफ[2] से पूछा, "आज कितने घोडे निरीक्षण हेतु आये हैं ?" उसने उत्तर दिया, "१२० घोडे उपस्थित हैं।" सैयिद खा ने कहा, 'सद्र खा एक-एक घोडा लेने से परेशान हो गया है। आज समस्त घोडे जो निरीक्षण हेतु आये हैं सद्र खा को प्रदान करता हू।" उसने इस प्रकार एक गोष्ठी में १२० घोडे प्रदान कर दिये।

एक दिन सैयिद खा के समक्ष तीन रत्न प्रस्तुत किये गये। एक का मूल्य ७ लाख, दूसरे का ५ लाख और तीसरे का ३ लाख था। उसने अपने एक मुसाहिब से पूछा, "सच-सच बता इन तीनो रत्नो में से किस रत्न के विषय में तू ने सोचा है कि तुझे प्रदान कर दिया जायगा ?" उसने कहा, "सत्य तो यह है कि मेरे हृदय में इस प्रकार की कोई बात नही।" सैयिद खा ने कहा, "अब सोचो।" उसने उत्तर दिया,

१ अश्वशाला।
२ तवेले का हिसाब किताब रखने वाला।

"जिस रत्न का मूल्य तीन लाख है।" सैयिद खा ने मुस्करा कर कहा, "अधिक मूल्य वाले रत्न को छोड कर कम मूल्य के रत्न के विषय में कौन सोचता है? कम मूल्य वाले के विषय में तूने सोचा। अधिक मूल्य वाले के विषय में मैं कहता हू। तीसरा अकेला रहा जाता है। तुझे तीनों प्रदान करता हू।"

एक बार सुल्तान सिकन्दर ने सैयिद खा को एक सेवा हेतु नियुक्त किया। वह निरन्तर यात्रा करता हुआ चन्देरी के समीप पहुचा। खजाना ढोने वाले पशुओ की पीठ घायल हो गई थी। राज्य के पदाधिकारियों ने निवेदन किया कि, "यदि आदेश हो तो ताब के पैसे सेना वालो को बाट दिये जाय और उनकी जागीर से मुजरा करके सरकार में पहुचा दिया जाय।" उसने कहा, "अच्छा है, दे दो।" सेना वालों को ७ लाख तन्के बाट दिये गय और उनके दस्तावेज़ खान को दिखाय गये। सैयिद खा ने कहा "क्या मैं सर्राफ़ हू कि ऋण दूँ और लूँ?" पत्रो को अपने हाथ से फाड डाला और कहा, 'यह थोडा सा धन मेरी ओर से सेना को इनाम के रूप में प्रदान किया जाता है।"

लाद खा खाने आज़म

सुल्तान सिकन्दर के अन्य अमीरों में लाद खा खाने आज़म था। वह अहमद खा का पुत्र तथा बडा ही साहसी युवक था। जिस किसी को दान करता सोने-चादी की भरी हुई थैलिया प्रदान कर दिया करता था। तोल्चा[1] तथा दिरम[2] का कभी नाम न लेता था और आध तथा डेढ का उसे ज्ञान भी न था। दो से अधिक की गिनती उसे न आती थी। उसने स्वय यह अधिनियम बना लिया था कि जिस स्थान पर (८४) वह बैठा होता तो जहा कहीं से भी जो पेशकश प्राप्त होती उसे वह उसी कारखाने के पदाधिकारियो को प्रदान कर देता था। कहा जाता है कि शुक्रवार के दिन उसे सिलाह खाने[3] का निरीक्षण कराया जा रहा था। उसी समय राजा भट्टा द्वारा प्रेषित एक हाथी तथा कपडे की कुछ गठरिया प्राप्त हुईं। उसने समस्त पेशकश[4] शेख मुहम्मद सिलाहदार को प्रदान कर दी। यदि वह जल पीने के समय प्राप्त होता तो आबदार[5] को मिल जाता। शीत ऋतु में वह रोज़ाना दो क़बायें[6] पहनता था और दूसरे दिन उसे दान कर देता था। शीत ऋतु में वह सेना को एक वस्त्र न देता था। प्रत्येक व्यक्ति को चार-पाच दिया करता था। जिस किसी को भी गेंद खेलते समय अथवा यात्रा में सवारी अथवा सामान लादने के लिये घोडा प्रदान करता तो वह उसे पुन अपनी अश्वशाला में न बाधता था, उसी व्यक्ति को प्रदान कर देता था और घोडे का दाना-चारा उसकी सरकार ही से मिलता था। यदि सयोग से कोई उस घोडे को बच डालता तो घोडे के चारे-दाने में कोई परिवर्तन न होता था और बिना घोडे के भी उसे वह प्राप्त होता रहता था। यदि यात्री उसके दरबार में उपस्थित होते तो वह प्रत्यक व्यक्ति को एक तन्का प्रदान किया करता था और एक भेंस[7] उसके भोजनार्थ निश्चित होती थी। जब तक वह खान के दरबार में रहता

---

१ तोला।
२ लगभग ३१/२ माशे के वज़न का सिक्का।
३ शस्त्रागार।
४ उपहार।
५ जल तथा पीने की अन्य वस्तुओं का प्रबन्ध करने वाला।
६ एक लम्बा ढीला पहनावा जो समस्त वस्त्रों के ऊपर पहना जाता था, एक प्रकार का गाउन।
७ सम्भवत मेश अथवा मेढ, गावमेश नहीं।

उपर्युक्त खाद्य सामग्री उसे प्राप्त होती रहती। प्रस्थान करते समय वह २०० तन्के देकर उसे विदा किया करता था। सुल्तान सिकन्दर के अधिकाश अमीरो का सासारिक कार्यों पर व्यय बडा अधिक था।

दिलावर खा

मिया भूवा के पुत्र दिलावार खा के अन्त पुर में ५०० तन्के के फूल नित्य-प्रति क्रय किये जाते थे। सुल्तान सिकन्दर के अमीरो के व्यय का हाल कहा तक लिखा जाय। केवल इन्ही अमीरो का उल्लेख किया गया।

सुल्तान इबराहीम बिन सुल्तान सिकन्दर लोदी

(८५) इतिहासकारो ने सुल्तान इबराहीम के सिंहासनारूढ होने का वृत्तात इस प्रकार दिया है कि जब सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु हो गई तो उसके दो योग्य पुत्र जो एक ही माता से थे, उस समय आगरा मे उपस्थित थे एक सुल्तान इबराहीम दूसरा सुल्तान जलालुद्दीन। समस्त अमीरो तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियो की सहमति से राज्य का महत्वपूर्ण कार्य दोनो भाइयों में इस प्रकार विभाजित हो गया कि क्योंकि सुल्तान इबराहीम अपनी बुद्धिमत्ता, वीरता तथा सदाचारिता के लिए प्रसिद्ध है और सुल्तान सिकन्दर का ज्येष्ठ पुत्र है अत उसे देहली के राजसिंहासन पर आरूढ किया जाय और जौनपुर की सीमा तक के प्रदेश उसके अधीन रहें। जौनपुर के राजसिंहासन पर शाहज़ादा जलाल खा जिसने सुल्तान जलालुद्दीन की उपाधि प्राप्त की सिंहासनारूढ हो और उस ओर के प्रदेश पर राज्य करे। इस निर्णय के अनुसार सुल्तान जलालुद्दीन जौनपुर के परगनो के अमीरा तथा जागीरदारो सहित उस ओर रवाना हुआ और उन प्रदेशा में स्वतत्र रूप से बादशाह हो गया। सुल्तान इबराहीम देहली के राजसिंहासन पर आरूढ हुआ।

कुछ समय उपरान्त फतह खा बिन आज़म हुमायूँ शिरवानी तथा खाने जहा लोहानी, रापरी के हाकिम, ने वज़ीरो तथा वकीलो की सुल्तान इबराहीम के सम्मुख कटु आलोचना करते हुये कहा कि, "राज्य के कार्य में किसी को साझीदार बनाना बहुत बडी भूल है और इस बात का स्वीकार करना बुद्धिमानी का कार्य न था कारण कि राज्य साझे में नही चल सकता और एक मियान में दो तलवारें नही रह सकती।"

सुल्तान जलालुद्दीन को देहली बुलवाने का प्रयत्न

सुल्तान इबराहीम ने ये वाक्य सुनकर अपने भाई से जो प्रतिज्ञा की थी उसे भुला दिया। समस्त अमीरो ने यह निश्चय किया कि, 'क्योकि शाहजादा जलाल खा को अभी अधिक दृढता नही प्राप्त हुई है अत उसे देहली बुलवा लिया जाय।" शाहज़ादे को बुलवाने के लिये हैबत खा करगदन अन्दाज़[1] द्वारा कृपा तथा मित्रता के फरमान भेज कर लिखा गया कि एक आवश्यक बात में उससे परामर्श होना है। (८६) वह जरीदा[2] शीघ्रातिशीघ्र वायु के समान पहुच जाय।

१ गैंडे की हत्या करने वाला।

२ जरीदा का अर्थ 'अकेला", "शीघ्रातिशीघ्र" अथवा "कुछ थोडे से सवार जोकि बड़े दल का भाग हों" है। इस शब्द का प्रयोग जियाउद्दीन बरनी ने उस समय किया है जब सुल्तान गयासुद्दीन अफ़गानपुर पहुँचा था। (बरनी 'तारीखे फ़ीरोज शाही', पृ० ४५३, 'तुग़लुक कालीन भारत', भाग २, पृ० २५)।

जलालुद्दीन के विरुद्ध अमीरों को भडकाना

हैबत खा ने शाहजादे को फ़रमान पहुचाकर नाना प्रकार से धूर्तता एव चाटुकारी की किन्तु शाहजादा उनकी धूर्तता एव विश्वासघात से इतना अधिक परिचित था कि वह उसे उचित उत्तर देता रहा और उसे युक्ति द्वारा भगाने का प्रयत्न करता रहा। हैबत खा यह बात समझ गया और उसने सुल्तान इबराहीम के पास उपस्थित होकर यह बात कही। सुल्तान ने अपने कुछ विश्वासपात्रो को शाहजादे के पास भेजा किन्तु उनका जादू भी उस पर न चला और शाहजादा लौटने पर तैयार न हुआ। तदुपरान्त सुल्तान इबराहीम ने अपने काल के बुद्धिमानो के परामर्श से उस क्षेत्र के अमीरो तथा हाकिमो का फरमान लिखे और प्रत्येक को उसकी श्रेणी के अनुसार आशायें दिलाई ताकि वे शाहजादा जलाल खा की आज्ञाकारिता तथा सहायता न करें और उसकी सेवा में अभिवादन हेतु उपस्थित न हो। उसने कुछ बडे-बडे अमीरो को जिनके पास ३०, ४० हजार सेवक थे अपने विश्वासपात्र विशेष खिलअत, घोडों तथा अन्य कृपाओ सहित भेजे।

जब यह फरमान कुछ लोगो के पास पहुचे तो सभी ने शाहजादे की आज्ञाकारिता त्याग कर उसका विरोध प्रारम्भ कर दिया। उस समय शाहजादे ने एक गर्जसिहासन, जिसमें मोती तथा जवाहरात जडे हुये थे, दीवान खाने में लगवाया। शुक्रवार १५ जिलहिज्जा ९२३ हि० (२९ दिसम्बर १५१७ ई०) को वह उस सिहासन पर आरूढ हुआ और एक भव्य दरबार किया और दरबार के सेवकों, राज्य के उच्च पदाधिकारियो तथा समस्त सेना को प्रत्येक की श्रेणी के अनुसार खिलअत, तलवार, पेटी, कटार, घोडा, हाथी, पद तथा उपाधि प्रदान की।

सुल्तान जलालुद्दीन का आज़म हुमायूँ को अपनी ओर मिलाना

सुल्तान जलालुद्दीन ने विशेष तथा साधारण व्यक्तियो को सतुष्ट तथा प्रसन्न कर लिया। फकीरो तथा दरिद्रियो पर दान-पुण्य के द्वार खोल दिये तथा मआश[1], वज़ीफे और ऐमा[2] में वृद्धि कर दी। एकान्तवासियो तथा सतुष्ट व्यक्तियो को फ़ूतूहात[3] तथा पेशकश भेजी। शासन सम्बन्धी तथा बादशाही (८७) के कार्यों को ताज़ी रौनक प्रदान की और सुल्तान इबराहीम का खुल्लमखुल्ला विरोध करने लगा। चापलूसी तथा बनावट का अन्त कर दिया। अपने नाम का खुत्बा तथा सिक्का चालू करा दिया[4] और अपनी उपाधि सुल्तान जलालुद्दीन धारण कर ली। सेना की रक्षा करना, तथा परिजनो एव तोपखाने की व्यवस्था करना प्रारम्भ कर दिया। जब उसकी शक्ति बहुत बढ गई तो उसने आज़म हुमायूँ शिरवानी के पास, जो उन दिनो एक बहुत बडी सेना सहित कालिजर के किले को घेरे हुये था, अपने विश्वासपात्र भेजे और कहलाया, 'आप मेरे पिता तथा चाचा के स्थान पर है। आप स्वय जानते है कि मैंने कोई अपराध नहीं किया है और सुल्तान इबराहीम ने विश्वासघात किया है। उसने मेरे पिता के तर्के में से थोडा सा राज्य मुझे प्रदान किया था किन्तु अब उसकी ओर से भी उपेक्षा कर रहा है, तथा मित्रता के बन्धन तोड कर दया एव कृपा को त्याग दिया है। आप लोगो को सच का साथ न छोडना चाहिये और पीडित की सहायता करनी चाहिये।"

१ धार्मिक व्यक्तियों एवं अन्य सहायता के पात्रों को भूमि।
२ इनाम में अथवा किसी से प्रसन्न होकर बादशाहों द्वारा दी जाने वाली भूमि।
३ वह उपहार जो धार्मिक व्यक्तियों को बिना माँगे भेजा जाता है।
४ स्वतन्त्र रूप से बादशाह हो गया।

यद्यपि वास्तव में आजम हुमायूं सुल्तान इबराहीम से खिन्न था अत सुल्तान जलालुद्दीन की निर्बलता, दरिद्रता एव नम्रता का उस पर बडा प्रभाव पडा और वह किले को छोड कर सुल्तान जलालुद्दीन की सेवा में पहुच गया। प्रतिज्ञा तथा वचनवद्ध होकर उन्होंने निश्चय किया कि सर्वप्रथम जौनपुर की विलायत पर अधिकार जमा लिया जाय, तदुपरान्त कोई अन्य उपाय करना चाहिये। यह निश्चय करके उन्होंने निरन्तर प्रस्थान करते हुये अवध के हाकिम पर चढाई की। वह मुकाबला न कर सका और लखनऊ पहुच गया। वहा से उसने समस्त वृत्तात सुल्तान इबराहीम को लिखा। सुल्तान इबराहीम ने सोचा कि चुनी हुई सेना लेकर स्वय उस विद्रोह को शान्त करना चाहिये। उस समय उसने अपने हितैषियो से परामर्श करके अपने चारा भाइयो के विषय में, जो बन्दीगृह में थे, आदेश दिया कि हासी के किले में ले जाकर उन्हें बन्द कर दिया जाय। प्रत्येक की सेवा हेतु दो-दो पत्निया तथा समस्त आवश्यक सामान निश्चित किया जाय। तदुपरान्त वह स्वय बृहस्पतिवार २४ जिलहिज्जा को जौनपुर की ओर रवाना हुआ और निरन्तर यात्रा करता हुआ भोगाव कस्बे में पहुच गया। वहा से उसने कन्नौज की ओर प्रस्थान किया।

आजम हुमायूं का सुल्तान इबराहीम से मिल जाना

मार्ग में उसे समाचार प्राप्त हुये कि आजम हुमायूं अपने योग्य पुत्र फतह खा सहित सुल्तान जलालुद्दीन से पृथक् होकर शाही सेवा में आ रहा है। सुल्तान इबराहीम इस सुखद समाचार से बडा प्रसन्न हुआ और अत्यधिक प्रतिष्ठित अमीरो को आजम हुमायूं के स्वागतार्थ भेजा। जब आजम हुमायूं (८८)सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ तो उसने उसे अत्यधिक शाही कृपा द्वारा सम्मानित किया। उसी बीच में उसने कुछ उत्कृष्ट अमीरो को अपार सेना तथा चुने हुय युद्ध के हाथिया सहित सुल्तान जलालुद्दीन के विरुद्ध नियुक्त किया।

जलालुद्दीन का आगरा की ओर प्रस्थान

सुल्तान जलालुद्दीन अपने कुछ सम्बन्धियो को काल्पी के किले में छोडकर शाही सेना के काल्पी पहुचने के पूर्व ३०,००० अश्वारोहियो तथा कुछ हाथियो सहित राजधानी आगरा की ओर रवाना हुआ। सुल्तान इबराहीम की सेना ने काल्पी को घेर लिया और अल्प समय के उपरान्त उसे अपने अधिकार में कर लिया। बहुत से लोग बन्दी बना लिये गये। समस्त नगर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया और सुल्तान इबराहीम को अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई। सुल्तान इबराहीम ने अपने भाई के आगरा पर चढाई के समाचार पाकर आगरा की रक्षा मे वृद्धि हेतु मलिक आदम को एक सुसज्जित सेना देकर आगरा की ओर भेजा। मलिक आदम शीघ्रातिशीघ्र वायु के समान आगरा पहुच गया। सुल्तान जलालुद्दीन काल्पी के प्रतिकार हेतु आगरा को नष्ट-भ्रष्ट कर देना चाहता था। मलिक आदम युक्ति द्वारा तथा नम्रता पूर्वक उसे रोकता रहा। कुछ समय उपरान्त एक बहुत बडी सेना सुल्तान इबराहीम के पास से मलिक आदम की सहायतार्थ पहुच गई। मलिक आदम ने सुल्तान जलालुद्दीन को सदेश भेजा कि "यदि आप राज्य का लोभ त्याग कर चत्र आफ्तावगीर, नौबत, नक्कारा तथा अन्य राजसी चिह्न त्याग दें और अमीरा के समान व्यवहार करें तो आपके अपराध सुल्तान इबराहीम द्वारा क्षमा करवाने के उपरान्त काल्पी की सरकार पूर्व की भाति आपको जागीर में दिलवाई जा सकती है।" सुल्तान जलालुद्दीन ने इस शर्त पर शाही चिह्न पृथक कर दिये। मलिक आदम ने चत्र तथा समस्त

शाही चिह्न सुल्तान इबराहीम की सेवा मे उपस्थित किये। सुल्तान ने उसकी प्रार्थना स्वीकार न की।[1]

सुल्तान इबराहीम का राज्य को सुव्यवस्थित करना

सुल्तान जलालुद्दीन ने इस दुर्घटना के समाचार पाकर ग्वालियर के राजा के पास शरण ली। सुल्तान इबराहीम आगरा में ठहरा। राज्य के कार्य जिनमें सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु के कारण विघ्न पड गया था, दृढ हो गये और अमीर लोगो ने विद्रोह के सम्बन्ध में तोबा करके निष्ठावान् बनना स्वीकार कर लिया। सुल्तान इबराहीम जब दृढतापूर्वक अपने पिता के स्थान पर आरूढ हो गया तो उसने करीम दाद तोग को अन्य अमीरों सहित देहली की रक्षा हेतु नियुक्त किया।

ग्वालियर पर आक्रमण

इसी बीच में सुल्तान ने सोचा कि "सुल्तान सिकन्दर सर्वदा ग्वालियर की विजय का सकल्प किया करता था और वहा से सेना असफल लौट आती थी अत यदि भाग्य मेरा साथ दे तो मै बादशाहों के सकल्प के अनुसार[2] उस किले तथा समीप के स्थानो को विजय करू।" वास्तव में वह सुल्तान जलालुद्दीन को बन्दी बनाना चाहता था। तदनुसार उसने आगरा के हाकिम आजम हुमायूँ शिरवानी को ३०,००० अश्वारोहियो, ३०० आजमाये हुये युद्ध के हाथियो सहित ग्वालियर की विजय हेतु भेजा। सुल्तान इबराहीम की सेना के ग्वालियर पहुचने के पूर्व, सुल्तान जलालुद्दीन वहा से निकल कर मालवा की ओर सुल्तान महमूद के पास भाग गया। वह कुछ समय वहा निवास करता रहा किन्तु उसका (सुल्तान महमूद का) व्यवहार सौजन्यपूर्ण न देखकर गढाकटगा[3] की विलायत की ओर चला गया। वहा वह गँवारो द्वारा बन्दी बना लिया गया। उन्होने उसे सुल्तान इबराहीम के पास भेज दिया। सुल्तान ने अपने भाई को हासी भेज दिया। मार्ग में उसकी हत्या कर दी गई।

सुल्तान इबराहीम ने अपने भाई की हत्या कराने के उपरान्त निश्चिन्त होकर ग्वालियर की विजय हेतु प्रस्थान किया। आजम हुमायूँ की सहायतार्थ १४ प्रतिष्ठित अमीर बहुत बडी सेना तथा कुछ अन्य हाथियो सहित भेजे गये। सयोग से उन दिनो राजा मान, ग्वालियर का राजा, जो वर्षों से देहली के सुल्तानो से टक्कर ले रहा था नरक को पहुच चुका था। उसका पुत्र विकरमाजीत (विक्रमादित्य) उसका उत्तराधिकारी बना था। उन दिनों सुल्तान इबराहीम के अमीर, किले के नीचे बादशाही दीवानखाना लगवाकर, समस्त अमीरो को वहा एकत्र करके जटिल समस्याओ का निर्णय करते थे और किले का घेरा डालने का प्रयत्न करते थे। किले के नीचे, जहा राजा मान ने एक भव्य भवन का निर्माण कराया (९०) था, कुछ समय उपरान्त सुल्तान इबराहीम की सेना ने सुरगें लगवाई और उनमें बारूद भरकर आग लगा दी। किले की दीवार में दरारें पड गईं और उसने उस भवन को विजय कर लिया। वहा उन्हें एक पीतल का चौपाया[4] मिला जिसकी हिन्दू लोग वर्षों से पूजा करते थे। सुल्तान इबराहीम के आदेशानुसार उसे वहा से हटाकर देहली भेज दिया गया और बगदाद द्वार पर लगा दिया गया। 'अकबरशाही' का लेखक लिखता है कि "वह गाय मैंने अकबर बादशाह के राज्यकाल में देहली द्वार पर देखी थी।"

१ इसमें यह वाक्य स्पष्ट नहीं है।
२ अज़्मे मुलूकाना।
३ यह शब्द अन्य स्थानों पर विभिन्न प्रकार से मिलता है : गढकतंगा गढा कटंगा।
४ सम्भवत गाय।

मियाँ भूवा की मृत्यु

जब सुल्तान इब्राहीम के राज्य का कोई विरोधी तथा प्रतिस्पर्धी न रहा तो वह अपने पिता के अमीरों के प्रति शकित हो गया और उन्हें कठोर दंड देने लगा। समस्त अमीर सुल्तान इब्राहीम से घृणा करने लगे और भयभीत रहने लगे। सुल्तान सिकन्दर के अधिकाश बडे बडे खानो के प्रति उसे विश्वास न रहा और उसन बडे बडे अमीरो को बन्दी बना लिया। वह मिया भूवा से, जो सुल्तान सिकन्दर का सर्वश्रेष्ठ अमीर था, खिन्न हो गया। मिया भूवा अपने पिछले विश्वास के आधार पर सेवा की ओर से उपेक्षा करने लगा। कम सेवा करने के कारण सुल्तान की शका में अधिक वृद्धि होने लगी, यहा तक कि उसने मिया भूवा को बन्दी बना लिया और पाव में बेडी डालकर मलिक आदम को सौंप दिया और उसके पुत्र को प्रोत्साहन प्रदान करके सम्मानित किया और उसे उसके पिता के स्थान पर नियुक्त कर दिया। मिया भूवा की कुछ समय उपरान्त उसी बन्दीगृह में मृत्यु हो गई।

अमीरो का विद्रोह

कुछ समय उपरान्त उसने उन अमीरो को, जो ग्वालियर की विजय लगभग समाप्त कर चुके थे, फरमान लिखे कि वे आगरा में उपस्थित हो। उन लोगो के, जिनमें से प्रत्येक निष्ठावान् तथा हितैषी था, उपस्थित होने के उपरान्त, उन्हें उसने बन्दी बना लिया। आजम हुमायूँ शिरवानी को, जो उसके खानो में सर्वश्रेष्ठ था उसने निरपराध बन्दी बना लिया। इस कारण अधिकाश अमीरो ने सुल्तान के स्वभाव से अवगत होकर विरोध की पताका बलन्द कर दी। आज़म हुमायूँ के पुत्र इस्लाम खा ने कडा में विद्रोह कर दिया और अपने पिता की धन-सम्पत्ति तथा परिजना पर अधिकार जमा कर एक भारी सेना एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया। सुल्तान इब्राहीम इस दुर्घटना का समाचार पाकर सेना नियुक्त करना चाहता था कि अचानक सईद खा लोदी तथा कुछ अन्य बडे बडे अमीर सुल्तान इब्राहीम की सेना से भाग कर लखनऊ की विलायत में जो उन लोगो की जागीर में थी चल दिये। इस्लाम खा तथा ये अमीर (९१) एक स्थान पर एकत्र हुये और एक बहुत बडा उपद्रव उठ खडा हुआ। सुल्तान इब्राहीम ने १२ प्रतिष्ठित अमीरों को एक बहुत बडी सना देकर विद्रोहियों के विरुद्ध, जो भाग खडे हुये थे, नियुक्त किया। जब वे बागरमऊ के समीप कन्नौज के निकट पहुचे तो इकबाल खा आजम हुमायूँ का खासा खेल ५,००० अश्वारोहियों तथा कुछ हाथियो को लेकर उस स्थान से जहा वे घात लगाये थे, निकला और उनकी सेना पर छापा मारा। वह बहुत से लोगो को घायल करके तथा सुल्तान इब्राहीम की सेना को छिन्न-भिन्न करके चल दिया।

जब सुल्तान इब्राहीम को इस दुर्घटना के समाचार प्राप्त हुये तो उसने अमीरो की अत्यधिक कटु-आलोचनाये लिखी और यह आदेश दिया कि जब तक वे उस विलायत को विद्रोहियों के हाथ से छीन न लेंगे उस समय तक वे दड के पात्र रहेंगे। सावधानी की दृष्टि से उसने कुछ अन्य अमीरों तथा खानो को एक अपार सेना देकर उस सेना की सहायतार्थ नियुक्त किया। इस्लाम खा की सेना में ४०,००० सशस्त्र अश्वारोही तथा ५०० हाथी थे और एक बहुत बडा उपद्रव उठ खडा हुआ था। जब दोनों ओर की सेनाये निकट पहुची तो आजकल में युद्ध होने ही वाला था कि शेख राजू ने जो उस राज्यकाल के बहुत बडे धार्मिक गुरु थे मध्यस्थ बन कर विद्रोहियों को नाना प्रकार की शिक्षायें देते हुये समझाया। उन लोगों ने कहा कि "यदि सुल्तान इब्राहीम, आजम हुमायूँ को मुक्त कर दे तो हम लोग उसकी विलायत छोड कर किसी अन्य बादशाह के राज्य में चले जायेंगे।' अमीरो ने सुल्तान से इस विषय में निवेदन किया। सुल्तान ने इस सन्धि को स्वीकार न किया। उसने आदेश दिया कि बिहार सूबे की सेना अत्यधिक सामग्री

सहित उस ओर से विद्रोहियों पर आक्रमण करके उस उपद्रव को शान्त कर दे। जब ये सेनायें चारो ओर से एक दूसरे के समीप पहुची तो सेना की पक्तिया तैयार होकर युद्ध करने लगी। उन्होने ऐसा भीषण रक्तपात किया जिसके दर्शन से काल की आखें चौंधिया गईं। ऐसा युद्ध कभी न हुआ था किन्तु विद्रोह चूँकि अभागो का कार्य है और इससे कल्याण नही होता, इस्लाम खा की हत्या हो गई। सईद खा कुछ अन्य व्यक्तियों सहित वन्दी वना लिया गया और वह विद्रोह शीघ्र ही शान्त हो गया। समस्त धन-सम्पत्ति सुल्तान इवराहीम के अधिकार में आ गई। सुल्तान इवराहीम ने इस विजय की प्रसन्नता मनाई किन्तु अमीरों के प्रति उसे जो ईर्ष्या थी, वह दसगुनी वढ गई और सुल्तान इवराहीम सुल्तान सिकन्दर के समस्त खानों के प्रति अत्यधिक रुष्ट हो गया। अधिकाश प्रतिष्ठित अमीर, उदाहरणार्थ मिया भूवा तथा आजम (९२) हुमायूँ सिरवानी जिसे अमीरुल उमरा की उपाधि प्राप्त थी, वन्दीगृह में मृत्यु को प्राप्त हो गये। विहार के हाकिम खाने जहा लोदी ने उस स्थान के अमीरो से मिलकर विद्रोह की पताका वलन्द कर दी। मिया हुसेन फ़र्मुली की चन्देरी के क्षेत्र में सुल्तान इवराहीम के सकेत पर गुडे शेखजादो ने हत्या कर दी। मिया हुसेन का सविस्तार उल्लेख आगे किया जायगा। इसी कारण अमीर लोग उससे घृणा करने लगे। जो जिस स्थान पर था वह अपनी चिन्ता में पड गया।

मियाँ हुसेन की हत्या का सविस्तार विवरण

यह मिया हुसेन एक प्रतिष्ठित अमीर तथा सुल्तान सिकन्दर का सिपहसालार था और उसको उस वादशाह द्वारा आश्रय प्राप्त हुआ था। सुल्तान इवराहीम ने सर्वप्रथम जो अनुचित कार्य किया वह यह था कि मिया हुसेन तथा मिया मारूफ को मिया माखन के अधीन करके ४०,००० अश्वारोहियों सहित राणा के विरुद्ध नियुक्त किया और मिया माखन को गुप्त रूप से फरमान लिखा कि मिया हुसेन तथा मिया मारूफ़ को जिस प्रकार सम्भव हो वन्दी वना ले। मिया हुसेन को यह समाचार प्राप्त हो गया। मिया माखन, जो सुल्तान इवराहीम का विश्वासपात्र था, वहाना करके मिया मारूफ के पुत्र की मृत्यु के प्रति सवेदना प्रकट करने के लिये मिया मारूफ के डेरे में पहुचा। मिया हुसेन को जव समाचार प्राप्त हो गया कि मिया माखन मिया मारूफ के डेरे में गया है तो मिया हुसेन भी शीघ्रातिशीघ्र मिया मारूफ के डेरे में पहुचा और कहा, "मिया माखन! तू यह विचार हृदय से निकाल दे कि तू मिया मारूफ को वन्दी वनाकर उसके पाव में वेडी डाल सकेगा। हम किसी के आमिल तथा पदाधिकारी नही हैं। तू उठ कर कुशलतापूर्वक अपने घर चला जा। हमारा सुल्तान पागल हो गया है। तुझे क्या हो गया?" यह कह कर वह उठ खडा हुआ और अपने डेरे में चला गया।

मिया माखन ने इस घटना का पूरा वृत्तात सुल्तान को लिख कर भेज दिया। सुल्तान इवराहीम ने उसे फरमान लिखा कि, "तू किसी के डेरे में क्या जाता है? वादशाही सरापर्दा लगवा और अमीरो को सूचना दे दे कि वादशाह का फरमान आया है। जव समस्त अमीर फरमान पढने के लिये उपस्थित (९३) हों तो उसी स्थान पर सर्वप्रथम मिया हुसेन को और तदुपरात मिया मारूफ को वन्दी वना कर फ़रमान दिखा दे कि फरमान के अनुसार आचरण किया गया है।" मिया माखन ने ऐसा ही किया। मैदान में खेमा लगवा कर अमीरो को सूचना भेज दी। मिया हुसेन इस षड्यत्र से अवगत था। ५००० अश्वारोहियों को तैयार करके वहा पहुच गया और अपने आदमियो से कहा कि सरापर्दे के खूँटों को उखाड डालो। समस्त सरापर्दा भूमि पर गिर पडा। समस्त सेना दिखाई पडने लगी। मिया माखन फर्मूलियो के समूह को एक घेरे मे लिये हुये वैठा था। मिया हुसेन ने मिया माखन से कहा, 'फरमान क्यों नही निकालते और उसे क्यों नही पढते?" मिया माखन ने कहा, "इस प्रकार पढने का आदेश नही हुआ

है।" मिया हुसेन ने कहा, 'तेरे हृदय में जो विचार हैं वे असम्भव हैं। हमे ज्ञात हो गया है कि इस
का भेजा जाना केवल हमारे लिये है। हम अपने प्राण बादशाह के कार्य हेतु रखते थे। इस प्र
लज्जित होकर प्राण नही दे सकते। राणा काफिर हमसे युद्ध करने आया है। तुमसे जो कुछ बादशा
कहा है वह करो। हम राणा के पास जाते ह। जो कुछ होना होगा, वह होगा।"

मिया हुसेन इस स्थान से तोदा चला गया और वहा से वह राणा से षड्यत्र करके उससे मिल ग
और राणा की सेना लेकर सुल्तान इब्राहीम की सेना के विरुद्ध रवाना हुआ। मिया माखन को, जो से
पति था, उचित दड देकर पराजित कर दिया। ब्याना तक सुल्तान इब्राहीम की सेना का पीछा क
हुए अत्यधिक मनुष्यो की हत्या की। जब दोनो सेनाओं का युद्ध प्रारम्भ हुआ तो दरिया खा ने जो सुल
इब्राहीम का एक प्रतिष्ठित अमीर था अपने भाई से कहा, "सुल्तान की सेना की व्यवस्था उचित रु
नही हो रही है अत इससे पृथक् होकर निकल चलें।" उसके भाई ने कहा, "तेरे सरीखे सम्मानित अ
के लिये शत्रु के दृष्टिगत होने के पूर्व चला जाना उचित नही।" वे यही वार्ता कर ही रहे थे कि र
की सेना प्रकट हो गई। दरिया खा के भाई ने कहा, "अब तो विश्वास हो गया कि शत्रु पहुँच गया।
चले जाना चाहिये।" दरिया खा ने कहा, 'हे मूर्ख भाई, जाने का समय वही था। अब जब कि
प्रकट हो गया तो मैं कहा जाऊँ कारण कि मुझ दरिया कहते हैं और दरिया अपने स्थान से नही हटत
यह कह कर शहीद हो गया।

सुल्तान इब्राहीम सेना की पराजय के उपरान्त आगरा से स्वय रवाना हुआ और निरन्तर य
करता हुआ कनेर नदी के तट पर उतरा। मिया हुसेन ने सुल्तान इब्राहीम की सेनाओ को पराजित क
(९४) मिया ताहा से जो उसके भाइयों में से एक था कहा कि "मै ने समस्त जीवन काफिरो से
में व्यतीत किया और इस अन्तिम अवस्था में जब कि मै वृद्ध हो चुका हू काफिर से मिलकर युद्ध कर
मुसलमान लोग मेरे प्रयत्न से मारे जायें अत यह पाप मेरी ग्रीवा पर होगा। तुम कहा करते थे
बादशाह क्योंकि शत्रुता कर रहा है अत सेना एकत्र करो। मैंने प्रारम्भ ही में तुम से कह दिया था कि
बादशाह से शत्रुता नही किन्तु मेरा उद्देश्य यह है कि (चूँकि) वह हमें नही पहचानता और हमारा म
नही समझता, अत ऐसा करना चाहिये कि वह हमें पहचानने लगे तथा हमारा मूल्य जानने लगे। ह
अपनी योग्यता का परिचय उसे दे दिया, ताकि वह समझ जाय कि हमे उसके पिता सुल्तान सिक
ने (यदि) सवार की श्रेणी से अमीरी की श्रेणी तक पहुचा दिया और हमें बडी बडी अक्तायें प्रदान की
हममे इस बात की योग्यता थी अन्यथा सेना के भरोसे पर कोई अयोग्य व्यक्ति कार्य नही कर सक
अत हममें कोई न कोई विशेषता थी। जो कुछ हमारा उद्देश्य था वह हमने पूरा कर दिया।" मि
ताहा से उपर्युक्त वार्तालाप के उपरान्त उसने कहा, "तुम सुल्तान इब्राहीम के पास चले जाओ और
ओर से यह प्रार्थना करो कि सैयिद खा यूसुफ खेल तथा फतह खा पुत्र आजम हुमायूँ को जो बन्दीगृ
हैं मुक्त कर दे। पहले से सुल्तान का विरोध करने का मेरा विचार न था।" सुल्तान इब्राहीम ने
सुखद समाचार पाकर दोनो अमीरो को बन्दीगृह से मुक्त कर दिया और खिलअत देकर विदा
दिया। ये दोनो अमीर सेना एकत्र करके आगरा से निकले और मिया हुसेन से मिल गये।

यह सैयिद खा बडा अभिमानी था। एक दिन वह अपने घर मे राणा से वार्तालाप कर रहा था
इसी बीच में मिया हुसेन के आगमन के समाचार प्राप्त हुये। राणा अत्यधिक व्याकुल मिया हुसेन के प
पहुचा। वे कुछ देर तक साथ रहे। मिया हुसेन अपने घर को वापस चला गया। सैयिद खा ने र
से पूछा, "कुछ जानते भी हो कि मिया हुसेन कौन है?" राणा ने कहा, "मैं इतना जानता हू कि वह
सम्मानित व्यक्ति है और एक उत्कृष्ट अमीर है।" सैयिद खा ने कहा, "वे हमारी अफगान कौम

शेखजादे हैं जो उसी प्रकार से होते हैं जिस प्रकार तुम लोगों में ब्राह्मण। हमने उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की। हम बादशाह के भाइयों में से हैं। अफगानों के अनुसार बादशाही शाहू खेल को प्राप्त होती है अथवा युसूफ खेल को। इनके अतिरिक्त अन्य सेवक अफगान लोदी होते हैं।"

मिया हुसेन इन वाक्यों को सुनकर सैयिद खा से बडा रुष्ट हुआ और उससे कहा कि "मेरे कारण (९५) सैयिद खा के पाव से जजीर निकाली गई। उसने खूब आभार प्रदर्शित किया। अब उसका साथ छोड देना ही उचित है।" उसने मिया ताहा से कहा, "तुम सुल्तान इबराहीम के पास चले जाओ। तीन पीढियों से (उसके वश वाले) हमारे आश्रयदाता हैं। हमारा उद्देश्य यही है कि वह अपने पिता के सेवकों को पहचान ले। हम उसके आज्ञाकारी बने जाते हैं। जो हमारा मित्र होगा वह उसका भी आज्ञाकारी हो जायगा।" मिया ताहा आगरा में सुल्तान इबराहीम की सेवा में पहुचा और मिया हुसेन की निष्ठा के विषय में सुल्तान से निवेदन किया। सुल्तान इबराहीम ने कहा, "मिया हुसेन मेरे चाचा हैं। जो कुछ हुआ वह हुआ। अब मिया हुसेन इन राज्यो में से जिसे पसन्द करें वह उन्हें प्रदान कर दिया जाय। सर्वप्रथम उनकी प्राचीन जागीर बिहार सूबे में सारन तथा चुनार, दूसरे चन्देरी की अक्ता, तीसरे सम्भल।"

मिया हुसेन ने जब राणा की सेना से पृथक् हो जाना निश्चय किया तो राणा ने यह समाचार पाकर उस सेना को जो उसकी शत्रु थी, रात्रि में मिया हुसेन के डेरे को घेर कर विरोध प्रारम्भ कर दिया। प्रातःकाल यह समाचार मिया हुसेन को प्राप्त हुये। उसने सवारी के लिये घोडा मगवाया। जो अमीर मिया हुसेन के सहायक थे वे अस्त्र-शस्त्र धारण करने लगे। मिया हुसेन ने कहा, "तुम लोग शस्त्र क्यों धारण करते हो? ये सब जो एकत्र हैं, वे गीदड हैं। तुम लोग अपने अपने स्थान पर रहो।" यह कहकर दो सेवकों सहित वह उनकी ओर चल दिया। मिया हुसेन का एक सेवक जो कभी कभी धृष्टता-युक्त वार्तालाप कर देता था साथ था। मिया हुसेन ने यद्यपि उसे रोका किन्तु उसने कहा "मैं आपके साथ उसी प्रकार चलता हू, जिस प्रकार सती होने वाली स्त्री के साथ जो अपने आप को जीवित जला देती है, लोग लीला देखने जाते हैं। आप भी एक लाख शत्रु अश्वारोहियों का मुकाबला करने के लिये अकेले जा रहे हैं।" मिया हुसेन ने कुछ न कहा। सेना के मध्य में पहुच कर घोडे से उतर पडा और बैठ गया। उसने राणा तथा अन्य अमीरों को बुलवाया। वे सब लोग आये। उनके समक्ष मिया हुसेन ने कहा, "हमने तुम्हारी परीक्षा ले ली। हमने जो कुछ निश्चय किया था उस पर आचरण करते मैं तुम्हें नही देखता। इस समय मैं सेना को दो भागो में विभाजित करता हू। जिसका जी चाहे वह तुम्हारे साथ रहे।" यह कह कर शत्रुओं के एक लाख अश्वारोहियों के बीच से निकल कर अपनी सेना मे प्रविष्ट हो गया और वहाँ से सुल्तान इबराहीम के पास चला गया। सुल्तान ने मिया हुसेन को बाह्य रूप से नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा प्रसन्न किया। मिया हुसेन ने चन्देरी का भू-भाग स्वीकार कर लिया। यद्यपि मिया ताहा (९६) कहता रहा कि "सुल्तान इबराहीम ईर्ष्यालु बादशाह है अतः दूर का सूबा स्वीकार करना चाहिये," किन्तु मिया हुसेन ने उसे चन्देरी के राणा से बदला लेने के लिये स्वीकार कर लिया और सुल्तान इबराहीम से विदा होकर चल दिया।

सुल्तान इबराहीम मिया हुसेन की हत्या कराने का प्रयत्न करने लगा। उसने अपने एक विश्वास-पात्र को, जिसका नाम शेख फरीद दरियाबादी था, ७०० अशर्फी तथा १० ग्राम इनाम में देकर मिया हुसेन को नष्ट करने के लिये नियुक्त किया। उस ईश्वर का भय न करने वाले ने चन्देरी के शेखजादों को, जिनकी सख्या लगभग १२,००० थी, अपनी ओर मिला लिया और उन्हें सुल्तान की कृपा के प्रति आश्वासन दिला कर इस बात पर तैयार किया कि रात्रि के समय वे किले पर आक्रमण कर दें और मिया हुसेन की हत्या कर दे। मिया हुसेन के भतीजे शेख जमाल ने जिस रात्रि में मिया हुसेन की हत्या होने वाली

थी, दिन के अन्त में शेखज़ादों के षड्यंत्र का समस्त हाल उसे बता दिया। मियां हुसैन ने मुस्करा कर कहा, "ईश्वर को धन्य है। मेरे भतीजे में इतनी योग्यता हो गई कि वह मुझे परामर्श देने लगा। इन कोरनारियों[1] को इतना दलबल कहां से प्राप्त हो गया कि वे मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगे? यदि मैं उन पर थूक भी दूं तो उसके धब्बे से कई लोग मर जायगे। कल देखना मैं क्या कार्य करता हूं। ईश्वर ने चाहा तो तुम इसकी लीला देखोगे।" शेख जमाल ने कहा, "आप के भाग्य में कल कुछ और ही लिखा है। यदि आप कुछ और नहीं करते तो घर के बाहर निकल कर मत बैठियेगा।"

एक पहर रात्रि व्यतीत हो जाने पर जब नौबत[2] वालों के अतिरिक्त सिपाही लोग घरों को चले गये और लोग छिन्न-भिन्न हो गये तो शेखज़ादों का बहुत बड़ा समूह एकत्र हुआ और सर्वप्रथम शखज़ादे को, जो उन लोगों का नेता था, जाकर सूचना दी कि "हम लोग मियां हुसैन की हत्या करेंगे।" उसने इन लोगों को बुरा-भला कहना प्रारम्भ कर दिया और कहा कि, "तुम लोग ऐसा कार्य कर रहे हो जिसके कारण तुम्हारी बड़ी दुर्दशा होगी।" यद्यपि इस शेखज़ादों के नेता ने उन्हें परामर्श दिया किन्तु उससे कोई लाभ न हुआ। जब शखज़ादे ने देखा कि जो संकल्प इन लोगों ने कर लिया है, उसे वे नहीं त्यागते तो उसने (९७) तत्काल भाग कर मियां हुसैन को सूचना दे दी। इन शखज़ादों ने दौड़कर सर्वप्रथम किले के द्वार पर अधिकार जमा लिया और इधर उधर हर घर पर अपने आदमी नियुक्त कर दिये। कुछ लोगों ने मियां हुसैन के डेरे पर आक्रमण कर दिया। इसी बीच में बहुत शोर होने लगा। मियां हुसैन ने कुछ लोगों सहित घर से निकल कर शत्रुओं की ओर तीन बाण फेंके किन्तु तीर खाली गये। मियां हुसैन ने धनुष भूमि पर फेंक दिया और कहा, "मैं समझता हूं कि ईश्वर का आदेश इसी प्रकार है अन्यथा मेरा बाण कदापि न चूकता।" प्रत्येक दिशा से पत्थरों की वर्षा होने लगी।

इसी बीच में एक सेवक ने कहा, "शत्रु अन्तःपुर में प्रविष्ट हो गये हैं। यदि आदेश हो तो मैं उनकी हत्या कर दूं।" मियां हुसैन ने कहा, "इस समय स्त्रियों का नाम न लो। यदि हम लोग मर्द हैं तो ये भी मर्द हैं। वीरता से कार्य करो और अपनी मृत्यु को शोभा प्रदान करो।" मियां हुसैन ने हसन अली नामक एक खुरासानी को, जो उसका वकील था, बुलवा कर कहा, "हे हसन अली! यदि तू जीवित रहे तो मेरी ओर से सुल्तान इबराहीम से कह देना कि 'मेरे हृदय में तेरी ओर से दुर्भावनायें न थी किन्तु तू अपने हृदय में ईर्ष्या रखता था। मुझे और तुझे दोनों को ही मरना है। मेरा और तेरा न्याय ईश्वर के समक्ष होगा।" इसी बीच में मियां हुसैन के एक पत्थर लगा और वह मूर्च्छित होकर भूमि पर बैठ गया। उसके हाथ में तलवार थी। एक व्यक्ति ने मियां हुसैन के समीप पहुंच कर उस पर तलवार का वार करना चाहा। मियां हुसैन ने अपने अन्तिम समय में उसके ऐसी तलवार लगाई कि उसका सिर कट गया। शेखज़ादों ने हर ओर से मियां हुसैन पर आक्रमण करके बाणों तथा भालों से उसकी हत्या कर दी और अपने युग के उस रुस्तम का सिर विद्रोहियों के सिर के समान द्वार पर लटकवा दिया।

सुल्तान इबराहीम मियां हुसैन की हत्या से बड़ा प्रसन्न हुआ। अल्प समय उपरान्त राणा की सेना शेखज़ादों के विरुद्ध पहुंच गई। समस्त शेखज़ादे, जो इस दुर्घटना में सम्मिलित थे, मार डाले गये। शेख मुहम्मद सुलेमान को जोकि ईश्वर के एक बहुत बड़े भक्त थे किसी व्यक्ति ने स्वप्न में देखा कि वे नंगे सिर चले जा रहे हैं। उस व्यक्ति ने पूछा, "आप कहां थे और नंगे सिर कहां जा रहे हैं?" उन्होंने

१ अक़ीमचियों।

२ नौबत बजाने वाले। एक प्रकार का बैंड जो निश्चित समय पर बादशाहों एवं शाहज़ादों के द्वार पर बजाया जाता था।

उत्तर दिया, "मैं चन्देरी में था। मिया हुसेन का बदला शाहजादों से ले लिया। अब आगरा जाता हूँ। जब सुल्तान इबराहीम की भी यही दुर्दशा हो जायगी तो पगडी बाँधूँगा।"

आज़म हुमायूँ की हत्या

(९८) जिस समय आज़म हुमायूँ ग्वालियर का घेरा डाले हुए था और यह क़िला आज या कल में विजय होने वाला था तो सुल्तान इबराहीम ने ऐसी परिस्थिति मे आज़म हुमायूँ को समस्त सेना सहित वापस बुलवा लिया। समस्त सेना ने आजम हुमायूँ की सेवा में उपस्थित होकर निवेदन किया कि "बुलाने का यह कौन सा समय था? यह निश्चय है कि वह आपको बन्दी बनाने तथा आपकी हत्या कराने के लिये बुला रहा है। आजकल आपकी सेवा में ५०,००० अश्वारोही हैं। आपके लिये खुत्वा तथा सिक्का[1] उचित है।" और इस विषय में उन लोगो ने आलिमो की सम्मतिया प्रस्तुत करके अपने कथन की पुष्टि की। समस्त सेना सुल्तान इबराहीम के पास उसके जाने का पूर्णत विरोध कर रही थी। आज़म हुमायूँ ने कहा, "मुझ से यह नही होता कि सुल्तान इबराहीम की तीन पीढियो का नमक खाकर, जब कि मुझे यह भी ज्ञात नही कि मुझे जीवित रहना है अथवा नही, अपने आप को हरामख़ोर कहलवाऊँ।"

वह ग्वालियर का घेरा छोड कर आगरा की ओर चल दिया और अधिकाश लोगो को वह लौटा देना चाहता था किन्तु कोई भी उसका साथ न छोडता था। जब वह चम्बल नदी के तट पर पहुँचा और नौका पर सवार हुआ तो कुछ उत्कृष्ट लोगो ने एकत्र होकर कहा, "आगरा जाना किसी प्रकार उचित नही।" आज़म हुमायूँ ने किसी को भी नदी न पार करने दी और सभी को लौटा दिया। तदुपरान्त उसने नौका चलवा दी। जब वह आगरा पहुचा तो सुल्तान इबराहीम के आदेशानुसार एक बडा ही निकृष्ट याबू आजम हुमायूँ के समक्ष लाया गया और कहा गया कि "आपके लिये इस पर सवार होने का आदेश हुआ है।" आज़म हुमायूँ शीघ्र घोडे से उतर कर याबू पर सवार हो गया। उन थोडे से आदमियो, जो उसके साथ रह गये थे, ने उससे कहा कि, "अब भी कुछ नही बिगडा है। हमारे पास अपने विश्वास के लोग हैं। आपको वे कुशलतापूर्वक यहाँ से निकाल ले जायगे।" आज़म हुमायूँ ने कहा, 'हे मित्रो! मुझे यह बात स्वीकार नही। हमने सुल्तान इबराहीम के पिता एव दादा के लिये प्राणो की बलि दी है। जितना हम जीवित रह लिये, इससे अधिक जीवित न रहेंगे। अब तक हम उसी की सेवा में प्राण लगाय रहे। हमने कोई भी निकृष्ट कार्य नही किया। अब हम चाहे जीवित रहें और चाहे मृत्यु को प्राप्त हो जाय। मेरे लिये यह बडे सम्मान की बात है कि इस विषय में उसे ईश्वर को उत्तर देना होगा।" यह (९९) कहकर उन थोडे से साथियों, जो उसके साथ रह गये थे, को भी उसने विदा कर दिया और आगरा में प्रविष्ट हो गया। जैसे ही वह आगरा मे प्रविष्ट हुआ, सुल्तान इबराहीम ने उस सरीखे निष्ठावान् तथा उत्कृष्ट अमीर को बिना किसी अपराध के बन्दीगृह मे डलवा दिया और कई मन ज़जीर उसके पाव में डलवा दी। जिस दिन आज़म हुमायूँ को बन्दीगृह में भिजवाया गया उसने सुल्तान इबराहीम के पास यही कहलवाया कि "जो कुछ तेरी इच्छा होगी वह तू करेगा। मेरी यही प्रार्थना है कि वज़ू के जल तथा इस्तिन्ज[2] के ढेले के भिजवाने का आदेश दे दे। (इसके अतिरिक्त) मेरा पुत्र इस्लाम खा बडा ही उद्दड है। इसका शीघ्र उपाय कर ताकि उसके पास लोग एकत्र न हो जाय।"

१ स्वतन्त्र रूप से बादशाह बन जाना।
२ पेशाब के बाद शिश्न को सुखाने की क्रिया।

आजम हुमायूँ बहुत समय तक बन्दीगृह में रहा। इस बीच में उसने कभी भी सुल्तान इबराहीम
वरुद्ध शिकायत का कोई शब्द न कहा। उस ईश्वर का भय न करने वाले अन्यायी ने इस प्रकार के
पी खानों की बिना किसी अपराध के बन्दीगृह में हत्या करा दी और अपने राज्य की दीवार को अपने
से गिरवा दिया। सुल्तान सिकन्दर के बडे-बडे अमीरो की एक बहुत बडी सख्या को निरपराध
। डाला। सीमान्तों की प्रत्येक दिशा के अमीर अपनी अपनी रक्षा करने लगे।

ोरो का विद्रोह

दरिया खा लोहानी के पुत्र ने, जिसका नाम पहाड खा था, सुल्तान इबराहीम के विरुद्ध विद्रोह
के लगभग एक लाख अश्वारोही एकत्र कर लिये और बिहार से बगाले तक की विलायत अपने अधि-
में कर ली और अपनी उपाधि सुल्तान मुहम्मद रख कर अपने नाम का सिक्का चलवा दिया। दौलत
वल्द तातार खा, जो सुल्तान सिकन्दर के सेवकों में से था और पजाब के राज्य का अधिकारी था,
र से बुलवाया गया किन्तु दौलत खा सुल्तान इबराहीम के भय तथा दुर्व्यवहार के कारण जाने मे विलम्ब
ने लगा। उसने अपने पुत्र दिलावर खा लोदी को सुल्तान की सेवा में भेज दिया। जब यह दिलावर खा
ान इबराहीम की सेवा में पहुचा तो उसने इसे देखते ही कहा कि, "यदि तेरा पिता शीघ्रातिशीघ्र
हुच जायगा तो अन्य अमीरो के समान उसे कठोर दड दिया जायगा।" दिलावर खा ने वास्तविक
अपने पिता को लिख कर भज दी। दौलत खा ने अपने पुत्र को उत्तर लिखा कि "जब तक मिया
आने के लिये परामर्श न देगा और मेरा आना उचित न समझेगा तथा मुझे न लिखेगा उस समय तक
दापि न आऊगा। तू चिन्ता मत कर।"

(१००) दिलावर खा सुल्तान इबराहीम के क्रोध के समाचार पाकर बडा भयभीत हुआ और
सुल्तान के क्रोध तथा मृत्यु-दड से मुक्ति दिखाई न दी। वह भागकर अपने पिता के पास भी न
ा और अन्य मार्ग से बाबर बादशाह की सेवा में काबुल पहुच गया। वह बहुत समय तक वहा रहा।
ने अफगान अमीरो के विरोध तथा उनकी सुल्तान इबराहीम के प्रति घृणा का हाल विस्तार से बाबर
शाह को बताया।

इसी बीच में सुल्तान इबराहीम ने मिया भूवा की बिना किसी अपराध के हत्या करा दी। बाबर
शाह यह समाचार पाकर इबराहीम के *दुर्भाग्य को समझ गया कारण कि बुद्धिमान् हितैषियों*
विनाश किसी भी राज्यकाल में किसी के लिये शुभ नही हुआ है।[१]

(१०४) सुल्तान इबराहीम ने ८ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया। हिन्दुस्तान में लोदी
ानों के राज्य का सुल्तान इबराहीम के उपरान्त अन्त हो गया। ७४ वर्ष, १ मास तथा ८ दिन तक
ोल व सिकन्दर तथा इबराहीम हिन्दुस्तान में राज्य करते रहे। तदुपरान्त उनका अन्त हो गया।

सुल्तान इबराहीम के राज्यकाल की कुछ विचित्र घटनाएँ

प-मूल्यता

सुल्तान इबराहीम के राज्यकाल की एक विचित्र घटना यह थी कि अनाज, वस्त्र,
समस्त वस्तुए इतनी सस्ती हो गई थी जितनी कि किसी भी राज्यकाल में न थी। केवल

[१] पृ० १००—१०४ तक बाबर तथा इबराहीम लोदी के युद्ध का उल्लेख है।

सुल्तान अलाउद्दीन खलजी के राज्यकाल के अन्त में चीजें इतनी सस्ती हुई होंगी और वह भी लाखो प्रयत्न, हत्या-काड तथा कठोर दड के उपरान्त। सुल्तान इवराहीम के राज्यकाल में चीजो के मूल्य का सस्ता होना दैवी था। यद्यपि सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल में भी अल्प-मूल्यता थी किन्तु सुल्तान इवराहीम के राज्यकाल के समान न थी। कहा जाता है कि एक वहलोली में १० मन अनाज, ५ सेर घी तथा १० गज कपडा क्रय किया जा सकता था और इसी प्रकार समस्त वस्तुयें। इस अल्प-मूल्यता का कारण यह था कि इच्छानुसार वर्षा होती थी और कृषि वडी उन्नति को प्राप्त हो गई थी, विलायत (१०५) की सम्पन्नता एक की दस[1] हो गई थी। सुल्तान इवराहीम ने आदेश दे दिया था कि समस्त अमीर तथा मलिक अनाज तथा जो कुछ भूमि से उत्पन्न हो उसके अतिरिक्त कोई भी (वस्तु) कर के रूप में न लें, प्रजा से नक्द धन न प्राप्त करें। जागीरो से अपार अनाज प्राप्त होता था। मलिको तथा अमीरो को व्यय हेतु नकद धन की आवश्यक्ता होती थी। आवश्यक्तावश जो कोई जिस मूल्य पर अनाज लेता वे उसे वेच डालते। ईश्वर ने ऐसा किया कि अनाज एक वहलोली में १० मन के हिसाव से विक्ने लगा किन्तु सोना चादी अप्राप्य हो गये। ५ तन्के मासिक उस व्यक्ति को जिसके परिवार होता था प्रदान किया जाता था और २३ तन्के मासिक एक अश्वारोही को मिलते थे। यदि कोई देहली से आगरा जाता और उसके साथ एक घोडा तथा साईस होता तो वह निश्चित होकर तथा प्रसन्नतापूर्वक एक वहलोली में आगरा पहुच जाता। सुल्तान इवराहीम के राज्य-काल की अल्प-मूल्यता ईश्वर का एक वहुत वडा वरदान थी।

जादूगरनी

सुल्तान इवराहीम के राज्यकाल की एक घटना इस प्रकार है सिकन्दर नामक एक युवक चन्दौसी कस्वे के समीप यात्रा कर रहा था। हवा की गर्मी के कारण वह एक वृक्ष की छाया में खडा हो गया। एक वुढिया उस वृक्ष की छाया के नीचे वैठी थी। उसने युवक से कहा, "तेरी पगडी पर तिन्का है। यदि कहे तो हटा दूं।" उसने कहा, "अच्छा"। जव उसने सिर झुकाया तो वुढिया ने उस युवक की पगडी म कोई वस्तु छिपा दी। वह युवक विवेकशून्य हो गया। वुढिया चल दी। युवक ने उसके पीछे घोडा डाल दिया यहाँ तक कि एक घने जगल में पहुच गया। चारो ओर से चोरो ने तलवारें खीच कर उस पर आक्रमण कर दिया। इसी वीच में उस युवक की पगडी एक वृक्ष की डाली से अटक कर भूमि पर गिर पडी। पगडी के गिरते ही उसकी आखो के सामने से पर्दा हट गया। वह सावधान हो गया। उसने देखा कि कुछ गुडे, जिन्हें वुढिया वैठा कर चल दी थी, तलवार खीच कर उसकी ओर आ रहे हैं। युवक ने सावधान होकर धनुष-वाण हाथ में ले लिये। चोर भाग खडे हुये। युवक वुढिया को वाध कर चन्दौसी ले गया और वहा ले जाकर कोतवाल को सौंप दिया। उसकी वाजार में हत्या करा दी गई।

उडने वाला मनुष्य

सुल्तान इवराहीम के राज्यकाल में मादू में महमूद नामक एक गुडा था। वह वडी विचित्र (१०६) हरकत करता था। किले के सर्राफ तथा वजाज जिसके नाम भी वह इस आशय का वरात[2] लिखता कि अमुक व्यक्ति को इतने हजार दे दो, और वरात पहुचने पर यदि वह धन न देता तो वह उसके

१ 'इर्तिफ़ाये विलायत यके व देह ग्रामद'।
२ दूसरे स्थान से धन प्राप्त करने के सम्वन्ध में पत्र।

पूरे घर-बार को नष्ट-भ्रष्ट कर देता था। यद्यपि कोतवाल तथा नगरवालो ने उसे किले के द्वारो को दृढतापूर्वक बन्द करके पकडने का प्रयत्न किया किन्तु सफलता न प्राप्त हुई। महमूद की जिस किसी से भी शत्रुता होती तो वह दिन में खुल्लमखुल्ला उसकी हत्या कर दिया करता था और भूमि से कूद कर घर की छत पर पहुच जाता था और अदृश्य हो जाता था। वह हवा में पक्षियो के समान उडा करता था।

सयोग से एक मदिरा बनाने वाले की स्त्री से उसका प्रेम हो गया, यहा तक कि वह प्रेम के वशीभूत हो गया। एक दिन उसी स्त्री के घर में वही महमूद पक्षी असावधान पडा था। कोतवाल को, जिसने उसकी खोज मे अपना जीवन व्यतीत कर दिया था, पता चल गया। उसने शीघ्रातिशीघ्र वहा पहुँचकर घर में ताला लगा दिया। वह व्यक्ति घर से कूद कर छप्पर पर पहुंचा। उसका एक पाव छप्पर मे फस गया। कोतवाल ने उसके घर में घुस कर उस पर तलवार का वार किया। उसका पाव कट गया। वह छप्पर से भूमि पर गिर पडा। उसे उसी दशा में लोग मादू के बादशाह महमूद के पास ले गये। सुल्तान ने उससे पूछा, "तू किस प्रकार उड लेता है?" उसने उत्तर दिया, "युवावस्था में मेरी एक बडे ही सिद्ध योगी से भेंट हो गई। मैंने उससे निवेदन किया कि, 'आप मुझे कोई ऐसी वस्तु दे दें जिससे मुझे कोई पकड न सके।' मै बहुत समय तक उसके साथ इसी आशा में रहा। एक दिन मैं योगी के साथ जा रहा था। उसने एक छिद्र देखा। उसने मुझसे कहा, 'जो तेरा उद्देश्य था, मुझे मिल गया।' मैंने कहा कि, 'कोई घास होगी?' उसने कहा, 'इस छिद्र के आस-पास जिसे तू देख रहा है घास नही उगती। इसका कारण यह है कि इसमें एक ऐसा सर्प है जिसके विष के प्रभाव से यह भूमि सूखी रहती है।' उसने मिट्टी के कुछ कच्चे बरतन लाकर मत्र पढने प्रारम्भ कर दिये। अचानक बहुत से सर्प उस छिद्र से निकल पडे। अन्त में उस छिद्र से धुआ निकलने लगा। जब अग्नि ठण्डी हुई तो कच्चे बरतन पक गये। तदुपरान्त एक बहुत बडा सर्प निकला जिसके ऊपर एक हाथ लम्बा एक छोटा सर्प था। योगी के हाथ में हरा गन्ना था। उसने गन्ने से सर्प को हिलाया। गना तत्काल जल गया। उसने सर्प को हाथ से पकड लिया और उसे निचोडा। उसके विष को उस पत्ते पर, जिसके उसने तीन दोने बनाये थे, डालकर मुझसे कहा, 'खाओ।' मैंने भय के कारण न खाया। उसने कहा, 'तुझे पश्चात्ताप करना पडेगा।' मैंने कहा, (१०७) 'मै इतना साहस नही कर सकता।' तदुपरान्त उसने तीनो दोनो से विष खा लिया और मेरे सामने से उडकर अदृश्य हो गया। जो पत्ते भूमि पर गिर पडे थे उन्हें मैंने चाट लिया। मैं उसी के प्रभाव से उड लेता हू।"

तारीखे शाही·

अथवा

तारीखे सलातीने अफ़ागेना

(लेखक—अहमद यादगार)

(प्रकाशन—कलकत्ता १९३९ ई०)

सुल्तान बहलोल लोदी

बाल्यावस्था

(२) बहलोल, सुल्तान शह (शाह) लोदी का भतीजा था। खिज्र खा के राज्यकाल में उसे इस्लाम खा की उपाधि प्राप्त थी। वह बडा ही वीर तथा योग्य पुरुष था। वह (बहलोल) अपने चाचा की सहरिन्द की जागीर का प्रबन्ध करता था। उसके ललाट से ऐश्वर्य तथा गौरव के चिह्न प्रकट थे। कहा जाता है कि एक दिन इस्लाम खा नमाज पढ रहा था। बहलोल खा की अवस्था सात वर्ष की थी (३) और वह बालको के साथ खेला करता था। अचानक उसने इस्लाम खा के मुसल्ले[1] पर गेंद फेंक दी। समस्त बालक इस खेल से विस्मित होकर खडे हो गये। बहलोल खा ने जाकर उस गेंद को उठा लिया। इस्लाम खा की पत्नी ने उसे डाँटते हुये कहा, 'बल्लू! खेल के लिये अन्य स्थान है।" इस्लाम खा ने अपनी पत्नी को मना किया कि, "तुम भविष्य म बहलोल को न डाटना कारण कि उसके ललाट पर ऐसे चिह्न हैं जिनसे पता चलता है कि वह बडे ही श्रेष्ठ तथा उच्च स्थान पर आरूढ होगा और वह एक ऐसा दीपक है जो मेरे वश को प्रज्वलित कर देगा।"

दरवेश से भेंट

सक्षेप में, बहलोल खा सहरिन्द के शासन को सुव्यवस्थित करके एक दिन किसी कार्य के लिय सामाना गया हुआ था। कुतुब खा तथा फीरोज खा, जो उसके सम्बन्धी थे, उसके साथ थे। सामाना के समीप फत्ता[2] नामक मजजूब, जिसे परलोक का पूर्ण ज्ञान था, बैठा हुआ था। बहलोल खा उसकी सेवा मे उपस्थित हुआ। उस दरवेश ने पूछा, "तुम लोगो में कोई ऐसा व्यक्ति है जो मुझसे देहली की बादशाही दो हजार तन्को मे मोल ले ले?" बहलोल खा के पास १,३०० तन्के थे। उसने उन तन्को को दरवेश के समक्ष रख दिया। दरवेश ने उसके लिये ईश्वर से प्रार्थना की और कहा, "देहली का राज्य तेरे लिये

१ जा नमाज, वह चटाई अथवा कपड़ा जिसे बिछा कर नमाज पढी जाती है।

२ 'मखज़ने अफ़गानी' में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है · मलिक बहलोल उन दिनों जब वह अपने चाचा इस्लाम खां की सेवा में था, एक बार कुछ आवश्यक कार्य हेतु सामाना पहुचा। उसके दो विश्वास-पात्र उसके साथ थे। उसने सुना कि वहा सैयिद इब्बन नामक एक बुज़ुर्ग हैं।

(४) शुभ हो।" तदुपरान्त उसने उन्हें विदा कर दिया। जो दो युवक साथ थे, उन्होने बहलोल से कहा, "एक भिखारी को जो एक तन्के के लिये गलियो में मारा-मारा फिरता है, इतना धन व्यर्थ में दे देने से क्या लाभ ?" वे उसकी खिल्ली उडाने लगे और परिहास करने लगे। बहलोल खा ने कहा, "इस कार्य के लिये मेरी कटु आलोचना मत करो। इस कार्य के दो ही परिणाम हो सकते हैं। यदि उसका कथन सत्य निकला तो मैंने मुफ्त सौदा कर लिया अन्यथा दरवेशों की सेवा से कयामत में पुण्य होगा।"

दो वर्ष सहरिन्द में निवास करने के कारण वह बडा ही सम्मानित हो गया। इसी बीच मे इस्लाम खा की मृत्यु हो गई। उसके परिजन, खजाना तथा हाथी, जो सहरिन्द में थे, बहलोल खा ने अपने अधिकार में कर लिये। इस्लाम खा के पुत्र फतह खा ने सुल्तान मुहम्मद से फरियाद की। बादशाह ने हाजी हुसाम खा को, जो नायबे हजरत[1] था, बहुत बडी सेना देकर इस आशय से भेजा कि वह बहलोल खा को समझा कर सेना, हाथी तथा खजाना इस्लाम खा के पुत्र को दिला दे। यदि वह अन्य प्रकार का व्यवहार करे तो वह उसे दड दे। हाजी (हुसाम खा) ने बहुत बडी सेना लेकर बहलोल खा के विरुद्ध प्रस्थान किया। बहलोल खा ने यह समाचार पाकर अफगान सैनिकों को लेकर जो ५०० की सख्या में थे और जो उसके बहुत बडे भक्त तथा उसके प्रति निष्ठावान् थे, शाह धोरह तथा खिज्राबाद के मध्य (५) में हुसाम खा से युद्ध किया।[2] घमासान युद्ध हुआ। अन्त में हुसाम खा की हत्या हो गई और उसकी सेना पराजित हो गई। बहलोल खा हाजी हुसाम खा की सेना तथा घोडों पर अधिकार जमा कर विजय तथा सफलता प्राप्त करके सहरिन्द लौट गया।

अलाउद्दीन का सिंहासनारूढ होना

इसी बीच में सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु हो गई। उसका पुत्र अलाउद्दीन सिंहासनारूढ हुआ। अलाउद्दीन बडा ही अभागा और रूप, रग तथा चरित्र में साधारण व्यक्ति था और उसकी आदतें बडी ही लज्जाप्रद थी। क्योकि वह बादशाही के योग्य न था अत अधिकाश अमीर जो प्रान्तो में थे, स्वतत्र हो गये। लोदियों ने युक्ति से लाहौर से पानीपत तक का राज्य अपने अधिकार में कर लिया। अहमद खा मेवाती ने महरौली से लादो सराय तक के प्रदेश, जो देहली के निकट थे, अपने अधिकार में कर लिये। सुल्तान अलाउद्दीन देहली नगर में दो तीन अन्य परगनों को लिये राज्य करता था। उस काल के लोग कहते थे कि, "बराईये शाह आलम अज़ देहली ता पालम"[3]।

हमीद खा का वजीर होना

उस अवसर पर बहलोल खा ने प्रार्थना की, कि "यदि सुल्तान, यमीन खा को विज़ारत से पृथक् करके उसकी हत्या करा दे और विज़ारत का पद हमीद खा को प्रदान कर दे तो मैं उपस्थित होकर बादशाह (६) की सेवा करूँगा और विभिन्न दिशाओ से चालीस परगने निकाल कर खालसे[4] में सम्मिलित कर दूँगा।" क्योंकि अलाउद्दीन को बादशाही के कार्य का कोई अनुभव न था, उसने यमीन खा की, जो उसका बहुत बडा सहायक था, हत्या करा दी और अपने राज्य के मुख्य वजीर को नष्ट करा दिया। उसके राज्य

१ देहली में बादशाह का नायब।

२ 'मखज़ने अफ़ग़ानी' के अनुसार 'करा' ग्राम में, जो खिज्राबाद साधोरा परगने के अधीन है, घोर युद्ध हुआ। हुसाम खा पराजित होकर देहली चला गया।

३ 'संसार के बादशाह का राज्य देहली से पालम तक'।

४ खालसा—देखिये पृ० २०० नोट नं० २।

में थोडी-बहुत जो सुव्यवस्था थी वह भी समाप्त हो गई। तदुपरान्त बादशाह ने हमीद खा को, जो बहुत बडा अमीर था, वज़ीर नियुक्त कर दिया। बहलोल खा उसकी सेवा में उपस्थित हो गया और इधर-उधर से ३० परगने निकाल कर उसने खालसे में सम्मिलित कर दिये।

हमीद खा का बहलोल को देहली बुलवाना

इसी बीच में सुल्तान अलाउद्दीन ने बदायूं की ओर प्रस्थान करने का सकल्प किया और बहलोल खा सहरिन्द के लिय विदा हो गया। राय प्रताप देव ने, जिसके पिता को हमीद खा ने हत्या कर दी थी, बादशाह से निवेदन किया कि "हमीद खा माडू के बादशाह सुल्तान महमूद से मिल गया है। उसने उसे भारी सेना सहित आक्रमण करने के लिये आमत्रित किया है। मैंने किसी न किसी युक्ति से उसे रोक रक्खा है।" हमीद खा को जब सुल्तान (अलाउद्दीन) के हृदय की बात का पता चला तो वह बडा शक्ति हुआ। वह दौलत खा सहित बदायूं से निकला और अपनी सेना को लेकर देहली की ओर चल दिया। उसने सुल्तान के आदमियो तथा अन्त पुर को देहली के किले से निकाल दिया। सुल्तान अलाउद्दीन दुर्भाग्यवश कुछ न कर सका और प्रतिकार को आज-कल पर टालने लगा। इसी बीच में हमीद खा, अलाउद्दीन के स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति को सिंहासनारूढ करने के विषय में सोचने लगा। उसके विचार से दो व्यक्ति इस कार्य के योग्य थे। एक बहलोल खा, दूसरा सुल्तान महमूद माडू का शासक। बहलोल खा इस बात से अवगत होकर अत्यधिक अफगानो सहित देहली पहुचा और हमीद खा से भेंट करके सम्मानित हुआ। वह उसकी सेवा में उपस्थित रहने लगा और प्रतिदिन अभिवादन हेतु जाने लगा। एक दिन हमीद खा ने बहलोल से कहा, "बादशाही स्वीकार कर लो।" उसने उत्तर दिया, "मैं सिपाही हूँ। मेरे जैसे व्यक्ति का राज्य से क्या सम्बन्ध? आप सिंहासनारूढ हो जाय। मैं आपका सिपह-(७) सालार हो जाऊगा।" हमीद खा ने कहा, 'मेरा विचार बादशाही करने का नही। क्योकि सुल्तान राज्य के कार्यों के योग्य नही है और उसके राज्यकाल में इस्लाम की बडी ही दुर्दशा हो गई है अत विवश होकर तुझ से यह बात कही है।" बहलोल खा ने यह कार्य करना पुन स्वीकार न किया किन्तु हृदय में वह सर्वदा राज्य प्राप्त करने के विषय में सोचा करता था।

राज्य प्राप्त करने का प्रयत्न

एक दिन बहलोल ने अफगानो से कहा, "तुम लोग हमीद खा की सभा में अपने आपको पागलो के समान सिद्ध कर दो ताकि तुम्हारा आतक उसके हृदय से समाप्त हो जाय।" एक दिन हमीद खा ने बादशाहो के समान जश्न का आयोजन किया। अफगानो ने उस सभा मे अपने आपको पागलो के समान प्रकट किया। कुछ लोगों ने अपने जूतों को अपनी कमर मे बाध लिया। कुछ लोगो ने एक ऊँचे आले पर जो हमीद खा के निकट था जूते रख दिये। जब पान लाया गया तो उन्होंने चूने को सुगन्धियो से मिला दिया। हमीद खा उन लोगों की इन बातो को देखकर आश्चर्य में पड गया। उसने बहलोल खा से इसका कारण पूछा। उसने उत्तर दिया, "ये लोग वहशी हैं। खाने तथा मरने के अतिरिक्त कुछ नही जानते।" जिस स्थान पर हमीद खा बैठा था, विभिन्न रगों के कालीन तथा फर्श बिछे थे। अफगानो ने कहा, "खान जियु सलामत! आपके कालीन बडे रगीन तथा फूलदार हैं। यदि कृपा करके इनमे से एक आप हमें प्रदान कर दें तो हम अपने पुत्रों के लिये टोपियां बनवा कर भेज दें ताकि लोगो को ज्ञात हो जाय कि हम लोग भी खान के विश्वासपात्र हैं।" हमीद खा ने हँसकर उन्हें कई थान कपडो के दिये।

सक्षेप में, वहलोल खा अफगानो को एकत्र करने का प्रयत्न करने लगा। नित्य-प्रति अफ़ग़ान (८) उसके पास एकत्र होते थे। वाह्य रूप से वहलोल हमीद खा की चाटुकारी किया करता था और सर्वदा उसके अभिवादन हेतु जाया करता था। थोडे से अफगान उसके साथ रहते थे। जब उसका षड्-यत्र पूरा हो गया तो उसने अफगानो से कहा, "जब मै हमीद खा के महल में प्रविष्ट होऊ तो तुम भी प्रविष्ट हो जाना। जब द्वारपाल रोके तो कह देना कि वहलोल खा कौन होता है जो उसके कहने पर हम वाहर रहें। मुझे गाली देते हुये भीतर प्रविष्ट हो जाना।"

एक दिन (हमीद खा ने) वहुत वडे जश्न का आयोजन किया। वहलोल खा ३०० अफगानों सहित वहा पहुचा। अफगान भी उसके पीछे-पीछे प्रविष्ट होने लगे। जब द्वारपालों ने रोका तो वे चिल्लाने लगे और वहलोल खा को गालिया देने लगे। जब शोर होने लगा तो हमीद खा ने पुछवाया कि, "यह कैसा शोर है ?" द्वारपालो ने कहा कि, "वहलोल के मना करने के वावजूद अफगान घुस आये हैं।" हमीद खा ने कहा, "यदि वे हमारे अभिवादन हेतु आ रहे हैं तो उन्हें आने दो।" उस दिन से द्वारपालो ने उन्हें रोकना छोड दिया। नित्य-प्रति अफगान लोग वहलोल खा के साथ कवच धारण करके आने लगे।

ईदुल फितर[1] के दिन वहलोल खा ने १००० कवचधारी अफगानो सहित जो ऊपर से ईद के वस्त्र धारण किये हुये थे यह निश्चय किया कि, "मै आज हमीद खा को वन्दी बना लूँ।" उसने १००० अफगानो से कहा, "जब मैं हमीद खा को वन्दी बना लूँ तो तुम विभिन्न स्थानों पर खजाने घोडो, हाथियो तथा कारखानो के विषय मे सावधान हो जाना और किले के द्वारों पर अधिकार जमा लेना। वहलोल खा ने सोने की शृखला कुतुव खा की आस्तीन में छुपा दी और अपने आदमियो से कह दिया कि, 'भोजन के जशन के उपरान्त जब हमीद खा के सेवक छिन्न-भिन्न हो जाय तो जो कोई भी उस स्थान पर हो उसके (९) ऊपर दो अफगान खडे हो जायँ।"

हमीद खा का वन्दी वनाया जाना

सक्षेप में, वे हमीद खा की सभा में पहुचे। जब प्रीति-भोज के उपरान्त हमीद खा के सहायक छिन्न-भिन्न हो गये तो जिस स्थान पर हमीद खा था, उस स्थान पर उसके दो सेवक खडे थे। उन दोनो के पास दो दो अफगान खडे हो गये। कुतुव खा ने वहलोल खा के सकेत पर जजीर निकाल ली और तलवार खीच कर हमीद खा पर अधिकार जमा लिया और उससे कहा कि, "इसे पहन लो और कुछ समय तक एकान्त में रहो।" उसने कहा, "हमने तुम्हारे लिये क्या बुराई की थी जो तुम हमारे लिये यह बुराई कर रहे हो ?" उन्होंने कहा, "हम भी तेरे विषय में कोई बुराई न करेंगे किन्तु तूने सुल्तान अलाउद्दीन से विश्वास-घात किया अत हमारा विश्वास तुझ पर से हट गया।" सक्षेप में, उसे वन्दी बना कर उसके समस्त खजाने तथा हाथियो पर अधिकार जमा लिया गया और खुशी के ढोल वजाये गये।

सुल्तान अलाउद्दीन का राज्य को त्यागना

(वहलोल ने) सुल्तान अलाउद्दीन को लिखा कि "आपके शत्रु की, जिसे आपने आश्रय प्रदान किया था किन्तु जो विद्रोह करना चाहता था, हमने हत्या कर दी और अब हम आप के नायव के रूप में राज्य के कारखाने को, जो वडा ही शक्तिहीन हो गया था, उन्नति दे रहे हैं और आपके आज्ञाकारी हैं। आपके

१ एक मास के रोज़े (रमजान मास) के वाद की ईद।

नाम का खुत्वा तथा सिक्का, जो समाप्त हो चुका था, पुन जारी कर रहे हैं।" सुल्तान अलाउद्दीन ने उत्तर भेजा कि, "मैंने बादशाही का कार्य त्याग दिया है और उससे हाथ खीच लिया है। मेरा पिता तुझे पुत्र कहा करता था और तू मेरे भाई के स्थान पर है। यदि समय के अनुसार उचित हो तो तू (राज्य का) कार्य प्रारम्भ कर। मैंने राज्य त्याग दिया है और बदायूँ से सतुष्ट हू।" जब यह पत्र बहलोल खा को प्राप्त हुआ तो उसने एक बहुत बडे जश्न का आयोजन कराया और सोने के काम का शामियाना (१०) लगवाया तथा नाना प्रकार के फर्शों को बिछवा कर जडाऊ सिंहासन लगवाये तथा २७ मुहर्रम ८५५ हि० (१ मार्च १४५१ ई०) को सिंहासनारूढ हुआ[1] और अपनी उपाधि अबुल मुजफ्फर बहलोल शाह रक्खी। चारो ओर दान-पुण्य हुआ और लोगों ने बधाई दी। विरोधियो तथा सहायकों ने (सुल्तान बहलोल) के पास उपस्थित होना प्रारम्भ कर दिया। उसके उन्नतिशील सौभाग्य के कारण विद्रोही लोग उसके राजसिंहासन के समक्ष सिर रखकर हाथ बाध कर खडे हो गये।

राज्य के विस्तार का प्रयत्न

तदुपरान्त उसने राज्य पर अधिकार जमाने के लिये प्रस्थान किया। सर्वप्रथम उसने प्रताब राय पर चढाई की और अत्यधिक प्रयत्न के उपरान्त उसे बन्दी बनाकर उससे धन-सम्पत्ति प्राप्त की। तत्पश्चात् उसने दोआब पर आक्रमण किया और उसे भी खालसे मे सम्मिलित कर लिया। इसके उपरान्त उसने अहमद खा मेवाती पर चढाई की। उसके ११ परगने अपने अधिकार में कर लिये और शेष उसी के पास रहने दिये।

सुल्तान महमूद शर्की द्वारा देहली पर आक्रमण

उसने अपने सिंहासनारोहण के प्रथम वर्ष में लाहौर पर आक्रमण किया और दरिया खा लोदी तथा इस्कन्दर शाह सरवानी को देहली मे छोड गया। सुल्तान अलाउद्दीन के कुछ अमीरो के सुल्तान महमूद शर्की की ओर आकर्षित होने तथा अफगानो के राज्य से सतुष्ट न रहने का कारण यह था कि सुल्तान अलाउद्दीन की पुत्री का विवाह उससे हुआ था। उसने अपने पति से कहा कि "देहली का राज्य मेरे पूर्वजों का था। बहलोल खा कौन होता है जो मेरे पूर्वजो के राज्य पर अधिकार जमाये। यदि तू आक्रमण न करेगा तो मैं कमर मे निपग बाध कर बहलोल से युद्ध करूगी।" सुल्तान अपनी पत्नी के शब्दो से बडा प्रभावित हुआ। ८५६ हि० (१४२१ ई०) में वह अत्यधिक सेना तथा पर्वत रूपी १००० हाथियो (११) को लेकर देहली पहुचा और उसे घेर लिया। उन दिनो सुल्तान बहलोल सहरिन्द के समीप था। ख्वाजा बायज़ीद, शाह इस्कन्दर सरवानी तथा इस्लाम खा की पत्नी बीबी मत्तू अपने समस्त परिवार तथा अफगानो सहित किले की रक्षा करने लगे। किले में पुरुषों की सख्या कम थी। बीबी मत्तू स्त्रियो को पुरुषो के वस्त्र पहना कर किले के बुर्जो पर भेज देती थी ताकि पुरुष दिखाई पडते रहें। एक दिन शाह इस्कन्दर सरवानी किले के बुर्ज पर बैठा था। सुल्तान महमूद का सक़्क़ा[2] बुर्ज के नीचे की बावली से जल ले जा रहा था। शाह इस्कन्दर नावकी[3] ने उसकी ओर इस प्रकार बाण फेंका कि

१ 'मआसिरे रहीमी' भाग १ (पृ० ४३७) के अनुसार १७ रबी-उल-अव्वल ८५५ हि० (१६ अप्रैल १४५१ ई०)। 'मख़ज़ने अफ़गानी' में भी यही तिथि दी हुई है।

२ जल ले जाने वाला।

३ धनुर्धर।

पखालो तथा बैल को छेदता हुआ भूमि में घुस गया। इसके उपरान्त क़िले के निकट कोई भी न आया।

सन्धि की वार्ता

जब बहलोल के पहुंचने में विलम्ब हुआ तो क़िले वालो ने यह देखा कि वे अब विवश हैं। सेना वाले साबात[1] तथा गरगज[2] तैयार करके आतशबाज़ी के हुक्के[3] इस प्रकार क़िले में फेंकते थे कि भीतर वालो मे इतना साहस न होता था कि वे घरों के प्रागण में निकल सकें। विवश होकर वे सधि कर लेने पर तैयार हो गये। उन्होने यह निश्चय किया कि किले के द्वारों की कुजिया सुल्तान के आदमियों को देकर बाहर निकल जाय। सैयिद शम्सुद्दीन किले की कुजियां दरिया खा लोदी के पास जो किले को घेरे हुआ (१२) था, ले गया और कहा, "मुझे आप से कुछ निवेदन करना है। यदि आप सब लोगों को हटा दें तो निवेदन करू।" दरिया खा ने जो लोग उसके आस पास थे, उन्हें हटा दिया। सैयिद ने उससे पूछा कि, "तुम्हारा सुल्तान महमूद से क्या सम्बन्ध है?" दरिया खा ने कहा, "कोई सम्बन्ध नही। मैं सुल्तान महमूद का सेवक हू।' सैयिद ने पुन पूछा, "तुम्हारा सुल्तान बहलोल से क्या सम्बन्ध है?" दरिया खा ने कहा, "हम भी लोदी हैं और वह भी लोदी है।" सैयिद शम्सुद्दीन ने क़िले की कुजियां उसके समक्ष रख दी और कहा, "या तो अपनी माताओ तथा बहिनो के पर्दे की रक्षा करो और या उन्हें शत्रु को सौंप दो ताकि वे उन्हें अपमानित करें।" दरिया खा ने कहा, "मैं क्या करू? सम्बन्ध के कारण मैं क़िले की विजय में विलम्ब करता था किन्तु सुल्तान बहलोल ने पहुचने मे बड़ी देर कर दी। तू इस समय कुजियों को अपने पास रख और जो कुछ मैं करूगा उसे देखता रह।'

दरिया खा का बहलोल के विरुद्ध प्रस्थान

दरिया खा ने सुल्तान महमूद के पास सैयिद के आने तथा कुजियों के लाने का हाल बताया। सुल्तान ने पूछा, "तू कुजियों को क्यों न लाया?" दरिया खा ने कहा, 'सुना जाता है कि बहलोल बहुत भारी सेना लिये आ रहा है। सर्वप्रथम यह उचित होगा कि हम उससे युद्ध करें। यदि हम उसे विजय कर लेते हैं तो देहली हमारी है।' सुल्तान ने पूछा, "क्या करना चाहिये?" दरिया खा ने कहा, 'मुझे तथा फतह खा को आदेश हो कि हम बहलोल खा को पानीपत के इस ओर न आने दें।' सुल्तान महमूद को यह बात पसन्द आ गई। उसने इन दोनों अमीरों को ३०,००० अश्वारोहियों तथा ४० युद्ध के हाथियों को देकर बहलोल के विरुद्ध भेजा। इसी बीच में सुल्तान बहलोल नरीला[4] पहुच गया था। सुल्तान महमूद की सेना नरीला के इस ओर दो कोस पर पहुच कर उतरी। रात हो गई। बहलोल की सेना वाले सुल्तान (१३) महमूद की सेना के बैलों, ऊँटों तथा घोड़ों को दो बार छीन ले गये। दूसरे दिन दोनों सेनाओं

१ एक प्रकार का ढँका हुआ भाग जिससे आक्रमणकारी बिना अधिक हानि के सुगमतापूर्वक किले पर आक्रमण कर सकते थे।

२ एक प्रकार का चलता फिरता मचान जिसे ऊँचा करके किले की दीवार के बराबर कर दिया जाता था। इसके कारण किले पर आक्रमण करने में सुविधा होती थी। कभी-कभी इन पर छत भी बना दी जाती थी जिससे किले के भीतर से आक्रमण करने वाले इन्हें कोई हानि न पहुँचा सकें।

३ विस्फोटक पदार्थ से भरा हुआ ऐसा बेलन अथवा बाण जो दूर से शत्रु के किले पर अथवा सेना में फेंका जाता था।

४ 'मखज़ने अफ़ग़ानी' के अनुसार 'नरीला जो देहली से १५ कोस है'।

का युद्ध हुआ। बहलोल की सना मे १४,००० अश्वारोही तथा महमूद की सेना में ३७,००० अश्वारोही थे। लोदियों ने इस प्रकार घोर युद्ध किया कि महमूद की सेना ने दातो के नीचे आश्चर्य-चकित होकर अगुली दवा ली। कुतुब खा ने हाथी के मस्तक पर ऐसा वाण मारा कि वाण का समस्त लोहा मस्तक में घुस गया। उस हाथी ने मुड कर अपनी ही सेना को रौंदना प्रारम्भ कर दिया। उसके पीछे-पीछे कुतुब खा ने वीर अफगानो सहित हत्याकाड शुरू कर दिया। महमूद की अधिकाश सेना की हत्या हो गई। इसी बीच में दरिया खा, कुतुब खा के पास पहुचा। कुतुब खा ने चिल्ला कर कहा, 'तू भी हमारी कौम का है। तेरी मातायें तथा वहिनें वन्दी है। तू शत्रु की विजय के लिये प्रयत्नशील है। इस बात से आश्चर्य होता है।" दरिया खा ने कहा, 'मै जाता हू किन्तु तू मेरा पीछा न करना।" दरिया खा पीठ दिखा गया। महमूद की सेना पराजित हो गई। वहलोल विजयी तथा सफल हुआ। उसने हाथियों, घोडो, तथा लूट की धन-सम्पत्ति पर अधिकार जमा लिया। वहा से वह प्रसन्नतापूर्वक देहली को प्रस्थान करने की व्यवस्था करने लगा।

सुल्तान महमूद का पलायन

इस विजय के समाचार शाह इस्कन्दर को प्राप्त हुये। सुल्तान महमूद ने कहा, "पता लगाओ कि किले में किस कारण वाजे वज रहे हैं।" उसके आदमियो ने वताया कि "आज किले वाले बडे प्रसन्न हैं और वधाई के शोर सुने जा रहे हैं।" उसी समय महमूद की सेना घायल तथा शोचनीय दशा में पहुँची। दरिया खा ने पहुच कर वहलोल की सेना की विजय तथा अपनी पराजय का विवरण इस प्रकार दिया कि सुल्तान की सेना वाले आतकित हो गये और उसने महमूद को इस प्रकार भय दिलाया कि वह (१४)पलायन की तैयारिया करने लगा और उसकी सेना अव्यवस्थित हो गई। इसी बीच में वहलोल शाह ने पहुच कर उसका पीछा किया और पचास हाथियो तथा धन-सम्पत्ति पर अधिकार जमा लिया। कुतुब खा ने २० कोस तक उसका पीछा किया।

महमूद का देहली पर पुन आक्रमण

महमूद पराजित होकर वडी ही लज्जित अवस्था में जौनपुर पहुचा और उसने पुन एक बहुत वडी सेना एकत्र करके शम्सावाद पहुचकर वहा के समीप के स्थानो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। बहलोल शाह बहुत बडी सेना लकर वहा पहुचा और कुतुब खा को १०,००० अश्वारोहियों की एक सेना देकर उससे युद्ध करने के लिये भेजा। उस युद्ध में दरिया खा लोदी सुल्तान बहलोल से मिल गया। युद्ध में अचानक कुतुब खा का घोडा गिर पडा और वह घोडे से पृथक् हो गया और सुल्तान महमूद के आदमियो द्वारा वन्दी बना लिया गया। सुल्तान महमूद ने उसे जौनपुर भेज दिया और वह सात वर्ष तक वन्दीगृह में रहा।

मुहम्मद शाह का देहली में सिंहासनारूढ होना

इसी बीच में महमूद की मृत्यु हो गई। उसकी माता वीबी राजी ने अमीरो की सहमति से शाहजादा भीकन खा को सिंहासनारूढ कर दिया और उसकी उपाधि मुहम्मद शाह रक्खी गई। उसने बहलोल शाह से सन्धि कर ली। प्रत्येक अपने-अपने राज्य को लौट गया।

वहलोल का जौनपुर की ओर पुन प्रस्थान

जब बहलोल देहली के समीप पहुचा तो कुतुब खा की वहिन शम्स खातून ने सन्देश भेजा कि "कुतुब खा जौनपुर के वादशाह के बन्दीगृह में है। ऐसी अवस्था में सुल्तान को किस प्रकार नीद आती

है?" बहलोल शाह ने प्रभावित होकर पुन भारी सेना सहित मुहम्मद शाह पर आक्रमण किया। वह भी सुल्तान से मुकाबले के लिये निकला।

मुहम्मद शाह का अपने भाइयो की हत्या कराना

मुहम्मद शाह ने अपने कोतवाल को लिखा कि वह कुतुब खा तथा सुल्तान महमूद के दोनो पुत्रो की हत्या करा दे। कोतवाल ने गुप्त रूप मे जलाल खा को विष दे दिया। जब बीबी राजी को यह ज्ञात (१५) हुआ तो उसने कुतुब खा तथा दूसरे शाहजादे की रक्षा की। कोतवाल ने मुहम्मद शाह को लिखा कि "वे दोनो मेरे अधिकार मे नही।" मुहम्मद शाह ने अपनी माता को लिखा कि "बहुत सी आवश्यक बाते आपके आने पर निर्भर है। आशा है कि आप शीघ्र इस ओर पधारेंगी।" वह मार्ग ही में थी कि कोतवाल ने दूसरे शाहजादे की हत्या करा दी। बीबी राजी को यह समाचार कन्नौज मे प्राप्त हुये। वह उसके शोक में ग्रस्त हो गई। उसने बहादुर नामक अपने एक दास को १०,००० अश्वारोहियों सहित कुतुब खा की रक्षा हेतु भेजा। मुहम्मद शाह ने अपनी माता को लिखा कि 'समस्त शाहजादो की यही दशा होगी। माता जी सभी के लिये एक साथ शोक प्रकट कर ले।" इसी बीच में मुहम्मद शाह का पुत्र जलाल खा बहलोल शाह के आदमियो द्वारा बन्दी बना लिया गया और उसे कुतुब खा के बदले में बन्दी रक्खा गया।

सुल्तान हुसेन का सिंहासनारोहण

मुहम्मद शाह बडा ही निष्ठुर तथा अत्याचारी था। सभी लोग उससे घृणा करने लगे। बीबी राजी ने अमीरो की सहमति स हुसेन खा को सिंहासनारूढ कर दिया और उसकी उपाधि सुल्तान हुसेन निश्चित की। समस्त सेना वाले मुहम्मद शाह के विरोधी हो गये और उससे पृथक् हो गये। जब मुहम्मद शाह ने सेना को विरोध करते देखा तो कुछ अश्वारोहियो सहित एक उद्यान में, जो समीप ही था, प्रविष्ट हो गया। समस्त सेना ने बीबी राजी के आदेशानुसार उस उद्यान को घेर लिया। क्योकि मुहम्मद शाह बडा ही कुशल धनुर्धर था अत कुछ सैनिको ने उसके सिलाहदार[1] को मिलाकर उसके बाणो से लोहे की नोक को पृथक् करा दिया। युद्ध के दिन मुहम्मद शाह को समस्त बाण नोक के बिना प्राप्त हुये। अन्त में उसने तलवार निकाल ली और कुछ लोगो की हत्या कर दी। किन्तु वह बन्दी बना लिया गया। बीबी राजी उसे जजीर मे बधवा कर अपने साथ ले गई और सुल्तान हुसेन को भारी सेना देकर (१६) बहलोल से युद्ध करने के लिय भेज दिया। सुल्तान हुसेन सधि के लिये तैयार हो गया और कुतुब खा को उसी पडाव से सम्मानित करके मुल्तान के पास भेज दिया। सुल्तान (बहलोल) ने भी शाहजादा जलाल खा को बडे सम्मान से सुल्तान की सेवा में भेज दिया।

हुसेन शाह शर्की द्वारा आक्रमण

एक वर्ष उपरान्त सुल्तान हुसेन ने विश्वासघात किया और वह ७०,००० अश्वारोहियो तथा १००० मस्त हाथियो सहित सुल्तान बहलोल से युद्ध हेतु आया। सुल्तान बहलोल व्याकुल होकर कुतुबुल अकताब[2] के पवित्र मकबरे में रात भर ईश्वर से प्रार्थना तथा विलाप करता रहा। आधी रात मे परोक्ष से एक व्यक्ति प्रकट हुआ और बहलोल शाह के हाथ में एक डडा देकर कहा, "जाओ इस डडे से भैंसों को

१ शस्त्रागार के अधिकारी।

२ कुतुबुल अक्ताब ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी देहली के प्रसिद्ध सूफी (सन्त) थे जिनका निधन १२३५ ई० में हुआ और जो देहली में दफ़न है।

भगा दो।" उसने दूसरे दिन प्रसन्नता पूर्वक युद्ध करना निश्चय कर लिया। कुतुब खा ने हुसेन खा के पास सन्देश भेजा कि "बीबी राजी ने मुझे आश्रय प्रदान किया था और मैं उनका बडा आभारी हू।" इस पर पुन सधि हो गई।

सुल्तान हुसेन द्वारा पुन आक्रमण

एक वर्ष उपरान्त सुल्तान ने पुन विश्वासघात किया। इस बार एक बहुत बडी सेना उससे युद्ध करने के लिये पहुची और उसे पराजित कर दिया। उसका जौनपुर तक पीछा किया गया। वह जौनपुर के बाहर भाग गया। सुल्तान बहलोल ने जौनपुर अपने लघुपुत्र को प्रदान कर दिया और एक असख्य सेना उसके अधीन कर दी।

सुल्तान का कालपी, ग्वालियर तथा सहरिन्द की ओर प्रस्थान

कालपी को उसने आजम हुमायूं को प्रदान करके ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया। राजा मान ने अत्यधिक पेशकश अर्पण की। ग्वालियर उसी के पास रहने दिया गया। सुल्तान वहा से देहली पहुचा और वर्षा ऋतु वही व्यतीत की। वर्षा ऋतु उपरान्त उसने लाहौर की ओर प्रस्थान किया। सहरिन्द पहुच कर उस नगर को शुभ समझने के कारण उसने आदेश दिया कि अमीरो की (१७) पत्निया अपने-अपने नाम से पृथक् मुहल्ले बसा लें। उस समय से उस शुभ नगर की उन्नति होने लगी।

सुल्तान बहलोल का विवाह

कहा जाता है कि जब बहलोल खा उस नगर (सहरिन्द) का हाकिम था तो उसने किले के बाहर स्वर्ग रूपी एक हवेली का निर्माण कराया था और कभी-कभी वही निवास करता था। उस स्थान के समीप एक सुनार निवास करता था। उसकी पुत्री हेमा नामक बडी ही रूपवती थी। सयोग से बहलोल की दृष्टि उस पर पड गई और वह उस पर आसक्त हो गया। उस चन्द्रमा तुल्य (स्त्री) ने भी अपना हृदय उसे दे दिया। जब वह सिंहासनारूढ हुआ तो उसने उसके पिता को प्रसन्न करके उससे विवाह कर लिया।

सुल्तान सिकन्दर के जन्म के विषय मे स्वप्न

एक रात्रि म उस युवती ने स्वप्न देखा कि एक चन्द्रमा आकाश से पृथक् होकर उसकी गोद मे पहुच गया। दूसरे दिन उसने इस स्वप्न की बहलोल से चर्चा की। जब स्वप्न की व्याख्या करने वालो से पूछा गया तो उन्होंने बडी छानबीन के उपरान्त यह बताया कि "इस ससार की मलका के गर्भ से एक ऐसे पुत्र का जन्म होगा जो राजसिंहासन का स्वामी होगा।" सुल्तान इस बात से बडा प्रसन्न हुआ और उसने दरिद्रियों को न्योछावर बाटे।

ग्वालियर पर आक्रमण

दो वर्ष पजाब मे सैर तथा शिकार मे व्यतीत करने के उपरान्त उसने देहली की ओर प्रस्थान किया। इसी बीच में राजा मान नरक को पहुच गया था, और उसके पुत्र ने उसका स्थान ग्रहण कर लिया था। दरिया खा लोदी को इस अभियान हेतु नियुक्त किया गया। मान के पुत्र ने १२ हाथी तथा दो लाख

रुपये पेशकश[1] के रूप में भेंट किये और आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। उसने यह वार्षिक पेशकश देना स्वीकार किया।

सुल्तान हुसेन द्वारा आक्रमण

इसी बीच में सुल्तान हुसेन एक भारी सेना लेकर काल्पी के समीप पहुचा। बारबक शाह ने दो (१८) तीन बार उससे युद्ध किया। अन्त में वह पराजित हुआ। उसने अपने अत्यधिक परिजन तथा असबाब उसे प्रदान कर दिये। यह समाचार सुल्तान बहलोल को प्राप्त हुये। प्रत्येक स्थान से सेना एकत्र करके अत्यधिक सेना सहित उसने युद्ध के लिये प्रस्थान किया। जब वह काल्पी के समीप पहुचा तो सुल्तान हुसेन ने अपने भतीजे को जिसका नाम जलाल खा था, ३०,००० वीर अश्वारोहियो सहित युद्ध करने के लिये भेजा। सुल्तान बहलोल ने कुतुब खा, अहमद खा तथा दौलत खा को गगा के पार कराया और आदेश दिया कि १५००० अश्वारोही घात लगाये बैठे रहें। दौलत खा को १५००० अश्वारोहियो सहित युद्ध हेतु भेजा और यह आदेश दिया कि "यदि सुल्तान महमूद (हुसेन) की सेना भारी पडने लगे तो तुम लोग पीठ दिखा कर चल देना और (शत्रु की) सेना को उस ओर ले आना जहा कुतुब खा घात लगायें बैठा हो। इस प्रकार (शत्रु की) सेना के बीच में घिर जाने के उपरान्त दोनो ओर से मार्ग रोक कर युद्ध में किसी प्रकार की शिथिलता न प्रदर्शित की जाय।" उन लोगो ने सुल्तान के आदेशानुसार सुल्तान हुसेन की सेना से घोर युद्ध किया। जलाल खा भी इस युद्ध में मारा गया। ३० पर्वत रूपी हाथी, अत्यधिक घोडे तथा अपार धन-सम्पत्ति सुल्तान बहलोल की सेना को प्राप्त हुई। वे विजय के उपरान्त राज-सिंहासन के समक्ष उपस्थित हुये और विजय की बधाई प्रस्तुत की। बहलोल ने बारबक शाह को काल्पी में सिंहासनारूढ कर दिया। सुल्तान हुसेन बहलोल से युद्ध की शक्ति न देखकर निरन्तर यात्रा करता हुआ जौनपुर की ओर चल दिया और सुल्तान (बहलोल) देहली की ओर लौट गया। दो वर्ष तक वह भोगविलास तथा शिकार में ग्रस्त रहा और किसी ओर कोई दुर्घटना न हुई।

सुल्तान सिकन्दर का जन्म

उसके सिंहासनारोहण के सातवें वर्ष शुभ मुहूर्त में एक भाग्यशाली पुत्र का जन्म हुआ। सुल्तान (१९) बडा प्रसन्न हुआ और उसने भोगविलास की सभाओ का आयोजन कराया और उसका नाम निजाम खा इस कारण रक्खा कि उसके समस्त कार्य उस समय तक सुव्यवस्थित हो गये थे। बाल्यावस्था से ही उसका दरबार पृथक् कर दिया और सबल की सरकार उसे प्रदान कर दी तथा खाने खाना फर्मुली की गोद में उसे सौप दिया, और उसे उसका अतालीक[2] नियुक्त कर दिया। जब शाहजादे की अवस्था ५ वर्ष की हुई तो वह एक दिन धनुष बाण लिये हुये सुल्तान के समक्ष से गुजरा। सुल्तान ने उसे बुलाकर यह सोचा कि "क्योकि मुझे राणा से युद्ध करना है अत इस पुत्र के बाण से फाल[3] लूं। यदि इसका बाण लक्ष्य पर लग जायगा तो नि सन्देह विजय हो जायगी।" उसने निजाम को बुलाकर कहा, "हे निजाम! आ और इस फूल पर जो झाडी पर खिला हुआ है निशाना लगा।" शाहजादे ने फूल को बाण की नोक से इस

१ कर।
२ गुरु।
३ किसी कार्य की सफलता के लिये ईश्वर की इच्छा पता लगाने की विधि।

कुशलता से तोड लिया कि झाडी न हिली। सुल्तान वडा प्रसन्न हुआ और उसने ल्लाट का चुम्बन लेकर सहारन्द की सरकार उसे प्रदान कर दी कारण कि वह स्थान शुभ था।

राणा के विरुद्ध प्रस्थान

कुछ समय उपरान्त उसने राणा की ओर चढाई की और निरन्तर यात्रा करते हुये अजमेर में शाही शिविर लगवाये और शक्तिशाली सेना को राणा के विरुद्ध नियुक्त कर दिया। राणा का भागिनेय चत्र साल[1] १०,००० अश्वारोहियो सहित उदयपुर में था। कुतुब खा वहा पहुच गया और अभागे काफिरो से युद्ध (२०) प्रारम्भ हो गया। सर्वप्रथम शाही सेना ने उन काफिरो को पीठ दिखा दी। वडे-वडे योग्य अफ़गान उस युद्ध में मारे गये। अन्त में कुतुब खा तथा खाने खाना फर्मुली ने प्राण हथली पर रख कर तलवार तथा कटार से युद्ध प्रारम्भ कर दिया और उन दुष्टों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। चत्र साल की हत्या हो गई। रणक्षेत्र में काफिर इतनी अधिक सख्या में मारे गये कि उनके सिरों के ढर लग गये और उनके रक्त से नदी वह निकली। सुल्तान की सेना को ५-६ हाथी, ४० घोडे तथा अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई। राणा की सेना पराजित हो गई। तदुपरान्त राणा ने शाही सेना से सधि कर ली और उदयपुर में सुल्तान के नाम का खुत्वा तथा सिक्का जारी हो गया।

नीमखार पर आक्रमण

तदुपरान्त सुल्तान ने विजयी सेना सहित नीमखार पर चढाई की और उस विलायत को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। वहा से शाही सेना को अपार धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई। वह वहा से पुन शहर (देहली) पहुचा और दो-तीन मास उपरान्त सेना सहित लाहौर की ओर प्रस्थान किया। कुछ दिन भोग-विलास में व्यतीत किये।

मुल्तान के वाली की सहायता हेतु सेना भेजना

उन दिनों अहमद खा भट्टी, जो सिन्ध मे प्रभुत्वशाली था और जिसके पास २०,००० अश्वारोही थे, मुल्तान के वाली के विरुद्ध विद्रोह कर रहा था। उसके प्रार्थना-पत्र[2] प्राप्त हुये कि "अहमद खा मुल्तान के ग्रामो को नष्ट-भ्रष्ट कर रहा है। यदि ससार के स्वामी इस ओर ध्यान दें तो उचित है, अन्यथा हमारा वहा रहना सम्भव न हो सकेगा। मुल्तान से हमारे निकल जाने के उपरान्त वह मुल्तान को अपने अधिकार में करके पजाब को विध्वस करने का प्रयत्न करेगा।' सुल्तान इस समाचार को पाकर वडा परेशान हुआ। उमर खा को जो प्रतिष्ठित अमीर था तथा शाहज़ादा वायजीद को ३०,००० वीर अश्वारोहियो सहित उस अभियान के लिये नियुक्त किया।

अहमद खा की सेना से युद्ध

(२१) वे मुल्तान से विदा होकर लाहौर से निरन्तर यात्रा करते हुये रवाना हुये। जब वे मुल्तान पहुचे तो मुल्तान का वाली भी वहा पहुच कर उनसे मिल गया और उनको मार्ग दर्शाता उन्हें उसके राज्य में ले गया। अहमद खा ने अपनी सेना के अभिमान पर तथा अपनी वीरता को दृष्टि में रखकर शाही सेना

१ छत्रसाल।
२ मुल्तान के वाली के।

की ओर ध्यान न दिया और स्वय अपने स्थान से न हिला। उसने अपने भतीजे को १५००० अश्वारोहियो सहित उनके विरुद्ध भेजा। वह युवक एक रूपवती पर आसक्त था और वह उसे सैर तथा शिकार में भी पृथक् न करता था। युद्ध के दिन भी वह उसे हौदज में बैठा कर लाया था। जब युद्ध प्रारम्भ हुआ तो नौरग खा ने १०,००० अश्वारोहियों को दाऊद खा के अधीन करके शाही सेना से युद्ध करने के लिये भेजा। दाऊद खा ने सुल्तान की सना से युद्ध प्रारम्भ किया। ऐसा घमासान युद्ध हुआ कि जिसे युग की आखों ने देखा भी न होगा। लाशो से रक्त की नदी वह निकली। दाऊद खा मारा गया और उनकी सेना पराजित हो गई। जब अहमद खा की सेना वाले पलायन करते हुये नौरग खा के पास पहुचे तो नौरग खा विलाप करते हुये अपनी प्रेमिका से विदा हुआ और प्राण हथेली पर लेकर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। शाही सेना के अधिकाश लोग नौरग खा की तलवार से दो टुकडे होकर गिर पडे। अचानक एक (२२) रवरक[1] का गोला नौरग खा के भी लगा और उस गोले द्वारा वह भी दो टुकडे हो गया।

नौरग खा की पत्नी की वीरता

जब नौरग खा की हत्या का समाचार उस स्त्री को, जिसने पुरुषो के कार्य सम्पन्न किये, प्राप्त हुये तो वह अस्त्र-शस्त्र धारण करके तथा सोने से मढा हुआ निषग अपनी कमर में लगा कर तथा खोद पहिन कर नौरग खा की सना में प्रविष्ट हो गई। उसने नौरग के भाई से कहा कि, "जब मै तुम्हारी सेना में प्रविष्ट हूँ तो यह उचित होगा कि तम समस्त सेना को मेरे अभिवादन हेतु भेज दो और यह प्रसिद्ध कर दो कि अहमद खा का पुत्र शाहज़ादा आ गया ताकि शत्रु की सना का साहस कम हो जाय और उन्हें यह विचार न हो कि उन्होने सेनापति की हत्या कर दी है।"

शाही सेना की पराजय

सक्षेप में, समस्त सेना घोडे से उतर कर अभिवादन हेतु प्रस्तुत हुई और खुशी के नक्कारे बजाये गये। शाही सेना का, जो अपनी शक्ति के कारण विजयी हो गई थी, साहस कम हो गया। अहमद खा की सेना एक साथ टूट पडी और ऐसा घोर युद्ध किया कि शाही सेना भाग खडी हुई। जब शाही सेना की पराजय क समाचार शाहजादा बायजीद को प्राप्त हुये तो उसने अपने आदमियो को बहुत डाटा। उस ओर जब अहमद खा को अपनी विजय क समाचार प्राप्त हुये और उसने उस स्त्री के प्रयत्न के विषय में सुना तो उसने चकित होकर दातो के नीचे अगुली दबा ली। वह स्त्री उसी प्रकार पुरुषो के वस्त्र तथा अस्त्र-शस्त्र धारण किये हुय अहमद खा के समक्ष उपस्थित हुई तो अहमद खा ने उसकी वीरता एव योग्यता की बडी प्रशसा की। उसे १० ००० रुपये के आभूषण प्रदान किये।

शाही सेना की विजय

इस ओर शाहजादा बायजीद ने अन्य सेना सहायतार्थ मँगवाई। सुल्तान ने दो तीन अमीरो को, (२३) जो बडी-बडी सेनाओ के स्वामी थ, रवाना किया।

जब सेना शाहज़ादा बायजीद के पास पहुची और उसने अहमद खा की विलायत पर आक्रमण किया तो अत्यधिक युद्ध क उपरान्त अहमद खा को बन्दी बना लिया और उसकी हत्या कर दी।

१ यह शब्द स्पष्ट नहीं।

शाहजादा उसके राज्य को खालसे मे सम्मिलित करके विजय तथा सफलता प्राप्त करने के उपरान्त सुल्तान बहलोल के पास लौट गया और शाही कृपाओ द्वारा सम्मानित हुआ।

एक प्रेमी की कहानी

कहा जाता है कि जब शाही सेना ने नीमखार की विलायत पर आक्रमण किया और उस विलायत को नष्ट कर दिया तो उस स्थान पर एक बक्काल सैनिक जीवन व्यतीत करता था। उसकी पत्नी बडी ही रूपवती थी। उसका पति उससे अत्यधिक प्रेम करता था। सयोग से वह स्त्री बन्दी बना ली गयी और गायब हो गई। उन दिनो उसका पति एक स्थान को गया हुआ था। जब वह वापस आया तो उसे अपनी पत्नी का पता न मिला। वह विलाप करता हुआ उसे ढूंढता फिरता था किन्तु उसका पता न मिलता था। सासारिक वस्त्र त्याग कर वह ग्राम-ग्राम, शहर-शहर उसे ढूढता फिरता था। एक वर्ष इसी प्रकार व्यतीत हो गया और वह सहरिन्द पहुचा। एक दिन वह एक हवेली के द्वार से होकर जा रहा था कि उसने देखा कि उसकी पत्नी सिर पर घडा रखे हुये उस हवेली में ले जा रही है। खडे होकर उसने भिखारियों के समान आवाज लगाई। अफगान ने कहा, "एक भिखारी द्वार पर खडा है। उसे जाकर कुछ दे आ।" वह स्त्री एक रोटी का टुकडा लिये हुये द्वार पर पहुची। बक्काल ने कहा, "मैं (२४) बहुत समय से तेरे पीछे मारा-मारा फिरता हूँ।" स्त्री ने कोई उत्तर न दिया और लौट गई। उसने जाकर अफगान से कहा, "द्वार पर जो खडा है भिखारी नही हरामजादा है और मुझे ले जाने के आशय से आया है।" अफगान यह सुनकर बडा क्रोधित हुआ और उसने बक्काल को कस कर बधवा दिया और उसे इतना पीटा कि वह घायल हो गया। उसे अश्वशाला में डाल दिया गया। वह वहा पडा रहा। जब वह अच्छा हो गया तो अफगान ने कहा, "अब चला जा।" उसने कहा, "खान सलामत ! अब मैं मुसलमान हो गया हूँ। आपका नमक खा चुका हू और आपका दास हो गया हू। मुझसे जो सेवा हो सकेगी उसमें कमी न करूगा।"

सक्षेप में वह अफगान की सेवा करने लगा और उसकी सरकार मे उसने विश्वास प्राप्त कर लिया। यहा तक कि एक वर्ष तक अफग़ान की सेवा में रहने के कारण वह उसका विश्वासपात्र हो गया किन्तु उसकी पत्नी हर बार यही कहा करती कि "वह इसी घात में है कि अवसर पाकर मुझे ले जाय।" अफगान ने कहा, 'मेरे अनेक कार्य उसके द्वारा सम्पन्न होते हैं और तू उससे सतुष्ट नही। उसने मेरे समक्ष तुझे बहिन कहा है।" सक्षेप में अफगान ने उस पर अत्यधिक विश्वास के कारण उसे अपने घर का समस्त प्रबन्ध सौंप दिया।

इसी बीच मे सुल्तान को दलमऊ के अभियान पर प्रस्थान करना पडा। वह अफ़गान भी सेना के साथ रवाना हुआ। जब वे आगरा के समीप पहुचे तो एक दिन वह अफगान अपने स्वामी के साथ आगे रवाना हो गया और सामान को ऊटो पर लदवा कर लाने का आदेश दिया। उस स्त्री को एक तानू[1] पर सवार करके ले जा रहे थे। उस दिन वह बक्काल उसके घोडे की लगाम खीचे लिये जा रहा था। जब अफगान मजिल पर पहुचा तो उसने पूँछा कि 'कनीज कहा है ?" लोगो ने बताया कि "पीछे आ रही है।" जब देर हो गई तो अफग़ान समझ गया कि वह उसे ले गया। वह तुरन्त एक द्रुतगामी (२५) घोडे पर सवार होकर स्त्री को ढूँढने के लिये रवाना हुआ। उस ओर से वह बक्काल उस स्त्री

१ सम्भवत तागे के समान कोई गाडी।

को अन्य मार्ग से ले जाकर एक स्थान पर उतर कर सो गया था। वह स्त्री अफगान के वियोग में एक कोने में बैठी फूट-फूट कर रो रही थी। अचानक अफगान उस स्थान पर पहुच गया। स्त्री ने जैसे ही अफगान को देखा वह बडी प्रसन्न हुई और उसके चरणो पर शीर्ष रख कर कहा, 'मैं न कहती थी कि हरामजादा मुझे ले जाने के लिये समय की प्रतीक्षा कर रहा है।" वह अफगान उतर पडा और उसने बक्काल को खूब पीटा और घोडे की रस्सी से उसे बाध दिया तथा वृक्ष से लटका दिया और स्वय जीन पोश बिछा कर लेट गया। उस स्त्री ने उसके पाव दबाने प्रारम्भ कर दिय और उससे हसी खेल करती जाती थी। तत्पश्चात् उसने जाम दान[1] स जाम[2] निकाल कर उसमें जल डाला और मिश्री छोडकर शर्बत तैयार किया। थोडा सा उसने स्वय पिया और शेष अपने पास रख लिया और सो गई।

बक्काल उसी प्रकार लटका हुआ था। उसने देखा कि उस वृक्ष से एक काला नाग उतरा और उसी रस्सी से उसके पाव पर पहुचा। बक्काल ने सोचा कि "यह मुझे डसकर मेरी हत्या कर देगा। अच्छा तो यही है कि मुझे इस कष्ट से मुक्ति हो जाय।" सक्षेप में, नाग उसके शरीर से होता हुआ भूमि पर पहुचा। उस कटोरे में मुह डालकर अपना विष उसमें गिरा कर बक्काल के शरीर पर से होता हुआ उसी रस्सी द्वारा वृक्ष के ऊपर पहुँचा और गायब हो गया। कुछ क्षण उपरान्त अफगान जागा और जो शर्बत उस कटोरे में रह गया था, पीकर सो गया। उसी अवस्था में उसकी मृत्यु हो गई। अचानक बक्काल (२६) के पाव में जो रस्सी बधी हुई थी टूट गई और वह भूमि पर गिर पडा। उसने अपने पाव से रस्सी खोल ली। जब उसने अफ़गान के मुख से चादर हटाई तो देखा कि उसकी मृत्यु हो चुकी है। उसने स्त्री को जगा कर कहा, "ईश्वर की लीला देख। परोक्ष से मुझे न्याय प्राप्त हुआ है। यदि तू अब भी मेरा विरोध करेगी तो इसी प्रकार नष्ट हो जायगी। स्त्री इस घटना को देख कर काप उठी और उसने उसके पाव पर सिर रखकर कहा कि "अब जब तक में जीवित रहूगी तेरी आज्ञा के विरुद्ध कोई कार्य न करूगी।" बक्काल ने अफगान के शरीर पर से वस्त्र उतारकर स्वय पहिन लिये। अफ़गान की थैली से ३०० अशर्फिया निकाल कर अपने अधिकार में कर ली और उसके द्रुतगामी घोडे पर सवार हुआ। स्त्री को दूसरे घोडे पर सवार किया और अपने घर को चला गया।

पूँछ वाले मनुष्यो का द्वीप

कहा जाता है कि अहमद खा लोदी ने दैवी प्रेम के आवेश में काबा के दर्शन करने का निर्णय कर लिया। सुल्तान से अनुमति लेकर जहाज पर बैठ कर हाजियो के साथ रवाना हो गया। सयोग से वह जहाज नष्ट हो गया। समस्त यात्री समुद्र में डूब गये। अहमद खा तथा तीन अन्य व्यक्ति एक तख्ते पर रह गये जिसे वायु ने बहा कर एक द्वीप में पहुचा दिया। जब उन लोगो ने आबादी देखी तो उन्होंने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। वे तख्ते से उतरे और नगर के समीप पहुचे। वहा के निवासियो के पूँछ होती थी। वे लोग उन्हें अपने बादशाह के समक्ष ले गये। बादशाह ने उनसे उनके विषय में पूछा और जानकारी प्राप्त कर लेने के उपरान्त उन्हें अपनी सरकार से भोजन दिल्वा दिया और उनके निवास हेतु एक हृदयग्राही स्थान निश्चित कर दिया। उन लोगो ने नगर के प्रत्येक घर को मोती के चूने से सजा (२७) हुआ तथा सफेद देखा। प्रत्येक स्थान पर लाल याकूत के गुच्छे लगे हुये देखे। वे ईश्वर की लीला देखकर आश्चर्य-चकित थे। उन्हें किसी भी घर में जल का घडा न मिला। जब उन लोगो ने कुछ आदमियो

१ कटोरा रखने का बरतन।
२ कटोरा।

से जिनमें उनका परिचय हो गया था पूछा कि, "इस स्थान पर जल दृष्टिगत नही होता किन्तु यह जल जिसका स्वाद मिश्री के शर्बत से कम नही होता कहा से आता है ?" उन लोगों ने बताया कि "इस पर्वत के समीप, जिसे तुम देख रहे हो, छोटे-छोटे वृक्ष है, उनकी पत्तिया जल से भरी होती है। कोई एक पत्ती से जितना भी जल निकालता है वह कम नही होता।" अहमद खा को उस लीला के, जो ईश्वर की शक्ति का उदाहरण था, देखने की इच्छा हुई। उसने अपने मित्र के साथ उसे जाकर देखा। वह इस दृश्य को देख ही रहा था कि एक दरवेश कवच धारण किये हुये उस पर्वत की गुफा से प्रकट हुआ। उसने पूछा, "अहमद खा तू कहा आया ?" अहमद खा ने उस दरवेश के चरणो पर सिर रख दिया और रो-रो कर जो कुछ उस पर बीती थी, उसका विवरण दिया। दरवेश ने पूछा, "अपने घर जाना चाहता है अथवा ईश्वर के घर ?" उसने निवदन किया कि, "यदि ईश्वर स्वीकार करे तो मुझे हज की इच्छा है।" दरवेश ने कहा, "आखें बन्द कर ले।" अहमद खा ने आखें बन्द करली। जब उसने आखें खोली तो अपने आप को काबा में पाया। हज के उपरान्त वह जहाज़ पर बैठकर देहली लौट आया।

विद्रोह दमन हेतु प्रस्थान

बहलोल शाह उन दिनों राणा के अभियान से लौट कर शहर (देहली) में आ गया था। तदु-(२८) परान्त उसने मालवा पर आक्रमण किया। राजा मान ने कुछ अन्य लोगो सहित सुल्तान बहलोल के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। राय सारग ने भी विद्रोह कर दिया था। जब शाही पताकाओं के पहुँचने के समाचार प्राप्त हुये तो उसने तीन मज़िल आगे बढ कर स्वागत किया और दो हाथी तथा १२ घोडे पेशकश के रूप में भेंट किये और उस प्रज्वलित अग्नि से अपनी रक्षा कर ली। वहा से शाही पताकाओं ने उज्जैन की ओर प्रस्थान किया। क्योंकि वहा के काफिरो ने विद्रोह कर दिया था अत वहा का राय गले में रस्सी बाध कर शाही सवारी के साथ रवाना हुआ। वहा से बहलोल आगरा के समीप पहुचा। मार्ग में वह रुग्ण हो गया। वह इसी प्रकार प्रस्थान करता चला गया। जब देहली ४० कोस रह गयी तो वह रोग बहुत बढ गया। देहली से शाहज़ादे, कुतुब खा, दरिया खा लोदी तथा राज्य के अन्य उच्च पदाधिकारी उसके स्वागतार्थ उपस्थित हुये। ८९४ हि० (१४८८-८९ ई०) में वह बादशाह जो अफगानो का प्रथम बादशाह था और जिसने तलवार के बल पर राज्य प्राप्त किया था, मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसका पुत्र, जो राज्य के योग्य था, सिंहासनारूढ हुआ।

सिकन्दर लोदी

शेख हसन तथा सुल्तान

(२९) सिकन्दर लोदी सुल्तान बहलोल का पुत्र था। जब वह शाहज़ादा था तो उसकी उपाधि निज़ाम खा थी। ईश्वर ने उसे अत्यधिक रूपवान् बनाया था। जो कोई उसे देखता वह उस पर आसक्त हो जाता था। शेख अबुल अला के पौत्र शेख हसन उस पर आसक्त हो गये थे। शेख हसन बडे ही पहुचे हुये थे। एक दिन शाहज़ादा निज़ाम खा शीत ऋतु में एक कोठरी में अकेला बैठा था। शेख हसन के हृदय में उसे देखने की इच्छा अत्यन्त प्रबल हो गई। वे निज़ाम खा के पास, जहा उस समय वायु भी न पहुच सकती थी, अपनी आध्यात्मिक शक्ति से पहुच गये। शाहज़ादे को बडा आश्चर्य हुआ। उसने कहा, 'हे शेख इतने दरबानो के होते हुये आज्ञा बिना आप किस प्रकार आ गये।" शेख ने कहा, "तू ही समझ।" निज़ाम खा ने कहा, 'आप अपने आप को मेरा आशिक कहते हैं।" शेख ने कहा, "मैं विवश हू।" निज़ाम

खा ने कहा, "आगे आइये।" शाहजादे ने उनका सिर पकड कर अँगीठी पर जलते हुये कोयले पर रख दिया और अपने दोनों हाथ से जोर से पकडे रहा। उन्होने दम भी न मारा। इसी बीच में मुबारक (३०) खा लोहानी आ गया। उसे यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ। उसने सुल्तान से पूछा, "यह कौन है?" निजाम खा ने कहा, "शेख हसन है।" मुबारक खा ने कहा, "हे ईश्वर का भय न करने वाले! तू क्या करता है? इन्हें कोई हानि नही पहुच सकती। तू अपनी हानि से भय नही करता।" निजाम खा ने कहा, "यह अपने आप को मेरा आशिक कहता है।" मुबारक खा ने कहा, "तुझे ईश्वर का कृतज्ञ होना चाहिये कि तू एक बुजुर्ग को प्रिय है। यदि तू लोक तथा परलोक का उपकार चाहता है तो इनकी सेवा कर।" तदुपरान्त उसने शेख हसन को कोठरी में बैठा दिया और बाहर से ताला लगा दिया। कुछ समय उपरान्त समाचार प्राप्त हुये कि शेख हसन नव आबाद बाजार में नृत्य कर रहे हैं। संक्षेप में सुल्तान ऐसे बुजुर्ग को प्रिय था।

धर्मान्धता

एक दिन उसने आदेश दिया कि "थानेश्वर जाकर कुर्क्षेत्र (कुरुक्षेत्र) को मिट्टी से पाट दिया जाय और वह भूमि वहा के धर्मनिष्ठ व्यक्तियों को वजहे मआश में नाप कर दे दी जाय।" उस काल का मलिकुल उलमा उस स्थान पर उपस्थित था। उसने शाहजादे से पूछा, "वहा क्या है?" उसने उत्तर दिया कि, "एक होज है जहा १०००, २००० कोस से हिन्दू लोग स्नान हेतु आते हैं।" उसने पूछा, "कब से यह कार्य प्रारम्भ हुआ?" शाहजादे ने कहा, "वर्षो से यह बिदअत[1] चल रही है।" मलिकुल उलमा ने पुन पूछा, "आप के पूर्व के बादशाह इस विषय में क्या करते थे?" उसने उत्तर दिया, "कुछ नही।" मलिकुल उलमा ने कहा, "यह तुम्हारा उत्तरदायित्व नही कारण कि तुम्हारे पूर्व मुसलमान बादशाहों ने इस विषय में कुछ नही किया?" शाहजादा इस बात से बडा गरम हुआ। उसने कहा, "इस काल (३१) के आलिम बडे विचित्र प्रकार के हैं।" संक्षेप में, युवावस्था में वह इस्लाम का इतना बडा पक्ष-पाती था।

तातार खा पर आक्रमण

बहलोल शाह के राज्यकाल में तातार खा तथा यूसुफ खा जो लाहौर तथा मुलतान के सूबे के अधिकारी थे बडे उद्दंड थे। उन्होंने खाल्से के कुछ परगनों पर अधिकार जमा लिया। शाहजादा निजाम खा उस समय पानीपत में था। उसने दो तीन ग्राम अपने नौकरो को प्रदान कर दिये। यह समाचार सुल्तान को प्राप्त हुये। उसने ख्वाजगी शेख सईद फर्मुली को लिखा कि, "यह कार्य तुम्हारे परामर्श से होता है। यदि तुम में पौरुष्य हो तो तातार खा इत्यादि की विलायत (प्रान्त) से प्राप्त कर लो।" शेख सईद वह फरमान शाहजादे के समक्ष ले गया। शाहजादे ने पूछा 'कुशल है?" उसने निवेदन किया कि, "कुशल है।" तदुपरान्त उसने वह फरमान शाहजादे के समक्ष पढा। शाहजादे ने कहा, 'तू बादशाह का बडा ही विचित्र फरमान लाया है।" फर्मुली ने कहा, "बादशाही मुफ्त नहीं प्राप्त होती। सुल्तान ने समस्त पुत्रों की अपेक्षा आपको तलवार का धनी समझ कर आपसे यह माग की है। यदि आप इस कार्य को कर लेते हैं तो देहली के बादशाह आप ही हैं। उठिये और अपने भाग्य की परीक्षा कीजिये।"

१ इस्लाम के अनुसार अनुचित कार्य।

उस समय शाहज़ादे के पास २५०० अश्वारोही थे। सर्व प्रथम उसने ५०० अश्वारोही तातार खा की विलायत के विरुद्ध भेजे जिन्होंने उसके दो तीन परगने नष्ट कर दिये। तातार खा को जब इस बात का पता चला तो वह भारी सेना लेकर रवाना हुआ। इस ओर से शाहज़ादा भी सेना सहित अम्बाला के परगने में पहुचा। दूसरे दिन दोनों ओर से सेनाओं की पक्तिया जम गई। शाहज़ादा सामान सहित युद्ध के लिये बढा। उस समय शाहज़ादे के आगे-पीछे वीर युवक जाते थे। इसी बीच में शेख सईद ने दो तीन बार शाहज़ादे की ओर देखा। शाहज़ादे ने पूछा, "क्या देखता है?" शेख ने निवेदन किया कि "दास देख रहा है कि आपके चारों ओर चतुर युवक चल रहे हैं। यदि आप नेतृत्व के कार्य में दृढ रहे (३२) तो विजय आप की है। अब देखना चाहिये कि ये लोग किस प्रकार युद्ध करते हैं। यदि ईश्वर इच्छानुसार सफलता प्रदान कर दे तो अच्छा है अन्यथा आप हवा पर सवार हैं। कोई आप के निकट न आ सकेगा।" शाहज़ादे ने हँसकर कहा, "मैं तुम्हारे घोडे के पाव भूमि पर देखता हू किन्तु अपने घोड के पाव सीने तक रक्त में डूबा हुआ देखता हू।" ख्वाजगी सईद घोडे से उतर पडा और शाहज़ादे के चरणों का चुम्बन करके कहा, "विजय का चिह्न यही है और सरदार का साहस इसी प्रकार का होना चाहिये।"

तदुपरान्त युद्ध प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम जिसने रणक्षेत्र में अपना घोडा कुदाया वह दरिया खा लोहानी था। उसने ३० व्यक्तियों सहित एक दिल होकर निश्चय किया कि जिस स्थान पर भी एक तलवार पहुचे, वे ३० तलवारें पहुचा दें। उस ओर से ५०० अश्वारोही उनका मुकाबला करने आये। ऐसा घमासान युद्ध हुआ कि तलवारों से चिनगारिया निकलने लगी। दरिया खा को उन ५०० अश्वारोहियों पर विजय प्राप्त हो गई। वह तीन बार खोज-खोज कर तातार खा के अनेक योग्य व्यक्तियों को पराजित करके अपने स्थान पर आकर खडा हो गया। चौथी बार तातार खा की सेना में से कोई भी बाहर न निकला। दरिया खा ने कहा, "हमारी वीरता तथा हमारे स्वामी के प्रताप से कार्य पूरा हो गया। तुम लोग यही पर रहो ताकि मैं अकेले उन पर आक्रमण करू।" सक्षेप में दरिया खा ने उन लोगों पर तीन बार आक्रमण किया और हर बार सकुशल लौट आया। तदुपरान्त दरिया खा तथा हुसेन खा ७०० अश्वारोहियों सहित शाहज़ादे की सेना के बाहर निकले। तातार खा की ओर से १५०० अश्वारोहियों ने हुसेन खा पर तीन बार आक्रमण किया। जिस प्रकार दरिया खा को विजय प्राप्त हुई थी, उसी प्रकार (३३) हुसेन खा को भी विजय प्राप्त हो गई। उमर खा ने हुसेन खा से कहा, "तुम्हारा तथा दरिया खा का कल्याण हो। तुम लोगों ने ऐसे कार्य किये कि सभी लोग तुम्हारी प्रशसा करते हैं। अब इन भाइयों के साथ न्याय करो।" उस बार उमर खा सरवानी का पुत्र इबराहीम अपने पिता के पास घोडे भगा कर पहुचा और कहा, "आपको ईश्वर तथा शाहज़ादे के नमक की शपथ है। आप अपने घोडे को आगे न बढायें।" उमर खा ने कहा, "क्या कारण है?" इबराहीम ने कहा, "जिस प्रकार मुबारक खा के पुत्र दरिया खा तथा मिया हुसेन की लीला देखी अब क्षण भर मेरे कार्यों का भी निरीक्षण कीजिये।" यह कहकर उसने १५००० अश्वारोहियों पर आक्रमण किया और दो-तीन धावे करके १०,१२ वीर अश्वारोहियों को घोडे से पृथक् करके भूमि पर गिरा दिया। उमर खा ने यह देख कर विशेष सेना सहित तातार खा पर आक्रमण कर दिया और उन १५००० अश्वारोहियों को पराजित कर दिया। तातार खा मारा गया। उसका भतीजा हुसेन खा बन्दी बना लिया गया। शेष सेना भाग खडी हुई। शाहज़ादे को इतनी बडी विजय प्राप्त हो गई। रणक्षेत्र में शाहज़ादे ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये सिज्दे किये। उस विजय से विद्रोही आतकित हो गये और शाहज़ादों ने अपने योद्धाओं को, जिन्होंने रुस्तम के समान वीरता प्रदर्शित की थी, सम्मानित किया। जब विजय-पत्र बहलोल शाह को प्राप्त हुये तो

उसने उसकी प्रशसा की और समझ गया कि "हमारे पुत्रो मे सब से अधिक योग्य निज़ाम खा है।' सुल्तान (३४) ने उसे खिलअत, १० अरबी घोडे, ५ हाथी तथा वली अहद की उपाधि देकर प्रसन्न किया।

मौलाना समाउद्दीन की सेवा में

सक्षेप म जब सुल्तान बहलोल की मृत्यु के समाचार देहली में प्राप्त हुये तो जमाल खा को देहली म छोड कर उसने बड-बडे अमीरो के साथ प्रस्थान किया। सर्व प्रथम वह शेख समाउद्दीन[1] की सेवा म पहुचा और निवेदन किया, "शेख जियु ! हम चाहते हैं कि सर्फ[2] के ज्ञान से सम्बन्धित मीज़ान नामक पुस्तक का आपकी सेवा में अध्ययन करें।" गुरु ने कहा, "ईश्वर तुझे इस लोक तथा परलोक मे भाग्यशाली बनाये।" सुल्तान ने निवेदन किया कि "आप इसी बात को पुन कहें।" उन्होने तीन बार यही वाक्य कहे। तदुपरान्त उसने सुल्तान बहलोल की मृत्यु तथा अमीरा द्वारा अपने बुलाय जाने के समाचार उन्हें सुनाये और बिदा हो गया।

सिंहासनारोहण

भाग्य के पथ-प्रदर्शन तथा अमीरो के परामर्श से (सिकन्दर) देहली से शीघ्रातिशीघ्र जलाली पहुचा और अपने पिता की लाश देहली भिजवा दी। शुक्रवार १७ शाबान ८९४ हि० (१७ जुलाई १४८९ ई०) को जलाली कस्बे के समीप काली नदी के तट पर स्थित एक उच्च स्थान पर बने हुये कस्रे (३५) फीरोज़ नामक महल में खाने जहा, खाने खाना फर्मुली तथा समस्त अमीरो की सहमति से १८ वर्ष की अवस्था में सिंहासनारूढ हुआ। उसकी उपाधि सुल्तान सिकन्दर हुई। जब वह गौरवशाली बादशाह सिंहासनारूढ हुआ तो उसने अमीरा के मसब[3] में वृद्धि कर दी। सेना को दो मास का वेतन इनाम के रूप में प्रदान कर दिया। अपने प्राचीन सेवकों में से प्रत्येक को उसन अमीरा की श्रणी में सम्मिलित कर दिया। प्रत्यक को उसकी योग्यतानुसार जागीर प्रदान की।

गाडी हुई सम्पत्ति के सम्बन्ध में आदेश

कहा जाता है कि वह अत्यधिक शिष्ट तथा दयालु था। एक बार सबल के भू-भाग में एक व्यक्ति भूमि खोद रहा था। वहा एक देग[4] प्रकट हुआ। उसमें ५००० अशर्फिया थी। वहा के हाकिम मिया कासिम ने उसका समस्त धन छीन लिया और यह सूचना सुल्तान को भेज दी। सुल्तान ने आदेश दिया कि "यह धन जिस व्यक्ति को मिला है वही इसके पाने का पात्र है।" मिया कासिम ने पुन निवेदन किया कि, "बादशाहे आल्म ! जिस व्यक्ति को धन मिला है वह इस योग्य नही है कि उसे इतना धन दिया जाय।" सुल्तान ने पुन आदेश दिया, "हे मूर्ख ! यह क्या बात है। जिसने उसे इतना धन दिया है वह उसे इस योग्य न समझता तो क्यो इतना धन देता ? तुझे इस कार्य से क्या मतलब ? योग्य तथा अयोग्य सभी उसके दास हैं। वह जिसे चाहता है देता है। यह धन उसे दे दे। यदि एक दिरम भी किसी

१ मौलाना समाउद्दीन बड़े योग्य तथा धर्मनिष्ठ सन्त थे। उन्होंने शेख़ फ़ख़रुद्दीन एराकी (मृत्यु १२८८ ई०) के 'लमआत' नामक ग्रन्थ की टीका लिखी। उनकी मृत्यु १७ जमादि उल अव्वल ९०१ हि० (२ फरवरी १४९६ ई०) को हुई और वे हौज़े शम्सी पर दफ़न हुये।

२ अरबी व्याकरण।

३ सैनिक पद अथवा श्रेणी।

४ बड़ी पतीली।

अन्य स्थान को चला गया तो तू दड का पात्र होगा। जब तक वह उस धन के लिये किसी सुरक्षित स्थान का प्रबन्ध न कर ले, उस समय तक तू इसकी चौकी पहरे के विषय में सचेत रह ताकि कोई इसमें हस्तक्षेप न कर सके।"

(३६) कहा जाता है कि बन्दिगी मिया शेख महमूद की भूमि पर एक हलवाहा हल जोत रहा था। एक पत्थर दृष्टिगत हुआ। वह हल छोड कर शेख की सेवा में पहुचा और उसे इस विषय में सूचना दी। शेख ने अपने पुत्र को भेजा। जब उसने पहुच कर भूमि खोदी तो एक पत्थर दिखाई पडा। जब पत्थर उठाया गया तो वह स्थान खज़ाने से परिपूर्ण मिला। उसमें सोने से भरे हुये पात्र थे। कुछ थालों पर सिकन्दर रूमी का नाम लिखा हुआ था। सब लोग इस बात से सहमत थे कि यह जुल्करनैन[1] का खजाना है। अली खा ने जो दीबालपुर (दीपालपुर) का हाकिम था, अपने आदमी शेख के पास भिजवाये और कहलाया कि "यह विलायत मेरे अधीन है, और यह धन भी मेरा है।" शेख ने उत्तर लिखा, "यदि यह धन ईश्वर तुझे देता तो मेरा अथवा किसी अन्य का इसमें कोई हाथ न था। क्योकि उसने मुझे प्रदान किया है अत इसमें तुझे अथवा किसी अन्य को हस्तक्षेप न करना चाहिये।" अली खा ने सुल्तान को यह हाल लिखा। सुल्तान ने उत्तर म लिखा कि, 'तुझे दरवेश की बात के विरुद्ध कहने की क्या आवश्यकता थी ?" इसी बीच में उस शेख ने कुछ सोने के बरतन जिन पर सिकन्दर का नाम लिखा हुआ था, सुल्तान की सेवा में भेजे और यह निवेदन कराया कि, "इतना सोना तथा इतने सोने के बरतन निकले हैं। सुल्तान का जहा आदेश हो उन्हें वहा भेज दिया जाय।" सुल्तान ने उसके पास आदेश भेजा कि "समस्त धन को तुम अपने पास रक्खो। हमें भी उत्तर देना है और तुम्हें भी। राज्य तथा धन ईश्वर का होता है। वह जिसे चाहता है देता है।" उसने उन बरतनो को पुन शेख के पास भिजवा दिया। सक्षेप में, ईश्वर ने उसे (धन के प्रति) बडा ही उपेक्षाशील बनाया था। आजकल कोई थोडे से तावे के सिक्के भी पा जाय तो हाकिम लोग उसके घर को नष्ट-भ्रष्ट कर द।

ब्याना पर आक्रमण

उन दिनो में ब्याना के वाली ने विद्रोह कर दिया था। सुल्तान ने मुहम्मद खा तथा यूसुफ खा (३७) को उस अभियान हेतु नियुक्त किया। उसके पीछे-पीछे वह शाही पताकाओ सहित रवाना हुआ। ब्याना के वाली ने किला बन्द कर लिया और युद्ध की सामग्री एकत्र की। उमर खा निरन्तर प्रस्थान करता हुआ वहा पहुचा। गरगज, साबात तथा दुर्ग पर अधिकार जमाने की अन्य सामग्री एकत्र की। सुल्तान आसपास के स्थानो की सैर तथा शिकार में व्यस्त हो गया। उमर खा ने थोड से परिश्रम से किले वालों को व्याकुल कर दिया। उसने ब्याना को अपने अधिकार में कर लिया और ईसा खा को उस स्थान का वाली बना कर सुल्तान की सेवा मे पहुचा।

बारबक शाह से युद्ध

उस दिन सुल्तान गेद खेलने में व्यस्त था। उसे समाचार प्राप्त हुये कि बारबक शाह ने अपने आसपास से अत्यधिक सेना एकत्र करके विद्रोह कर दिया है। सुल्तान ने इस्माईल खा को बारबक शाह

१ सिकन्दर महान को मध्यकालीन इतिहासों में सिकन्दर जुलकरनैन (दो सीगों वाला सिकन्दर) लिखा जाता था। उसकी मृत्यु ३२७ ईसा पूर्व में ३३ वर्ष की अवस्था में हुई। मध्यकालीन फ़ारसी अरबी इतिहास में उसके विषय में बड़ी विचित्र घटनाओं का उल्लेख किया गया है।

के पास भेजा और शिक्षा-युक्त फरमान लिखे। वह स्वय उसके पीछे-पीछे कम्पिला तथा पटयाली की ओर चल दिया। बारवक शाह ने फरमान के अनुसार आचरण न किया और सेना तैयार करके उसका मुकाबला किया। युद्ध की पक्तिया जम गईं। युद्ध के मध्य मे एक कलन्दर प्रकट हुआ और उसने सुल्तान का हाथ पकड कर कहा, 'विजय तेरी है।" सुल्तान ने अपना हाथ खीच लिया। कलन्दर ने कहा, "मै अच्छी फाल दे रहा हू तो अपना हाथ क्यों छुटा रहा है?" सुल्तान ने कहा, "जब दो मुसलमानो के मध्य में युद्ध हो रहा हो तो एक ओर से निर्णय न करना चाहिये और जिस कार्य मे भलाई हो उसी की इच्छा करनी चाहिये।" सक्षेप में, युद्ध के उपरान्त बारवक शाह पराजित हो गया। सुल्तान उसे भाइयो के समान अपने साथ बदायूँ लाया। एक दिन उसने उसे अपने दरबार में बुला कर पूछा, "मैने (३८) तेरे साथ क्या बुराई की थी जो तूने मेरे साथ इस प्रकार का व्यवहार किया?" बारवक शाह ने अपनी विवशता स्वीकार की। सुल्तान ने उसे पुन जौनपुर ले जाकर सिंहासनारूढ कर दिया और उसकी सेवा में विश्वस्त अमीरो को छोड कर देहली लौट गया।

चौका के विरुद्ध प्रस्थान

कुछ दिन उपरान्त यह समाचार प्राप्त हुय कि जमीदार लोगो ने चौका म षड्यत्र करके लगभग एक लाख आदमी एकत्र कर लिये है। मुबारक खा लोहानी उनसे युद्ध के उपरान्त पराजित हुआ और उसके भाई की हत्या हो गई। बारवक शाह उनकी शक्ति का मुकाबला न कर सका और मुहम्मद फर्मुली के पास जिसे काला पहाड कहते थे चला गया। यह समाचार पाकर सुल्तान चौगान फेंक कर खाने खाना लोदी के घर पहुचा और उमसे परामर्श किया। तदुपरान्त उसने आदेश दिया कि सम्मानित पताकायें चौका के ऊपर आक्रमण करे। दस दिन उपरान्त वे वहा पहुची। कोह नदी पर पडाव हुआ। वहा से समाचार वाहक पहुचा। सुल्तान ने पूछा, "चौका इस स्थान से कितने कोस पर है?" उसने उत्तर दिया, "१० कोस पर है।" उस समय उसके साथ ५०० अश्वारोही थे। अमीरो ने निवेदन किया कि, "कल तक प्रतीक्षा की जाय ताकि सेना पहुच जाय।" उसने कहा, "इस्लाम की विजय है।" ईश्वर से प्रार्थना करके सवार हुआ। मार्ग में दूसरा समाचार वाहक मिला। सुल्तान ने पूछा, "उसके साथ कितने सैनिक है?" उसने उत्तर दिया, "१५००० अश्वारोही तथा दो लाख पदाती है।" सुल्तान उस स्थान से शीघ्रातिशीघ्र रवाना हुआ। चौका समाचार पाकर इतनी अधिक सेना के बावजूद सुल्तान सिकन्दर से युद्ध न कर सका और भाग खडा हुआ। विद्रोहियो की सेना छिन्न-भिन्न हो गई। सुल्तान उन लोगो का (३९) पीछा करता हुआ जौंद के किले तक पहुचा। सुल्तान हुसेन शर्की ने वहा पहुच कर किले के निकट पडाव किया। सुल्तान सिकन्दर ने सुल्तान हुसेन को लिखा, 'आप मेरे चाचा के स्थान पर है। आपके तथा सुल्तान बहलोल के मध्य में जो कुछ होना था, वह हुआ। मुझे आप से कोई शत्रुता नहीं। मुझे आपके सम्मान का ध्यान है। यह किला आप को सौंपा जाता है। मेरे आने का उद्देश्य यह है कि मैं इस काफिर को दड दूं।"

सुल्तान हुसेन से युद्ध

सुल्तान हुसेन ने सैयिद खा को दूत बनाकर भेजा और अनुचित उत्तर प्रषित किये और कहलाया कि, "चौका मेरा सेवक है। वह गोल सैनिक था। मै उससे युद्ध करता था। तू मूर्ख बालक है। यदि व्यर्थ बात करेगा तो मै जूता मारूगा।" सुल्तान ने कहा, "हे मुसलमानो! सुन लो। जिस मुंह से जूते का नाम निकला है, यदि ईश्वर ने चाहा तो उसी मुह पर लगेगा।" सुल्तान ने दूत से कहा, "तुम

रसूल[1] की संतान से हो। तुम उसे क्यो नही समझाते ताकि बाद मे उसे पश्चात्ताप न करना पडे।" दूत ने उत्तर दिया, "मैं उसके अधीन हू।" सुल्तान ने कहा, "तुम विवश हो। कल यदि ईश्वर ने चाहा जब वह पलायन करेगा और तुम बन्दी बनाये जाओगे तो तुम्हें याद दिलाऊगा।" सुल्तान ने सैयिद खा को विदा कर दिया और स्वय अमीरो से परामर्श करके युद्ध का सकल्प कर लिया। उसने अमीरो से कहा, 'तुम लोग बहलोल के लिये प्राणो की बलि दे देते थे। मेरा यह प्रथम कार्य है। बिरादरी के लिये जो आवश्यक हो वह करो।"

दूसरे दिन जब युद्ध के लिये सेना की पक्तिया ठीक हुईं तो लोदी लोग हिरावल[2] मे हुये। शाहू खेल दायी ओर, फर्मुली लोग मैमने[3] मे और लोहानी लोग मैसरे[4] में, तथा सरवानी लोग पीछे हुये। उमर खा जो अपने युग का शूर-वीर था मुक्द्दमे[5] मे था। सुल्तान सेना के निरीक्षण हेतु एक बडे हाथी पर (४०) सवार हुआ था। अचानक उसकी दृष्टि जौंद पर पडी। इसी बीच में सुल्तान हुसेन सुसज्जित सेना सहित किले के बाहर निकला। अफगान लोग हथेली पर प्राण लेकर तलवार तथा कटार से युद्ध करने लगे। अफगानो के थोडे से ही प्रयत्न से सुल्तान हुसेन भाग खडा हुआ। मीर सैयिद खा दूत तथा कुछ अन्य अमीर बन्दी बना लिये गये। लोग उनके हाथो को बाध कर नगे सिर ला रहे थे। सुल्तान की दृष्टि उन पर पडी। सुल्तान ने कहा, "सैयिद के सिर पर पगडी रख दो।" जब उसे सुल्तान की सेवा में प्रस्तुत किया गया तो उसने कहा, "तुम्हारा नमक खाना धन्य हो। वही अभागा था, तुम क्या करते।" तदुपरान्त उसने प्रत्येक विद्रोही अमीर के लिये एक-एक खेमा तथा भोजन निश्चित कर दिया।

जब सुल्तान हुसेन जौद से भाग गया और समाचार वाहको ने यह समाचार पहुचाये कि वह भागा जाता है तो मुबारक खा ने निवेदन किया कि, "यदि आज्ञा हो तो मै उसका पीछा करू।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "पता लगाओ कि वह कहा जा रहा है?" उसने (मुबारक खां ने) निवेदन किया कि, "समाचार प्राप्त हुये ह कि वह बिहार जा रहा है।" सुल्तान ने कहा, "वह तुम्हारे समक्ष से नही भागा है, ईश्वर के प्रकोप से भागा है। वह वही हुसेन है जिससे तुम पराजित रहा करते थे और वह विजयी रहता था। ईश्वर ने उसे गर्त में गिरा दिया और तुम्हें भूमि से उठा दिया। तुम लोग अपने कार्य पर दृष्टि रक्खो और अभिमान न करो।" सक्षेप में जब सुल्तान हुसेन भाग कर बिहार पहुचा तो सुल्तान सिकन्दर पुन जौनपुर पहुचा और बारबक शाह को तीसरी बार जौनपुर के राजसिंहासन पर आरूढ कर दिया।

बगाले तक आक्रमण

(४१) तदुपरान्त सुल्तान लौटकर अवध के समीप लगभग एक मास तक भ्रमण करता तथा शिकार खेलता रहा। इसके उपरान्त पुन समाचार प्राप्त हुये कि बारबक शाह जमीदारो के प्रभुत्व के कारण वहा न ठहर सका। मुहम्मद खा फर्मुली तथा आजम हुमायूँ एव खाने खाना ने वहा पहुच कर बारबक शाह को बन्दी बना लिया और उसे सुल्तान के पास भेज दिया। सुल्तान ने उसे हैबत खां तथा

१ मुहम्मद साहब।
२ अग्रिम दल।
३ दायीं ओर।
४ बायीं ओर।
५ अग्रिम भाग।

उमर खा को सौंप दिया। तदुपरान्त वह चुनार पहुचा। विद्रोहियों को दड देता हुआ बगाले की सीमा तक पहुचा और उस प्रदेश को जोकि एक पृथक बादशाह के अधीन था अपने अधिकार में कर लिया। ज़मीदारा की अत्यधिक धन-सम्पत्ति खजाने में प्राप्त हो गई। जब घोडे नष्ट होने लगे तो वह उस दिशा में लौट गया और देहली पहुच गया।

राज्य का विस्तार

वर्षा ऋतु वहा व्यतीत करके मालवा पर चढाई की। मादू के वाली सुल्तान महमूद ने दीनता प्रदर्शित करते हुये यह निश्चय किया कि वह हर साल निश्चित हाथी तथा धन दरबार में भेजा करेगा। जलालाबाद से जो काबुल के निकट है मादू तक और उदयपुर से पटना तक उसके नाम का सिक्का तथा खुत्बा चलने लगा और कोई भी उसका मुकाबला करने वाला न रहा। वह अपनी राजधानी देहली में भोग-विलास में ग्रस्त हो गया।

भोजन का नियम

उसकी यह प्रथा थी कि एक पहर रात्रि व्यतीत हो जाने के उपरान्त भोजन करता था। स्वय सिंहासन पर आसीन होता और उस सिंहासन के निकट दो बडी कुर्सिया रख दी जाती थी। उस पर विशेष चीनिया[1] रक्खी जाती थी। बडे-बडे अमीरो में जो लोग उपस्थित रहते उनके सम्मुख भी चीनिया (४२) रक्खी जानी थी। सुल्तान जब भोजन कर लेता तो वे अमीर वहा से उठकर सुफ्फये ताक[2] में आ जाते और वहा भोजन करते थे। सुल्तान न्याय मे उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जाता था।

सर्राफ के प्रति न्याय

कहा जाता है कि एक सैनिक की एक सर्राफ बच्चे से मित्रता थी। उसने मुहर लगा कर अशर्फी की एक थैली सर्राफ बच्चे को दे दी। उस सर्राफ बच्चे ने धूर्ततापूर्वक उसमें से अशर्फी निकाल कर रुपया उसमें रख दिया। जब उस आदमी ने घर पहुच कर उसे खोला तो उसमें से रुपया निकला। वह बडे आश्चर्य में पड गया और उसने सर्राफ बच्चे से जाकर पूछा, "मैंने तुझे अशर्फी से भरी हुई थैली दी थी, वह रुपये की कैसे हो गई?" सर्राफ बच्चे ने कहा, "जिस प्रकार तूने मुहर लगी हुई थैली दी थी उसी प्रकार मैंने तुझे लौटा दी।" उसमें तथा सर्राफ बच्चे में झगडा होन लगा। उन लोगो ने मिया भूवा के सामने अपना अभियाग प्रस्तुत किया। जब मिया भूवा ने सर्राफ बच्चे से पूछा तो उसने निवेदन किया कि, "इस व्यक्ति ने मुझे अशर्फिया गिन कर न दी थी। जिस प्रकार उसने मुहर लगी हुई थैली दी थी, उसी प्रकार मैंने वापस कर दी।" मिया भूवा ने उस सैनिक को झूठा घोषित कर दिया। वह व्यक्ति परेशान था कि क्या करे।

अन्त में एक दिन सुल्तान चौगान खेलने के लिये बाहर निकला। सैनिक ने सुल्तान से न्याय की याचना की। सुल्तान ने उसे एक हाजिब[3] को सौप दिया कि वह उसे दरबारे आम के समय उपस्थित करे। उस हाजिब ने उसे उपस्थित किया। जब उसने अपना हाल बताया और सर्राफ बच्चे को मुहर

१ चीनी के बरतन।
२ मेहराबदार सायबान।
३ देखिये पृ० ४८ नोट न० १।

लगी हुई थैली देने तथा मुहर लगी हुई वापस पाने के विषय में कहा तो सुल्तान ने उस थैली का निरीक्षण किया और अत्यधिक सोच विचार के उपरान्त सर्राफ बच्चे की धूर्तता को समझ गया। उसने उस आदमी को उस समय चले जाने तथा एक सप्ताह उपरान्त पुन उपस्थित होने का आदेश दिया।

सुल्तान ने उस दिन धुले हुये वस्त्र धारण किये और जिस वस्त्र को अपने शरीर से उतारा उसे (४३) तीन स्थानों से फाड डाला। जामादार[1] को उसने आदेश दिया कि "जब ये वस्त्र धोबी के यहा से आयें तो इन्हें उपस्थित कर।" धोते समय जब धोबी ने पायजामा खोला तो उसे तीन स्थानों से फटा पाया। वह काप उठा और रफू करने वाले के घर पर पहुचा। रफू करने वाले ने जो कुछ माँगा उसे वह देकर इस प्रकार रफू करा लाया कि अत्यधिक ध्यानपूर्वक देखने पर भी कुछ पता न चलता था। वस्त्रो को धोकर उसने जामादार को पहुचा दिये। आदेशानुसार जामादार ने वस्त्र सुल्तान की सेवा में प्रस्तुत किये। सुल्तान ने उन्हें देख कर आदेश दिया कि, "धोबी को बुलवाओ।" सुल्तान ने धोबी से कहा, "मेरा पायजामा दो स्थानो से फटा था।" धोबी ने भय के कारण रफू कराने का हाल बता दिया। सुल्तान ने रफू करने वाले को बुलवाया और पूछा, "इस पायजामे को तूने रफू किया है?" उसने उत्तर दिया, 'क़िबलय आल्म ! मैंने रफू किया है।" कुछ क्षण उपरान्त सुल्तान ने उसे थैली भी दिखायी और पूछा, "इसे भी तूने ठीक किया है?" उसने उत्तर दिया, "हा"। तदुपरान्त सुल्तान ने सर्राफ बच्चे को बुल्वा कर कहा, "मैं तेरी धूर्तता समझ गया। यदि तू सच सच बता दे तो मुक्त कर दिया जायगा। और यदि किसी अन्य प्रकार से व्यवहार करेगा तो तेरा सिर उडा दिया जायगा।" उस सर्राफ बच्चे ने सच बोलने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न देखा। जो कुछ सच था वह कह दिया और अशर्फियाँ लौटा दी। समस्त अमीर सुल्तान की बुद्धि पर आश्चर्य करने लगे।

परोक्ष का ज्ञान

उसे परोक्ष के ज्ञान में भी निपुणता थी। भीकन खा एक बहुत बडा अमीर था। एक रात्रि में वर्षा ऋतु में वह कोठ की छत पर सो रहा था। उस समय दासिया उसके पास न थी। जब वर्षा होने लगी तो वह तथा उसकी पत्नी पलँग भीतर ले गय। जब दूसरे दिन वह अभिवादन को पहुचा तो सुल्तान (४४) ने कहा, 'तुम हफ्त हजारी अमीर हो। दो तीन विश्वस्त दासियो को अपने साथ नही रखते हो और वर्षा के समय स्वय पलँग बाहर से भीतर ले जाते हो।"

जब वह सेना को दूर के स्थानो पर नियुक्त कर देता तो उस स्थान का जिसे उसने स्वय न देखा था, विवरण देने लगता। कुछ लोगो का मत है कि जिनात उसके अधीन थे जो उसे परोक्ष की सूचना दिया करते थे।

जादू का दीपक

प्राचीन देहली में अब्दुल मोमिन नामक एक मुल्ला रहता था। वह एक दिन हवेली में अनाज रखने के लिये कुआँ खोद रहा था। अचानक एक चौकोर दीपक निकल आया। रात्रि में उसने उस दीपक को जलाया। उसके जलते ही दो भयकर व्यक्ति प्रकट हुय। मुल्ला भयभीत हो गया। उन्होंने कहा "भय मत करो। हम इस दीपक के मोअक्किल[2] हैं। इस समय तेरी सेवा हेतु कटिबद्ध हैं। तू जो

[1] वह अधिकारी जो शाही वस्त्रों की देख रेख करता था।
[2] जिसे कोई कार्य सौंप दिया जाय।

कुछ आदेश दे उस पर आचरण करें और परोक्ष की बातें जिसका तुझे ज्ञान नहीं बतायें।" वह मुल्ला एक स्त्री पर, जहां वायु भी न जा सकती थी, आसक्त था। मोअक्किल लोग उसे उस स्थान पर ले गये। रात भर उसने अपनी मनोकामना सिद्ध की। संक्षेप में उसने दीपक द्वारा अनेक कार्य सम्पन्न कराये। वह (उसके द्वारा) परोक्ष का ज्ञान प्राप्त कर लेता था। इसके उपरान्त मुल्ला ने सोचा कि यह बात गुप्त न रह सकेगी। उसने फरीद खां द्वारा जो सुल्तान का बहुत बड़ा विश्वासपात्र था उस दीपक को सुल्तान की सेवा में प्रस्तुत कराया और वास्तविक बात का उल्लेख कराया। परीक्षा के उपरान्त सुल्तान ने उसे अत्यधिक सम्मानित किया। कुछ लोगों का मत है कि सुल्तान को वे मोअक्किल परोक्ष के समाचार पहुंचाते थे। कुछ लोगों का मत है कि वह बहुत बड़ा वली[1] था और यह उसके वली होने का प्रमाण है।

सुल्तान सिकन्दर का चमत्कार

(४५) कहा जाता है कि एक हिन्दू रंगरेज अपनी पत्नी को, जो बड़ी ही रूपवती थी, ब्याना से आगरा ले जा रहा था। उस रूपवती के पाँव में दो तीन कोस की यात्रा से ही छाले पड़ गये। अचानक दो-तीन अश्वारोही पीछे से पहुँच गये। यह हाल देख कर उन्होंने उसके पति से कहा, "हे ईश्वर का भय न करने वाले! क्यों इस स्त्री की हत्या करा रहा है?" उसने उत्तर दिया, "क्या करूं? किराये की व्यवस्था नहीं कर सकता।" अश्वारोहियों ने कहा, "हमारे घोड़े कोतल जा रहे हैं। उसे सवार कर दे और उसकी लगाम अपने हाथ में ले ले।" रँगरेज ने स्वीकार न किया। अश्वारोहियों ने ईश्वर की शपथ ली। वह व्यक्ति इस बात पर राजी हो गया। पत्नी को सवार करके यात्रा करने लगा। जब वे जंगल में पहुंचे तो अश्वारोहियों ने जोकि डाकू थे रंगरेज की हत्या करदी और स्त्री को पकड़ कर अन्य मार्ग पर यात्रा करने लगे। स्त्री विलाप करती जाती थी और बारबार पीछे देखती जाती थी। अश्वारोहियों ने पूछा, "तू हर समय पीछे देखती जाती है। क्या कोई अन्य व्यक्ति भी तेरे साथ है?" स्त्री ने कहा, "नहीं।" उन लोगों ने पूछा, "फिर क्या देखती है?" स्त्री ने कहा, "मैं उसे देख रही हूँ जिसे तुम लोगों ने मध्यस्थ बनाया था और मेरे पति ने जिसके भरोसे पर मुझे तुम्हारे घोड़े पर सवार कराया था।" अश्वारोही हँसने लगे।

इसी बीच में दो तीन अश्वारोही प्रकट हुये जो अपने मुख पर बुरका डाले हुये थे। उन लोगों ने अश्वारोहियों की हत्या कर दी और स्त्री से पूछा, "तेरा पति कहां पड़ा है?" वह स्त्री उन्हें उस स्थान पर जहां उसका पति पड़ा हुआ था लाई। उन लोगों ने कहा, "अपने पति का सिर उसके शरीर से मिलाकर उस पर चादर डाल दे।" उसने उनकी आज्ञा का पालन किया। सवार चले गये और स्त्री से कह गये, "हमने तेरा बदला ले लिया। इन दोनों घोड़ों तथा अन्य सम्पत्ति को तुझे प्रदान करते हैं।" वे यही वार्तालाप कर रहे थे कि रँगरेज जीवित हो उठा और उसने चादर सिर से हटाई और अपनी पत्नी से सब हाल मालूम किया और उनके पीछे यह कहता हुआ भागा कि, "तुम्हें उस ईश्वर की शपथ है जिसने (४६) तुम्हें यह शक्ति प्रदान की है कि तुम मुर्दों को जिन्दा कर देते हो, एक बार अपना मुख मुझे दिखा दो कि तुम लोग कौन हो जो तुमने मेरा इस प्रकार कल्याण किया?" उन अश्वारोहियों ने अपने मुख से बुरका हटा लिया। रँगरेज ने अपना मुख उनके चरणों पर रख दिया। पलक झपकाते ही सवार अदृश्य हो गये।

१ सन्त।

रँगरेज घोडो तथा धन-सम्पत्ति सहित आगरा पहुचा। उसने सोचा कि, "यदि कोई मुझे पहचान लेगा तो अश्वारोहियों की हत्या का आरोप लगा देगा। अच्छा है कि बादशाह के कोतवाल से समस्त हाल बता दूँ।" तदनुसार वह घोडे तथा धन-सम्पत्ति लेकर कोतवाल के समक्ष पहुचा और अपना हाल बताया। कोतवाल को बडा आश्चर्य हुआ। उन लोगों को सुल्तान के समक्ष उपस्थित किया गया ताकि वे अपनी विचित्र कहानी सुल्तान को बतायें। जब रँगरेज की दृष्टि सुल्तान पर पडी तो उसने उसे पहचान लिया कि यह वही व्यक्ति है जिसने अश्वारोहियों की हत्या की थी। इसी बीच में मलिक आदम आकर उपस्थित हुआ। रँगरेज ने उसे भी पहचान लिया। सुल्तान ने पूछा, "क्या तू उन अश्वारोहियों को देख कर पहचान सकता है?" रँगरेज ने कहा, 'एक कि बलय आलम थे और दूसरे ये थे। आप लोगों ने हमें जिन्दा किया?" मलिक आदम ने निवेदन किया, "क्या किस्सा है? इन लोगों को जाने दीजिये।" सुल्तान ने आदेश दिया, "घोडे तथा धन-सम्पत्ति तुझे प्रदान की जाती है। ले जाओ।" उसे १०,००० तन्के सुल्तान ने इनाम मे दिये। इस बात का दरबारे आम में शोर हो गया। समस्त उपस्थितजन को बडा आश्चर्य हुआ।

सुल्तान की धर्मनिष्ठता

सुल्तान सिकन्दर बडा ही पवित्र जीवन व्यतीत करने वाला, सच्चा आलिम तथा विद्वान् था। वह अधिकाश आलिमो तथा विद्वानों के साथ रहा करता था। उसके राज्यकाल में इस्लाम को बडा सम्मान प्राप्त था। काफिरो को मूर्ति-पूजा करने का साहस न होता था और वे नदी में स्नान भी न कर (४७) सकते थे। उसके शुभ राज्यकाल में मूर्तियो को भूमि में छिपा दिया गया था। नगरकोट का पत्थर (मूर्ति) जिसने (समस्त) ससार को मार्ग-भ्रष्ट कर दिया था, मँगवा कर कसाइयों को इस आशय से प्रदान कर दिया गया कि वे उससे मास तौला करें।

कविता से रुचि

वह अपना अधिकाश समय कविताओं की रचना करने तथा कविताओं के अध्ययन में व्यतीत किया करता था। देहली का शेख जमाली[1] जब मक्का, मदीना, एराक, अरब, ईरान, रूम, शाम, मिस्र तथा मावराउन्नहर की यात्रा करता हुआ देहली पहुचा तो सुल्तान उस समय बदायूँ में था। वह यह समाचार पाकर बडा प्रसन्न हुआ और उससे भेंट करने की इच्छा करने लगा। यह छन्द[2] उसने स्वय लिखे और उसके पास भेज कर "मेह्र व माह" जिसकी शेख ने रचना की थी, उससे मँगवाई और शेख समाउलहक वद्दीन को भी लिखा कि, 'जिस प्रकार सम्भव हो उसे भेज दें।"

शेख जमाली

(४८) जब शेख समाउद्दीन को फरमान प्राप्त हुआ तो उन्होंने शेख जमाली से आग्रह किया कि "फकीरों को बादशाहों के मेल मे बडा ही सासारिक लाभ होता है और अनेकों दरिद्रियों के कार्य उनके द्वारा

१ उसका नाम जलाल खा था। प्रारम्भ में उसका तखल्लुस जलाली था। बाद में अपने पीर मौलाना समाउद्दीन के कहने पर जमाली कर दिया। उसने अत्यधिक यात्रा की थी। उसकी रचनाओं मे 'सियरुल आरेफ़ीन' जिसमें चिश्ती तथा सुहरवर्दी सूफ़ियों की जीवनियाँ हैं और 'दीवान' तथा मसनवी 'मेह्र व माह' बड़ी प्रसिद्ध है। उसका निधन १० ज़ीक़ाद ९४२ हि० (१ मई १५३६ ई०) में हुआ।

२ छन्दों का अनुवाद नहीं किया गया।

सम्पन्न हो जाते हैं। इनसे अत्यधिक पुण्य प्राप्त होता है।" शेख जमाली सुल्तान के पास रवाना हो गया। जब वह उसके निकट पहुंचा तो सुल्तान ने सम्मानपूर्वक उसका स्वागत किया और उसकी सोहबत (संगति) तथा उसकी कविता से बड़ा प्रसन्न हुआ। शेख जमाली प्राय सुल्तान के साथ रहा करता था।

संगीत

क्योंकि वह कलाकारों को अत्यधिक प्रोत्साहन प्रदान किया करता था अत वह संगीत का इतना प्रेमी था कि उसके राज्यकाल में अद्वितीय संगीतज्ञ तथा गायक एकत्र हो गये थे। एक पहर रात्रि व्यतीत हो जाने के उपरान्त वह संगीत की सभा आयोजित कराता और संगीत प्रारम्भ होता जिसके फलस्वरूप पक्षी हवा से उतर आते थे और शुक्रतारा आकाश पर लटका रह जाता था। उसने चार दासों को १५०० दीनार में क्रय किया था। उनमें एक चंग[1], बजाता, दूसरा कानून[2], तीसरा तम्बूरा,[3] और चौथा वीणा। उनके स्वर इतने हृदयग्राही होते थे कि उनके द्वारा मुर्दे भी जी उठते थे, और जीवित लोगों के प्राण क्षीण हो जाते थ। रूप तथा सजधज में वे अद्वितीय थे। उनका मुख ईश्वर की कृपा का बहुत बड़ा प्रमाण था। कभी कभी रूपवतियों के स्वर सभा को इतना मुग्ध कर देते थ कि मदिरा बोतलों में रक्खी रह जाती थी। उनके अतिरिक्त चार सरना[4] बजाने वाले थ। जब आधी रात्रि व्यतीत हो जाती तो वे सरना बजाने लगते। सर्वप्रथम मबदारा, द्वितीय अजाना, तृतीय हिमी चतुर्थ रामकली। उसी पर वादन समाप्त होता था।

अनाज का सस्ता होना

उसके राज्यकाल म अनाज अत्यधिक सस्ता था। उस काल की प्रजा अत्यधिक सुख-सम्पन्नता (४९) में जीवन व्यतीत करती और भोग विलास में ग्रस्त रहती। उसका यश अभी तक संसार में स्मरणीय है।

सुल्तान के व्यक्तिगत जीवन के नियम

सुल्तान का एक अधिनियम यह था कि उसके सोने के वस्त्र तथा पलँग हर रोज नये ही प्रयुक्त होते थे। उन्हें एक स्थान पर सुरक्षित रक्खा जाता था और विधवाओं की पुत्रियों के विवाह के समय उन्हें दे दिया जाता था। उनके विवाह में जो व्यय होता वह राज्य की ओर से प्रदान किया जाता था।

उसका एक नियम यह भी था कि वह रात्रि म एक पहर रात्रि शेष रहने पर जाग उठता था और स्नान करके तहज्जुद[5] की नमाज पढ़ता था और कुरान के तीन सिपारे हाथ में लेकर खड़े होकर पढ़ता था। प्रात काल की नमाज वह जमाअत के साथ[6] पढ़ता था। तदुपरान्त वह राजसिंहासन पर पहुंच कर न्याय करने में व्यस्त हो जाता था। वह किसी पर अत्याचार न होने देता था और न्याय करते समय (५०) धनी तथा निर्धन किसी में कोई भेदभाव न करता और न कोई पक्षपात करता।

१ चंग —डफ़ के आकार का एक बाजा।
२ कानून —एक प्रकार की वीणा जिसमे ५० तार तक होते हैं।
३ तम्बूरा —सितार जैसा एक बाजा जिसे सुर कायम रखने के लिये बजाते हैं (तानपूरा)।
४ शहनाई।
५ आधी रात्रि के बाद की नमाज जो अनिवार्य नहीं है।
६ सामूहिक।

सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल की कुछ विचित्र घटनायें

विचित्र गुम्वद

सैयिद खा लोदी पटना की विजय हेतु गया था। जब सेना उस विलायत में पहुची तो उसने उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और अपने अधिकार मे कर लिया। एक दिन कुछ वीर सैर तथा शिकार के लिये खेमो से निकलकर एक गगनचुम्बी पर्वत के आचल म पहुचे। उन्होने एक गुम्वद देखा। एक युवक उस गुम्वद मे प्रविष्ट हुआ। उसने देखा कि उसकी छत से जल की एक बूंद टपक रही है। एक अन्य व्यक्ति वहा पहुच गया। दो बूँदें टपकने लगी। दो अन्य व्यक्ति वहा प्रविष्ट हुये तो चार बूँदें टपकने लगी। वे आश्चर्य में पड गये। जब सैयिद खा वहा प्रविष्ट हुआ तो उसने देखा कि जितने आदमी हें उतनी ही बूँदें टपक रही हें। तदुपरान्त मिया सैयिद खा ने आदेश दिया कि, "एक-एक करके लोग बाहर चले जाय।" उनमें से जितने व्यक्ति कम होते गये उतनी ही बूँदें भी कम होने लगी। यहा तक कि सब लोग वहा से निकल गये। मिया सैयिद खा अकेला रह गया। केवल वही एक बूंद टपकती रही। उन लोगो ने अत्यधिक सोच विचार किया किन्तु इस रहस्य के विषय में कुछ ज्ञात न हुआ।

जोधपुर का जादूगर

कहा जाता है कि जोधपुर के राणा के पास से सुल्तान की सेवा मे अनार आया। जब उसने उसे खाया तो वह अत्यन्त मीठा तथा स्वादिष्ट निकला। सुल्तान ने कहा, "मैने एराक तथा फारस के (५१) अनार वहुत खाये हैं किन्तु उनमें यह स्वाद नही मिला।" राणा के वकील ने निवेदन किया कि वृद्धो द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि "एक जादूगर जोधपुर पहुचा। उसने राजा से कहा कि, 'मै एक ही दिन में अनार तथा आम का ऐसा उद्यान लगा सकता हू जिसमे उसी दिन फल लग जाय, उसी दिन वे पक जायें और लोग उसी दिन उन्हें खा भी लें।' राजा ने उद्यान तैयार करने का आदेश दिया। उसने आम तथा अनार के पौधे लगवाये। एक दिन में पके अनार तथा आम लग गये। वह उन्हें राजा की सेवा में ले गया। उसने जब उसे खाया तो वह वडा मीठा लगा। राजा ने एक व्यक्ति को आदेश दिया कि वह जादूगर की हत्या कर दे। उसने तत्काल तलवार से उसकी हत्या कर दी। वह उद्यान उसी स्थान पर लगा रह गया।

"दो वर्ष उपरान्त उस जादूगर का पुत्र अपने पिता की हत्या के प्रतिकार हेतु कटिबद्ध होकर राजा की सेवा में पहुचा और उसने कहा, 'मै एक दिन मे खरबूजे का खेत बोकर लोगो को खरबूजा खिला सकता हू।' राजा ने उसे भी बोने का आदेश दिया। उसने खरबूजे का खेत तैयार किया और वहा से कुछ पके हुये फल लाया। उसने एक खरबूजा राजा को और दो तीन खरबूजे उसके विश्वासपात्रो को देकर कहा कि, 'जब मै कहू तब आप खरबूजे पर चाकू चलायें।' उस जादूगर ने अपने साथियो से कहा, 'तुम लोग इधर उधर गायब हो जाओ।' जब वे चले गये तो उसने राजा से कहा, 'अब खरबूजा खाइये।' राजा ने उस खरबूजे पर चाकू चलाया। जैसे ही उन लोगों ने चाकू चलाया तो राजा का तथा उन लोगो के, जिन्होने खरबूजा काटा था, सिर उनके पल्ले में गिर पडे। राजा का एक पुत्र जिसने चाकू न चलाया था सुरक्षित रह गया। उसने आदेश दिया कि, 'जादूगर की गर्दन उडा दी जाय।' लोग जब तलवार (५२) खीच कर पहुचे तो उसने कहा, 'मै मुसलमान हू। मुझे स्नान की आवश्यकता है।' वहा जल से भरा हुआ एक कुड था। उससे कहा गया कि, 'इसमें स्नान कर ले'। उस जादूगर ने उसमें डुबकी लगायी और गायब हो गया तथा पुनः उसका पता न चला।"

मुर्दों की कहानियाँ

कहा जाता है कि एक मुर्दे को हौज़े शम्सी पर जो प्राचीन देहली में है दफन किया जा रहा था। एक पत्थर खोदा गया। उसके नीचे से एक कब्र प्रकट हुई। लोगो ने देखा कि एक वृद्ध जिसका ललाट चमक रहा था, सफेद दाढी लगाये तथा सफेद चादर ओढे रेहल[1] पर कुरान रख कर पढ रहा है। जब उसने आदमियो को देखा तो पूछा, "क्या कयामत आ गई?" लोगो ने उत्तर दिया कि "नही।" उसने कहा, "हमारा रहस्य क्यो खोला?" उन लोगो ने भयभीत होकर कब्र को पुन बन्द कर दिया और उस मुर्दे को अन्य स्थान पर ले जाकर दफन कर दिया।

एक वर्ष मुल्तान के राज्यकाल म गगा में बाढ आ गई और नगर के कब्रिस्तान नष्ट हो गय। अधिकाश मुर्दो की हड्डिया जल बहा ले गया। उस नगर के सैयिदो ने एकत्र होकर इस आशय से कब्रो को खोदा कि अपने बुजुर्गों की हड्डिया अन्य स्थान पर ले जाकर दफन कर दें। जब उन्होने एक कब्र खोदी तो देखा कि "एक लाश सफद कफन पहने हुय, मानो आज ही दफन की गई हो रक्खी हुई है और (५३) राय बेल की एक झाडी खिली हुई है। उसका समस्त कफन फूल से लदा हुआ है। दो तीन फूल उसके नथुनो मे लग हुय ह।" उस लाश को उसी दशा मे छोड कर उन्होने कब्र को बन्द कर दिया।

कहा जाता है कि उन लोगो ने दूसरी कब्र खोदी। लाश के कफन का रग जोगिया था और मृग का सीग उसकी ग्रीवा में लटका हुआ था और उसके मुख को काला कर दिया गया था। कब्र बिच्छुओ से भरी हुई थी, यहा तक कि कफन न दिखाई पडता था। उस कब्र को पुन पाट दिया गया।

तातार खा फर्मुली के पुत्र की दुलहिन की कहानी

कहा जाता है कि तातार खा फर्मुली का पुत्र अपनी दुलहिन को अपने ससुर के घर से ला रहा था। जब वह नदी तट पर पहुची तो डोले को नौका पर रख दिया गया। अन्य लोग नौका से उतर पडे। एक फकीर, जो उस नौका पर बैठा था, को न रोका गया। तातार खा का पुत्र अन्य व्यक्तियो सहित दूसरी नौका पर बैठा। जब नौका नदी के मध्य में पहुची तो उस युवती ने अपनी दाया से कहा, "मैंने नौका तथा नदी को कभी नही देखा है। यदि तू कहे तो देख लू।" दाई ने कहा, "यहा एक दरवेश के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति नही, वह एक कोने में बैठा है।" वह युवती डोले से निकल आई और नौका के तख्ते पर बैठ कर तमाशा देखने लगी। जब कभी वह फकीर की ओर देखती उसे अपनी ओर दृष्टि-पात करता हुआ पाती। उसने नौका के किनारे अपने पाव लटका लिये। दाई ने कहा, "पाव इस ओर कर ले, कही जूती नदी में न गिर जाय।' उस युवती न कहा, "यदि मेरी जूती जल मे गिर पडे तो कोई उसे निकाल ला सकता है?" कहते समय उसने फकीर की ओर देखा। फकीर ने सकेत किया कि, "मै ले आऊगा।' उस युवती ने तत्काल जूती नदी में गिरा दी। वह फकीर भी नदी मे कूद पडा। जब (५४) थोडी देर हो गई तो फकीर जल पर न दिखाई दिया। वह युवती खेद प्रकट करती हुई नदी में कूद पडी। दाई ने शोर गल करना प्रारम्भ कर दिया। जिस नौका पर तातार खा का पुत्र था, वह भी आ गई। नदी में जाल डलवा दिये गये। उन दोनो को जब बाहर निकाला गया तो वे एक दूसरे को आलिंगन किये हुये थ। फकीर के एक हाथ में जूती थी।

अन्त म यह निश्चय हुआ कि दोनों को पृथक् करके दफन कर दिया जाय। उन्हें जबरदस्ती पृथक्

१ पोथी रख कर पढने के लिये काठ की बनी एक प्रकार की खुलने तथा बन्द होने वाली तख्ती।

रके दफन कर दिया गया। दो मास उपरान्त दुलहिन के सम्बन्धी इस उद्देश्य से आये कि उसकी लाश
ो ले जाकर अपने कब्रिस्तान में दफन कर दें। जब उस युवती की कब्र खोदी गई तो लाश का कोई चिह्न
मिला। उस फकीर की भी कब्र खोदी गई। वह कब्र भी खाली मिली। उस कब्र में एक खिडकी
नकली। जब लोगो ने उसके भीतर देखा तो वहा उन्हें एक अद्वितीय उद्यान जो स्वर्ग रूपी था, दृष्टिगत
आ। उसमें नाना प्रकार के रग के सोने के काम के महल थे। उन महलो में कौसर[1] के समान हौज़
। एक हौज के किनारे पर रत्नो तथा मोतियो से जडा हुआ एक सिंहासन रक्खा था। वे दोनो उसी
सिंहासन पर बैठे थे। चन्द्रमा तुल्य दासिया उनके चारो ओर चमर पर हाथ रक्खे हुये खडी थी। वे लोग
ईश्वर की लीला देखकर आश्चर्य में पड गये। इसी बीच में उस खिडकी पर एक पत्थर आ गया और
वह बन्द हो गई। लोगो ने लौट कर तातार खा के पुत्रो को यह समाचार पहुचाये। अन्त में नगर में यह
समाचार प्रसारित हो गया।

फिरिश्तो की कहानी

(५५) कहा जाता है कि अमीन खा सरवानी ने काबा के दर्शन का सकल्प कर लिया। अपना पद त्याग कर सुल्तान से विदा हो गया। गुजरात पहुचकर वह एक जहाज पर बैठा। सयोग से वह जहाज वायु के तूफान से टूट गया। सब लोग डूब गये। अमीन खा दो अन्य व्यक्तियों सहित एक तख्ते पर रह गया। वायु ने उस तख्ते को एक द्वीप में पहुचा दिया। वे तख्ते से उतर कर पर्वत के आचल मे पहुच गये। उसके किनारे उन्हें एक नगर बसा हुआ मिला। उस नगर के एक व्यक्ति को उनका हाल ज्ञात हो गया। वह उन पर दया करके उन्हें अपने घर ले गया। उनके निवास हेतु एक स्थान दे दिया और रोटी तथा वस्त्र द्वारा उनकी सहायता की। जब वे कुछ दिन वहा रहे तो उनसे उसकी मित्रता हो गई। उस नगर में प्रत्येक घर में ज़िरह तथा जौशन तैयार किये जाते थे। एक दिन अमीन खा ने उस व्यक्ति से जिसके घर में वह रहता था पूछा, "इस नगर में व्यापारी तो आते नही। आप लोगो का घर समुद्र मे है। इन्हें कौन क्रय करता है?" उस व्यक्ति ने कहा, "प्रत्येक वर्ष व्यापारी आकर इन्हें क्रय करके ले जाते हैं।" अमीन खा ने कहा, "जब व्यापारी आयें तो हम लोगो की सिफारिश कर दीजिये कि हमें जहाज पर बैठा कर इस स्थान से ले जाय। सम्भव है कि हम समुद्र-तट पर पहुच जाय और वहा से स्वदेश को चले जाय।" उस व्यक्ति ने स्वीकार कर लिया।

कुछ दिन उपरान्त नगर में व्यापारियो के आगमन के समाचार प्रसारित हो गये। नगर वाले कोठो तथा ऊँचे स्थानो से उनके विषय में पता लगाते थे। जब जहाज दृष्टिगत हुये तो नगर के समस्त लोग उनके स्वागतार्थ पहुचे और जहाज वालो को लाकर अपने अपने घरो मे उतारा। दो तीन दिन (५६) उपरान्त क्रय-विक्रय हो गया। जिस दिन वे जान लगे तो अमीन खा ने उस व्यक्ति से जिसके घर में वह था सिफारिश करन के लिये कहा। उसने व्यापारियो मे कहा, "यह व्यक्ति सैनिक है। हज करन के लिये जा रहा था। दुर्भाग्यवश इसका जहाज हवा तथा तूफान द्वारा नष्ट हो गया। उसके टूट जाने के कारण सब लोग डूब गये। यह तख्ते पर रह गया। ईश्वर ने इसे इस स्थान पर पहुचा दिया। यदि तुम लोग सहायता करो और अपने जहाज पर बैठा लो तो सम्भवत तुम्हारी सहायता से यह स्वदेश को पहुच जायेगा और तुम्हारा आभारी रहेगा।" उनमें से एक व्यापारी ने यह बात स्वीकार कर ली। अन्य लोगो ने स्वीकार न किया। अन्त में उस व्यापारी ने कहा कि, "इसकी दीनता पर दृष्टि करो।"

१ मुसलमानों के विश्वास के अनुसार स्वर्ग की एक नहर अथवा हौज़।

उन व्यापारियो ने कहा, "हम इसे इस शर्त पर ले जा सकते है कि हम जो कुछ करें यह देखता जाय, हमारे कार्य में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करे।"

अमीन खा द्वारा इस शर्त के स्वीकार कर लेने पर जिस दिन वे लोग चलने लगे उस दिन उन्होंने अमीन खा को जहाज़ पर बैठा लिया। दो तीन दिन यात्रा करने के उपरान्त उन लोगो ने जिरह तथा जौशन जो क्रय किये थे समुद्र में फेंकने प्रारम्भ कर दिये। जब वह कुछ जिरह तथा जौशन फेंक चुके तो अमीन खा से न रहा गया। उसने उन लोगो से कहा, "मित्रो! बडे आश्चर्य की बात है कि इतना धन व्यय करके जो सम्पत्ति तुमने क्रय की उसे समुद्र में फेंके दे रहे हो। इसका क्या कारण है?" जिस व्यापारी न अमीन खा के लाने के विषय मे अपने मित्र से आपत्ति प्रकट की थी, उसने कहा, "मैं इस व्यक्ति को साथ (५७) ले चलने से मना न कर रहा था? तू ही लाया।" उस व्यक्ति ने अमीन खा से कहा, "यदि अब तू बोलेगा तो तुझे समुद्र में फेंक देंगे।" अमीन खा ने कहा, "मुझे दु ख होता है कि इतना धन व्यय करके जो सम्पत्ति तुमने क्रय की उसे नष्ट कर रहे हो। इसमें क्या रहस्य है?" उन्होंने अमीन खा से कहा, "तू चुप रह। जब तुझे विदा करने लगेंगे तो तुझे बता देंगे।"

अमीन खा ने तदुपरान्त कुछ न कहा। दो दिन में समस्त सम्पत्ति समुद्र मे फेंकने के उपरान्त उन लोगो ने अमीन खा से कहा, 'आज हम तुझे विदा करते है। आशा है कि तू सुरक्षित पहुच जायगा।" अमीन खा ने पुन उन्हें ईश्वर की शपथ देकर उन लोगो से उस रहस्य के विषय में पूछा। उन लोगो ने कहा, "हम फ़िरिश्ते है। इस नगर वालो को जीविका पहुचाना हमारे सिपुर्द किया गया है। इस बहाने से हम उन्हें जीविका पहुचाते है।" अमीन खा ईश्वर की शक्ति देखकर आश्चर्य में पड गया। तदुपरान्त उन्होंने अमीन खा से पूछा, "तेरा निवास-स्थान कहा है?" उसने उत्तर दिया, "देहली।" उन लोगो ने पूछा, "इस समय तू अपने घर को जाना चाहता है अथवा काबा को?" अमीन खा ने कहा, "इस समय काबा की अभिलाषा है।" फ़िरिश्तो ने कहा, "आखें बन्द करो।" जब उसने आखें खोली तो अपने आप को काबा में पाया। वहा दर्शन करने के उपरान्त वह हिन्दुस्तान के जहाज पर देहली लौट आया। (५८) यह कहानी सुल्तान को सुनाई गई। जिसने भी सुना, उसे बडा आश्चर्य हुआ।

सुल्तान सिकन्दर के कुछ अमीर जो दान पुण्य में अद्वितीय थे

भीकन खा

सुल्तान सिकन्दर के शुभ राज्यकाल के अमीरो में से भीकन खा था जो बहुत बडा दानी था और जिसे माल हजारी मनसब प्राप्त था। उसकी प्रथा थी कि जब वह भोजन हेतु बैठता था तो चीनी के एक बडे थाल में नाना प्रकार के भोजन लगा कर, दो तीन तन्दूरी रोटी, एक अशर्फी तथा पान का एक बीडा रखकर सर्वप्रथम भिखारियो को भिजवाता, तदुपरान्त भोजन में हाथ डालता। एक दिन अहमद खा फर्मुली, जो उसका मुसाहिब था, बडी दुखी अवस्था में उसकी सेवा में पहुचा। भीकन खा ने पूछा, "अहमद खा तुझे आज मैं दुखी पाता हू, इसका क्या कारण है?" उसने निवेदन किया कि, "कल घर से आदमी ने आकर सूचना दी है कि पुत्री के विवाह का समय समीप आ गया है। उसकी व्यवस्था करनी है। मेरी दशा का आपको ज्ञान है।" भीकन खा ने पूछा, "कितने सामान की आवश्यकता होगी?" उसने कहा "३०,००० तन्कों की आवश्यकता है।" भीकन खा ने गुलाम बच्चे को बुला कर कहा, "उस सन्दूक को जो मेरे पलग के नीचे है मेरे पास ले आ।" जब वह गुलाम सन्दूक लाया तो भीकन खा ने तीन मुट्ठी अशर्फी उसके पल्ले में डाल दी। अहमद खा प्रसन्नतापूर्वक उस स्थान से निकल कर चला गया। वह

(५९) गुलाम बच्चा पुन पीछे-पीछे दौडता आया कि, "तुम नवीसिन्दो[1] के पास जाकर हिसाब करा दो कि कितना धन होगा।" जब हिसाब किया गया तो ८०,००० तन्के निकले। तदुपरान्त भीकन खा ने अहमद खा को बुलवाया और एक मुट्ठी अशर्फी और उसके पल्लू में डाल दी ताकि एक लाख तन्के पूरे हो जाय।

कहा जाता है एक दिन भीकन खा शिकार हेतु गया था। वह रात्रि म एक ग्राम में रहा। एक स्त्री साग पका कर लाई। जब उसने उसमें से कुछ ग्रास खाये तो वह उसे बडा स्वादिष्ट लगा। उसने पूछा, "यह कौन सा साग है ?" उसने बताया कि, "नीम की पत्ती है। किन्तु इसका पकाना बडा कठिन है।" खान ने अपनी जेब में हाथ डाला। चार अशर्फिया निकली। वह उसने उसे दे दी और कहा 'तेरे भाग्य ने कमी की। इतनी ही निकली।" तदुपरान्त उसने अपने एक सेवक को साग पकाने की विधि सीखने का आदेश दिया।

दो हजार तन्के वह दरबार मे आते जाते समय फकीरो को दे दिया करता था। उसने ४० मस्जिदो का निर्माण कराया था। प्रत्यक स्थान पर उसने कुरान पढने वाले तथा इमाम[2] नियुक्त किये। दानशीलता के अतिरिक्त उसमें वीरता भी अत्यधिक थी। जब कभी कोई युद्ध होता तो वह अकेला ही शत्रु पर घोडे छोड देता था। दो तीन योग्य व्यक्तियो की हत्या करके सेना को शत्रु पर आक्रमण करने का आदेश देता था।

दौलत खा लोदी

सुल्तान के अन्य अमीरो में दौलत खा लोदी था। वह अत्यधिक वीर था, मानो दूसरा रुस्तम हिन्दुस्तान मे पैदा हो गया हो। २० युद्धो में उसे विजय हुई और कही भी उसने पीठ न दिखाई। वीरता के अतिरिक्त वह अत्यधिक दानी भी था। यदि उसके पास कारून का खजाना भी होता तो एक ही व्यक्ति को दान कर देता।

(६०) कहा जाता है ३० एराकी घोडे विलायत से आये थे। १५ घोडो को तैयार करके दौलत खा के समक्ष प्रस्तुत किया गया। जब एक घोडा घुमाया गया तो दौलत खा ने अहमद खा से, जो उसका सबसे बडा हितैषी था, पूछा कि, "अहमद खा कैसा घोडा है ?" उसने प्रशसा की कि, "खान जियु सलामत, बडा ही उत्तम घोडा है।" दौलत खा ने वह घोडा उसे प्रदान कर दिया। उसने दूसरा घोडा मँगवाया और उसे घुमवाया। तदुपरान्त उसने अहमद खा से उसके विषय में पूछा। अहमद खा ने उसकी भी प्रशसा की। दौलत खा ने वह घोडा भी उसे प्रदान कर दिया। इसी प्रकार दस घोडे दे दिये गये। जब ११वा घोडा लाया गया तो दौलत खा ने अहमद खा से उसके विषय में पूछा। वह चुप रहा। दौलत खा ने पूछा, "क्यो चुप हो गया ?" अहमद खा ने कहा, "दान सीमा से अधिक हो चुका है।" दौलत खा ने कहा, "एक-एक लेने से परेशान हो गये ?" तदुपरान्त उसने अमीर आखुर[3] से पूछा, 'कितने घोडे रह गये जो तूने नही दिखलाये ?" उसने निवेदन किया, "चार घोडे रह गये है।" दौलत खा ने आदेश दिया, "उनको भी अहमद खा के घर बाध आओ।"

१ दीवान के मुशियों।
२ नमाज पढाने वाले।
३ घोड़ों की देख रेख करने वाला अधिकारी।

मियाँ हुसेन खा

उसके अतिरिक्त उस राज्यकाल के दानियो में मिया हुसेन खा भी था। एक दिन एक सुनार ने तीन रत्नजटित माग-टीके तैयार करके उसकी सेवा में उपस्थित किये। सायकाल का समय था। वह उन्हें सफेद चादर पर अपने सामने रख कर, मोमबत्ती को निकट रखे था। मोमबत्ती के प्रकाश में (६१) वे अगारे के समान चमक रहे थे। उसका मुसाहिब हमीद खा उस स्थान पर उपस्थित था। खान ने सुनार से पूछा, "इन पर कितना धन खर्च हुआ है ?" उसने उत्तर दिया, "एक पर ५ लाख तन्के, दूसरे पर तीन लाख और तीसरे पर दो लाख।" इसी बीच में हमीद खा से उसने पूछा कि, "तू क्या समझता है कि तुझे कौन सा प्रदान किया जायगा ?" हमीद खा ने कहा, "जिन लोगो के लिये ये तैयार किये गये है, उन्हें शुभ हो।" हुसेन खा ने पुन आग्रह करते हुय पूछा, "कुछ तो कह।" हमीद खा ने कहा, "मेरे हृदय में तीसरा आता है।" हुसेन खा ने हँस कर कहा, "तेरे हृदय में छोटा आता है। मेरे हृदय में बडा आता है। यह दूसरा अकेला रहा जाता है। यह तीनो तुम्हें प्रदान करता हू।"

जिस रात्रि में उसने यह दान किया तो दौलत खा फर्मुली ने जो उससे ईर्ष्या रखता था यह समाचार सुल्तान को पहुचाये कि हुसेन खा अपनी धन-सम्पत्ति को इस प्रकार नष्ट करता है। वह समझता था कि सुल्तान उससे खिन्न हो जायगा। सुल्तान ने कहा, "दौलत खा ! मुझे इस विषय में ईश्वर के प्रति कृतज्ञ होना चाहिये कि मेरे राज्यकाल में ऐसे-ऐसे दानी अमीर है जिनके विषय में इतिहासकार अपने इतिहासो में लिखेगे और जा लोग हमारे तथा तुम्हारे उपरान्त पैदा होगे वे पढ कर कहेंगे कि, वह बडा ही विचित्र बादशाह था जिसके राज्यकाल में एसे-ऐसे दानी तथा वीर लोग हुये है।" (६२) सुल्तान ने हुसेन खा को बुलवा कर उसे खिलअत प्रदान किया और उसके मसब तथा अक्ता में वृद्धि कर दी और नदीना[1] तथा चादपुर के परगने उसे जागीर में प्रदान कर दिये। इस बात से सभी बुजुर्ग लोग सुल्तान की प्रशसा करने लगे।

सिकन्दर लोदी का शेष हाल

अब्दुल वहहाव से दाढी के सम्बन्ध मे वार्ता

एक दिन हाजी अब्दुल वह्हाव ने, जो अपने काल का बहुत बडा वली[2] था, सुल्तान से कहा, "आप मुसलमानो के बादशाह है और दाढी नही रखते। यह बात इस्लामी सम्मान के अनुकूल नही।" सुल्तान ने कहा, "मेरी दाढी बडी ही खराब है, यदि मै दाढी रखूँगा तो अच्छी न लगेगी।' हाजी ने कहा, 'मै आपकी दाढी पर हाथ रखता हू। आप के अच्छी दाढी निकल आयेगी। सभी दाढिया इस दाढ़ी के अभिवादन हेतु आयेंगी। किसे हँसने का साहस हो सकेगा ?" सुल्तान चुप हो रहा। हाजी ने कहा, "उत्तर क्यो नही देते ?" सुल्तान ने कहा, "जब मेरे पीर[3] कहेंगे उस समय दाढी रख लूँगा।" हाजी ने पूछा, "आप के पीर कहा है ?" सुल्तान ने कहा, "भूवा नामक स्थान के जगल मे जो जालेसर के ग्रामो में से एक ग्राम है। वे कभी कभी मुझसे भेंट करने आते है।" हाजी ने पूछा, "उसके दाढी है ?"

१ सम्भवत नगीना जिला बिजनौर (उत्तर प्रदेश)।
२ सन्त।
३ गुरु।

सुल्तान ने उत्तर दिया कि "नही।" हाजी ने कहा, "आप दाढी रक्खे। जब मैं उसे देखूँगा तो उससे भी इस्लाम के आदेशो का पालन करने के लिये कहूगा।" सुल्तान ने कोई उत्तर न दिया। हाजी उठकर अपने डेरे को चला गया।

(६३) सुल्तान ने उसके चले जाने के उपरान्त कहा, "शेख समझते हैं कि लोग जो उनकी सेवा मे जाते हैं और चरणो का चुम्बन करते हैं तो यह उनके प्रताप के कारण है। यदि मैं किसी दास को चुडबल पर बैठा दूँ तो समस्त अमीर उसे कधो पर बैठा कर लेजाने लगेंगे।" शेख अब्दुल जलील वहा उपस्थित था। उसने यह बात हाजी की सेवा में पहुचा दी कि, "आपके चले आने के उपरान्त इस प्रकार की चर्चा होती थी।" हाजी अब्दुल वहहाब ने कहा "क्योकि उसने रसूल के पुत्र की सतान का अपमान किया है और उसकी दास से तुलना की है अत ईश्वर ने चाहा तो उसकी गर्दन पकडी जायगी।" तदुपरान्त हाजी अब्दुल वहहाब आज्ञा बिना ही स्वदेश को चला गया। एक मास उपरान्त सुल्तान की ग्रीवा में रोग उत्पन्न हो गया और नित्यप्रति उसमे वृद्धि होने लगी।

सुल्तान द्वारा पापो का प्रायश्चित

एक दिन उसने शेख लादन से, जो उसका इमाम था लिख कर पूछा, "नमाज न पढने, रोज़ा न रखने, दाढी मुडवाने तथा कान और नाक कटवाने का क्या कफ्फारा[1] हो सकता है ?" शेख ने इस विषय में विस्तार से लिख कर भेज दिया। सुल्तान ने तदनुसार आदेश दिया कि, "मेरे राज्यकाल में इस प्रकार के जितने पाप हुये हैं, उनके कफ़्फ़ारे का धन जो कुछ हो उसके विषय में निवेदन करें।" जब (६४) उन पापो तथा कफ़्फ़ारे का वृत्तात उसके समक्ष उपस्थित किया गया तो सुल्तान ने आदेश दिया कि, "खज़ाना[2] बैतुल माल[3] से पृथक् है। उसमें से धन आलिमो तथा पवित्र व्यक्तियो को दे दिया जाय।" आलिमों तथा पवित्र लोगो ने खज़ानेदार[4] से पूछा, "खज़ाना, जो बैतुल माल से पृथक् है, कहा से प्राप्त होता है ?" उन्हें उत्तर मिला, "अन्य राज्यो के बादशाह जो पेशकश सुल्तान को भेजते थे तथा जो पेश-कश अमीर लोग अपने प्रार्थना-पत्रो के साथ हर साल प्रस्तुत करते थ, उनके विषय में सुल्तान ने आदेश दे दिया था कि उन्हें पृथक् रक्खा जाय। मैं जिस स्थान पर व्यय करने का तुम्हें आदेश दूँ, उसे उस स्थान पर व्यय किया जाय। आज आप लोगो को प्रदान करने का आदेश हुआ है।" सभी लोग सुल्तान की बुद्धि पर आश्चर्य करने लगे।

सक्षेप में, सुल्तान के रोग में वृद्धि होने लगी, यहा तक कि वह न तो भोजन कर सकता और न जल पी सकता था। उसका श्वास भी रुक गया। रविवार ७ जिलहिज्जा ९२३ हि० (२१ दिसम्बर १५१७ ई०) को उसकी मृत्यु हो गई। उसने २८ वर्ष, ५ मास तथा ९ दिन तक राज्य किया

(६५) उसके उपरान्त उसका पुत्र सुल्तान इब्राहीम, जो उसका बडा ही योग्य पुत्र था, सिंहासनारूढ हुआ।

१ प्रायश्चित।
२ शाही कोष।
३ सार्वजनिक कोष।
४ कोषाध्यक्ष।

सुल्तान इबराहीम लोदी[1]

समस्त इतिहासकारो ने लिखा है कि सिकन्दर की मृत्यु के उपरान्त उसके दो पुत्र एक माता (६६) से थे। एक सुल्तान इबराहीम दूसरा जलाल खा। क्योकि इबराहीम ज्येष्ठ था और रूप रग, चरित्र, तथा वीरता सरीखे गुणो से सुशोभित था अत यह निश्चय हुआ कि उसे सिंहासनारूढ किया जाय। उस बादशाह के सिंहासनारोहण के लिये बृहस्पतिवार १० जिलहिज्जा ९२३ हि० (२४ दिसम्बर १५१७ ई०) का दिन निश्चित हुआ। उस दिन समस्त शाही बारगाहो को सुनहरे तथा मोतियो के काम के खेमो और विभिन्न रगो के सोने के तार के कामो के कालीनो से सजाया गया। सुल्तान सिकन्दर का बहुमूल्य रत्नो तथा मोतियो से अलकृत राजसिंहासन रगीन कालीन पर रक्खा गया। अमीर तथा मलिक रगीन खिलअतें एव सुनहरे कामो के वस्त्र धारण करके उपवन में फूलो के समान खिल गये। घोडो तथा हाथियो को उत्तम जीन तथा हौदा द्वारा सजाया गया था। उस दरबार की सजावट के समान किसी भी युग तथा काल में एसी सजावट न हुई होगी। उस दरबार की सजधज लोगो की दृष्टि में वर्षों तक रही। इस प्रकार उस भाग्यशाली बादशाह को सिंहासनारूढ किया गया।

उसके सगे भाई को जिसका नाम जलाल खा था, सुल्तान जलालुद्दीन की उपाधि प्रदान की गई और उसे अमीरो, उच्च पदाधिकारियो एव भारी सेना सहित जौनपुर के राज्य की ओर भेजा गया। चार मास उपरान्त आजम हुमायूँ तथा खाने खाना लोदी अपनी जागीरो से बधाई हेतु राजधानी में पहुचे (६७) और दरबार के अमीरो को कटु आलोचना तथा निन्दा करते हुये कहा कि, "राज्य के कार्य में किसी को साझी बनाना बहुत बडी भूल थी जो की गई, कारण कि बादशाही साझ में नहीं चल सकती।"

जलालुद्दीन से विश्वासघात

सुल्तान इबराहीम ने इस बात को सुनकर अपने भाई को जो वचन दिया था, उस भुला दिया। परामर्श के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि, "अभी शाहज़ादे को स्थायित्व प्राप्त नही हुआ है और अभी वह अपनी राजधानी मे नही पहुचा है। उसे लिखा जाय कि कुछ बातें उससे सम्बन्धित हैं अत वह जरीदा[2] दरबार में उपस्थित हो और परामर्श के उपरान्त जिससे दोनो ही का उपकार होगा अपनी राजधानी को लौट जाय।" हैबत खा गुर्गअन्दाज़ जोकि छल तथा धूर्तता के लिए प्रसिद्ध था फरमान देकर भेजा गया कि वह शाहज़ादे की चाटुकारी करके उसे दरबार मे भेज दे। इस बात के, जो कही जाती है कि दीवार के भी कान होते हैं, अनुसार शाहज़ादे के पास यह समाचार पहले ही से पहुच गये। हैबत खा ने यद्यपि बडी चाटुकारी तथा चापलूसी की और उसके स्वभाव के अनुकूल बातें कही किन्तु शाहज़ादा उसकी धूर्तता से प्रभावित न हुआ और जाने के लिय तैयार न हुआ। हैबत खा ने सुल्तान का सदेश उसके कुछ विश्वासपात्रो को भिजवाया किन्तु उनकी बात का भी प्रभाव न हुआ।

१ उसके अमीरों की सूची—खाने खाना, आजम हुमायू, हैबत खा दौलत खा, दिलावर खा, इस्लाम खा, दाऊद खा, अलम खां, मियां माखन, हुसेन खां, मारूफ़ खा, फ़तह खा, काला पहाड़, निज़ाम खा, फ़रीद खा, रुस्तम खां, हाजी खा, महमूद खा, जैन खा, अलप खां, तातार खां, अहमद खा, मंसूर खां, मलिक आदम।

२ थोड़े से सहायकों सहित शीघ्रातिशीघ्र।

अमीरो को मिलाने का प्रयत्न

(६८) तदुपरान्त सुल्तान ने उस सूबे के अमीरो तथा जागीरदारो ो प्रोत्साहनयुक्त फरमान लिखे और उन्हें भारी इनामो का इस आशय से आश्वासन दिलाया कि वे जलाल खा की आज्ञाकारिता त्याग कर उसके अभिवादन हेतु न जाय। उसने कुछ बडे-बडे अमीरो को विशेष खिलअतें भेजी तथा गुप्त रूप से प्रोत्साहित किया कि इस फरमान के पाते ही वे जलाल खा से विद्रोह कर दें और उसके आज्ञाकारी न बनें। क्योकि जलाल खा के भाग्य मे राज्य प्राप्त करना न लिखा था, अत समस्त बडे-बडे अमीरो ने आज्ञाकारिता त्याग कर विरोध प्रारम्भ कर दिया।

इसी बीच में शाहज़ादा जलाल खा ने रत्नजटित राजसिंहासन को देबा[1] से सजे हुये महल मे रखवाया और १५ रबी-उल-अव्वल ९२४ हि० (१७ मार्च १५१९ ई०) को सिंहासनारूढ हुआ। एक (६९) बहुत बडे दरबार का आयोजन कराया। उसने अपने दरबार के सेवको, उच्च पदाधिकारियो तथा समस्त सेना को उनकी श्रेणी के अनुसार खिलअतें, तलवार, कटार, घोडे, हाथी, उच्च पद एव उपाधिया प्रदान की। उसने साधारण तथा विशेष व्यक्तियो को अपनी ओर से सतुष्ट करा लिया और फकीरो तथा दरिद्रियो को दान प्रदान किये। उनके मआश तथा वज़ीफे में वृद्धि कर दी। नेतृत्व के कार्य नये सिरे से शुरू करके सुल्तान इबराहीम से विरोध प्रारम्भ कर दिया। अपने नाम का खुत्बा तथा सिक्का चालू[2] करा लिया।

जलाल द्वारा आज़म हुमायूँ को मिलाना

जब उसने अपनी शक्ति बढा ली तो आज़म हुमायूँ के पास, जो उन दिना कालिंजर के किले को घेरे हुये था, अपने विश्वासपात्र भेजे और कहलाया, "आप मेरे पिता तथा चाचा के स्थान पर है। आप स्वय जानते हैं कि मुझसे कोई अपराध नही हुआ है और सुल्तान इबराहीम ने विश्वासघात किया है। मेरे पिता के राज्य में से थोडा-बहुत जो कुछ मेरा तर्का निश्चित कर दिया था, उस ओर से भी, यद्यपि वह मेरा सगा भाई है, आखें बन्द कर ली हैं और कृपा के बदले के शीशे को निष्ठुरता के पत्थर से तोड रहा है।[3] आपको सत्य को न त्यागना चाहिये। पीडित की सहायता करनी चाहिये।" वास्तव में आज़म हुमायूँ सुल्तान की ओर से रुष्ट था। वह उसकी (जलाल खा) की नम्रता से प्रभावित हो गया। उसने किले से हाथ खीच लिया और उससे प्रतिज्ञा करके निश्चय किया कि सर्वप्रथम जौनपुर की विलायत को अधिकार में करके अन्य ओर ध्यान देना चाहिये।

अवध पर आक्रमण

वे निरन्तर यात्रा करते हुये अवध पहुचे। वहा का वाली मुकाबला न कर सका और कडा की (७०) ओर भाग गया और वास्तविक बात के सम्बन्ध में सुल्तान को पत्र भेज दिया। सुल्तान ने चुनी हुई सेना लेकर उस उपद्रव को शान्त करने के लिये प्रस्थान करना निश्चय किया। उसने कुछ अमीरो के परामर्श से अपने चार भाइयो को बन्दी बना लिया और हासी के किले में बन्द करा दिया। मुहम्मद

१ बारीक फूलदार रेशमी कपड़ा।
२ स्वतन्त्र रूप से बादशाह हो गया।
३ कृपा के स्थान पर निष्ठुरता कर रहा है।

खा को ५०० अश्वारोहियो सहित वहा नियुक्त कर दिया। तदुपरान्त उसने समस्त अमीरो को पद खिलअत तथा खजाने से धन देकर सतुष्ट कर लिया और बख्शियों को आदश दिया कि सेना का मुतालबा शासन की ओर से प्रदान किया जाय और एक मास का वेतन इनाम के रूप में प्रदान कर दिया।

सुल्तान का अवध की ओर प्रस्थान

वृहस्पतिवार २४ रबी-उल-आखिर ९२४ हि० (५ मई १५१८ ई०) को वह जौनपुर की ओर रवाना हुआ और निरन्तर यात्रा करता हुआ भोगाव पहुचा। इसी बीच में समाचार प्राप्त हुए कि आजम हुमायूँ तथा उसका पुत्र फतह खा सुल्तान जलालुद्दीन से पृथक् होकर शाही सवा में आ रहे हैं। यह समाचार पाते ही सुल्तान प्रसन्न हो गया और उसने उसी पडाव पर विश्राम किया और अपना दरबार सजवाया। जिस दिन आजम हुमायूँ आने वाला था उस दिन उसने बहुत से बडे-बडे अमीरो को उसके (७१) स्वागतार्थ भेजा और जब वह बादशाह की सेवा में पहुचा तो बादशाह ने उसे नाना प्रकार से सम्मानित किया और विशेष खिलअत जडाऊ कटार, तथा प्रसिद्ध हाथी प्रदान करके सतुष्ट किया।

जलालुद्दीन का आगरा की ओर प्रस्थान

उसी समय सुल्तान ने असख्य सेना, युद्ध के हाथी तथा अन्य सामान सुल्तान जलालुद्दीन के विरुद्ध भेजा। सुल्तान जलालुद्दीन ने अपने समस्त सम्बन्धियो को एकत्र करके कालपी क किले में छोड दिया। इस सेना के पहुचने के पूर्व वह आगरा की ओर रवाना हुआ। सुल्तान ने कालपी को घर लिया और अल्प समय में अपने अधिकार में करके नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। जब उसने अपने भाई के आगरा पहुचने के समाचार सुने तो उसने आगरा की रक्षा हेतु मलिक आदम काकर को भारी सेना देकर नियुक्त किया। मलिक शीघ्रातिशीघ्र आगरा पहुच गया। सुल्तान जलालुद्दीन ने आगरा को काल्पी के प्रतिकार में नष्ट कर देना निश्चय किया। मलिक आदम नाना प्रकार के बहाने करके तथा उसके स्वभाव के अनुकूल बातें कहकर उसे टालता रहा और उसने अन्य सना अपनी सहायतार्थ बुलवाई और समस्त हाल सुल्तान की सवा में कहला दिया।

सुल्तान जलालुद्दीन का सधि कर लेना

(७२) सुल्तान ने १८,००० अश्वारोही तथा ५० युद्ध के हाथी मलिक आदम की सहायतार्थ भेज। शाही सेना के पहुच जाने से मलिक के हृदय को शक्ति प्राप्त हो गई। उसने सुल्तान जलालुद्दीन की सेवा में सदेश भेजा कि, 'यदि आप राज्य की महत्त्वाकाक्षा त्याग कर अमीरो के समान व्यवहार करें और छत्र, आफताबगीर, नौबत तथा राजसिंहासन छोड कर अमीरो के समान रहें तो आपके अपराधो को क्षमा करवाकर काल्पी का प्रान्त पूर्व की भाति आपको प्रदान करा सकता हू।" सुल्तान जलालुद्दीन ने अपने दुर्भाग्य के कारण ३०,००० वीर सेनानी, १६० युद्ध के हाथी रखने के बावजूद दु साहस प्रदर्शित किया और इस शर्त पर सतुष्ट हो गया। अमीरो ने उसे बहुत समझाया कि, "आप क्यो दु साहस प्रदर्शित कर रहे हैं? सुल्तान आपको कदापि जीवित न छोडेगा। हम आपका दस वर्ष से नमक खा रहे हैं। आपको साहस से दृढतापूर्वक कार्य करना चाहिए ताकि वीर तथा प्राणों की बलि देने वाले आपके लिए प्राणों की बलि दे सकें। विजय प्रदान करने वाला ईश्वर है। सुल्तान बड गरम स्वभाव का स्वामी है। वह अन्त में अपने पिता के अमीरो से दुर्व्यवहार करेगा और समस्त सेना आपकी सहायक बन जायगी।" किन्तु ईश्वर ने उसके भाग्य में विनाश लिख दिया था अत उसने वह शर्त स्वीकार कर ली। उसने राज्य के चिह्न पृथक् करके मलिक आदम काकर के पास भेज दिये। मलिक आदम काकर ने बादशाही के समस्त

(७३) चिह्न उससे लेकर सुल्तान की सेवा में भेज दिये और उसकी प्रार्थना सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत कराई। सुल्तान ने उसे स्वीकार न किया और सुल्तान जलालुद्दीन के विनाश हेतु रवाना हुआ। उसने यह समाचार पाकर ग्वालियर के राजा के पास शरण ग्रहण की। उसकी प्राचीन सेना भी छिन्न-भिन्न हो गई। सुल्तान इबराहीम ने आगरा में पड़ाव किया। कुछ विरोधी अमीर भी उसके हितैषी बन गये। करीम दाद खा तो[1] को अन्य अमीरो सहित देहली रक्षा हेतु भेज दिया गया।

जलालुद्दीन का बन्दी बनाया जाना तथा उसकी हत्या

इस घटना के उपरान्त शाही सेना ने ग्वालियर को घेर लिया और आजम हुमायूं को ग्वालियर के किले की विजय हेतु भेज दिया गया। सुल्तान जलालुद्दीन वहा से निकल कर मालवा की ओर चल दिया। जब उसने मालवा के सुल्तान को अपने प्रति अच्छा व्यवहार करते न देखा तो कुछ लोगो के साथ वह खरा कतहत[2] की ओर चल दिया। वहा वह गँवारो के द्वारा बन्दी बना लिया गया। उन्होंने सुल्तान की चाटुकारी हेतु उसे उसकी सेवा में भेज दिया। सुल्तान इस समाचार से बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने एक बहुत बड़ा दरबार किया। सुल्तान जलालुद्दीन के हाथो को कपड़े से बाँध कर उसकी सेवा में प्रस्तुत किया गया। (७४) उसे हासी के किले में भेज दिया गया किन्तु वह मार्ग ही में था कि अहमद खा को भेजकर उसकी हत्या करा दी गई।

तदुपरान्त सुल्तान ने निश्चिन्त होकर बिना किसी साझीदार के राज्य को अपने अधिकार में कर लिया और ग्वालियर की विजय का प्रयत्न करने लगा।

सुल्तान इबराहीम द्वारा ग्वालियर की विजय

सयोग से राजा मान, ग्वालियर का वाली, जो वर्षों से सुल्तानो के विरुद्ध युद्ध कर रहा था, नरक को प्राप्त हो गया था। बिकरमाजीत[3] उसका पुत्र, उसका उत्तराधिकारी बना। सुल्तान ने अत्यधिक (७५) युद्ध के उपरान्त किला उससे छीन लिया। उस क़िले के द्वार पर तांबे का जो एक चौपाया था और जो स्वय बोलता था उसे उसने वहा से लाकर आगरा के किले पर रख दिया। वह अकबर बादशाह के राज्यकाल तक वहा रहा। (अकबर) बादशाह के आदेशानुसार उसे पिघला कर तोप ढाल ली गई।

अमीरो के प्रति अत्याचार

जब सुल्तान, ग्वालियर को विजय करके देहली पहुचा तो युवावस्था के अभिमान के कारण उसके स्वभाव में परिवर्तन आ गया। वह अपने पिता के अमीरो से दुर्व्यवहार करने लगा और उनकी हत्या कराने लगा। समस्त अमीर उससे शकित हो गये। उसने कुछ को बन्दी बना लिया। उसमें मिया भूवा को जो एक बहुत बडा अमीर तथा उसके पिता का विश्वासपात्र था और २८ वर्ष से सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल में पूर्ण अधिकार-सम्पन्न वजीर था, बन्दी बनाकर मलिक आदम काकर को सौंप दिया। कुछ ईर्ष्यालुओ के कहने पर उसके तथा कुछ अन्य अमीरो के लिये उसने एक भवन का निर्माण कराया और उसके नीचे एक तहखाना बनवाया। दो मास उपरान्त जब तहखाना सूख गया तो उसे गुप्त रूप से बारूद के थैलो से भरवा दिया।

१ एक पोथी के अनुसार 'तोग'।
२ गढ़ा कटंगा।
३ विक्रमादित्य।

मिया भूवा तथा कुछ अन्य अमीरो की हत्या

तदुपरान्त उसने मिया भूवा तथा कुछ अन्य अमीरो को जिन्हें नष्ट कराने के लिये उसने यह धूर्तता की थी बन्दीगृह से मुक्त कर दिया और खिलअतें देकर उन्हें प्रोत्साहन प्रदान किया और उन्हें इनाम तथा कृपा द्वारा प्रसन्न कर दिया ताकि उनके हृदय से शका का अन्त हो जाय। एक दिन उसने (७६) उन लोगो को बुलवाकर कहा कि, "इस्लाम खा को मेरे पिता ने आश्रय तथा उन्नति प्रदान की थी। उसने कुत्सित विचारो को अपने हृदय में स्थान देकर विद्रोह कर दिया है और षड्यन्त्र रच रहा है। तुम लोग जिस नये भवन का मैंने निर्माण कराया है उसमें बैठकर परामर्श करो कि मुझे क्या करना चाहिये, कारण कि मुझे तुम्हारी बहुमूल्य सम्मति पर विश्वास है। तुम लोग जो कुछ सोचोगे उसी के द्वारा मेरा कल्याण हो सकेगा।" वे लोग बिना किसी शका के वहा जाकर बैठ गये और वार्तालाप करने लगे। अचानक एक अग्नि-ज्वाला उठी और मिया भूवा तथा अन्य लोग जो उस स्थान पर थे उसी प्रकार नष्ट हो गये जैसे कि वृक्षो के पत्ते वायु से उडकर नष्ट हो जाते हैं। इसी कारण अधिकाश अमीरो ने सुल्तान के स्वभाव के परिवर्तन से अवगत होकर विरोध तथा उससे पृथक् होने की पताका बलन्द कर दी। इस्लाम खा ने, जो कडा में था, विद्रोह कर दिया और सेना एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया।

इस्लाम खा के विद्रोह का दमन

जब सुल्तान को इस दुर्घटना के समाचार प्राप्त हुए तो उसने सेना भेजने का सकल्प किया। अचानक बडे-बडे अमीरो में से भी कुछ लोग देहली से भाग कर इस्लाम खा के पास चले गये और एक बहुत बडा विद्रोह उठ खडा हुआ। सुल्तान ने अन्य अमीरो को भी नियुक्त किया। जब वे लोग लखनऊ के समीप पहुचे तो इकबाल खा, आज़म हुमायूँ के खासा खेल ने ५००० अश्वारोहियो सहित उन पर आक्रमण किया और बहुत से लोग मार डाले गये। देहली की सेना पराजित हो गई। सुल्तान ने यह समाचार पाकर अन्य सेना भेजी और आदेश दिया कि, "सर्वप्रथम विद्रोहियो को बन्दी बना लिया जाय, (७७) तदुपरान्त इकबाल खा का उपचार किया जाय।" इस्लाम खा की सेना चालीस हजार अश्वारोहियों तथा ५०० युद्ध के हाथियो सहित युद्ध हेतु समीप पहुची। शेख राजू ने विद्रोहियों को परामर्श दिया। उन लोगो ने कहा, "यदि सुल्तान आज़म हुमायूँ को बन्दीगृह से मुक्त कर दे तो हम बादशाह की आज्ञाकारिता स्वीकार कर लेंगे।" सुल्तान ने स्वीकार न किया और अन्य अमीरो को विद्रोहियो के विनाश हेतु भेजा। *जब योद्धा रणक्षेत्र में पहुचे तो ऐसा घोर युद्ध हुआ कि समय की आखो ने न देखा होगा।* दोनो पक्षो की ओर से तीन चार हजार योग्य अश्वारोही रणक्षेत्र में मारे गये। रक्त की नदी बह निकली। अचानक इस्लाम खा की ओर के एक युद्ध के हाथी के मस्तिष्क पर सुल्तान की ओर से गोली लगी। वह पलट कर अपनी सेना पर आक्रमण करने लगा। इस कारण विद्रोहियो की सेना छिन्न भिन्न हो गई। क्योंकि विद्रोह तथा नमकहरामी से कोई लाभ नही होता, अत इस्लाम खा मारा गया। विद्रोही बुरी तरह पराजित हो गये और वह विद्रोह शान्त हो गया।

राणा सागा के विरुद्ध आक्रमण

जब सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुये तो वह बडा प्रसन्न हुआ। जिन अमीरो ने प्रयत्न तथा (७८) परिश्रम किया था, उन्हें उसने सम्मानित किया। किन्तु अमीरो के प्रति जो ईर्ष्या उसके हृदय में थी उसका अन्त न हुआ। इसी बीच में राणा सागा के विरुद्ध भी सेना नियुक्त हुई। मिया हुसेन खा तथा मिया मारूफ खा सुल्तान सिकन्दर के सेनापति रह चुके थे। सुल्तान ने उन्हें अपने दरबार के समस्त

अमीरो तथा मलिको की अपक्षा उच्च पद प्रदान किये एव अधिक विश्वासपात्र बना लिया था। वे अपने समय के बहुत बडे योद्धा थे और रुस्तम को युद्ध के नियम सिखा सकते थे। उन्होने स्वर्गीय सुल्तान के राज्यकाल में (अनेक) युद्ध किये तथा किले विजय किये। सुल्तान ने उन्हें मिया माखन के अधीन कर दिया।

सुल्तान द्वारा मिया माखन की हत्या का प्रयत्न

जब शाही सेना राणा के राज्य के समीप पहुची तो सुल्तान ने मिया माखन के पास एक आदेश भेजा कि जिस प्रकार सम्भव हो हुसेन खा तथा मारूफ खा को बन्दी बनाकर इस स्थान पर भेज दे। मिया माखन मारूफ खा के डेरे में उसके पुत्र की मृत्यु के प्रति जिसे दो मास हो चुके थे, सवेदना प्रकट करने के बहाने से पहुचा। मिया हुसेन समाचार पाकर शीघ्रातिशीघ्र वहा पहुचा और कहा,"मिया माखन ! इस असम्भव विचार को हृदय से निकाल दो कि तुम मिया मारूफ को बन्दी बना सकोगे। हमारा सुल्तान पागल हो गया है। यहा से कुशलतापूर्वक चले जाओ।"

मिया माखन ने वहा से जाकर यह हाल दरबार मे लिख कर भेज दिया। सुल्तान का आदेश प्राप्त हुआ कि, "तू किसी के डेरो में क्यों जाता है ? मैदान में सरापर्दा लगवा और उन लोगो को सूचना (७९) पहुचा दे कि फरमान आया है। आकर पढो। जब वे आयें तो उसी स्थान पर दोनो को बन्दी बना ले और लोहे में जकड कर उन्हें भेज दे।" माखन ने ऐसा ही किया। सरापर्दा लगवाया और उसी के बराबर दूसरा खेमा लगवाया। २०० चुने हुए वीरो को अस्त्र-शस्त्र पहना कर वहा इस आशय से बैठा दिया कि जब हुसेन तथा मारूफ आयें तो वे उन पर टूट पडे और उन्हें बन्दी बना लें। तदुपरान्त उसने उन दोनो को बुलवाया। मारूफ पहले पहुच गया। मिया हुसेन को मार्ग मे कुछ लोगो ने सावधान कर दिया। मिया हुसेन ३०० व्यक्तियो सहित वहा पहुच गया। उसने सर्वप्रथम उस खेमे की रस्सियों को जिसके नीचे (मिया माखन) ने सैनिक छिपा दिये थे, कटवा दिया और खेमा उन लोगो पर गिर गया, और वह स्वय माखन के शिविर में प्रविष्ट हो गया और कहा, "मिया माखन ! बादशाह का फरमान पढो।" मिया माखन ने कहा, "फरमान को इस प्रकार पढने का आदेश नही है।" हुसेन खा ने कहा "हमें पता चल चुका है कि फरमान तथा इस सेना का आना हमारे प्राणो (को लेने) के लिये है। हम लोग इस अपमान से प्राण न देंगे।" तदुपरान्त वह मिया मारूफ का हाथ पकड कर उसे वहा से बाहर ले गया।

हुसेन खा की राणा से सधि

(८०) जब हुसेन खाँ ने देखा कि सुल्तान के आतक से मुक्ति सम्भव नही तो उसने राणा के पास चले जाने का सकल्प किया और अपना वकील राणा के पास भेजकर उसकी सेवा में उपस्थित होने का प्रस्ताव रक्खा। राणा को इस बात से भय हुआ कि हुसेन खा के हमारे पास आने का क्या कारण है। क्योकि वह उसकी वीरता के विषय में सुन चुका था, अत उसे भय हुआ कि कही वह धूर्तता के कारण न आ रहा हो। तदुपरान्त उसने प्रतिज्ञा की तथा वचनबद्ध हुआ और ४००० अश्वारोहियो सहित राणा के पास पहुचा। राणा ने अपने भतीजे को उसके स्वागतार्थ भेजा। उसने राणा से जाकर भेंट की।

मिया मारूफ का मियां माखन को उत्तर

मिया माखन, हुसेन खा के चले जाने के कारण ३० हजार अश्वारोहियों तथा ३०० पर्वतरूपी हाथियो के बावजूद नि सहाय हो गया। दूसरे दिन मिया माखन ने विवश होकर अपनी सेना तैयार की और राणा से युद्धहेतु रणक्षेत्र में पहुचा। उस ओर से राणा अपनी सेना को लेकर रणक्षेत्र में आया।

मिया माखन ने मारूफ खा को जो दायी ओर था, सन्देश भेजा कि, "तुम तथा हुसेन खा मित्र हो। इस समय वह हरामखोरी करके सुल्तान के शत्रुओ से मिल गया है। हमारे मध्य में तुम्हारे रहने से क्या लाभ?" मारूफ खा ने उत्तर भेजा कि "३० वर्ष स मै सुल्तान बहलोल तथा उसकी सतान का नमक खा रहा हूँ। सिकन्दर शाह के राज्यकाल में हम सनापति थे। हमारे परिश्रम से खोद[1] नामक किला विजय हुआ। हमने नगरकोट के राजा की हत्या करके उस पत्थर को जो ३००० वर्ष से हिन्दुओ का ईश्वर था लाकर (८१) लोगो द्वारा पददलित होने के लिए (फिक्वा) दिया। उस किले को जिसका इस्लाम के प्रारम्भ से लेकर आज तक कोई भी घेरा डालने का विचार भी न कर सका था हमने विजय किया। हमने बिहार के राजा से ७ मन सोना प्राप्त किया। जब से सुल्तान इबराहीम का राज्यकाल प्रारम्भ हुआ नये नये लोग जिन्हें उन्नति तथा उत्कर्ष प्राप्त हो गया है हमें नमकहरामो में सम्मिलित करने लगे है। अब भी जो कुछ (हम) फकीरो द्वारा सम्भव होगा उसे सम्पन्न करने में कोई कसर न उठा रखेंगे।" इस बात के उपरान्त मारूफ खा शाही सेना से पृथक् होकर खडा हो गया।

राणा से युद्ध

इसी बीच में समाचार-वाहको ने उपस्थित होकर सूचना दी कि राणा की सेना निकट आ गई है। मिया माखन ने दायें तथा बायें भाग की सेना को तैयार किया। सईद खा फर्त, तथा हाजी खा ७००० अश्वारोहियो सहित दायें भाग में, दौलत खा, अलहदाद खा तथा यूसुफ खा बायें भाग में और मिया माखन ने अग्रिम दल मे स्थान ग्रहण किया। मिया हुसेन खा यद्यपि मिया माखन स रुष्ट था किन्तु उसने सुल्तान के नमक के हक पर ध्यान देकर शाही लश्कर का मुकाबला न किया। जब दोनो ओर की सेनाओं की पक्तिया रणक्षेत्र में डट गईं और दोनो पक्षो के योद्धाओ ने रणक्षेत्र की ओर रुख किया तो हिन्दुओ ने (८२) हथेली पर प्राण रख कर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। अचानक शाही सेना पराजित हो गई। शाही सेना के अधिकाश योग्य व्यक्ति तथा योद्धा मार डाले गये और अन्य लोग विभिन्न स्थानो को चले गये। मिया माखन जो सेनापति तथा सरदार था पराजित हो गया और अत्यधिक लोगों की हत्या कराने के उपरान्त अपने शिविर में पहुच गया।

उस रात्रि में मिया हुसेन खा ने मिया माखन को सन्देश भेजा कि, "अब आप को हितैषियो का महत्त्व ज्ञात हो गया होगा। खद है कि ३०,००० अश्वारोही गिनती के थोडे से हिन्दुओ द्वारा पराजित हो गये। अब आप निष्ठावान् दासो की नमकहलाली की लीला देखें।" उसने गुप्त रूप से मिया मारूफ को सन्देश भेजा कि, "जब आधी रात हो जाय तो (सेना) को युद्ध के लिये तैयार करके मुझसे भेंट कर कारण कि मिया माखन को सरदारी देख ली गई। अब यह आवश्यक है कि सुल्तान के नमक का हक अदा किया जाय। यद्यपि वह अपने पिता के हितैषियो का मूल्य नही समझता (किन्तु हमें युद्ध करना इसलिए आवश्यक है कि) लोग हमारी निन्दा न करें और यह न कहें कि हम लोगों ने ३० वर्ष तक नमक खाया और प्रतिष्ठित अमीरो में समझे जाने पर भी हम लोग नमकहरामी करके शत्रुओं से मिल गये।"

सक्षेप में, मिया मारूफ खा छ हजार अश्वारोहियो को युद्ध के लिये तैयार करके मिया हुसेन खां को सेना से २ कोस की दूरी पर पहुच गया और उसे सूचना कराई। दोनों सेनायें एक स्थान पर एकत्र हुई। राणा की सेना अपनी विजय पर अभिमान करके भोग-विलास में ग्रस्त हो गई थी। कुछ लोग

1 जौंद।

सो रहे थे और मौत उनकी असावधानी पर हँस रही थी। अचानक नक्कारे तथा करना[1] की ध्वनि ने (८३) काफिरो के सावधानी के कानो से असावधानी की रूई निकाल दी[2] और वे परेशान हो गये। अफ़ग़ानो ने तलवार निकाल कर कत्ले आम प्रारम्भ कर दिया। राणा घायल होकर अधमरा हो गया और कुछ लोगों के साथ भाग गया। अन्य लोगो ने भी अपने प्राण तलवारो को दे दिये।

प्रात काल मिया माखन को यह समाचार प्राप्त हुये। वह बडा लज्जित हुआ। आता (अता) लोदी के पुत्र मिया बायज़ीद ने जो सेना का बख्शी था और हुसेन खा का मित्र था, मिया हुसेन खा तथा मिया मारूफ के विजय पत्र सुल्तान की सेवा में लिखे। तदुपरान्त मिया हुसेन खा ने १५ हाथी, ३००,४०० उत्तम घोडे तथा अत्यधिक लूट की धन-सम्पत्ति देहली भेजी। सुल्तान ने इस विजय की बडी खुशिया मनाईं। उसने आदेश दिया कि खुशी के नक्कारे बजाये जायें। तदुपरान्त अत्यधिक कृपा प्रदर्शित करते हुये फरमान लिख कर दो विशेष खिलअतें, दो कटार, दो प्रसिद्ध हाथी तथा चार घोडे हुसेन खा एव मिया मारूफ के पास भेजे।

ग्वालियर पर आक्रमण

इसी बीच में सुल्तान ने आजम हुमायू को, जो एक बहुत बडा अमीर था और अपने पुत्रो सहित १२ हज़ारी मसब का अधिकारी था, ग्वालियर के किले की विजय हेतु भेजा। उसने उस राज्य में जाकर अत्यधिक प्रयत्न करके आसपास के परगनो को अपने अधिकार में कर लिया। ग्वालियर के किले को घेर कर उसने वीरा को मोरचे बाट दिये। मनजनीक तथा अरादो की व्यवस्था करके हुक्को को जला जलाकर किले के भीतर फेंकना प्रारम्भ कर दिया। हिन्दुओं ने रूई से भरे हुये गिलाफो को तेल में भिगोकर, (८४) जला जलाकर नीचे फकना शुरू कर दिया। दोनो ओर से आदमी जल रहे थ। आजम हुमायू क़िले के नीचे से सावात लगवाये और वहा तोपखाने रखवा कर इस प्रकार गोले फेकता था कि किले वाले किले के प्रागण के बाहर न निकल सकते थे। किले वाले व्याकुल हो गये और आज ही कल में विजय प्राप्त होने वाली थी कि राजा ने ७ मन सोना, श्यामसुन्दर हाथी तथा अपनी पुत्री सुल्तान को देना स्वीकार कर लिया।

आजम हुमायूँ का ग्वालियर से बुलाया जाना

अचानक सुल्तान का फरमान प्राप्त हुआ कि आजम हुमायू सूचना पाते ही दरबार मे उपस्थित हो। उसने फरमान पढते ही किले का कार्य त्याग कर जाने की तैयारी प्रारभ कर दी। उसके पुत्रो तथा सम्बन्धियो ने कहा, "हमें भली भाति ज्ञात है कि सुल्तान आपकी हत्या कराना चाहता है और अन्य अमीरो के समान वह आपकी भी हत्या करा देगा।" कुछ अन्य अमीरो ने भी जो उसके अधीन थे उससे कहा कि, "सुल्तान की सेवा में जाना उचित नही।" आजम हुमायू ने कहा, '४० वर्ष से मैं इस वश का नमक खा रहा हू और उसके हितैषियो में सम्मिलित हू। इस समय मैं उसका विरोध करके नमक-हरामो में नहीं सम्मिलित होना चाहता।" मुहम्मद खा लोदी तथा दाऊद खा सरवानी ने जो प्रतिष्ठित अमीरा में सम्मिलित थ कहा, "हमारे सुल्तान की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। वह नमकहलाल तथा नमक-(८५) हरामो मे भेद-भाव नही कर सकता। इस समय आपके पास ३०,००० अश्वारोही हैं। आप

१ तुरही, दुंदुभी।
२ असावधानी त्याग कर सावधान हो गये।

विद्रोह कर द और अपने प्राणो की रक्षा करें। हमें विश्वास है कि इस समय वह आपको बुलवा कर भूवा तथा हाजी खा के प्रति जिस प्रकार व्यवहार किया था, व्यवहार करेगा।"

आज़म हुमायूं की हत्या

आजम हुमायू ने कहा, "जो कुछ भी हो मैं अपनी सफेद दाढी में कालिख नही लगवाऊगा।" परामर्श के उपरान्त उसने देहली की ओर प्रस्थान किया। जब वह आधी यात्रा समाप्त कर चुका तो समाचार प्राप्त हुये कि सुल्तान महमूद सरवनी तथा हुसाम खा शाहू खेल की, जो प्रतिष्ठित अमीर थे, सुल्तान ने हत्या करा दी। मुहम्मद खा तथा अलहदाद ने पुन कहा, "अब भी कुछ नही बिगडा है। आप यहा से वापिस होकर अपने पुत्र के पास जो जौनपुर में है चले जाय।" आज़म हुमायू ने कहा, "तुम लोग सच कहते हो। सुल्तान यही कर रहा है किन्तु यह मुझसे नही हो सकता।" क्योकि आजम हुमायू की मृत्यु का समय आ चुका था अत उन हितैषियों की बात उसने स्वीकार न की। वह निरन्तर यात्रा करता हुआ देहली की ओर चल खडा हुआ। जब वह निकट पहुचा तो सुल्तान का आदेश प्राप्त हुआ कि वह सर्वप्रथम अपने हाथियो तथा घोडो को दरबार में भेज दे। उसने उसकी आज्ञा का पालन किया। तदुपरान्त उसकी समस्त सेना उससे पृथक् होकर उसके पुत्र के पास पहुच गई। जब शहर दो कोस रह गया तो (८६) भापुर ग्राम के निकट मुख़लिस शराबदार आया और उसने निवेदन किया कि, "सुल्तान का आदेश है कि आज़म हुमायू के पास सेना, खज़ाना तथा जो कुछ भी हो उससे ले लिया जाय और उसे याबू पर सवार करके लाया जाय तथा बन्दीगृह में डाल दिया जाय।" जब वह निष्ठावान् बन्दीगृह में पहुचा तो उसने सुल्तान के पास सदेश भेजा कि, "आपके हृदय मे जो कुछ होगा वह आप करेंगे किन्तु मुझे दो आवश्यक बातें कहनी हैं उनके विषय में निवेदन करता हू। एक यह कि मेरा पुत्र उपद्रवी है। उसका उपचार करना आवश्यक है। दूसरे यह कि वज़ू के लिये जल तथा इस्तन्जे[1] के लिये ढेला मुझे मिलता रहे।" तदुपरान्त उसने किसी विषय में भी कुछ न कहा। अन्त में सुल्तान ने उस पवित्र विश्वास वाले व्यक्ति की बन्दीगृह में हत्या करा दी और अपने राज्य की नींव अपने हाथ से खोद डाली।

अमीरो का विद्रोह

उसके राज्य के विनाश का प्रथम कारण आज़म हुमायू की हत्या था, कारण कि उसके पुत्र फत्ह (८७) खा के अधीन १०,००० अश्वारोही थे। बिहार के वाली ने दरिया खा लोहानी के पुत्र शहबाज खा के साथ बिहार में सुल्तान से विद्रोह कर दिया। उसके पास ७०,००० अश्वारोही एकत्र हो गये और उसने सुल्तान मुहम्मद की उपाधि धारण कर ली। उन लोगो ने मिल कर विद्रोह कर दिया और बहुत बडा उपद्रव उठ खडा हुआ। बिहार सुल्तान के हाथ से निकल गया।

दौलत खा लोदी का बुलवाया जाना

इसी बीच में सुल्तान ने तातार खा के पुत्र दौलत खा लोदी को जो २० वर्ष से पजाब पर शासन कर रहा था, लाहौर से बुलवाया। उसने आने में विलम्ब किया और अपने पुत्र दिलावर खा को भेज दिया। सुल्तान ने पूछा, "तेरा पिता क्यो न आया?" उसने निवेदन किया कि, "रुग्णावस्था के कारण उन्होंने मुझे भेज दिया है।" सुल्तान ने कहा, "यदि तेरा पिता शीघ्र ही न आयेगा तो अन्य अमीरो के समान

१ देखिये पृ० १७७ नोट न० २।

उसकी भी दुर्दशा होगी।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "उसे (दिलावर खा को) उस बन्दीगृह को जहा कुछ वडे-वडे अमीर दीवारो में चुनवाये गये थे ले जाकर दिखाओ कि आज्ञा का उल्लघन करने वालो की ऐसी दुर्दशा होती है।" दिलावर खा को उस स्थान पर ले जाकर दिखाया गया। वह उस दृश्य को देख कर काप उठा और उसके हृदय से धुआ निकल पडा। जब उसे पुन दरबार मे उपस्थित किया गया तो सुल्तान ने पूछा, "जो लोग मेरी आज्ञाओ का पालन नही करते उनकी दुर्दशा देखी ?" दिलावर खा ने (८८) काप कर भूमि पर सिर रख दिया। कहा जाता है कि सुल्तान ने उसकी आखो में भी सलाई फिरवा कर दीवार में चुनवा देने का सकल्प किया था किन्तु दिलावर खा अपने आप को सुल्तान के क्रोध से मुक्त होते हुये न देख कर देहली से भाग खडा हुआ और छ दिन में अपने पिता के पास पहुच गया। उसने उससे कहा, "यदि आप अपना जीवन चाहते हैं तो आप अपनी चिन्ता करें अन्यथा अत्यधिक अपमानित करके आप की हत्या की जायगी।"

दौलत खा ने सोचना प्रारम्भ किया कि, "यदि मैं विद्रोह कर देता हू तो मुझ पर नमकहराम होने का आरोप लगाया जायगा और यदि मैं सुल्तान के कोप के चगुल मे फँसता हूँ तो मेरे प्राण सुरक्षित न रह सकेंगे।" अन्त में उसने यह निश्चय किया कि "मैं गेती सितानी (बाबर बादशाह) के पास चला जाऊ।' उसने दिलावर खा को बाबर बादशाह के पास इस आशय से भेजा कि वह वहा जाकर बादशाह को सुल्तान के कुस्वभाव, अमीरो के विद्रोह तथा सेना की उसके प्रति घृणा से अवगत कराये और बादशाह से हिन्दुस्तान पर चढाई करने के विषय में निवेदन करे। दिलावर खा शीघ्रातिशीघ्र काबुल पहुच गया।[1]

सुल्तान इब्राहीम के राज्यकाल की कुछ विचित्र घटनायें

एक दुष्ट स्त्री की कहानी

(९९) कहा जाता है कि सामाना में एक व्यक्ति व्यापार द्वारा जीवन-निर्वाह करता था। एक बार उसे समुद्रीय यात्रा करनी पड गई। उसने अपने घर तथा घर वालो की देख-रेख अपने एक परामर्शदाता को, जो उसका पडोसी था, सौप दी। दोनो के घर के मध्य में एक दीवार थी। वह पडोसी कभी-कभी उस व्यापारी के घर के द्वार पर जाकर उसके कारोबार में उसे सहायता दिया करता था। जब (१००) कभी वह उसके घर जाता उसे वहा एक रूपवान् युवक मिलता जो व्यापारी के घर आता जाता रहता था। उस पडोसी ने सोचा कि "यह युवक व्यापारी का कोई सम्बन्धी होगा।" किन्तु उसने पुन सोचा कि, "यदि यह व्यक्ति व्यापारी का सम्बन्धी होता तो फिर वह अपने घर की देख-रेख मुझे क्यो सौंपता ?" सक्षेप मे, वह उस युवक के विषय मे ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगा। उसने उस दीवार, मे जो उसके तथा व्यापारी के घर के मध्य में थी, एक छेद कर दिया। वह कभी-कभी उसमें से देखा करता था।

एक रात्रि में उसने देखा कि व्यापारी की स्त्री ने सुन्दर फर्श विछाये और पलँग को रगीन कपडो द्वारा सजाया और गजक, मदिरा तथा पान की व्यवस्था करके उस युवक के साथ एक पहर रात्रि व्यतीत होने पर वह भोग-विलास में तल्लीन हो गई। उस स्त्री के एक दो वर्ष का शिशु था। उसे उसने अन्य स्थान पर सुला दिया था। जब वह शिशु रोता तो वह उसे दूध देकर पुन अपने प्रियतम के बिछौने पर

[1] पृ० ८८ से ९९ तक इब्राहीम लोदी तथा बाबर के युद्ध का उल्लेख है।

पहुच जाती। जब शिशु ने रोना नही बन्द किया तो उस छलिया ने उसकी ग्रीवा उमेठ कर उसकी हत्या कर दी और पुन. उस युवक से आलिंगन मे व्यस्त हो गई।

जब दो तीन घडी व्यतीत हो गई तो उस युवक ने पूछा कि, "क्या कारण है कि तेरा पुत्र नही रोता ?" स्त्री ने कहा, "मैंने इस समय ऐसा कर दिया है कि अब यह न रोयेगा।" युवक परेशान हो गया। उसने उससे स्पष्ट बात बताने के लिये कहा। उसने उत्तर दिया, "मैंने तेरे लिये उस शिशु की हत्या कर दी है।" युवक ने यह बात सुनते ही कहा, "तूने एक क्षण भर के भोग-विलास के लिये अपने कलेजे के टुकडे की हत्या कर दी तो फिर तुझे मेरे प्रति किस प्रकार निष्ठा रहेगी ?" उसने (युवक ने) तत्काल अपने वस्त्र पहन कर बाहर जाना निश्चय किया। स्त्री ने उसका पल्ला पकड लिया और कहा, "मैंने तेरे लिये यह कार्य किया और तू मुझसे सम्बन्ध-विच्छेद करता है। ईश्वर के लिये एक कार्य (१०१) कर ताकि मैं अपमानित न होऊ। इस घर के कोने में एक गड्ढा खोद दे ताकि मैं उसे दफन कर दू।"

युवक ने विवश होकर उसकी बात स्वीकार कर ली। स्त्री ने एक कुदाल लाकर उस युवक के हाथ में दे दी। उसने गड्ढा तैयार किया। स्त्री ने बालक को लाकर उसे इस आशय से दे दिया कि वह उसे दफन कर दे। युवक स्त्री की धूर्तता से अनभिज्ञ था। वह बालक को दफन करने के लिये झुका। धूर्त स्त्री ने दोनो हाथो से कुदाल इस ज़ोर से उसके सिर पर मारी कि उसका सिर फट गया और वह असावधान होकर उस गड्ढे में गिर पडा और वही उसकी मृत्यु हो गई। स्त्री ने उसको मिट्टी से पाट कर भूमि को बराबर कर दिया। वह पडोसी समस्त हाल देख कर आश्चर्य में पड गया।

तदुपरान्त स्त्री ने शोर मचाना प्रारम्भ कर दिया कि मेरे पुत्र को भेडिया ले गया। जब बहुत समय उपरान्त व्यापारी समुद्री यात्रा से वापस आया तो लोग उसके पुत्र की मृत्यु पर सवेदना प्रकट करने उपस्थित हुये और उन्होने फातेहा[1] पढा। जब सब लोग चले गये तो उस पडोसी ने व्यापारी से कहा कि, "आप थोडी देर के लिये मेरे घर पर आ जायें ताकि आपका दु ख कुछ कम हो जाय।" वह उसे अपने घर पर लाया। दावत के उपरान्त उसे उस बालक तथा युवक की हत्या का समस्त हाल बताया और कहा, "आप यह बहाना करके कि इस स्थान पर कुछ धन गाड दिया था उस भूमि को खोदें तो आपको अपनी पत्नी के कुकर्म का हाल ज्ञात हो जायेगा।" वह व्यक्ति अपने घर पहुचा और उसने अपनी पत्नी से कहा, "मैंने इस स्थान पर १०० अशर्फियां गाड दी थी। कुदाल ले आ ताकि मैं उसे खोद लू।" पत्नी ने प्रसन्न होकर कुदाल अपने पति के हाथ में दे दी। व्यापारी ने जिस स्थान को बताया गया था खोदना प्रारम्भ कर दिया। स्त्री ने जब देखा कि मेरा रहस्य खुला जाता है तो उसने उस छप्पर के जिसके नीचे वह भूमि (१०२) खोद रहा था द्वार बन्द कर दिये और उसमें आग लगा दी। जब उसमें से लपट निकलने लगी तो उसने शोर मचाना प्रारम्भ कर दिया कि "पडोसियो! मेरे घर में आग लग गई और मेरा घर जला जा रहा है।" लोगो के पहुचने तक बेचारा व्यापारी कबाब हो गया। पडोसी ने यह दृश्य भी देखा और जब सब लोग जो निकट में थे, एकत्र हो गये तो उस पडोसी ने कोतवाल को सूचना भेज दी। हाकिम उस स्थान पर पहुच गया। सर्वप्रथम उसने उस छलिया (स्त्री) को बन्दी बना लिया। तदुपरान्त उसने उन लोगो की (शव का) जिनकी हत्या हो गई थी निरीक्षण किया। उस स्त्री को बाज़ार के चौराहे

१ परलोकगत आत्मा की शान्ति के लिये कुरान का प्रथम सूरा पढना।

पर आधी भूमि में गडवा दिया और उसपर बाणो की वर्षा की गई। उसकी समस्त सम्पति को खालसे में सम्मिलित कर लिया गया।

एक रूपवती तथा दरवेश की कहानी

कहा जाता है कि एक रूपवती, जिसके कपोलो की चमक से सूर्य भी अपने प्रकाश के बावजूद मेघ के घूँघट में छिप जाता, अपने पति के घर से अपने पिता के घर जा रही थी। सयोग से गर्मी के कारण वह एक वृक्ष की छाया में बैठ गई। उस स्थान पर एक दरवेश का, जो परलोक की धन-सम्पत्ति का स्वामी था, तकिया[1] था। वह उसके ऊपर एक दृष्टि डालते ही आसक्त हो गया। जब भी वह रूपवती (१०३) उस दरवेश की ओर देखती उसे अपनी ओर निहारते हुये पाती। वह स्त्री भी उस पर आसक्त हो गई। कुछ क्षण उपरान्त वह अपने मुख पर बुरका डाल कर सवार हो गई। दरवेश ने उस उपवन को उस लाले सरीखे कपोलो से रिक्त पा कर अपने हृदय मे एक ठडी सास भरी और मृत्यु को प्राप्त हो गया।

एक मास उपरान्त उस स्त्री का पुन उस ओर से जाना हुआ और वह उस वृक्ष के नीचे बैठ गई। वह चारो ओर देखती थी और अपने प्रियतम का कोई चिह्न न पाती थी। उस वृक्ष के नीचे उसन एक नई कबर देखी। उसने लोगो से पूछा, "यह कब्र इससे पूर्व यहा न थी। यह किसकी है?" लोगो ने बताया, कि "इस स्थान पर एक दरवेश रहा करता था। एक दिन एक रूपवती इस स्थान पर पहुची। जब वह चली गई तो दरवेश के प्राण भी उसी के साथ चले गये। यह कब्र उसी की है।" स्त्री उस व्यक्ति के हाल से जिसकी उसने हत्या की थी अवगत हो गई। तत्काल वह अपने मुख से बुरका हटा कर कब्र से आलिंगित हो गई। अचानक कब्र फट गई और वह रूपवती उसमें प्रविष्ट हो गई। कब्र पुन बन्द हो गई। जो लोग उस स्त्री के साथ थे, उन्हाने विलाप करते हुये उस कब्र को पुन खोदा। उन्होने देखा कि स्त्री उस स्थान पर नही है। केवल पुरुष उपस्थित है। जो आभूषण उस स्त्री की ग्रीवा तथा कानो में थे, वे सब उस पुरुष के शरीर पर हैं। उस स्त्री की आखा मे जो सुर्मा और उसके होठो पर जो पानो की लाली थी वह उस पुरुष की आखो तथा होठों में विद्यमान थी। वह उसके प्रेम में समाविष्ट हो गया था। विवश होकर वे लोग पुरुष के शरीर से स्त्री के आभूषण उतार कर चले गये।

एक विचित्र कहानी

कहा जाता है कि देहली में एक पवित्र व्यक्ति निवास करता था। जब वह कुरान पढने लगता तो दगरद[2] के रूप में कोई आकर पृष्ठ पर बैठ जाता और अक्षर छिप जाते। जब वह उसे पकडने के (१०४) लिये हाथ बढाता तो वह अदृश्य हो जाता। जब पुन पढ़ना प्रारम्भ करता तो पुन वह रूप दृष्टिगत होता और वरक़ को छिपा लेता। उस व्यक्ति ने विवश होकर एक पवित्र व्यक्ति से यह हाल बताया। उसने उत्तर दिया कि, "जब वह रूप प्रकट हो तो तू उसका सिर तथा उसके कान पकड ले।" उसने कहा "मै पकडने का बडा प्रयत्न करता हू किन्तु वह प्राप्त नही होता।" पवित्र व्यक्ति ने कहा, "नहीं तू पकड। वह मिल जायगा।" जब उसने पढना प्रारम्भ किया तो वह रूप पुन प्रकट हुआ और कुरान के पृष्ठ पर बैठ गया। उस व्यक्ति ने उसका कान पकड लिया। कान पकडते ही वह रूप अदृश्य हो गया और उस व्यक्ति ने अपने दोनो कान अपने हाथ में पाये।

१ फकीरों के रहने का स्थान।
२ तख्ता।

दरवेश तथा रूपवती

कहा जाता है कि एक पहुचा हुआ दरवेश पानीपत कस्बे में एक नदी के तट पर जो पूर्व की ओर बहती थी निवास करता था। एक सुन्दर स्त्री, जिसके कपोलो का रग गुलाब के फूल को लज्जित करता था और जिसके केश उपवन के सुम्बुल[1] में एठन पैदा कर देते थे, अपनी दो-तीन सहेलियो सहित स्नान हेतु हाथ में लोटा लिये चली जा रही थी। दरवेश एक दृष्टि डालते ही उस पर आसक्त हो गया और उसने उससे जल माँगा। उस परम सुन्दरी ने मुस्करा कर हाथ फैलाने के लिए कहा। दरवेश ने हाथ फैला दिये। उस गुलाब के समान मुख रखने वाली ने जल डालना प्रारम्भ किया। दरवेश उस पर दृष्टि जमाये हुये था यहा तक कि समस्त जल गिर गया। वह रूपवती हँसकर चली गई। दरवेश (१०५) भी उसके पीछे पीछे चल पडा। जब वह रूपवती अपने घर के द्वार पर पहुची तो उस पर आशिको को सम्मानित करने वाली दृष्टि डाल कर घर के भीतर चली गई। दरवेश पर मूर्च्छा व्यापक हो गई और वह देर तक उसके द्वार पर अचेत पडा रहा। तदुपरान्त वह अपने घर चला गया। वह विलाप करता जाता था और ठडी सास भरता जाता था।

दूसरे दिन वह रूपवती दो-तीन परम सुन्दरियो सहित स्नान हेतु रवाना हुई। दरवेश की दृष्टि जब उस पर पडी तो उसके प्राण इस प्रकार अदृश्य हो गये जिस प्रकार कण सूर्य के प्रकाश के समक्ष अदृश्य हो जाता है। उस रूपवती ने मुस्कुरा कर पूछा, "जल न पियोगे?" दरवेश ने जब उसे अपने ऊपर कृपा करते हुये देखा तो हाथ फैला दिये और अमृत जल के उस स्रोत द्वारा जल पिया। जब कुछ दिन इस प्रकार दर्शन करते हुये व्यतीत हो गये तो उन दोनो के प्रेम की कथा प्रसिद्ध हो गई। उस युवती के पिता ने उसे नदी पर जाने से रोक दिया। बचारा दरवेश अपने प्रियतम के दर्शन से वंचित हो गया। वह विलाप करता रहता था।

एक दिन हिन्दुओ के स्नान का दिन था। नगर की स्त्रिया श्रृंगार करके आभूषणो से लदी हुई बाहर जा रही थी। वह रूपवती भी सोने के तार के काम के वस्त्र धारण करके तथा आभूषण पहन कर बाहर निकली और उस स्थान पर जहा दरवेश उसकी प्रतीक्षा कर रहा था पहुची। जब उसकी दृष्टि उस रूपवती पर पडी तो उसने दौड कर उसके चरणो पर अपना सिर रख दिया और मृत्यु को प्राप्त हो गया। उस रूपवती ने जब यह हाल देखा तो उसने भी अपना सिर दरवेश के चरणो पर रख दिया और अपने प्राण त्याग दिये। उसको जिह्वा से यह दोहरा[2] निकला

दोहरा

"हम तो मिले पीतम सो जाय,
बूद गई दरिया समाय।"

लोगो ने यह देख कर आश्चर्य से अपने दातो के नीचे अगुली दबा ली।

(१०६) दरिया खा जलवानी को जो उस स्थान का हाकिम था, इस बात का पता चल गया। वह सवार होकर उन दोनो प्रेम की कटार के घायलो के पास पहुचा। शहर के आलिमो को बुलवा कर उसने मसअला[3] पूछा। उन लोगो ने उत्तर दिया कि, "यह स्त्री पवित्र विश्वास सहित ससार से विदा

१ एक सुगन्धित घास जो फारसी उर्दू कविता में सुन्दर घुँघराले केश का उपमान मानी जाती है।

२ दोहा।

३ किसी कर्म के उचित अथवा अनुचित होने के सम्बन्ध मे इस्लामी शास्त्रों के अनुसार दी गई व्यवस्था।

ई और शरा के अनुसार मुसलमान हो गई थी। इसका जलाना किसी प्रकार उचित नही।" इसी बीच सहस्रो हिन्दू उसे जलाने के लिये एकत्र हो गये। दरिया खा ने कहा, "यह स्त्री मुसलमान के रूप में मरी। तुम उसे नही जला सकते।" दोनो ओर से युद्ध प्रारम्भ ही होने वाला था कि एक दरवेश फटा हुआ चीवर पहने प्रकट हुआ और उसने दरिया खा से कहा, "तुम क्यो प्रयत्न करते हो ? इस लडकी को हिन्दुओ को दे दो और ईश्वर की लीला देखो।" दरिया खा ने स्वीकृति दे दी। हिन्दुओ ने उस युवती को ले जाकर लकडिया एकत्र करके उसमें आग लगा दी। वह बिलकुल न जली। वे रूई को तेल में भिगो कर उस पर डालते थे किन्तु वह न जलती थी। वे लोग परेशान हो गये और उसे लकडी में छोड कर अपने घर चले गये। दरिया खा तथा जो लोग वहा उपस्थित थे उन्होंने उसे उस दरवेश के बराबर दफन कर दिया। रात्रि के समय हिन्दुओ ने इस आशय से आदमी भेजे कि वे कब्र को खोद कर लडकी को यमुना नदी में (१०७) बहा दें। उन्होंने यद्यपि उसकी कब्र बहुत खोदी किन्तु उसका पता न चला।

प्रेम की एक अन्य कहानी

कहा जाता है कि पालम नामक स्थान पर एक हिन्दू स्त्री को अपने पति से अत्यधिक प्रेम था। न तो पुरुषको उसके बिना कही चैन मिलता था और न स्त्री को पति के बिना सतोष होता था। वे दो गुलाब के फूलों के समान एक उपवन में जीवन व्यतीत किया करते थे। अचानक उस युवक की मृत्यु हो गई। स्त्री उसके शोक में विलाप करते हुये जीवन व्यतीत किया करती थी। उसके माता-पिता ने एक रूपवान युवक से उसका विवाह कर दिया किन्तु उसका विलाप बन्द न हुआ। युवक यद्यपि उसके प्रति अत्यधिक प्रेम तथा निष्ठा प्रदर्शित किया करता था किन्तु स्त्री उसकी ओर ध्यान न देती थी। युवक ने उसे इस आशय से अपने घर ले जाने की इच्छा प्रकट की कि सम्भवत उसे उस स्थान पर सतोष प्राप्त हो जाय। लडकी के माता-पिता ने उसे आभूषण पहना कर उसके साथ कर दिया। लडकी रोती हुई उसके पीछे-पीछे चली जाती थी कि एक रूपवान् तरुण जिसके मधुर स्वर से पक्षी हवा से उतर आते थे (१०८) गाता हुआ उसके समक्ष पहुँचा। उस लडकी ने उसे रोक कर कहा, "पुन पढ"। उसने इस विषय का दोहरा पुन पढा —

"तूने दूसरे युवक को वचन दे दिया,
खेद है कि जो वचन मुझे दिया था, तोड डाला"

जो लोग इधर उधर से आ रहे थे उन्हें रोक कर उस स्त्री ने उस युवक से कहा, "ईश्वर के लिये एक बार पुन पढ।" उसने पुन पढा। स्त्री चिल्ला कर गिर पडी और प्राण त्याग दिये।

सुल्तान इबराहीम के राज्यकाल के कुछ अमीर

अहमद खा

वह बडा साहसी था। एक बार सुल्तान ने उसे मादू पर आक्रमण करने के लिये भेजा। ऊट जिन पर सेना के लिये धन लदा था रुग्ण हो गये। बख्शी ने निवेदन किया कि, "यदि आदेश हो तो मै यह धन सेना को दे दू।" अहमद खा ने स्वीकृति दे दी। उसने सैनिको को धन देकर तमस्सुक[1] ले लिया और उन्हें खान के समक्ष प्रस्तुत किया। खान ने पूछा, "यह कागज कैसे हैं ?" उसने निवेदन

[1] दस्तावेज़।

किया कि, "मैंने सैनिकों से यह तमस्सुक ले लिया है। बरात के समय उनके वेतन से मुजरा कर लिया जायगा।" खान ने कहा, "मैं वक्काल नहीं हूं जो उनसे तमस्सुक लूं। क्योंकि वे मेरे कार्य हेतु अपने प्राणों की बलि देते हैं अतः मैं यह धन उन्हें प्रदान करता हूं।" वह धन नौ लाख तन्के था।

तातार खां

(१०९) वह समस्त संसार को दान किया करता था। उसका नियम यह था कि जिस स्थान पर भी पेशकश[1] प्राप्त होती तो (वहां के) पदाधिकारी उसे ले जाते। यदि सवारी के समय पेशकश प्राप्त होती तो जिलौदार[2] तथा चोबदारों[3] को मिल जाती। यदि दरबार में आती तो मुसाहिब ले जाते। यदि वह एकान्त में होता तो सेवक ले जाते। एक दिन एक नाई उसके बाल काट रहा था। सम्भल के हाकिम जैन खां ने तीन विचित्र प्रकार के बेल-बूटों की बहुमूल्य रावटियां भेजीं। तातार खां ने आदेश दिया कि उन्हें नाई को दे दिया जाय। मल्लू खां सरवानी ने जो उसका मुसाहिब था निवेदन किया कि, "यदि आदेश हो तो इनका मूल्य मैं नाई को दे दूं और रावटियों को मैं ले लूं।" खान ने कहा, "तू मेरे अधिनियम को तुड़वाता है। यदि कोई अन्य इस बात को कहता तो मैं उसे दंड देता।"

हैबत खां गुर्ग अन्दाज

हैबत खां को गुर्ग अन्दाज की उपाधि इस कारण प्राप्त हुई थी कि एक दिन वह ब्याना में शिकार हेतु गया था। सिकन्दरा नामक उद्यान में उसने एक जश्न का आयोजन कराया था। अमीरों में से दरिया (११०) खां सरवानी, महमूद खां लोदी तथा दौलत खां सभा में बैठे थे। अचानक दो बड़े-बड़े भेड़िये एक भेड़ को उठा ले गये। वे लोग शोर करने लगे। हैबत खां शौच के लिये गया हुआ था। भेड़िये उसके निकट पहुंचे। धनुष बाण सेवकों से लेकर उसने एक बाण इतने जोर से चलाया कि दोनों आहत होकर वहीं गिर पड़े। उस दिन से उसकी यही उपाधि हो गई।

वह सभाओं में इतना दान करता था कि लोग आश्चर्य करने लगते थे। एक दिन मोमिन नामक ब्याना निवासी एक कवि ने उसकी प्रशंसा में एक किते[4] की रचना की और कव्वालों को दे दिया कि वे उसे खान की सभा में जहां अन्य अमीर भी हों खान के समक्ष पढ़ दें। कव्वालों ने जश्न में उसे पढ़ा। उसने वह कालीन जिस पर वह बैठा हुआ था, उस कवि को दे दिया और ७,००० तन्के कव्वालों को इनाम में प्रदान किये। उसके दान-पुण्य का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है।

कुतुब खां

(१११) वह बड़ा ही रूपवान् युवक था। दान-पुण्य तथा वीरता के लिये वह बड़ा प्रसिद्ध था। सुल्तान ने उसे अपने मुसाहिबों में सम्मिलित कर लिया था। जब सुल्तान कालपी की ओर गया हुआ था, कुतुब खां एक दिन शिकार हेतु निकला। अचानक एक सफेद खाल का मृग उसे दृष्टिगत हुआ। उसने घोड़ा उसके पीछे छोड़ दिया। मृग शनैः शनैः चलने लगा यहां तक कि लश्कर से पृथक् हो गया। जब वह आगे बढ़ा तो एक खुला हुआ मैदान उसे दिखाई पड़ा। वहां उसे खेमे लगे हुये दिखाई दिये। वह मृग

१ उपहार।
२ वह व्यक्ति जो सवार के साथ घोड़े की लगाम पकड़ कर चलता है।
३ वह सेवक जो मूठदार डंडा लिये अमीरों के साथ चलता है।
४ एक प्रकार की कविता जिसमें एक ही विषय का उल्लेख होता है।

सरापर्दे में प्रविष्ट हो गया। कुतुब खा भी उसके पीछे पीछे पहुच गया। उसने देखा कि रगीन कालीन विछे हुये हैं और उसके हाशिये पर मोती तथा रत्न टके हुये हैं। वहा एक जडाऊ सिंहासन रक्खा हुआ है किन्तु उस पर कोई मनुष्य नही। वह आश्चर्यचकित होकर खडा था। न वाहर जा सकता था और न भीतर प्रविष्ट हो सकता था। वह इस रहस्य का पता लगाने की चिन्ता में था ही कि एक रूपवती सरापर्दे के वाहर निकली और उसने कहा, "हे कुतुव खा! क्यो हैरान है? घोडे से उतरकर हमारे निवास स्थान को प्रकाशमान कर।"

कुतुव खा अपनी वीरता के कारण घोडे से उतर पडा। घोडे को खेमे की रस्सी से वाध दिया। जव वह सरापर्दे में प्रविष्ट हुआ तो मध्याह्न था। जव वह दूसरे सरापर्दे में प्रविष्ट हुआ तो उसने देखा कि रात्रि है और सहस्रो दीपक जल रहे हैं। कालीन विछा हुआ है और उस पर एक जडाऊ राजसिंहासन (११२) रखा हुआ है। एक परम सुन्दरी उस पर आसीन है और उसको चारो ओर से रूपवतिया घेरे हुये हैं। जव उस परम सुन्दरी ने कुतुव खा को देखा तो उसका हाथ पकड कर अपने साथ सिंहासन पर ले गई। उसे मदिरा का प्याला देकर कहा कि, "पी और कोई भय न कर।" कुतुव खा मदिरा के दो तीन प्याले पी गया और मदिरा का नशा उसके दिमाग में पहुच गया। उसी समय वडी उच्च कोटि का सगीत प्रारम्भ हो गया। कुतुव खा उस दृश्य से आनन्द-विभोर होता रहा और घोडे तथा घर की उसे कोई स्मृति न रही।

जव रात समाप्त हो गई तो कुतुब खा को नीद आ गई। वह ऊघ गया। जव उसकी आख खुली तो वहा उस जश्न अथवा खेमे का कोई चिह्न न था। उसका घोडा एक लकडी से वधा हुआ था और उसके सामने दाना-चारा पडा हुआ था। वह आश्चर्य में पड गया और खेद प्रकट करता हुआ घोडे पर सवार होकर सेना के शिविर मे पहुचा। उसने सुल्तान को यह हाल वताया। सुल्तान को भी वडा आश्चर्य हुआ। जव कुछ वुद्धिमानो से पूछा गया तो उन्होने वताया कि कुतुव खा को इसी लोक में स्वर्ग के दर्शन कराये गये। कुतुव खा के हृदय से उसके समस्त जीवनकाल में इस व्याकुलता का अन्त न हुआ और उन रूपवतिया की स्मृति उसके मस्तिष्क से कभी भी न मिटी।

सुल्तान वहलोल के शाहजादे तथा अमीर[1]

(३७५) वायजीद खा शाहजादा
निजाम खा शाहजादा
वारवक शाह
कुतुव खा
दरिया खा
निहग खा
शाह सिकन्दर
शम्स खा
दौलत खा
वहादुर खा

[1] यह सूची केवल मौलाना हाफ़िज मुहम्मद महमूद शीरानी की पोथी में है।

अहमद खा
अता लोदी
मारूफ खा
सैयिद खाँ
पहाड़ खा
दौलत खा
इबराहीम खा
महमूद खा
जैन खा
हुसैन खा
अहमद खा लोदी
ऐमन खा
अलाउल खा
ताज खा
शहबाज खा
सज़ावल खा
करीमदाद खा
शाहदाद खा

सुल्तान सिकन्दर के शाहज़ादे तथा अमीर

(३९३) इबराहीम खा
जलाल खा
मिया कासिम
शेख सईद फर्मुली
अली खा
उमर खा
यूसुफ खा
ईसा खा
(३९४) फरीद खा
मलिक आदम काकर
अता लोदी
दरिया खा
सैयिद खा
हुसैन खा
मुबारिज खा लोहानी
खिज्र खा,
खाने खाना,

अफ़सानये शाहान

(लेखक—मुहम्मद कबीर बिन शेख इस्माईल)

(ब्रिटिश म्युजियम मैनुस्क्रुप्ट, रियु, भाग १, २४३ ब)

(२ अ) मुहम्मद कबीर बिन शेख इस्माईल इस प्रकार निवेदन करता है कि मैंने अफगानो के किस्से जिन्होने ईश्वर की कृपा से देहली में राज्य किया, पढे तथा सुने थे और जो इतिहासो में कुछ विभिन्न रूप में थे, अत उनमें से विश्वस्त तथा प्रामाणिक किस्सो को चुनकर मैं अपनी टूटी-फूटी फारसी (२ ब) में इस आशय से लिपिबद्ध करता हू कि वे स्मृति के रूप में रहें। इनके लिखने का यह कारण है कि मेरे पुत्र की जिसकी अवस्था १६ वर्ष की थी मृत्यु हो गई। अत व्याकुलता के निवारण एव अपने हृदय के सतोष हेतु मैंने इन कहानियो की रचना की।

कहानी न० १

अफगानो का अभ्युदय

(५अ) सर्वप्रथम अफगान लोग घोडो का व्यापार करते थे और विलायत से घोडे लाकर बजवारा में उनका पालन-पोषण करते तथा उन्हें मोटा-ताजा बनाते थे कारण कि बजवारा में प्रत्येक वस्तु, अनाज तथा अन्य चारे, बडे सस्ते थे। तदुपरान्त वे उन्हें हिन्दुस्तान के विभिन्न भागो मे ले जाकर बेचते थे। उनका वतन रोह में था। उस समय अफगानो के जीवन-यापन का यही साधन था। उनके पास जो भूमि थी उसे समस्त भाइयो ने आपस में बाट लिया था और वे उस भूमि पर कृषि करके जीवन निर्वाह करते थे। कोई भी किसी पर किसी प्रकार का अत्याचार न करता था। वे न तो किसी की प्रजा थे और न उनके ऊपर कोई बादशाह ही था।

उनके कबीले में जो बडा-बूढा होता वह उनका नेता हो जाता था और वे सगठित होकर कार्य तथा व्यापार करते थे। उनके ऊपर किसी का कोई अधिकार न था। वे अपने वतन में इसी प्रकार (५ ब) जीवन व्यतीत करते थे और हिन्दुस्तान में घोडे बेचकर अपने निवास-स्थान को वापस चले जाते थे।

प्राचीन काल में रोह में कतमल नदी तट पर तीन अफगान भाई निवास करते थे, उनके नाम बतनी, सिरमनी तथा गरगश्ती थे। उनमें सबसे ज्येष्ठ का नाम बतनी था। वह अपने भाइयो का नेता था। कतमल नदी के तट पर एक बाजार है जिसकी आय एक लाख रुपये अथवा उससे कुछ अधिक थी और अभी तक उसकी आय इसी प्रकार है। बतनी के कई पुत्र तथा एक पुत्री मत्तू नामक थी। पुत्री के वश में बहुत से लोग हुए हैं जो मत्ती कहलाते हैं। इसका उल्लेख बाद में किया जायेगा।

उस समय बतनी के पुत्र पर विलायत[1] की ओर से एक बडी सेना ने आक्रमण किया। बतनी

१ उत्तर पश्चिम की सीमा के देशों की ओर से।

लोगो ने आपस में युद्ध किया। दुर्भाग्य से सुम्बुलो की ओर से बहुत से लोग मारे गये और शहूखेल की ओर से थोडे से लोग। अन्त में काला का पिता हग्ण होकर मर गया। अफगानो की यह प्राचीन प्रथा है कि यदि कोई किसी की हत्या कर देता है तो जब तक उसका नेता मिल सकता है उस समय तक वे नेता के अतिरिक्त किसी अन्य की हत्या नही करते। तदुपरान्त सुम्बुल लोग एकत्र हुए कारण कि शहूखेल में काला तथा मुहम्मद खा नेता थे। वे उसके बदले में उनकी हत्या करना चाहते थे और इसके लिये वे रात्रि में छापा मारने अथवा रणक्षे में युद्ध करने के लिये तैयार थे। यह समाचार काला तथा समस्त शहूखेलो के कान में पहुचे। शहूखेल सुम्बुल लोगो से युद्ध की शक्ति न रखत थे। वे प्राणो के भय से छिन्न-भिन्न हो गये, काला एक ओर तथा मुहम्मद खा एक ओर। इसी प्रकार समस्त शहूखेलो ने जिस स्थान को भी शरण हेतु उचित समझा वही वे चले गये। काला अकेला बजवारा में पहुचा। जब वह लाहौर के (७ ब) निकट पहुचा तो नगे पाव होने के कारण उसके पाव आहत हो गये थ और वह अपने पाव में पुराने कपडे बाधे हुए आ रहा था। मार्ग में एक दैवी रहस्य का ज्ञाता बुद्धिमान् मजजूब[1] बैठा था। जब उसने काला को देखा तो वह बडे जोर से हसा और उसने कहा कि "ईश्वर को धन्य है कि देहली का बादशाह पैर पर कपडे लपेटे जा रहा है।" जब काला ने यह शब्द सुने तो उसने अपनी दायी तथा बायी ओर देखा कि कोई अन्य व्यक्ति तो नही है किन्तु उसे कोई अन्य व्यक्ति न मिला। उसने लौटकर उस मजजूब के चरणो का चुम्बन किया। मजजूब ने कहा, "जा तरी विजय हो।"

सक्षेप में वह इसी दशा मे बजवारा पहुचा। उस स्थान पर सभी काफिर निवास करते थे। उसका छोटा भाई मुहम्मद खा भी जो किसी अन्य स्थान को भाग गया था, वही पहुच गया। दोनो भाई एकत्र हो गये। अन्य अफगानो, जो उस स्थान पर घोडो को लाकर खिलाकर तथा चरा कर मोटा करते थे, के पास दोनो भाई जाते रहते थे। वे लोग उनकी थोडी-बहुत जैसा कि व्यापारियो की प्रथा है, सहायता करते रहते थे। कुछ थोडा बहुत जो होता उन्हें प्राप्त हो जाता था किन्तु इस प्रकार उनका (८ अ) जीवन निर्वाह न होता था। चना, गेहूँ, जौ इत्यादि तो वे काफिरो के खेतो में से रात्रि में १-२ बोझ ले आते थे और उसे भूनकर खा लेते थे। उस स्थान पर जहा व्यापारी रहते थे अन्य अफगान भिखारी भी भिक्षा प्राप्त करने हेतु रहा करते थे। काला ने एक दिन उन भिखारी अफगानो को एकत्र किया और उनसे कहा कि "भिक्षा मागना छोड दो और हमारे साथ चलकर जिस प्रकार हम लोग काफिरो के खतो से अनाज ले आत है तुम लोग भी ला लाकर खाया करो।" वे लोग एकत्र होकर कच्चे अनाज लाकर भून भून कर खाने लगे। जब खेती पक जाती थी तो काफिर लोग खलियान में अपना अनाज एकत्र करते थे। वे लोग उसमें से भी चुरा लात थे और उन्हें कूट कर तथा साफ करके खाया करते थे। जब काफिर लोग खलियान में अपना अनाज साफ करने के लिय एकत्र करते थे तो वे समस्त भिखारियो को लेकर काफिरो की खेती पर आक्रमण करते थे और काफिरो को बाधकर मारते पीटते थे तथा उनके खलियान से अनाज उठा लाते थे। जब अफगानो की यह बात काफिर ग्रामीणो को भली-भाति ज्ञात हो गई तो काफिरो ने व्यापारियो को लिखा कि "इन भिखारियो को जो इस प्रकार चोरी करते है, हमारे पास बन्दी बनाकर भेज दो और तुम लोग यहा से दूर चले जाओ अन्यथा (८ ब) हममें और तुममें युद्ध होगा और हम तुम्हारे घोडो को लूट लें जायेंगे।" व्यापारी बडे परेशान हुए और उन्होने उन काफिरो से जो पत्र लाये थे कहा कि "हम अपने घोडो को

१ देखिये पृ० १६८, नोट नं० ४।

इस आशय से मोटा करते हैं कि उन्हें हिन्दुस्तान में इधर उधर ले जाकर बेचें। हम लोग किसे बन्दी बनायें? तुम लोग शक्तिशाली हो, तुम उन्हें बन्दी बनाकर मार डालो। हम उनके सहायक नहीं हैं।" जब काफ़िरों ने यह बात सुनी तो वे बड़े क्रोधित हुए और उन्होंने आसपास के समस्त काफ़िरों को सूचना भेज दी कि "तुम लोग एकत्र हो जाओ ताकि हम काफ़िरों के घोड़ों को छीन लें और उनकी हत्या कर डालें।" समस्त काफ़िर एकत्र होकर घोड़ियों तथा घोड़ों पर सवार हुए और बहुत से अश्वारोहियों तथा पदातियों के समूह ने व्यापारियों पर आक्रमण किया। व्यापारी भी विवश होकर सवार हुए। काला तथा मुहम्मद खा, भिखारियों सहित आगे हुए और उनके पीछे व्यापारी अश्वारोही। इस प्रकार उन्होंने काफ़िरों से युद्ध किया। ईश्वर ने उनकी सहायता की और उन्हें काफ़िरों पर विजय प्राप्त हो गई। काफ़िरों से अत्यधिक धन-सम्पत्ति, घोड़ियाँ तथा घोड़े प्राप्त हुए। लूट की समस्त धन-सम्पत्ति भिखारियों को देकर व्यापारी देहली की ओर घोड़े (९ अ) बेचने के लिये चल दिये और उस स्थान पर एक रात्रि भी न रहे। काला अपने साथियों सहित उसी स्थान पर ठहर गया और काफ़िरों के विरुद्ध लूटमार करता रहा। ईश्वर उसे प्रत्येक युद्ध में विजय प्रदान करता था। उसके पास बहुत बड़ी सेना एकत्र हो गई। जो अफ़गान उसके पास आता था उसकी वह घोड़े तथा अस्त्र-शस्त्र देकर सहायता करता था और अपने साथ रख लेता था। सरहिन्द से लेकर जम्मू तक के स्थान उसने अपने अधिकार में कर लिये और पर्वत के आंचल को साफ़ कर दिया[1] और उसके साथ ६ हज़ार अश्वारोही हो गये।

कहानी न० ३

काला का राव दशरथ से मिलना

राव दशरथ खोखर १५ हज़ार अश्वारोहियों सहित लाहौर में रहता था। जब राव दशरथ को काला के विषय में ज्ञात हुआ कि उसने बहुत से देश (स्थान) विजय कर लिये हैं और उसे अत्यधिक शक्ति प्राप्त हो चुकी है तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने काला को लिखा कि "इन काफ़िरों ने हमें बहुत परेशान कर रखा था। तूने यह बड़ा अच्छा किया कि उन्हें नष्ट कर दिया। तू हमारे पास चला आ। जब मैं देहली के बादशाह के पास जाऊंगा तो तुझे भी लेता जाऊंगा और बादशाह द्वारा तुझे सम्मानित कराके अपने साथ वापिस ले आऊंगा।" जब यह पत्र काला के पास पहुंचा तो वह तत्काल सवार (९ ब) होकर राव दशरथ के समक्ष पहुंचा। राव दशरथ ने उसे अत्यधिक सम्मानित करके घोड़े तथा अन्य वस्तुएँ प्रदान कीं और कहा कि "जाकर अपना कार्य कर। जब हम बादशाह के समक्ष जायेंगे तो तुझे भी अपने साथ लेते जायेंगे और तुझे भी बादशाह द्वारा सम्मानित करायेंगे।"

कहानी न० ४

शाह आलम की बादशाही

कहा जाता है कि सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के पुत्रों के उपरान्त एक वज़ीर बादशाह हो गया था। समस्त अमीर उसके सहायक बन गये थे। उसका नाम सुल्तान दावर बख़्श था। उसने तीन वर्ष, दो मास, तीन दिन तथा पांच घड़ी तक राज्य किया। तदुपरान्त उसका पुत्र अमानत शाह बादशाह हुआ।

[1] पर्वत के आंचल में कोई भी उसका विरोध करने वाला न रहा।

अमानत शाह ने भी १ वर्ष तथा ७ मास और १ घडी तक बादशाही की। तदुपरान्त उसकी भी मृत्यु हो गई और उसका पुत्र बादशाह हुआ जिसका नाम शाह आलम रक्खा गया। वह रात दिन मदिरापान, भोगविलास तथा ढोल बजाने वालो के साथ मस्त रहता था। वह बदायूँ में शिकार हेतु रहा करता था। कहा जाता है कि शिकार में तथा घर पर ३०० ढोल बजाने वाले उसके साथ रहते थे और १-२ हज़ार अश्वारोही बादशाह की रक्षा हेतु रहते थे। चार हज़ार अश्वारोही जो बादशाह के दास थे, देहली के किले की रक्षा हेतु रहते थे। १-२ वर्ष उपरान्त विभिन्न स्थानो के अमीर जो अपनी अपनी (१० अ) जागीरो में थ, अपने नाम का खुत्वा पढवाकर बादशाह होने लगे। अन्त म जो कुछ भी पर्वतो तथा मैदानो मे था वह बादशाह के हाथ से निकल गया। प्रत्येक ग्राम में जो मुकद्दम था, वह अपने आप को राजा कहने लगा। और प्रत्येक ने अपने अपने ग्राम पर अधिकार जमा लिया। किसी व्यक्ति का कोई शासन न रह गया। बादशाह भोगविलास में इतना ग्रस्त रहता था कि वह इस ओर ध्यान भी न देता था। उस समय के लोग हँसी में कहा करत थे कि "दरोहीये शाह आलम, देहली ता पालम।" पालम, देहली से तीन कोस पर एक ग्राम है।

कहानी न० ५

राव दशरथ का काला को शाह आलम से मिलवाना

जब राव दशरथ बादशाह के पास जाने लगा तो उसने काला को पत्र लिखा कि "मैं बादशाह के पास जा रहा हूँ, तू मेरे पास चला आ ताकि बादशाह से तेरी भट करा दूँ।" जब काला को यह पत्र प्राप्त हुआ तो वह राव दशरथ के पास पहुचा। राव उसे अपने साथ लेकर शाह आलम के पास बदायूँ पहुचा। राव दशरथ ने बादशाह की काला से भेंट कराई और उसकी बडी सिफारिश की। बादशाह बडा प्रसन्न हुआ और उसने कहा कि "यह मेरा पुत्र है", और उसने बजवारा का समस्त प्रदेश उसे प्रदान करके (१० ब) विदा किया। राव लाहौर लौट आया और काला बजवारा चला गया। तदुपरान्त दो वर्ष तक वे अपने अपने स्थान पर रहे। इसी बीच में राव दशरथ को धन-सम्पत्ति एकत्र करने का लोभ उत्पन्न हो गया।

कहानी न० ६

शाह आलम के समक्ष काला द्वारा राव दशरथ की हत्या का कारण

कहा जाता है कि राव दशरथ ने अपने साथियो तथा सम्बन्धियो को जो मसबदार तथा बादशाह के कृपापात्र थ, बन्दी बनाना प्रारम्भ कर दिया। उसने उनकी धन-सम्पत्ति उनसे छीनना शुरू कर दिया। वह उनसे धन-सम्पत्ति छीनते समय उनके सम्मान की ओर ध्यान न देता था और यह न समझता था कि भाइयों के सम्मान के नष्ट हो जाने से उसी का सम्मान नष्ट हो जायेगा। लोग अपने प्राण तथा धन-सम्पत्ति के भय से उसका साथ छोड-छोडकर भागने लगे और देहली पहुचने लगे। राव दशरथ को जब यह समाचार प्राप्त हुए कि वे लोग देहली चले गये हैं तो उसने दासों को जो देहली मे चार हज़ार की सख्या में थे लिखा कि "हमारे उन सम्बन्धियों को, जो भाग कर देहली पहुच गये हैं, तुम लोग शीघ्रातिशीघ्र बन्दी बना कर भेज दो।" जब यह पत्र शाह आलम के दासो के पास देहली पहुचा तो उन्होंने राव को उत्तर में लिखा कि "यह विचित्र बात है कारण कि बादशाह ने उन्हें मसब देकर तुम्हारे साथ कर दिया था; तुमने उन्हें कष्ट पहुचाये है और जो कुछ भी उनकी धन-सम्पत्ति थी उसे तुमने छीन लिया है। तुम

(११अ) कहते हो कि उन्हें वन्दी बना कर भेज दिया जाय। हम उन्हें वन्दी बनाकर किस प्रकार भेजें? जिस व्यक्ति ने बादशाह के राजसिंहासन की शरण ले ली हो उसे किस प्रकार वन्दी बनाया जा सकता है?" जब यह उत्तर राव दशरथ को प्राप्त हुआ तो उसे पढ़कर वह बड़ा क्रोधित हुआ। उसने अपने सैनिकों को तैयार हो जाने का आदेश दिया और कहा कि "हम देहली पर आक्रमण कर रहे हैं।" सैनिकों को तैयार करके उसने देहली की ओर प्रस्थान किया और शीघ्रातिशीघ्र देहली पहुच गया। शाह आलम के दास असावधान थे। वे देहली के क़िले की रक्षा न कर सके। राव ने देहली पहुच कर दासों को वन्दी बना लिया। जिन लोगों ने पत्र का उत्तर लिखा था उनकी हत्या कर दी। अन्य दास जो वहा थे उन्हें उनके स्थान पर आरूढ कर दिया और स्वय देहली से बादशाह के पास बदायूँ रवाना हो गया। उसने दासो की हत्या के विषय में क्षमा-याचना करते हुए कहा कि "वे अयोग्य तथा हरामखोर थ अत मैंने उनकी हत्या कर दी है और उनके स्थान पर अन्य दासों को आरूढ कर दिया है।" बादशाह ने कहा कि "तुमने अच्छा किया।" वह बादशाह से विदा होकर लाहौर पहुचा। जब वह लाहौर पहुचा तो वहा १-२ सप्ताह रहा। अपने कुछ सम्बन्धियों को, जिन्हें उसने वन्दी न बनाया था, अब वन्दी बनाना आरम्भ कर दिया और वे लोग छिन्न-भिन्न हो गये।

कहानी न० ७

राव दशरथ की काला द्वारा पराजय

(११ ब) कहा जाता है कि राव दशरथ के सम्बन्धी तथा सहायक काला के पास शरण हेतु बजवारा पहुचे। राव इस बात का पता लगाया करता था कि उसके पास से भाग भाग कर लोग कहा जाते हैं। जब उसे ज्ञान हुआ कि १-२ व्यक्ति काला के पास हैं तो उसने काला को लिखा कि "जो लोग तेरे पास भाग कर आये हैं उन्हें तू पत्र देखते ही वन्दी बनाकर भेज द।" काला ने राव दशरथ को पत्र लिखा कि "वे लोग आप की मेरे प्रति अत्यधिक कृपा-दृष्टि देखकर मेरे पास आय हैं। मुझे आपकी कृपा से आशा है कि आप एक व्यक्ति को इस आशय से भेज देंगे कि वह उनको प्रोत्साहन देकर ले जाये।" जब राव को पत्र प्राप्त हुआ तो वह बड़ा क्रोधित हुआ और उसने कहा कि "इन भिखारियों ने मुझे इस प्रकार का पत्र लिखा है।" अत उसने सेना एकत्र करके काला पर आक्रमण किया। जब काला ने सुना कि राव ने इस प्रकार आक्रमण किया है तो वह भी तैयार होकर मुकाबले के लिये डट गया। जब उसने देखा कि बहुत बड़ी सेनाए आ रही हैं तो वह भागकर नीलाब नदी की ओर चल दिया। जो अफ़ग़ान (१२ अ) पीछे रह गये थे वे राव द्वारा वन्दी बना लिये गये। उसने उनके नाक-कान कटवा लिये। वह अपने विश्वासपात्रों से कहता था कि "यह भिखारी अफ़ग़ान क्या चीज है? मैं इन सब को नष्ट कर दूँगा।" उसने अपने कुछ अमीरों को इस आशय से वापस कर दिया कि वे लोग लाहौर में रहें ताकि उन्हें नष्ट करके लौट आयें। जब काला नीलाब के तट पर पहुचा तो उसने एक मिट्टी का किला तैयार करके वहीं पड़ाव कर दिया। उसने अपने भाइयों से कहा कि "हम अपने सम्बन्धियों को कटी नाक तथा कान किस प्रकार दिखायेंगे? हम इसी स्थान पर मर जायेंगे।" राव ने भी युद्ध के लिये शिविर लगा दिये। काला सर्वदा बाण तथा बन्दूक से युद्ध किया करता था। इसी बीच में काला ने अपनी कौम वालों को लिखा कि "मेरे ऊपर बड़ी विपत्ति आई है, यदि किसी को अपने सम्मान की रक्षा करनी है तो उसको यही अवसर है, वह मेरी सहायता हेतु आये।" उसके कुछ भाई, जो अपनी कौम के सरदार थे उदाहरणार्थ सिरवानी तथा नोहानी, (उसकी) सहायतार्थ पहुच गये।

(१२ब) कहा जाता है कि ग्रीष्म ऋतु में दो घडी दिन व्यतीत होने के उपरान्त काला ने यह निश्चय किया कि इस समय किले से निकलकर राव दशरथ पर आक्रमण करना चाहिये। तदनुसार अस्त्र-शस्त्र धारणकरके घोडे पर सवार होकर वे किले के बाहर निकले और उन्होंने राव पर आक्रमण किया। उन्होंने निश्चय किया कि कोई भी किसी व्यक्ति पर आक्रमण न करेगा, सब राव के डेरे पर टूट पडेंगे। उसके साथी अफगान जब वहा पहुचे तो उन्होंने देखा कि राव चारपाई पर सो रहा है। जब अत्यधिक शोर होने लगा तो अफगानो ने बीच मे पहुच कर चारपाई पर ही राव की हत्या कर दी।

ईश्वर ने उसे बहुत बडी विजय प्रदान की। काला उसी प्रकार लाहौर पहुचा। राव दशरथ के सम्बन्धियो ने लाहौर का किला काला को इस कारण दे दिया कि वे समझते थे कि जो कुछ उसने किया ह उन्हो लोगो के कारण किया है। इस प्रकार समस्त पजाब काला के अधिकार में आ गया। वह कुछ दिना तक लाहौर में रहा और उसने पजाब के निवासियो तथा प्रजा से इस प्रकार का व्यवहार किया कि सभी हृदय से उसके आज्ञाकारी बन गये कारण कि वे राव दशरथ का अत्याचार देख चुके थे और (१३ अ) अब वे उसके न्याय तथा शान्ति को देख रहे थे। काला अपने आदमियो को लाहौर में छोड-कर शाह आलम के पास पहुचा। बादशाह के पास पहुच कर उसने राव दशरथ क विषय में पूर्ण विवरण दिया। बादशाह ने भी राव की शिकायत प्रारम्भ कर दी और कहा कि "उसने अकारण हमारे दासो की हत्या कर दी थी, उनका अपमान किया था तथा लाहौर में अशान्ति फैला रक्खी थी। जो कुछ उसका परिणाम हुआ वह उसके कुकर्मों का फल था। तूने बडा अच्छा किया।" काला ने पुन निवेदन किया कि "देहली खाली है और आप अकेले है। यदि आप आदेश दें तो आपके साथ म रहू और यदि आदेश दें तो देहली में।" अन्त में बादशाह ने कहा कि "तुम देहली मे रहो।" काला ने पुन निवेदन किया कि "देहली में जो दास तथा सेना है वह बादशाह की सेवा तथा रक्षा हेतु बादशाह के साथ रहे। उसने बादशाह को इस बात से सतुष्ट कर लिया। काला अपने नाम का खुत्बा पढवा कर देहली पहुच गया। (१३ ब) दासो को बादशाह के पास भेज दिया, बादशाह बदायूँ में शिकार खेलता रहा। इसी प्रकार १-२ वर्ष व्यतीत हुये। तदुपरान्त बादशाह की मृत्यु हो गई।

कहानी न० ८

काला का बादशाह होना

कहा जाता है कि शाह आलम के दो छोटे पुत्रो, जो दाई की गोद में थे, को दाई अपने साथ दासो सहित शाह आलम की पुत्री मलकये जहा के पास ले गई और उन पुत्रो को मलकये जहा को सौप दिया और वहा कोई भी न रह गया। काला से लोगों ने कहा कि "आपको ईश्वर ने अपनी कृपा द्वारा बादशाही प्रदान की है। अब आपको अपने नाम का खुत्बा पढवाकर सिंहासनारूढ हो जाना चाहिये।" काला ने कहा कि, "ऐसा राजसिंहासन तैयार करो जिस पर हमारे सब भाई बैठ सकें।" विश्वासपात्रो ने निवेदन किया कि "सिंहासन इतना ही बडा होता है कि बादशाह उस पर अकेला बैठ सके। बादशाह के साथ ५०,६० हजार अश्वारोही उसके भाई है, वे किस प्रकार सिंहासन पर बैठ सकते है?" उसने (१४ अ) फिर कहा कि "इतना बडा सिंहासन लाओ जिस पर ३०,४० भाई बैठ सकें।" जब राज्य काला को प्राप्त हो गया तो काला के नाम के साथ सुल्तान का शब्द बढा दिया गया। उसने इस प्रकार १३ वर्ष ९ मास १ दिन तथा ५ घडी तक राज्य किया।

कहानी नं० ९

सुल्तान मुहम्मद का देहली में खुत्वा पढवाना

सुल्तान काला की मृत्यु के उपरान्त जलालुद्दीन मुहम्मद खा वादशाह हुआ। जलालुद्दीन (१४ ब) के दो पत्नियां थी, एक अफगान और दूसरी राजपून। अफगान पत्नी से एक पुत्री का जन्म हुआ जिसका नाम फिरदौसी रखा गया और दूसरी से एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम कुतुब खां रक्खा गया। काला के एक पुत्र था। उसका नाम वहलोल था। जो पुत्री अफगान स्त्री से उत्पन्न हुई थी, उसका विवाह वहलोल से हो गया। ३ वर्ष तथा ६ मास तक राज्य करने के उपरान्त जलालुद्दीन रुग्ण हो गया और उसे इस वात का विश्वास हो गया कि वह जीवित न रहेगा। उसने अपने भतीजे को जिसका नाम वहलोल था तथा अपने पुत्र कुतुब खा को वुलवाया और दोनो को शिक्षा प्रदान करते हुए कहा कि, "मैं इस रोग द्वारा वच न सकूगा। तुम दोनो भाई हो। तुम दोनो को इस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये कि मेरा वश नष्ट न हो और वुद्धिमानों के परामर्शानुसार कार्य करना चाहिये तथा यथेच्छाचार को कदापि न अपनाना चाहिये।" उसने कुतुब खा से कहा कि, "वहलोल अफगान स्त्री के गर्भ से है और तू राजपूत स्त्री के गर्भ से। अफगान लोग जाहिल होते हैं। वे तेरे आज्ञाकारी न होंगे।" यह कहकर उसने अपनी पगडी सिर से उतारी और वहलोल के सिर पर रख दी और वहलोल की पगडी कुतुब खां के सिर पर रख कर कहा कि "वहलोल तेरा वादशाह है और तू वहलोल का वजीर है।" कुछ दिन उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई।

कहानी नं० १०

वहलोल का वादशाह होना

(१५ अ) जव वहलोल वादशाह हो गया तो सुल्तान हुसैन शर्की तथा मलक्ये जहा को इस वात की सूचना मिली कि जलालुद्दीन की मृत्यु हो चुकी है और वहलोल सिंहासनारूढ हो गया है। मलकये जहा ने सुल्तान हुसेन से जो उसका पति था, यह कहना प्रारम्भ किया कि "मेरे भाई, जो मेरे पिता की मृत्यु के उपरान्त आये थे, अव युवक तथा वडे हो गये हैं, अफगानो के वडे-वूढों की मृत्यु हो गई है और अव छोटे वादशाह हो गये हैं। तू मेरे भाइयो को लेकर देहली जा और अफगानो को हटाकर मेरे भाइयों को सिंहासनारूढ कर दे।" सुल्तान मलकये जहा की वात वहुत मानता था। उसने उसके कहने के अनुसार प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। १५०० मस्त हाथी तथा एक लाख अश्वारोहियों को लेकर देहली की ओर प्रस्थान किया। थोडे दिनो में वह देहली के निकट पहुच गया। सुल्तान वहलोल सुल्तान हुसेन से युद्ध की शक्ति न रखने के कारण देहली छोडकर सरहिन्द की ओर भाग गया, किन्तु कुतुब खा पानीपत में मिट्टी के एक किले का निर्माण करके ठहर गया और वहलोल से उसने कहा, "तू सरहिन्द में जाकर निवास कर।" जव सुल्तान हुसेन देहली पहुँचा तो उसने वहा पर अपने नाम का खुत्वा पढवा (१५ब) दिया और देहली में रहने लगा। तदुपरान्त मलकये जहा ने कहा कि "मैं तुझे इस आशय से लाई थी कि तू मेरे भाइयो को वादशाह वना देगा न कि स्वय वादशाह वन जायगा।" सुल्तान ने कहा कि "मेरा यह उद्देश्य नहीं है। अव जो तू कहती है उसी पर आचरण किया जायेगा।" मलकये जहा ने कहा कि "तू मेरे भाइयो के नाम का खुत्वा पढवाकर जौनपुर की ओर प्रस्थान कर।" सुल्तान ने कहा, "वहुत अच्छा।" उसने शाह आलम के पुत्रों को उसी स्थान पर सिंहासनारूढ करके जौनपुर की ओर प्रस्थान किया। अफगान लोगों के, देहली छोडकर चले जाने के कारण उनकी सख्या कम हो गई थी। केवल ३० हजार

अश्वारोही रह गये थे। इसी बीच में मिया अहमद खा जलवानी, जो रोह में अपनी कौम वालो का नेता था, अपने सम्बन्धियो को धन-सम्पत्ति देकर लाया और बहलोल से मिल गया, और कहा कि, "यदि मै तेरा सहायक हो जाऊ तो तू मुझसे किन शर्तों पर सधि करेगा?' सुल्तान बहलोल ने कहा कि "जो राज्य प्राप्त होगा उसका चौथाई भाग तुझे दे दिया जायेगा।" और इस विषय में उसने ईश्वर की शपथ ली। अहमद खा अपने अत्यधिक सहायको तथा भाइयो सहित सुल्तान बहलोल के साथ हो गया।

कहानी न० ११

कायमखानियो का बहलोल के पास आना और बहलोल की विजय

कहा जाता है कि कायमखानियो ने सगठित होकर कहा कि इस समय अफ़ग़ानो की बहुत दुर्दशा हो गई है। इस समय उन्हें हिन्दुस्तान से निकाल देना चाहिये। अत कायमखानियो ने समस्त राजपूत (१६ अ) तथा अपने सम्बन्धियो सहित ४० हज़ार अश्वारोही लेकर सुल्तान बहलोल पर आक्रमण कर दिया। जब सुल्तान ने देखा कि राजपूत लोग हमारे ऊपर आक्रमण करने आ रहे है तो उसने अपनी सेना का पडाव महिलाई मे किया। महिलाई में २५ हज़ार अश्वारोही थे। शेष विभिन्न स्थानो पर थे। तदुपरान्त सुल्तान ने अपनी सेना एकत्र करके राजपूतो के विरुद्ध प्रस्थान किया। जब वह राजपूतों के निकट पहुचा तो उसने उनके पास अपने वकील (प्रतिनिधि) को भेजा और यह कहलाया कि "तुम क्यो आक्रमण कर रहे हो? हम लोग मुसलमान है, हमारा तुमसे कोई सम्बन्ध नही है। यह उचित नही है कि हममें और तुममें युद्ध हो। हम लोग सधि कर ल, जहा तुम्हें आवश्यकता हो वहा हम तुम्हारी सहायता करें और जहा हमें आवश्यकता हो वहा तुम हमारी सहायता करो।" राजपूतो ने यह बात सुन-कर कहा कि "हम युद्ध के अतिरिक्त कुछ नही चाहते कारण कि तुम लोगो ने राजपूतो के सरदार राव दशरथ की हत्या कर दी है, हम उसका बदला लेंगे।" सुल्तान बहलोल ने अपना प्रतिनिधि उनके पास पुन भेजकर कहलाया कि "हम लोग, तुम जो कुछ भी कहो, उस बात के लिये तैयार है, तुम लोग जो चाहो उसे लिखकर भेज दो ताकि उस पर आचरण करें।" तदुपरान्त राजपूतो ने कहलाया कि "हम कोई बात स्वीकार नही कर सकते। बहलोल यदि अपनी पुत्री को प्रदान करे तो हम सतुष्ट हो सकते है।" जब सुल्तान बहलोल तथा कुतुब खा के पास उनके प्रतिनिधि ने यह सदेश पहुचाया तो सुल्तान बहलोल (१६ ब) आखा में आसू भरकर बडा क्रोधित हुआ। कुतुब खा ने सुल्तान बहलोल को गाली देकर कहा, "तुझे क्या हो गया है? तू चुप रह।" कुतुब खा ने राजपूतो के दूत से कहा कि, "मै बहलोल की पुत्री को देता हू किन्तु मै मुसलमान हू और इस कौम का नेता हू, यह शर्त (स्वीकार करो) कि पुत्री को तुम्हारे घर न भेजा जायगा। तुम्हारा पुत्र यहा आये, विवाह करके उसे दे दिया जायेगा। बहलोल की पुत्री अपने कबीले के पास लाहौर में है। जब तक वह इस स्थान पर आये तुम लोग और सुल्तान बहलोल एक साथ रहो ताकि तुम लोगो के हृदय का मैल निकल जाय।" जब यह बात दूत ने कायम-खानियो को पहुचाई तो वे बडे प्रसन्न हुये। उन्होने सुल्तान बहलोल को यह सूचना भेजी कि "तुम आकर हमसे भेंट करो।" और उन्होने उसके लिये एक दिन निश्चित कर दिया। जब वह दिन आया तो कुतुब खा समस्त सेना सहित अलग हो गया। सुल्तान बहलोल ३० अश्वारोहियो तथा ३० अफगान पदातियो सहित कायमखानियो के समक्ष पहुचा। उन ३० सवारो में एक सवार 'दूर' था। 'दूर' मुतरिब (१७ अ) अफ़्गान को कहते है। वे तलवार चलाने में दक्ष होते है तथा बडे ही वीर होते है किन्तु शिष्टता के कारण वे दूर बैठते है। इसके अतिरिक्त सुल्तान बहलोल के साथ एक ऊट पर एक नक्कारा भी था। जब सुल्तान बहलोल कायमखानियो के दरबार में पहुचा तो घोडे से उतर पडा और वे ३० सवार भी

घोडो से उतर पडे। जो लोग पैदल थे वे उन घोडो पर सवार हो गये और नक्कारा बजाने वालो को आदेश दे दिया गया कि "जब महल में शोर होने लगे तो तुम लोग नक्कारा जोर जोर से बजाने लगना।" तदुपरान्त बहलोल ३० अफगानो सहित महल के भीतर प्रविष्ट हुआ और कायमखानियो से भेंट की। तदुपरान्त १४ अफगान एक ओर तथा १५ एक ओर बैठ गये और वे लोग दूर दूर बैठे। जब अस्र की नमाज का समय आ गया तो अजान देने वाले ने अजान दी। वे लोग नमाज के लिये खडे हो गये। दूर ने अफगानी भाषा मे कहा कि "मैं नेता की हत्या कर दूगा।" जब नमाज प्रारम्भ हुई और वे सिज्दे में गये तो दूर, जो अतिम पक्ति मे था, अपने स्थान से लपककर सरदार के पास पहुचा और उसने अपनी कमर से बडा सा चाकू निकालकर सरदारो पर वार किया। अफगानो ने भी तलवार निकाल ली और प्रत्येक व्यक्ति की हत्या करनी प्रारम्भ कर दी। जब शोर होने लगा तो जो अफगान दरबार में खडे थे वे उन (१७ ब) कायमखानियो को, जो सहायतार्थ आते, मारने लगे। नक्कारा बजाने वाला नक्कारा बजाने लगा। कुतुब खा नक्कारे की आवाज सुनकर सेना सहित दौड पडा और उसने जिस कायमखानी को पाया उसकी हत्या कर दी। उनको बहुत बडी विजय प्राप्त हो गई और अत्यधिक धन-सम्पत्ति मिली।

कहानी न० १२

बहलोल का पुन देहली पहुचना तथा शाह आलम के पुत्रो का पलायन

सुल्तान बहलोल पुन सरहिन्द पहुचा और वहा तैयारी करने लगा। उसने अत्यधिक सामग्री एकत्र कर ली। इसी बीच में उसे समाचार प्राप्त हुये कि सुल्तान हुसेन जौनपुर चला गया है और देहली में या तो शाह आलम के पुत्र हैं और या ९-१० हजार अश्वारोही। वे सर्वदा शिकार खेला करते हैं। अत सुल्तान बहलोल ३० हजार अश्वारोहियों सहित सरहिन्द से देहली की ओर रवाना हुआ, शाह आलम के पुत्र युद्ध न कर सके और भाग खडे हुए। सुल्तान बहलोल ने उनके पीछे सेनाएँ दौडाईं। सेनाओ ने कन्नौज तक उनका पीछा किया। शाह आलम के पुत्र जौनपुर पहुचकर सुल्तान हुसेन की सेवा में उपस्थित हो गए।

मलकये जहा ने पुन सुल्तान हुसन से कहा कि 'मेरे भाइयो को अफगानो न देहली से निकाल दिया हैं। तू उन्हें जाकर निकाल दे। अभी उन्हाने प्रभुत्व नही प्राप्त किया है।" सुल्तान तैयारी करके देहली पहुचा। जब बहलोल ने सुना कि सुल्तान आ रहा है, तो उसने शहर की रक्षा प्रारम्भ कर दी। तदुपरान्त सुल्तान हुसेन ने देहली के निकट पहुच कर शिविर लगा दिये और बहलोल से तीर तथा बन्दूक (१८ अ) स युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया। उन दिनो बहलोल के पास ५० हजार अश्वारोही थे, सुल्तान हुसेन शीत ऋतु में आया था किन्तु ग्रीष्म तथा वर्षा ऋतु तक वह अफगानो को देहली से न निकाल सका। सुल्तान हुसेन की सेना व्याकुल हो गई। सुल्तान हुसेन ने सोचा कि जौनपुर लौटकर खूब तैयारी करके पुन आक्रमण करना चाहिये। अन्त में सुल्तान हुसेन ने जौनपुर की ओर प्रस्थान किया। जब वह दो-एक पडाव पार कर चुका तो सुल्तान बहलोल सुल्तान हुसन का पीछा करने के लिये अफगानो की सेना लेकर रवाना हुआ। सुल्तान हुसेन एक पडाव पर होता था तो सुल्तान बहलोल उसके पीछे। यहा तक कि सुल्तान बहलोल ने कन्नौज पहुचकर पडाव किया और कन्नौज में युद्ध की सामग्री एकत्र करने लगा। सुल्तान हुसेन जौनपुर में सामग्री एकत्र करता था।

कहानी न० १३

बहलोल तथा सुल्तान हुसेन का युद्ध तथा बहलोल की विजय

जब सुल्तान हुसेन ने जौनपुर में तैयारी करके सुल्तान बहलोल की ओर कन्नौज की तरफ प्रस्थान किया तो प्रस्थान के समय मिया बुदी से पूछा कि "विजय किसको होगी?" उसने उत्तर दिया "अफ-(१८ ब) गानो को।" सुल्तान हुसेन ने कहा कि, "मिया! तुम यह क्या कह रहे हो? तुम हमारे सम्बन्धी हो और तुमने हमारा नमक खाया है। तुम अच्छे बुरे में हमारे सहायक हो किन्तु यह क्या बात कह रहे हो?" मिया ने कहा कि "मै करामत[1] के अनुसार नही कहता अपितु बुद्धि के अनुसार कहता हू कारण कि तुम समस्त रात मदिरापान करते हो और डफ बजाने वालो से नृत्य कराते हो तथा प्रात काल सोते हो। अफग़ान लोग प्रात काल स्वय उठते है तथा अपने बालको को उठाकर नमाज पढते है। तुम मुर्दा दिल हो और अफगान ज़िदा दिल है। अत जिन्दा को मुर्दा पर सर्वदा विजय प्राप्त होती है।" सुल्तान हुसेन कोई उत्तर न दे सका। वह निरन्तर यात्रा करता हुआ सुल्तान बहलोल के विरुद्ध युद्ध करने के लिये रवाना हुआ। जब वह गगा तट पर मुहम्मदाबाद के निकट पहुचा तो सुल्तान बहलोल भी मुहम्मदाबाद के निकट आया। मुहम्मदाबाद कन्नौज से पूर्व की ओर १० अथवा १२ कोस पर है। वहा उसने एक मिट्टी के किले का निर्माण कराया और सुल्तान हुसेन से तीर तथा बन्दूक से युद्ध करने लगा। जब बहुत समय व्यतीत हो गया तो सुल्तान हुसेन विवश हो गया और उसने सुल्तान बहलोल के पास दूत भेजकर कहलाया कि, "तुम कुतुब खां को भेज दो ताकि हम तथा कुतुब खा एकत्र होकर सधि (१९ अ) कर ल।" अत कुतुब खा ने सुल्तान हुसेन की सेवा में उपस्थित होकर उससे भेट की। सुल्तान हुसेन तथा कुतुब खा में अत्यधिक वार्ता हुई। अन्त में यह निश्चय हुआ, कि 'देहली की सीमा कन्नौज रहे। तुम्हें चाहिये कि तुम जौनपुर से कन्नौज तक पूर्व की ओर रहो और सुल्तान बहलोल कन्नौज तक पश्चिम की ओर।" यह बात निश्चय हो गई और प्रतिज्ञा-पत्र लिखा जाने लगा तो लिखते समय बीच में एक शेखजादे ने कहा कि, "यह भी लिखा देना चाहिये कि जब हम जौनपुर की ओर रवाना हो तो अफ़गान लोग हमारा पीछा न करें।" जब उसने यह बात कही तो कुतुब खा ने प्रतिज्ञा-पत्र को लकर फाड डाला और कहा कि, "हम लोग यदि ऐसे विश्वासघाती है तो प्रतिज्ञापत्र लिखने की क्या आवश्यकता है?" तदुपरान्त सुल्तान हुसेन के पास कुतुब खा रुक गया। इसके पश्चात् यह निश्चय हुआ कि अमुक दिन प्रतिज्ञापत्र लिखा जाय। ऐसा ही हो रहा था कि सुल्तान हुसेन के वज़ीर कुतलू खा ने उससे कहा कि, "तुम जब अफग़ानो की आखो को नही फोड सकते तो तुम क्या कर सकते हो?" सुल्तान हुसेन ने कहा कि "अफग़ानो की आखे किस प्रकार फोडी जा सकती है?" कुतलू खा ने कहा कि 'कुतुब खा (१९ ब) को बन्दी बनाकर उसकी हत्या कर दो कारण कि कुतुब खा अफगानो का नेत्र है।" सुल्तान हुसेन ने कहा कि, "कुतुब खा राजदूत है, उसे किस प्रकार बन्दी बनाया जा सकता है और उसकी किस प्रकार हत्या कराई जा सकती है?" कुतलू खा ने कहा कि, "उसे बन्दी बनाकर रख लो और किसी को उसके पास जाने न दो।" अन्त में उसे बन्दी बनाकर सेवको को सौप दिया गया। उसे अन्न तथा जल दिया जाता था किन्तु उसके सेवको को पृथक् कर दिया गया था। कुतुब खा बन्दीगृह ही में था कि उसे समाचार प्राप्त हुये कि मलकये जहा के भाई शिकार हेतु दो मज़िल तक जा रहे है। अत उसने उस सक्के को, जो उसे जल पहुचाने के लिये नियुक्त था, अपनी ओर मिलाकर बहलोल के

१ चमत्कार।

पास यह सदेश भेजा कि, "कुतुब खा ने कहलाया है कि तुम भी शिकार खेलने क्यो नही जाते ?" बहलोल ने कहा कि, "इस बात में कोई रहस्य है जिसकी ओर कुतुब खा ने सकेत किया है।" अन्त में सुल्तान बहलोल को सूचना मिली कि मलकये जहा के भाई शिकार हेतु दो मजिल तक गये हैं। सुल्तान ने उत्तम सवारो को चुनकर मलकये जहा के भाइयो को बन्दी बनाने के लिये भेजा। अश्वारोही शिकार से मलकये जहा के दोनो भाइयो को बन्दी बनाकर सुल्तान बहलोल की सेवा में ले आये। जब मलकये जहा को यह समाचार प्राप्त हुआ कि उसके भाइयो को सुल्तान बहलोल की सेवा मे बन्दी बनाकर कजा खा ने पहुचा (२० अ) दिया है तो वह बडी व्याकुल हुई। उसने कुतुब खा को अपना भाई कहकर उसे शपथ दी कि, "तू मेरे भाइयो को मुक्त करादे ताकि मैं तुझे मुक्त करा दू।" कुतुब खा ने मलकये जहा से पुन कहा कि, "हमारे और तुम्हारे बीच में एक अन्य शर्त यह भी है कि कुतलू खा हमारे बीच में कोई बात न कहे।" अन्त में मलकये जहा ने यह बात स्वीकार करके उसे मुक्त करा दिया। कुतुब खा ने मलकये जहा के भाइयो को भी बहलोल के बन्दीगृह से मुक्ति दिला दी। तदुपरान्त मलकये जहा तथा कुतुब खा में अत्यधिक निष्ठा उत्पन्न हो गई। सुल्तान हुसेन भी उसके प्रति कृपा प्रदर्शित करने लगा और पुन सधि होना निश्चय हुआ।

इसी बीच में सुल्तान हुसेन ने एक रात्रि में एक सभा का आयोजन कराया जिसमें प्रत्येक प्रकार के नृत्य तथा सगीत की व्यवस्था की गई। क्योकि उस सभा में किसी वस्तु का अभाव न था और कुतुब (२० ब) खा भी उस सभा में उपस्थित था अत उस सभा की भूरि-भूरि प्रशसा करने लगा। उसने फिर नाक पकड कर यह बात कही कि "सेना बहुत समय से इस स्थान पर पडाव किये है और दुर्गन्ध आने लगी है। यदि यह सभा सेना के पीछे गगा तट पर होती तो बडा अच्छा था।" अन्त में सुल्तान हुसेन ने कहा, "बहुत अच्छा। जब एक घडी रात्रि रह जाय तो सेना के शिविर के पीछे गगा तट पर हमारा पेशखाना[1] लगाया जाय और उस स्थान को ठीक कराया जाय ताकि वहा जाकर सभा का आयोजन हो सके।" कुतुब खा ने सुल्तान बहलोल के पास यह सदेश भेजा कि "जब आधी रात्रि के उपरान्त एक घडी रात्रि शेष रह जाय तो सशस्त्र सेना सहित सुल्तान हुसेन की सेना पर आक्रमण कर देना और इसमें किसी प्रकार का विलम्ब न होने पाये।" कुतुब खा ने जब यह निश्चय करा लिया कि सुल्तान हुसेन का पेशखाना सेना के शिविर के पीछे गगा तट पर चला जायगा तो उसने सभा से उठकर मार्ग म अपने सेवको से यह कहा कि "तुम लोग इधर-उधर यह प्रसिद्ध कर दो कि सधि हो गई है और प्रात काल सुल्तान हुसेन जौनपुर की ओर चला जायगा।" अन्त में जब एक घडी रात रह गई तो सुल्तान हुसेन के सेवको ने उसके पेशखाने को गगा तट पर लगाने वाले भेज दिये। इसी बीच मे सुल्तान हुसेन की सेना को रात्रि में समाचार प्राप्त (२१ अ) हो चुके थे कि सधि हो गई है। जब उन्होने पेशखाने को जाते हुए देखा तो उन्हें सधि के विषय में विश्वास हो गया। समस्त सैनिक भी पेशखाने के साथ रवाना हो गये। उसी समय सुल्तान बहलोल ने सशस्त्र सेना सहित आक्रमण कर दिया। जब बहलोल सुल्तान की सेना के पास पहुचा तो सुल्तान हुसेन की सेना की पराजय हो गई। मलकये जहा का एक सक्का एक मशक में रखकर जौनपुर ले गया। जब अफगान सुल्तान की सेना के पास पहुचे तो उन्होने अफगानो को बन्दी बनाना प्रारम्भ कर दिया। इसी बीच में कुतलू खा घोडे से उतर पडा और एक सकलात[2] को, जो रान के नीचे था, निकाल लिया और सुल्तान हुसेन से कहा कि, "आप चले जाय।" उसने एक मरे हुए सिपाही के ऊपर वह सकलात फेंक दिया

१ शाही शिविर।
२ एक प्रकार का गहरे लाल रंग का कपडा।

और स्वय दोनो हाथ वाधकर खडा हो गया। जो अफगान आते थे वह उनसे कहता था कि, "अफगानो दूर रहो। यह बादशाह है, इसका सम्मान करो।" अफगानो ने जब यह देखा तो उन्होंने वहलोल तथा कुतुब खा को जो पीछे से आ रहे थे यह सूचना भेज दी कि, "हमें कुतलू खा तथा सुल्तान हुसेन दोनो मिल गये। सुल्तान हुसेन मारा गया और कुतलू खा खडा है।" अत सुल्तान वहलोल तथा कुतुब खा दोनो भाई भागते हुए वहा पहुचे। जब कुतुब खा ने उस लाश पर सकलात देखा तो अपने आदमियो से कहा कि (२१ ब) 'तुमने इस व्यक्ति का मुख देखा है ? सकलात हटाओ।" जब सकलात हटाया गया तो सुल्तान हुसेन न मिला। कुतुब खा ने अफगानो को गाली देकर कहा कि, "हे असावधान व्यक्तियो ! तुमने हमारे समस्त परिश्रम को नष्ट कर दिया।" उन्होंने कुतलू खा को बन्दी बनाकर हौदज में बैठा लिया। जब कुतलू खा बन्दी हो गया तो वे उसे नाना प्रकार के भोजन तथा अन्य सुविधाए प्रदान करते थे किन्तु कुतलू खा की हत्या के लिये तैयार न होते थे। यदि कोई व्यक्ति यह कहता कि कुतलू खा की क्यो नही हत्या करते तो वे उत्तर देते कि, "पुन कोई भी माता इस प्रकार के पुत्र को जन्म न दे सकेगी।" जब यह कहा जाता कि उसे क्यो बन्दी रखा गया है और उसे मुक्त कर दिया जाय तो वे उत्तर देते कि "यह कुतलू खा दस सुल्तान हुसेन एक आस्तीन से निकाल देगा।" जब तक कुतलू खा जीवित रहा उसे बन्दी रक्खा गया। सुल्तान सिकन्दर को कुतलू खा ही शिक्षा प्रदान करता था।

सुल्तान वहलोल तथा कुतुब खा ने सुल्तान हुसेन का पीछा किया। जब सुल्तान हुसेन जौनपुर पहुचा तो उसने समस्त सूफियो तथा आलिमो को, उदाहरणार्थ बुदी हक्कानी, मिया अलहदाद इत्यादि को बिहार भेज दिया और स्वय सेना एकत्र करके वहलोल तथा कुतुब खा के (२२ अ) विरुद्ध रवाना हुआ। सुल्तान बहलोल भी जौनपुर के निकट पहुच गया था। उसने सुल्तान हुसेन से युद्ध किया। तदुपरान्त सुल्तान हुसेन तथा सुल्तान बहलोल में ऐसा घोर युद्ध हुआ जैसा कि इसके पूर्व कभी न हुआ था। दोनो पक्षो की ओर से अत्यधिक लोग मारे गये। सुल्तान हुसेन के बहुत वडे-वडे अमीरो की उस युद्ध म हत्या हो गई। अन्त में सुल्तान वहलोल को विजय प्राप्त हो गई। सुल्तान हुसेन भागकर हाजीपुर की ओर रवाना हुआ। सुल्तान वहलोल ने सुल्तान हुसेन का पीछा किया। मार्ग में हाजीपुर तक १०,१२ स्थानो पर युद्ध हुआ, किन्तु सुल्तान वहलोल को प्रत्येक बार विजय प्राप्त हुई। सुल्तान हुसेन गडक नदी पार करके हाजीपुर चला गया और हाजीपुर की पूर्व दिशा मे गगा नदी पार करके विहार पहुच गया। सुल्तान वहलोल सारन में रह गया। जब सुल्तान हुसेन बिहार में ठहरा तो बगाल के वादशाह ने सुल्तान हुसेन की सहायतार्थ सेना तथा युद्ध की नौकायें भेजी। यह समाचार सुल्तान वहलोल को प्राप्त हो गये।

कहानी न० १४

सुल्तान वहलोल का अमीरो को जागीरें प्रदान करना, देहली से सुल्तान हुसेन पर चढाई करना तथा बहलोल की मृत्यु

(२२ ब) कहा जाता है कि सुल्तान वहलोल ने समस्त सारन प्रदेश गडक तक मिया हुसेन फर्मुली के पिता को प्रदान कर दिया और एक बहुत वडी सेना उसके साथ कर दी। उसे उस स्थान पर नियुक्त करके वह जौनपुर लौट गया। कुछ वर्ष तक वह जौनपुर रहा। तदुपरान्त वह जौनपुर को

मयारा खा नोहानी को देकर स्वय देहली चला गया और आगरा को मिया से लेकर हुमायू सरवानी[1] को दे दिया। अहमद खा जलवानी से अपने पूर्व के इस कथन के कारण कि उसे राज्य का चौथाई भाग दे दिया जायेगा उसे सुल्तान की उपाधि देकर, सुल्तान अहमद खा बना दिया और ब्याना उसे दे दिया। कन्नौज ख्वाजा अहमद को तथा बहराइच और गोरखपुर का समस्त प्रदेश फर्मुली सरदारो को प्रदान कर दिया गया। पजाब का राज्य वाइखेल के लोदियो को दे दिया गया जिसे सर्वप्रथम सुल्तान वाला ने प्रदान किया था। सुल्तान बहलोल ने भी यह उन्ही को दे दिया। बतनी गजून[2] को मुल्तान तथा महमूद खा लोदी को कालपी प्रदान किया गया। महमूद खा शहूखेल लोदी था। सुल्तान बहलोल ने इमी प्रकार समस्त छोटे बडे अमीरो को राज्य प्रदान करके विभिन्न स्थानो पर भेज दिया और स्वय देहली पहुच गया। वह १०–११ वर्ष तक देहली में रहा।

इसी बीच में मियारा खा ने जौनपुर से सुल्तान बहलोल को लिखा कि, 'सुल्तान हुसेन तथा (२३ अ) वगालियो ने सेना एकत्र की है और हमारे ऊपर आक्रमण करना चाहते हैं।" जब यह समाचार सुल्तान बहलोल को प्राप्त हुए तो उसने तुरन्त जौनपुर की ओर प्रस्थान किया और शीघ्रातिशीघ्र गगा तट पर वागरमऊ के पूर्व में शिविर लगा दिये। जब सुल्तान हुसेन को समाचार प्राप्त हुये कि "सुल्तान बहलोल देहली से रवाना होकर अमुक स्थान पर पहुच गया है और हमारे ऊपर आक्रमण करना चाहता है" तो उसने मियारा खा पर आक्रमण करन के विचार त्याग दिये। सुल्तान बहलोल कुछ वर्ष तक वही रहा और शिकार खेलता रहा। इसी बीच में उसकी वही मृत्यु हो गई।

सुल्तान बहलोल की यह प्रथा थी कि वह सर्वदा चार कोस की यात्रा करता था और दो कोस पर कुछ शिविर लगवा देता था। जब वह प्रस्थान करता तो सर्वप्रथम उन खेमो में पहुचकर दो घडी दिन व्यतीत करता और पुन शिकार खेलता हुआ डेरो में चला जाता। एक दिन जल के अभाव के कारण वह (२३ ब) आठ कोस पर डेरा लगवाये हुए था और चार कोस पर प्रथम शिविर लगाया गया था। किन्तु सुल्तान को यह सूचना न मिली थी। जब सुल्तान रवाना हुआ तो उसने देखा कि प्रथम शिविर चार कोस पर है। अत वह उस दिन प्रथम शिविर में न उतरा और वहा से प्रस्थान करके डेरा में पहुचा। जब वह सरापर्दो में पहुचा तो एक बडा मिट्टी का ढेला अपने सिर के नीचे रख कर खेमे के बाहर ग्रीष्म ऋतु के कारण सो गया। जब उसके विश्वासपात्रा न आकर देखा कि, "वह भूमि पर सोया हुआ है" तो उन्होंने उससे पूछा कि "बादशाह क्यो इस प्रकार सो रहा है ?" उसने कहा, "तुमने समार नष्ट कर दिया जो इस प्रकार लम्बी चौडी यात्रा की।" उन लोगो ने निवेदन किया कि "बादशाह ने जल के अभाव के कारण इस प्रकार प्रस्थान किया है।" जब उसने यह बात सुनी तो वह बडा खिन्न हुआ। उसने कहा कि "ईश्वर तुम्हें नष्ट करे। यह तुमने बहुत बडा अत्याचार किया है। तुम्हें एक स्थान पर ठहर जाना चाहिये था और वहा पर ढोल बजवा देना चाहिये था ताकि लोग जल की व्यवस्था करके प्रस्थान करते। इस समय तुम्हें चाहिये कि तुम लोग १२ हजार रुपये दान करो।" उन लोगो ने उसकी आज्ञा का पालन किया। कहा जाता है कि उसने ४४ वर्ष, ७ मास, २० दिन तथा ४ घडी तक राज्य किया।

१ यह शब्द 'शिरवानी' अथवा 'शेरवानी' भी प्रयुक्त हुआ है।
२ यह नाम स्पष्ट नहीं।

कहानी न० १५

सुल्तान बहलोल के पुत्र सुल्तान सिकन्दर का बादशाह होना

कहा जाता है कि सुल्तान बहलोल के कई पुत्र थे। उनमें सबसे बडे का नाम बारबक शाह था और (२४ अ) तीन अन्य पुत्र थे। पाचवे का नाम सिकन्दर था, वह देहली में था। बारबक शाह ने जो सुल्तान बहलोल के साथ था, मियारा खा को लिखा कि, "सुल्तान बहलोल की मृत्यु हो गई है। तू अपनी सेना लेकर हमारे पास चला आ।" अत मियारा खा ने शीघ्रातिशीघ्र बारबक शाह के पास पहुचकर उससे भेंट की और बारबक शाह के नाम का खुत्बा पढवा कर बादशाह बना दिया। बारबक शाह ने कहा कि, "सिकन्दर ने भी जो देहली में है अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया है।" मियारा खा ने कहा कि, "मैं उसे नष्ट कर दूगा।" सिकन्दर के साथ अमीरो के जो पुत्र थे उनमें दो पुत्र मियारा खा के भी थे। क्योंकि मियारा खा ने कहा था कि, "मैं उसे नष्ट कर दूगा, तू देहली की ओर प्रस्थान कर," अत बारबक शाह ने प्रस्थान किया। अन्त में सिकन्दर ने भी बारबक शाह की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में दोनो भाइयों में युद्ध हुआ। सुल्तान सिकन्दर को विजय प्राप्त हो गई। दरिया खा तथा नसीर खा ने जोकि मियारा खा के पुत्र थे, युद्ध में उसके पास पहुच कर उसे घोडे से उतार लिया और सुल्तान सिकन्दर के पास ले गये। बारबक शाह पराजित होकर गुजरात चला गया और उसकी वही मृत्यु हो गई। मियारा खा को बन्दी बना लिया गया था और उसे शिविर में रखा गया। दूसरे दिन सिकन्दर मियारा खा के पास पहुचा (२४ ब) और उसने अपनी कमर से तलवार खोलकर मियारा खा के समक्ष रख दी और कहा कि, "यदि मैं इस प्रकार अयोग्य हू तो तू जिसे समझे उसे बादशाह बना दे।" मियारा खा ने कहा कि, "यदि मेरी इच्छानुसार ही कार्य सम्पन्न होते तो मुझे रणक्षेत्र में विजय प्राप्त होती, मेरा मुख क्यो काला होता? आपको ईश्वर ने विजय प्रदान की है।" सुल्तान ने पुन कहा, "अपने हाथ से तलवार मेरी कमर में बाधो।" कहा जाता है कि उसने उसी दिन उसे जौनपुर पुन प्रदान कर दिया और स्वय देहली लौट गया।

कहानी न० १६

सुल्तान सिकन्दर का ब्याना की ओर प्रस्थान तथा एक फरियादी के प्रति न्याय

कहा जाता है कि अहमद खा जलवानी की, जो चौथाई भाग का स्वामी था और ब्याना में था, मृत्यु हो गई। सुल्तान सिकन्दर ने यह सुनकर ब्याना की ओर प्रस्थान किया। जब वह ब्याना पहुचा *तो उसने सुल्तान अहमद जलवानी के पुत्रो से कहा कि, "यह रोह नहीं है जहा प्रत्येक कबीले का एक* नेता हो। यह बादशाही है।" यह कहकर उसने उन्हें विभिन्न स्थानो पर जागीरें दे दी; और स्वय ब्याना अपने अधिकार में कर लिया कारण कि बडे-बडे राजा उसी स्थान के पर्वतो में रहते थे उदाहरणार्थ ब्याना में जादवो (यादव) राजपूत थे और ग्वालियर में जायानतुन। इसी प्रकार अन्य राजा लोग थे।

(२५ अ) एक दिन सुल्तान सिकन्दर मैदान में गेंद खेल रहा था। एक फरियादी उसके पास उपस्थित हुआ और उसने प्रार्थना की और कहा कि "जादवो (यादव) लोगो ने हमारे परिवार को बन्दी बनाकर नष्ट कर दिया है।" सुल्तान सिकन्दर ने यह सुनकर तुरन्त जादवो की ओर प्रस्थान किया और कहा कि "जब तक कि मैं शरा के अनुसार न्याय नही कर लूगा उस समय तक मेरा क्रोध कम न होगा।" तदनुसार वह जादवो (यादवों) के पर्वतो में प्रविष्ट हो गया। जब वह पर्वतो में पहुचा तो उसने जादवो (यादवो) की हत्या करके उन्हें नष्ट कर दिया। जिस मुसलमान ने न्याय की याचना की थी उसे सम्मा-

नित किया और उसी स्थान पर जागीर प्रदान कर दी और स्वय सिपौली कस्बे से पुन व्याना चला गया।

कहा जाता है कि राजा वाघू, जिसका नाम वीर भानु था और जो रामचन्द्र का पिता था, बडा ही प्रतिष्ठित राजा था। उसने अपनी समस्त शक्ति तथा सत्ता के कारण अपने भतीजे को बन्दी बना लिया था और उसके राज्य पर अधिकार जमा लिया था। उसके भतीजे ने सुल्तान सिकन्दर लोदी से फरियाद की। इसी बीच में वीर भानु भी सुल्तान सिकन्दर की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने अपने भतीजे को उस स्थान पर देखा तो उससे कहा कि "तू जो इस स्थान पर आया है तो क्या गुदा देने के लिये आया है?" उसने उत्तर दिया "निस्सदेह! यह बात भी असम्भव नही, यदि मैं अपने राज्य को प्राप्त कर सकू।" (२५ ब) जब उसने यह उत्तर सुना तो उसने अपने हृदय में कहा कि "जब तक यह व्यक्ति इस स्थान पर रहेगा तो यह बात अच्छी नही।" उसने शपथ देकर उस भतीजे को अत्यधिक प्रोत्साहन प्रदान किया और उसे अपने साथ ले जाकर राज्य को बाट लिया।

कहानी न० १७

थट्टा के राज्य को अधिकार में करना

जब सुल्तान सिकन्दर ब्याना में पहुच गया तो उसने थट्टा की ओर सेनाए भेजी। उसने कहा कि "जिस दिन विजय प्राप्त हो, ऐसा करो कि उसी दिन मुझे सूचना हो जाय।" अन्त में जब सेना ने प्रस्थान किया तो मार्ग में विभिन्न स्थानो पर घास के ढेर लगा दिये गये। जब विजय प्राप्त हो गई तो घास के ढेर में आग लगा दी गई और सभी ढेर जलने लगे। उस अग्नि के कारण उसी दिन पता चल गया कि विजय प्राप्त हो गई। जब बाबर शाह हिन्दुस्तान आया तो कधार का अधिक राज्य अरगूनो के हाथ में था। उन्हें वहा से निकाल कर उसने उन लोगो को थट्टा प्रदान कर दिया।

कहानी न० १८

सुल्तान हुसेन की ओर से एक राजपूत का मियारा खा से युद्ध

कहा जाता है कि मिया मियारा खा गगा नदी को पार करके खैरीगढ के राजाओ के किले पर आक्रमण कर रहा था। चुनार भी निकट था, उसने उस ओर भी आक्रमण करना निश्चय किया। यह (२६ अ) समाचार सुल्तान हुसेन को बिहार में प्राप्त हुए। सुल्तान हुसेन की ओर से एक अमीर राजपूत चौंद में था। वह चुनार से सोन नदी तक के समस्त स्थानो का अधिकारी था। सुल्तान हुसेन का भी एक ख्वाजा चुनार में था। उस ख्वाजा न सुल्तान को लिखा कि "मियारा खा ने हमारे ऊपर आक्रमण किया है।" अत सुल्तान हुसेन ने एक उत्तम सेना तैयार करके उस राजपूत के पास इस आशय से भेजी कि "यदि तुझसे हो सके तो मियारा खा से युद्ध कर।" तदुपरान्त राजपूत ने अपने समस्त सैनिकों को तैयार करके एकत्र किया और पान का बीडा तथा एक रूमाल अपने हाथ में लेकर कहा कि "जो कोई भी मेरे साथ मरने को तैयार हो वह इस बीडे तथा रूमाल को ले ले।" समस्त सिपाहियो ने बीडा तथा रूमाल ले लिया और यह आश्वासन दिया कि हम "तेरे साथ प्राण त्याग देंगे"। अन्त में राजपूत अपनी सेना को तैयार करके चल दिया। आगे तथा पीछे पदातियो को बाण एव बन्दूक देकर रवाना किया और पदातियो के पीछे मस्त हाथियो को रक्खा और हाथियो के पीछे वह अपनी सेना की पक्तियां ठीक करके मियारा खा के विरुद्ध युद्ध हेतु उद्यत हुआ। चुनार से पश्चिम की दिशा में मियारा खा से युद्ध हुआ। ऐसा घोर युद्ध हुआ कि मियारा खा स्वय आहत हुआ। अफगाना की बहुत बडी सेना मारी गई और

मियारा खा की सेना पराजित हो गई। मियारा खा पराजित होकर जा रहा था कि मार्ग में एक राजा द्वारा, जिसका नाम भेदू था, बन्दी बना लिया गया।

कहानी न० १९

सुल्तान सिकन्दर का राजा भेदू तथा सुल्तान (हुसेन) पर, जो बिहार में था, आक्रमण

(२६ ब) कहा जाता है कि जब मियारा खा की पराजय तथा भेदू द्वारा बन्दी बनाये जाने के समाचार सुल्तान सिकन्दर को प्राप्त हुए तो उस समय सुल्तान मैदान में गेद खेल रहा था। यह समाचार सुनते ही उसने बिहार की ओर प्रस्थान करने का सकल्प कर लिया। जिस समय वह शिविर में पहुचा तो वह उसी प्रकार चौगान को कधे पर रक्खे हुये था। जब वह कालपी के निकट पहुचा तो उसने यमुना नदी पार की और खोरा की ओर प्रस्थान किया कारण कि खोरा [1] है। वह उसी मार्ग से राजा भेदू की ओर रवाना हुआ। जब भेदू ने सुना कि सुल्तान सिकन्दर मियारा खा के कारण उसके ऊपर आक्रमण कर रहा है तो उसने मियारा खा को मुक्त कर दिया और स्वय अपने घर को छोडकर पर्वतो की ओर चल दिया। मियारा खा जब भेदू के वन्दीगृह से मुक्त हुआ तो वह जौनपुर पहुचा और कुछ दिन उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई।

सुल्तान सिकन्दर ने उसी ओर पर्वत की ओर प्रस्थान करते हुए रोहतास से उत्तर की ओर सोन को पार किया और बिहार मे सुल्तान हुसेन के निकट पहुचा। सुल्तान हुसेन युद्ध न कर सका कारण कि सुल्तान सिकन्दर के साथ बहुत बडी सेना थी। सुल्तान हुसेन इस कारण बिहार को छोडकर गौड की ओर (२७ अ) चला गया। जब सुल्तान सिकन्दर शीघ्रातिशीघ्र सुल्तान हुसेन की ओर रवाना हुआ तो अधिकाश बडे-बडे अमीर उदाहरणार्थ अज[2] हुमायू इत्यादि पीछे रह गये और साथ न पहुच सके। अज हुमायू साथ न पहुचने के कारण लज्जित होकर बाधू के पर्वतो में प्रविष्ट हो गया और दक्षिण की ओर चल दिया। सुल्तान सिकन्दर के बिहार में रहने के समय अर्थात् ६–७ वर्ष तक वह लज्जावश सिकन्दर के समक्ष न आया। अन्त में जब सुल्तान सिकन्दर बिहार से ब्याना पहुचा और वहा उसने पडाव किया तो उस समय अज हुमायू ब्याना पहुचा और एक मस्जिद म बैठ गया। यह समाचार सुल्तान सिकन्दर को प्राप्त हुये। सिकन्दर ने उसके पास यह समाचार भिजवाया कि, "तुम मेरे राज्य से भाग गय थे तो अब क्या वापस लौट आये?" अज हुमायू ने उत्तर भेजा कि, "मैं जिस राज्य में भी गया वहाँ मुझे तुम्हारा ही अधिकार मिला। अत मैं मस्जिद में आकर इस आशय से बैठ गया हू कि यह ईश्वर का घर है और यहा किसी का अधिकार तथा किसी से कोई सम्बन्ध नही है।" बादशाह को इस उत्तर से उस पर दया आ गई और उसने उसे अपने पास बुलवाया। अज हुमायू ने पर्वतो में से जो अत्यधिक हाथी प्राप्त किये थे वे उसने सुल्तान सिकन्दर के समक्ष प्रस्तुत किये। बादशाह ने कहा कि, "तू मुझे इन भैसो को क्या दिखाता है। यदि तू मेरे राज्य मे होता तो ५२ हजार अफगान प्रकट हो जाते।" अज हुमायू का (२७ ब) मन्सब ५२ हजारी था। बादशाह ने उससे पूछा, 'इस यात्रा में तुम्हारा साथ किन लोगो ने दिया तथा कौन सी वस्तु वफादार रही?" अज हुमायू ने उत्तर दिया कि, "मनुष्यो में असीलो ने, घोडो में तुर्की घोडो ने और अनाज में चने ने जिसे मैं खाता था और घोडे भी खाते थे।"

१ इस स्थान के शब्द स्पष्ट नहीं।
२ सभवत आज़म हुमायूँ।

कहानी न० २०

सुल्तान सिकन्दर का बिहार मे आगमन तथा वलियो एव आलिमो से भेंट करना

जब सुल्तान सिकन्दर बिहार आया तो उसने समस्त आलिमो तथा वलियो से भेट करना प्रारम्भ कर दिया। मिया शेख फखरुद्दीन जाहदी से, जिनका कबीला बडा ही सम्मानित तथा श्रेष्ठ था भेट की। समस्त बगाली बादशाह उसके मुरीद थे और उसके घर में यदि कोई सम्मानित व्यक्ति आता तो वह उसे शर्बत पिलाता था। जब सुल्तान सिकन्दर शेख के घर में पहुचा तो मिश्री अथवा चीनी उपलब्ध न थी। एक सेवक ने शेख से सकेत से कहा कि, 'मिश्री अथवा चीनी उपलब्ध नही है?' शख ने अगुली से उत्तर दिया कि, "मिठाई तथा चीनी को खुरच कर शर्बत तैयार करके ले आओ।' सेवको ने ऐसा ही किया और शर्बत तैयार करके सुल्तान सिकन्दर तथा समस्त लोगो को जो उसके साथ थे, पिलाया। जब सुल्तान सिकन्दर शेख से विदा हुआ तो शेख ने, अपना एक सेवक सुल्तान के साथ अपने विषय में पता (२८ अ) लगाने के लिये कर दिया। सुल्तान सिकन्दर रवाना हुआ। तदुपरान्त सुल्तान सिकन्दर ने मौलाना जमाली से कहा कि, "इस शेखजादे के समान इस समय कोई भी नही है किन्तु इसमे एक दोष है और वह यह कि यह जाहिल है।" जब वह बात करने लगा तो उसने कहा कि मैं तुम्हें गिवतन[1] याद करता था।" अत ज्ञात हुआ कि वह जाहिल है कारण कि वह गैवतन शब्द के उच्चारण में कोई भेद-भाव नही कर सका।

सुल्तान सिकन्दर बिहार में ठहर गया और सर्वदा जुमे की नमाज के लिये उपस्थित हुआ करता था। एक दिन देर हो गई। बन्दगी मिया बुदी हक्कानी भी मस्जिद में उपस्थित थे। उन्होने आदेश दिया कि अजान देकर नमाज पढी जाय। तदनुसार शुक्रवार की नमाज पढी गई। जब बादशाह पहुचा तो मौलाना जमाली ने देखा कि नमाज हो चुकी है। उसने नमाज पढने वालो से कहा कि, हे लोगो! जिस स्थान पर बादशाह हो और वह जुमे की नमाज हेतु उपस्थित होता हो तो इतनी प्रतीक्षा करनी चाहिये कि बादशाह आ जाता।" बन्दगी मिया बुदी हक्कानी ने सुनकर कहा कि, 'हमें खुदा की नमाज पढनी थी वह हमने पढ ली।" इस पर सुल्तान सिकन्दर ने मौलाना (जमाली) से कहा कि, "हे मौलाना (२८ ब) तू चुप रह', और मिया बुदी से कहा कि, "आपने बडा अच्छा किया कि नमाज पढ ली। जो कुछ भी हुआ वह मेरे दोष के कारण हुआ।"

सुल्तान एक वर्ष तक वहा रह कर समस्त आलिमो तथा सूफियो उदाहरणार्थ शेख बुदी हक्कानी, शेख बदन मुनेरी, शेख बुद तबीब तथा शेख फखरुद्दीन एव समस्त सहायता के पात्रो को नकद धन देकर बिहार से चल दिया। नसीर खा तथा दरिया खा को बुलवा कर नसीर खा से कहा कि, 'मै राज्य तुझे प्रदान करता हू।" नसीर खा ने निवेदन किया कि, 'हे बादशाह! यदि किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है और उसके घर में कोई विधवा होती है तो उसे घर से नही निकाला जाता। जौनपुर हमारे पिता को प्राप्त था और जौनपुर के बादशाह हम लोगो म से होने चाहिये।' सुल्तान ने कहा, 'मिआरा खा मेरा बाज था, बाज एक ऐसा पक्षी होता है जो समस्त पक्षियो को नही खाता अपितु जितनी भूख होती है उतना ही खाता है।" तदुपरान्त नसीर खा ने दरिया खा से कहा कि, "मैंने भूल की। यदि बादशाह तुझे बिहार का एक गाव दे देगा तो तू ले लेगा?" अन्त में बादशाह ने दरिया खा को दे दिया और दरिया खा ने उसे स्वीकार कर लिया।

१ गैवतन अथवा अनुपस्थिति में।

तदुपरान्त सुल्तान सिकन्दर ने बिहार से निकल कर मखदूमपुर ग्राम में, जो मुंगेर से पूर्व की ओर गंगा तट पर है, पडाव किया। वह उस ग्राम में ५-६ वर्ष तक रहा और नौका पर बैठ कर नदी के (२९ अ) उस पार शिकार खेलता था। तदुपरान्त वह ब्याना की ओर चला गया और ब्याना को अपनी राजधानी बनाया। जिस समय सुल्तान सिकन्दर ब्याना मे था तो बिहार के राज्य में पर्वतों मे सियूर नामक स्थान पर एक जुन्नारदार[1] राज्य करता था। उसका पेशवा, महता काज़ी था। वह उस्मानी था। अन्त में राजा तथा काज़ी में शत्रुता हो गई। उस राजा ने काज़ी के समस्त कबीले को नष्ट कर दिया। केवल एक व्यक्ति रह गया। वह वहा से भाग कर सुल्तान सिकन्दर के समक्ष उपस्थित हुआ और उसने वहा फरियाद की। वह अपने गले में जुन्नार[2] बाध कर खडा हो गया। बादशाह ने उसे देख कर पूछा कि, "तू कौन है?" उसने कहा कि, "मैं सर्वप्रथम मुसलमान था और उस्मानी था। अब जुन्नारदार हो गया हू।" बादशाह ने कहा कि, "इसका क्या कारण है?" उसने कहा, "सियूर के जुन्नारदार राजा ने हमारे समस्त कबीले की हत्या कर दी है। केवल मैं एक व्यक्ति जीवित रह गया हू जो इस स्थान पर बादशाह से न्याय की याचना करने के लिये आया है।" बादशाह ने उसके साथ ३० हज़ार अफ़गान अश्वारोही कर दिये और कहा कि, "तू भी जाकर उसके समस्त कबीले की हत्या कर दे।" उसने ३० हज़ार सवार सहित सियूर पहुच कर राजा के समस्त कबीले की हत्या कर दी। केवल एक व्यक्ति को छोड दिया कारण कि उन लोगो ने भी एक व्यक्ति को छोड दिया था। अन्त में वही एक व्यक्ति जो रह गया था राजा हुआ और काज़ी का पुत्र महता हुआ जैसा कि इससे पूर्व होता आया था। उन लोगो का वश अभी भी विद्यमान है।

कहानी न० २१

यमुना तट पर आगरा नगर का बसाया जाना

(२९ ब) कहा जाता है कि उस समय यमुना के निकट बडी ही ऊबड खाबड भूमि थी। सुल्तान सिकन्दर यह सुन कर स्वय वहा पहुचा और उसने यमुना तट पर नगर के लिये एक स्थान चुना। उसने उस स्थान के राजा से पूछा कि, "नदी के उस ओर उत्तम तथा खुली हुई भूमि है या इस ओर?" राजा ने अपनी भाषा में कहा कि, "उस ओर है और आकरी भूमि है अर्थात् अधिक है।" अत सुल्तान ने यमुना से पश्चिम दिशा में आकरा नामक नगर बसाया और यमुना से पूर्व की ओर सिकन्दरा नामक ग्राम बसाया।

कहानी न० २२

सुल्तान हुसेन की बिहार से वापसी, पराजय तथा मृत्यु

सुल्तान हुसेन बिहार से भागकर गौड में नसीब शाह के पास पहुचा। सुल्तान हुसेन के साथ अधिकाश सूफी भी गौड की ओर चल दिये। बन्दगी मिया शेख़ अहलदाद भी सुल्तान के साथ चला गया और बिहार से लौटकर जौनपुर पहुच गया। जब सुल्तान सिकन्दर बिहार पहुचा तो अधिकाश सूफियो (३० अ) ने उदाहरणार्थ शेख़ बुदो हक्कानी इत्यादि ने भेंट की। किन्तु उसे शेख़ अहदाद से भेंट की बडी इच्छा थी। जब सुल्तान मखदूमपुर से जौनपुर पहुचा तो उसे शेख़ अलहदाद से भेंट करने की बडी

१ ब्राह्मण से तात्पर्य है। इसका शाब्दिक अर्थ है "जनेऊ धारण करने वाला"।
२ 'जनेऊ' अथवा 'यज्ञोपवीत'।

इच्छा हुई। जौनपुर में एक बहुत बडा सूफी था। उसने सुल्तान सिकन्दर की शेख अल्हदाद से भेंट करने की इच्छा के सम्बन्ध में सुना था। जब उसने यह सुना कि सुल्तान सिकन्दर सर्वप्रथम शेख अलहदाद से भेंट करने उसके घर जायेगा तो वह छल तथा धूर्तता से शेख अलहदाद को दावत के बहाने से अपने घर लाया और कहा कि, "आपके वस्त्र बडे गन्दे हो गये हैं, यदि आप दे दें तो इसे हाथों हाथ धुलवा कर मगवा दिया जाय।" तदनुसार उसने उन्हें एक स्थान पर अकेला बैठा दिया और एक पुराना वस्त्र सिर पर बाधने के लिये और एक तहबन्द दे दिया। शेख अलहदाद जो वस्त्र पहने हुए थे उन्हें धोबी के यहा भेज दिया। जब सुल्तान सिकन्दर जौनपुर नगर में प्रविष्ट हुआ तो वह पूछताछ करता हुआ शेख अलहदाद के घर पहुचा और पूछा कि, "शेख अल्हदाद कहा हैं ?" लोगो ने बताया कि, "अमुक सूफी की दावत में गये हैं।" (३० ब) सुल्तान सिकन्दर उस सूफी के घर पहुचा और पूछा कि, "शेख अलहदाद कहा हैं ?" उस सूफी ने धूर्ततापूर्वक कहा कि "शेख अलहदाद यहा कोई नही है। केवल एक विद्यार्थी अल्लाहदी नामक है।" यह कह कर शेख अलहदाद को उसी प्रकार से नग्न अवस्था में लाकर सुल्तान से मिला दिया। सुल्तान समझ गया कि इस सूफी ने धूर्तता की है। अत बादशाह वहा से खिन्न होकर उठ गया।

(३१ अ) सक्षेप में सुल्तान ब्याना की ओर चल दिया। शेख अलहदाद सरल स्वभाव का व्यक्ति था, (अत) कुछ न समझा। जब कुछ समय व्यतीत हो गया तो इस धूर्तता का ज्ञान शेख अलहदाद को हुआ। उसने कहा कि, "ईश्वर इस नगर को षड्यन्त्रकारियो से सुरक्षित रखे।" यह कह कर उसने अपने कबीले को पुन बिहार की ओर लौटा दिया और स्वय बादशाह के पास चला गया।

(३२ अ) सक्षेप में, जब शेख अलहदाद ने बादशाह के पास पहुच कर उससे भेंट की तो बादशाह ने उसके प्रति अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की और विद्यार्थियो के व्यय हेतु कुछ ग्राम बिहार के समीप प्रदान कर दिये। मिया, बादशाह से विदा होकर बिहार की ओर चल दिया।

सुल्तान हुसेन गौड चला गया। नसीब शाह ने सुल्तान हुसेन को बुलवाया और स्वय एक चबूतरे को अम्बर के इत्र से तैयार करा के बैठ गया। जब सुल्तान हुसेन आया तो दूर खडा हो गया और कहा कि, "तुझे सम्मान प्रदर्शित करना चाहिए कारण कि मुहम्मद साहब सुगन्धि को अपने सीने पर मलते थे।" अत नसीब शाह ने चबूतरे से उतर कर सुलतान हुसेन से भेंट की और कुछ समय तक बैठा रहा तथा विभिन्न ज्ञानो से सम्बन्धित वार्ता करता रहा कारण कि सुल्तान हुसेन बहुत बडा विद्वान् था। जब उसने सुल्तान हुसेन को विदा किया तो उसकी रसोई के व्यय हेतु ४० ग्राम प्रदान कर दिये और कहा कि, "आप (३२ ब) वहा जाकर रहें। मैं स्वय व्यवस्था कर रहा हू, जिस समय कुछ अधिकार प्राप्त हो जायेगा, आपके साथ सेना कर दूगा।" इस प्रकार कुछ वर्ष व्यतीत हो गये। सुल्तान हुसेन ने नसीब शाह को लिखा कि, 'कई वर्ष व्यतीत हो गये मुझे बिहार के विषय में कोई ज्ञान नही प्राप्त हुआ है। यदि आप कुछ लोगो को साथ कर दें तो मैं बिहार के समाचार प्राप्त करू।" नसीब शाह ने उत्तर म लिखा कि, "अभी सुल्तान सिकन्दर वहा विद्यमान है और उसके अमीर विभिन्न स्थानो पर नियुक्त हैं, अत इस समय उस ओर प्रस्थान करना उचित नही है।" किन्तु सुल्तान हुसेन ने यथेच्छाचार से कार्य करते हुए अपनी सेना सहित बिहार की ओर प्रस्थान किया। दरिया खा किले में बन्द हो गया। सुल्तान हुसेन ने किले के चारो ओर शिविर लगा दिये और किले को तोडने की व्यवस्था करने लगा। बाणो तथा बन्दूको से निरन्तर युद्ध होता रहा। इसी बीच में दरिया खा ने यह सब हाल सुल्तान सिकन्दर को लिख दिया। सुल्तान सिकन्दर ने यह समाचार पाते ही समस्त अमीरो, उदाहरणार्थ अज हुमायू इत्यादि, को जो पूर्व की ओर थे, लिख दिया कि, "तुम सब लोग दरिया खा की सहायता करो।" कहा जाता है कि ९० हजार अश्वारोही सहायतार्थ पहुच गये। सुल्तान हुसेन किले को तोडने की व्यवस्था कर रहा था किन्तु किले

खाई का जल बडा गहरा था। सुल्तान हुसेन ने कहा कि, "यह जल किस प्रकार निकाला जाय ?"
ही चौधरी ने कहा, 'मै निकाल दूगा।" यह कह कर उसने विहार के बेलदारो तथा ग्रामीणो को बुलवा
३३ अ) कर रातो रात एक नहर खुदवा कर खाई का पानी निकलवा दिया। अफगान लोग तलवारो
आतशबाजी के बल पर किले को अधिकार में किए हुए थे। इसी बीच में अज्ञ हुमायू शिरवानी ९०
ार अश्वारोहियो सहित सहायतार्थ पहुच गया। सुल्तान हुसेन किले को छोड कर कहल गाव की ओर
 दिया। जब वह वहा पहुचा तो नसीब शाह को यह समाचार प्राप्त हुए। उसने इस बात पर बडा
द प्रकट किया कि सुल्तान हुसेन ने समय के पूर्व ही अपनी इच्छा से यह कार्य कर दिया। सुल्तान हुसेन
 पुत्र बडा ही बलवान् था और उस काल में कोई भी उसका मुकाबला न कर सकता था। सुल्तान
ेन के विषय में सुल्तान सिकन्दर को यह ज्ञात हुआ कि सुल्तान हुसेन का पुत्र ऐसा बलवान् तथा सदा-
ारी है। सुल्तान सिकन्दर ने कहा कि, "मैंने सुल्तान हुसेन को गेहू से आटा बना दिया था किन्तु पुन
टे से गेहू पैदा हो गया।" इसी बीच में एक पहलवान ने, जिसका नाम खूता[1] था और जो बडा बलवान्
, सुल्तान सिकन्दर से निवेदन किया कि, "आप कोई चिन्ता न करें, मुझे आदेश दें, मैं सुल्तान हुसेन के
न से मल्लयुद्ध करके उसकी हत्या कर दूगा।" बादशाह ने उसे अनुमति दे दी। जब वह पहलवान सुल्तान
ेन के पुत्र के पास पहुचा तो उसन सुल्तान हुसेन के पुत्र से कहा कि, "मै तेरे सिर में तेल मलू और तू
३३ ब) मेरे सिर मे।" अन्त में उस पहलवान ने सुल्तान हुसेन के पुत्र के सिर में पूर्ण शक्ति से तेल मला
 कुछ दिन तक सुल्तान हुसेन का पुत्र रुग्ण पडा रहा। तदुपरान्त स्वस्थ होकर उसने उस पहलवान
 सिर में इस जोर से तेल मला कि उसके सिर का गूदा कान से निकल गया और वह मर गया। उसने
ादेश दिया कि उसे तीन दिन तक पडा रहने दिया जाय और फिर हटा दिया जाय। तदुपरान्त कुछ दिन
श्चात् सुल्तान हुसेन के पुत्र की भी मृत्यु हो गई। यह समाचार पाते ही कुछ दिनो मे सुल्तान हुसेन
ी मृत्यु को प्राप्त हो गया।

कहानी न० २३

दरिया खा तथा हुसेन फर्मुली के पिता का सेना लेकर राजा सबै सिंह पर आक्रमण करना तथा सिकन्दर की मृत्यु

कहा जाता है कि सुल्तान सिकन्दर ब्याना में निवास करता था और बिहार में दरिया खा ने
मिया हुसेन फर्मुली के पिता को, जो सारन में था, लिखा और उन लोगो ने मिल कर इस प्रकार
स्थान किया कि बिहार से दरिया खा ने अपनी सेना को गगा के उस पार किया और सारन से मिया हुसेन
र्मुली के पिता ने अपनी सेना को नदी के पार कराया। दोनो सेनाओ ने मिल कर राजा सबै सिंह पर
आक्रमण किया। राजा भाग खडा हुआ। जब उन्हें तिरहुट के राज्य पर अधिकार प्राप्त हो गया तो
(३४ अ) हुसेन फर्मुली के पिता तथा दरिया खा ने सुल्तान सिकन्दर को एक प्रार्थनापत्र भेजा कि "समस्त
तिरहुट का राज्य बादशाह के सौभाग्य से अधिकार में आ गया है।" जब सुल्तान सिकन्दर ने यह सुना
तो वह बडा दुखी हुआ और उसने कहा कि, 'वह राज्य हमारे तथा सैयिदो के बीच में दीवार था। अब
हमारी दृष्टि सैयिदो के घर में पडगी।" जब सुल्तान सिकन्दर क्रोधित हुआ तो मिया फर्मुली का पिता तथा
दरिया खा की सेनाए तिरहुट को छोड कर वापस आ गई। जब नसीब शाह ने देखा कि यह राज्य इस

१ यह शब्द इस प्रकार लिखा है कि 'खूटा' तथा 'खुना' दोनों हो सकता है।

प्रकार अव्यवस्थित है तो उसने अपनी बहिन के पति को, जिसका नाम मखदूम आलिम था, सेना सहित भेजा। उसने पहुंच कर हाजीपुर पर अधिकार जमा लिया। जब सुल्तान सिकन्दर ने यह सुना तो उसने हाजीपुर से कोसी नदी तक का राज्य नसीब शाह को दे दिया।

सुल्तान सिकन्दर ने ३५ वर्ष, ९ मास, १३ दिन तथा २४ घडी तक राज्य किया।

कहानी न० २४

खान शाह का रूम के खुन्दकार की पुत्री को देवो द्वारा मँगवाना तथा सुल्तान सिकन्दर को इस बात का ज्ञान प्राप्त होना

(३४ ब) कहा जाता है कि सुल्तान सिकन्दर लोदी के समय में आगरा नगर में खान शाह नामक एक मौला था जो बालको को शिक्षा प्रदान किया करता था। एक दिन जब वह अपने मिट्टी के घर का निर्माण कर रहा था तो उसे एक पत्थर का दीपक मिला। जब उसने उस दीपक को जलाया तो उसमें से दो देव निकले। मौला ने उन देवो से पूछा कि, "तुम लोग कौन हो?" उन लोगो ने कहा कि, "यह हजरत सुलैमान का दीपक है और हम लोग उनके मुअक्किल हैं। जो कोई भी दीपक को जलाता है हम उपस्थित हो जाते हैं और वह जिस कार्य का आदेश देता है हम उसे करते हैं।" मौला उनसे थोडा बहुत कार्य लेने लगा और वे उन कार्यों को करने लगे। जब उस मौला का कुछ साहस बढा तो उसने उन देवो से कठिन कार्य लेने प्रारम्भ कर दिये। यहाँ तक कि वह बडा धनी हो गया और उसने महलो का निर्माण कराया तथा मदिरापान प्रारम्भ कर दिया। एक दिन उसने उन देवो से पूछा कि, 'ससार में कोई एसी भी रूपवती है जिसके समान कोई अन्य नहीं?" उन देवो ने कहा कि, "हा, खुन्दकार रूम की पुत्री के समान कोई भी अन्य रूपवती ससार मे नही है।" मौला ने उन देवों को आदेश दिया कि, "उस सुन्दरी को ले आओ।" देव २ ३ घडी में उस पुत्री को ले आये। मौला ने उसे रात भर अपने घर में रखा। (३५ अ) जब दो घडी रात रह गई तो उसन देवा को आदेश दिया कि, "इस पुत्री को इसके घर पहुचा दो।" वह इस प्रकार हर रात्रि में देवो को आदेश देता था। देव पुत्री को लाते थे और प्रात काल उसे उसके घर पहुचा देते थे। उसकी दाई तथा कनीज जब उसे घर में न पाती थी तो उससे पूछती थी कि, "तू रात्रि में कहा रहती है और कहा चली जाती है?" यहा तक कि रूम के सुल्तान को भी यह सूचना मिल गई। रूम के खुन्दकार ने यद्यपि बहुत पूछताछ की किन्तु उसे कुछ भी पता न चला। उसने पुत्री से पूछा कि, 'तू कहा जाती है और किस प्रकार जाती है?" उसने कहा कि,' इसी प्रकार की एक हवेली है, वहा मुझे ले जाते हैं। उस हवेली में एक व्यक्ति है, वह समस्त रात्रि मुझे अपने साथ रखता है और प्रात काल यहां वापस भेज देता है। मुझे अपने आने और जाने के विषय में कोई सूचना नही मिलती।" खुन्दकार ने कहा कि 'उस स्थान का नाम पूछ कर आना।" पुत्री ने कहा कि, 'मै किस प्रकार पूछू? कारण कि वह न तो मुझसे बात करता है और न मै उससे।" जब कुछ समय व्यतीत हो गया तो उस पुत्री ने उस (३५ ब) मौला से थोडी सी हिन्दी भाषा समझनी प्रारम्भ कर दी। जब वह हिन्दी भाषा समझ गई तो उसने कनीजो और दाई से कहा कि, "मै उसकी थोडी सी भाषा समझ गई हू।" दाई ने रूम के सुल्तान को यह समाचार पहुचाय। रूम के सुल्तान ने पुत्री से कहा कि, 'तू उस स्थान तथा उस व्यक्ति का नाम पूछ कर आ।" जब वह पुत्री पूर्व की भाति उस मौला के घर से लौट कर आई तो उसने रूम के सुल्तान को बताया कि, "उस व्यक्ति का नाम खान शाह है और वह बालको को शिक्षा देता है तथा आगरा नगर में रहता है। आगरा नगर हिन्दुस्तान मे है और वहा का बादशाह सुल्तान सिकन्दर है।" उसने अपने ले

जाने का हाल भी सुल्तान को बताया। रूम के सुल्तान ने कहा कि, "जब तू हिन्दुस्तान जाय तो वहा से पान ले आ।" जब वह पुत्री फिर गई तो वह सुल्तान के लिये पान लाई। जब रूम के सुल्तान को इस बात का पूर्ण ज्ञान हो गया तो उसने अपने दो प्रतिनिधि सुल्तान सिकन्दर के पास भेज कर उस पुत्री के विषय में विस्तार से लिखा और यह भी लिखा कि, "मैं उस पुत्री को तुम्हें प्रदान करता हू।" जब सुल्तान रूम के राजदूत सुल्तान सिकन्दर लोदी के समक्ष आये और इस विषय में उसे अवगत कराया तो उसने (३६ अ) *पूछताछ करनी प्रारम्भ की। अन्त में खान शाह का घर मिल गया। खान शाह की पत्नी* अपनी सौत के कारण गुप्तचर बन गई। जिस समय खान शाह मदिरापान के उपरान्त असावधान होकर सो रहा था सुल्तान सिकन्दर तथा मिया भूवा ने उस पर आक्रमण कर दिया और उसके घर में प्रविष्ट होकर उस दीपक को बुझा कर अपने अधिकार में कर लिया। खान शाह को बन्दी बना कर तत्काल मार डाला और उस पुत्री को सम्मानपूर्वक अपने घर ले आये और उसे अत्यधिक उपहार देकर रूम के सुल्तान के पास भेज दिया। जब वह पुत्री पहुची तो रूम का सुल्तान बडा प्रसन्न हुआ और उसने सुल्तान सिकन्दर के नाम खिलाफत का फरमान भेज दिया। सुल्तान सिकन्दर ने उस दीपक को तोड कर यमुना नदी में फेंक दिया।

कहानी न० २५

मौलाना जमाली का सिकन्दर से खिन्न होकर प्रस्थान

कहा जाता है कि मौलाना जमाली तथा सिकन्दर में ऐसी मित्रता थी जो किसी अन्य में न थी। अन्त में मिया हाफिज़ नामक एक मौला ने मौलाना जमाली तथा बादशाह के बीच मनभेद उत्पन्न करा (३६ ब) दिया। मौलाना जमाली यह देख कर बादशाह के पास से भाग गया और खुरासान चल दिया किन्तु वह कलन्दरो की भाति खाल को बाध कर तथा भभूत मल कर यात्रा करता था। वह उस नगर में पहुचा जहा मौलाना जामी शिक्षा प्रदान किया करते थे और उनके पास पहुच कर भूमि पर बैठ गया। मौलाना जामी ने जमाली को इस अवस्था मे देख कर पूछा कि, 'तुझमें तथा गधे में क्या अन्तर है?" मौलाना जमाली तथा मौलाना जामी के बीच में एक खाल की दूरी थी जो बैठने के लिये विछा दी *गई थी। जमाली ने कहा, "इसी एक खाल का अन्तर है" और यह सकेत मौलाना जामी की ओर था।* तदुपरान्त मौलाना जामी ने क्षण भर ठहर कर पूछा कि, 'तू किस स्थान से सम्बन्धित है और कहा से आ रहा है?" जमाली ने कहा कि, "देहली से।" जामी ने पूछा कि "तूने जमाली को देखा है अथवा उसके *विषय में सुना है?" जमाली ने कहा, "हा देखा है और सुना है।' मौलाना जामी ने पूछा, 'तुझे* जमाली के कुछ पद्य याद हैं?" जमाली ने कहा "हा।" जमाली ने क्षण भर रुक कर यह छन्द पढा —

"हमारे शरीर पर तेरी गली की धूल का वस्त्र है वह भी सैकडो स्थानो से दामन तक फटा हुआ है।"[1] तदुपरान्त मौलाना जामी ने कहा कि, 'सम्भवत आप ही जमाली हैं।" जमाली ने कहा, "हा। देहली में मुझे भी जमाली कहते हैं।" मौलाना जामी ने उसे सम्मानपूर्वक अपने पास बैठा लिया (३७ अ) और उसके शरीर से धूल साफ करवा कर वस्त्र पहिनाये। तदुपरान्त मौलाना जामी ने कहा कि, "यहा की मिट्टी में इतना रक्त है कि जिससे वस्त्र बन जाते हैं।" *जमाली ने कहा कि, "तुमने हमारा*

१ 'मारा अज़ खाके कूयत पीराहन अस्त बर तन आ हम ज आबे दीदा सद चाक ता बदामन।"

आगरा नही देखा। वहा मिट्टी से फरजी[1] वना लेते हैं।" तत्पश्चात् जामी तथा जमाली में बडी मित्रता हो गई। अमीर खुसरो तथा अमीर हसन के बहुत से छन्दो के विषय में मौलाना जामी ने पूँछताँछ की कारण कि अमीर खुसरो ने अपने पद्यो में हिन्दी शब्द इस प्रकार लिख दिये हैं कि कोई भी फारसी तथा हिन्दी का अन्तर नही समझ पाता। इसी कारण अमीर खुसरो तथा हसन देहलवी के छन्द बडे कठिन दृष्टिगत होते हैं :–

छन्द

"माहे नव कि अस्ले वे अज़ साल अस्त यक मुहिमे तो गश्त व देह साल अस्त।"[2]

इस छन्द में अमीर खुसरो ने नौका की प्रशसा की है जोकि साल के वृक्ष से तैयार की जाती है और १० वर्ष में एक नौका तैयार होती है।

छन्द

"गर मह शवद वर ऊ सितारा शवद वरी
बा ख्वाने नेमतीये तू कुनद कै वरावरी।"[3]

इस छन्द में अमीर खुसरो ने अपने पीर ख्वाजा निज़ामुद्दीन[4] औलिया के भोजन की प्रशसा की है। ओवरी से एक प्रकार का वस्त्र बनाया जाता है। इस प्रकार मौलाना जामी ने अमीर हसन तथा अमीर खुसरो की कविताओं के विषय म जमाली द्वारा ज्ञान प्राप्त किया। ईलवा के (३७ व) लोग जमाली के इतने भक्त हो गये कि वादशाह को इस वात का सदेह होने लगा कि, 'सम्भवत यह हमारे राज्य म विघ्न डाल देगा।" जमाली यह छन्द लिख कर कावा की ओर चला गया —

छन्द

"दो सेह गज़ वोरिया व पोस्त यके
दिले पुर दर्दे यार दोस्ते यके।
ईं कदर बस बुअद जमाली रा,
आशिके मस्त ला उबाली रा।"[5]

तदुपरान्त सिकन्दर ने अपने आदमियो को भेजकर जमाली को बुलवाया और इस विषय में वडा आग्रह किया। जमाली ने इसका उत्तर कविता में लिखकर भेजा किन्तु जिस दिन उत्तर पहुचा उसी दिन सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु हो गई।

१ शतरज की रानी।
२ 'यथा चन्द्रमा जो साल से तैयार हुआ और उसकी तैयारी में १० वप लगे।'
३ 'यदि शरीर चन्द्रमा हो जाय तो ओवरी सितारा हो जायगी, तेरे भोजन के थाल की कौन वरावरी कर सकता है।'
४ देहली के प्रसिद्ध सूफी सन्त।
५ 'दो तीन गज़ वोरिया अथवा एक खाल, मित्र का दु ख से परिपूर्ण हृदय किसी का दोस्त, जमाली के लिये यही बहुत है, मस्त आशिकी और निश्चिन्त रहना।'

कहानी न० २६

सुल्तान सिकन्दर का आचरण तथा न्याय

(३८ अ) कहा जाता है कि सुल्तान सिकन्दर सर्वदा नमाज पढा करता था और आलिमो तथा विद्वानो की गोष्ठी में रहा करता था। वह पाचो समय की नमाज जमाअत[1] के साथ पढता था और अत्यधिक नवाफिल[2] पढ़ता था। तहज्जुद[3], चाश्त[4], तथा इशराक[5] की नमाज वह कभी न त्यागता था। यदि कोई फरियादी उसके समक्ष आता तो वह उससे पूछता कि, "यह अत्याचार किसने किया है?" उसके राज्य में अत्याचार का अन्त हो गया था। जब तक वह जीवित रहा राज्य सुव्यवस्थित तथा अनाज सस्ता रहा। उसके राज्यकाल में सन्त, आलिम, विद्वान् तथा कवि विभिन्न स्थानो पर थे और वह स्वय बडे गूढ छन्द लिखता था। वह न्याय करते समय बाल की खाल निकाल लेता था।

कहा जाता है कि आगरा में एक व्यापारी था। उसके घर में एक अन्य व्यापारी उत्तम तथा बहुमूल्य रत्नो से भरी हुई थैली धरोहर के रूप में मुहर करके रख गया। जब वह लौट कर आया तो व्यापारी ने थैली देखकर कहा कि, "अपनी धरोहर को, जो मुहर सहित है ले लो।" जब उसने थैली खोली तो देखा कि उसमे उसके रत्न न थे। वह थैली को बादशाह के समक्ष ले गया और उससे वास्तविक घटना का उल्लेख किया और कहा कि, "यह बडे आश्चर्य की बात है कि मैं अपनी थैली तथा मुहर को तो पाता हू किन्तु रत्न मेरे नही है।" बादशाह ने कहा कि, "रत्नो को उसी प्रकार थैली में रख दो और उस पर (३८ ब) अपनी मुहर लगाकर मुझे दे दो।" बादशाह ने थैली ले ली और कहा कि, "जब तक मैं तुझे न बुलाऊ, तू मेरे पास न आ।" अन्त में बादशाह उस थैली को लेकर अपने महल के भीतर गया और उसे अपने शयनागार में रख दिया। सक्षेप में, सुल्तान की यह आदत थी कि जब तक उसके वस्त्र फट न जाते थे वह अन्य वस्त्र धारण न करता था। जब तक उसे खूब नीद न आ जाती वह न सोता था, जब तक खूब भूख न लगती थी वह न खाता था, जब तक वह अपनी रक्षा न कर सकता था उस समय तक वह अपनी पत्नियो से सम्भोग न करता था। एक दिन उसने सफेद वस्त्र धारण किये और जो वस्त्र वह पहले पहिने हुए था उसे थोडा सा फाड कर धोबी के घर भेज दिया। जब धोबी ने वस्त्र देखा और उसे यह पता चला कि बादशाह का वस्त्र फट गया है तो वह रफू करने वाले के घर पहुचा और वस्त्र को रफू कराया। जब धोबी उन वस्त्रो को बादशाह के समक्ष लाया तो बादशाह ने कहा, "यह वस्त्र इस स्थान से फटा था, इसे किसने रफू किया है?" धोबी ने कहा कि, "अमुक रफू करने वाले ने।" बादशाह ने उसे बुलवाया और वह उस रफू करने वाले को एक कोने में ले गया और उसे थैली दिखा कर कहा कि 'तूने इस थैली को कहा रफू किया है?" उस रफू करने वाले ने सच-सच बता दिया कि मैंने इस स्थान पर रफू किया है। बादशाह (३९ अ) ने कहा कि, "इसे पुन फाडो।" रफू करने वाले ने उसे फाडा। तदुपरान्त बादशाह ने उस व्यापारी को, जिसके घर में थैली धरोहर के रूप में रक्खी गई थी, बुलवाया। बादशाह ने उससे कहा कि, "उन रत्नो को जो तूने इस थैली से निकाले हैं उसी प्रकार से ले आ ताकि किसी अन्य को पता न चले।" व्यापारी रत्नो को उसी प्रकार बादशाह के समक्ष ले आया। बादशाह ने उन रत्नो को थैली में रखवे रफू करने वाले से कहा कि "तू उसी प्रकार से इसे रफू कर दे।" थैली के रफू हो जाने के उपरान्त बादशाह ने उस व्यापारी तथा रफू करने वाले को विदा कर दिया। तत्पश्चात् जिस व्यापारी की थैली थी उसे

१ वह नमाजें जो सामूहिक रूप से पढी जाती हैं।
२ (४ ५) विभिन्न समय की नमाजें जो अनिवार्य नही हैं।

बुलवाया और उसके हाथ में थैली देकर कहा कि, "तेरी मुहर है या नही ?" उसने कहा, "है।" बादशाह ने कहा कि, "देख तेरे रत्न इसमें है या नही ?" जब व्यापारी ने उसे खोला तो देखा कि उसमें उसके ही रत्न हैं। बादशाह ने कहा कि, "मैं चोर था। कोई अन्य नही। अब तुझे तेरे रत्न मिल गये हैं, तू चला जा।"

कहानी न० २७

सुल्तान सिकन्दर लोदी तथा बहलोल की मर्यादा का हाल

(३९ब) सुल्तान सिकन्दर की मर्यादा का यह हाल था कि एक दिन एक दाई ने आकर मिया भूवा से कहा कि "बादशाह की पुत्री विवाह योग्य हो गई है, उसकी व्यवस्था करनी चाहिये।" मिया भूवा ने उससे कहा कि "जब बादशाह मस्जिद में नमाज पढने के लिये बाहर जाय तो समस्त पुत्रियो को चादर उढा कर बादशाह के बिछौने के निकट बैठा दिया जाय। जब बादशाह मस्जिद से नमाज पढ कर आये तो तू उन्हें (४० अ) वहाँ से चले जाने के लिए कह दे।" सक्षेप में, बादशाह महल से मस्जिद मे आया और नमाज पढ कर महल को चला गया। मिया भूवा उसके साथ था। उसके द्वार पर कोई अन्य व्यक्ति न था। जब बादशाह महल में पहुचा तो मिया भूवा दरवाजे पर खडा रहा। जब वह महल में पहुचा तो दाई ने पुत्री को वहा से हटा दिया। इसी बीच में बादशाह की दृष्टि उन पर पडी। बादशाह उन्हें देखते ही लौट कर द्वार पर पहुचा। मिया भूवा द्वार पर खडा था। बादशाह ने कहा कि, "हे भूवा ! तूने स्त्री को देखा ?" उसने उत्तर दिया, "हा। बादशाह की पुत्रिया हैं।" यह बात सुनकर वह दीवार की ओर मुह करके कुछ समय तक खडा रहा और उसने ठडी सास भर कर कहा, "हे भूवा ! इसकी व्यवस्था कर।" सुल्तान सिकन्दर की क़ौम में रूपवान्, चरित्रवान् तथा योग्य युवक थे। वह उनकी सूची लाया। बादशाह ने जिनके नाम पर चिह्न लगा दिये उनको पुत्रिया रात्रि में विवाह करके प्रदान कर दी गई और बादशाहो के योग्य जो दहेज था दे दिया गया।

(४० ब) कहा जाता है कि जब सुल्तान सिकन्दर बादशाह हुआ तो उसने मिया ख्वाजा इस्माईल जलवानी को बुलवा कर कहा कि, "अपनी पुत्री हमें दे दो।" ख्वाजा इस्माईल ने कहा, "अफगानो का विवाह अफगानों से होता है किन्तु बादशाह एक सुनार स्त्री के गर्भ से है और पुत्री अफगान स्त्री के गर्भ से है। मैं यह सम्बन्ध किस प्रकार कर सकता हू ?" बादशाह ने कहा कि, "यदि तू मुझे नीच जाति का समझता है तो मेरे राज्य में क्यो रहता है ?" ख्वाजा इस्माईल सुल्तान सिकन्दर के राज्य से निकल कर बगाल के बादशाह के राज्य की ओर चला गया। अन्त में सिकन्दर ने अपने दरबार में कहा कि, "यहा इतने अफ़गान, खान तथा अमीर हैं, एक अमीर लज्जावश जा रहा है। कोई ऐसा नही है जो उससे यह कहे कि वह उसके अन्न-जल में उसका साथी बन जाय और इस स्थान से प्रस्थान न करे ?" उस दरबार में सभी अमीरो के प्रतिनिधि उपस्थित थे। महमूद खा लोदी शाहूखेल कालपी में था। उसका भी प्रतिनिधि उपस्थित था। उसने यह बात महमूद खा को लिखी। जब ख्वाजा इस्माईल कालपी के निकट पहुचा तो महमूद खा स्वागतार्थ उपस्थित हुआ और उसने कहा कि, 'हे भाई तू क्यो जाता है ? इस स्थान पर रह। यह बाबू का मुल्क है चिन्ता मत कर", और उसे बन्दी बना लिया[1] तथा अपनी ओर से कुछ परगने उसे दे दिये। इसी बीच में बादशाह ने कहा कि, 'मैंने उसके राज्य को परिवर्तित नही किया है, उसे उपस्थित होकर अपने राज्य की चिन्ता करनी चाहिए।" वह लौट कर परमान्दल चला गया। उसकी जागीर

[1] यह वाक्य स्पष्ट नहीं।

(४१ अ) परमान्दल मे थी। एक दिन सिकन्दर चौगान खेल रहा था। १२ सूर अफगान सेवा हेतु आये। एक अफगान पैदल आया। जो लोग सवार थे उनमें से प्रत्येक ने एक धनुष सुल्तान के समक्ष उपस्थित किया। उस अफगान ने जो पैदल था ७ तोके उपस्थित किये। सुल्तान ने ७ तोके अपने हाथ में ले लिये और जिन लोगो ने धनुष भेंट की थी उन्हें अपने राज्य के उच्चाधिकारियो को सौंप दिया और स्वय महल के भीतर चला गया। भीतर पहुच कर शहर के निकट का एक ग्राम लिख कर ७ तोको के स्वामी के पास भिजवा दिया। जब बादशाह का सेवक उस फरमान को लेकर बाहर निकला तो उसने कहा कि, "उन ७ तोको का स्वामी कहा है? बादशाह ने जागीर में एक ग्राम लिख कर प्रदान किया है।" उसने उपस्थित होकर उस फरमान को ले लिया और अपनी जागीर को चला गया। जब ग्रामीणो ने उस व्यक्ति को पैदल देखा तो वे हँसने लगे कि "यह गवार इस पद के योग्य है?" अन्त में उन्होंने उसे अधिकार दे दिया। वह तीन वर्ष तक उस ग्राम में रहा। वहा उसकी एक पत्नी द्वारा एक पुत्र का जन्म हुआ और (४१ ब) उसने चार हजार रुपये अपने अधिकार में कर लिये। अन्त में वह अपनी मातृभूमि को अपने चाचा की पुत्री से विवाह करने के लिये पहुचा। विवाह के उपरान्त वह ७ वर्ष तक अपने चाचा के साथ रहा। उस अफगान के भी तीन पुत्र हुए। जब वह धन जो उसके पास था व्यय हो गया तो वह पुन: अपने कबीले के साथ हिन्दुस्तान को चल दिया। जब वह उस ग्राम में पहुचा तो उसने देखा कि वह ग्राम बढकर कस्बा बन गया है और जिस स्थान पर वह उस स्त्री को छोड कर चला गया था वहा एक बहुत बडे महल का निर्माण हो गया है। उसने समझा कि सम्भवत यह स्थान किसी अन्य जागीरदार को प्राप्त हो गया होगा कारण कि मैं कई वर्षो के उपरान्त आया हूँ। वह एक कुए पर जहा लोग पानी भरते थे, पहुचा और उनसे पूछने लगा कि, "इस ग्राम में अमुक अफगान रहता था, वह अपनी पत्नी तथा पुत्र को छोडकर चला गया था, वह पत्नी तथा पुत्र कहा है?" उन लोगो ने बताया कि, "यह उसी पत्नी की हवेली है।" इसी बीच मे उसका पुत्र कुछ दासो सहित बाण चलाने के लिए बाहर निकला। लोगो ने उसे बताया कि "अफगान का पुत्र यह आ रहा है।" वह धीरे से द्वार तक उसे देखने हेतु पहुचा। लोगो ने उसे पहिचान लिया। जब वह भीतर प्रविष्ट हुआ तो उसने देखा कि वही पत्नी चारपाई पर बैठी है (४२ अ) और सिर से पाव तक आभूषणो से लदी हुई है। उसने उन पुराने वस्त्रों को जो वह रोह से पहिन कर आया था उतार दिया और अन्य वस्त्र सिला कर पहिन लिय। कुछ घोडे क्रय करके वह चारो पुत्रो सहित बादशाह के पास पहुचा। जब वह दरबार में पहुचा तो उसने बादशाह को सूचना पहुचाई कि एक अफगान भेंट करने के लिए आया है। बादशाह ने कहलाया कि, "हम एक सिपाही रखते हैं। इस स्थिति में उसके लिये हमारे दरबार में स्थान नही।" अफगान ने निवेदन किया कि, "हम प्राचीन सेवक हैं। बहुत समय के उपरान्त बादशाह के चरणो के दर्शन हेतु आये हैं।" बादशाह ने कहा कि, "हा, वह सात तोको का स्वामी आया है। सम्भवत वह यही कहता होगा कि उस दिन मैं केवल एक था, आज पाच की सख्या में हो गया हू। अत वह मागने आया है।" तदुपरान्त उनको लिख कर इस बात की सूचना कर दो कि "वे अपनी जागीर में जा कर रहें, भेंट की क्या आवश्यकता है? जब हमें आवश्यकता होगी हम स्वय बुलवा लेंगे।" इसी कारण सुल्तान सिकन्दर के विषय में कहा जाता था कि वह चमत्कार प्रदर्शित कर सकता है।

कहानी न० २८

सुल्तान सिकन्दर का फर्राश

(४२ ब) एक दिन सुल्तान सिकन्दर खेमों में था। इसी बीच में वर्षा हुई तथा तूफान आ गया, रात

भर वर्षा होती रही और बडी तीव्र गति से वायु चलती रही। कोई खेमा भी अपने स्थान पर न रहा। दूसरे दिन जब वायु तथा वर्षा कम हुई तो बादशाह ने दरबारे आम किया और समस्त अमीर अभिवादन हेतु उपस्थित हुए। बादशाह ने अमीरो से पूछा कि, "इस हवा में किसी का खेमा खडा रह गया था अथवा नहीं?" अधिकाश अमीरो ने निवेदन किया कि, "किसी का भी खेमा खडा न रहा।" इसी बीच में एक मीर ने कहा कि, "मेरा खेमा खडा रहा था। बादशाह ने कहा कि, "किस प्रकार?" उसने कहा कि "मेरा फ़र्राश अपने सिर पर कम्बल डाले हुए हाथ में मुगरी लिये रात भर खडा रहा और जिस स्थान से भी जो खूटा उखडना वह उसे गाड देता। इसी प्रकार वह समस्त रात खडा रहा। इसी कारण एक खेमा अपने स्थान पर रहा।" बादशाह ने उस फर्राश को बुलवाने का आदेश दिया। जब उसने उस फर्राश को देखा तो कहा कि, "इस फर्राश को मुझे दे दो।" उसने कहा, "अच्छा है यह बादशाह की सेवा में रहे।" अन्त में बादशाह ने उसे अपने बोझ ढोने वाले ऊटो का दारोगा नियुक्त कर दिया। एक दिन बादशाह (४३ अ) ने शीत ऋतु में फर्राश को अपने समक्ष बुलवाया। वह फर्राश शाही ऊटो की पीठो का, जो घायल हो गई थी, उपचार कर रहा था। उसी प्रकार वह हाथो में रक्त लगाये हुए बादशाह की सेवा में पहुँचा। बादशाह ने पूछा कि, "तेरे हाथो में रक्त क्यो लगा है?" उसने निवेदन किया कि, "बादशाह के ऊँटो की पीठें घायल हो गई थी, मैं उसका उपचार कर रहा था।" बादशाह ने उस फरजी को जो उसके कधे पर थी, उस फर्राश को प्रदान कर दिया। ससार के सुल्तानो की यह प्रथा थी कि जिसे फरजी प्रदान करते थे उसे २० हज़ार अश्वारोहियो की जागीर प्रदान की जाती थी। इस प्रकार रणथम्भोर से मालवा तक की सीमा तक के परगने उसकी जागीर में दे दिये गये। वह फर्राश स्वय कामन रूमी के किले में रहता था।

एक दिन मान्डू के सुल्तान गयासुद्दीन ने अपने अन्त पुर की स्त्रियो से कहा कि "सिकन्दर मुसलमान है अन्यथा मैं उसे बन्दी बनाकर ले आता।" सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हो गये। सुल्तान ने कहा कि, "यह गयासुद्दीन स्त्रियो के समक्ष बैठा हुआ वीरता की बातें किया करता है।" उस फर्राश के वकील ने जो बादशाह के पास था, यह समाचार फर्राश को लिख भेजे कि बादशाह के सामने इस प्रकार की चर्चा (४३ ब) हुई है। जब फर्राश ने यह समाचार सुना तो उसने गयासुद्दीन पर आक्रमण कर दिया। इस बीच में उसके साथियो ने पूछा कि, "तुम बादशाह के आदेशानुसार आक्रमण कर रहे हो अथवा अपनी इच्छा से?" उसने कहा कि, "मैं स्वय आक्रमण कर रहा हू कारण कि उसने हमारे बादशाह के विषय में अनुचित बात कही है। यदि मैं उसको पराजित कर दूगा तो यह प्रसिद्ध हो जायेगा कि सुल्तान सिकन्दर के एक फर्राश ने मान्डू के सुल्तान गयासुद्दीन को पराजित कर दिया।" सक्षेप में, उसने सुल्तान गयासुद्दीन पर आक्रमण किया। सुल्तान गयासुद्दीन ने अपने राजदूत सुल्तान सिकन्दर के पास भेजकर यह बात कहलाई कि, "आपके फर्राश ने हमारे ऊपर आक्रमण किया है। वह आपके आदेशानुसार आया है अथवा स्वय आया है?" सुल्तान सिकन्दर ने कुछ सवार उस फर्राश के पास भेजे और कहलाया कि, 'हमारे सेवक इसी प्रकार वीरता प्रदर्शित करते हैं। अब तू इस विचार को त्याग दे।" बादशाह के आदेशानुसार सवारो ने फर्राश को लौटा कर उसके स्थान पर पहुचा दिया कारण कि बादशाह का ऐसा आदेश नही था। अन्त में कुछ ही दिनो में बादशाह गयासुद्दीन की मृत्यु हो गई।

(४४ अ) उसकी मृत्यु का कारण यह बताया जाता है कि उसने एक नदी के बीच में महलो का निर्माण कराया था, जिनके प्रत्येक घर में से पानी बहता था। वहा उसन प्रत्येक स्थान पर चहबच्चे तथा बडे-बडे घर बनवाये थे। वह ग्रीष्म ऋतु में उन्ही उत्तम भवनो में निवास करता था। वे उत्तम भवन उसी प्रकार से अभी तक हैं। एक दिन वह मदिरापान किये हुए चहबच्चे में अपने अन्त पुर की

स्त्रियो के साथ खेल रहा था। उसमे जल अधिक था। जब वह असावधान तथा बदमस्त हो गया तो चहबच्चे में डूबने लगा। अन्त में एक स्त्री ने उसके केश पकडकर उसे बाहर निकाला। जब वह सावधान हुआ तो स्त्री ने कहा कि, "बादशाह डूबा जा रहा था, अमुक स्त्री ने उसके केश पकडकर उसे बाहर निकाला है।" सुल्तान ने जब यह सुना तो उसने आदेश दिया कि उसके हाथ काट डाले जाय। तदनुसार उसके हाथ काट डाले गये। इसी प्रकार वह एक अन्य बार मदिरापान करते हुए असावधान होकर डूबने लगा। स्त्रियो ने भय के कारण उसे न निकाला और वह डूब गया।

कहानी न० २९

सुल्तान सिकन्दर का मियाँ हुसेन फर्मुली को अपने राज्य से निर्वासित करना

(४४ ब) कहा जाता है कि मिया हुसेन फर्मुली को सारन में जागीर प्राप्त थी। उसमें तथा सूबे के अधिकारी मे शत्रुता उत्पन्न हो गई। इस कारण मिया हुसेन सुल्तान सिकन्दर की सेवा में पहुचा। अन्त में उससे भी उसकी न निभी। एक दिन सुल्तान चौगान खेल रहा था। मिया हुसेन एक सेना लेकर विश्वासघात के उद्देश्य से पहुचा। जब सुल्तान ने उनकी दशा देखी तो वह अपने घर की ओर रवाना हो गया। वे लोग अपने सहायको सहित बादशाह के निकट पहुचे। इसी बीच में मिया नसीरुद्दीन नोहानी बाजार म एक छडी लिये हुए जिसे शाली कहते हैं, प्रबन्ध कर रहा था और प्रजा को उससे मार-मार कर बादशाह के निकट से एक ओर कर रहा था। बादशाह मार्ग पाकर महल में चला गया। जब वह भीतर पहुचा तो उसने कहा कि "नसीरा बडा लवन्द[1] है।" इस प्रकार नसीर खा की प्रसिद्धि हो गई और (४५ अ) उस समय से उसका नाम "नसीर खा लवन्द" हो गया। सक्षेप में, मिया हुसेन को आदेश हुआ कि वह राज्य से निकल जाय। वह सेवा से पृथक् कर दिया गया। वह नसीब शाह बगाले के (हाकिम के) पास पहुचा। नसीब शाह ने उसको प्रोत्साहन देकर जागीर प्रदान की। एक दिन मिया हुसेन बादशाह के समक्ष बैठा था। उसने अपने एक सेवक से पीने के लिये जल मागा। उस सेवक ने उस आबरेज को जिसमें पानी था प्रस्तुत किया। मिया हुसेन ने उसी आबरेज से जल पी लिया। बगालियो को बडा आश्चर्य हुआ कि वह चमडे में जल पीता है। बादशाह को भी आश्चर्य हुआ। उसने आबरेज को मँगवाकर देखा और पूछा कि, 'तुम चमडे में जल पीते हो ?" मिया हुसेन ने कहा कि, "हा।" बादशाह ने आदेश दिया कि, "मिया हुसेन को ३६० बडे-बडे गिलास प्रदान कर दिये जाय।" सुल्तान ने हँसी में कहा कि "वह हम लोगो के लिये मशक के समान है।"

इसी बीच में मिया भूवा ने, जो सुल्तान सिकन्दर का वजीर था, कहा कि, "हे बादशाह! यह मुहम्मद काला पहाड ऐसी मशक है कि यदि इसका मुह खोला जाय तो इसे जिस स्थान पर भी कर दिया जाय, रह जायेगा।" बादशाह इस बात से बडा रुष्ट हुआ और उसने कहा कि, 'भुवा कौन होता है जिसने इस प्रकार के शब्द हमसे कहे ?"

कहानी न० ३०

इबराहीम का मियाँ भूवा की हत्या कराना

(४५ ब) कहा जाता है कि सुल्तान इबराहीम राजा मान के पुत्र के प्रति बडी कृपादृष्टि प्रदर्शित

१ विलासी।

करता था। एक दिन उसने कहा कि, "उसे खजाने से कई लाख रुपये प्रदान कर दिये जाय।" मिया भुवा ने आगे बढ कर कहा कि, "वादशाह के पास खजाना इस कारण होता है कि वह उसे किसी (उत्तम) कार्य में तथा समय पर व्यय करे, व्यर्थ व्यय करने के लिये खजाना नही होता। मुझे आदेश दिया जाय तो मैं राज्य से प्रवन्ध करके दे दू।" इवराहीम यह सुन कर वडा क्रोधित हुआ और उसने आदेश दिया कि उसे वन्दी वना लिया जाय। कुछ दिन उपरान्त उसने उसकी हत्या करा दी। उसने मिया मुहम्मद काला पहाड से कहा, "तू अपनी जागीर को चला जा और जिस समय तुझे मैं वुलवाऊ उस समय तू आना।"

कहानी न० ३१

आज़ हुमायूँ का वुलवाया जाना

कहा जाता है कि मिया आज़ हुमायू को कडा से वुलवाया गया। वादशाह स्वय अधिकाश थ्याना में रहता था। मिया आज़ हुमायू ज्वर के कारण वडा असमर्थ हो चुका था। जव उसके वुलवाने के विषय में सुल्तान इवराहीम का फरमान प्राप्त हुआ तो आज़ हुमायू का पुत्र सलीम खा खीरा म किसी (४६ अ) कार्य हेतु गया था। आज हुमायू ने वादशाह को प्रार्थनापत्र भेजा कि, "सेवक असमर्थ है, जिस समय स्वस्थ होगा राज्य-सिंहासन के समक्ष उपस्थित हो जायगा।" जव यह प्रार्थनापत्र वादशाह को प्राप्त हुआ तो वह वडा क्रोधित हुआ और उसने कहा कि, "यह अफगान कैसे हैं कि मैं उन्हें वुलवाता हू और वे वहाने करते हैं।" तदुपरान्त उसने जजीर भेजी। जव ज़जीर पहुची तो मिया आज़ ने ज़जीर छिपा ली और अपने भाइयो तथा सम्वन्धियो को बुल्वा कर अपने पास बैठाया और पूछा कि "मैं क्या ऐसा कार्य करू कि अपने मुह पर कालिख मल लू, या ऐसा कार्य करू कि कयामत तक सुल्तान इवराहीम के मुह पर कालिख रहे?" उन लोगो ने कहा कि "आप ऐसा कार्य करें कि इवराहीम का मुह काला रहे।" तदुपरान्त उसन जजीर को दिखा कर अपने पैर मे डाल लिया और इवराहीम के समक्ष पहुचा। जव वह इवराहीम के पास पहुचा तो उसने उसे वन्दीगृह में डलवा दिया। वह कुछ समय तक वन्दीगृह में रहा।

कहानी न० ३२

आज़ हुमायूँ के पुत्र सलीम खा का विद्रोह

सलीम खा ने अपने पिता के समाचार सुनकर कडा में विद्रोह कर दिया और अपने सम्वन्धियो से कहा कि तुम लोगो ने आज हुमायू को इवराहीम के पास जाने दिया और उसे नष्ट करा दिया। (४६ ब) तदुपरान्त उसने कडा से जौनपुर की सीमा तक के स्थान अपने अधिकार में कर लिये। सलीम खा, दरिया खा का जामाता था। विवाह के समय सलीम खा को एक मस्त हाथी प्रदान किया गया था। सुल्तान इवराहीम ने दरिया खा को लिखा कि, "सलीम खा को निर्वासित कर दो, और यदि वह हाथ लग जाय तो उसकी हत्या कर दो।" दरिया खा ने सलीम खा पर आक्रमण किया। मार्ग में युद्ध हुआ, दरिया खा पराजित हुआ। उसके पैर बेकार थे इसी कारण वह चुडवल[1] पर सवार था। कहार लोग चुडवल को भूमि पर छोड कर भाग गये। दरिया खा मैदान में पडा हुआ था कि सलीम खा उसके

१ एक प्रकार की पालकी।

पास पहुच कर खडा हो गया। उसने दरिया खा से कहना प्रारम्भ किया कि, "आपने हमारे ऊपर इतना अत्याचार क्यों किया ?" सलीम खा वार्तालाप कर रहा था कि वह हाथी जिसे सलीम खा को दरिया खा ने दिया था पहुच गया। उस पर दरिया खा का पुराना महावत बैठा हुआ था। महावत ने हाथी सलीम खा के पास ले जाकर सलीम खा को हाथी द्वारा उछलवा कर उसकी हत्या करा दी। दरिया खा ने सलीम खा का सिर काट कर सुल्तान इबराहीम के पास भेज दिया। जब वह सिर इबराहीम को प्राप्त हुआ तो उसने कहा कि, "इस सिर को आज हुमायू के पास ले जाकर पूछो कि यह किसका सिर है।" (४७ अ) आज हुमायू उस समय कुरान पढ रहा था। जब सलीम खा का सिर आज हुमायू के समक्ष प्रस्तुत किया गया और उससे पूछा गया कि, "यह सिर किसका है ?" तो आज हुमायू ने उत्तर दिया कि, "यह सिर उस व्यक्ति का है जिसके जन्म के समय मेरे घर में खुशी के बाजे बजाये गये थे और मृत्यु के समय बादशाह के घर में खुशी के बाजे बजाये जा रहे हैं।" उन्ही दिनो मिया आज हुमायू की भी हत्या करा दी गयी। सुल्तान इबराहीम जिस अमीर को भी बुलवाता था वह अपने प्राण के भय से उसके पास न जाता था।

कहानी न० ३३

नसीर खा का विद्रोह

(४७ ब) कहा जाता है कि जब नसीर खा को इबराहीम ने बुलवाया तो नसीर खा भी अपने प्राण के भय से न गया। नसीर खा ने अपने भाई दरिया खा को जो बिहार में था लिखा और कुरान की शपथ देकर अपना सहायक बना लिया। इसी बीच में सुल्तान इबराहीम ने मिया बायजीद फर्मुली को अन्य अमीरो सहित नसीर खाँ को नष्ट करने के लिये भेजा। जब मिया बायजीद फर्मुली नसीर खा के पास पहुचा तो नसीर खा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र मुहम्मद खा को तथा मिया शेख फरीद को, जो उसका नायब था, बायजीद के पास भेजा और उनके द्वारा कहलाया कि, "हमने कोई अपराध नही किया है। यदि कोई अपराध किया हो तो तुम मध्यस्थ बन कर हमें क्षमा करा दो।" जब वे दोनों मिया बायजीद के पास पहुचे तो मिया बायजीद ने उन दोनो को बन्दी बना लिया और उन्हें हाथी के हौदज पर बैठा दिया कारण कि सुल्तान इबराहीम ने इसी प्रकार आदेश दिया था। जब नसीर खा को यह समाचार प्राप्त हुए तो उसने विवश होकर बायजीद से युद्ध करने के लिए सेना भेजी और स्वय सेना के पीछे एक हौज के ऊपर वजू करके नमाज पढ़ी। वह अस्त्र-शस्त्र धारण कर रहा था तो मिया बायजीद ने नसीर खा की सेना पर, जो आगे गई हुई थी, आक्रमण कर दिया। नसीर खा की सेना पराजित हुई। नसीर खा थोडे से सहायको सहित उस हौज पर अस्त्र-शस्त्र धारण कर रहा था और उस हौज पर खडा था कि इसी बीच में नसीर खा के एक सम्बन्धी का महावत एक हाथी लाया और उसने अपने स्वामी को गाली देते हुए हाथी को उस हौज में डाल दिया और कहा कि, "वह मेरा स्वामी नामर्द था, उसने इस हाथी की लीला नही देखी और एकबारगी भाग गया।" नसीर खा ने महावत से कहा कि, "यदि तेरे साथ कोई हो जाय तो तू क्या कर सकेगा ?" महावत ने कहा, "क्यो न कर सकूगा। मैं उपस्थित हू।" जब हाथी जल पी चुका तो (४८ अ) नसीर खा हाथी पर सवार होकर ३०० अश्वारोहियो सहित बायजीद फर्मुली से युद्ध करने के लिये आगे बढा। इसी बीच में मिया फर्मुली की सेना पराजित लोगो का पीछा करने के कारण छिन्न भिन्न हो चुकी थी। नसीर खा ने उस हाथी को आगे करके आक्रमण किया। ईश्वर ने नसीर खा को विजय प्रदान की और बायजीद फर्मुली पराजित होकर भाग गया। विजय के उपरान्त मुहम्मद तथा शेख फ़रीद भी मिल गये और उनके पाव से जजीर निकाल दी गई।

कहानी न० ३४

ख्वाजा इस्माईल जलवानी, जिससे इबराहीम ने अफग़ानों को नष्ट करने के विषय में पूछा था

कहा जाता है कि ख्वाजा इस्माईल जलवानी को, जो परमान्दल में राणा के विरुद्ध रक्खा गया था और वहा का समस्त प्रदेश तथा अजमेर उसकी जागीर में थे, सुल्तान इबराहीम ने कई बार बुलवाया था किन्तु वह प्राण के भय से यह बात स्वीकार न करता था। जब इबराहीम की दुष्टता तथा दुर्व्यवहार सीमा से अधिक बढ गया तो उन लोगों ने भी विद्रोह कर दिया और बहुत बड़ी सेना एकत्र करके इबराहीम के विरुद्ध प्रस्थान किया। जब सुल्तान इबराहीम ने यह सुना कि ख्वाजा इस्माईल आक्रमण कर रहा है तो इबराहीम न भी युद्ध के लिए प्रस्थान किया। इसी बीच में उसे समाचार प्राप्त हुए कि (४८ ब) ख्वाजा इस्माईल रात्रि में छापा मारेगा; इस कारण बादशाह अपनी समस्त सेना को डेरों में छोड कर पृथक् हो गया। अन्त में ख्वाजा-इस्माईल ने बादशाह के डेरों को घेर लिया। प्रात काल बादशाह नक्कारा बजाता हुआ वहा पहुचा। थोडा-सा युद्ध हुआ। अन्त में ख्वाजा इस्माईल पराजित होकर पुन परमान्दल में चला गया। सुल्तान इबराहीम की विजय हुई। वह विजय के उपरान्त पुन ब्याना पहुचा।

सुल्तान इबराहीम ने अपने वकीलों को मिया ख्वाजा इस्माईल के पास भेज कर उसे प्रोत्साहन देते हुए कुरान की शपथ ली और कहा कि "हम तुझसे कोई विश्वासघात न करेंगे। केवल तू मेरे पास चला आ।" जब वकीलों ने बादशाह की यह बात मिया ख्वाजा इस्माईल से कही तो मिया ख्वाजा इस्माईल बादशाह के पास आया। एक दिन ख्वाजा इस्माईल बादशाह के पास बैठा था। बादशाह ने उससे कहा कि, "मैं तुझसे एक बात पूछता हू। क्या तू सच-सच उत्तर देगा?" ख्वाजा इस्माईल ने कहा कि, "बादशाह के समक्ष क्यों न सच उत्तर दूगा।" इबराहीम ने पूछा कि "अफ़ग़ानों की जड (४९ अ) किस प्रकार नष्ट की जा सकती है?" ख्वाजा इस्माईल ने कहा कि, "यदि मैं सत्य बात कहूगा तो आप खिन्न हो जायगे।" बादशाह ने शपथ ली कि, "मैं कदापि रुष्ट न हूगा, तू सच बात कह।" ख्वाजा इस्माईल ने कहा कि, "हे बादशाह! अफग़ानों की जड आप हैं। जब आपकी जड का अन्त होगा उसी समय अफगानों का भी।" ख्वाजा इस्माईल ने सुल्तान इबराहीम की दुष्टता को बढता हुआ देख कर पुन विद्रोह कर दिया और बापू पहुच कर वहा बैठ रहा।

कहानी न० ३५

बिहार खा का खुत्बा पढवाना

(४९ ब) नसीर खा, जो गाज़ीपुर में था, बिहार पहुचा और दरिया खा से मिलकर वहीं रह गया। कुछ दिन तक दोनों भाई असमजस में रहे। दरिया खा का पुत्र बिहार खा अधिकारी बन गया और उसने अपने नाम का खुत्बा पढवा लिया और बहुत से लाख का धन किया उदाहरणार्थ नोहानी, मुहम्मद खा, चौंधा इत्यादि। उसने सेना एकत्र करके सुल्तान इबराहीम पर आक्रमण किया यहा तक कि वह कड़ा के निकट पहुच गया। सुल्तान इबराहीम भी सेना एकत्र कर [illegible] और दमुआ नामक स्थान में युद्ध हुआ। अन्त में बिहार खा की पराजय हुई और वह [illegible]। सुल्तान ने उस स्थान का नाम फतहपुर रख दिया।

परिशिष्ट

वाक़ेआते मुश्ताक़ी

(लेखक—शेख रिज़कुल्लाह मुश्ताकी)

(ब्रिटिश म्युजियम मैनुस्क्रप्ट, रियु, भाग २, ८०२ व)

(१७२) देहली के बादशाह खिज्र खा के राज्यकाल में एक ऐसा बढई था जिसके पास प्रत्येक परगने से लोग आते थे और वह उनकी समस्याओ का समाधान कर दिया करता था। इस प्रकार उसने बडी प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी। एक दिन उसके पुत्र ने कहा कि, "तू परोक्ष के विषय में आदेश देता है, तुझे क्या मालूम कि परोक्ष में क्या है। यदि तू इस धूर्तता को त्याग देगा तो मैं तेरे घर में रहूगा अन्यथा चला जाऊगा।" पिता ने कहा कि, "मुझे ईश्वर ने इतनी शक्ति दी है कि मैं इस बात का पता लगा लेता हू कि यह सच्चा है या झूठा।" पुत्र ने कहा कि, "परोक्ष का ज्ञान ईश्वर ही को है।" उसने कहा कि, "मुझे भी यह शक्ति ईश्वर ने दी है। मैं अपनी ओर से कुछ नही कहता।" पुत्र ने कहा कि, "तू अज्ञानता को नही त्यागता, मै तेरे घर में न रहूगा।" यह कह कर वह घर से चला गया। दो दिन यात्रा के उपरान्त वह एक ग्राम में पहुचा। वहा एक ऐसे व्यक्ति का घर था जिसके दो पत्निया थी। वह एक से प्रेम करता था और दूसरी से नही। दूसरी के एक दूध पीता बच्चा था। उस दिन वह पुरुष घर में न था। वह स्त्री, जो उसे प्रिय थी, भी घर में न थी। किसी कार्य हेतु ग्राम मे गई थी। यह दूसरी स्त्री अपने पुत्र का गला काट कर रक्तरजित चाकू उस स्त्री के तकिये के नीचे रख कर स्वय भी कही चली गई। कुछ देर उपरान्त जब वह स्त्री आई तो वह भी पहुची और पुत्र के पास पहुच कर रोने लगी। मुहल्ले के लोग एकत्र हो गए। उसने इस स्त्री को अपराधी ठहराया था। जो लोग एकत्र हुए थे उनके साथ वह उसके घर में पहुची और उसके तकिये के नीचे से रक्तरजित चाकू निकाल कर उस भीड में फेंक दिया और कहा कि, "देखो यह चाकू इसके सिरहाने से निकला है।" उस स्त्री ने कहा कि, "यह मेरे ऊपर झूठा आरोप लगाती है।" लोगों ने कहा कि, "इसने स्वय अपने पुत्र का गला न काटा होगा।" अन्त में लोगो ने यह निश्चय किया कि, "इसे उस बढई के पास ले जाकर इस विषय में पता चलाया जाय।" उस बढई के पुत्र ने वहा पहुच कर इस विषय में समस्त बातो का पता लगाया और वहा से उन लोगो के साथ चल खडा हुआ। वे जिस ग्राम में भी पहुचते थे तो एक-दो व्यक्ति उनके साथ हो जाते थे। वहा पहुच कर उन लोगो ने बढई को सूचना दी। वह भीड में पहुच कर बैठ गया। बहुत से लोग एकत्र हो चुके थे। उस बालक को जिसकी हत्या हो गई थी उसके समक्ष लाया गया और सब हाल बताया गया। उसने दोनो स्त्रियो को अपने पास बुलवा कर सब हाल पूछा और सिर झुका लिया। थोडी देर तक वह सिर झुकाये रहा। तदुपरान्त उसने कहा कि, "केवल एक साक्षी है। इस भीड में जो कोई भी शीघ्रातिशीघ्र नगी होकर आ जाय वही सच्ची होगी।" बालक की मा शीघ्र कपडे उतार कर नगी होकर आ गई। दूसरी यह सकोच करती रही कि वह किस प्रकार इस भीड में अपमानित हो। बढई ने कहा कि, "तूने अपने पुत्र की इस स्त्री की शत्रुता के कारण हत्या

की है और २ हजार व्यक्तियो मे नि सकोच नगी हो गई।" वढई का पुत्र भी कोने में बैठा हुआ देख रहा था। उसने सोचा कि मैंने समस्त वातें देखी हैं 'यदि मेरा पिता पूछेगा तो मैं उससे क्या कहूगा ?" जब उससे पूछा गया तो उसने सच-सच हाल लोगो को वता दिया और अपने पिता के पाव पर गिर पडा।

मुहम्मद विहामद खानी — तारीखे मुहम्मदी (हस्तलिखित, ब्रिटिश म्युजियम, लन्दन)

मुहम्मद मासूम — तारीखे सिन्ध (पूना १९३८ ई०)

यजदी, शरफुद्दीन अली — जफरनामा भाग २ (कलकत्ता १८८५–८८०)

यह्या बिन अहमद सिहरिन्दी — तारीखे मुबारकशाही (कलकत्ता १९३१ ई०)

हमीद कलन्दर — खैरुल मजालिस (अलीगढ)

हसन, अमीर, सिजज़ी — फवायदुल फुआद (देहली १२७२ हि०)

हाजी अब्दुल हमीद मुहर्रिर — दस्तूरुल अलबाब फी इल्मिल हिसाब (हस्तलिखित, रामपुर)

अरबी

इब्ने बत्तूता — यात्रा का विवरण (पेरिस १९४९ ई०)

कलकशन्दी — सुबहुल आशा फी सिनआतिल इन्शा (काहिरा १९१५ ई०)

शिहाबुद्दीन अल उमरी — मसालिकुल अबसार फी ममालिकुल अमसार

हाजी-उद्-दबीर — जफरुल वालेह (लन्दन १९१० ई०)

उर्दू

सर सैयिद अहमद खां — आसारुस्सनादीद (कानपुर १९०४ ई०)

हिन्दी

रिजवी, सैयिद अतहर अब्बास — आदि तुर्क कालीन भारत (अलीगढ १९५६ ई०)

खलजी कालीन भारत (अलीगढ १९५५ ई०)

तुगलुक़ कालीन भारत भाग १ (अलीगढ १९५६ ई०)

तुग़लुक कालीन भारत भाग २ (अलीगढ १९५७ ई०)

ENGLISH

Benett, W C — *A Report on the Family History of the Chief Clans of Roy Bareilly District* (Lucknow 1870)

Elliot and Dowson — *History of India as told by its own Historians* (London 1887)

Ethe, H. — *Catalogue of the Persian Manuscripts in the Library of the India Office*

Gibb, H A R — *Ibn Battuta* (London 1929)

Haig, Sir, Welseley — *The Cambridge History of India*, Vol III (Cambridge 1928)

Hodivala, S H — *Studies in Indo-Muslim History* Vol I, (Bombay 1939). Vol. II. (Bombay 1957)

Ibbetson, Sir, D — *A Glossary of the Tribes and Castes of the Punjab and North-West Frontier Province* (Lahore 1919)

Mirza, M. W. — *The Life and Works of Amir Khusrau* (Calcutta 1935)

Moreland, W. H. — *The Agrarian System of Moslem India* (Cambridge 1929).

Pande, A. B — *The First Afghan Empire in India* (Calcutta 1956).

Qureshi, I. H — *The Administration of the Sultanate of Delhi* (Lahore 1944)

Rieu, C. — *Catalogue of the Persian Manuscripts in the British Museum, London.*

Storey, C A — *Persian Literature, A Bio-Bibliographical Survey*

Thomas, E. — *The Chronicles of the Pathan Kings of Delhi* (London 1871)

Tripathi, R. P. — *Some Aspects of Muslim Administration* (Allahabad 1936).

Wright, H N. — *The Coinage and Metrology of the Sultans of Delhi* (Delhi 1936).

Archaeological Survey Reports

Journal, Asiatic Society Bengal,

Journal, Royal Asiatic Society Great Britain and Ireland.

नामानुक्रमणिका